Digitized by eGangotri

आयुर्वेद नवनीत

8638

आयुर्वेद नवनीत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Ayurved Navneet.
Digitized by eGangotri

आयुर्वेद-नवनीत

(आयुर्वेदिक चिकित्सा पर अनुपम ग्रन्थ)

68553

लेखकः

आयुर्वेद मनीषी, भैषज्यविद्, चिकित्सा-मर्मज्ञ

डॉ० कविराज दाऊदयाल गुप्त विद्या वाचस्पति

(रजिस्टर्ड आयुर्वेदिक चिकित्सक)

Kaviraj Davodayal Gupta

Hindi Seva Sadan Mathura

स्कैन्ड/Scanned

हिन्दी सेवा सदन, मथुरा.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

159
A152

Digitized by eGangotri

दो शब्द

प्रस्तुत पुस्तक 'आयुर्वेद नवनीत' भारतीय चिकित्सा शास्त्र के अनुरूप, आयुर्वेदिक पद्धति में लिखी गई है । प्रयत्न किया गया है कि इसमें मानव जाति को अधिक कष्टप्रद अनेक रोगों के सरल औषधोपचार पर आवश्यक प्रकाश पड़ सके और यथा सम्भव उन योगों (नुस्खों) का अधिक समावेश हो सके जो देशी जड़ी-बूटियों, वनस्पतियों और घरेलू मसालों के सम्मिश्रण से,प्राणदायिनी औषधियों की उपलब्धि सरलता से करा सके ।

वस्तुतः जहाँ अधिक सरल योग लिखे गये हैं,वहाँ उन औषधियों को भी, एकदम नहीं छोड़ा जा सका है, जो रासायनिक क्रियाओं द्वारा अधिक प्रभावकारी होती हैं । क्योंकि अनेक उत्कट रोगों और उनकी उग्र अवस्थाओं में उनकी भी अनिवार्यता हो जाती है । वर्तमान समय में वे रस रूप औषधें, भस्में, वटके यदि सामान्य जन स्वयं नहीं बना पाते तो वे किसी भी विश्वस्त फार्मेसी की बनी हुई, बाजार से क्रय की जा सकती है और उनका मिश्रण अन्य वनस्पतियों आदि के साथ घर पर भी किया जा सकता है ।

प्रस्तुत पुस्तक में संकलित तथा शास्त्रीय योगों के अतिरिक्त, कतिपय संन्यासी या फकीरी अथवा स्वानुभूत योग भी हैं । ऐसी औषधियाँ भी, जो चिकित्सा-शिविरों में भी, बहुत-से रोगियों पर व्यवहार की गई और अधिकांश रोगियों को लाभकारी सिद्ध हुई ।

उद्देश्य यह भी रहा है कि पुस्तक जन सामान्य को तो उपयोगी रहे ही, विवेकशील रोगी, सेवाभावी परिचारक तथा चिकित्सकजन भी अपेक्षित लाभ उठा सकें ।

बहुत से गरीबी नुस्खे इस संकलन में सम्मिलित किये गये हैं । धनवानों की सन्तुष्टि के लिये भी यत्र-तत्र अमीरी योगों को रखा गया है । पाठकगण अपने गुण, स्वभाव तथा जेब के अनुरूप नुस्खे आदि का चयन इसमें से कर सकते हैं ।

सभी जानते हैं कि सभी मनुष्यों की प्रकृति समान नहीं होती, इस कारण एक ही दवा समान रूप से सब रोगियों पर कार्य नहीं करती । इसलिये एक-एक रोग पर अनेक योग दिये गये हैं उनका प्रयोग रोगी की प्रकृति, गुण, कर्म, देश काल आदि के अनुरूप किया जाना उचित है ।

इस पुस्तक के प्रकाशक भाषा भवन, मथुरा के स्वामी श्री कन्हैयालाल जी का बहुत समय से आग्रह था कि इस प्रकार की पुस्तक उन्हें अवश्य उपलब्ध कराई जाय जो जन सामान्य और चिकित्सक वर्ग के लिये भी उपयोगी हो । अनेक ग्रन्थों के अनुशीलन तथा अपनी पचास वर्ष से अधिक की चिकित्सकीय स्मृतियों और अनुभूतियों को कुरेद कर जो कुछ भी कागज पर ला सका, वह पाठकों की सेवा में उपस्थित है ।

मुझे आशा ही नहीं, अपितु विश्वास भी है कि यह पुस्तक सभी वर्ग के पाठकों को उपयोगी सिद्ध होगी ।

—दाऊ दयाल गुप्त

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आयुर्वेद नवनीत

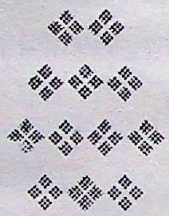

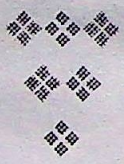

दाऊ दयाल गुप्त

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

विषय-सूची

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
1.	**उदर रोग और उनके उपचार**	**33**
	(1) कब्ज के कारण	33
	(2) कब्ज रहने के लक्षण	33
	(3) मलावरोध की स्वाभाविक चिकित्सा	33
	(4) मलावरोध नाशक औषधोपचार (अनेक योग)	35
	(5) मलावरोध नाशक त्रिफलादि चूर्ण	36
	(6) कब्ज पर सरल औ षधि	37
	(7) कब्ज में सु खो पचार (हल्का जु लाब)	37
	(8) विबन्धहर चूर्ण	37
	(9) कब्जनाशक अभयादि चू र्ण	37
	(10) विबन्धनाशक उत्तम क्वाथ	37
	(11) विबन्धघ्नी गुटिका	37
	(12) कोष्ठबद्धता विनाशिनी वटी	38
	(13) कब्ज पर अन्य सरल दवा	38
	(14) उदर रोग और कब्ज नाशक तरल	**38**
	(15) मलावरोध पर अवलेह	38
	(16) कब्ज पर स्वानुभूत योग	38
	(17) पाचक हिंग्वाष्टक चूर्ण	38
	(18) उदर रोगों पर लवण भास्कर चूर्ण	39
	(19) कब्जहर सेन्धवादि चूर्ण	39
	(20) अजीर्णनाशक त्रिवृतादि मोदक	39
2.	**आयुर्वेद में ऋतु-अनुरूप विरेचन का विधान**	**40**
	(1) दोष-प्रकोपानुरूप औषधि-निर्णय	40
	(2) विरेचन में कल्कादि की मात्रा	41
	(3) औषधिजन्य अतिसार का प्रतिकार	41
	(4) दस्त करने और रोकने को अभयादि मोदक	41
	(5) अग्निमांद्य नाशक हुताशन रस	41
3.	**जलोदर और उसका औषधोपचार**	**42**
	(1) जलोदर पर दशमूलादि क्वाथ	42
	(2) उदरशोथ नाशक हरीतक्यादि क्वाथ	42

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
	(3) शोथोदर पर देवद्रुमादि योग	42
	(4) जलोदरादि पर पटोलाद्य चूर्ण	42
	(5) विरेचनार्थ भेदिनी वटी	42
	(6) जलोदरादि में वारिशोषण रस	42
	(7) जलोदरारि रस	44
	(8) सर्वोदरारि रस	44
	(9) सर्वोदर नाशक नारायण चूर्ण	44
	(10) वातादि दोषघ्नलेप	45
4.	**अपच, अजीर्ण या अग्निमान्द्य**	**45**
	(1) अजीर्ण में घरेलू प्रयोग (अनेक योग)	45
	(2) अपच में मूली का उपयोग (अनेक योग)	47
	(3) अजीर्ण और अग्निमांद्य में अदरक का उपयोग	47
	(4) अपचादि विभिन्न रोगों में अदरक	48
	(5) अदरक के अनेक योग	48
	(6) अपचनाशक आद्रकादि लेह	49
	(7) मन्दाग्नि में आद्रकाद्यावलेह	49
	(8) स्वादिष्ट अजीर्णघ्नवटी	49
	(9) वायुगोला पर एक अपूर्व योग	50
	(10) अफरा, उदरशूल पर लेप	50
	(11) उदर रोगों पर अजवाइन की गोली	50
	(12) अफरा पर श्वेतार्क वटिका	51
	(13) शूलादि नाशक गोलियाँ	51
	(14) अफरा, उदर शूल पर विभिन्न योग	51
5.	**अतिसार और उसके उपचार**	**52**
	(1) दस्त रोकने वाले अनेक यो	52
	(2) दस्तनाशक विजयादि वटी	52
	(3) अतिसारहर विजयाद्यासव	54
	(4) सर्वातिसार पर रामबाण	54
	(5) अतिसार पर एक अद्भुत योग	54
	(6) सब प्रकार के अतिसारों पर अचूक योग	54
	(7) अतिसार पर अन्य अव्यर्थ महौषधि	55
	(8) सर्वातिसार पर अहिफेनादि चूर्ण	55
	(9) दस्तों पर अहिफेनादि रस	55

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
6.	**संग्रहणी और उसकी चिकित्सा**	**56**
	संग्रहणी के प्रकार और लक्षण	**56**
	(1) संग्रहणी की सामान्य चिकित्सा (अनेक योग)	56
	(2) संग्रहणी पर दाडिमाष्टक चूर्ण	58
	(3) संग्रहणी आदि पर वृहद् दाडिमाष्टक	58
	(4) संग्रहणी पर अव्यर्थ औषधि	58
	(5) संग्रहणी नाशक रस-योग	58
	(6) संग्रहणी पर अव्यर्थ चूर्ण	58
	(7) संग्रहणी की अमोघ औषधि	59
	(8) संग्रहणी में कल्प चिकित्सा का महत्व	59
	(9) संग्रहणी पर आम्रादि यवागू	61
	(10) संग्रहणी में तक्रकल्प विधान	61
	(11) संग्रहणीहर पंचामृत पर्पटी	62
	(12) ग्रहणी आदि पर स्वर्ण पर्पटी	63
	(13) सर्वग्रहणीनाशक ताम्र पर्पटी	63
	(14) असाध्य ग्रहणी आदि में लौह पर्पटी	63
	(15) दुःसाध्य ग्रहणी आदि में विजय पर्पटी	63
	(16) जीर्णातिसारहर तन्त्रान्तरोक्त विजय पर्पटी	64
	(17) आमयुक्त ग्रहणी में रस पर्पटी	64
	(18) पारदशोधन विधि	65
	(19) दोषानुसार तक्र में नवनीत की मात्रा	65
	(20) संग्रहणी में दधि-कल्प	66
	(21) संग्रहणी आदि में वृहन्नायिका चूर्ण	66
	(22) दुःसाध्य ग्रहणी में जीरकाद्य चूर्ण	66
	(23) संग्रहणी पर पिप्पल्यादि चूर्ण	67
	(24) ग्रहणी शार्दूल वटिका	67
	(25) संग्रहणी में अभ्रक रसायन या अभ्रवटी	68
	(26) संग्रहणी में दुग्ध कल्प	68
	(27) संग्रहणी में ऋतुफलों का कल्प	69
	(28) संग्रहणी में अनार स्वरस कल्प	70
7.	**विशूचिका (हैजा) की चिकित्सा**	70
	(1) विशूचिका के कारण	70
	(2) विशूचिका में औषधोपचार (अनेक योग)	71

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
	(3) हैजा पर अव्यर्थ गोली	71
	(4) विशूचिका नाशिनी वटी	72
	(5) विशूचिका नाशक अर्क	72
	(6) विशूचिका में अर्क पत्र भस्म का जल	72
	(7) विशूचिकाघ्नी वटिका	72
	(8) विशूची विध्वंस रस	73
	(9) विशूची आदि में मृत संजीवनी सुरा	73
	(10) विशूचिका पर बारूदी योग	73
	(11) विशूची पर रोहितकारिष्ट	74
	(12) हैजा में मरिचारिष्ट	74
	(13) विशूचिका नाशिनी सुरा	74
	(14) हैजा नाशक अन्य तरल	75
8.	**अर्श (बवासीर) की चिकित्सा**	**75**
	(1) बवासीर के प्रकार और लक्षण	75
	(2) बवासीर नाशक अनेक योग	76
	(3) रक्तार्श पर एक सरल प्रयोग	77
	(4) धाराप्रवाह रक्तार्श पर उपयोगी दवा	77
	(5) रक्तार्श पर अव्यर्थ औषधि	78
	(6) खूनी-वादी बबासीर की एक ही दवा	78
	(7) रक्तार्श पर अचूक घरेलू दवा	78
	(8) अर्श पर कुटजावलेह	78
	(9) रक्तार्श पर एक अव्यर्थ योग	79
	(10) अर्श पर लेप और बन्धन (अनेक योग)	79
	(11) अर्शहर मरहम	79
	(12) अर्शनाशिनी मरहम	80
	(13) मस्से गिराने वाली सरल मरहम	80
	(14) अर्श की चिकित्सा व्यवस्था में ज्ञातव्य बातें	80
9.	**भगन्दर और उसकी चिकित्सा**	**80**
	(1) भगंदर के भेद और लक्षण	80
	(2) भगंदर निवारणार्थ कतिपय योग	81
	(3) भगंदरादि पर विडंगारिष्ट	82
	(4) भगंदर पर वृहत्सूरण वटक	83
	(5) भगंदर पर त्रिफला गूगल	83

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
	(6) भगंदर पर कांचनार गूगल	83
	(7) भगंदर पर त्रिफलादि मोदक	83
	(8) भगंदरादि पर कासीसाद्यघृत	84
	(9) भगंदर पर जात्यादि घृत	84
	(10) नाड़ी व्रण पर जात्यादि तैल	84
10.	**प्लेग और उसका औषधोपचार**	**85**
	(1) रोग वृद्धि और उसके लक्षण	85
	(2) प्लेग से बचाव को आवश्यक व्यवस्था	85
	(3) वातावरण शोधक हवन सामग्री	86
	(4) जल का शुद्धिकरण	86
	(5) प्लेग से बचने को औषधि	87
	(6) प्लेग-प्रतिषेधक अन्य गोली	87
	(7) प्लेग की प्रभावकारी औषधि	87
	(8) प्लेग आदि पर सरेन्द्राभवटी	87
	(9) प्लेग, सन्निपातादि पर आनन्द भैरवीवटी	88
	(10) प्लेग एवं सर्वज्वर पर सुदर्शन चूर्ण	88
	(11) प्लेग में यव पटोल क्वाथ	89
	(12) पित्तज्वरघ्न द्राक्षादि क्वाथ	89
	(13) कफज्वरघ्न निम्बादि क्वाथ	89
	(14) प्लेग प्लीहादि पर मधुपिप्पली अवलेह	89
	(15) मिश्रित लक्षणों में त्रिफलादि क्वाथ	89
	(16) प्लेग ज्वर में पंचकोल क्वाथ	90
	(17) गिल्टियों पर लेप	90
11.	**ज्वर चिकित्सा**	**90**
	(1) ज्वर के प्रकार	91
	(2) ज्वर से बचने के उपाय	92
	(3) ज्वर पर सामान्य सरल औषधियाँ	९३
	(4) दुग्धपान एवं औषधि सिद्ध दुग्ध	94
	(5) ज्वर के लाक्षणिक उपचार (अनेक योग)	95
	(6) ज्वरान्तक वटी	95
	(7) ज्वरघ्नी वटी	96
	(8) पित्तज विषम ज्वर पर गोली	96
	(9) नवीन ज्वर पर हिंगुलेश्वर रस	96

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
	(10) ज्वर भैरव चूर्ण	96
	(11) ज्वरनागमयूर चूर्ण	96
	(12) विषम ज्वर पर अर्क	97
	(13) ज्वरादि पर त्रिपुरभैरव रस	97
	(14) सन्निपातादि में समीरपन्नग रस	97
	(15) छोटी कटेरी का ज्वरोपचार में उपयोग	97
	(16) छोटी कटेरी-मिश्रित कतिपय योग	98
	(17) श्लेष्म ज्वरादि में कंटकार्पादि क्वाथ	98
	(18) आम ज्वरादि में आरग्वधादि क्वाथ	98
	(19) त्रिदोषज ज्वर में वृहत्यादिगण क्वाथ	99
	(20) पैत्तिक ज्वर में मुस्तकादि क्वाथ	99
	(21) ज्वरादि में स्वदेशी एस्प्रीन	99
	(22) मलेरिया की गोली	99
	(23) सर्व ज्वर विनाशिनी वटी	100
	(24) ज्वरकासहर गोली	100
	(25) ज्वर केशरिका वटी	100
	(26) ज्वरनाशक अर्क	101
	(27) सर्व ज्वर नाशक संजीवन रस	101
	(28) सर्व ज्वर विनाशिनी अव्यर्थ वटी	101
	(29) करंजपत्रादि ज्वर वटी	101
	(30) करंजफलादि ज्वरघ्नी गोली	102
	(31) सन्निपातज प्रलाप पर	102
	(32) विषम ज्वर पर स्वदेशी मिक्शचर	102
	(33) ज्वरघ्नी पिप्पलादि वटी	102
	(34) जीर्णज्वर नाशक सुखद योग	103
	(35) ज्वर में अन्य उपयोगी दवाएँ (अनेक योग)	103
	(36) सर्वज्वर पर षडानन रस	104
	(37) ज्वर में धूप देने का विधान	104
12.	**मन्थर ज्वर (मोतीझरा) की चिकित्सा**	**104**
	(1) मोता ज्वर तथा श्वसनक ज्वर	105
	(2) मन्थर ज्वर की समयावधि	105
	(3) मोतीझरा के दानों का दब जाना	106
	(4) प्रथम सप्ताह एवं उससे पूर्व	106

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
	(5) दूसरा सप्ताह	107
	(6) तीसरा सप्ताह	107
	(7) मोतीझरा में औषधोपचार	108
	(8) मोतीज्वर में उपयोगी सितोपलादि चूर्ण	108
	(9) मोती ज्वर में हितकर षडंगपानीय क्वाथ	108
	(10) मोतीझरा में संजीवनी वटी	110
	(11) ज्वरातिसार शामक सिद्ध प्राणेश्वर रस	110
	(12) ज्वरातिसारादि में गगन सुन्दर रस	110
	(13) सर्व ज्वरहर लौह	110
13	**श्वसनक ज्वर (निमोनिया)**	**112**
	(1) निमोनिया- कारण और लक्षण	112
	(2) निमोनिया की चिकित्सा	112
	(3) निमोनिया में सुवर्ण भूपतिरस	113
	(4) सर्वज्वरघ्न वृहत्कस्तूरी भैरव रस	113
	(5) हृदय को बलप्रद चिन्तामणि रस	114
	(6) हृदय-फुफ्फुस को बलदायक विश्वेश्वर रस	114
	(7) मोतीझरा में औषधि-व्यवस्था क्रम	114
14.	**यकृत रोग चिकित्सा**	**115**
	यकृत विकार के लक्षण	115
	(1) यकृत पर लवण पंचक चूर्ण	116
	(2) यकृत-प्लीहादि में लवण त्रितयादि चूर्ण	116
	(3) यकृत दोष नाशक चूर्ण	116
	(4) जिगर-तिल्ली में पथ्यादि क्वाथ	117
	(5) यकृत्-प्लीहादि पर अनेक योग	117
	(6) यकृत-विकार हर महामृत्युंजय रस	118
	(7) यकृतप्लीहोदरनाशिनी वटी	118
	(8) यकृत्-प्लीहा पर गुडूच्यादि चूर्ण	118
	(9) जिगर में लाभकारी रसराज रस	118
15.	**प्लीहा (तिल्ली) की चिकित्सा**	**118**
	(1) प्लीहा में हितकारी अनेक योग	118
	(2) यकृत-प्लीहा में पंच लवण का प्रयोग	119
	(3) प्लीहा वृद्धि पर गुणकारी योग	119

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
	(4) प्लीहा-यकृत में पंच लवण कुमारी द्राव	120
	(5) प्लीहारि वटी	120
	(6) प्लीहारि रस	120
	(7) प्लीहा और यकृत रोग पर सिद्ध लवण	120
	(8) प्लीह-वृद्धिएवं ज्वरनाशक योग	121
	(9) प्लीहा पर शुण्ठयादि चूर्ण	121
	(10) तिल्ली पर रोहितक लौह	121
16.	**पाण्डु और कामला (पीलिया)**	**121**
	(1) पाण्डु के दोषानुसार लक्षण	122
	(2) कामला, हलीमक आदि	122
	(3) पाण्डु का औषधोपचार (अनेक योग)	123
	(4) पाण्डु में नवायस लौह	124
	(5) कामला पर धात्री लौह	124
	(6) पीलिया में विडंगादि लौह	124
	(7) मृदु विरेचनार्थ योग	124
	(8) पाण्डु सूदन रस	124
	(9) पाण्डु पंचानन रस	125
	(10) पीलिया में आमलक्यावलेह	125
	(11) पाण्डु आदि में पर्पटाद्यरिष्ट	125
	(12) पाण्डु में अचूक योगराज रसायन	125
17.	**कास (खाँसी) की चिकित्सा**	**126**
	(1) कास के प्रकार और लक्षण	126
	(2) खाँसी में विशेष हितकर सरल योग संग्रह (31 योग)	127
	(3) शुष्क कास पर अव्यर्थ योग	130
	(4) खाँसी की सरल गोलियाँ	130
	(5) कास नाशक विशिष्ट औषधि	130
	(6) कासान्तक लेह	130
	(7) खाँसी में चूसने की गोलियाँ	131
	(8) वंशलोचन का कास में प्रभावी उपयोग	131
	(9) कास ज्वर में प्रसिद्ध सितोपलादि	131
	(10) घोर खाँसी में वासावलेह	131
	(11) सर्व कास में कण्टकारी घृत	131
	(12) कास-उरःक्षतादि में बलाद्य घृत	132

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
	(13) कास क्षयादि में महाकालेश्वर रस	132
	(14) कास -श्वासादि में स्वच्छन्द भैरवरस	132
	(15) क्षय जन्य कास में समशर्करा लौह	133
	(16) क्षयकास उरःक्षतादि में द्राक्षारिष्ट	133
18.	**श्वास (दमा) चिकित्सा**	**133**
	(1) श्वास-भेद एवं लक्षण	133
	(2) श्वास में औषधोपचार संग्रह (31 योग)	134
	(3) श्वास रोग पर अन्य उपयोगी योग (अनेक योग)	134
	(4) श्वासादि में लवंगादि चूर्ण	138
	(5) कास-श्वासादि में तालीशादि चूर्ण	138
	(6) सर्वश्वासहर व्याघ्री चूर्ण	138
	(7) प्रबल श्वास पर पिप्पल्यादि लौह	139
	(8) ऊर्ध्व श्वासादि में सूर्यावर्त रस	139
	(9) श्वासान्तक अवलेह का अव्यर्थ योग	139
	(10) श्वासादि पर पुनर्नवा रसायन (सन्यासी योग)	139
	(11) श्वास में उपयोगी प्रवालमूल भस्म	140
	(12) श्वास रोग नाशक रसायन	140
	(13) श्वास चिन्तामणि रस	140
	(14) श्वास पर हितकर कनकासव	141
19.	**हिक्का (हिचकी) चिकित्सा**	**141**
	(1) कारण और प्रकार	141
	(2) हिक्का रोग में औषधोपचार (20 योग)	142
	(3) सर्वहिक्का पर प्रभावकारी योग	143
	(4) हिचकी में अष्टदशांग क्वाथ	143
	(5) हिक्का रोग में उपयोगी नस्य (टपका)	143
	(6) हिक्का हर मधु-पलाण्डु योग	143
	(7) हिक्का में अन्य उपयोगी योग	143
	(8) हिक्का रोग में धूम्रपान	144
	(9) हिचकियों में अन्य सरलोपचार (अनेक योग)	144
(20)	**जुकाम (प्रतिश्याय) चिकित्सा**	**145**
	(1) जुकाम के प्रकार और लक्षण	145
	(2) प्रतिश्याय-भेदों का विवेचन एवं चिकित्सा सूत्र	146
	(3) प्रतिश्याय में सरलोपचार (21 योग)	147

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

(4) जुकाम में दाडिमाष्टक चूर्ण 149
(5) जुकाम-खाँसी में लवंगादि चूर्ण 149
(6) प्रतिश्याय पर देशी चाय 149
(7) बिगड़े हुए जुकाम पर गोलियाँ 150
(8) ज्वरयुक्त जुकाम में त्रिभस्म योग 150
(9) जुकाम पर कुछ अन्य सरल योग 150

21. सिर दर्द के औषधोपचार 150
(1) सिर दर्द के भेद और लक्षण 150
(2) सामान्य सिर-दर्द 151
(3) अर्धावभेदक और सूर्यावर्त 152
(4) जीर्ण सिर दर्द 152
(5) सिरदर्द पर सरल योग संग्रह (५२ योग) 152
(6) सिरदर्द नाशक मरहम (देशी बाम) 156
(7) सिरदर्द में विशिष्ट दशमूल तैल 156
(8) त्रिदोषजादि सिरदर्द में अपर दशमूल तैल 156
(9) शिरः शूलादि में षड्बिन्दु तैल 156
(10) शिरोरोग में चन्द्रकान्त रस 157
(11) शिरोरोग हर रस 157
(12) शिरःशूलादि वज्र रस 157
(13) महालक्ष्मी विलास रस का शिरःशूल में प्रयोग 157
(14) सिरदर्द पर उत्तम प्रयोग 157
(15) शिरःशूलघ्न नस्य एवं लेप 158
(16) सिरदर्द में कड़वे तैल की नस्य 158

22.. राजयक्ष्मा (तपैदिक) की चिकित्सा 158
(1) क्षय के प्रकार एवं लक्षण 158
(2) क्षय के तीन स्तर (स्टेज) 159
(3) जीवाणु संक्रमण के स्रोत 159
(4) औषधोपचार के सूत्र 159
(5) रोगी की परिचर्या 159
(6)यक्ष्मा में सरल औषधि-योग संग्रह (अनेक योग) 160
(7) क्षय रोग में लहशुन (लहसन) का उपयोग 161
(8) कूष्माण्ड (पेठा) क्षयनाशक है 161
(9) क्षय में केला का सेवन 162

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
	(10) यक्ष्माहर द्राव	163
	(11) यक्ष्माविध्वंसिनी वटी	163
	(12) क्षयहरण पनाक	164
	(13) क्षय रोग नाशक सलाद	164
	(14) क्षयनाशक अवलेह	164
	(15) क्षय में उपयोगी भल्लातक योग	164
	(16) क्षय में दौर्बल्य नाशक योग	164
	(17) यक्ष्माहर रसायन	165
	(18) क्षयनाशक सरल सफल योग	165
	(19) क्षय में लाभकारी भृंगराजासव	165
	(20) क्षय, क्षयजकास में श्रृंग्यर्जुनाद्य चूर्ण	166
	(21) क्षयजकास में कर्पूराद्य चूर्ण	166
	(22) कास-क्षय शामक एलादि चूर्ण	166
	(23) क्षयहारी अल्प व्यय का अपूर्व योग	166
	(24) क्षय में जीवन्त्यादि घृत	166
	(25) क्षय ज्वरादि में पाराशर घृत	166
	(26) यक्ष्मादि में कुंकुमाद्य घृत	167
	(27) क्षयकास ज्वरादि में पानीय कल्याणक घृत	167
	(28) यक्ष्मादि में पंचातिक्त घृत	167
	(29) घृत-तैल निर्माण की विधि	168
	(30) क्षयादि में चन्दनादि तैल	168
	(31) क्षय ज्वरादि में महाचन्दनादि तैल	168
	(32) क्षय में सुखद उत्सादन (उबटन)	168
	(33) क्षयादि में द्राक्षावलेह	168
	(34) सन्निपातज क्षयादि में अष्टांगावलेह	169
	(35) क्षयजकासादि में चातुर्भद्रावलेह	169
	(36) राजयक्ष्मा पर वासावलेह	169
	(37) राजयक्ष्मादि में वृहद्वासावलेह	169
	(38) प्रबल राजयक्ष्माहर वृहद्वासावलेह	170
	(39) क्षयादि पर अगस्त्य हरीतकी	170
	(40) क्षयादि में उपयोगी सूतशेखर रस	170
	(41) धातुगत ज्वरादि पर सितपूर्णेन्दु रस	171
	(42) सर्व क्षयभेद में जयमंगल रस	171

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
	(43) क्षयोपयोगी वसन्त मालती रस	171
	(44) सर्वक्षयादि में लक्ष्मी विलास रस	172
	(45) यक्ष्मा में अत्यंत हितकर महालक्ष्मी विलास रस	172
	(46) क्षय में सर्वज्वरहर लौह	172
	(47) क्षयजकास में मुस्तकाद्यवलेह	172
	(48) यक्ष्मान्तक लौह	172
	(49) क्षय में अत्यन्त हितकर शिलाजत्वादि लौह	173
	(50) क्षयकेसरी रस	173
	(51) वृहद् क्षय केसरी रस	173
	(52) सर्वयक्ष्मा में उपयुक्त सर्वांग सुन्दर रस	173
	(53) यक्ष्मा में लाभकारी गर्भपोटली रस	174
	(54) राजयक्ष्मा नाशक अस्त्रहरारिष्ट	174
	(55) क्षय में उपयोगी द्राक्षारिष्ट	174
	(56) क्षय पर बब्बूलारिष्ट	174
	(57) क्षयज दौर्बल्य में पिप्पल्यासव	175
	(58) क्षयज ज्वरादि में अमृतारिष्ट	175
	(59) क्षयावस्थानुसार उपयोगी औषधि -क्रम	175
	(60) क्षयनिवारणार्थ एक सामान्य औषधिक्रम	177
	(61) रोग मुक्ति पर औषधि -व्यवस्था	178
	(62) क्षय रोग में पथ्यापथ्य	178
23.	**कांस्यक्रोड (प्लूरिसी) की चिकित्सा**	**179**
	(1) प्लूरिसी रोग के मुख्य भेद	179
	(2) प्लूरिसी के सामान्य लक्षण	179
	(3) चिकित्सा सूत्र	180
	(4) प्लूरिसी में सरलोपचार संग्रह (अनेक योग)	180
	(5) प्लूरिसी में लौह रसायन (1)	182
	(6) प्लूरिसी में लौह रसायन (2)	182
	(7) कांस्य क्रोड में त्र्यूषणादि लौह	183
	(8) कोष्ठबद्धता पर हरीतकी खण्ड	184
	(9) प्लूरिसी में एक अन्य रसायन योग	184
	(10) मल-मूत्र शोधनार्थ त्रिफलादि योग	184
24.	**हिस्टीरिया की चिकित्सा**	**185**
	(1) हिस्टीरिया या अपतन्त्रक (कारण और लक्षण)	185

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
	(2) हिस्टीरिया निवारणार्थ सरलोपचार संग्रह	186
	(3) हिस्टीरिया पर अव्यर्थ औषधि	187
	(4) योषापस्मारघ्न रसायन	187
	(5) योषापंस्मार नियन्त्रक मरिचादिवटी	187
	(6) हिस्टीरिया पर वृहत्भूत भैरव रस	188
	(7) हिस्टीरिया में ब्राह्मी बूटी का प्रयोग	188
	(8) हिस्टीरिया में खमीरा गांजवाँ	188
	(9) योषापस्मारह वटी	189
25.	**मृगी रोग की चिकित्सा**	**189**
	(1) मृगी के कारण और लक्षण	189
	(2) चिकित्सा सूत्र	190
	(3) अपस्मार की विचित्र दवा (फकीरी योगी)	190
	(4) अपस्मारहर नस्य	190
	(5) अपस्मार पर शास्त्रीय योग	191
	(6) मृगी मैं वातकुलान्तक वटी	191
	(7) मृगी में चण्डभैरव रस	191
	(8) अपस्मार में स्मृतिसागर रस	192
	(9) मृगी में लघुपंचगव्य घृत	192
	(10) मृगी में बृहत्पंचगव्य घृत	192
	(11) अपस्मार में महाचैतस रस	192
	(12) अपस्मार में पानीय कल्याणक घृत	193
	(13) मृगी में हितकर पलंकपाद्य तैल	193
	(14) मृगी में कल्याणक चूर्ण	194
	(15) मृगी में पदत्राण नस्य या उपानह नस्य	194
	(16) मृगी में सर्पगन्धा का उपयोग	194
	(17) मृगी में सर्पगन्धादिवटी का विशिष्ट योग	195
	(18) अपस्मारादि में हिंग्वाद्य घृत	195
	(19) अपस्मारादि में चतुर्भुज रस	195
	(20) पथ्यापथ्य	195
26.	**उन्माद और उसके उपचार**	**196**
	(1) उन्माद के भेद और लक्षण	196
	(2) चिकित्सा सूत्र	196
	(3) उन्माद में सरलोपचार (अनेक योग)	197

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
	(4) उन्माद भंजन रस	198
	(5) उन्मादगज केसरी (1)	198
	(6) उन्मादगज केसरी (2)	198
	(7) उन्माद में महावात विध्वंसन रस	199
	(8) उन्माद गजांकुश रस	199
	(9) पागलपन में भूतांकुश रस	199
	(10) विक्षिप्तता में कामदुधारस	200
	(11) उन्मादनाशिनी वटी	200
	(12) पथ्यापथ्य	200
27.	**चर्म रोगों के औषधोपचार**	**200**
	(1) अनेक प्रकार के चर्म रोग	200
	(2) खुजली, कण्डु या पामा	201
	(3) खुजली पर सरल औषधियाँ	201
	(4) खाज पर अचूक मरहम	201
	(5) खाजहर अव्यर्थ औषधि	202
	(6) दाद या ददु (रिंग वार्म)	202
	(7) दाद पर औषधियाँ	202
	(8) केश दद्रु नाशक दवाएं	203
	(9) चर्मकील और मस्सों की दवा	203
	(10) छाजन की दवा	203
	(11) फोड़े-फुंसी आदि पर बिरोजा का मरहम	203
	(12) फोड़ा आदि पर अन्य महरम	204
	(13) सभी प्रकार के चर्म रोगों पर अर्क उसवा	204
	(14) पावों में बिवाई फटने की दवाएँ	204
	(15) श्वित्र, श्वेतकुष्ठ या ल्यूकोडर्मा पर औषधियाँ	205
	(16) कुष्ठ रोगों में औषधियाँ	206
	(17) कुष्ठादि पर लघुमंजिष्ठादि क्वाथ	206
	(18) नाड़ी व्रण या नासूर पर औषधियाँ	206
	(19) नासूर पर सप्तांग गूगल	207
	(20) व्रणशोथ नाशक औषधियाँ	207
	(21) गलगन्थी या कण्ठमाला रोग	207
	(22) कण्ठमाला नाशक वटी	207
	(23) कण्ठमाला पर अव्यर्थ रसायन	208

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
	(24) कण्ठमाला पर एक उत्तम योग	208
	(25) कण्ठमाला पर कांचनार गुटिका	208
	(26) गण्डमाला नाशक कण्डन रस	208
	(27) कण्ठमाला पर अन्य सामान्य योग	209
	(28) कण्ठमाला में शुण्ठयादि अर्क	209
	(29) कण्ठमाला में सामान्य औषधोपचार	209
	(30) कण्ठमाला की गिल्टियों पर मरहम	210
	(31) गिल्टियों पर सरल योग	210
28.	**गठिया (आमवात) के औषधोपचार**	**210**
	(1) गठिया रोग के लक्षण	210
	(2) आमवात पर सामान्य औषधियाँ	210
	(3) आमवात पर योगराज गुग्गुल	213
	(4) आमवात पर सरल योग	213
	(5) आमवात पर अजमोदादि वटक	213

द्वितीय खण्ड
स्त्री रोगों की चिकित्सा

1.	**प्रदर रोग और उसके उपचार**	**214**
	(1) कारण, प्रकार और लक्षण	214
	(2) प्रदर रोग पर एक अनुभूत सरल योग	215
	(3) प्रदर रोग पर उपयोगी चूर्ण	215
	(4) श्वेत प्रदर पर उत्तम योग	215
	(5) सब प्रकार के प्रदर पर	215
	(6) प्रदर की सामान्य चिकित्सा	215
	(7) प्रदर पर सरल औषधोपचार संग्रह	218
	(8) प्रदर पर अव्यर्थ योग	218
	(9) नारी रोग नाशक अशोक वृक्ष	219
	(10) औषधि रूप में अशोक का उपयोग (अनेक योग)	220
	(11) प्रदर पर अत्युत्तम अशोकघन वटी	221
	(12) प्रदर पर अशोकघनादि अन्य योग	221
	(13) प्रदर पर अत्यन्त प्रभावकारी अशोक मिश्रण	222

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
	(14) प्रदर पर लाभकारी क्वाथ	222
	(15) नारी-स्वप्रदोष तथा मिथ्या गर्भ	222
	(16) नारी रोगों पर अशोक घृत	222
	(17) नारी रोगों पर लोक प्रसिद्ध अशोकारिष्ट	223
	(18) प्रदरादि पर अशोक पानक	223
	(19) नारी रोगों पर अशोकावलेह	223
	(20) सर्व प्रदर हर अर्क अशोक	223
	(21) प्रदर नाशक पुष्यानुग चूर्ण	224
	(22) प्रदर हर चन्दनादि चूर्ण	224
	(23) प्रदरारि लौह	224
	(24) प्रदरान्तक लौह	224
	(25) प्रदरारि रस	225
	(26) प्रदरादि पर रत्नप्रभा वटी	225
2.	**कष्टार्तव**	**225**
	(1) कारण, लक्षण	225
	(2) सरल औषधोपचार	226
	(3) कष्टार्तव में विजया वटी	226
	(4) रजःप्रवर्तिनी वटी	226
3.	**नष्टार्तव**	**226**
	(1) औषधोपचार	227
	(2) नष्टपुष्पान्तक रस	227
	(3) नष्टार्तव पर सरल योग	227
4.	**गर्भाशय-शोथ**	**227**
	(1) गर्भाशय शोथ के कारण, लक्षण	227
	(2) आवश्यक उपचार तथा औषधि-प्रयोग	228
	(3) गर्भाशय-शोथ पर सरल उपचार	229
	(4) पुराने गर्भाशय-शोथ पर	230
	(5) गर्भाशय-शोथ पर उत्तम योग	230
5.	**गर्भावस्था और उसके रोग**	**230**
	(1) प्रकार-विवेचन, लक्षणादि	230
	(2) गर्भावस्था से पूर्व आवश्यक जानकारी	232
	(3) सन्तानदाता रस-योग	232

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
	(4) स्त्रीरोग नाशक लक्ष्मणा लौह	232
	(5) योनिशोधनार्थ लक्ष्मणारिष्ट	233
	(6) योनिदोषनाशक अन्य औषधियाँ	233
	(7) पलाश-पानक का गर्भाशय पर प्रभाव	234
	(8) वन्ध्यात्वनाशक गरीबी चूर्ण	234
6.	**अत्यार्तव रोग**	**234**
	(1) रोग-विवेचन एवं कारण	234
	(2) चिकित्सा सूत्र	235
	(3) अत्यार्तव शामक योग	235
	(4) महिला संजीवनी वटी	235
	(5) अधिक स्राव पर प्रभावकारी योग	236
	(6) अधिक रजःस्राव पर रसायन	236
	(7) सन्तान हेतु प्रभावकारी चिकित्सा क्रम	236
7.	**गर्भरक्षार्थ मासिक औषधि व्यवस्था**	**237**
	(1) प्रथम मास में गर्भरक्षार्थ व्यवस्था	237
	(2) दूसरे मास में गर्भरक्षा - व्यवस्था	238
	(3) तीसरे मास में गर्भरक्षार्थ सेवनीय योग	238
	(4) चौथे मास में गर्भ-सुरक्षार्थ औषधियाँ	238
	(5) पाँचवें मास में सेवनीय दवाएँ	238
	(6) छठे मास में सेवनीय दवाएँ	238
	(7) सातवें मास में औषधि-योग	239
	(8) आठवें मास में सरल औषधि	239
	(9) नवें मास में सेवनीय औषधि	239
	(10) दशम मास में सेवनीय औषधि	239
	(11) गर्भस्राव शामक योग (अनेक दवाएँ)	240
	(12) गर्भरक्षक अव्यर्थ औषधि	240
	(13) गर्भरक्षक वर्धमान पलाश-पत्र	241
	(14) गर्भविनोद रस	241
	(15) स्वर्ण चिन्तामणि और गर्भविलास रस	241
	(16) गर्भ चिन्तामणि रस	241
	(17) गर्भिणी रोगहर इन्दुशेखर रस	241
	(18) कल्बुलहज्र का स्त्री रोगों में अद्भुत प्रभाव	242
	(19) गर्भिणी के ज्वर निवारणार्थ क्वाथ	242

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
	(20) गर्भावस्था में वमन और औषधोपचार	242
	(21) गर्भावस्था में योनिकण्डु (खाज) (अनेक योग)	243
	(22) गर्भावस्था के अतिसार पर औषधियाँ	244
	(23) गर्भावस्था में पेचिश (आमातिसार) (अनेक योग)	245
	(24) गर्भिणी को कब्ज (अनेक योग)	245
	(25) गर्भवती को अनिद्रा (अनेक योग)	245
	(26) गर्भावस्था में मूर्च्छा (अनेक योग)	246
	(27) मूर्च्छान्तक रस	246
	(28) मूर्च्छानाशक सुधानिधि रस	247
	(29) गर्भावस्था में चक्कर आना (अनेक योग)	247
	(30) गर्भावस्था में मूत्रावरोध (अनेक योग)	247
	(31) सुखपूर्वक प्रसव हेतु औषधियाँ	248
	(32) मूढ़ गर्भ अथवा मृतवत्स पर प्रभावकारी दवाएँ	248
8.	**सूतिका रोगों के उपचार**	**248**
	(1) जरायुपात में विलम्ब	248
	(2) सूतिका को मक्कल-शूल	248
	(3) सूतिका को ज्वरादि उपद्रव	249
	(4) सूतिकार्थ दशमूल क्वाथ	249
	(5) अन्निसारादि पर सूतिकान्तक रस	250
	(6) ज्वरातिसार कासादि पर सूताकाघ्नरस	250
	(7) ज्वर, कास, शोथ पर रसशार्दूल	251
	(8) प्रसूतावस्था में रक्तस्रावाधिक्य	251
	(9) सूतिकाशोथादि पर सूतिकामरण रस	251
	(10) सूतिका को सौभाग्यशुण्ठी पाक या मोदक	252
	(11) प्रसूता के शूल-संग्रहणी आदि पर भद्रोत्कटावलेह	252
	(12) प्रसूतावस्था में कम्पवात पर औषधि-व्यवस्था	253

तृतीय खण्ड

9.	**शिशुरोग और औषधोपचार**	**254**
	(1) कारण और लक्षण	254
	(2) नाभिपाक पर त्रिफलादि तैल	254
	(3) घावों पर जात्यादि तैल	255
	(4) नाभिपाक पर अन्य उपचार	255

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
	(5) अमृततुल्य माता का दूध	255
	(6) दुग्धाभाव पर औषधोपचार (अनेक योग)	255
	(7) स्तन्यद्वेष (शिशु का दूध न पीना)	256
	(8) शिशुओं का आहार-क्रम से भेद एवं चिकित्सा सूत्र	256
	(9) बकरी या गाय का दूध	257
	(10) शिशु को वातज आक्षेप (तन्द्रा, मूर्च्छा)	257
	(11) पोतडे से व्रण या क्षत	257
10.	**शिशु रोगों में हितकर जड़ी-बूटियाँ**	**257**
	(1) अतिविषा (अतीस) का बाल रोगों में उपयोग	257
	(2) बाल चतुर्थी या बाल चातुर्भद्रिका	258
	(3) खाँसी पर श्रृंग्यादि चूर्ण	258
	(4) अतीस के अन्य बाल रक्षक योग (अनेक नुस्खे)	258
	(5) पिप्पली (छोटी पीपल) और शिशु रोग	259
	(6) पिप्पली युक्त औषधियाँ (अनेक योग)	259
	(7) कालीमिर्च से शिशुरोग निवारण	260
	(8) बाल रोगों पर कालीमिर्च के प्रयोग (अनेक योग)	260
11.	**बाल रोगों पर अन्य उपयोगी औषधियाँ**	**261**
	(1) बाल रोग नाशक कुटजावलेह	261
	(2) बाल रोगों पर प्रसिद्ध अरविन्दासव	261
	(3) बाल रोगान्तक रस	262
	(4) बाल रोगों पर सरल हितकर योग (अनेक दवाएँ)	262
	(5) सोंठ से शिशु रोगों का निवारण	263
	(6) आमातिसारहर क्वाथ	263
	(7) सर्वातिसार नाशक शुण्ठयादि क्वाथ	263
	(8) शिशु ग्रहणी हर शुण्ठयादि चूर्ण	263
	(9) बालकासश्वास नाशक चूर्ण	263
	(10) शुण्ठयादि नेत्राश्च्योतन (आईड्राप)	263
	(11) बाल रोगों में प्रभावकारी हरड़	263
	(12) हरड़ के अनेक योग	264
	(13) काकड़ासिंगी और शिशु रोग	264
	(14) ज्वरातिसारहर कर्कटादि चूर्ण	264
	(15) खाँसी नाशक श्रृंग्यादि चूर्ण	265
	(16) ज्वर-कासघ्न पुष्करादि चूर्ण	265

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
	(17) वायविडंग का कृमिनाशक प्रभाव	265
	(18) वायविडंग के शिशु हितैषी योग	265
	(19) शिशुजीवनार्क (विडंगादि अर्क)	266
	(20) देशी बालामृत	266
	(21) बेलगिरी का आमातिसार नाशक वरदान	267
	(22) बेल (बिल्ब) के कतिपय योग	267
	(23) सर्वरोगहर तुलसी का बालरोगों में उपयोग	267
	(24) रोगानुसार तुलसी के प्रयोग	268
12.	**खसरा या रोमान्तिका (Measles)**	**268**
	(1) रोग लक्षण	268
	(2) खसरा के रोग निवारक उपचार	268
	(3) खसरा में औषधोपचार	269
13.	**शीतला, चेचक, मसूरिका**	**269**
	(1) रोग के लक्षण	269
	(2) चेचक का पूर्वरूप	269
	(3) चेचक रोगारम्भ के रूप	269
	(4) धातुगत मसूरिकाएँ	270
	(5) चेचक के सामान्य लक्षण	270
	(6) चेचक के प्रतिरोधक उपाय (अनेक योग)	270
	(7) चेचक में संक्रमण से बचने का उपाय	271
	(8) चेचक या मसूरिका के औषधोपचार	271
	(9) चेचक में सेवनार्थ अन्य उपयोगी औषधियाँ	271
	(10) शीतला में आमलक्यादि चूर्ण	271
	(11) चेचक दब जाने पर औषधोपचार	272
	(12) चेचक के दागों की दवा	272
14.	**बालशोष (सूखा) रोग**	**272**
	(1) प्रकार, कारण और लक्षण	272
	(2) चिकित्सासूत्र	273
	(3) सूखा रोग पर औषधोपचार	273
	बालशोषनाशक वटी	273
	सूखारोग नाशक अवलेह	274
	बालशोष में अत्यन्त प्रभावकारी वटी	274

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
	बालशोष पर अव्यर्थ दवा	274
	सूखा और रिकेट्स पर जहर मोरा खताई भस्म	275
	सूखा में मालिश का तैल	275
	सूखा रोग पर अन्य सरल औषधोपचार	275
	सूखा रोग पर चमत्कारी सन्यासी योग	276

पुरुष रोगों की चिकित्सा

	मधुमेह	**277**
	(1) मधुमेह की उत्पत्ति के मुख्य कारण	277
	(2) मधुमेही की जीवनचर्या	278
	(3) बहुमूत्र एक पृथक् उपसर्ग भी	278
	(4) मधुमेहारम्भ में औषधि प्रयोग (अनेक योग)	278
	(5) मधुमेह एवं बहुमूत्र दोनों में लाभकारी योग	280
	(6) मधुमेह नाशिनी वटी	280
	(7) मधुमेह पर अत्यन्त प्रभावकारी गोलियाँ	280
	(8) मधुमेहान्तक वटी	280
	(9) मधुमेहनाशक वृहद् सोमनाथ रस	281
	(10) मधुमेह पर सरल उपयोगी वटी	281
6.	**मूत्रकृच्छ, सुजाक या गोनोरिया**	**282**
	(1) मूत्रकृच्छ के प्रकार	282
	(2) मूत्रकृच्छ, सुजाक, पूयमेहादि के औषधोपचार	283
	(3) सुजाक नाशक विभिन्न उपयोगी योग	283
	(4) मूत्रकृच्छ नाशक गोक्षुराद्यासव	285
	(5) सुजाक नाशक कैप्सूल	285
	(6) सुजाक में प्रभावशाली चूर्ण	285
	(7) सुजाक पर त्रिविक्रम तैल	286
	(8) सुजाक पर सरल योग	286
	(9) सुजाक पर सरल अचूक औषधि	286
	(10) मूत्रकृच्छ पर कुशावलेह	286
	(11) मूत्रकृच्छ में अन्य सरल प्रयोग	286
	(12) मूत्रकृच्छ एवं पथरी नाशक चूर्ण	287
	(13) मूत्रकृच्छ हर वटिका	287
	(14) मूत्रकृच्छ में धूम्रपान	287

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
7.	**उपदंश (फिरंग) और उसकी चिकित्सा**	**287**
	(1) उपदंश रोग के कारण और लक्षण	287
	(2) वर्तमान भयंकर व्याधि एड्स	288
	(3) चिकित्सा एवं औषधि-प्रयोग का सिद्धान्त	289
	(4) सामान्य औषधोपचार	289
	(5) उपदंश पर अत्यन्त प्रभावकारी वटी	290
	(6) उपदंश पर अव्यर्थ महौषधि	290
	(7) उपदंशान्तक वटी	290
	(8) उपदंश पर एक अन्य लाभकारी योग	291
	(9) उपदंश कुठार वटी	291
	उपदंशनाशक त्रिपुरभैरव रस	291
	(10) उपदंश में धूम्रपान का एक मात्रिक योग	291
	(11) उपदंश पर सरल, सस्ता अपूर्व योग	292
	(12) पथ्यापथ्य विचार	292
	(13) उपदंशनाशक प्रक्षालन, तैल एवं लेप	292
	(14) प्रक्षालनार्थ अश्वत्थादि क्वाथ	292
	(15) ज्यन्त्यादि, धवादि, निम्बादि, यवासकादि क्वाथ	292
	(16) त्रिफला क्वाथ	293
	(17) लेपन हेतु लेप और तैल	293
8.	**अण्डवृद्धि और उसके उपचार**	**294**
	(1) वातज अण्डवृद्धि को दूर करने के उपाय	295
	(2) पित्तज अण्डवृद्धि का उपचार	295
	(3) कफज अण्डवृद्धि की चिकित्सा	295
	(4) अन्य प्रकार की वृद्धि	295
	(5) कुछ अन्य लाभकारी प्रयोग	296
	(6) वृद्धिबाधिका वटी	296
	(7) पथ्यापथ्य निर्देश	296
9.	**प्रमेह या शुक्रमेह**	**297**
	(1) कारण और प्रकार	297
	(2) प्रमेह रोग में सरल प्रयोग संग्रह (58 योग)	297
	(3) प्रजनन संस्थान पर त्रिफला का अद्भुत प्रभाव	302
	(4) हरड़, उसके गुण और प्रयोग	303
	(5) सर्वदोष निवारक बहेड़ा	305

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
	(6) बहेड़े के उपयोगी प्रयोग	305
	(7) प्रमेहोपचार में सर्वसाधक आमला	307
	(8) आमले के लाभकारी योग (अनेक प्रयोग)	308
	(9) प्रमेह में आमले का हलुआ	309
	(10) प्रमेह में पुष्टिवर्धक आमला पाक	309
	(11) पुरुष रोगों में प्रसिद्ध च्यवनप्राशावलेह	310
	(12) त्रिफला के विभिन्न हितकारी योग	310
	(13) धातुक्षयादि पर त्रिफलादि अवलेह	312
	(14) बल-वीर्यवर्धक त्रिफलादि घृत	312
	(15) त्रिफला के शुक्रदोषनाशक सरल योग	313
	(16) विभिन्न वनस्पतियों का प्रजनन संस्थान पर प्रभाव	314
	(17) भाँग और उसके प्रयोग	314
	(18) भाँग का बलवीर्य-वर्धक अमीरी योग	314
	(19) पौष्टिक विजयादि पाक	315
	(20) गोखरू के वीर्यवर्धक प्रयोग	315
	(21) गोखरू मिश्रित कामोद्दीपक योग	316
	(22) सर्व प्रमेह नाशक गोक्षुरादि चूर्ण	316
	(23) धतूरे के क्लैण्य नाशक प्रयोग	316
	(24) कामवर्द्धक मदनानन्द रस	317
	(25) अंजीर के बलवर्धक प्रयोग	317
	(26) अत्यन्त पौष्टिक अंजीर पाक	318
	(27) शुक्र तारल्य हर अंजीर पाक.	318
	(28) वीर्य विकारों पर गिलोय के प्रयोग	318
	(29) स्वप्नदोष नाशक वटी	319
	(30) तुलसी और उसका बाजीकरण प्रभाव	319
	(31) तुलसी के वीर्यदोष नाशक योग	320
	(32) अश्वगन्ध और उसके अव्यर्थ योग	320
	(33) अत्यन्त शक्तिवर्धक अश्वगन्धादि चूर्ण	321
	(34) असगन्ध का स्वप्नदोषनाशक योग	321
	(35) बाजीकरणार्थ अश्वगन्ध घृत	322
	(36) इन्द्रिय शैथिल्य पर सुन्दर योग	322
	(37) स्तम्भक, उत्तेजक माजून	322
	(38) शुक्रदोष एवं मस्तिष्क दौर्बल्य नाशक चूर्ण	322

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
	(39) शक्तिवर्द्धक महाकामदेवघृत	323
	(40) वीर्यवर्द्धक अश्वगन्धादि पाक	323
	(41) विधायरा और उसके शक्तिवर्धक योग	324
	(42) सर्वविकार नाशक विधायरा पाक	324
	(43) बल-बुद्धिवर्धक विधायरा रसायन	324
	(44) विधायरे का वीर्यवर्धक सरल प्रयोग	324
	(45) सर्व प्रमेहनाशिनी वटी	325
	(46) प्रमेह में सरल उपयोगी नुस्खा	325
	(47) गोरखमुण्डी के प्रभावकारी योग	325
	(48) गोरखमुण्डी के वीर्यविकार नाशक नुस्खे	326
	(49) वीर्यदोषों में गोरखमुण्डी चूर्ण	327
	(50) कोंच के बीजों का बल-वीर्य पोषक प्रभाव	327
	(51) पुरुष रोगों में विभिन्न योग	327
	(52) शक्तिवर्धक अमीरी योग	329
	(53) शुक्रतारल्यनाशक योग	329
	(54) स्तम्भनकारी योग	329
	(55) मूसली के पौष्टिक नुस्खे	329
	(56) मूसली के प्रमेहान्तक योग	330
	(57) मूसलीयुक्त सरल सस्ता नुस्खा	330
	(58) कालीमूसली और उसके मिश्रित योग	330
	(59) अत्यन्त लाभदायक मूसली रसायन	331
	(60) शुक्रतारल्यनाशक मूसली चूर्ण	331
	(61) कामानन्द वटिका	331
	(62) शतावर और उसके लाभकारी योग	332
	(63) लालमेहनाशक शतावर्यादि कषाय	332
	(64) शुक्रमेहादि में शतावरीघृत	332
	(65) इन्द्रिय-दौर्बल्य में मदन मंजरी वटिका	332
	(66) शतावर मिश्रित अन्य पोषक योग	333
	(67) धातुतारल्य नाशक शतावर्यादि चूर्ण	333
	(68) शुक्रशोधक शतावर्यादि घृत	334
	(69) बल-वीर्यवर्धक शतावर्यादि पाक	334
	(70) मुलहठी और उसके उत्कृष्ट प्रयोग	334
	(71) प्रमेहादि में उपयोगी नुस्खे	335

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
	(72) रासायनिक गुण सम्पन्न मधुयष्टि चूर्ण	335
	(73) अत्यन्त पुष्टिकर योग	335
	(74) प्रमेह निवारणार्थ सरल मधुयष्टि योग	336
	(75) अत्यन्त पुष्टिदायक मधुयष्टि वटिका	336
	(76) कामोद्दीपक मधुयष्ट्यादि वटी	336
	(77) बाजीकरण मधुयष्ट्यादि चूर्ण	336
	(78) विदारीकन्द और प्रजननतन्त्र	337
	(79) विदारीकन्द के वीर्यवर्धक योग	337
	(80) दुर्बलता पर अत्यन्त गुणकारी औषधि	338
	(81) परमपुष्टिदायक स्तम्भक योग	338
	(82) वातज प्रमेह में हितकर एवं पौष्टिक योग	338
	(83) शक्तिदाता महामन्मथ रसायन	338
	(84) सरल बाजीकरण रसायन	339
	(85) शुक्रदोष निवारक सरल औषधि	339
	(86) शक्तिदाता विदारी चूर्ण	339
	(87) क्लैव्य-नाशक चूर्ण	339
	(88) विदारीकन्द के विभिन्न शक्तिवर्धक योग	340
	(89) क्षीरविदारी और उसके प्रयोग	341
	(90) वीर्यदोष नाशक क्षीर विदारी पाक	342
	(91) अकरकरा और उसके मिश्रित योग	342
	(92) अकरकरा का स्तम्भक प्रभाव	342
	(93) कामानन्ददायिनी वटी	342
	(94) सिद्ध बाजीकरण योग	343
	(95) प्रभावकारी स्तम्भक चूर्ण	343
	(96) पुष्टिकारी सरल औषधि	344
	(97) बाजीकर वटिका	344
	(98) स्तम्भनार्थ लेप	344
	(99) शुक्रसंस्थान पर प्रभावकारी केशर	344
	(100) केशर का विभिन्न रोगों पर प्रभाव	345
	(101) केशर के अनेक उपयोगी नुस्खे	345
	(102) शुक्रक्षय पर केशरादि वटी	346
	(103) स्तम्भनकारी मदनानन्द दायिनी वटी	346
	(104) शक्तिवर्धक रसायन	346

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
	(105) वीर्यदोषनाशिनी गोली	346
	(106) शुक्रतारल्यहर कुंकुमादि वटी	347
	(107) स्तम्भक केशरादि वटी	347
	(108) स्तम्भनार्थ कुंकुमादि अवलेह	347
	(109) अत्यन्त पौष्टिक केशरादि क्षीर (खीर)	348
	(110) शक्तिवर्द्धक केशरादि मोदक	348
	(111) बलवर्धिनी केशरवटी	348
	(112) शुक्र संजीवनी वटी	349
	(113) गंगेरन (नागबला) और मूत्र संस्थान	349
	(114) कामाग्नि सन्दीपन पाक	350
	(115) खिरेंटी आदि अन्य प्रभावी वनस्पतियाँ	350
	(116) अतिवृष्य मादक पाक	351
	(117) ईसबगोल एक चमत्कारी वनस्पति	351
	(118) ईसबगोल युक्त वृष्य औषधि	352
	(119) कामशक्तिवर्धक चूर्ण	352
	(120) स्तम्भक चूर्ण	352
	(121) शुक्रतारल्य पर सरल गरीबी प्रयोग	352
	(122) प्रमेहनाशक अत्यन्त हितकारी चूर्ण	353
	(123) प्रमेह, मधुमेह निवारक चूर्ण	353
	(124) अत्यन्त बलवर्धक चूर्ण	353
	(125) दौर्बल्य नाशक पेय	353
	(126) शुक्रदोषों पर ब्राह्मी बूटी	353
	(127) स्वप्नदोष निवारिणी ब्राह्मी वटी	354
	(128) सारस्वतादि बाजीकर योग	355
	(129) शक्तिवर्द्धक अमीरी वटी	355
	(130) वीर्यवर्द्धक पौष्टिक ब्राह्मी पेय	355
	(131) शरद में सेवनीय सारस्वत खण्ड	356
	(132) शुक्रदोष पर ब्राह्मी पाक	356
	(133) स्वप्नदोषादि में ब्राह्मी का सरल योग	357
	(134) तालमखाना और उसके पौष्टिक योग	357
	(135) वीर्यदोषनाशक विभिन्न योग	358
	(136) पुरुष रोगों में भल्लातक (भिलावे)	359
	(137) भल्लातक शोधन और सेवन विधान	360

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
	(138) बल-वीर्यवर्धक भिलावा पाक	360
	(139) वातज-कफज दोषघ्न भिलावे का हलुआ	361
	(140) दुर्बलता पर भल्लातक सार (द्राव)	362
	(141) वीर्यदोष शामक नारसिंह चूर्ण	362
	(142) पुरुष रोगों पर चमत्कारी शिलाजीत	362
	(143) शिलाजीत की शोधन विधि	363
	(144) शक्तिवर्धक शिलाजत्वादि वटी	364
	(145) शुक्रमेहान्तक वटिका	364
	(146) प्रमेहादि में शिलाजतु - मधुयष्टि योग	364
	(147) धातुक्षय नाशिनी शिलाजतु वटिका	364
	(148) प्रमेहादि पर शिलाजीत की सुलभ गोलियाँ	365
	(149) वीर्यवर्धक शिलाजत्वादि चूर्ण	365
	(150) सर्वप्रमेहघ्न शिलाजत्वादि मोदक	365
	(151) स्वप्रमेहादि पर शिलाजीत की अन्य वटी	366
	(152) बल-वीर्य वर्धक सालब मिश्री	366
	(153) सालब मिश्री के प्रमेहघ्न योग	366
	(154) प्रमेह-मधुमेह में लाभकारी वटी	367
	(155) बादाम का शक्ति वर्धक प्रभाव	368
	(156) बादाम के बल-वीर्य वर्धक योग	368
	(157) धातुदौर्बल्य में घृत बादाम	370
2.	**शुक्रमेहादि में लाभकारी विभिन्न योग संग्रह**	**370**
	(1) स्वप्रदोषादि पर गुडुच्यादि चूर्ण	370
	(2) क्लैव्य नाशक पाक	370
	(3) सरल बाजीकर पाक	370
	(4) शुक्रसंजीवनी वटी	371
	(5) शक्तिदाता बाजीकरण योग	371
	(6) वीर्यपुष्टिकर घृतकुमारी मोदक	372
	(7) बाजीकरण मिठाई (रसगुल्ला)	372
	(8) बाजीकरण महारसायन	372
	(9) स्तम्भनकारी योग	372
	(10) शक्तिवर्धक, स्तम्भक औषधि	372
	(11) पुरुषार्थवर्धक स्तम्भक अन्यान्य योग	373
	(12) शिलाजीत के कुछ सरल योग	374

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
	(13) अन्य सरल पौष्टिक योग	374
3.	**स्वप्नदोष की सिद्ध चिकित्सा**	**375**
	(1) स्वप्नदोषघ्न नुस्खे (अनेक योग)	376
	(2) स्वप्नदोष पर प्रभावकारी पाताल गारुडी	377
	(3) प्रमेहादि पर सरल योग संग्रह (अनेक योग)	377
	(4) स्वप्नदोष में वंशलोचन का हितकर प्रभाव	378
	(5) वंशलोचन के कतिपय योग	379
	(6) स्वप्नदोषादि पर सितोपलादि का उपयोग	379
	(7) स्वप्नदोष पर अन्यान्य उपयोगी प्रयोग (अनेक योग)	380
	(8) स्वप्नदोष निवारणार्थ ज्ञातव्य नियम	382

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्रथम - खण्ड

1.उदर रोग और उनके उपचार

कब्ज के कारण

मानव शरीर में जितने भी रोग उत्पन्न होते हैं, उन सबका आरम्भ प्रायः उदर रोग से होता है। एक कहावत है कि 'पेट खराब तो शरीर खराब' और यह कहावत कुछ मिथ्या भी नहीं है। अनुपयुक्तआहार का प्रभाव सबसे पहिले उदर पर ही पड़ता है। सन्तुलित सात्विक भोजन हमारे शरीरमें विद्यमान सभी धातुओं को पुष्ट करता है। किन्तु असन्तुलित, असात्विक और असामयिक भोजन सबसे पहले पाचन तन्त्र पर ही प्रहार करता है, जिसके कारण अनेक प्रकार की बीमारियाँ उत्पन्न हो जाती हैं।

उदर रोगों में मुख्य व्याधि मलावरोध अर्थात् कब्ज है इस रोग के शिकार लगभग अस्सी प्रतिशत मनुष्य तो मिलेंगें ही। इसमें स्त्री या पुरुष का भी कुछ भेद नहीं है। यद्यपि आयुर्वेदज्ञों ने मलावरोध को कोई स्वतन्त्र रोग नहीं माना है, तथापि अब, इस युग में तो यह एक प्रकार से महारोग ही है।

मलावरोध के अनेक कारण हो सकते हैं। सर्व प्रथम गरिष्ठ भोजन को ही लें, जो कि पचता भी नहीं और निःसरित भी नहीं होता और होता भी है तो फिर पतले दस्त कर देता है। पेट में दर्द, अफरा , वमनेच्छा, वमन आदि सब मलावरोध के ही उपसर्ग रूप में प्रकट होते हैं। मलावरोध के अन्य कारणों में— आलस्य में पड़े रहना, परिश्रम न करना,व्यायाम न करना, दिन में सोना, रात्रि में जागना, मादक द्रव्यों का सेवन करना आदि अनेक अव्यवहारिक क्रियाएं हैं, जो पाचन तन्त्र के अनुकूल नहीं होती।

शोक, चिन्ता, क्रोध, हिंसा- प्रतिहिंसा का उदय होना, अधिक स्त्री - संसर्ग और अश्लील विचारों में डूबे रहना आदि से भी मलावरोध हो जाता है। मल- मूत्र का वेग रोकना, विभिन्न रोगों में ऐसी दवाएँ खाना जो मल को खुश्क कर देती हों, इन सब कारणों से भी कब्ज का हो जाना स्वाभाविक है।

कब्ज के लक्षण

कब्ज रहने पर शरीरमें अनेक उपसर्ग उत्पन्न हो जाते हैं। उनमें लक्षण भी भिन्न- भिन्न होते हैं। संक्षेप में पेट पर भारीपन, अफरा, पेटदर्द, जी मिचलाना आदि उपद्रव तो चाहे जब देखे जा सकते हैं। सिर - दर्द, सर्वांग दर्द, चक्कर आना, खाँसी, श्वास, बबासीर आदि तथा ज्वर भी हो जाता है। रोगी को अनेक बार प्रतीत होता है कि दस्त होगा, किन्तु होता नहीं। इसलिये बार- बार शौच के लिये जाता तथा बहुत समय तक वहाँ बैठा रहता है। फिर निराश लौट आता है। बार- बार थोड़ा- थोड़ा दस्त होना भी मलावरोध का ही सूचक है।

मलावरोध की स्वाभाविक चिकित्सा

रोग कोई भी हो, कैसा भी हो, उसे असाध्य नहीं मान लेना चाहिये। मनुष्य उपाय करे तो उसे सफलता भी मिल जाती है। कभी- कभी देखा गया है कि आहार-.विहार को सन्तुलित और सात्विक करने, परिश्रम और व्यायाम करने आदि से ही बहुत कुछ लाभ हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
वस्तुतः स्वाभाविक उपाय ही सर्वोपरि समझने चाहिये, औषधादि का सेवन तो रोग- निवृत्ति में सहायक उपाय ही है। किन्तु वर्तमान समय में लोगों ने औषधि को ही मुख्य उपाय समझ लिया है, बात- बात पर डॉक्टर के पास जाते हैं और उन ऐलोपैथिक दवाओं का आश्रय लेते हैं, जो सामयिक लाभ तो दिखाती हैं, किन्तु विभिन्न तन्त्रों में गड़बड़ी उत्पन्न कर देती हैं। परिणाम स्वरूप अन्य व्याधियाँ प्रत्यक्ष दिखाई देने लगती हैं।

किन्तु ध्यान रखें किकोई भी औषधि तब तक स्थायी लाभ नहीं पहुँचा सकती, जब तक रोग के कारणों को दूर न किया जाय। स्वाभाविक चिकित्सा का मूल मन्त्र यही है कि जिन कारणों से रोग उत्पन्न हुआ है, सर्व प्रथम उनका निवारण करो। अपने आहार को सुधारो। सामान्य सात्विक भोजन और उच्च विचार मनुष्य के स्वास्थ्य को भी सदा अनूकूल रखते हैं।

यदि विबन्ध (कब्ज) रहता ही है तो यह ध्यान रखो कि आहार विहार में संयम के बिना काबू में नहीं आयेगा। वरन् वह लोकोक्ति ही चरितार्थ होगी कि 'रोग बढ़ता ही गया, ज्यों- ज्यों दवा की'। कुछ नियम बनायें, सन्तुलन बनायें और अपनी दिनचर्या को नियमित करें।

- प्रातः काल प्रसन्न मन से शय्या छोड़कर उठें। ईश्वर में विश्वास हो तो उसका स्मरण करें। न विश्वास हो तो विश्वकल्याण की भावना करें और भ्रमण के लिये ऐसे मार्ग से जायें, ऐसे स्थान में घूमें जहाँ धूल- धक्कड़ न हो। ठण्डी, मन्दी, प्रदूषण- रहित वायु की प्राप्ति हो सके तो वह अमृत के तुल्य होगी।
- प्रातः काल ताजी पानी का सेवन अधिक लाभकारी होता है। किन्तु पानी शुद्ध प्रदूषित पदार्थों एवं कृमि आदि से भी रहित हो।
- नित्य प्रति प्रातःकाल समय पर शौच जायें। कब्ज की स्थिति में भी शौच के लिये जाना आवश्यक है। उससे मल उतरने में सुविधा रहेगी, न भी उतरे तो उस आदत को न छोड़ें।
- शौच के पश्चात् स्नान अवशय करें। ग्रीष्मादि ऋतुओं में ठण्डे पानी से नहायें और शीत ऋतु में गुनगुने से अधिक गर्म पानी से स्नान भी शरीर के अनूकूल नहीं रहता। वरन उससे त्वचा पर कालापन आता है।
- हरी सब्जियाँ अधिक खाएँ- पालक, बथुआ, मूली, टमाटर, सहजना (शोभांजन) आदि सभी सुपाच्य और स्वाभाविक रूप से अंग- प्रत्यंग की क्रियात्मकता की वृद्धि में सहायक होते हैं। पालक का सूप, टमाटर या अदरक का सूप, नीबू निचोड़ कर पीने से मलाशय पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है और यह सेवन में स्वादिष्ट भी लगते हैं।
- फलों में अमरूद पाचन - तन्त्र को अनूकूल रूप से प्रभावित करता है। इसके सेवन से कब्ज आदि अनेक विकार दूर हो जाते हैं। यदि प्रातःकालीन नाश्ते में केवल ताजा अमरूद खायें तो उससे कब्ज न रहने में बहुत सहायता मिलेगी। यदि चाहें तो अमरूद के टुकड़े काटकर, नमक, कालीमिर्च एवं नीबू आदि डालकर भी ले सकते हैं। अन्य फलों में पपीता, आम, सन्तरा, अंजीर, आलूबुखारा आदि उत्तम हैं। तात्पर्य यह है कि सभी ऋतुफल मानव प्रकृति के अनुकूल रहते हैं, उनके सेवन से लाभ ही अधिक होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- मलावरोध से ग्रस्त रोगी को बिना छने आटे की रोटी अधिक लाभदायक रहती हैं, क्योंकि उसमें सभी तत्व विद्यमान रहते हैं। उनके कारण वह आटा स्वयं में एक पूर्ण आहार (Whole meal) के रूप में रहता है। इसमें जो भूसी होती हैं वह पौष्टिक होते हुए भी रेचक होती है। अपने इसी गुण के कारण वह आटा मलावरोध दूर करता है और शरीर को शक्ति भी देता है।
- मलावरोध के रोगी को भोजन के साथ पानी पीना आवश्यक है। क्योंकि शुष्क भोजन स्वयं में कब्ज का कारण बन जाता है। यद्यपि भोजन के साथ अधिक पानी पीने का निषेध रहता है, कुछेक मत में भोजन के मध्य में थोड़ा पानी पीना चाहिये, अधिक नहीं पीना चाहिये। क्योंकि अधिक पानी पीने से रस में पतलापन की अधिकता होती है, जिससे पाचनक्रिया में व्यवधान उपस्थित होता है। किन्तु कब्ज के रोगी के लिये यह उचित है कि वह भोजन के साथ तथा भोजन के बाद भी 2-3 घंटे के अन्तर पर उचित मात्रा में पानी पीता रहे।
- कब्ज में चिकनाई भी हितकर रहती है। किन्तु वह आवश्यक मात्रा में ही लेनी चाहिये। रोटी चुपड़ी, खिचड़ी आदि में घृत का सेवन लाभदायक रहेगा। किन्तु घृत के साथ गुंथी मोटी रोटी, बाटी, चूरमा, पकवान या मिष्ठान प्रभृति वस्तुएं पाचन- तन्त्र पर विपरीत प्रभाव डालती हैं। कब्ज के रोगी को उनसे बचना चाहिए।
- दालों में मूँग, मोंठ, मसूर आदि की दालें हल्की रहती हैं। किन्तु उड़द की दाल अधिक गरिष्ठ रहती है। अरहर की दाल भी कुछ अधिक अनुकूल नहीं होती, इसलिये इनका सेवन अपनी प्रकृति और शक्तिके अनुसार ही करना चाहिये।
- कब्ज- रोगियों को वस्ति कर्म का परामर्श दिया जाता है। वर्तमान में आधुनिक चिकित्सक एनीमा द्वारा पेट साफ रखने का निर्देश देते हैं,वह वस्ति से भिन्न कर्म नहीं है। सामान्य अवस्था में जब तक कब्ज पुराना न हुआ हो आधा लिटर गर्म पानी का प्रयोग पूर्ण वयस्क के लिये पर्याप्त है। उससे लाभ न हो तो एरण्ड तैल और थोड़े- से साबुन को पानी में मिलाकर प्रयोग करना उचित समझा जाता है। किन्तु साबुन आदि क्षारीय वस्तुओं के मिश्रण से आन्त्र की दीवार में क्षोभ उत्पन्न हो जाता है, तब गुड़गुड़ाहट या मिथ्या शौचेच्छा के कारण मन में भी क्षोभ और अनुत्साह की उत्पत्ति हो जाती है अतः गर्म पानी का एनीमा अधिक उपयुक्त रह सकता है।

मलावरोध नाशक औषधोपचार

अब यहाँ मलावरोध दूर करने के कुछ औषधोपचारों का वर्णन करना आवश्यक है-

- रात्रि में 1 गिलास गर्म पानी पीवें और प्रातःकाल 1 गिलास ठण्डा बासी पानी पीवें। यह सहज उपचार भी है और एक प्रकार से औषधोपचार के तुल्य लाभकारी भी है। किन्तु यह उपाय कब्ज की आरम्भिक अवस्था में अधिक कारगर होता है।
- रात्रि में शयन समय 4-6 ग्राम सौंफ चबाकर खायें और साथ ही गर्म पानी पीवें। इससे जमा हुआ मल ढीला होने लगता है और प्रातःकाल शौच आसानी से हो जाता है।
- सौंफ को तबे पर डालकर कुछ भूनें। कुछ कच्ची और कुछ पक्की रहने की अवस्था में ही तवे से निकाल कर रखें। भोजन के पश्चात् दोनों समय इसका सेवन करने से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
मलावरोध दूर होने में सहायता मिलती है। इससे भोजन भी पचता है।

- हरड़ का प्रयोग कब्ज में हितकर रहता है। बड़ी हरड़ का चूर्ण रात्रि में गुलकन्द के साथ खाकर ऊपर से गर्म दूध पी लें अथवा छोटी हरड़ के चूर्ण 4-6 माशे की फंकी दूध के साथ लें।
- सनाय, सौंफ, मुलहठी तीनों 10-10 ग्राम, शर्करा 7 ग्राम, एक साथ खरल कर लें। मात्रा 1 से 3 चम्मच तक रोगी का बलाबल देख कर देनी चाहिये। इससे कब्ज दूर होता है तथा अफरा पेट दर्द आदि में लाभ होता है।
- हरड़, पीपल, काला नमक, तीनों समान भाग लें तथा कूट पीस कपड़छन कर रखें। कब्ज, अजीर्ण तथा उदरशूल में हितकर है। मात्रा 1 से 5 ग्राम गर्म जल या सादा ताजा पानी के साथ लक्षण के अनुरूप देनी चाहिए।
- सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, छोटी हरड़, इन्द्रजौ और अपराजिता के बीज 10-10 ग्राम, सेंधा नमक और काला नमक आधा 5-5 ग्राम लें। सब को कूट छान लें तथा इस चूर्ण के समान भार में एलुआ (मुसब्बर)को चूर्ण करके मिलावें। फिर इस सब को ग्वारपाठे के स्वरस में घोटकर चने के बराबर गोलियाँ बनालें।

मात्रा—1 से 2 गोली तक सुखोष्ण (गुनगुने)पानी के साथ प्रातः सायं देनी चाहिये। इससे मलावरोध दूर होगा और यकृत की दुर्बलता मिट जायगी। वस्तुतः यह गोली सब प्रकार के उदर विकार, उदर शूल, पाण्डुरोग तथा यकृत- प्लीहा के उपसर्गों में अत्यन्त हितकर है। पेट में संचित मल को बाहर निकालती और पाचन करती है। इससे अरुचि दूर होती है और खुल कर भूख लगती है।

- उत्तम प्रकार के चना भाड़ पर भुनवा लें और उनके ऊपर का छिलका उतार कर दूर करें। फिर महीन पीसें और इस आटे को किसी चीनी या काँच के बर्तन में रखकर सेंहुड़ के दूध से तर करें। तदुपरान्त पत्थर के खरल में भली प्रकार घोट कर चने के बराबर की गोलियाँ बनाकर सुखा लें।

मात्रा - 1 से 2 गोली गर्म पानी के साथ देने से रोगी को 3-4 दस्त हो जाते हैं। सामान्यतः एक गोली की मात्रा ही पर्याप्त रहती है। कठिन कोठे वालों को दो गोली दे सकते हैं। रोगी को पथ्य में मूँग तथा दाल- चावल की पतली खिचड़ी देनी चाहिये। उदरशूल, विबन्ध आदि में इसका प्रयोग हितकर है।

मलावरोध नाशक त्रिफलादि चूर्ण

त्रिफला 60 ग्राम, सनाय पत्र 40 ग्राम, सौंफ ,गुलाब के पुष्प, बायविडंग और मिश्री 10-10 ग्राम। त्रिफला ताजा एवं साफ लें, उसे रखे हुए चौमास (वर्षा ऋतु) न निकली हो, कीड़ों द्वारा उसका कोई अंग खाया हुआ न हो। इसी प्रकार अन्य द्रव्य भी ताजा और स्वच्छ लेने चाहिए। सभी द्रव्यों को कूट- कपड़छन करें और मिश्री को पृथक पीसकर उसमें मिला दें।

मात्रा—4 से 10 ग्राम तक रोग और रोगी के बलानुसार रात्रिशयन समय सुहाते हुए गर्म पानी के साथ सेवन करें। निरन्तर 3 दिन तक सेवन करने से कब्ज दूर हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कब्ज पर सरल औषधि

बड़ी हरड़ का वक्कल और सनायपत्र 30-30 ग्राम तथा काला नमक 10 ग्राम लेकर विधिवत् कूट - छान कर रखें।

मात्रा—6 से 12 ग्राम तक गर्म पानी के साथ रात्रि भोजन के कम से कम एक घण्टा पश्चात् लेना चाहिये। इससे प्रातः दुपहर से पहिले ही एक या दो दस्त खुल कर हो जायेंगे। यदि एकाध अधिक भी हो जाय तो चिन्ता की कोई बात नहीं। किन्तु 1 मात्रा से दस्त न होने की स्थिति में दूसरे दिन फिर 1 मात्रा दे देनी चाहिये।

कब्ज में सुखोपचार (हल्का जुलाब)

गाजवाँ, गुलाबपुष्प, सोंठ, मुलहठी और मुनक्का 20-20 ग्राम लेकर आधा लिटर जल के साथ औटावें और आधा जल शेष रहने पर उतार कर छान लें। इसमें 20 ग्राम शहद मिला कर प्रातःकाल पीना चाहिये। इससे 2-3 दस्त तक सामान्य रूप से हो जाते हैं, किसी प्रकारका कष्ट नहीं होता। दुर्बल रोगी के लिये क्वाथ द्रव्यों की मात्रा कुछ कम की जा सकती है। आहार में केवल दाल - चावल की खिचड़ी लेनी चाहिये।

विबन्ध- हर चूर्ण

छोटी पीपल और अजमोद 40-40 ग्राम, हरड़ 150 ग्राम, सोंठ 30 ग्राम, सेंधा नमक और काला नमक 5-5 ग्राम लेकर कूट, कपड़ - छन करके रखें।

मात्रा —4 से 10 ग्राम तक गर्म पानी के साथ फंकी लेनी चाहिये। इससे कब्ज दूर होता और उदर शूल अफरा आदि में भी लाभ होता है।

कब्जनाशक अभयादि चूर्ण

बड़ी हरड़ का वक्कल, सनायपत्र और एलुआ 20-20 ग्राम सेंधा नमक 10 ग्राम। हरड़ को घी के साथ भूनें और फिर सबको कूट- छान कर एकत्र करें। यह अभयादि चूर्ण कब्ज को दूर करने में अत्यन्त उपयोगी है।

मात्रा—5 ग्राम से 10 ग्राम तक सुखोष्ण पानी के साथ रात्रि में शयन से पूर्व लेना चाहिए। कब्ज शीघ्र नष्ट होता है।

विबन्धनाशक उत्तम क्वाथ

हरड़ का वक्कल, सनायपत्र, सोंफ, गुलाब - पुष्प और मुनक्का 6-6 ग्राम, इन्द्रायन- मूल और निशोथ 4-4 ग्राम तथा मिश्री 12 ग्राम सभी को अठगुने पानी में डालकर क्वाथ करें तथा आधा शेष रहने पर पिलावें।

यह क्वाथ प्रातः सायं दोनों समय सेवन करना चाहिये। कोष्ठ - शुद्धि के लिये यह एक उत्तम तथा सरल प्रयोग है।

विबन्धघ्नी गुटिका

अशारा रेवन्द 100 ग्राम, निशोथ 50 ग्राम, इन्द्रायन के बीज, सौंठ और शंख - भस्म 15-15 ग्राम, जयपाल (जमालगोटा) शुद्ध 3 ग्राम लेकर सभी काष्ठोषधियों को कूट- छान लें और फिर जयपाल और शंखभस्म मिलाकर महीन करें। तदुपरान्त इन्द्रायन की जड़ का क्वाथ बनाकर उससे सभी द्रव्यों को एकत्रित भावना दें अर्थात् खरल करते हुए 250-250 मिलीग्राम की गोलियाँ बना लें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मात्रा —1 से 4 गोली तक कठिन कब्ज में भी तुरन्त कार्य करती है। रात्रि में शयन से पूर्व गर्म जल के साथ यह गोलियाँ देनी चाहिये।

कोष्ठबद्धता विनाशिनी अव्यर्थ वटी

चित्रक का चूर्ण, आक की जड़ का चूर्ण, नौसादर, काला नमक और गोमूत्र में शोधित कुचला 10-10 ग्राम, सोंठ, कालीमिर्च और भुनी हुई हींग 5-5 ग्राम लेकर, सबका महीन चूर्ण करें और कागजी नीबू के स्वरस में घोट कर 125-125 मिलीग्राम की गोलियाँ बनाकर सुखावें और शीशी में भर कर सुरक्षित रखें।

मात्रा —1 से 2 गोली तक सुखोष्ण जल के साथ दिन में दो बार देनी चाहिये। आवश्यक होने पर अधिक बार भी दे सकते हैं। इसके प्रयोग से मलावरोध में अवश्य लाभ होता है। पतले दस्त भी इसके सेवन से बँध जाते हैं। मन्दाग्नि, उदर- शूल, अफरा, मरोड़, आदि रोगों पर लाभ करने वाली है।

कब्ज पर अन्य सरल दवाएँ

हरड़ का वक्कल, छोटी पीपल और काला नमक, तीनों समान भाग लेकर कूट - छान लें तथा चूर्ण करके रखें।

मात्रा—5 से 10 ग्राम, गर्म पानी के साथ सेवन करने से कब्ज दूर हो जाता है। अपच, उदर का भारीपन, दर्द आदि उपसर्गों में भी अपेक्षित लाभ होता है।

उदर रोग और कब्जनाशक तरल

नौसादर और काला नमक 25-25 ग्राम, भुनी हुई हींग और टाटरी 6-6 ग्राम तथा ताजा शुद्ध पानी 1 बड़ी बोतल। सभी द्रव्यों को महीन पीस कर पानी में डालें। इसे 2-3 दिन धूप में रखना चाहिये। तरल तैयार है।

मात्रा —2 चम्मच से 8 चम्मच तक रोग और बलाबल के अनुसार पिलानी चाहिये। इसके सेवन से कब्ज दूर होता है तथा अपच, अजीर्ण, मन्दाग्नि आदि में भी बहुत लाभ करता है। यदि पानी के स्थान पर सौंफ के अर्क में डालकर तरल बनावें तो अत्यधिक गुणकारी हो जाता है।

मलावरोध पर अवलेह

निशोथ का चूर्ण 50 ग्राम, गुड़ 200 ग्राम तथा अमलताश के गूदे से बनाया हुआ क्वाथ आधा लिटर लेकर मन्दाग्नि पर पकावें ओर जब पकते - पकते अवलेह बन जाय, तब उतार कर ठंडा करें और सुरक्षित रखें।

मात्रा —1 से 3 ग्राम क्वाथ सेवन करने से खुलकर दस्त हो जाता है। आवश्यक होने पर अधिक मात्रा भी दी जा सकती है। रोग को स्थिति के अनुसार अनुपान भी निश्चित किया जा सकता है। यह क्वाथ पेट के भारीपन, अपच आदि में भी उपयोगी रहता है।

कब्ज पर स्वानुभूत योग

हिंग्वाष्टक चूर्ण, छोटी हरड़ का चूर्ण और सोड़ा बाई कार्ब (खाने का सोड़ा) तीनों समान भाग लेकर खरल द्वारा एक जीव करके रखें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मात्रा —1 ग्राम से 4 ग्राम तक रोग और रोगी का बलाबल देखकर देना चाहिये। अनुपान में ताजा पानी अथवा गर्म पानी देना चाहिये। इसके सेवन से कब्ज में पर्याप्त लाभ होता है। शौच खुलकर होने लगता है। यह प्रयोग हमने हजारों व्यक्तियों पर अजमाया और प्रायः अस्सी प्रतिशत लाभकारी सिद्ध हुआ।

सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपल, अजवाइन, सेंधा नमक, काला जीरा, श्वेत जीरा और हींग सभी समान भाग लेकर हींग और दोनों जीरों को भून लें, फिर सब द्रव्यों को कूट- छान कर एकत्र घोट लें। आयुर्वेद का सुप्रसिद्ध हिंग्वाष्टक चूर्ण यही है। इसके सेवन से कब्ज दूर होता है, अजीर्ण और मन्दाग्नि आदि उदर - विकार नष्ट होते हैं।

मात्रा —1 से 2 ग्राम तक। मन्दाग्नि में लगभग 1 ग्राम चूर्ण भोजन के प्रथम ग्रास के साथ खाना चाहिये। वातज विकार भी इस प्रकार सेवन करने से नष्ट होते हैं। कुछेक मत में इसकी 1 मात्रा गाय के घी में मिलाकर भात अथवा खिचड़ी के साथ लेने से पर्याप्त लाभ होता है। भोजन के पश्चात् अन्न पचाने के हेतु भी इसे खा सकते हैं।

उदर रोगों पर लवण - भास्कर चूर्ण

छोटी पीपल, पीपलामूल, धनिया, कालाजीरा, सेंधा नमक ,विड नमक, तेजपात, तालीसपत्र और नागकेशर40-40 ग्राम, कालानमक 100 ग्राम, कालीमिर्च, श्वेतजीरा और सोंठ 20-20 ग्राम, समुद्र नमक 160 ग्राम, अनार दाना 80- ग्राम, और अम्ल वेंत 40 ग्राम लेकर सभी को कूट कपड़छन करके रखें। आयुर्वेदोक्त सुप्रसिद्ध भास्कर लवंण अथवा लवण भास्कर चूर्ण यही है, जो सब प्रकार के उदर रोगों में अनुपान भेद से हितकर है।

मात्रा —1 से २ ग्राम तक रोग और रोगी के बलाबल अनुसार मट्ठा, दही का पानी, सुरा, ईख के रस का सिरका अथवा काँजी आदि के साथ देने का निर्देश है। इनके सेवन से कब्ज दूर होता है, पतले दस्त रुक जाते हैं, आमदोष और वात दोष नष्ट होते हैं , संग्रहणी, बबासीर, वातगुल्म, सामान्य उदरशूल, भगन्दर, प्लीहा, पथरी कष्ट, हृद्रोग, श्वास, कास आदि में भी बहुत काम करता है। मन्दाग्नि के लिये तो विशेष रूप से निर्दिष्ट है।

कब्ज- हर सेन्धवादि चूर्ण

सेंधा नमक, चित्रकमूल, हरड़ का वक्कल, लोंग, काली मिर्च, छोटी पीपल, फूला हुआ सुहागा, सोंठ, चव्य, अजवाइन, सोंफ और वच, सभी समान भाग लेकर, कूट- पीस, कपड़छन करें और कागजी नीबू के स्वरस की 21 दिन तक भावनाएँ दें और फिर छाया में सुखा कर बोतल में भर लें।

मात्रा —1 से 2 ग्राम तक गर्म पानी के साथ सेवन करने से कब्ज प्रभृति विकार दूर होते हैं। मट्ठा में सेंधा नमक मिला कर उसके साथ सेवन करने से अनियमित दस्त तथा उदर का भारीपन मिट जाता है। काँजी या दही के तोड़ आदि के साथ खाने से अग्नि दीप्त होती है। वस्तुतः रोग और रोगी की प्रकृति के अनुरूप मात्रा एवं अनुपान निश्चित करना चाहिये।

अजीर्णनाशक त्रिवृतादि मोदक

निशोथ की जड़, दन्ती (जमालगोटा की जड़) पीपलामूल, छोटी पीपल और चित्रकमूल 20-20 ग्राम, गिलोय और सोंठ 50-50 ग्राम, गुड़ 500 ग्राम। सभी औषधि द्रव्यों को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कूट- कपड़छन करके चूर्ण बनावें और गुड़ की चाशनी करके उसके साथ 6-6 ग्राम के मोदक बना लें।

मात्रा—1 लड्डू प्रतिदिन प्रातःकाल सेवन करने से कुछ दिनों में ही विष्टम्भ, मल निस्सरण में कष्ट, पेट का भारीपन, दर्द तथा मन्दाग्नि, अजीर्ण आदि का पूर्ण रूप से शमन हो जाता है। लड्डू खाकर ताजा पानी पी सकते हैं। अथवा आवश्यक होने पर सुखोष्ण पानी का प्रयोग करें।

दृष्टव्य—विरेचन कराने के लिये मृदु कोष्ठ वाले व्यक्ति को क्वाथ, कषाय, हिम आदि की मात्रा 2 तोले कही है। मध्यम अवस्था अथवा मध्यम कोष्ठ वाले को 4 तोले की और अति कठिन कोष्ठ वाले के लिये 8 तोले की निर्दिष्ट है।

2. आयुर्वेद में ऋतु- अनुरूप विरेचन का विधान

आयुर्वेद ने इस बात का भी विशेष ध्यान रखा है कि किस ऋतु में कौन- सी विरेचक औषधि उपयुक्त रहेगी — शारंगधर संहिता में इसका उल्लेख इस प्रकार मिलता है।

वर्षा ऋतु—निशोथ, इन्द्रयव, छोटी पीपल, सोंठ और मुनक्का का विधिवत् क्वाथ बनाकर छान लें और उसमें शहद मिलाकर पान करें। इस सुखद विरेचन द्वारा वर्षा काल में उत्पन्न कब्ज का शमन होता है।

शरद ऋतु— निशोथ, जवासा, नागर मोथा, श्वेत चन्दन, शर्करा और मुनक्का क्वाथ का पान करना चाहिए अथवा निषोथादि का चूर्ण करें और मुनक्का का क्वाथ बनाकर उसके साथ चूर्ण को 5 से 10 ग्राम की मात्रा में सेवन करना चाहिये। शरद ऋतु में कब्ज रहने पर यह हितकर है।

हेमन्त ऋतु—निशोथ, चित्रकमूल, पाठा, श्वेत जीरा, देवदारु, वच और हेमक्षीरी को कूट- छान कर चूर्ण बनावें और गर्म जल के साथ 5-10 ग्राम की मात्रा में सेवन करें। यदि हेमन्त ऋतु में मलावरोध रहे तो इससे शीघ्र लाभ होता है।

शिशिर ऋतु— छोटी पीपल, सोंठ, सेंधा नमक, काली सर और निशोथ का चूर्ण शहद में मिलाकर चाटने से शिशिर ऋतु में कब्ज - नाशक सिद्ध होता है।

वसन्त ऋतु—शिशिर ऋतु में व्यवहृत चूर्ण इस ऋतु में भी मलावरोध दूर करता है।

ग्रीष्म ऋतु—निशोथ के चूर्ण में समान भाग शर्करा मिलाकर ग्रीष्म ऋतु में विद्यमान कब्ज पर काबू पाया जा सकता है।

आयुर्वेद में सभी रोगों में वात, पित्त, कफ आदि के प्रकोप से अनेक उपसर्गों की प्राप्ति होती है। इसलिये दोषानुसार ही औषधि सेवन उचित माना जाता है। शारंगधर संहिता का मत यहाँ प्रस्तुत किया जाता है।

दोष- प्रकोपानुरूप औषधि निर्णय

वात- दोष के कारण हुए मलावरोध में निशोथ, सेंधा नमक और सोंठ समान भाग का चूर्ण नीबू के स्वरस के साथ पीना चाहिये। पित्त दोष की अधिकता से उत्पन्न कब्ज में निशोथ का चूर्ण मुनक्का के साथ पीने से लाभ होता है। कफ दोषाधिक्य वाले मलावरोध में सोंठ,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
छोटी पीपल और काली मिर्च का चूर्ण करके, त्रिफला क्वाथ में गोमूत्र मिलाकर, उसके साथ सेवन करना चाहिये। इस प्रकार दोषज मलावरोध का उपचार सहज सम्भव है।

विरेचन में कल्कादि की मात्रा

कब्जादि में विरेचनार्थ प्रयुक्त द्रव्यों की मात्रा इस प्रकार कही गई है कि कल्क, मोदक और चूर्ण की जो मात्रा शहद और घृत के साथ चाटनी हो, वह 1 तोला (लगभग 12 ग्राम) होना चाहिये किन्तु रोग और रोगी की सामर्थ्य के अनुसार उसे 2 अथवा 4 तोले तक बढ़ाया जा सकता है।

किन्तु वर्तमान काल में, नहीं कहा जा सकता कि यह मात्रा सभी रोगियों को उपयुक्त हो सकती है या नहीं ? हमारे विचार में आरम्भ में अल्प मात्रा ही देनी चाहिये अर्थात् औषधि- द्रव्य के गुण- कर्म- स्वभाव को देखकर ही 3 ग्राम से 12 ग्राम तक देना पर्याप्त है। विशेष परिस्थितियों में ही अधिक ऊँची मात्रा का निर्णय लेना चाहिये। हम तो अनेक चूर्णों आदि का सेवन 1 ग्राम से आरम्भ करने का परामर्श देते रहें हैं।

औषधिजन्य अतिसार का प्रतिकार

किन्तु मलावरोध के लिये प्रयुक्तऔषधादि के अधिक मात्रा में सेवन करने या विपरीत प्रभाव पड़ने के कारण कभी- कभी अधिक दस्त हो जाते हैं। उनके प्रतिकारार्थ अतिसार रोकने वाली दवाएँ लेनी चाहिएं। यदि चावल के धोबन को शहद में मिलाकर पिला दें तो उससे, दस्त स्वाभाविक रूप से रुक जाते हैं। यह एक सरल उपाय है, आगे चलकर अतिसार रोकने के उपायों पर प्रकाश डालेंगे। किन्तु अभी हम एक अद्भुत आयुर्वेदिक मोदक पर प्रकाश डालते हैं।

दस्त करने और रोकने को अभयादि मोदक

बड़ी हरड़, काली मिर्च, सोंठ, वायबिडंग, आँवला,छोटी पीपल, पीपलामूल, दालचीनी, तेजपात और नागरमोथा 10-10 ग्राम, दन्तीमूल 20 ग्राम, निशोध 80 ग्राम और शर्करा 60 ग्राम सभी को कूट कपड़छन करें और आवश्यक मात्रा में शहद मिलाकर 12-12 ग्राम के मोदक बना लें।

मात्रा —1-1 मोदक प्रातःकाल खाकर, ऊपर से ठण्डा ताजा पानी पीवें तो दस्त होने लगेंगे और वे दस्त तभी बन्द होंगे,जबकि गर्म पानी पीवेंगे। वस्तुतः यह एक अद्भुत औषधि है। जो अनुपान - भेद से दस्त करती है और रोक भी देती है। इसके सामान्य रूप से सेवन करने से अनेक रोग दूर हो जाते हैं, जैसे कि विषम ज्वर, मन्दाग्नि, पाण्डु, खाँसी, भगन्दर, बवासीर, कुष्ठ,वायु- गोला,अफरा, सुजाक, पथरी, सर्वांग- शूल एवं अनेक प्रकार की उदर- व्याधियाँ। सदा सेवन करते रहने से पलित रोग (बालों का पकना, श्वेत होना) आदि में पर्याप्त लाभ होता है। इसका सेवन विभिन्न रोगों और उपसर्गों में उनके अनुरूप अनुपान के साथ किया जाना चाहिये। रोगी को यह भी परामर्श दिया जाय कि वह संयमित आहार- विहार का पालन करे और अपथ्य से परहेज करे।

अग्निमांद्यनाशक हुतासन रस

शुद्ध गन्धक, शुद्ध पारद तथा फुलाया हुआ सुहागा 1-1 भाग, शुद्ध मीठा विष 3 भाग, और काली मिर्च 8 भाग लेकर चूर्ण करें और फिर 24 घंटे लगातार कागजी नीबू के रस में खरल करके मूंग प्रमाण गोलियाँ बना लें। इसका सेवन भी नीबू के रस केसाथ करें। इससे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
शूल, अरोचक, गुल्म, विशूचिका, अग्निमांद्य, अजीर्ण, सन्निपात (त्रिदोष), शीत, जड़ता तथा शिरोरोग भी दूर होते हैं।

इस औषधि की मात्रा 100 से 300 मिलीग्राम तक की पर्याप्त है। रोग- भेद के अनुसार उचित अनुपान निश्चित करके सेवन करायें तो निश्चय ही अपेक्षित लाभ सम्भव है।

3.जलोदर और उसका औषधोपचार

इस रोग में उदरावरण में जल का संचय हो जाता है। यह वस्तुतः एक कष्टसाध्य रोग है जो चिकित्सा में उपेक्षा करने पर दुस्साध्य भी बन जाता है। वैसे यह रोग उदर रोग का ही एक रूप है, जिसका आरम्भ अग्निमांध से ही होता है। अपच, अजीर्ण या अग्निमान्ध की स्थिति में जब रोगी को अधिक प्यास लगती हो और वह अधिक पानी पीता हो तो उसे जलोदर रोग उत्पन्न हो सकता है।

रोग आरम्भ होने से पहिले अजीर्ण होता है, भूख नष्ट हो जाती है, शक्तिक्षीण पड़ जाती है, मलाशय में मल का संचय होने लगता है, अल्प परिश्रम से श्वास फूलने लगताहै, उदर बढ़ने लगता है और पाँवों में सूजन आने लगती हैं। अल्प भोजन भी उदर पर भारीपन उत्पन्न कर देता है,पेट पर अफरा और पेडू में पीड़ा प्रतीत होती है।

तदुपरान्त जब रोग प्रकट होता है, तब उपर्युक्त लक्षणों में वृद्धि हो जाती है। हाथ- पाँव में सूजन, अफरा, शरीर में दुर्बलता और कृशता, किन्तु उदर का बढना, उदर शूल, अतिसार, पसली में दर्द, खाँसी, श्वास, स्वरभंग आदि अनेक लक्षण हो सकते हैं।रोग बढ़ने पर उदर में पानी भर कर झूल जाता है, पानी भरी हुई मशक के समान प्रतीत होता है।पेट के एक ओर आघात करते हुए, दूसरी ओर हाथ रखने पर लगता है कि पानी भीतर डोल रहा है।

इनके अतिरिक्तअन्य उपद्रव या लक्षण भी हो सकते हैं। उन सभी की ओर ध्यान देना चिकित्सक का कर्त्तव्य है। उदर रोग में प्रयुक्त की जाने वाली औषधियों के साथ लाक्षणिक औषधि योगों का व्यवहार रोग निवारण में सहायक हो सकताहै। महामहोपाध्याय गोविन्ददास ने अपने भैषज्य रत्नावली; ग्रन्थ में जलोदर का एक उपाय शस्त्र कर्म बताया है। उनका कथन है कि जलोदर में शास्त्रोक्त विधि के अनुसार शस्त्रकर्म करना चाहिये। शस्त्र से उदर चीर कर, उसमें संचित जल को निकाल दें। इस रोग में पतला आहार देने का निषेध है। किन्तु उस प्रकार के उपचार की अपेक्षा औषधि - प्रयोग अधिक सरल और सुखावह हो सकता है। गोविन्ददास भी इस रोग में दशमूलादि क्वाथ का निर्देश करते हैं।

जलोदर पर दशमूलादि क्वाथ

दशमूल, देवदारू, सोंठ, गिलोय, पुनर्नवा, और हरड़ समान भाग मिलाकर कुल 2 तोला लें और सोलह गुने पानी के साथ क्वाथ करें। चौथाई शेष रहनेपर उतार कर छानें और रोगी को मिलावें। इस क्वाथ के सेवन से जलोदर, शोथ, श्लीपद, गलगण्ड तथा वात रोग आदि का शमन होता है।

उदरशोथ नाशक हरीतक्यादि क्वाथ

हरड़, सोंठ, देवदारु, पुनर्वा और गिलोय समान भाग में जौकुट द्रव्य 2 तोला लेकर 16 गुने पानी में चतुर्थांश शेष क्वाथ करें। इस क्वाथ में किंचित गुग्गुलु गोमूत्र में डालकर मिलावें। इसके पीने से सभी प्रकार के उदर रोग और शोथ में अत्यन्त लाभ होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

शोथोदर पर देवदारुमादि योग

देवदारू, सहजने की छाल, अपामार्ग समान भाग एकत्र करके गोमूत्र के साथ पीसें। इसके पीने से बढ़ा हुआ उदर, कृमि, शोथयुक्त या दूषणयुक्त उदर रोग भी ठीक हो जाता है। इसी योग में यह भी लिखा है कि केवल असगन्ध को गोमूत्र में पीस कर पीने से भी वही लाभ निश्चित है।

वस्तुतः इस रोग में गोमूत्र विशेष रूप से हितकर है, क्योंकि वह मूत्र है और मूत्र अधिक होने से दोषों का निर्हरण और द्रव का शोषण स्वाभाविक रूप से होता है। गोमूत्र का प्रभाव यकृत पर भी पर्याप्त पड़ता है, जिससे वह दोष- रहित होने लगता है और यकृत निर्दोष हो तो सूजन और पाण्डुता का परिहार भी स्वतः होने लगता है। इसलिये जिन औषधियों के साथ अनुपान रूप में गोमूत्र का प्रयोग हो सकता है, उनसे शीघ्र लाभ सम्भव है 'भैषज्य रत्नावली' का ही पटोलाद्य चूर्ण भी इसमें उपयोगी है।

जलोदरादि पर पटोलाद्य चूर्ण

परवल की जड़, हल्दी, वायविडंग और त्रिफला 2-2 तोले, कमीला 4 तोले, नीलनीमूल 6 तोले, निशोथ 8 तोले लेकर कूट छान कर रख लें। मात्रा 1 से 2 माशे तक गोमूत्र के साथ सेवन करावें। इस चूर्ण के प्रयोग से दस्त होंगे, तब रोगी को हल्का आहार- पेय अथवा मण्ड देना चाहिये। फिर रोगी को 6 दिन तक त्रिकुटा (सोंठ,मिर्च, पीपल) डालकर औंटाया हुआ दूध दिया जाय जब तक रोग निर्मूल न हो जाय तब तक यह दूध सेवन कराते रहें। इस प्रकार इस चूर्ण के सेवन से सभी प्रकार के उदर रोग, जलोदर, कामला पाण्डु और शोथ की समाप्ति होती है।

वस्तुतः जलोदर की उत्पत्ति का मुख्य कारण मल - संचय है, इसलिये उस संचित मल को निकालना अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिये कब्ज आदि के प्रकरण में अनेक विरेचक योग हमने लिख दिये हैं, उनमें से किसी उपयुक्त योग का व्यवहार किया जा सकता है। 'भैषज्य रत्नावलि' में भी इस प्रकार के अनेक योग लिखे हैं, उनमें भेदिनीवटी का प्रयोग सरल भी है, उसे यहाँ लिखते हैं —

विरेचनार्थ भेदिनी वटी

गोखरू, थूहर का दूध और पिप्पली (छोटी पीपल) को खरल करके गोलियाँ बना लें। इसके सेवन से विरेचन होकर प्रबल रोग भी शान्त हो जाते हैं।

उदर रोगों की निवृत्ति के साथ साथ रोगी की शक्ति अधिक क्षीण न होने पाये, इसका ध्यान रखना आवश्यक होता है। भैषज्यविदों ने इसके लिये भी उपयुक्त औषधि योगों का निर्देश दिया है चिकित्सकों को इसके लिये उपयुक्त व्यवस्था लक्षणानुसार करनी चाहिये। स्वर्णभस्म, मुक्ताभस्म आदि मिश्रित योग दिये जाय तो इस समस्या का भी निराकरण हो जाता है।

जलोदरादि में वारि- शोषण रस

शुद्ध गन्धक 24 भाग, वंगभस्म 12 भाग, शुद्ध पारद 6 भाग, अभ्रक भस्म 14 भाग लौह भस्म 8 भाग, ताम्र भस्म 9भाग, स्वर्ण भस्म 2 भाग, रजत भस्म 7 भाग हीरक ,भस्म 13 भाग, स्वर्णमाक्षिक भस्म 16 भाग, काशीस भस्म 18 भाग,शुद्ध तूतिया 6 भाग, शुद्ध हरताल 4 भाग, मैनशिल 3 भाग, शिलाजीत 5 भाग, मुक्ता भस्म 1 भाग और भुना हुआ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
सुहागा 2 भाग लेकर सभी द्रव्यों को एकत्र कर और जम्बीरी नीबू के रस में सात भावनाएँ देकर गोली बनायें तथा मूसा में रखकर बालुका यन्त्र द्वारा 24 घण्टे तक पकने दें। स्वांग शीतल होने पर निकालें और 7-7 भावनाएँ क्रमशः मौला सिरी के बीज, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, गिलोय, त्रिफला विष्णुकान्ता और रोहू मछली के पित्त की देकर 2-2 रत्ती की गोलियाँ बना लें।

मात्रा — एक- एक गोली कालीमिर्च के चूर्ण के साथ देने से मूर्च्छित सन्निपात का रोगी शीघ्र चैतन्यावस्था को प्राप्त होता है। किन्तु कफजन्य रोग ग्रहणी, मन्दाग्नि, लोहा पाण्डु, शूल रोग, उदर रोग आदि में यह महौषधि त्रिफला- क्वाथ के साथ देनी चाहिये। दूषित कुष्ठ में भी काकगूलर के रस से देने से लाभ करती है। इसके सेवन से शक्ति और अग्नि बढ़ती है, रंग निखरता है। वारिशोषण नाम होने के कारण इस रस के सेवन से जलोदर के जल का शोषण होने का भी आभास होता है।

जलोदरारि रस

पीपल, काली मिर्च, ताम्र - भस्म और हरिद्राचूर्ण समान भाग लेकर सेंहुड़ के दूध के साथ खरल करें। फिर इस द्रव्य का जितना वजन हो, उतनी मात्रा में शुद्ध जयपाल - बीज मिलाकर खरल करें और सुरिक्षत रखें। इसकी मात्रा आधी रत्ती से अधिक नहीं है।

इसके सेवन से जलोदर के रोगी को विरेचन होते हैं, इससे संचित मल निकल कर कोष्ठ शुद्धि होती है, तब जलोदर पूर्णरूप से नष्ट हो जाता है। जब दस्त रोकने हों, तब रोगी को दही युक्त खट्टे पदार्थों का आहार दें। सायं समय उसे चावल और मूँग का यूष देने चाहियें। उदरारि रस का सेवन भी जलोदर को दूर करने में उत्तम है। भैषज्य - रत्नावली का यह योग इस प्रकार है :—

सर्वोदरारि रस

रससिन्दूर, शुक्ति भस्म, शुद्ध तूतिया भस्म, शुद्ध जयपाल, पीपल और अमलताश का गूदा। सबको एकत्र कर सेंहुड़ के दूध के साथ खरल करके आधी- आधी रत्ती की वटी बनावें और सुखा कर रखें। आवश्यकतानुसार 1 से 2 गोली तक इमली के रस के साथ सेवन करावें।

इस उदरारि रस से पहिले विरेचन होते हैं, फिर जलोदर का निवारण हो जाता है। पथ्य में रोगी को दही- चावल देना चाहिये। शारंगधर संहिता में उदर रोगों पर नारायण चूर्ण का निर्देश दिया है, जो— सभी प्रकार के दोषों को दूर करने वाला है, जलोदर में भी वह लाभदायक है। उसका नुस्खा यह है :—

नारायण चूर्ण

चित्रकमूल, हरड़, बहेडा, आँवला, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, जीरा, हाऊबेर, वच, अजवाइन, पीपलामूल, सोंफ, वनतुलसी, अजमोद, कचूर, धनियाँ, वायविडंग, कलोंजी, सत्यानाशी- मूल, पोहकर मूल, सज्जीक्षार, यवक्षार, सेंधा-नमक, काला नमक, विड नमक, समुद्री नमक, साँभर नमक और कूट, प्रत्येक 1-1 तोला, इन्द्रायणमूल 2 तोले, निशोथ 3 तोले, दन्तीमूल 3 तोले और सातला (पीली सेंहुड़) 4 तोले लेकर, कूट- छान कर चूर्ण बना लें। यह चूर्ण दस्तावर है। पहले पाचन, स्नेहन और स्वेदन कर्म के पश्चात् यह चूर्ण सेवन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

कराना चाहिये। सब प्रकार के उदर रोगों को दूर करने में यह समर्थ है। हृद्रोग, पाण्डु, कास, श्वास, भगन्दर, मन्दाग्नि, ज्वर, कुष्ठ, संग्रहणी, जलोदर तथा गलग्रह आदि में उचित अनुपान से दें।

यदि अफरा हो तो सुरा, आसव या अरिष्ट के साथ, गुल्म हो तो बेर के क्वाथ के साथ, कब्ज हो तो दही के तोड़ के साथ, अजीर्ण में गर्म पानी के साथ, गुदा में केंची- सी चले तो अम्लवेत के क्वाथ के साथ, उदर रोगों में ऊँटनी के दूध के साथ अथवा गाय के दूध की छाछ के साथ, वात रोग में प्रसन्ना के साथ और अर्श में अनार के रस के साथ तथा विषों में घृत के साथ सेवन करने से शीघ्र लाभ होता है।

इस प्रकार जलोदर की चिकित्सा में उपर्युक्त औषधियों से जो औषधि रोगी के लिये लक्षणानुसार हितकर प्रतीत होती हो, वह अकेली अथवा अन्य मिश्रित योगों के साथ दी जानी चाहिये। खाने की औषधि के अतिरिक्त उदर पर लेप की भी आवश्यकता हो सकती है, उनके विषय में भी लिखते हैं।

वातादि दोषघ्न लेप

पुनर्नवा, देवदारु, सोंठ, श्वेत सरसों और सहजने की छाल समान भाग लेकर काँजी में, अथवा गोमूत्र में पीस कर उदर पर लेप कर दें। यह दोषघ्न लेप शोथ, खुजली तथा वातादि तीनों प्रकार के दोषों को दूर करता है। अथवा एरण्डबीज, पुनर्नवा मूल, एरण्डमूल, वायविडंग, बाबूना, नाखूना और जावित्री समान भाग, गोमूत्र में पीस कर पेट पर लेप करना हितकर रहता है।

इस रोग में रोगी को दूध का सेवन कराना अमृत के समान है। यहाँ तक कि कुछ अनुभवी चिकित्सक तो रोगी को जल के स्थान पर भी दूध पिलाते हैं। रोग कठिन होने के कारण चिकित्सा में लम्बा समय लग सकता है। उस स्थिति में रोगी और चिकित्सक दोनों को ही धैर्य और तत्परता से औषधोपचार में लगे रहना चाहिये।

4. अपच, अजीर्ण या अग्निमान्द्य

पाचन- क्रिया की गडबडी से उदर शूल, अफरा, कब्ज, पतले दस्त, खट्टी- मीठी डकार, मिचली या वमन, मुख में पानी भर आना, कलेजे का भारी होना, गैस बनना, कण्ठ में जलन तथा सिरदर्द आदि लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। रोग की उपेक्षा से अन्य अनेक उपसर्ग उत्पन्न हो सकते हैं। इसलिये प्रथम तो आहार- विहार पर ध्यान रखना और संयम से रहना चाहिये। रोग उत्पन्न होने पर— इन घरेलू प्रयोगों से काम लें तो स्थायी लाभ हो सकता है।

अजीर्ण में घरेलू प्रयोग

- पपीता, पका हुआ फल नित्य प्रति प्रातःकाल नाश्ते में लेने से कुछ दिनों में ही लाभ दिखाई देने लगता है। उस पर आवश्यकतानुसार सेंधा या काला नमक तथा भुना हुआ जीरा पीस कर डाल लेना चाहिये। यदि चाहें तो दुपहर बाद भी ले सकते हैं। भोजन में गेंहू की रोटी, मूँग या मसूर की दाल, लौकी, तोरी, पालक, मूली आदि की सब्जी का ऋतु के अनुसार प्रयोग करें। अतिसार की स्थिति में दाल- चावल की खिचड़ी का सेवन हितकारी रहता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- कच्चे पपीते का साग भी अजीर्ण में हितकर होता है। यदि कब्ज की शिकायत हो तो पपीता का फल खाली पेट खाना चाहिये।
- पुराने अजीर्ण में पपीते के बीजों का चूर्ण बनाकर प्रातः- सायं 1 से 3 ग्राम की मात्रा में जल के साथ लेना चाहिये। अफरा या आध्मान में भी इसका तत्काल लाभ देखा गया है। ठीक प्रकार से पेड़ पर पका हुआ पपीता लेना चाहिये। वस्तुतः पपीते का प्रभाव समूचे पाचन- तन्त्र पर पड़ता है, जिससे कि उससे सम्बन्धित सभी उपसर्ग स्थायी रूप से शान्त हो जाते हैं।
- सभी उदर रोगों में पपीते का रस भी लाभदायक रहता है। इसके लिये पके मीठे फलों का रस निकालना चाहिये। फलों को काट कर अधिक देर रखने से उसमें वायु- संसर्ग के कारण प्रदूषण और कड़वाहट आने लगती है, इसलिये बाजार से कटे हुए फल नहीं खरीदने चाहिये।
- काली मिर्च 5 ग्राम, श्वेत जीरा 10 ग्राम, सेंधा नमक 15 ग्राम और नौसादर 20 ग्राम। सबको कूट कपड़छन करके रखें।

मात्रा — 1 ग्राम से 3 ग्राम तक रोगी का बलाबल तथा रोग की स्थिति के अनुसार ताजा पानी अथवा सुखोष्ण पानी के साथ सेवन करावें। इससे अजीर्ण, अग्निमान्द्य आदि व्याधियों में आशानुकूल लाभ देखा गया है। यह चूर्ण स्वादिष्ट तथा रुचिवर्धक भी है।

- नौसादर 12 ग्राम, काला नमक, सेंधा नमक और विड नमक 1-1 ग्राम, भुनी हींग तथा टाटरी आधा- आधा ग्राम। इन सबको खरल करके पानी से भरी बोतल में डाल कर दिनभर धूप में रखें। इसकी मात्रा 25-30 मिलीलीटर तक सेवन करनी चाहिये। यह दवा रुचिवर्धक तथा मन्दाग्नि नाशक है। उदरशूल, अजीर्ण आदि में अपेक्षित लाभ दिखाती है।
- सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, बड़ी इलायची के बीज, लौंग, सोनागेरू और टाटरी 20-20 ग्राम, काला नमक 60 ग्राम, नौसादर 75 ग्राम लेकर सब द्रव्यों को पृथक- पृथक महीन करके एक साथ मिलावें और खरल द्वारा एक जीव करके शीशी में रखें।

मात्रा — 1 से 3 ग्राम तक यह चूर्ण भोजन करने के आधा घण्टे पश्चात् ताजा पानी के साथ दोनों बार खाना चाहिये। तीव्र अजीर्ण हो तो गर्म पानी के साथ लेना उपयुक्त होगा। इसके सेवन से सब प्रकार का अपच, खट्टी डकार, उदर शूल, मन्दाग्नि आदि में तुरन्त लाभ पहुँचता है। स्वादिष्ट भी है, इसलिए मुख का जायका ठीक करने के लिये चुटकी भर चूर्ण चाहे जब बिना किसी अनुपान के सेवन कर सकते है। यदि मूत्र में रुकावट हो तो इसके सेवन से वह भी ठीक हो जाती है। मूत्र खुलकर होने लगता है।

- साँभर नमक को खरल में अत्यन्त महीन करके रखें। इसकी मात्रा 2 ग्राम से 4 ग्राम तक दे सकते हैं। सामान्यतः गर्म जल के साथ दें। अथवा अर्क मकोय या अर्क सौंफ के साथ देनी चाहिये। इससे अजीर्ण, पेट दर्द, अफरा तथा मूत्रकृच्छ में भी लाभ होता है। रोग के लक्षण और रोगी का बलाबल देखकर मात्रा और अनुपान का निश्चय करना चाहिये। यदि बालकों को देनी हो तो 100 मिलीग्राम से 400 मिलीग्राम तक दी जा सकती है। बालकों के दन्तोंद्गम के विकार, दूध पटकना, वमन आदि में भी लाभ हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

अपच में मूली का उपयोग

Digitized by eGangotri

अपच में मूली का प्रयोग अधिक लाभकारी रहता है। इसमें अनेक पाचक तत्व पाये जाते हैं — खनिज लवण, कैल्शियम, गन्धक, लौह, फास्फोरस, मैग्नेशियम, क्लोरीन, कार्बोहाइड्रेट तथा प्रोटीन आदि। पानी की अधिकता के साथ अल्पांश में वसा भी होती है। इस कारण यह पाचन तन्त्र के अतिरिक्त अन्य अंगों पर भी अनुकूल प्रभाव डालती है। इसिलिये इसके नियमित सेवन से शरीर स्वस्थ रहता है। किन्तु ध्यान रहे कि मूली का सेवन करने से तुरन्त बाद दूध नहीं पीना चाहिये।

- छोटी पतली साफ मूली को पानी से ठीक प्रकार धो लें और उसकी फाँक पर सेंधा नमक लगाकर भोजन के पश्चात् सेवन करें तो अपच में शीघ्र लाभ होता है। यदि स्वस्थ अवस्था में मूली का सेवन किया जाय तो अपच रोग होने की सम्भावना बहुत कम रहती है।
- मूली को बीच से चीर कर फाँक बना लें। उस पर सेंधा नमक, काला नमक और नौसादर का सम मात्रा का पिसा हुआ चूर्ण छिड़कने से धागे से बाँध कर किसी ऊँचे स्थान पर लटका दें। नीचे कोई एक बर्तन रखें, जिसमें रस टपक कर सुरक्षित रह सके। इस रस को नीबू के रस में मिला कर पीने से अपच, अफरा, गैस, अरुचि आदि उपसर्ग दूर होते हैं और भूख लगने लगती है।
- यदि अजीर्ण के साथ अफरा हो जाय तो भी मूली का रस लाभ करता है। उसमें अजवाइन का चूर्ण डाल कर प्रयोग किया जाय तो अफरा शान्त होने में अधिक समय नहीं लगता।
- मूली के समान ही उसके पत्ते भी लाभदायक होते हैं। उनका प्रयोग साग- सब्जी के रूप में भी किया जा सकता है अथवा पत्तों को साफ पानी में धोकर काटें और उन पर सेंधा - काला नमक का मिश्रण और अदरक डाल कर, ऊपर से नीबू निचोड़ दें। इसके सेवन से भी अपच में बहुत लाभ होता देखा गया है।
- मूली के रस के साथ पोदीने का रस समान भाग मिलावें और उसमें सेंधा नमक, काला नमक, जीरा, हींग का चूर्ण मिला कर अपेक्षित मात्रा में भोजन के पश्चात् सेवन करने से अपच, वमनेच्छा, कलेजे का भारीपन आदि दूर होती है। इस प्रयोग के साथ प्याज का रस, उससे दुगुनी मात्रा में मिला कर विशूचिका (हैजा) के रोगी को सेवन कराया जाय तो अपेक्षित लाभ सम्भव है।

अजीर्ण और अग्निमान्द्य में अदरक का उपयोग

यद्यपि अदरक या आद्रक, जिसे अंग्रेजी में जिंजर कहते हैं, अनेक रोगों में लाभकारी एवं अव्यर्थ औषधि का काम करता है, तथापि पाचन संस्थान पर उसका अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। जब अदरक सूख जाता है, तब वही सौंठ बन जाता है। उस रूप में भी वह आयुर्वेद विहित अनेकानेक औषधि- योगों में प्रयुक्त होता है।

अदरक के उत्पादन के लिये किसी विशेष प्रकार की भूमि या देखभाल की भी आवश्यकता नहीं होती। जहाँ मूली, गाजर, शकरकन्द, आलू आदि उत्पन्न किये जाते हैं, वहीं अदरक को सरलता से उत्पन्न किया जा सकता है। इसके छोटे- छोटे टुकड़े धरती में गाड़ देने से ही बड़े

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

होते जाते हैं। घरों में भी गमले आदि में इसी प्रकार अदरक को उत्पन्न किया जा सकता है। वस्तुतः अदरक का कोई बीज नहीं होता।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपचादि विभिन्न रोगों में अदरक

ऋतु परिवर्तन के कारण उत्पन्न विकार, अपचादि उदर- विकार, ज्वर, श्लेष्म- ज्वर (इन्फ्ल्यूऐंजा), शरीर में दर्द, गले में दर्द, खाँसी, सिर में भारीपन, नेत्रों से पानी जाना, जुकाम आदि में अदरक बहुत लाभकारी होता है। क्षयादि रोगों में भी इसका सेवन अनेक उपसर्गों (उपद्रवों की निवृत्ति) के लिये, अन्यान्य औषधि द्रव्यों के योग एवं मधुयोग से किया जाता है। ऐलोपैथी में भी इसका प्रयोग विभिन्न औषधियों और पेयों के रूप में सफलता पूर्वक किया जा रहा है। रुचिवर्धक होने के कारण इसके सेवन के प्रति प्रायः अनिच्छा नहीं होती।

पाचन - तन्त्र पर अदरक का अनुकूल प्रभाव पड़ता है, उस कारण अजीर्ण का शमन होना सहज सम्भव है। क्योंकि अजीर्ण की उत्पत्ति गरिष्ठ पदार्थों के खाने आदि कारणों से, विशेष रूप से होती है, और अदरक में उस प्रकार के आहार को पचाने की शक्ति है, इसलिये इसका प्रभाव भी शीघ्र दृष्टिगोचर होता है।

अजीर्ण की उत्पत्ति में जो सहायक कारण दिवाशयन, रात्रि जागरण, भोजन के पश्चात् लेटना, मल- मूत्र का वेग रोकना आदि हैं, उनका निषेध स्वीकार करना तो आवश्यक है ही, साथ ही अजीर्ण के व्यक्त लक्षण वमनेच्छा, खट्टी- मीठी डकारें, कलेजे का भारीपन, शरीर का भारीपन, पेट पर अफरा, दर्द, कब्ज आदि को दूर करने में भी अदरक प्रकृति की अद्भुत देन के रूप में उपलब्ध है। इसके लिये अदरक के कतिपय योग यहाँ प्रस्तुत हैं —

अदरक के अनेक योग

- अदरक का रस एक चम्मच में नमक, जीरा तथा किंचित नीबू का रस मिला कर पीने से ही उक्त विकारों में पर्याप्त लाभ प्रतीत होता है। शीघ्रता में अन्य वस्तुएँ न मिलें तो केवल अदरक का रस सेवन कर लेना ही पर्याप्त है।
- अदरक का रस 3-4 चम्मच में अनार का रस भी उतना ही मिला कर पीने से अरुचि, खट्टी डकारें, जी मिचलाना, गले में जलन, अपच आदि लक्षणों में पर्याप्त लाभ होता है। क्योंकि अदरक, अनार का यह मिश्रण तत्काल लाभ दिखाता है।
- अदरक को पीस कर अपेक्षित नमक, जीरा डालकर उसका पतला शाक अथवा सूप बनाकर पीने से अजीर्ण और उसके सभी उपदव दूर हो जाते हैं। यदि इस सूप में नींबू का रस भी डाल लिया जाय तो स्वाद भी बढ़ता है और लाभ भी अधिक होता है।
- अदरक स्वरस 3-4 चम्मच को गोघृत 4-5 ग्राम में मिला कर सेवन किया जाय तो अजीर्ण के कारण या अन्य कारण से भी उत्पन्न शीत- पित्त में तुरन्त लाभ होता है।
- अदरक का रस और प्याज का रस मिला कर सेवन करने से अजीर्ण, पेट फूलना, दर्द होना और दस्त होना आदि लक्षणों में शीघ्र लाभ होता है। इसमें नीबू का रस भी मिलाया जा सकता है।
- अदरक का रस और गुड़ मिला कर सेवन करना भी अपच, अरुचि शीत- पित्त आदि में लाभकारी है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- यदि नीबू की सिकंजवी में अदरक स्वरस की कुछ बूँदें डाल कर पीवें तो उसके गुणों में वृद्धि हो जाती है। उससे अपच आदि के निवारण में सहायता मिलती है।
- अदरक का स्वरस, तुलसी - स्वरस का मिश्रण भी अपच में उपयोगी होता है। उसमें अपेक्षित मात्रा में नमक, जीरा मिला सकते हैं।

अदरक के टुकडों में जीरा, हींग, काला नमक और नीबू निचोड़ कर खाने से अपच, अरुचि आदि में पर्याप्त लाभ होता है। भोजन के प्रथम ग्रास में, बीच- बीच में या भोजनोपरान्त इसका सेवन अन्न पचाने में पर्याप्त सहायता करता है।

अपचनाशक आद्रकादि लेह

अदरक का स्वरस 1 लीटर, विजौरा नींबू का स्वरस 200 मिली लीटर तथा गुड 320 ग्राम।

प्रक्षेप द्रव्य -- सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, तेजपात, धमासा, दालचीनी, बड़ी इलायची के दाने. चित्रक मूल, पीपला मूल, त्रिफला, श्वेत जीरा, काला जीरा और धनिया 10 - 10 ग्राम।

निर्माण विधि — प्रक्षेप द्रव्यों को कूट- छान कर रखें, स्वरस और गुड़ को एक साथ मन्दाग्नि पर पकावें और पतली चाशनी (एक तार की) रहने पर नीचे उतार कर उसमें प्रक्षेप द्रव्यों का चूर्ण मिलावें। और लकड़ी के करछुले से एकजीव कर लें तथा अमृतवान में रखें।

मात्रा — 1 से 2 चम्मच तक भोजन के आधा घण्टे बाद सेवन करें। इससे अपच, अरुचि, गुल्म, अफरा आदि अनेक प्रकार के उदर विकार दूर हो जाते हैं। श्वास, कास, पाण्डु, क्षय तथा प्लीहा आदि में भी यह लेह अत्यन्त उपयोगी है।

मन्दाग्नि में आद्रकाद्यावलेह

अदरक का स्वरस 1 लीटर और पुराना गुड़ 225 ग्राम तथा प्रक्षेप द्रव्य — सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, तज, पत्रज, छोटी इलायची के बीज और नागकेशर 5-5 ग्राम।

निर्माण विधि — प्रक्षेप द्रव्यों को कूट कपड़छन करके रखें। आद्रक स्वरस को गुड़ के साथ मन्दाग्नि पर पकावें। और एक तार की चाशनी होने पर प्रक्षप द्रव्य उसमें मिलावें और सुरक्षित रखें।

मात्रा — 1 ग्राम से 5 ग्राम तक भोजनोपरान्त लेनी चाहिये। आवश्यकता होने पर अधिक मात्रा ले सकते हैं। इससे अरुचि, अजीर्ण, मन्दाग्नि आदि में पर्याप्त लाभ होता है। कासश्वास में भी बहुत उपयोगी है।

स्वादिष्ट अजीर्णवटी

कालीमिर्च, छोटी पीपल, अकरकरा 15-15 ग्राम, सेंधा नमक और साँभर नमक 30-30 ग्राम, काला नमक 120 ग्राम, भीमसेनी कर्पूर और कस्तूरी 150 मिलीग्राम अदरक का स्वरस 200 मिलीलीटर, कागजी नींबू का स्वरस 1 लीटर।

विधि — मिर्च, पीपल, अकरकरा को कूट कपड़छन करें तथा नमकों को पृथक पीस कर मिलावें। फिर इन एकत्रित द्रव्यों को अदरक के रस के साथ खरल करके सुखा लें और फिर सबको नींबू के रस में डाल कर मन्दाग्नि से पकावें और लकड़ी के करछुळ से चलाते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हुए, जब वह चाटने योग्य गाढ़ा हो जाय तब नीचे उतार लें और उसमें कर्पूर और कस्तूरी महीन करके मिला दें। तदुपरान्त यवक्षार 1 ग्राम मिला कर खरल करें। जब गोली बनाने योग्य हो जाय तब चना के बराबर गोलियाँ बना कर छाया में सुखा लें। गोलियाँ बनाते समय यदि इसमें कस्तूरी का एसेंस भी आवश्यकतानुसार डाल लें तो सुगन्धित एवं रुचिकर बनेंगी।

हाजमे और जायका ठीक करने के लिये यह गोलियाँ 1-2 लेकर चूसने या खाने से अरुचि, अपच, अजीर्ण, अफरा, पेट दर्द, वायु का अवरोध, खट्टी- मीठी डकारें, वमनेच्छा आदि विकार दूर हो जाते हैं तथा भूख लगती है, मन्दाग्नि दूर होती है।

वायुगोला पर एक अपूर्व योग

अदरक का स्वरस, कागजी नींबू का स्वरस, खीरा का स्वरस 100-100 मिली लीटर, हींग असली (भुनी हुई) 25 ग्राम, अजवाइन 2 ग्राम, सुहागा फुलाया हुआ 1 ग्राम, अपामार्ग - मूल 1 ग्राम, पीली कौड़ी की भस्म 1 ग्राम, लौहकान्त भस्म 1 ग्राम लेकर काँच के अमृतवान में रखकर, उस पर खुली धूप लगने दें। पात्र पर काँच का ही ढक्कन लगा रहने दें। इस प्रकार यह पात्र धूप के स्थान में 3 सप्ताह रखें। तदुपरान्त इसका व्यवहार औषधि रूप में किया जा सकता है।

मात्रा — 5 से 10 बूँद तक गर्म जल में मिला कर सेवन करने से इससे अफरा तथा वायुगोला के दर्द में लाभ हो जाता है।

अफरा, उदरशूल पर लेप

एरण्डमूल 20 ग्राम, एलुआ और भुना सुहागा 10-10 ग्राम सेंधा नमक 4 ग्राम, हींग 2 ग्राम लेकर बैंगन के स्वरस में पीस कर गर्म करें तथा उदर पर नाभि और उसके आसपास एरण्ड-तेल चुपड़ कर, इस दवा का लेप कर दें। आवश्यक होने पर यह लेप 3-3 घण्टे के अन्तर से, दिन में 2-3 बार किया जा सकता है, किन्तु रात्रि में यह लेप नहीं करना चाहिये।

इस लेप के प्रभाव से उदर शूल, अफरा, वायु का अवरोध, कब्ज आदि का विकार तथा पेट में भारीपन आदि की शिकायत दूर हो जाती है।

उदर रोगों पर अजवाइन की गोली

अजवाइन का प्रयोग अनेक आयुर्वेदिक और यूनानी नुस्खों में किया जाता है। अन्यान्य औषधि द्रव्यों के साथ मिलने पर यह उन- उन द्रव्यों के गुणों में वृद्धि कर देती है। यदि अकेली अजवाइन का सेवन किया जाय, तो भी अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होती है। हम यहाँ ऐसा ही एक अत्यन्त सरल और अचूक नुस्खा प्रस्तुत कर रहे हैं :—

अजवाइन 500 ग्राम लें, उसे ठीक प्रकार से साफ करके, पहिले कूट- छान लें और फिर पत्थर के खरल में डाल कर घोटें। घोटते हुए किसी अन्य द्रव्य अथवा जल आदि भी न डालें। अकेली अजवाइन ही पर्याप्त घोटते- घोटते गोली बनाने योग्य हो जायेगी जब वह ऐसी हो जाय तब 10-10 ग्राम के अनुमान की गोलियाँ बना कर रख लें।

मात्रा —1 से 3 गोली तक प्रातःकाल गर्म पानी के साथ सेवन करें। इससे अफरा, अपच, अजीर्ण, कब्ज आदि में अत्यन्त लाभ होता है। इन गुणों के अतिरिक्त अनियमित दस्त, पतले दस्त, उदरशूल और संग्रहणी तक में आशा से अधिक लाभ होगा। केवल 1-1

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized By eGangotri

गोली (या आवश्यकतानुसार अधिक) नित्यप्रति एक बार ही 7 दिनों तक लेने से शरीर पूर्ण रूपेण स्वस्थ एवं कान्तिमय हो जाता है।

अफरा पर श्वेतार्क वटिका — श्वेत आक के पुष्प 50 ग्राम, काला नमक और काली मिर्च 15-15 ग्राम, श्वेत जीरा 10 ग्राम। सिल पर डाल कर अदरक के स्वरथ के साथ पीस कर लुगदी बनावें और फिर उसकी बेर प्रमाण गोलियाँ बनाकर छाया में सुखाकर रखें।

मात्रा — 1 से 3 गोली तक ताजा पानी के साथ अथवा बिना किसी अनुपान के ले सकते हैं। अफरा आदि की स्थिति में गर्म पानी के साथ दी जा सकती हैं। यह अन्न- पाचन में उपयोगी है तथा अपच, अजीर्ण आदि विकारों को नष्ट करती है। जठराग्नि तीव्र करके भूख बढ़ाने में उपयोगी है।

शूलादिनाशक गोलियाँ — श्वेत आक के पुष्प, 50 ग्राम सेंधा नमक और लौंग 20-20 ग्राम तथा फुलाई हुई हींग 5 ग्राम। सबको पीस कर जल योग से मटर प्रमाण गोलियाँ बना लेनी चाहियें। इसके सेवन से अपच, उदर- शूल, वमनेच्छा आदि उपसर्गों में लाभ होता है। यह दवा खाँसी में भी लाभ करती है।

अफरा, उदरशूल पर विभिन्न योग

यह रोग यद्यपि अजीर्ण से ही उत्पन्न होता है। मुख्य रूप से आहार- विहार की गड़बड़ी ही इसका कारण होती है। जब रोग की उपेक्षा से पाचन- तन्त्र बिगड़ जाता है, तब अनेक प्रकार के उपसर्ग उत्पन्न हो जाते हैं। अफरा (पेट फूलना), पेट में वायु - संचय और दर्द, मलावरोध और अतिसार के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। यदि रोग अधिक बढ़ जाता है तब संग्रहणी का रूप भी धारण कर सकता है। उदर में वायु बढ़ने के कारण इस रोग को वायुशूल भी कहते हैं। सामान्यरूप से मूली, अदरक, प्याज, नींबू, हींग आदि द्रव्य इस रोग में अधिक हितकर रहते हैं।

- पेट में तीव्र दर्द हो तो घृत में हींग और नमक डाल कर गर्म करें और रोगी की नाभि तथा उसके चारों ओर मल दें और नींबू का रस, भुनी हींग, नमक डालकर दो- दो चम्मच की मात्रा में कई बार पिलावें। इससे शूल शीघ्र शान्त होता है।
- आधा ग्राम मूलीक्षार को गर्म जल के साथ सेवन कराने से शीघ्र लाभ सम्भव है।
- मूलीक्षार और यवक्षार में हिंग्वाष्टक चूर्ण मिलाकर गर्म जल के साथ सेवन करावें।
- जम्बीरी नींबू का रस, अजवाइन और सेंधा नमक मिलाकर सेवन कराने से अफरा और दर्द में लाभ होता है।
- स्वादिष्ट पाचक चूर्ण का एक नुस्खा यहाँ लिखा जाता है। इससे अफरा, शूल, अरुचि आदि तो दूर होती ही है, अतिसार तथा संग्रहणी में भी आशातीत लाभ पहुँचता है।

सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल 30-30 ग्राम, सफेद जीरा 100 ग्राम, काला नमक 50 ग्राम, सेंधा नमक 35 ग्राम, नींबू का सत्व 50 ग्राम, नौसादर 40 ग्राम, बढ़िया हींग 1 ग्राम, सत पीपरमेंट 5 ग्राम। सभी को कूटने योग्य द्रव्यों को कूट- पीस कर महीन कर लें, फिर सत- नींबू, पीपरमेंट और हींग को भी महीन करके मिलावें तथा सब को एक साथ खरल करके कार्क बन्द बोतलों में सुरक्षित रखें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

मात्रा — 2-3 ग्राम तक पानी के साथ प्रातः सायं सेवन करें। भोजन के पश्चात् भी ले सकते हैं। रोग की स्थिति के अनुसार प्रयोग करना चाहिये।

5. अतिसार और उसके उपचार

अतिसार उदर- विकार का ही एक उपसर्ग है। इसका मूल कारण खान- पान की गड़बड़ी है, जिसके फलस्वरूप बार- बार मल निस्सरण होता है। पतले आमयुक्त, झागदार अथवा नितान्त पानी जैसे दस्त होने लगते हैं। पेट में गुड़गुड़ाहट बनी रहती है। भूख नहीं रहती, प्यास कभी अधिक लगती है, कभी नहीं लगती।

यदि उदरकृमि हो तो उससे अधिक कष्ट होता है। आहार के सारे तत्वों को वे कृमि भक्षण करते रहते हैं, तब रोगी को प्राणतत्वों से वंचित रह जाना पड़ता है। दस्तों के कारण शरीर में दुर्बलता आ जाती है, किसी कार्य में मन नहीं लगता, शरीर में हड़कल और टूटन जैसा अनुभव होता है। कभी- कभी किसी रोगी को ज्वरादि उपद्रव भी देखे जाते हैं।

अतिसार की आरम्भिक अवस्था में सामान्य औषधियाँ देनी चाहियें। प्रारम्भ घरेलू द्रव्यों से करें। जब उससे काम न चले, तब वे अन्य दवाओं का सेवन करें। पहिले यहाँ साधारण योग ही प्रस्तुत कर रहे हैं :—

दस्त रोकने वाले अनेक योग

- लौंग 7 नग, हींग चना प्रमाण और सेंधा नमक आवश्यकतानुसार लेकर जल के साथ पीसें और अतिसार होने के आरम्भ में ही सेवन करें। इसें गर्मियों में ठण्डा तथा जाड़े की ऋतु में अग्नि पर कुछ गर्म करके देना चाहिये। इससे दस्त रुक जाते हैं।
- आम की गुठली, नमक, सोंठ, बेलगिरी और हींग को ताजा पानी में घिस कर पिलाना चाहिये। यदि ठण्डी ऋतु हो तो गर्म करके देना चाहिये। इससे अतिसार तथा आमातिसार में लाभ होता है।
- कच्चे दूध में नींबू निचोड़ कर पिलाने से भी दस्त एवं आम- दस्त में लाभ हो जाता है।
- आम की गुठली को चूने के पानी में घिस कर पिलाने से आमातिसार या रक्तातिसार में भी लाभ होता है।
- ग्रीष्म ऋतु के दस्तों में, ताजे पानी में नींबू निचोड़ कर पीने से दस्त रुक जाते हैं।
- एक लीटर पानी में 2 चम्मच चीनी तथा 1 चुटकी भर नमक मिला कर रखें और थोड़ा- थोड़ा कर पीवें। पानी गर्म करके ठण्डा कर लेना चाहिए। दस्तों में हितकर है।
- सूखे हुए आमले और धनियाँ समान भाग का कपड़छन चूर्ण करें और उसमें थोड़ा- सा सेंधा नमक मिला कर पानी के साथ सेवन करावें तो अतिसार (दस्त) में लाभ होगा।
- सूखे आमले, धनियाँ, जीरा, सेंधा नमक लेकर जल के साथ चटनी के समान पीसें। आमले की यह चटनी थोड़ी- थोड़ी चाटने से आमातिसार में लाभ होता है।
- दालचीनी और कत्था 10-10 ग्राम, फिटकरी फुलाई हुई 5 ग्राम, एक साथ घोट कर रखें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मात्रा — आधा चम्मच यह दवा दिन में 2-3 बार पानी के साथ देनी चाहिए। इससे अतिसार में शीघ्र लाभ होता है तथा पाचनक्रिया सुधरती है।

- सूखी बेलगिरी, सोंफ, ईसबगोल और शक्कर समान भाग लेकर खरल में घोंट लें। यह चूर्ण आधे से एक चम्मच की मात्रा में दिन में तीन बार जल के साथ सेवन करावें। इससे आमातिसार तथा उदर में ऐंठन (मरोड़) आदि में शीघ्र लाभ होता है।

- यदि आमातिसार के साथ खून भी जाता हो तथा रोगी बहुत परेशान हो तो उस इस औषधि चूर्ण का सेवन कराने से शीघ्र लाभ देखा गया है —

- नीम के बीज (निबौली) की गिरी 10 ग्राम और बड़ी हरड़ का वक्कल 20 ग्राम लेकर चूर्ण कर लें।

मात्रा—2 ग्राम से 5 ग्राम तक, धारोष्ण गोदुग्ध में कुछ मिश्री या शक्कर डाल कर दो- तीन बार दें। इससे बार- बार खूनी दस्त जाना और दर्द दूर होता है। इस उपयोगी औषधि को रसायन ही समझिये।

- एक ऐसा अनार लें, जो न कि अधिक पका हो और न अधिक कच्चा ही हो। उसमें एक छेद करके 1 ग्राम तक अफीम भर दें और छेद करने में जो टोपी उतरी थी, उसे ढँक कर छेद बन्द कर दें। फिर उस अनार को बिना धुँए वाली, कण्डों की आग में दबा दें, जिससे कि 3-4 घण्टे में भरता बन जाय। किन्तु इस बीच ध्यानपूर्वक उसे जलने से बचाना चाहिए। जब ठीक भरता बन जाय तब उसे महीन पीस कर चटनी के समान करें और शहद के साथ घोट कर जंगली बेर के बराबर की गोलियाँ बना कर सुखा लें।

मात्रा — 1 गोली ताजा स्वच्छ पानी के साथ देनी चाहिये। दस्त बन्द करने में यह उपयोगी प्रयोग है।

- लजालू (छुईमुई) की जड़ का चूर्ण 3 ग्राम, दही के साथ सेवन करने से रक्तातिसार में शीघ्र लाभ सम्भव है।

- धाय के फूल, लजालु की जड़, लोध और सारिवा समान भाग का क्वाथ भी आमातिसार, रक्तातिसार में हितकर रहता है। यह प्रयोग बालकों के अतिसार में भी उपयुक्तहै।

- लजालू की जड़, धाय के फूल, अनारदाना और बेलगिरी 2-2 ग्राम, सेंधा नमक और काला नमक 1-1 ग्राम को कूट कर चूर्ण बना लें। इसका सेवन शहद मिला कर करें और ऊपर से चावलों का धोवन पियें। पित्तजन्य अतिसार तथा मरोड़ और दर्द को शीघ्र शमन करता है। चूर्ण की मात्रा — 1 से 3 ग्राम तक ले सकते हैं।

दस्तनाशक विजयादि वटी — शुद्ध भाँग 40 ग्राम, लोध, जायफल, छोटी इलायची के बीज, अजवाइन और मिश्री 25-25 ग्राम, शुद्ध अफीम 10 ग्राम। सभी दव्यों को अलग- अलग पीस कर महीन करें। अफीम को पानी में घोट कर रख लें। अब पीसे द्रव्यों को अफीम के इस पानी में खरल करके 200-200 मिलीग्राम की गोलियाँ बनाकर सुखा लें।

मात्रा — 1 से 2 गोली तक प्रातः- सायं ताजा पानी अथवा मट्ठा के साथ देनी चाहिये। वर्षाऋतु में मट्ठा के साथ न दें। उचित समझें तो दूध के साथ भी दे सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इसके सेवन से सब प्रकार के दस्तों में लाभ होता है। आमातिसार, रक्तातिसार, संग्रहणी, अजीर्ण, मन्दाग्नि, उदर में वायु भरना तथा सभी प्रकार के उदर रोगों में हितकर है। मुखपाक में भी लाभ करती है। भोजन में खिचड़ी, दही आदि लेना चाहिये।

अतिसार- हर विजयाद्यासव — भाँग और बबूल की छाल 500-500 ग्राम, महुआ की छाल 250 ग्राम, सोंठ 125 ग्राम, गुड़ 6 किलोग्राम तथा पानी 25 लीटर लेकर आसव निर्माण विधि से आसव बनावें।

मात्रा —20 से 30 मिलीलीटर तक रोगी का बलाबल देखकर, समान भाग पानी मिला कर देना चाहिए। इससे अतिसार, आमातिसार, हैजा, उदरशूल, अर्श में बहुत लाभ होता है। पुरुषों के प्रमेह और स्त्रियों के प्रदर में भी हितकर है।

सर्वातिसार पर रामवाण — शुद्ध अफीम, धाय के फूल,इन्द्रयव, नागरमोथा, लोध, कुटज की छाल, अतीस, वायविडंग और गन्धक- पारद की कज्जली सभी द्रव्य 10-10 ग्राम लें। सभी काष्ठौषधियों को कूट- कपड़छन करके, सही तोल कर पूरा वजन 70 ग्राम हो। कज्जली शुद्ध गन्धक और शुद्ध पारद की हो, उसमें अफीम डालकर ठीक प्रकार से खरल करें और तब उपर्युक्तचूर्ण मिला कर पुनः खरल करें। इस प्रकार घोटते- घोटते सभी मिश्रित औषधि द्रव्य काले हो जायेंगे। उस मिश्रण को शीशी में भर कर रखें।

मात्रा — 100 या 125 मिली ग्राम तक पर्याप्त है। इसे दही के साथ अथवा खट्टे अनार के रस के साथ, आवश्यकतानुसार दिन में दो- तीन बार तक दे सकते हैं। इससे काबू में न आने वाले दस्त भी रुक जाते हैं। प्रवाहिका, ग्रहणी, हैजा (विशूचिका) में भी यह औषधि शीघ्र प्रभाव दिखाती है। भोजन की इच्छा होने पर दाल- चावल की खिचड़ी खानी चाहिये।

अतिसार पर एक अद्भुत योग —कड़वी अतीस 20 ग्राम, राल का चूर्ण, शुद्ध अफीम और पुरानी कार्क की भस्म 10-10 ग्राम, प्रवाल भस्म 50 ग्राम, भुनी हुई हींग 3 ग्राम।

सभी द्रव्यों को अत्यन्त महीन पीस कर एकत्र करें। कार्क से तात्पर्य शीशियों पर लगाई गई कार्क (डाट) से है। पुरानी डाट ही अधिक उपयोगी रहती है। उन्हें आग पर भस्म कर लेनी चाहिए। एकत्रित हुई सभी द्रव्यों के चूर्ण को शहद के साथ खरल करके झरबेरी के समान छोटी गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1 से 2 गोली तक पानी के साथ देनी चाहिए। यदि दुबारा देनी पड़े तो 7-8 घण्टे के अन्तर से 1 गोली दें। इससे दस्त अवश्य रुक जाते हैं। मरोड़ के साथ होने वाले आमातिसार में अधिक उपयोगी है।

सब प्रकार के अतिसारों पर अचूक योग — शुद्ध अफीम, छोटी हरड़, काली मिर्च, काला नमक, तज और लौंग 10-10 ग्राम, छोटी पीपल 5 ग्राम, छुहारे 10 नग। छुहारों को जल में डाल कर दिन- रात भीगने दें, इससे यह फूल जायेंगे। फिर उन्हें चीर कर गुठली निकाल दें और अन्य सभी द्रव्यों को अत्यन्त महीन पीस कर, उन छुहारों में भर कर, उन पर सूत का धागा लपेट दें। फिर महोबा पान दस नग लेकर, एक- एक छुहारे पर एक- एक पान लपेट कर धागा बाँध देना चाहिये। फिर सभी छुहारों को एक साथ महोबा पानों में लपेट कर कपड़ मिट्टी करें और सुखाकर पुटपाक विधि से आरने उपलों की अग्नि में पका लें। यह ध्यान रखें कि छुहारे भीतर से जलने न पावें, केवल लिबलिबे - से हो जायें, तब छुहारे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

निकाल लें। अब सब धागे- पत्ते आदि को साफ हटा कर छुहारों को साफ कर लें और उन्हें सिल पर जल योग से पीस कर चना प्रमाण गोलियाँ बनालें।

मात्रा — 1 से 3 गोली तक, रोगी के बलाबल अनुसार 4-4 घंटे के अन्तर से 3-4 बार तक दी जा सकती है। अनुपान में कुटज की छाल का काढ़ा अथवा सौंफ का अर्क लेना चाहिये। इनके अभाव में ठण्डे पानी के साथ दे सकते हैं। इससे अतिसार, आमातिसार, रक्तातिसार, संग्रहणी आदि में भी अपेक्षित लाभ होता है। यह औषधि अफरा इत्यादि के रूप में कोई उपद्रव भी नहीं करती। भोजन में दही, चावल, खिचड़ी, साबूदाना, अनार आदि पथ्य दें।

अतिसार पर अन्य अव्यर्थ महौषधि — शुद्ध अफीम, काली मिर्च, भुनी हुई हींग तीनों 10-10 ग्राम, फूला हुआ सुहागा 6 ग्राम और शुद्ध हिंगुल 3 ग्राम। हिंगुली को नींबू के स्वरस में 3 घंटे खरल करें। अफीम को पीस कर उसी हिंगुल में मिलावें और 6 घंटे तक सामान्य रूप से खरल करके उसमें अन्य द्रव्य भी महीन करके, एक- एक कर मिलाते चलें तथा नींबू के रस में घोट कर मूँग प्रमाण गोलियाँ बना लें अथवा जल योग से घोट कर गोली बनावें।

मात्रा — रोग और रोगी के बलानुसार 1 से 4 गोलियाँ तक दी जा सकती हैं। पहिले गोली का सेवन ताजा पानी के साथ करावें। यदि दस्त बन्द न हों तो अनार के स्वरथ के साथ लेनी चाहिये। अतिसार न रुकने की स्थिति में 2 दस्तों के बाद या प्रत्येक दस्त के बाद 1-1 गोली दे सकते हैं। इसके सेवन से अतिसार, आमातिसार, रक्तातिसार, हैजा, संग्रहणी आदि में आवश्यक लाभ होता है। पथ्य में खिचड़ी, पपीता, अनार आदि सेवन करना चाहिये दही बाँध कर, तोड़ निकाल फेंके और उस दही में जीरा, नमक, काली मिर्च आदि डाल कर खा सकते हैं।

सर्वातिसार पर अहिफेनादि चूर्ण — शुद्ध अफीम, जायफल, फूला हुआ सुहागा और कत्था 10-10 ग्राम लेकर खरल में अत्यन्त महीन करें और शीशी में सुरक्षित रखें।

मात्रा — 200 से 500 मिलीग्राम तक बलाबल देखकर देनी चाहिए। सामान्य दस्तों में ताजा पानी के साथ तथा रक्तातिसार या आमातिसार में चावल के धोवन के साथ देनी चाहिये। बालकों को उनकी वय के अनुसार स्वल्प मात्रा दें। इससे अतिसार, आमातिसार, रक्तातिसार आदि में शीघ्र लाभ होता है।

दस्तों पर अहिफेनादि रस — शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, आमलासार, कुड़ा की छाल, धाय के फूल, मोचरस, बेलगिरी, नागरमोथा और लोध 10-10 ग्राम, शुद्ध अफीम 3 ग्राम। सभी काष्ठादि को कूट- कपड़छन करें तथा पारद और गन्धक को मिला कर 3 घंटे तक खरल करें, जिससे कि उनकी उत्तम कज्जली बन जाय। फिर सभी द्रव्य एक साथ मिलाकर एक घंटा भर घोंटे और काले रंग की हो जाये तब शीशी में भर लें।

मात्रा — 250 से 500 मिलीग्राम तक बेल के क्वाथ में मधु मिलाकर, उसमें डाल कर सेवन करानी चाहिए। दिन में 6-6 घंटे के अन्तर से यह दवा दी जा सकती है। मात्रा घटा- बढ़ा भी सकते हैं। आवश्यक होने पर कम समय में भी ली जा सकती है। सब प्रकार के अतिसार, संग्रहणी आदि में शीघ्र प्रभाव प्रदर्शित करती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

6. संग्रहणी और उसकी चिकित्सा

उदर रोगों में संग्रहणी को सब से कठिन व्याधि माना गया है। वस्तुतः जब अतिसार रोग पर काबू नहीं पाया जाता और जीर्ण होकर उग्र रूप धारण कर लेता है, उसे संग्रहणी कहते हैं।

ग्रहणी पञ्चधामता — ग्रहणी के पाँच भेद शारंगधर आदि मनीषियों ने माने हैं। वातादिदोषों के कारण उत्पन्न, तीन प्रकार की, सन्निपात के कारण एक प्रकार की और आम- दोष के कारण पाँचवें प्रकार की संग्रहणी होती है।

- वातज ग्रहणी में मलबद्धता होती है, वात उसे शुष्क कर देती है। इस कारण रोगी को अनेक कष्ट हो सकते हैं। श्वास, कास, मूर्च्छा, कम्प, कण्ठ का सूखना तथा आमयुक्त थोड़ा- थोड़ा मल बार- बार उतरता है।
- पित्तज ग्रहणी में शुष्क, झागदार, रक्तमिश्रित, कभी कम, कभी अधिक दस्त होते हैं। कण्ठ और हृदय में जलन, उपस्थ और गुदा में दर्द, रोमांच तथा प्यास की अधिकता रहती है।
- कफज ग्रहणी में सफेद रंग के, झागदार, दस्त, अंगों में शैथिल्य, हृदय में जकड़न, उदर पर भारीपन, शरीर में दुःख, अरुचि तथा मन में खिन्नता या भ्रम रहता है।
- त्रिदोषज (सन्निपातज) में उपर्युक्त वातज, पित्तज, कफज ग्रहणी के मिश्रित लक्षण दिखाई देते हैं।
- आमयुक्त ग्रहणी में पतला या गाढ़ा, श्वेत, चिकना मल उतरता है। चिकना- चिकना कफ जैसा आम गिरता है, शब्द के साथ पीड़ा होती है। जब उसका शीघ्र उपचार नहीं होता, तब वही आमातिसार ग्रहणी का रूप धारण कर लेती है, तब यह बहुत कठिनता से काबू में आती है। वस्तुतः इसी विकार वाली ग्रहणी संग्रहणी के नाम से प्रसिद्ध है।

इन सबका उपचार लक्षणानुसार करने से रोगनिवृत्ति शीघ्र हो सकती है। आयुर्वेद में अनेक दवाएँ इसके लिये निर्दिष्ट हैं। संग्रहणी की तीव्रतर अवस्था में कल्प चिकित्सा की व्यवस्था की जाती है, जो कि किन्हीं अनुभवी चिकित्सक के निर्देशन में करनी चाहिये।

संग्रहणी की सामान्य चिकित्सा

- काली मिर्च, चित्रक मूल और काला नमक समान भाग लेकर कूट- कपड़छन करें। इसे 3 से 10 ग्राम तक की मात्रा में मट्ठा के साथ सेवन करना चाहिये। इससे संग्रहणी, मन्दाग्नि, वायु गोला, अर्श, तिल्ली तथा सभी उदर - विकार नष्ट होते हैं।
- अजमोद, सोंठ, मोचरस और धाय के फूल को विधिवत चूर्ण करके गोदुग्ध से जमाये हुए दही में मिला कर सेवन करने से धाराप्रवाह प्रवाहिका (संग्रहणी) में भी लाभ होता है।
- नागरमोथा, अरलू, सोंठ, धाय के फूल, पठानी लोध, सुगन्धवाला, बेलगिरी, मोचरस, पाठा, इन्द्रयव, कुड़े की छाल, आम की गुठलीं, अतीस और लजालू को कूट- छान कर बनाये हुए चूर्ण को शहद युक्त चावलों के धोवन के साथ सेवन करने से घोर प्रवाहिका,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सब प्रकार के अतिसार, संग्रहणी आदि सभी में तुरन्त लाभ पहुँचता है। इसका नाम 'वृद्ध गंगाधर चूर्ण' है जो अत्यन्त बढ़े हुए अतिसार में भी लाभकारी है।

- नागरमोथा, इन्द्रयव, बेलगिरी, पठानी लोध, मोचरस और धाय के पुष्प समान भाग का विधिवत् चूर्ण बना कर गुड़युक्त मट्ठा के साथ सेवन करना चाहिये। इस 'लघु गंगाधर चूर्ण' से प्रवाहिका रुक जाती है। संग्रहणी की सौम्यावस्था में यह अधिक काम करता है। चूर्ण के बराबर मात्रा में गुड़ तथा चौगुनी मात्रा में मट्ठा लेना चाहिये।
- कपित्थ (कैथ) का गूदा 8 भाग, शर्करा 6 भाग, अनारदाना, इमली, बेलगिरी, धाय के फूल, अजमोद और छोटी पीपल 3-3 भाग, काली मिर्च, जीरा, धनियाँ, पीपलामूल, सुगन्धबाला, काला नमक, अजवाइन, दालचीनी, इलायची के बीज, तेजपात, नाग- केशर, चित्रकमूल और सोंठ 1-1 भाग लेकर, सबको कूट कर कपड़छन कर लें।

इसका उचित मात्रा में, अनुरूप अनुपान के साथ सेवन करने पर सब प्रकार के अतिसार, प्रवाहिका, वायुगोला, संग्रहणी, क्षय तथा गले के सभी रोगों का शमन होता है। इस चूर्ण का शास्त्रीय नाम 'कपित्थाष्टक चूर्ण' है।

वातज संग्रहणी में सोंठ, अतीस और नागर मोथा का क्वाथ शीघ्र लाभ करता है। हिंग्वाष्टक चूर्ण भी इसमें हितकर है।

- कुटकी, सोंठ, रसौत, धाय के फूल, बड़ी हरड़, इन्द्रजौ, नागरमोथा और कुड़ा की छाल समान भाग लेकर, (24 ग्राम तक की मात्रा में सभी द्रव्य हों), इनका क्वाथ गुदा में दर्दयुक्त पित्तज संग्रहणी को नष्ट करता है।
- कचूर, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, हरड़, यवक्षार, सज्जीक्षार, पीपलामूल और बिजौरा नींबू का चूर्ण नमक मिलाकर सेवन करने से कफज संग्रहणी दूर होती है।
- सोंठ, नागरमोथा, अतीस और गिलोय का क्वाथ आमयुक्त संग्रहणी तथा मन्दाग्नि को दूर करता है।
- बिल्वफल का कल्क 1 चुटकी भर, सोंठ का चूर्ण एक चुटकी भर दोनों को गुड़ के साथ मिला कर देने से सब प्रकार का संग्रहणी रोग दूर होता है। पथ्य में ताजा मट्ठा पर्याप्त मात्रा में सेवन करावें।
- सोंठ, अतीस, नागरमोथा, धाय के फूल, रसौत, कुड़ा की छाल, इन्द्रजौ, पाठा, बेलगिरी और कुटकी समान भाग लेकर चावल के धोवन में मधु मिला कर, उसके साथ सेवन कराने से आमयुक्त ग्रहणी में शीघ्र लाभ होता है।
- जामुन, अनार, सिंघाड़ा, पाठा और कंचट वृक्ष के पत्तों में एक कच्चा बिल्वफल लपेटें और जल के साथ आग पर चढ़ा कर हल्का सा उबाल दें और उसे एक रात उसी प्रकार रहने दें। दूसरे दिन पत्ते हटा कर उस बिल्व फल को निकालें और सोंठ तथा गुड़ के साथ सेवन करावें। इस प्रयोग से अत्यन्त कष्ट - साध्य संग्रहणी भी दूर होती है।
- चिरायता, कुटकी, त्रिकुटा (सोंठ, काली मिर्च, पीपल), नागरमोथा और इन्द्रयव 1-1 भाग, चित्रक 2 भाग तथा कुड़ा की छाल 16 भाग लेकर, कूट- छान कर मिलावें और गुड़ से बनाये हुए ठण्डे शरबत के साथ सेवन करें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मात्रा — 1 से 3 ग्राम तक चूर्ण लेना चाहिये। इसके सेवन से सब प्रकार की संग्रहणी दूर जो जाती है। वायुगोला, अफरा, कामला, ज्वर, पाण्डु अरुचि तथा तीव्र अतिसार में भी हितकर है।

- रसौत, अतीस, कुड़ा की छाल, इन्द्रयव, सोंठ और धाय के फूल समान भाग के चूर्ण को एक या डेढ़ ग्राम तक की मात्रा में, चावलों के पानी में शहद मिला कर, उसके साथ दें। पित्ताधिक्य वाली ग्रहणी, अर्श, रक्तपित्त तथा अधिक दस्तों में हितकर है।

संग्रहणी पर दाड़िमाष्टक चूर्ण — अनारदाना 20 ग्राम, शर्करा 80 ग्राम, त्रिगन्ध (दालचीनी, इलायची और तेजपात) 10 ग्राम, त्रिकटु (सोंठ, मिर्च, पीपल) 30 ग्राम लेकर विधिपूर्वक चूर्ण करलें। संग्रहणी के शमनार्थ यह अत्यन्त हितकर है। अरुचि दूर करता है, दीपक,पाचन - कष्ट को हितकर तथा खाँसी और ज्वर को भी दूर करने में समर्थ है।

मात्रा — 1 से 3 ग्राम तक उचित अनुपात के साथ सेवन करने से संग्रहणी में शीघ्र लाभ होता है।

संग्रहणी आदि पर वृहद् दाडिमाष्टक — अनारदाना 40 ग्राम, शर्करा 40 ग्राम, पीपल, पीपलामूल, अजवाइन, काली मिर्च, धनियाँ, जीरा और सोंठ 5-5 ग्राम, बंशलोचन 2 ग्राम, दालचीनी, छोटी इलायची, तेजपात और नागकेशर 1-1 ग्राम लेकर विधिपूर्वक चूर्ण करें।

मात्रा — 1-2 ग्राम यह चूर्ण रोगानुरूप अनुपात से सेवन कराने से अतिसार, क्षय, गुल्म, संग्रहणी, स्वरभंग, मन्दाग्नि, जुकाम, खाँसी आदि के निवारण में अधिक हितकर है।

संग्रहणी पर अव्यर्थ औषधि — शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, शुद्ध हिंगुल, सहस्रपुटी अभ्रक भस्म, शतपुटी लौह भस्म, बेलगिरी, जायफल, मोचरस, अतीस, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, कैथ, धाय के फूल, भुनी हुई हरड़, चित्रक, अजवाइन, अनारदाना, नागरमोथा, राल, इन्द्रयव, अफीम 5 ग्राम। सभी काष्ठौषधियों को कूट- कपड़छन करें। पारद और गंधक को 3 घंटे खरल कर, कज्जली बनावें। तदुपरान्त सभी को एक साथ मिला कर, धतूरे के पत्तों के स्वरस में घोट कर मूँग प्रमाण गोलियाँ बना कर सुखा लें।

मात्रा — 1 से 4 गोली तक रोग और रोगी के बलाबल को देखकर सेवन करानी चाहिये। अनुपान में ताजा मट्ठा देना चाहिये। वरन् आहार में मट्ठा का अधिक सेवन करना उचित है। इसके सेवन से सब प्रकार की संग्रहणी, यदि दुःसाध्य हो तो भी मिट जाती है। उदर के अन्य विकारों में भी हितकर है।

संग्रहणीनाशक रसयोग — छोटी इलायची के दाने, मोचरस और शुद्ध गन्धक 20-20 ग्राम, शुद्ध अफीम 4 ग्राम और शर्करा (मिश्री) 40 ग्राम लेकर सबको महीन चूर्ण बनाकर रखें।

मात्रा — आधा से एक ग्राम तक चावल के धोवन के साथ प्रातः, दुपहर और सायंकाल 7-7 घंटे के अन्तर से दें। आवश्यक होने पर यह अन्तर कम भी कर सकते हैं। इसके सेवन से सब प्रकार की संग्रहणी, मरोड़, पेचिश, अतिसार आदि में पर्याप्त लाभ होता है।

संग्रहणी पर अव्यर्थ चूर्ण — बड़े अरलू के वृक्ष की अन्तर्छाल लेकर छाया में सुखावें और फिर कपड़छन चूर्ण कर लें। औषधि तैयार है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मात्रा — 2-3 ग्राम तक ताजा मट्ठा के साथ सेवन करने से दो सप्ताह के भीतर ही संग्रहणी मिट जाती है। यदि रोगी 11 दिन तक केवल मट्ठा पीकर ही रह सके तो यह दवा अत्यन्त लाभकारी होती है।

संग्रहणी की अमोघ औषधि — कुड़ा की छाल लेकर उसे कूट- पीस कर चौगुने पानी के साथ अग्नि पर चढ़ावें और चतुर्थांश क्वाथ होने दें। फिर छान कर उसे पुनः अग्नि पर चढ़ा कर इतना पकावें कि यह घनसत्व बन जाये। तब उसे उतारकर पीसें और पाताल गारुड़ी (छिरेहटी) के स्वरस की 7 भावनाएँ दें, फिर सुखा कर रखें।

मात्रा — 2 या 3 ग्राम तक अनार के 80 मिलीग्राम स्वरस के साथ सेवन करने से सब प्रकार की संग्रहणी दूर होती है। पथ्य में एक बिल्वफल का गूदा ताजा मट्ठा के साथ सेवन करावें। यदि रोगी इसी के सहारे रह सके तो शीघ्र लाभ हो जायेगा। किन्तु ध्यान रखें कि अन्न- त्याग वाला औषधोपचार कल्प चिकित्सा के अन्तर्गत है, अतः उसे किसी अनुभवी वैद्य के निर्देशन में ही कराना चाहिये।

अब प्रसंगवश कल्प चिकित्सा की चर्चा करेंगे। क्योंकि संग्रहणी की कष्टसाध्य या दु :साध्य अवस्था में कल्प करने से शीघ्र लाभ की अत्यधिक सम्भावना रहती है ।

संग्रहणी में कल्प चिकित्सा का महत्व

संग्रहणी की व्याधि जब बहुत बढ़ जाती है, पुरानी पड़ जाती है, तब सामान्य औषधोपचार से काम नहीं चलता। उस स्थिति में बहुत प्रसिद्ध, बहुत प्रचलित एवं अत्यन्त गुणकारी दवाएँ भी अपना प्रभाव दिखाने में असफल रहती हैं। उस स्थिति में हमारे महर्षियों ने कल्प चिकित्सा की कल्पना की और वे अपने उस सिद्धान्त में शत- प्रतिशत सफल रहे। आधुनिक युग में उस नवजीवन दायिनी पद्धति के प्रति हम अनजान से रह गये हैं। आयुर्वेदिक चिकित्सा भी भूल गये हैं और रोगियों के पास भी कल्प चिकित्सा कराने को न तो समय है, न श्रद्धा ही है। फिर भी यहाँ इस विषय में, प्रकाश डालना उचित होगा।

संग्रहणी में कई प्रकार के कल्पों का विधान किया गया है। जैसे कि तक्र कल्प, दधि- कल्प, दुग्ध- कल्प, आम्रकल्प आदि। इन सब में तक्र कल्प को सर्वोत्तम माना गया है। किन्तु वर्षा ऋतु में तक्र (मट्ठा) सेवन का निषेध भी है, इसलिये उन दिनों में अन्य वस्तु कल्क के लिये प्रयुक्तकी जानी चाहिये। तक्रकल्प के लिये शीत ऋतु सर्वोत्तम रहती है। तक्र कल्प पर विचार करने से पूर्व कुछ अन्यं आवश्यक बातों पर विचार करते हैं —

- रोगी को ऐसे स्थान पर रखना चाहिये, जहाँ उसका मन लगा रह सके। चिकित्सावधि में उसे काम, क्रोध, चिन्ता, ईर्ष्या आदि से बचाये रखने की पूरी चेष्टा की जाय।
- रोगी को किसी प्रकार का विशेष परिश्रम न करना पड़े। उसकी स्थिति के अनुरूप विश्राम की व्यवस्था की जानी चाहिये। किन्तु यदि वह चलने- फिरने में कठिनाई का अनुभव न करे, तो उसे प्रातःकाल ताजा हवा में टहलने दिया जाय। क्योंकि बिस्तर पर लेटे- लेटे भी शरीर में निष्क्रियता आ जाती है।
- उसे जो आहार दिया जाय, वह सुपाच्य और पोषक हो। उसकी पाचनशक्तिके अनुरूप ही व्यवस्था होनी चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- जो वस्तुएँ रोगी के लिये अपथ्य हों, वे उसके समक्ष न लाई जायें, अन्यथा उसका मन उन- उन वस्तुओं के प्रति अधिक लालायित होगा और सम्भव है कि वह किसी प्रकार दृष्टि बचा कर बद - परहेजी कर बैठे।
- औषधि का निर्णय, उसकी मात्रा और अनुपान रोगी के रोग, आयु और पाचन- शक्ति को ध्यान में रखकर करना चाहिये। अन्यथा अन्य उपद्रव हो सकते हैं।
- रोगी के पास कोई परिचारक अवश्य रहना चाहिये, जो समय- समय पर उसकी आवश्यक परिचर्या कर सके, उसे धैर्य देता रहे और मन बहला सके।
- कल्पार्थ निर्दिष्ट औषधि, आहार हेतु अनुकूल वस्तुएँ तथा अन्य आवश्यक पदार्थ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहने चाहिएं, साथ ही उपद्रवशामक औषधि भी बताई हो तो उसका रहना भी अपेक्षित है।

संग्रहणी में आहार ग्रहण करने वाला अंग दूषित हो जाता है, उसकी क्षमता घट जाती है, इसलिये वह परिपक्व न हुए अन्न को स्वीकार नहीं करता, उसे बाहर फेंक देता है। इस कारण उस अन्न पर, ग्रहणी में रहकर जो पाचन- रस की क्रियाएँ होने को थीं, वह भी नहीं हो पातीं, इसी कारण अन्य क्रियाओं से भी पाचनतन्त्र को वंचित रह जाना पड़ता है। इसलिये यह बहुत आवश्यक है कि रोगी को जो आहार दिया जाय, वह बहुत विचार कर दिया जाये ।

आयुर्वेद का मत है कि 'प्रद्रवं लघु भोजनं' रोगी को अधिक द्रव (पतला) और लघु भोजन दिया जाय। इस प्रकार की विशेषता से युक्त आहार मण्ड ही हो सकता है, जो कि दो प्रकार का है — (1) लाज मण्ड, और (2) ओदन मण्ड। किन्तु ओदन की अपेक्षा लाजमण्ड हल्का और सुपाच्य होने के कारण अधिक उपयुक्त हो सकता है। इस विषय में 'भैषज्य रत्नावली' के ज्वराधिकार प्रकरण में निर्दिष्ट लाजपेया के प्रयोग पर ध्यान दिया जाना चाहिये। उसमें कहा गया है :—

लाजपेयां सुखजरां पिप्पलीनागरैः श्रुताम् ।
पिवेत् ज्वरी ज्वरहरां क्षद्वानल्याग्निरादितः ॥

अर्थात् — 'ज्वर में रोगी को पाचन - शक्ति अत्यन्त न्यून हो जाती है। इसलिये यदि उसे कुछ भूख लगे, तो उसे पहिले छोटी पीपल और सोंठ सहित पकाई गई लाजपेया पीने को दी जाय।' लाज अर्थात् खील से निर्मित पेया, जो इतनी हल्की और लघु होती है कि अनायास ही पच जाती है।

यद्यपि यह निर्देश ज्वर रोगी के प्रति है, किन्तु संग्रहणी में भी पाचनशक्ति का अत्यन्त ह्रास हो जाता है, इसलिये इसमें भी वैसा ही आहार भूख लगने पर दिया जाना चाहिये। पेया बनाने की विधि यह है कि जिस अन्न से पेया बनानी हो, उसका वजन 1 तोला (लगभग 12 ग्राम) हो, उसे एक लीटर पानी के साथ पकावें, जब आधा शेष रहे, तब उसे ठण्डा करें और छान कर रोगी को पिलावें।

वस्तुतः पेया और मण्ड में विशेष अन्तर नहीं है। जब अन्न बिल्कुल गल कर पतला (तरल) हो जाता है, तब उसे मण्ड कहते हैं। इस प्रकार संग्रहणी के रोगी को लाजमण्ड अथवा पेया के रूप में आहार दिया जाना अधिक हितकर है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

किन्तु जिन रोगियों को खिचड़ी पच सकती हो, उन्हें वही दी जा सकती है। खिचड़ी को संस्कृत में यवागू कहते हैं। आचार्य शारंगधर ने खिचड़ी का विधान इस प्रकार किया है कि चार पल (16 तोले) औषधि- द्रव्यों को कूट कर चौंसठ पल (256 तोले) जल में डाल कर पकावें और जब वह आधा शेष रहे तब उतार कर छान लें। फिर उसमें चावल आदि, खिचड़ी की वस्तु मिला कर पकावें और जब वह कुछ गाढ़ी हो जाय, तब अग्नि से उतार कर सेवन करानी चाहिये।

वस्तुतः रोगी कल्प - चिकित्सा के बिना, केवल औषधोपचार से रोगमुक्त हो सकता हो तो भी उसे यवागू का प्रयोग हितकर ही रहेगा। शारंगधर संहिता में तो संग्रहणी के रोगी को आहार रूप में एक विशेष प्रकार की खिचड़ी का भी निर्देश किया है।

संग्रहणी पर आम्रादि यवागू

आम्राम्रातक जम्बूत्वक् कषाये विपचेद बुधः।

यवागूं शलिभिर्युतां भुक्त्वा ग्रहणीं जयेत्॥

इसके अनुसार आम, अम्बाड़ा और जामुन (सम भाग) की 16 तोले (लगभग 180 ग्राम) छाल को सोलह गुने पानी के साथ क्वाथ करें। जब आधा पानी जल जाय, आधा शेष रहे, तब उतार कर छानें और फिर 16 तोले चावल डाल कर पकावें और गाढ़ी यवागू तुल्य होने पर उतार कर सेवन करावें। इसके सेवन मात्र से संग्रहणी पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

अनेक विद्वान कल्प चिकित्सा में पानी पीने तक का निषेध करते हैं। उनका मत है कि पानी पीने से अपच और अग्निमान्द्य में सहायता मिलेगी, इसलिये नहीं पिलाना चाहिये। वरन् तक्र आदि के रूप में दिया जाने वाला कल्पपेय ही दिया जाना चाहिये। अर्थात् तक्र कल्प में प्यास लगने पर भी तक्र भी तक्र ही दिया जाय। किन्तु इससे रोगी ऊब जाता है, उसकी मनःस्थिति पर कुप्रभाव पड़ता है। इसलिये भी पेया, मण्ड आदि को आहार रूप में दे दिया जाय तो कुछ हानि नहीं है, रोगी अथवा उसके परिचारकों को उसमें अपने विवेक अथवा स्वेच्छा का प्रयोग नहीं करना चाहिये।

संग्रहणी में तक्र कल्प का विधान

यह पहिले भी कह चुके हैं कि कल्प चिकित्सा में तक्र कल्प सर्वोत्तम है। स्वस्थ, निरोग, जिसका शिशु जीवित हो, एक- डेढ़ मास का हो गया हो, उस गाय का दूध लेकर, उसमें 10 प्रतिशत पानी मिला कर एक उबाल लगाया जाय और तब उसे मिट्टी के शुद्ध पात्र में जमाया जाय। अच्छा हो कि उस पात्र के भीतर की ओर वायविडंग और चित्रक की जड़ का कल्क बना कर लेप कर दें। दही जम जाने पर, प्रातःकाल उसे बिलोकर लौनी निकाल कर पृथक रखें और उस तक्र को सेवनार्थ प्रयुक्त करें।

रोगी को प्रथम दिन 3-4 बार में आधे लीटर के लगभग तक्र का सेवन करावें। दूसरे दिन उससे कुछ अधिक, तीसरे दिन और भी अधिक। इस प्रकार धीरे- धीरे उससे कुछ अधिक, पाँचवे दिन और भी अधिक। इस प्रकार धीरे- धीरे तक्र की मात्रा 20-25 लीटर तक पहुँच सकती है और 40-45 दिनों में रोगी रोगमुक्त हो सकता है। यदि फिर भी कुछ कमी मालुम पड़े तो कल्प की अवधि 1-2 सप्ताह के लिये बढ़ाई जा सकती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by Sarayu Trust

कल्पारम्भ में चार- छः दिनों तक रोगी को मृदु सुपाच्य आहार और पानी भी पिलाया जा सकता है। चिकित्सा क्रम बढ़ने पर तक्रकी अधिक मात्रा झिलने लगती है और अन्न जल की इच्छा कम होने लगती है। तब प्यास न लगने पर रोगी स्वयं भी पानी के लिये आग्रह छोड़ देता है।

जब रोगी और चिकित्सक दोनों को रोगी के पूर्ण स्वस्थ होने का विश्वास हो जाय, तब उसे पथ्याहार का आरम्भ कराना चाहिये। धीरे- धीरे कल्प द्रव्य की मात्रा कम करते हुए, आहार की मात्रा बढ़ाई जा सकती है। किन्तु पथ्य प्रारम्भ करने पर कभी- कभी आहार के सात्म्य न होने के कारण, कुछ विपरीतता उत्पन्न हो सकती है। इसलिये पथ्यारम्भ के दिनों में अधिक सावधानी की आवश्यकता होती है। चिकित्सक को उस स्थिति पर दृष्टि रखनी चाहिये।

कल्प चिकित्सा में, कल्पाहार के अनुरूप औषधियाँ दी जानी चाहियें। औषधियों में पर्पटी को अधिक हितकर माना जाता है। इसलिये पंचामृत पर्पटी, स्वर्ण पर्पटी, ताम्र पर्पटी आदि दवाएँ रोग और रोगी की प्रकृति तथा बलाबल के अनुसार देनी चाहिये।

आवश्यकतानुसार चिकित्साक्रम में अन्य औषधियाँ भी, पर्पटी के साथ दी जा सकती हैं। सामान्यतः पंचामृत पर्पटी 200 मिली ग्राम के गाय के ताजा घृत 10 ग्राम, श्वेत जीरा भुना 3 ग्राम और भुनी हुई हींग 200 मिलीग्राम मिला कर, दिन में 2-3 बार, आवश्यकता के अनुसार दी जा सकती है। पंचामृत तथा अन्य पर्पटियों के योग भी यहाँ प्रस्तुत हैं :—

संग्रहणी- हर पंचामृत पर्पटी

शुद्ध गन्धक 8 तोले, शुद्ध पारद 4 तोले, लौह भस्म 2 तोले, अभ्रक भस्म 1 तोला और ताम्रभस्म आधा तोला लें। प्रथम गन्धक, पारद, दोनों को खरल में डाल कर कज्जली करें और फिर सभी भस्में मिला कर पर्याप्त घोटें, जिससे कि सब एक - जीव हो जायें। अब इसे लोहे की कढ़ाई में रखकर अग्नि पर चढ़ावें। वह अग्नि बेर की लकड़ी की हो तथा अग्नि अत्यन्त मन्द रहे। इस प्रकार यह मिश्रित कज्जली पतली हो जायेगी। तब गाय के गोबर को उपले के समान समतल बना कर उस पर केला का एक पत्ता रखें तथा उस पत्ते पर, पतली हुई वह दवा इस प्रकार से लीप देनी चाहिये, कि जिससे कि वह एक पापड़ जैसा बन जाय। उसके ऊपर भी केले का पत्ता ढँक कर, ऊपर गोबर की पर्त रख दें। फिर दो घण्टे के पश्चात् दोनों पत्तों के मध्य में जम कर पापड़ तुल्य पर्त बनी हुई उस पर्पटी को निकालें और लोहे के खरल में घोंट कर सुरक्षित रखें।

मात्रा — 2 रत्ती (लगभग 250 मिलीग्राम) तक है। इसका सेवन असमान भाग घृत और मधु के साथ करते हैं। संग्रहणी में इसकी मात्रा 1 रत्ती नित्य प्रति बढ़ानी चाहिये। प्रतिदिन बढ़ाई हुई मात्रा अधिकतम 1 माशा (लगभग 1 ग्राम) तक हो सकती है। इसके 7-8 दिन सेवन करने से ही सब प्रकार की संग्रहणी, अरुचि, कुष्ठ, अर्श, वमन, जीर्ण, अतिसार, ज्वर, कास, रक्तपित्त और क्षयादि रोग नष्ट हो जाते हैं। यह बल- वीर्य की वृद्धि करने वाली, वली- पलित दूर करने वाली, नेत्र रोगों का शमन करने वाली, तथा अग्नि प्रदीप्त करके क्षुधा खोलने वाली है। इसके सेवन से मनुष्य पूर्ण स्वस्थ एवं हष्ट- पुष्ट हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ग्रहणी आदि पर स्वर्ण पर्पटी

शुद्ध पारद 4 तोले, शुद्ध गन्धक 5 तोले और स्वर्णभस्म आधा तोले लेकर, प्रथम पारद गन्धक की कज्जली करें और फिर स्वर्ण भस्म को भी मिला कर पर्याप्त रूप से खरल हो जाय तब लोहे की कढ़ाई में डाल कर मन्दाग्नि दें तथा पंचामृत पर्पटी की विधि से ही पर्पटी निकाल कर, खरल में घोट पर सुरक्षित रखें।

मात्रा — प्रथम दन 1 रत्ती से आरम्भ करें और प्रतिदिन 1-1 रत्ती बढ़ाते हुए 1 महीने तक दे सकते हैं। इसका सेवन दोषानुरूप मात्रा एवं अनुपान से करना चाहिये। विविध प्रकार की ग्रहणी, क्षय, आठ प्रकार के शूल और सब प्रकार के ज्वरों को नष्ट करने में यह पर्पटी समर्थ है। बल- वीर्य की भी वृद्धि करती है।

सर्वग्रहणी नाशक ताम्र पर्पटी

शुद्ध पारद और शुद्ध गन्धक 5-5 तोले, ताम्र भस्म ढाई तोले लेकर उपर्युक्त पंचामृत पर्पटी की विधि से ही पर्पटी बना कर महीन पीसें और उसमें भृंगराज, वासा, त्रिकुटा, त्रिफला, अदरक, पत्रज, भटकटैया, सहजने की जड़, वत्सनाग और चन्दन के स्वरसों अथवा क्वाथों की सात- सात भावनाएँ क्रमशः देकर, शुष्क होने पर शीशी में भर लें।

इसकी मात्रा 6 रत्ती तक की है। इसे ताजा पानी के साथ अथवा रोग और रोगी की प्रकृति के अनुरूप अनुपान से देनी चाहिये। यह श्लेष्म- ज्वर और वात ज्वर को 3 दिन में दूर कर देती है। वातरक्त, अजीर्ण, सब प्रकार के ग्रहणी रोग तथा कुष्ठ रोग भी इसके 1 मास सेवन करने मात्र से बिल्कुल नष्ट हो जाते हैं।

असाध्य ग्रहणी आदि में लौह पर्पटी

शुद्ध पारद 1 तोला, शुद्ध गन्धक 1 तोला तथा लौहभस्म भी 1 तोला ही लें। पहिले पारद- गन्धक की कज्जली करें और फिर लौह भस्म भी उसी में मिला कर इतनी घोटें कि वह कज्जली में सात्म्य हो जाय। तदुपरान्त उपर्युक्त पर्पटियों की विधि से ही, इसकी पर्पटी बना कर, सूक्ष्म खरल करके शीशी में सुरक्षित रखें।

मात्रा — प्रथम दिन 1 रत्ती से आरम्भ करके प्रतिदिन 1-1 रत्ती बढ़ाते जायें। इस प्रकार एक या दो सप्ताह में ही अभीष्ट लाभ हो जाता है। इसका सेवन ताजा पानी के साथ करावें अथवा जीरा और धनियाँ के क्वाथ के साथ दें। इसके सेवन से सूतिका रोग, ज्वर, असाध्य ग्रहणी या संग्रहणी, आम- शूल, अतिसार, पाण्डु, कामला, प्लीहा, मन्दाग्नि, भस्मक, आमवात, उदावर्त तथा सब प्रकार के कुष्ठ आदि अनेक रोग दूर हो जाते हैं। इसका सेवन करने वाला व्यक्ति वलीपलित से रहित, कान्तिवान तथा सुखी स्वस्थ हो जाता है।

दुःसाध्य ग्रहणी आदि में विजय पर्पटी

शुद्ध गन्धक 4 तोले, शुद्ध पारद 2 तोले, रौप्य भस्म 1 तोला, स्वर्ण भस्म, वैक्रान्त भस्म और मुक्ता भस्म 6-6 माशे लेकर उपर्युक्त विधि से ही कज्जली बना कर तथा खरल में पीस कर रख लें।

मात्रा — 2 रत्ती से आरम्भ करें, फिर प्रतिदिन 1-1 रत्ती अधिक करके 10 रत्ती तक ले जायें। इतने समय में स्वास्थ्य लाभ प्रायः हो ही जाता है। रोगी के स्वस्थ होने पर पर्पटी की मात्रा उसी क्रम से कम करते रहना चाहिये। घृत, सेंधा नमक, धनियाँ, हींग, जीरा और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
सोंठ के साथ सिद्ध किये हुए खट्टे पदार्थों का सेवन पथ्य रूप में करना चाहिये। यदि पित्त की अधिकता हो तो मधुर और खट्टे पदार्थ एवं मधु का सेवन कराना चाहिये। शाकों में परबल, बेंगन आदि का सेवन उचित है। यदि भोजन करने की स्थिति में वायु कुपित हो जाय और शरीर में झनझनाहट, सिर में दर्द, अतिसार, वमन आदि हो और प्यास तथा पित्ताधिक्य हो जाय तो नारियल का पानी पिलाने से लाभ होता है।

इसके सेवन से कठिन, दु;साध्य तथा पुराना ग्रहणी रोग, आमशूल, अतिसार, अर्श, यक्ष्मा, शोथ, कामला, पाण्डु, प्लीहा, जलोदर, परिणाम - शूल, अम्लपित्त, वातरक्त, वमन, कृमि, कुष्ठ, प्रमेह, सब प्रकार के ज्वर आदि दूर हो जाते हैं। बल - वीर्य की वृद्धि एवं रति शक्ति की दृढ़ता प्राप्त होती है।

गन्धक शोधन विधि — ग्रन्थकार ने इस पर्पटी में डाली जाने वाली गन्धक की शुद्धि की भी विधि दी है — गन्धक के चावलों के तुल्य छोटे- छोटे टुकड़े करके उन्हें भाँगरे के रस की सात भावनाएँ (अथवा तीन भावनाएँ) सात दिन तक दें और नित्य प्रति धूप में रखकर सुखा लें। फिर अत्यन्त महीन खरल करके उसे लोहे के पात्र में रखकर बेर की लकड़ी के धुआँ रहित अंगारों पर रख कर गलावें और फिर भाँगरे के रस में डाल दें और कुछ समय बाद निकाल कर सुखा लें। इस प्रकार शोधित गन्धक 'विजय पर्पटी' में डालनी चाहिये।

जीर्णातिसारहर विजय पर्पटी

यह विजय पर्पटी का दूसरा योग है — शुद्ध पारद, हीरा भस्म, रौप्य भस्म, मुक्ताभस्म, ताम्रभस्म और स्वर्ण भस्म 1-1 तोला तथा शुद्ध गन्धक 7 तोले लेकर, पहिले पारद- गन्धक की कज्जली करें और फिर एक- एक भस्म मिलाते चलें और पंचामृत पर्पटी की निर्माण विधि से ही इसका निर्माण कर लें।

इसकी मात्रा 2 रत्ती है। प्रतिदिन प्रातःकाल सेवन करनी चाहिये। इससे कठिन और अत्यन्त पुरानी संग्रहणी, जीर्ण अतिसार, आमशूल, प्रवाहिका, अर्श, यक्ष्मा, शोथ, कामला, पाण्डु, प्लीहा, गुल्म, जलोदर, परिणाम - शूल, अम्ल पित्त, वातरक्त, वमन, भ्रम, कुष्ठ, प्रमेह, विषमज्वर, अजीर्ण, अग्निमान्द्य और अरोचक आदि अनेकानेक रोग नष्ट होते और शरीर हृष्ट- पुष्ट, कान्तिवान, झुर्रियों रहित, वली- पलित रहित तथा सब प्रकार से स्वस्थ हो जाता है।

आमयुक्त ग्रहणी में रस पर्पटी

शुद्ध पारद और शुद्ध गन्धक की कज्जली करके रखें। यही रस पर्पटी है। इसकी मात्रा दो रत्ती है, दूसरे दिन से 1-1 रत्ती बढ़ाते जायँ, किन्तु 10 रत्ती से अधिक नहीं बढ़ानी चाहिये। इसकी प्रयोग अवधि 21 दिन तक की है। किन्तु उसमें भूख लगने पर तुरन्त भोजन करने का निर्देश है। ग्रन्थकार का कथन है कि यदि आधी रात के समय भी भूख लगे तो भी अवश्य तत्काल कुछ खाना चाहिये। यदि भोजन का समय निकल जाय और कुछ खाने को न मिले तो ज्वर भी आ सकता है। यदि ज्वर आ जाय अथवा किसी कारणवश दस्त लग जायँ तो दूध में बराबर का पानी मिला कर, औटा कर पीना चाहिये।

किन्तु अपथ्य पदार्थों का त्याग आवश्यक है। पका हुआ केला, केले का पत्ता, केले का वल्कल या केले का मूल, नीम आदि कड़वे पदार्थ, गर्म अन्न, जलचर जीवों (मछली आदि)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

का मांस, खट्टे पदार्थ, खट्टा दही, पापड़ी का शाक, गुड़, खाँड, ईख या इनसे बने हुए पदार्थों का निषेध किया गया है।

Digitized by eGangotri

इस पर्पटी में डाले जाने वाले पारद के शोधन की विधि बताते हुए कहा है कि पारद में तीन स्वाभाविक गुण हैं— मल, वाहि और विष। मलदोष से मूर्च्छा, वाहि दोष से दाह और विष से हिक्का उत्पन्न होती है। उनके निराकरणार्थ पारद का इस प्रकार से शोधन कर लेना आवश्यक है—

पारद शोधन विधि — पारद 4 तोले लें, उसे घृतकुमारी (ग्वारपाठा) के स्वरस में खरल करें, इससे उसका मल नष्ट होगा। फिर उसे त्रिफला के चूर्ण के साथ घोटें तो वाहि दोष दूर होगा और तब चित्रक की पत्तियों के स्वरस में घोंटें, इससे विष दोष दूर हो जायेगा, तदुपरान्त पारद को पत्थर के खरल में डाल कर क्रमशः जयन्ती- पत्र स्वरस में, एरण्ड - पत्र स्वरस में, अदरक स्वरस में और फिर मकोय की पत्तियों के स्वरस में डुबो- डुबो कर इतनी अधिक घुटाई करें कि वह घुटते- घुटते ही सूख जाय। इस प्रकार के शुद्ध किया हुआ पारद ही रसपर्पटी के योग्य होता है।

इस पर्पटी में डाली जाने वाली गन्धक का शोधन उसी प्रकार करना चाहिये, जिस प्रकार विजय पर्पटी में गन्धक शोधन की विधि कही गयी है।

यह रस पर्पटी ववासीर, आमयुक्तसंग्रहणी, उदरशूल, अतीसार, कामला, पाण्डु, प्लीहा, गुल्म, जलोदर, भस्मक, आमवात, कुष्ठ, शोथ, अम्लपित्त, त्रिदोष मन्दाग्नि तथा अनेक प्रकार के विषम रोगों और उनके उपसर्गों को दूर करने में समर्थ है। शरीर में इसके सेवन से आरोग्यता, शक्ति आदि की वृद्धि के साथ ही नवजीवन का संचार होता है।

तक्रारिष्ट

भैषज्य रत्नावली में, उसके रचयिता महामहोपाध्याय गोविन्ददास ने तक्रारिष्ट की भी कल्पना की है, जो कि इस प्रकार है —

अजवाइन, आमला, हरड़ और काली मिर्च 12-12 तोले, पाँचों नमक, प्रत्येक 4-4 तोले लेकर, कूट- पीस कर चूर्ण करलें और फिर 16 सेर (लगभग 17 लीटर) तक्र में डाल कर चार दिन तक रखें। यही तक्रारिष्ट है।

इसके सेवन से अग्नि प्रदीप्त होती है तथा शोथ, गुल्म, अर्श, कृमिरोग तथा सभी प्रकार के उदर रोग नष्ट होते हैं। प्रमेह में भी यह तक्रारिष्ट आशातीत लाभ दिखाता है।

दोषानुसार तक्र में नवनीत की मात्रा

तक्र में मक्खन की मात्रा रहे या न रहे, अथवा रहे तो कितनी रहे ? यह प्रश्न भी विचारणीय है। इसका निर्णय इस बात पर निर्भर है कि रोगी में मक्खन को पचाने की कितनी क्षमता हो सकती है ? वातदोष की अधिकता वाली संग्रहणी के रोगी को स्नेह की कुछ अधिक आवश्यकता हो सकती है, इसलिये उसे 20-25 प्रतिशत तक मक्खन निकाला हुआ मट्ठा दिया जा सकता है। पित्तजन्य संग्रहणी हो तो, ऐसे रोगी को 50 प्रतिशत तक मक्खन निकाला हुआ मट्ठा सेवन कराना चाहिये। कफ दोष की अधिकता वाली संग्रहणी में चिकनाई की मात्रा कम रहनी चाहिये। इसलिये कफज ग्रहणी में 75 प्रतिशत मक्खन निकला हुआ मट्ठा अधिक हितकर हो सकता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जिस रोगी के मल में अधिक दुर्गन्ध हो, उसके लिये चिकनाई तब तक नहीं दी जानी चाहिये, जब तक कि उसकी दुर्गन्ध दूर न हो जाये। ऐसे रोगी को जो मट्ठा दिया जाय, उसमें मक्खन का अंश बिल्कुल न रहने दिया जाय।

रोगी को दिये जाने वाले मक्खन में, उसकी इच्छानुसार सेंधा नमक, काली मिर्च, जीरा आदि मिला कर देना चाहिये। लवण भास्कर प्रभृति चूर्ण मिला देना भी हितकर हो सकता है। शर्करा का प्रयोग बिल्कुल वर्जित है। अनुपान में, आवश्यक होने पर शहद का प्रयोग किया जा सकता है।

संग्रहणी में दधि कल्प

जब रोगी को तक्र कल्प न देना हो अथवा उसकी समुचित व्यवस्था न हो सके तो दही का कल्प दिया जा सकता है। इसमें रोगी को प्रथम दिन 25-30 ग्राम दही से आरम्भ करें और बढ़ाते हुए 10-12 किलो तक ले जायें। यदि रोग निवृत्ति शीघ्र हो जाय तो आवश्यक नहीं कि उतनी अधिक मात्रा में दही खिलाया ही जाय। यदि अनुकूलता हो तो रोगी स्वस्थ होता चला जाता है।

दधिकल्प में औषधि व्यवस्था ऐसी हो जो दस्तों को धीरे- धीरे रोक सके। इसमें लक्षणानुसार भास्कर लवण चूर्ण दही में मिला कर दिया जा सकता है। भैषज्य रत्नावली के ग्रहण्यधिकार में वृहन्नायिका चूर्ण का योग दिया है। इसके सेवन से सब प्रकार की संग्रहणी दूर होती है। अग्निमान्द्य, कास, अर्श, प्लीहा, पाण्डु, जीर्णज्वर, मन्द ज्वर, प्रमेह, शोथ, विष्टम्भ, अतिसार, शूल, आमवात आदि सभी को दूर करता है। इसके साथ दही का सेवन पथ्य है। इसका योग इस प्रकार है—

संग्रहणी आदि में वृहन्नायिका चूर्ण

चित्रक, आमला, हरड़, बहेड़ा, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपल, वायविडंग, हल्दी, दारुहल्दी, भल्लांतक- शुद्ध, अजवाइन, हींग, पाँचों नमक, घर का धुआँ (जिसका जाला दीवाल पर पड़ जाता है, उसे लेना चाहिये) वच, कूट, नागरमोथा, अभ्रक भस्म, शुद्ध गन्धक, यवक्षार, सज्जीक्षार, सुहागे की खील, अजमोद, शुद्ध पारद और गजपीपल, सभी समान भाग लेकर काष्ठौषधियों को कूट- कपड़छन करें। गन्धक- पारद को पृथक्खरल में घोंट कर कज्जली बना लें और भस्मादि मिला कर, चूर्ण के साथ मिलावें और एकजीव कर लें।

इस चूर्ण की मात्रा 1 माशा (1 ग्राम) तक है। रोगी का बलाबल देखकर सेवन करावें। दही, काँजी आदि इसके साथ पथ्य माने गये हैं, इसलिये संग्रहणी आदि में दधि- कल्प के साथ इसका उपयोग हितकर है।

दुःसाध्य ग्रहणी में जीरकाद्य चूर्ण

भैषज्य रत्नावली में इस चूर्ण के विषय में कहा गया है — **"एतत् प्राशितमात्रेण ग्रहणीं दुस्तरां जयेत्"** अर्थात् 'इस चूर्ण के सेवन मात्र से दुःसाध्य ग्रहणी भी वश में हो जाती है। इस चूर्ण का नुस्खा यह है—

जीरा, फुलाया हुआ सुहागा, नागरमोथा, पाठा, बेलगिरी, धनियाँ, सुगन्धबाला, सौंफ, अनार का छिलका, कुड़े की छाल, छुईमुई, धाय के फूल, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, दालचीनी,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

छोटी इलायची, तेजपत्र, मोचरस, इन्द्रयव, अत्रक भस्म, शुद्ध गन्धक और शुद्ध पारद समभाग का कपड़छन चूर्ण और इन सबके बराबर वजन में जायफल का चूर्ण लेना चाहिये। इन सबको पर्याप्त घोट कर एकजीव कर लें।

मात्रा —1 माशा (1 ग्राम) लेने से कठिन संग्रहणी तो दूर होती ही है, अनेक प्रकार के आमातिसार, कामला, पाण्डु, मन्दाग्नि आदि में भी अत्यन्त हित साधन होता है। इसका सेवन उचित अनुपान के साथ कराना चाहिये।

संग्रहणी पर पिपल्यादि चूर्ण

छोटी पीपल, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, यवक्षार, इन्द्रयव, चित्रक मूल, सारिवा, पाठा, कचूर और पाँचों नमक समान भाग लेकर, कूट- कपड़छन करें।

मात्रा — 1 से 3 ग्राम तक यह चूर्ण दही, मदिरा अथवा गर्म जल के साथ देना चाहिये। दधि- कल्प में इसका प्रयोग, दही के साथ करना हितकर है।

संग्रहणी पर चांगेरी घृत

कल्क के लिये पीपल, पीपलामूल, चित्रक मूल, गजपीपल, गोखरू, सोंठ, धनिया, पाठा, बेलगिरी और अजवाइन 4-4 तोले, गाय का घी 64 तोले, चांगेरी का स्वरस 12 से 64 तोले तथा दही 12 से 64 तोले लेना चाहिये। प्रथम पीपल आदि कल्क द्रव्यों को कूट कर रस के साथ मिलावें और घृत तथा दही के साथ मिला कर मन्दाग्नि पर पकावें। जब घृत मात्र शेष रह जाय तक अग्नि से उतारें और ठण्डा होने पर छान कर सुरक्षित रखें।

यह चांगेरी घृत संग्रहणी में अत्यन्त हितकर है। इसके सेवन से कफ रोग, वात रोग, बवासीर, अफरा, काँच निकलना, मूत्र - कृच्छ और प्रवाहिका में आशातीत लाभ होता है।

यद्यपि इस रोग के निवारण में आम अमृत के समान हितकारी फल है। किन्तु सभी ऋतुओं में आम नहीं मिलते, केवल वर्षा ऋतु में ही उपलब्ध हो पाते हैं, इसलिये प्रावट्काल में आम्रकल्प की व्यवस्था करनी चाहिये।

इसके लिये वृक्ष पर ही पके हुए आम, जो कि पक कर स्वयं गिरे हों, अथवा गिरा लिये गये हों, उनमें से छाँट- छाँट कर लेने चाहिये। यह आम पतले रस से युक्त, मीठे और चूस कर खाये जाने वाले हों। रोगी इन आमों को चूसे और ऊपर से गोदुग्ध का पान करे

आमों को लाकर ताजा पानी में कम से कम एक- दो घंटे डाल दें जिससे कि उनकी अवांछित गर्मी शान्त हो जाय और छिलकों के ऊपर लगी धूल- धक्कड़ हट जाय। यदि वर्षा पड़ रही हो तो आमों को उसमें रख कर स्वच्छ कर लें और फिर चूसें। धीरे- धीरे रोगी का आहार कम करते चलें और आमों की संख्या तथा दूध की मात्रा बढ़ाते चलें। इस प्रकार मात्रा बढ़ते- बढ़ते 7-8 किलो आम और फिर 8-10 लीटर दूध, औषधियों के प्रभाव से सरलता से पच जाता है। फिर, जब पूर्ण स्वास्थ्य- लाभ हो जाय, तब आम और औषधि की मात्रा घटाते हुए, पथ्यादि की व्यवस्था करनी चाहिये।

अन्य कल्पों के समान ही इस कल्प में भी पंचामृत पर्पटी, स्वर्ण पर्पटी, रस पर्पटी आदि कोई भी उपयुक्त औषधि दी जा सकती है। उसके साथ स्वल्प मात्रा में भुनी हींग तथा एक ग्राम श्वेत जीरा चूर्ण करके औषधि दी जानी चाहिये। भैषज्य रत्नावली में वर्णित 'ग्रहणी शार्दूलवटिका' भी प्रयुक्त की जा सकती है। योग इस प्रकार है :-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जायफल, लौंग, जीरा सफेद, कूट, फुलाया हुआ सुहागा, विडनमक, दालचीनी. छोटी इलायची के बीज, धतूरे के शुद्ध बीज और शुद्ध अफीम। सब को समान भाग लेकर गन्ध प्रसारिणी बूटी के स्वरस की भावना देकर 2-2 रत्ती की गोलियाँ बनावें और सुखाकर रख लें।

मात्रा — 1-1 गोली, दोषानुसार अनुपान के साथ सेवन करानी चाहिये। यह औषधि अत्यन्त ग्राहिणी होने के कारण दुस्साध्य ग्रहणी को भी नष्ट करने में समर्थ है।

संग्रहणी में अभ्रक रसायन या अभ्रक वटी

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, अभ्रक भस्म और काली मिर्च 1-1 तोला तथा फुलाया हुआ सुहागा 6 माशे लेकर खरल में अत्यंत महीन कर लें और फिर उस द्रव्य में क्रमशः केशराज, भृंगराज, चित्रक, ग्रीष्म सुन्दर शाक, जयन्ती, ब्राह्मी, भाँग, श्वेत अपराजिता और पान के स्वरस की 1-1 भावना देकर मटर के बराबर गोलियाँ बना कर रखें। इसकी मात्रा, अनुपान आदि का निश्चय रोगी की आयु, अग्नि (पाचन शक्ति) बल और व्याधि के अनुसार करनी चाहिये। संग्रहणी रोग की सभी अवस्थाओं में तो हितकर है ही, शरीर में बल- वीर्य की भी वृद्धि करती है। ज्वर और अतिसार के लिये तो यह एक सिद्ध औषधि है। कास, श्वास, क्षय, प्रमेह, धातु दौर्बल्य आदि में भी हितकर है।

संग्रहणी में दुग्ध- कल्प

जिस ऋतु में तक्र कल्प नहीं दिया जाना चाहिये, उस ऋतु में अथवा आहार के लिये तक्र की ठीक से व्यवस्था न हो पाने की स्थिति में अन्य किसी वस्तु का कल्प निश्चय किया जा सकता है। उसके लियें दुग्ध की प्राप्ति सरलता से हो सकती है। किन्तु दुग्ध भैंस का नहीं, गाय का अथवा बकरी का हो। संग्रहणी में गाय का दूध बहुत लाभ करता है।

यदि दस्तों की अधिकता हो तो गोदुग्ध से हानि भी हो सकती हैं। उसके सेवन से दस्त और भी अधिक हो सकते हैं। उस स्थिति में औषधियों का प्रयोग बढ़ जाता है और रोगी के भी कष्ट में वृद्धि होती है। किन्तु ग्रीष्म ऋतु में कल्प चिकित्सा हो तो दुग्ध ही अधिक उपयुक्त है।

दूध में स्वल्प जल मिला कर अग्नि पर एक उफान देकर रखना पर्याप्त है। अधिक औंटाया हुआ दूध रोगी को अनुकूल नहीं होता। यह भी देखना होता है कि दूध रखा रहने पर गाढा न हो जाय। ग्रीष्म ऋतु में, ठीक से न रखा जाय तो वह खराब भी हो सकता है। इसलिये ऐसी व्यवस्था करनी चाहिये कि वह हर समय गर्म बना रहे। उचित यह है कि सुखोष्ण दूध बोतलों में भर दिया जाय और उन बोतलों को सामान्य गर्म जल में रखा जाय, तो वह गर्म बना रह सकता है अथवा फ्रिज में रख दें तो गर्म न रहने की स्थिति में भी उसमें गाढ़ापन नहीं आयेगा।

औषधि, मात्रा और अनुपान सभी प्रकार के कल्पों में रोग, रोगी के बलाबलानुसार निश्चित करना चिकित्सक के विवेक पर निर्भर है। किसी- किसी रोगी को केवल दूध पर रखने से दस्त बढ़ जाते हैं, उस स्थिति में न तो घबराना चाहिये, न कल्प छोड़ना चाहिये, वरन् दस्तों के बढ़ने पर, उन्हें नियन्त्रण में रखने का उपाय करना चाहिये। इसके लिये पीने वाले दुग्ध में निम्न औषधि द्रव्यों को पोटली में बाँध कर, औंटाते समय डाल देना चाहिये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
और औटने पर पोटली हटा देनी चाहिए। प्रत्येक लीटर दूध में निम्न द्रव्य निर्दिष्ट मात्रा में डालने चाहिये—

बेलगिरी, इन्द्रयव, नागरमोथा, नेत्रबाला, मोचरस और धाय के फूल 3-3 ग्राम लेकर जौकुट करें और महीन वस्त्र में बाँध कर दूध में डालें। दूध के साथ समान मात्रा में पानी मिलाना चाहिये। जब वह पानी जल जाय, और दूध मात्र शेष रहे तब उतार कर काम में लावें। इस क्षीर - पाक के प्रयोग से बढ़े हुए दस्तों पर काबू पाया जा सकता है।

यदि रोगी के शरीर पर सूजन हो तो उसे लौहभस्म युक्त औषधि देनी चाहिये। ऐसे रोगी को लौह पर्पटी भी लाभदायक है। दुर्बलता अधिक रहने की स्थिति में स्वर्ण पर्पटी से अधिक लाभ होता है। अथवा उचित अनुपान से विजय पर्पटी देनी चाहिये। यह शरीर पर शोथ होने की स्थिति में भी अच्छा काम करती है। यदि ज्वर भी हो तो स्वर्ण पर्पटी उसके लिये उपयुक्त औषधि है। लक्षणानुसार अन्य औषधियाँ उसके साथ मिला कर अथवा पृथक् भी दी जा सकती हैं।

यदि रोगी के मल में आँव की अधिकता हो तो लौह पर्पटी भी उपयुक्त रह सकती है। उस स्थिति में आमातिसार में दी जाने वाली कोई अन्य औषधि भी, क्रमानुसार लगाई जा सकती है। आँव की अधिकता वाले रोगी को, पीने वाले दूध में शर्करा नहीं देनी चाहिये अर्थात् उसे फीका दूध देना ही अधिक हितकर है। दुग्ध कल्प वाले रोगी को भी अन्न और पानी की प्रारम्भिक दिनों में छूट देनी चाहिये। धीरे- धीरे उसे कम करते हुए दूध की मात्रा बढ़ाई जाय और फिर अन्न- पानी बन्द करें। कल्प पूरा होने पर, जब रोगी स्वस्थ होने लगे, तब औषधि की मात्रा धीरे- धीरे घटायें और पूर्ण स्वस्थ होने पर ही बन्द करें। रोग- निवृत्ति होने पर जो पथ्य दिया जाय, उसका विचार पूर्वक निर्णय करें और उस समय रोगी की स्थिति पर पूर्णरूप से ध्यान रखें।

ऐसा न समझें कि दुग्ध कल्प कोई सामान्य उपचार है। वरन् ध्यान रहे कि यह एक नवजीवन देने वाला अमृत है। लोलिम्बराज के मत में भी :—

सौभाग्य पुष्टि बल शुक्र विवर्द्धानानि,
किं सन्तिनो भुवि बहूनि रसायनानि।
कन्दर्पवर्द्धनि परन्तु सिताज्ययुक्ता,
दुग्धादृते न मम कोऽपि मतः प्रयोगः॥

अर्थात् "धरती पर सौभाग्य, पुष्टि, बल, वीर्य की वृद्धि करने वाली बहुत सी रसायन हैं, किन्तु घृत, मिश्री मिश्रित दूध से बढ़कर, मेरे विचार में अन्य कोई वस्तु नहीं है।"

इस प्रकार दूध मनुष्य मात्र के लिये अत्यन्त उपयोगी आहार है। इसका कल्प चिकित्सा में भी प्रयोग करना उचित ही है। इसमें रोगी दिनभर 20-25 लीटर तक दूध पी लेता है।

संग्रहणी में ऋतु - फलों का कल्प

यदि तक्र, दही, दूध या आम आदि कल्प किसी कारणवश न कराया जा सके तो विविध प्रकार के फलों का कल्प भी कराया जाता है। उस प्रकार की कल्प चिकित्सा में, उन्हीं फलों का प्रयोग करना चाहिये, जो ऋतु के अनुकूल हों। अर्थात् जिस ऋतु में जो फल सहज रूप से उत्पन्न हों, उसे ऋतुफल कहते हैं। उस ऋतु में उसी फल का कल्प हितकर रह सकता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

खरबूजा- कल्प — यह फल ग्रीष्म ऋतु में उत्पन्न होता है, अतः इसका कल्प वैशाख, ज्येष्ठ मास में कराना चाहिये। अच्छे पके हुए मीठे खरबूजे लेकर उन्हें 2 प्रहर तक पानी में पड़े रहने दें। आम्र कल्प के समान इसमें धीरे- धीरे अन्न का आहार कम करते हुए खरबूजे की मात्रा बढ़ानी होती है। इसमें रोगी को दुग्ध के स्थान पर अनार का रस अथवा स्वल्प मात्रा में शर्बत अनार का प्रयोग किया जा सकता है।

औषधादि का निर्णय रोग के लक्षण तथा रोगी की प्रकृति के अनुसार करना चाहिये। प्रातः सायं चन्द्रपुटी प्रवाल, जहर मोहरा, कताई की पिष्टी और मुक्ता पिष्टी 2-2 रत्ती तथा शंखभस्म 2-3 रत्ती के साथ विजय पर्पटी दी जा सकती है। दुपहरी में जीरकाद्य चूर्ण या लवणभास्कर चूर्ण रुचिवर्धन के लिये दिया जा सकता है।

संग्रहणी में अनार स्वरस कल्प

अनार के स्वरस का कल्प भी कुछ अनुभवी चिकित्सक देते रहे हैं। धीरे- धीरे अन्नाहार घटाते हुए रोगी को केवल अनार के स्वरस पर लाया जाता है। पहिले दिन स्वर्ण पर्पटी 1 रत्ती की मात्रा प्रातः काल अनार के स्वरस के साथ देना ठीक रहता है। उसमें थोड़ा सा काला जीरा, काली मिर्च और किंचित् सेंधव मिला कर दे सकते हैं। आवश्यकता होने पर स्वर्ण मकरध्वज अथवा विजय पर्पटी, प्रभृति औषध निश्चित की जाती हैं। प्रायः सभी कल्पों में औषधि प्रयोग लक्षणानुसार ही किये जाते हैं और विधि भी लगभग एक जैसी ही है। इसलिये कल्प चिकित्सा के इस विषय को, स्थानाभाव के कारण अधिक विस्तार नहीं दे रहे हैं। उपर्युक्त योगों में अधिकांश शास्त्रीय हैं, कुछ विद्वान्, कुछ अनुभवी चिकित्सकों द्वारा समय- समय पर प्रकाश में लाये जाते रहे हैं।

7. विशूचिका (हैजा) की चिकित्सा

विशूचिका के कारण

- विशूचिका बहुत खतरनाक रोग है। यह अधिकतर ग्रीष्म ऋतु में फैलता है। शीत ऋतु के अन्त में, ग्रीष्म ऋतु के अन्त में अथवा वर्षा ऋतु में इसका प्रकोप बढ़ जाता है सड़े- गले फल, पेय, खाद्यान्न आदि में स्थित हुए विषाणु शरीर में प्रवेश करते हैं, तब यह रोग संक्रामक रूप से उत्पन्न होकर फैल जाता है।

कुछ विद्वान् आयुर्वेद में वर्णित 'विशूचिका' और आम भाषा में कहे जाने वाले 'हैजा' रोग को भिन्न- भिन्न मानते हैं। किन्तु लक्षणों के साम्य होने के कारण उसके भिन्न या अभिन्न मानने में कुछ अन्तर नहीं पड़ता। आयुर्वेद में विशूचिका के लिये जो औषधियाँ और चिकित्सा - क्रम कहा गया है, उसका पालन करने पर इस रोग से छुटकारा पाया जा सकता है।

शारंगधर के अनुसार यह रोग तीन प्रकार का होता है, यथा—**"विषूची त्रिविधा प्रोक्त दोषैः सा स्यात् पृथक् पृथक्"** वातादि दोषों के भेद से विषूची तीन प्रकार की होती है। अन्य आचार्य के कथनानुसार विशूचिका में मूर्च्छा, अतीसार, वमन, तृषा, शूल, भ्रम, हाथ- पाँव का ऐंठना, जँभाई आना, दाह, वैवर्ण्य (रंग बदल जाना), कम्प, हृदय में पीड़ा तथा सिरदर्द प्रभृति लक्षण प्रकट होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

यह रोग प्रदूषित आहार, अति भोजन आदि कारणों से होता है, किन्तु भोजन न करने अर्थात् भूखे रहने से भी हो जाता है। खाली पेट रहने पर गर्मी में लू का प्रकोप आसानी से होता है, इसलिये उस ऋतु में पानी अधिक पीना चाहिये।

सदैव ताजा, हल्का, सन्तुलित भोजन करना चाहिये। सड़े हुए फल, काट कर रखे हुए फल, प्रदूषित हो जाते हैं, इसलिये उनका त्याग करें। बासी अन्न, बासी शाक - सब्जी, तरल खाद्य, दुग्धादि सदा ताजा ही प्रयोग में लाना हितकर है। फल, तरकारी आदि को प्रयोग में लाने से पहिले ठीक प्रकार से धो लेना चाहिये। मक्खी, मच्छर आदि को यथा सम्भव भगाने, नष्ट करने का उपाय करना चाहिये। इस प्रकार हैजा से बचा जा सकता है।

किन्तु हैजा हो ही जाय तो उसका तुरन्त उपचार करना चाहिए। उसकी शंका होते ही अमृतधारा, अर्क कर्पूर, प्याज का रस आदि अवश्य दे देना चाहिये। हैजा में वमन होने लगती है। पानी जैसे दस्तों का ताँता लग जाता है, पेशाब बन्द हो जाता है। ऐसी स्थिति में औषधोपचार में जरा भी लापरवाही करने से रोगी के प्राणों पर नौबत आ सकती है।

विशूचिका में औषधोपचार

- प्याज का रस, सेंधा नमक, जीरा भुना, काली मिर्च और हींग मिला कर दें ।
- लौंग पानी में घोट कर, उसमें सेंधा नमक या काला नमक मिला कर देना चाहिये।
- पेशाब बन्द होने की स्थिति में नाभि पर कल्मी शोरा का हल्का लेप करना चाहिये।
- अतिसार चिकित्सा में कही गई दवाएँ इस रोग भी लाभदायक हो सकती हैं, उसमें से कोई दवा देनी चाहिये
- पेशाब बन्द रहने की स्थिति में निम्न योग शीघ्र लाभकारी होता है :—

शुद्ध पारद और शुद्ध गन्धक 5-5 ग्राम लेकर, खरल में कज्जली कर लें और उसे 30 ग्राम असली जवाखार (यवक्षार) में मिला, ठीक से खरल करके रखें। इसकी मात्रा आधा से एक ग्राम तक, मिश्री युक्त ठण्डे पानी के साथ दें तो पेशाब हो जायेगा।

- पतले दस्त और वमन की स्थिति में लाल मिर्च, अजवाइन, शुद्ध कर्पूर, शुद्ध अफीम और शुद्ध कुचला समान भाग लेकर, जल योग से चना के बराबर गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1 से 3 गोली तक रोग और रोगी की प्रकृति के अनुसार ठण्डे पानी के साथ देने से लाभ होगा।

- यदि हैजा के रोगी की वमन न रुक सकें तो उसे निम्न योग हितकर रहता है।

मोरपंख की भस्म, पुराने टाट की भस्म, मक्का के भुट्टा की भस्म और बड़ी इलायची के बीज समान मात्रा में कपड़छन करके रखें। इस चूर्ण की मात्रा 300 से 500 मिलीग्राम तक है, जो कि शहद के साथ दी जा सकती है।

हैजा पर अव्यर्थ गोली

भुनी हुई हींग 3 ग्राम, जीरा काला, जीरा सफेद, लाल मिर्च, सोंठ और शुद्ध रसकर्पूर 2-2 ग्राम तथा शुद्ध अफीम 1 ग्राम लेकर कूट पीस लें और पानी के साथ खरल करके उड़द प्रमाण गोली बना कर सुखावें और शीशी में भर लें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मात्रा — 1-1 गोली ताजा पानी के साथ 1-1 घंटे के अन्तर से दें। आवश्यक होने पर 30-30 मिनट के अन्तर से भी दे सकते हैं। हैजा में यह दवा प्रायः अव्यर्थ ही है ।

विशूचिका नाशिनी वटी

शुद्ध कर्पूर 20 ग्राम, भुनी हुई हींग 12 ग्राम, शुद्ध अफीम 10 ग्राम, लाल मिर्च और ईसब गोल 5-5 ग्राम लेकर पानी के साथ पीसें और चना प्रमाण गोलियाँ बना लें।

मात्रा— 1-1 गोली गुलाब के अर्क से अथवा ताजा पानी से 1-1 घंटा के अन्तर से देनी चाहिये। 2-3 मात्राएँ पेट में पहुँचने पर दस्त और वमन रुक जाते हैं।

विशूचिका नाशक अर्क

सोंफ 4 किलोग्राम, प्याज और पोदीना की पत्तियाँ 1-1 किलोग्राम, आलूबुखारा और गुलाब के फूल 500-500 ग्राम, बड़ी इलायची के दाने 250 ग्राम, श्वेत चन्दन और वंश लोचन 125-125 ग्राम, लौंग, छोटी इलायची के दाने, अनार दाना, दालचीनी और देशी कपूर 60-60 ग्राम लेकर सभी काष्ठौषधियों को जौकुट करें और कर्पूर भी मिला कर 20 लीटर पानी में 24 घण्टे भीगने दें। फिर भवके के द्वारा अर्क खींच लें।

मात्रा — 20 मिली लीटर से 50 मिली लीटर तक रोग और रोगी की स्थिति के अनुरू. 1-1 घण्टे अथवा कम या अधिक अन्तर से देनी चाहिये। हैजा को सभी अवस्थाओं में यह अर्क शीघ्रातिशीघ्र कार्य करता है। लू लगने की स्थिति में भी यह उपयोगी है।

विशूचिका में अर्कपत्र भस्म का जल

धरती में गिरे, पीले पड़े, आक के 5 पत्ते लेकर उन्हें जलाओ, जब वे कोयला हो जाय, तब आधे लीटर पानी को किसी स्टील के पात्र में भरो और उसमें इन कोयलों को बुझाओ फिर इस पानी को छान कर रखो। हैजा के रोगी को इसमें से थोड़ा- थोड़ा पानी देते रहने से शीघ्र लाभ होता है ।

विशूचिकाघ्नी वटिका

भुनी हुई हींग 30 ग्राम, लाल मिर्च का छिलका (बीज निकाल दें) तथा आम की गुठली की गिरी 20-20 ग्राम, जायफल, जावित्री, शुद्ध शिंगरफ और शुद्ध अफीम 10-10 ग्राम और पीपरमेंट फूल (क्रिस्टल) 5 ग्राम लेकर काष्ठादि को कूट- छान लें तथा हींग, शिंगरफ, अफीम और पीपरमेंट को पृथक्पीस कर मिलावें और सबको एकत्र तथा खरल में घोट कर एकजीव कर लें। तदुपरान्त एक भावना लहसुन के स्वरस की और एक भावना कागजी नींबू के स्वरस की देकर चना के बराबर की वटी बनावें और छाया में सुखा कर सुरक्षित रखें

मात्रा — 1-1 गोली प्याज के स्वरस के साथ अथवा ठण्डे पानी या बर्फ के पानी के साथ दें। बर्फ के पानी में अर्क कर्पूर प्रभृति किसी तरल की 5-10 बूंद डाल कर, उसके साथ देना भी उपयुक्त रहता है। रोग और रोगी की शक्ति के अनुसार दवा आधा घंटा, एक घंटा अथवा दो घंटा के अन्तर से देनी चाहिये। इससे हैजा (विशूचिका) के सभी लक्षणों में लाभ होता है। वमन, दस्त, पेट दर्द, अफरा आदि का शीघ्र शमन होता है और मूत्र भी खुलकर आता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by SGDGGori

विषूची विध्वंस रस

भुना सुहागा, स्वर्णभाक्षिक भस्म, सोंठ, शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, शुद्ध सुहागा, काले सर्प का विष, प्रत्येक 1 भाग, और हिंगुल 7 भाग लेकर जम्भीरी नीबू के स्वरस में घोट कर सरसों प्रमाण गोलियाँ बना लें। इसकी मात्रा 1 रत्ती (लगभग 125 मिलीग्राम) तक हो सकती है। मृत संजीवनी सुरा और यह रस, दोनों ही समान गुणकारी है, विशूचिका (हैजा) और त्रिदोषज अतिसार को भी नष्ट करते हैं।

यह योग 'भैषज्य रत्नावली' का है। इसमें प्रयुक्त काले साँप का विष सहज में नहीं मिल सकता, इसलिये उसके बिना भी यह औषधि उचित अनुपान के साथ लाभ करती है। अनेक योगों में मृत संजीवनी सुरा की चर्चा हुई है और वह अनेकानेक रोगों में हितकर भी है, इसलिये उसके बनाने की विधि भी प्रसंग की पूर्णता के लिये लिखना आवश्यक है। भैषज्य रत्नावली में वर्णित इस सुरा का योग भी यहाँ ज्यों का त्यों प्रस्तुत है।

विशूचिका आदि में मृत संजीवनी सुरा

एक वर्ष से अधिक पुराना गुड़, 12 सेर 64 तोला, बबूल की छाल कुटी हुई 80 तोले, अनार की छाल, वासा की छाल, मोचरस, लजैना, अतीस, असगन्ध, देवदारू, बेल की छाल, श्यानक की छाल, पाडर की छाल, शालिपर्णी, पृश्निपर्णी, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, गोखरू, बेर, इन्द्रायण मूल, चित्रक, कोंच के बीज, पुनर्नवा, यह सब भी कुटे हुए, कुल मिला कर 40 तोले लें और सभी को अठगुने पानी में डाल कर, मिट्टी के (भीतर से घृत से चिकने) पात्रों में भर कर, उनके मुख सकोरों से बन्द करके 16 दिन तक रखें और पिर इनमें कुटी हुई सुपारी 2 सेर तथा धतूरे की जड़, पद्माख, खस, लाल चन्दन, सोंफ, अजवाइन, काली मिर्च, जीरा श्वेत, जीरा काला, कचूर, जटामाँसी, दालचीनी, छोटी इलायची, जायफल, नागरमोथा, ग्रन्थिपर्णी (गठिवन), सोंठ, मेथी, मेषश्रृंगी और चन्दन प्रत्येक आठ- आठ तोला लेकर, कूट- पीस कर मिलावें तथा पुनः उन पात्रों के मुख यथावत् बन्द कर दें। तदुपरान्त, चार दिन पश्चात् मिट्टी के पात्र से बनाये गये मोचिका यन्त्र या मयूराख्या यन्त्र में डाल कर चुआवें और सुरा बना लें। इसकी मात्रा बल, अग्नि और अवस्था के अनुसार निश्चित करनी चाहिये।

इसके सेवन से शरीर दृढ़ होता है, उसमें बल, वर्ण और अग्नि की वृद्धि होती है। सन्निपात- जन्य ज्वर अथवा विशूचिका (हैजा) में जब अंगों में शिथिलता आ जाय, तब पुनः- पुनः इस 'मृत संजीवनी सुरा' का प्रयोग किया जा सकता है।

विशूचिका पर बारूदी योग

बन्दूक में डाली जाने वाली बारूद 40 ग्राम और पीली कौड़ी की भस्म 20 ग्राम लेकर कागजी नींबू के रस में निरन्तर तीन दिन तक घोंटे अर्थात् 3 भावनाएँ दें और 1-1 ग्राम की गोलियाँ बना लें अथवा चूर्ण रूप में ही सुखा कर रख लें।

मात्रा — 1 से 4 गोली तक ताजी पानी के साथ देनी चाहिये। वमन और दस्तों में लाभ होता है। यह योग कभी एक साधु द्वारा बताया हुआ है, जो कि सेना से रिटायर होकर सन्यासी बन गये थे। हमने इसे यथावत् लिख दिया है, किन्तु हमारा परीक्षित नहीं है। जो व्यक्तिकरना चाहें वे ध्यान रखें कि बारूद एक विस्फोटक पदार्थ है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशूची पर रोहितकारिष्ट

रोहितक (रोहिड़ा) की छाल 2 किलोग्राम लेकर जौकुट करें और उसे दस गुने पानी के साथ क्वाथ करें तथा चौथाई जल शेष रहने पर छान कर ठण्डा करें। अब उसमें 4 किलो ग्राम गुड़ तथा निम्न प्रक्षेप द्रव्य कूट कर डालें :—

धाय के पुष्प 250 ग्राम, पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक मूल, सोंठ, दालचीनी, छोटी इलायची के दाने, तेजपत्र, हरड़, बहेड़ा और आमला 15-15 ग्राम। इन सबको मिट्टी के पात्र में भर कर मुख बन्द करें और 30-40 दिन तक रखा रहने दें। मिट्टी का पात्र भीतर से घृत के द्वारा चिकना किया हुआ हो, यह नियम सभी आसव- अरिष्टों में प्रयुक्त होता है। समयावधि के बाद छान कर बोतलों में भर कर रखें।

मात्रा — 20 से 50 मिली लीटर तक समान मात्रा में ठंडा ताजा पानी मिला कर देनी चाहिये। विशूचिका (हैजा) में मात्रा का निश्चय तथा समय का अन्तर रोग और रोगी की स्थिति के अनुरूप करना चाहिये। इससे पाण्डु रोग, हृद्रोग, तिल्ली, वायुगोला, अरुचि तथा अन्यान्य उदर विकार, कुष्ठ, शोथ आदि में भी आशातीत लाभ होता है।

हैजा में मरिचारिष्ट

लाल मिर्च 2 किलोग्राम, भाँग भुनी हुई 100 ग्राम, लहसुन, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, खुरासनी अजवाइन, श्वेत मिर्च, नौसादर, काला नमक, संचर नमक तथा शुद्ध कुचला 25-25 ग्राम लेकर उन्हें कूट- छान कर चौगुने पानी के साथ क्वाथ करें। जब आधा पानी शेष रह जाये तब उतार लें और उसमें 6 किलोग्राम गुड़ मिला कर मिट्टी या काष्ठ के पात्र में 50 दिन तक सुरक्षित रखें और फिर छान कर बोतलों में भरें। अधिक प्रभावी बनाने के लिये इसमें 5 प्रतिशत तक संजीवनी सुरा मिलाकर सुरक्षित रखें। ध्यान रहे कि मृत संजीवनी के स्थान पर मैथाइल अल्कोहल का प्रयोग कदापि न करें, अन्यथा औषधि विषैली हो जायेगी।

मात्रा — आवश्यकता पड़ने पर 20-30 मिलीलीटर तक की मात्रा प्याज के स्वरस में मिला कर आधा, एक या दो घंटे के अन्तर से दी जानी चाहिये। यह औषधि हैजा, उदरशूल, अफरा, कृमि, निद्रानाश, मूत्रावरोध, बेचैनी आदि में शीघ्र प्रभाव दिखाती है।

विशूचिकानाशिनी सुरा

पोदीना, सोंठ, दालचीनी, बड़ी इलायची, अजवाइन, इन सबके भवके द्वारा खिंचे हुए अर्क लेने चाहिये। यदि अर्क न मिल सकें तो इन सब द्रव्यों को समान मात्रा में लेकर बीस गुने पानी के साथ भवके में डाल कर अर्क खींच लेना चाहिये। यदि यह अर्क एक लीटर हो तो उसमें खाने का सोड़ा (सोडा बाई कार्ब) 500 ग्राम और देशी कर्पूर 5 ग्राम पीस कर मिला दें और फिर उसे आयुर्वेदिक संजीवनी सुरा डेढ़ लीटर डालकर, बोतलों में भरें और कड़ी डाट लगा दें। औषधि तैयार है। किन्तु ध्यान रखें कि इसमें कोई अखाद्य स्प्रिट (मैथिलेटेड स्प्रिट) आदि का व्यवहार न करें, अन्यथा औषधि विषैली हो जायेगी।

मात्रा — 1 चम्मच से 4 चम्मच तक उबाल कर ठंडे किये हुए पानी में मिलाकर देनी चाहिये। सामान्य दस्तों में इसकी मात्रा कम दी जानी चाहिये। हैजे में रोग की तीव्रता के अनुसार आधा घण्टा, एक घण्टा या दो घण्टे में दवा की मात्रा पुनः- पुनः देनी उचित है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
अधिक छोटे बालकों को 5 या 10 बूंद अथवा यथास्थिति देनी चाहिये। यह दवा हैजा पर शीघ्र काबू कर लेती है। प्लेग (महामारी) में भी इससे चमत्कारी लाभ होता है।

हैजा नाशक अन्य तरल

सत अजवाइन, सत पोदीना (अथवा पीपरमेंट) और देशी कर्पूर समान भाग लेकर एक काँच की पारदर्शक शीशी में डालें। कुछ देर में यह तीनों द्रव्य पानी हो जायेंगे। अथवा धूप में रखें तो शीघ्र तरल हो जाते हैं। अधिक गुणकारी बनाने के लिये सतलोबान भी उसी मात्रा में लिया जा सकता है। इन चारों से अठ गुनी मात्रा में संजीवनी सुरा (आयुर्वेदिक) लेकर, उसके साथ सब मिला कर दो सप्ताह तक रखें।

मात्रा — 10 बूँद से 50 बूँद तक प्याज के स्वरस के साथ देने से हैजा में अवश्य लाभ होगा। दवा रोग की स्थिति के अनुसार आध- आध घण्टे में अथवा अधिक समय के अन्तर से दी जा सकती है। यदि चाहें तो प्रत्येक मात्रा के साथ कुछ पानी भी मिला सकते हैं ।

8. अर्श (बवासीर) की चिकित्सा

बवासीर के प्रकार और लक्षण—अर्श अर्थात् बवासीर नाम से प्रसिद्ध यह रोग भी कम दुःखदायी नहीं है। इसके मुख्य दो भेद माने जाते हैं — बादी बवासीर और खूनी बवासीर । प्रथम प्रकार की अर्श को तो रोगी जैसे- तैसे सामान्य रूप से स्वीकार कर लेता है, किन्तु खूनी बवासीर, जिसे रक्तार्श कहते हैं, अधिक कष्टकारी होती है।

आयुर्वेद ने इसे छः प्रकार का माना है — (1) वातार्श, (2) पित्तार्श, (3) कफार्श,(4) सन्निपातार्श (5) रक्तार्श और (6) संसर्गार्श। इस रोग से गुदा में मस्से उत्पन्न हो जाते हैं। वातजन्य गुदांकुर शुष्क, चिपचिपे, मुर्झाये हुए, काले, लाल जैसे, कुछ कड़े तथा भिन्न- भिन्न प्रकार के होते हैं। यदि इनका उपचार नहीं हो पाता तो गुल्म, प्लीहा आदि में सहायक कारण बन जाते हैं।

पित्तार्श में मस्सों के मुख नीले, लाल, पीले तथा काले होते हैं। उनमें से कच्चे,सड़े अन्न की दुर्गन्ध आती है और पतला रक्त निकलता है। मस्से स्पर्श में गर्म प्रतीत होते हैं। रोगी को पतला, नीला, गर्म, लाल सा तथा आमयुक्त दस्त होता है।

कफार्श में मस्सों की जड़ गहरी होती है। उनमें अल्प पीड़ा, चिकनाहट, गोलाई, कफयुक्त तथा खुजली होती है। इसमें प्रवाहिका के समान दस्त होते हैं। इसमें खाल, नख और नेत्रादि पीले वर्ण के हो जाते हैं।

सन्निपात अर्श में, उपर्युक्त तीनों दोषों के लक्षण होते हैं। रक्तार्श (खूनी बवासीर) में मस्सों की आकृति पित्तार्श जैसी ही होती है, वे चिरमिठी या मूँग के आकार के तथा लाल होते हैं। मल गाढ़ा या कठोर होने के कारण मस्से छिल जाते हैं, इस कारण उनसे अत्यन्त दूषित उष्ण रक्त बहने लगता है। अधोवायु रुक जाती है।

संसगार्श या तो आनुवंशकीय होती है अथवा किसी के संसर्ग से हो सकती है। इसमें विभिन्न लक्षण हो सकते हैं। किन्तु बवासीर का मुख्य लक्षण तो गुदा में मस्से होना ही है। इसलिये उस रोग की पहिचान सहज ही हो जाती है। इस रोग में खाने की दवा आन्तरिक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
लाभ के लिये और लगाने की मस्सों को नष्ट करने के लिये प्रयोग की जाती है। आयुर्वेद में ऐसे बहुत से नुस्खे हैं जो इस रोग पर शीघ्र काबू पाने में समर्थ होते हैं।

बवासीर नाशक अनेक योग

अब यहाँ बवासीर को दूर करने के निमित्त कतिपय सामान्य और सरल योग प्रस्तुत हैं:—

- रीठे के छिलके जौकुट करके, तबे पर जला कर कोयला कर लें। इन्हें पीस कर और समान भाग पपरिया कत्था मिला कर चूर्ण करके रखें।

मात्रा — 1 रत्ती दवा मक्खन या मलाई में मिला कर प्रातः- सायं सेवन करनी चाहिये। इसके एक सप्ताह तक सेवन करने से ही अर्श के मस्सों और उनमें होने वाली खुजली में पूर्ण लाभ हो जाता है।

रोग दब जाने पर इस औषधि का सेवन प्रायः प्रत्येक 6 मास के अन्तर पर एक- एक सप्ताह कराते रहना चाहिये। इससे बवासीर रोग समूल नष्ट हो सकता है।

पथ्य में मक्खन, मलाई, दूध, मिश्री आदि पौष्टिक तथा सात्विक - सन्तुलित भोजन दिया जाय। प्रातः भ्रमण तथा परिश्रम, जितना स्वाभाविक रूप से कर सकें, करना चाहिये। अपथ्य में लाल मिर्च, तेल, खटाई, गर्म, गरिष्ठ और प्रतिकूल आहार- विहार का त्याग आवश्यक है।

रक्तार्श के रोगी को अधिक मिर्च मसाला, मिथ्याहार, माँसाहार आदि से बचना बहुत आवश्यक है। उसे मक्खन, मलाई, दूध आदि पदार्थ अधिकता से सेवन करने चाहिये ।

- अफसन्तीन 40 ग्राम, भुनी हुई हींग 20 ग्राम और कस्तूरी 1 ग्राम लेकर, जल योग से 40 गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1-1 गोली प्रातः- सायं सेवन करने से बवासीर में आशातीत लाभ दिखाई देता है।

- आम का नया अमचूर 200 ग्राम, पाँचों नमक 150 ग्राम और 3 वर्ष पुराना गुड़ अथवा पुरानी मिश्री 50 ग्राम लेकर सिल पर जल - योग से चटनी के समाने पीसें। इस कल्क को पके हुए अकौआ के पत्ते पर लेप करें और उसे मिट्टी के पात्र में रखकर गजपुट में फूँक लें और स्वांग ठण्डा होने पर निकाल कर पीसें।

मात्रा — 2-3 ग्राम तक प्रातः- सायं पानी के साथ सेवन करनी चाहिये। बवासीर में शीघ्र लाभ होता है।

- खूनी बवासीर में बबूल के बाँदा को काली मिर्च के साथ पीस कर पीवें। चार- पाँच खुराकों में ही रक्त रुक जायेगा।

- रसौत शुद्ध और कलमी शोरा 50-50 ग्राम समान भाग लेकर मूली के स्वरस में खरल करके चना के समान गोलियाँ बना कर सुखा लें।

मात्रा —3-4 गोली तक प्रातः- सायं जल - योग से सेवन करावें। बवासीर में अत्यन्त लाभ होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- निबौली की गिरी, सफेद कत्था, बबूल और रसवन्ती समान भाग लेकर, कूट- कपड़छन कर 250-250 मिली ग्राम की गोलियाँ बना कर रखें।

मात्रा — 2 से 4 गोली तक ताजा पानी अथवा गाय के दूध के साथ प्रातः- सायं देनी चाहिए।

- शुद्ध कुचला 4 रत्ती, शहद 6 ग्राम मिला कर चटावें, इससे खूनी बवासीर (रक्तार्श) समूल नष्ट होती है।

- एलुआ, निशोथ और श्वेत कत्था समान भाग लेकर मूली के स्वरस में 24 घण्टे खरल करें। यदि दो- तीन भावना दे सकें तो और भी उत्तम है। क्योंकि मूली का स्वरस इस योग को अधिक प्रभावकारी बनाता है, इसलिये उसे अधिक से अधिक मात्रा में खपाना चाहिये। खरल करते- करते ही 500 मिलीग्राम की गोलियाँ बना कर छाया- शुष्क कर लें ।

मात्रा— 1 से 2 गोली तक गर्म पानी अथवा तक्र के साथ प्रातः सायं देनी चाहिये । वातार्श के लिये अव्यर्थ दवा है। इसमें गेहूँ की रोटी और मूली की भुजिया (सब्जी) अत्यन्त हितकर पथ्य है।

- जामुन के वृक्ष की अन्तर्छाल का स्वरस 2 चम्मच, उतना ही छोटी मक्खी का शहद मिला कर प्रतिदिन एक बार प्रातःकाल सेवन करना चाहिये। इससे रक्तार्श का गिरता हुआ रक्त शीघ्र ही रुक जाता है।

- काकजंघा की पत्तियाँ 3 ग्राम और काली मिर्च 5 नग लेकर जल योग से सिल पर ठण्डाई की तरह पीसें और प्रातः सायं, दोनों समय सेवन करें। इससे खूनी बवासीर में गिरता हुआ रक्त शीघ्र रुक जाता है। यदि रोगी को कब्ज हो जाय तो कोई सुख विरेचक देना चाहिए।

- शारंगधर संहिता में रोहितकारिष्ट को अर्शादि रोगों का नाशक कहा है। वस्तुतः यह अरिष्ट सब प्रकार की बवासीर में अच्छा काम करता है।

मात्रा— 20-30 मिलीग्राम समान भाग पानी मिला कर देना चाहिये। इसकी निर्माण विधि और योग हमने विशूचिका (हैजा) की चिकित्सा में लिखा है। क्योंकि यह अरिष्ट हैजा में भी बहुत लाभकारी है। साथ ही अन्य उपयुक्त दवाएँ भी चिकित्सा क्रम में लगा लें।

रक्तार्श पर एक सरल प्रयोग

प्रातःकाल ग्वारपाठे का पत्ता काटें। काटने पर उसमें से पीले से रंग का रस टपकता है, वह मुख्य औषधि है। उसे चीनी या काँच के प्याले में संचित करें तथा उसी पत्ते का 15-20 ग्राम गूदा काटकर, उस रस के साथ घोटें और उसमें हल्दी का बहुत बारीक चूर्ण 1 ग्राम तथा मिश्री 10-12 ग्राम तक मिला कर सेवन करें। यह योग खूनी बवासीर में अव्यर्थ है। एक- दो सप्ताह सेवन करने पर ही पर्याप्त लाभ हो जाता है।

धाराप्रवाह रक्तार्श पर उपयोगी दवा

लोध, मोचरस, कमल, लालचन्दन, लाजवन्ती और भुनी फिटकरी समान भाग लेकर चूर्ण करें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मात्रा — 2-3 ग्राम तक यह चूर्ण गाय के दूध के साथ प्रातः- सायं सेवन करने से रक्तार्श में धाराप्रवाह रक्त गिरने को भी रोकने में भी समर्थ है। शीघ्र ही लाभ दिखाता है।

रक्तार्श पर अव्यर्थ औषधि

जिमीकन्द शुद्ध 300 ग्राम, काली मिर्च और हल्दी 6-6 ग्राम और बड़ी इलायची के बीज 2 ग्राम। सबको कूट- छान कर रखें।

मात्रा — 2-3 ग्राम तक यह औषधि ठण्डे पानी के साथ प्रतिदिन 3 बार लेनी चाहिये। इससे एक वर्ष पुरानी रक्तार्श भी एक सप्ताह के प्रयोग से शान्त हो जाती है।

जिमीकन्द शोधन — इसमें जिमीकन्द को शुद्ध करके ही डालना चाहिये। इसके लिये जिमीकन्द को अण्डी (एरण्ड) के पत्तों में लपेट कर, भूभल में रखकर भर्ता बना लें। यही शुद्ध जिमीकन्द है, इसका रक्तार्श के मस्सों पर भी अद्भुत प्रभाव पड़ता है।

खूनी, वादी बवासीर की एक ही दवा

बबूल का गोंद, गेरू और कहरवा समई 10-10 ग्राम लेकर कूट- कपड़छन करके रखें।

मात्रा — 1 से 2 ग्राम तक, गाय के तक्र के अनुपान से प्रातः सायं दोनों समय सेवन करावें। 2-3 सप्ताह सेवन करने से सब प्रकार की अर्श समूल नष्ट होती है। यह दवा बादी की बवासीर और खूनी बवासीर, दोनों में ही समान रूप से लाभ करती हैं।

रक्तार्श पर अचूक घरेलू दवा

सफेद फिटकरी 1 ग्राम दही की मलाई के साथ खानी चाहिये। अकेली यह दवा रक्तार्श में धाराप्रवाह गिरते हुए रक्त को भी 5-7 खुराकों में रोक देती है। फुटकरी को फुला कर प्रयोग करें, उससे न रुके तो बिना फुलाये हुए, प्रथम स्वल्प मात्रा में दें।

अर्श पर कुटजावलेह

कुड़ा की छाल 5 सेर लेकर जौकुट करें और उसे 12 सेर 64 तोले पानी में डाल कर पकावें। चौथाई शेष क्वाथ जल रहने पर उतार कर छान लें। फिर इस छने हुए क्वाथ में 120 तोले गुड़ डाल कर मन्दाग्नि पर पकावें, जब गाढ़ा होने लगे तब इसमें निम्न प्रक्षेप द्रव्य कूट- छान कर मिलावें —

शुद्ध रसौत, मोचरस, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, हरड़, बहेड़ा, आमला, लजालू, चित्रक मूल, पाढ, बेलगिरी, इन्द्रजौ, बच, शुद्ध भल्लांतक, अतीस, बायविडंग और नेत्रबाला 4-4 तोले। फिर इसमें 16 तोले गोघृत मिला कर, चाटने योग्य हो जाय, तब उतार कर ठण्डा होने दें और फिर शहद 16 तोले मिला कर किसी उपयुक्त पात्र में सुरक्षित रखें।

मात्रा—रोग और रोगी के बलानुसार निश्चित करें। इसे बकरी के तक्र, बकरी के दूध्र बकरी के घृत या बकरी के दूध से जमाये हुए दही के साथ देना चाहिये। इनकी व्यवस्था न होने पर शुद्ध ताजा पानी के साथ भी दे सकते हैं। यह अवलेह सब प्रकार के अर्श रोग को दूर करने में सहायक है। बवासीर के कारण उत्पन्न अन्यान्य उपद्रवों को भी दूर करता है। अरुचि, संग्रहणी, पाण्डु, रक्तपित्त, कामला, अम्लपित्त, प्रवाहिका, शोथ और कृशता को भी दूर करता है।

जब औषधि हजम हो जाय तब रोगी को पथ्य देना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रक्तार्श पर एक अव्यर्थ योग

बेलपत्र, अजवाइन, नागकेशर, धनिया, श्वेतचन्दन, धाय के फूल, छोटी इलायची के बीज, कुड़ा की छाल, खस और वंश लोचन समान भाग लेकर कूट- कपड़छन करें और रख लें।

मात्रा — 2-3 माशे तक रोग - लक्षणानुसार अनुपान के साथ दिन में तीन बार सेवन करावें। किसी कारण से भी, शरीर के किसी भाग से भी रक्त गिरता हो, इसकी 7-8 मात्रा में ही बन्द हो जाता है। रक्तार्श में भी बहुत उपयोगी है।

अर्श पर लेप और बन्धन

- करोंदा के पत्ते, भाँग की ताजी पत्तियाँ, खोआ तथा गेंहू की मैदा के साथ घी चुपड़ कर बाँधें और कोई औषधि सेवन करें तो बवासीर में पूर्ण लाभ होता है।
- बादाम 10 ग्राम, आँवाहल्दी और भाँग 6-6 ग्राम तथा मैदा 10 ग्राम तक एकत्र पीसकर गुनगुना बाँधने से बवासीर में पर्याप्त लाभ होता है।
- गाँजे को पीस कर गोघृत के साथ ठीक से मिला कर मरहम जैसी बना कर मस्सों पर लगानी चाहिये। बवासीर के मस्से शीघ्र शान्त हो जाते हैं।
- शहद छोटी मक्खी का और गाय का घी समान भाग मिला कर बवासीर के मस्सों पर लगाना चाहिये। इससे 2-3 सप्ताह में ही मस्से सूख जाते हैं।
- बादी बवासीर के मस्सों को शान्त करने के लिये काई 400 ग्राम, आलू 200 ग्राम, मुर्दासंग 40 ग्राम और छोटी इलायची के बीज 10 ग्राम लें। काई को निचोड़ कर महीन कूटें तथा आलू को छील कर काई के साथ मिला पर पुनः कूटें। तदुपरान्त इलायची और मुर्दासंग को भी महीन करके मिलावें तो यह आटे के समान हो जायेगा। इसे मिट्टी के पात्र पर रखकर रुपये के बराबर टिकिया सी बना लें और कागज पर रखकर जरा गर्म करके मस्सों पर रखें और पट्टी बाँध दें। इससे 2-4 दिन में अवश्य लाभ हो जाता है।
- चित्रक मूल, दन्तीमूल, कन्नेरमूल, कसीस और सेंधा नमक समान भाग लेकर चूर्ण करें। फिर आक के दूध की 7 भावनाएँ दें और छाया- शुष्क कर लें। बाद में इसे तिल- तैल के साथ पका कर रखें। इसे मस्सों पर शौच - क्रिया से निवृत्त होने पर दोनों समय लगावें तो बिना आपरेशन कराये ही मस्से स्वतः गिर जायेंगे।
- थूहर के दूध में हल्दी का महीन चूर्ण मिला उसमें सूत का धागा भिगोवें और छाया में उस धागे को सुखा लें। इस सूत्र से मस्सों को बाँधना चाहिये। मस्से बाहर की ओर न निकल रहे हों तो उन्हें किसी प्रकार निकाल कर यह सूत बाँधें। इस बन्धन से मस्सों से रक्त 4-5 दिन तो गिरता रह सकता है, किन्तु बाद में मस्से सूख कर गिर जाते हैं। किन्तु यह सूत्र- बन्धन अधिक दुर्बल या नाजुक रोगी के लिये वर्जित है।

अर्शहर मरहम

गाय का घी 280 ग्राम, देशी कर्पूर 20 ग्राम, जीरा श्वेत, सुरमा काला, मुरदासंग, पपरिया कत्था और यशदभस्म 10-10 ग्राम लें। घृत के अतिरिक्त अन्य सब वस्तुओं को अत्यन्त

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मात्रा — 2-3 ग्रा
में धाराप्रवाह रक्तगिर

जिमीकन्द शुद्ध
2 ग्राम। सबको कूट-

मात्रा — 2-3
इससे एक वर्ष पुरा

जिमीकन्द शो
जिमीकन्द को अण्ड
शुद्ध जिमीकन्द है,

बबूल का गों
मात्रा — 1
करावें। 2-3 सप्ता
की बवासीर और

सफेद फिट
में धाराप्रवाह गि
प्रयोग करें, उसरो

कुड़ा की छा
पकावें। चौथाई
120 तोले गुड़ डा
कूट- छान कर मि

शुद्ध रसौत,
चित्रक मूल, पाढ़,
4-4 तोले। फिर
होने दें और फिर

मात्रा—
बकरी के घृत
होने पर शुद्ध
दूर करने में
अरुचि,
दूर करता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गुदा से दो अंगुल के अन्दर पर दोनों ओर पीड़ाप्रद व्रण उत्पन्न होकर फूट जाते हैं, वे भगन्दर कहे जाते हैं। इस रोग में भग, गुदा और वस्ति के चारों ओर योनि के समान विदीर्ण हो जाता है, इसी कारण इसे भगन्दर कहते हैं। 'भग' शब्द से वह अवयव समझा जाता है, जो गुदा और वस्ति के मध्य में होता है।

शतपोनक नामक भगन्दर के विषय में कहा है कि वह कसैली और रूखी वस्तुओं के अधिक सेवन से होता है। उससे वायु अधिक प्रकुपित होकर जो व्रण उत्पन्न करती है, वह चिकित्सा में उपेक्षा करने पर पक जाती है, उसमें दारुण वेदना होती है। पक कर फूटने पर उससे लाल रंग का फैन सा बहता है तथा अनेक घाव होने पर उनसे मल- मूत्र आदि निकलने लगता है।

पित्तजन्य उष्ट्रग्रीव भगन्दर में लाल वर्ण का व्रण उत्पन्न होकर पक जाता है, जिससे दुर्गन्धयुक्त पीव जैसा निकलता रहता है। परिस्रावी में खुजली के साथ मन्द पीड़ा युक्त गाढ़ी पीव बहती है। ऋजु नामक भगन्दर में पीव धीरे- धीरे स्रवित होती है। परिक्षेपी में वात- पित्त के मिश्रित लक्षण होते हैं।

अर्शोज में अर्श के मूल स्थान से शोथ, दाह, खाज आदि होती है। शम्बुकावर्त में गाय के थन जैसी फुंसी, पीड़ा के साथ अनेक रंग की होती हैं तथा इनमें तीनों दोषों के मिश्रित लक्षण होते हैं। उन्मार्गी गुदा के पास किसी कील- काँटें या नख के लगने से होता है, उसमें छोटे- छोटे कृमि भी उत्पन्न होकर अनेक क्षत या छिद्र बना देते हैं।

इस प्रकार आयुर्वेद ने इसे अनेक प्रकार का माना है। पाश्चात्य चिकित्सक भी, अपने ढंग पर उसके कई भेद मानते हैं। इस विषय में अधिक विस्तार अपेक्षित नहीं है। रोगी को किसी भी दोष या उपसर्ग की उत्पत्ति की शंका होते ही सँभल जाना चाहिये और रोग की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। क्योंकि छोटे से छोटा रोग भी सहायक कारणों से बढ़ता हुआ भयंकर रूप धारण कर लेता है।

आहार- विहार में संयम

आहार- विहार के असंयम से ही रोगों की उत्पत्ति होती है और रोग उत्पन्न होने के पश्चात् भी रोगी उसकी उपेक्षा करे तो रोग पर काबू पाना सम्भव नहीं होता। इसलिये प्रथम कार्य यही है कि आहार- विहार के विषय में पूर्ण रूप से संयम का निर्वाह किया जाय।

रोग के निवारण में आवश्यक है कि उसकी उत्पत्ति के कारणों को दूर किया जाय। क्योंकि उसका उपाय किये बिना चिकित्सा में सफलता नहीं मिल पाती। इस विषय में रोगी और चिकित्सक दोनों को ही सतर्क दृष्टि रखनी होती है। रोगी को अपथ्य का त्याग तो अनिवार्य रूप से आवश्यक है।

अब यहाँ भगन्दर के निवारणार्थ सामान्य योगों को प्रस्तुत करेंगे। आरम्भ में अधिक तीव्र औषधियाँ कभी- कभी विपरीत फल प्रदर्शित करती हैं।

भगन्दर निवारणार्थ कतिपय प्रयोग

- खदिर (खैर), हरड़, बहेड़ा और आमला का काढ़ा सब प्रकार के भगन्दर में हितकर है। इसमें भैंस का घृत और वायविडंग का चूर्ण मिला कर पिलाना चाहिये।
- पुनर्नवा, दारुहल्दी, हल्दी, सोंठ, हरड़, गिलोय, चित्रक मूल, भारंगी और देवदारु का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
महीन करें। घृत को काँसे की थाली में रखकर 101 बार ठण्डे पानी से धोवें और फिर वह चूर्ण मिला कर एकजीव कर लें। मरहम तैयार है।

यह मरहम बवासीर के हर प्रकार के मस्सों पर अत्यन्त प्रभावकारी है। छहों प्रकार की अर्श के मस्सों को नष्ट करता है।

अर्श- नाशक मरहम

नीलाथोथा 20 ग्राम, अफीम और सरसों का तेल 40-40 ग्राम लेकर नीला थोथा और अफीम को खरल में डाल कर महीन करें और फिर तेल के साथ पकावें। शौच के पश्चात् दोनों समय यह सिद्ध - तेल मस्सों पर रुई की फुरैरी से लगाना चाहिये। इससे बवासीर के मस्से ही शीघ्र गिर जाते हैं।

मस्से गिराने वाला सरल मरहम

नीलाथोथा, श्वेत कत्था और बड़ी सुपारी, तीनों समान भाग लेकर नीलाथोथा को अग्नि पर भून लें। सुपारी भी भून लेनी चाहिये और फिर तीनों को एकत्र करके पीसें और ताम्बे के पात्र में मक्खन के साथ मिला कर तैयार करें। बहुत सरल योग है।

इस मरहम को प्रातः- सायं दोनों समय शौचोपरान्त लगाते रहने से 8-10 दिन में मस्से सूखकर गिरने लगते हैं।

अर्श की चिकित्सा व्यवस्था में ज्ञातव्य बातें

अर्श वातज हो रक्तज, दोनों में कब्ज मुख्य लक्षण है। यही रोगी को अधिक कष्टदायक होता है, इसलिये उसे कब्ज न रहे, इसका ध्यान अवश्य रखना चाहिये। तक्र, बकरी का दूध, गोघृत, गेहूँ, जिमीकन्द, शालि एवं साठी चावल का आहार हितकर है। परवल, जिमीकन्द, बैंगन, मूली, बथुआ, पालक, चौलाई, नीम, गोमूत्र आदि भी लाभदायक हैं। फलों में पपीता, चीकू, अमरूद, सन्तरा आदि का सेवन अनुकूल रहता है। उनका प्रयोग रोगी की इच्छानुसार किया जा सकता है।

गरिष्ठ आहार, पकवान, मिठाई तथा असंयमित विहार से बचना चाहिये। बवासीर दुष्कर रोग होते हुए भी असाध्य नहीं है, इसलिये रोगी को धैर्य बँधाते रहना चाहिये।

9. भगन्दर और उसकी चिकित्सा

भगन्दर के भेद और लक्षण

भगन्दर अत्यन्त कष्टकारी और दुष्ट रोग है। यह जिसको हो जाता है, वह बहुत खिन्न रहता है, क्योंकि यह सहज में नहीं जाता। इसे पाश्चात्य चिकित्सक फिस्युला अथवा फिस्युला इन एनो कहते हैं। वस्तुतः यह एक प्रकार का नाड़ीव्रण है। जो गुदा और मलाशय के समीपवर्ती भाग में उत्पन्न हो जाता है। इस व्रण का एक मुख मलाशय के भीतर की ओर दूसरा बाहर की ओर होता है। शारंगधर ने इसे आठ प्रकार का कहा है — (1) वातदोष से शतपोनक, (2) पित्तदोष से उष्ट्र- ग्रीव, (3) कफदोष से परिस्रावी, (4) वात- कफ से ऋजु, (5) वात- पित्त से परिक्षेपी, (6) कफ पित्त से अर्शोज, (7) शतादि से उन्मार्गी और (8) तीनों दोषों से शंबुकार्त नामक भगन्दर की उत्पत्ति होती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गुदा से दो अंगुल के अन्दर पर दोनों ओर पीड़ाप्रद व्रण उत्पन्न होकर फूट जाते हैं, वे भगन्दर कहे जाते हैं। इस रोग में भग, गुदा और वस्ति के चारों ओर योनि के समान विदीर्ण हो जाता है, इसी कारण इसे भगन्दर कहते हैं। 'भग' शब्द से वह अवयव समझा जाता है, जो गुदा और वस्ति के मध्य में होता है।

शतपोनक नामक भगन्दर के विषय में कहा है कि वह कसैली और रूखी वस्तुओं के अधिक सेवन से होता है। उससे वायु अधिक प्रकुपित होकर जो व्रण उत्पन्न करती है, वह चिकित्सा में उपेक्षा करने पर पक जाती है, उसमें दारुण वेदना होती है। पक कर फूटने पर उससे लाल रंग का फैन सा बहता है तथा अनेक घाव होने पर उनसे मल- मूत्र आदि निकलने लगता है।

पित्तजन्य उष्ट्रग्रीव भगन्दर में लाल वर्ण का व्रण उत्पन्न होकर पक जाता है, जिससे दुर्गन्धयुक्त पीव जैसा निकलता रहता है। परिस्रावी में खुजली के साथ मन्द पीड़ा युक्त गाढ़ी पीव बहती है। ऋजु नामक भगन्दर में पीव धीरे- धीरे स्रवित होती है। परिक्षेपी में वात- पित्त के मिश्रित लक्षण होते हैं।

अर्शोज में अर्श के मूल स्थान से शोथ, दाह, खाज आदि होती है। शम्बुकावर्त में गाय के थन जैसी फुंसी, पीड़ा के साथ अनेक रंग की होती हैं तथा इनमें तीनों दोषों के मिश्रित लक्षण होते हैं। उन्मार्गी गुदा के पास किसी कील- काँटें या नख के लगने से होता है, उसमें छोटे- छोटे कृमि भी उत्पन्न होकर अनेक क्षत या छिद्र बना देते हैं।

इस प्रकार आयुर्वेद ने इसे अनेक प्रकार का माना है। पाश्चात्य चिकित्सक भी, अपने ढंग पर उसके कई भेद मानते हैं। इस विषय में अधिक विस्तार अपेक्षित नहीं है। रोगी को किसी भी दोष या उपसर्ग की उत्पत्ति की शंका होते ही सँभल जाना चाहिये और रोग की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। क्योंकि छोटे से छोटा रोग भी सहायक कारणों से बढ़ता हुआ भयंकर रूप धारण कर लेता है।

आहार- विहार में संयम

आहार- विहार के असंयम से ही रोगों की उत्पत्ति होती है और रोग उत्पन्न होने के पश्चात् भी रोगी उसकी उपेक्षा करे तो रोग पर काबू पाना सम्भव नहीं होता। इसलिये प्रथम कार्य यही है कि आहार- विहार के विषय में पूर्ण रूप से संयम का निर्वाह किया जाय।

रोग के निवारण में आवश्यक है कि उसकी उत्पत्ति के कारणों को दूर किया जाय। क्योंकि उसका उपाय किये बिना चिकित्सा में सफलता नहीं मिल पाती। इस विषय में रोगी और चिकित्सक दोनों को ही सतर्क दृष्टि रखनी होती है। रोगी को अपथ्य का त्याग तो अनिवार्य रूप से आवश्यक है।

अब यहाँ भगन्दर के निवारणार्थ सामान्य योगों को प्रस्तुत करेंगे। आरम्भ में अधिक तीव्र औषधियाँ कभी- कभी विपरीत फल प्रदर्शित करती हैं।

भगन्दर निवारणार्थ कतिपय प्रयोग

- खदिर (खैर), हरड़, बहेड़ा और आमला का काढ़ा सब प्रकार के भगन्दर में हितकर है। इसमें भैंस का घृत और वायविडंग का चूर्ण मिला कर पिलाना चाहिये।
- पुनर्नवा, दारुहल्दी, हल्दी, सोंठ, हरड़, गिलोय, चित्रक मूल, भारंगी और देवदारु का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

काढ़ा पीने से शोथयुक्त भगन्दर में पर्याप्त लाभ होता है। पुनर्नवा में शोथ - शमन का गुण है।

- वटवृक्ष की छाल, पाकर की छाल, अम्बाड़ा की छाल, जलवेंत की छाल, बेर की छाल, तुन की छाल, मुलहठी, चिरोंजी, लोध, पठानी लोध, गूलर की छाल, पीपल की छाल, महुए की छाल, पारसपिप्पली की छाल, सल्लकी की छाल, आम की छाल, हरड़ का वक्कल, कदम्ब की छाल, जामुन की छाल, अर्जुन की छाल और शुद्ध भल्लातक समान भाग लेकर काढ़ा बनावें और सेवन करें। यदि सभी औषधियाँ न मिलें तो जितनी उपलब्ध हो सकें, उतनी ही लेकर क्वाथ करें। इसके पीने से सब प्रकार के व्रण, अस्थिभंग, योनिदोष, दाह, मेदविकार, प्रमेह तथा विष दोष भी दूर होते हैं। यह क्वाथ अत्यन्त ग्राही (रोकने वाला) तथा व्रण को रोपने वाला होने के कारण भगन्दर रोग में हितकारी है।
- पुनर्नवामूल और वरुण (वरना) की छाल का काढ़ा अन्तर्विद्रधि को दूर करने वाला कहा है। इससे भगन्दर के नाड़ी - व्रण को बाहर- भीतर से पुरने में सहायता मिलती है
- सहजने के क्वाथ में हींग और सेंधा नमक डाल कर पीने से भी भगन्दर में लाभ होता है। इसके लिये सहजना (शोभांजना) वृक्ष की छाल का व्यवहार अधिक उपयुक्त है।
- नारियल निर्मित महौषधि— एक नारियल का ऊपरी खोपरा उतार फेंके और उसमें से गोला लेकर, उसमें ऐसा छेद करें कि वट वृक्ष के दूध से, वह पूरा भर जाय। फिर गोला का छेद ढँक कर, उस पर दो अंगुल मोटा लेप कर दें और पुटपाक की विधि से पका कर निकाल लें।

पुटपाक की विधि यह है कि जिस वस्तु का पुटपाक करना हो, उस पर मिट्टी का दो अंगुल मोटा लेप चढ़ाकर, आरने उपलों की आग में रख दें, जब वह लाल हो जाय, तब निकाल कर मिट्टी आदि हटावें और द्रव वस्तु का रस निचोड़ कर रखें। यदि रस न हो तो उसे पीस कर रखना चाहिये।

पुटपाक की विधि से परिपक्व इस गोले की मात्रा 10-12 ग्राम है, जिसे 5-6 ग्राम त्रिफला चूर्ण के साथ सेवन करना चाहिये। इसे भगन्दर में शीघ्र लाभ होता है।

भगन्दरादि पर विडंगारिष्ट

वायविडंग, पीपलामूल, रास्ना, कुड़े की छाल, इन्द्रजौ, पाढ़ी, एलुआ और आमला 20-20 तोले लेकर जौकुट करें और 5 मन 4 सेर 64 तोले पानी के साथ क्वाथ करें। जब 25 सेर 48 तोले पानी शेष रहे, तब अग्नि से उतारें और ठण्डा होने पर छान लें। इस क्वाथ में 15 सेर मधु, धाय के फूल 1 सेर तथा त्रिजात (इलायची, दालचीनी और तेजपात) 8 तोले, प्रियंगु, कचनार की छाल और लोध 4-4 तोले तथा त्रिकुटा (सोंठ, काली मिर्च और पीपल) 62 तोले लेकर, सबका सूक्ष्म चूर्ण करें और मिला दें, फिर इसे घी के चिकने मृत्तिका पात्रों में भर कर, उनका मुख बन्द करके एक मास तक रखा रहने दें। तत्पश्चात् छान कर रखें।

इसके सेवन से विद्रधि, ऊरुस्तम्भ, पथरी, प्रमेह, प्रत्यष्ठीला, भगन्दर, गण्डमाला और हनुस्तम्भ आदि रोग दूर होते हैं। इस विडंगारिष्ट को भोजन के पश्चात् 1 से 2 तोले तक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
की मात्रा में, समान भाग पानी मिला कर, दोनों समय देना चाहिये। औषधि क्रम में रोग की स्थिति के अनुसार अन्य दवाएँ लगाई जा सकती हैं।

भगन्दर पर वृहत्सूरण वटक

जमीकन्द और विधायरा 16-16 तोले, मूसली और चित्रक मूल 8-8 तोले, हरड़, बहेड़ा, आमला, वायविडंग, सोंठ, पीपल, शुद्ध भिलावा, पीपलामूल और तालीस पत्र 4-4 तोले, दालचीनी, छोटी इलायची के बीज और काली मिर्च 2-2 तोले। सबको एकत्र कर, कूट- छान लें और इस चूर्ण से दुगुना गुड़ मिला कर गोलियाँ बना लें। शारंगधर में इसका मुख्य रूप से प्रयोग बवासीर के लिये किया गया है। किन्तु **"प्लीहानं श्लीपदं शोथं हिक्कां मेहं भगन्दरम्"** कह कर तिल्ली, श्लीपद, शोथ, हिचकी, प्रमेह और भगन्दर के लिए भी निर्दिष्ट किया है। इनके अतिरिक्त इसे अग्नि वर्धक, संग्रहणी, श्वास, कास, क्षय तथा पलित रोग का भी निवारक कहा है। यह रसायन वीर्य और बुद्धि को बढ़ाने वाला है।

हमने यह योग शारंगधर संहिता से ज्यों का त्यों लेकर लिख दिया है। किन्तु अनेक रोगों पर आजमाया गया है और रोग लक्षणानुसार भी पाया गया है। इसकी मात्रा सामान्यतः 2 ग्राम से 5 ग्राम तक दी जानी चाहिए।

भगन्दर पर त्रिफला गूगल

त्रिफला 12 तोले, पीपल छोटी 4 तोले और शुद्ध गूगल 20 तोले लेकर, सबको कूट- पीस कर गोलियाँ बना लें। इसकी मात्रा अग्नि, बल आदि का विचार करके देनी चाहिये और अनुपान भी उसी दृष्टि से निश्चित करना चाहिये। इसके विषय में स्पष्ट रूप से कहा है - **"भगन्दर गुल्म शोथावर्शांसि च विनाशयेत्"** अर्थात् यह गुग्गुलु भगन्दर, गुल्म, शोथ व बवासीर को नष्ट करता है।

भगन्दर पर काञ्चनार गूगल

कचनार की छाल 40 तोले, त्रिफला 24 तोले, त्रिकुट (सोंठ, काली मिर्च, पीपल) 12 तोले, वरुण की छाल 4 तोले तथा इलायची के बीज, दालचीनी और तेजपात, तीनों 1-1 तोला लें और एकत्र करके चूर्ण बना लें। चूर्ण के पूरे वजन के बराबर शुद्ध गूगल लें और उसमें घी मिला कर पर्याप्त कूट- कूट कर, चूर्ण सहित गोला बनावें और तब 3-3 माशे (3-3 ग्राम) की गोलियाँ बना लें।

मात्रा — रोगी का बलाबल देखकर निश्चित करें, जो 3 माशे से कम भी हो सकती है। इसलिये गोली एक- दो माशे की बना लेना अधिक उपयुक्त है। भगन्दर आदि में इस काञ्चनार गुग्गुल को गोरखमुण्डी के क्वाथ से, खैरसार के क्वाथ से, हरड़ के क्वाथ से अथवा गर्म पानी के अनुपान से दे सकते हैं। यह औषधि गण्डमाला, अपची, गाँठ, घाव, गुल्म, कुष्ठ आदि में भी उपयोगी और शीघ्र लाभ करने वाली है।

भगन्दर पर त्रिफलादि मोदक

त्रिफला 32 तोले, शुद्ध मिलावा 16 तोले, बावची 20 तोले, वायविडंग 16 तोले, लौह भस्म, निशोथ, शुद्ध गूगल और शुद्ध शिलाजीत 4-4 तोले, पुष्करमूल और चित्रकमूल 2-2 तोले, कालीमिर्च 6 माशे, सोंठ, छोटी पीपल, नागरमोथा, दालचीनी, छोटी इलायची के बीज,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तेजपात और केशर 3-3 माशे लेकर, विधि पूर्वक कूट- छान लें। इस चूर्ण के वजन के बराबर मिश्री लें और उसकी चाशनी बनावें तथा उस चाशनी में चूर्ण मिला कर 2-2 तोले के लड्डू बनावें। यद्यपि ग्रन्थ में 1 पल अर्थात् 4 तोले के मोदक बनाना कहा है -। किन्तु वह मात्रा अधिक है। विशेषकर उस स्थिति में, जब रोग- निवारणार्थ. साथ में अन्य सहायक औषधियाँ देना भी आवश्यक होता है।

इस मोदक के सेवन से भगन्दर में तो लाभ होता ही है, सभी प्रकार के कुष्ठ, वातरोग, पित्त रोग, कफ रोग, तिल्ली, गुल्म, जिह्वा और तालु के रोग, शिरोरोग, नेत्र रोग, भौंहों के रोग, गले के रोग, पीठ और कमर तथा कमर से नीचे के अंगों के सभी रोग एवं दोष नष्ट होते हैं। कमर से नीचे के रोगों में यह मोदक भोजन से पूर्व सेवन करांना चाहिये। उदर रोगों में, भोजन के मध्य में और कण्ठ तथा उससे ऊपर के रोगों में भोजन के पश्चात् देना चाहिये।

भगन्दरादि पर कासीसाद्यघृत

कसीस, हल्दी, दारुहल्दी, नागरमोथा, हरिताल, मैनसिल, कंबीला, शुद्ध गन्धक, वायविडंग, गूगल, मोम, काली मिर्च, कूट, नीला थोथा, श्वेत सरसों, रसौत, सिन्दूर, राल, लाल चन्दन, इरिमेद, नीम के पत्ते, करंज, अनन्तमूल, वच, मंजीठ, मुलहठी, जटामांसी, सिरस की छाल, लोध, पद्माख, हरड़ और पवाँड़ के बीज प्रत्येक 1-1 तोला लेकर सबका चूर्ण करें तथा उसे डेढ़ सेर घृत के साथ मथ कर ताम्बे के पात्र में रखें। और उस पात्र को 7 दिन तक धूप में रखते रहें। फिर छान कर सुरक्षित रखें।

इस घृत को आक्रान्त स्थान पर मलना चाहिये। इससे प्रयोग से भगन्दर में तो लाभ होता ही है, कुष्ठ, दाद, छाजन, विचर्चिका, शूक, विसर्प, वातरक्तजन्य फोड़े, सिर के फोड़े, उपदंश, नासूर, दूषित घाव, शोथ, मकड़ी के विष आदि में भी अत्यन्त लाभ पहुँचता है। यह घावों को शुद्ध करके भर देता है तथा चमड़ी पर पड़े घाव के निशानों को भी नष्ट कर देता है। यह घृत केवल बाह्य प्रयोग के लिये है, खाना नहीं चाहिये।

भगन्दर पर जात्यादिघृत

चमेली के पत्ते, नीम के पत्ते, परवल के पत्ते, हलदी, दारु हल्दी, कुटकी, मंजीठ, मुलहठी, मोम, करंज, खस, अनन्त मूल और तूतिया को समान भाग लेकर पानी के साथ पीसकर कल्क बनावें और उस कल्क से चौगुना घी तथा घी से चौगुना जल डाल कर विधि पूर्वक घृत सिद्ध कर लें। अर्थात् पकते- पकते घृत मात्र शेष रहे तब उतार कर छान लें।

इस घृत के लगाने से छोटे मुख के नाड़ी - व्रण (नासूर) मर्म के घाव, बहने वाले घाव, गहरे तथा अत्यन्त पीड़ा वाले घाव शीघ्र भर जाते हैं। इस योग में मोम और तूतिया तब मिलाना चाहिये, जब घृत सिद्ध हो जाय।

नाड़ी- व्रण पर जात्यादि तैल

चमेली, नीम, परवल और करंज इन चारों के पत्ते, मोम, मुलहठी, कूट, हल्दी, दारुहल्दी, कुटकी, मंजीठ, पद्माख, लोध, हरड़, नील कमल, तूतिया, अनन्तमूल और करंज के बीज 1-1 तोला लेकर पानी के साथ पीस कर कल्क बनावें। इस कल्क को 4 सेर पानी और 1 सेर तिली के तेल के साथ अग्नि पर चढ़ा कर सिद्ध करें। जब तैल मात्र शेष रहे तब उतार कर छान लें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इस तैल को लगाने से नाड़ीव्रण (नासूर), फोड़ा, कच्छु रोग, शस्त्र के घाव, जलने के घाव, नखों के घाल, दाँतों के घाव तथा अनन्य कारणों से हुए सब प्रकार के घाव नष्ट हो जाते हैं। भगन्दर पर इसे लगाने से वह भी ठीक होता देखा गया है।

10. प्लेग और उसका औषधोपचार

प्लेग को संस्कृत में औपसर्गिक सन्निपात नाम से जाना, समझा जा सकता है ऋतु वैपर्यय अथवा पर्यावरण प्रदूषण के कारण यह रोग महामारी के रूप में फैलता रहा है। जब पृथ्वी में उत्पन्न विष दूषित जल- वायु के कारण व्यक्त होता है, तब उसके परमाणु कीट बन कर वातावरण में फैलने लगते हैं। उन विषैले जीवाणुओं का आक्रमण सर्व प्रथम चूहों पर होता है और तब अन्यान्य जीवों तथा मनुष्यों पर होने लगता है। वे जीवाणु रक्तको प्रभावित और क्षुब्ध करने में सफल हो जाते है, तब ज्वर की तीव्र अवस्था उत्पन्न हो जाती है।ज्वरागमन के साथ ही मूर्च्छा, प्रलाप, दाह, अतिसार आदि के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। समूचे शरीर में तथा पसलियों में दर्द, नेत्रों में विस्फुरण और लाली दिखाई देती है। कफ के साथ रक्त निकलने लगता है और बेचैनी बहुत बढ़ जाती है।

रोग - वृद्धि और उसके लक्षण

मानव देह में प्लेग के विषाणुओं का प्रवेश होने पर, एक सप्ताह में ही वे अपना प्रभाव दिखाने लगते हैं। विष की तीव्रता में तो उनका प्रभाव बहुत अल्प समय में ही प्रत्यक्ष हो जाता है। तब हाथ- पाँव में हड़कल, सिर - दर्द, उद्वेगादि के साथ गिल्टियाँ निकलती हैं। ज्वर आता है, बढ़ता है और पचले दस्त आदि भी होने लगते हैं। वक्षस्थल में दर्द का आभास होता है, गिल्टियों में प्रदाह युक्त असहाय वेदना होती है, जब रोग काबू से बाहर हो जाता है, तब श्वासोच्छ्वास के साथ असाध्य बन जाता है।

यदि रोग काबू में आ जाता है तो रोग घटने लगता है। विकृतियों में कमी आने लगती है गिल्टी पक कर ठीक होने लगती हैं, दस्त का पतलापन कम होकर उसमें बँधाव आता है। ज्वर में कमी आती है, धीरे- दीरे स्वास्थ्य लाभ होने लगता है।

यदि जलवायु को शुद्ध रखा जाय तो मनुष्यों को पीड़ित ही न होना पड़े। किन्तु प्राचीन काल से ही जब राजा लोग परस्पर युद्ध करते थे, तब धरती, आकाश और वायु को अपने अस्त्रों द्वारा विषाक्त कर देते थे। सुश्रुत के कल्प स्थान में भी इस तथ्य को स्पष्ट रूप से कहा गया है। आज भी हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं कि युद्धों में अनेकानेक एटम, हाइड्रोजन तथा अन्यान्य अत्यन्त विषैले और मारक शस्त्रास्त्र प्रयोग में लाये जा रहे हैं। जापान के हिरोशिमा और नागासाकी नगरों की विनाश- लीला हमारे सामने ही घटित हो चुकी है।

किन्तु अब तक उससे भी अधिक विनाशक शस्त्रास्त्र बनाये और प्रयोग में लाये जा रहे हैं। उनका समाप्त होना तो किसी स्वप्न की बात हो सकती है। अस्तु अब हम पुनः अपने निश्चित प्रसंग पर आते हैं।

प्लेग से बचाव की आवश्यक व्यवस्था

जहाँ प्लेग फैली हो, उस स्थान का त्याग आवश्यक हो जाता है, क्योंकि संक्रमण के कारण स्वस्थ मनुष्यों का बचना भी कठिन होता है। वरन् यह रोग उपचारक और चिकित्सक को भी लग सकता है, इसलिये बचना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

यदि उसी स्थान में रहना आवश्यक हो तो मकान के जलवायु को शुद्ध रखने का प्रयत्न करें। नीम के पत्ते, गिलोय, पीली सरसों, कपूरकचरी, जौ. तिल, खाँड, घी के मिश्रण की धूनी दें। इससे वातावरण शुद्ध होता है।

अथवा धूप, गूगल, मिश्रित हवन सामग्री को जले हुए उपले पर डाल कर धूनी दें । बाजार में भी बहुत प्रकार की सुगन्धित धूप मिलती है, उनसे भी विषाणु नष्ट होते हैं।

अन्य कुछ उपलब्ध न हो तो कर्पूर जला कर भी वातावरण को शुद्ध किया जा सकता है। अथवा निम्न हवन सामग्री की आहुति दें तो शीघ्र ही दूषित वायु का शोधन होता है

वातावरण शोधक हवन सामग्री

गूगल 1 किलोग्राम, लाल चन्दन और श्वेत चन्दन 500-500 ग्राम, लोहवान और छारछबीला 250-250 ग्राम, अगर, तगर, कालीमिर्च, पद्माख और इस्पन्द 150-150 ग्राम, नागरमोथा और बड़ी इलायची, कर्पूर 60-60 ग्राम, जावित्री, जायफल, लौंग, छोटी इलायची, कर्पूर, तज, तेजपत्र, छोटी इलायची, नागकेशर, दालचीनी, खस, सुगन्धबाला, बालछड़, कचूर, तालीसपत्र, कंकोल, पानड़ी और केवड़ा, प्रत्येक 60-60 ग्राम, इन सबकी तौल के बराबर तिल, जौ, चावल लेकर, कूट- पीस लें। उन सब औषधियों के वजन से आधा घी और शर्करा मिलालें। यह शाकल्य हुआ। अब ढाक, आम या देवदारु की समिधा से उन दिनों नित्यप्रति हवन करना चाहिये। उस हवनपात्र से घर- मकान के प्रत्येक कोठे- कोठरी, कमरा आदि में पर्याप्त धूनी लगने दें।

महामारी से बचने के लिये आवश्यक है कि जहाँ भी उपयुक्त स्थान दिखाई दे, वहाँ विषाणु नाशक पेड़- पौधे लगाने चाहिये। गमलों में भी इस प्रकार के छोटे क्षुप रखे जा सकते हैं। सार्वजनिक स्थानों पर तो नागरिकों का कर्तव्य हो जाता है कि वे नीम के वृक्ष लगायें और उनकी रक्षा करें। क्योंकि नीम सर्वाधिक विषनाशक (एंटीसेप्टिक) है।

जल का शुद्धिकरण

अशुद्ध जल भी अनेक व्याधियों की उत्पत्ति में मुख्य कारण होता है। इसलिये आवश्यक है कि प्रथम तो उसे अशुद्ध होने ही नहीं दिया जाय। वर्तमान समय में तो गंगा- जमुना का पानी भी, जो कि अमृत के समान समझा जाता था, इतना अपवित्र हो गया है, कि वैज्ञानिकों के मत में पीने के योग्य भी नहीं है। गंगा का शुद्धिकरण हुआ, किन्तु कितना ? यमुना का जल तो अब आचमन के योग्य भी नहीं माना जाता।

जल को पीने के योग्य बनाने के लिये आवश्यक है कि उसे छान कर पियें। वरन् एक उबाल देकर ठण्डा कर लें तो अधिक उपयुक्त होगा। सुश्रुत ने भी जल को शुद्ध करके पीने का संकेत दिया है। यदि निम्न औषधियों के चूर्ण को भस्म करके, वह राख घर की टंकी, कोठी, घड़े आदि में थोड़ी- सी डाल कर, फिर पानी को छान कर पीवें तो बहुत कुछ शोधन सम्भव है। द्रव्य हैं— श्वेत खैर, विजयसार, धाय के फूल, पाटला और फरहद। इन सभी की भस्म विषाणु नष्ट करने वाली होगी। इसके साथ ही घर- बाहर सर्वत्र गन्दगी निवारण का ध्यान रखा जाय। अधिक अन्धकार और कूड़ा- करकट इकट्ठा होने पर भी हानिकारक जीव- जन्तु उत्पन्न हो जाते हैं। इसलिये स्वच्छता रखने और सफाई करने में आलस्य नहीं करना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्लेग से बचने की औषधि

यदि यह गोली, महामारी के दिनों में अथवा कभी भी, स्वस्थ मनुष्य सेवन करें तो वे प्लेग के कीटाणुओं के आक्रमण से बचे रह सकते हैं।

सोना गेरू, देशी कर्पूर, जहर मोहरा, खताई और आमला 25-25 ग्राम तथा पपीता के बीज 10 ग्राम लेकर महीन चूर्ण करें और उसे कागजी नींबू के स्वरस में 3 घंटे घोट कर मटर के बराबर गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1 गोली प्रति सप्ताह पानी के साथ सेवन करने से प्लेग अथवा उस प्रकार की किसी भी व्याधि से बचा जा सकता है। बालकों को उनकी आयु के अनुसार कम मात्रा में दे सकते हैं।

प्लेग- प्रतिषेधक अन्य गोली

अदरक, आक के पुष्प, लोंग, छोटी पीपल, काली मिर्च और पाँचों नमक समान भाग लेकर तथा पीस कर झरबेरी के बराबर गोलियाँ बना कर रखें।

मात्रा — 1-1 गोली नित्य - प्रति पानी के साथ वयस्कों को तथा आधी गोली बालकों को सेवन करानी चाहिये।

प्लेग की प्रभावकारी औषधि

शुद्ध वत्सनाग, नौसादर, आक के फूल और पाँचों नमक (मिला कर) समान भाग लेकर पीस कर महीन कर लें और प्याज के स्वरस में 3 घंटे तक घोट कर 2 रत्ती (लगभग 250 मि०ग्रा०) की गोलियाँ बना कर सुखा लें।

मात्रा — 1-2 गोली ताजा पानी के साथ प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल देनी चाहिये। आवश्यक होने पर दिन- रात 24 घण्टे में यह औषधि 4 बार दी जा सकती है। प्लेग तथा इसी प्रकार के संक्रामक विष प्रभाव वाले रोगों में यह अधिक लाभकारी है। इसी के सेवन से प्लेग के रोगी प्रायः स्वस्थ हो जाते हैं।

सुरेन्द्राभ्र वटी (भै.र.) का प्रयोग भी प्लेग में हितकर होता है। इसका योग इस प्रकार है —

प्लेग आदि पर सुरेन्द्राभ्र वटी

सहस्रपुटी अभ्रक भस्म, हिंगुलोत्थ पारद, केशराज (भँगरैया) के स्वरस में शोधित गन्धक, हीरा भस्म, मूँगा भस्म, मुक्ता भस्म, स्वर्ण भस्म, रौप्य भस्म, स्वर्ण माक्षिक भस्म और कान्तलौह भस्म समान भाग लेकर, खरल में घोट कर महीन करें और फिर चित्रक के स्वरस में 3 घंटे तक खरल करके आधी- आधी रत्ती की गोलियाँ बना कर रखें।

यह सुरेन्द्राभ्र वटी रोग की तीव्रता तथा दोषादि को देखकर उचित अनुपात के साथ दी जानी चाहिये। इसके सेवन से क्लोम रोग, अग्निमान्द्य, अम्लपित्त, यकृत, तिल्ली, पाण्डु, जलोदर, गुल्म, प्रमेह, चिषम ज्वर तथा कुष्ठ प्रभृति रोग भी नष्ट हो जाते हैं। इसके विषय में कहा गया है — **न सोऽस्ति रोगो लोकेऽस्मि यमियं न विनाशयेत्।**

अर्थात् संसार में ऐसा कोई रोग नहीं है, जो इस (सुरेन्द्राभ्रवटी) के सेवन से नष्ट न हो जाय।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्लेग में गिल्टियों के साथ ही ज्वर का प्रकोप होता है और वात पित्त, कफ की अधिकता के कारण उसमें विभिन्न उपसर्ग एवं लक्षण दिखाई देते हैं। उस स्थिति में दोषानुसार लाक्षणिक चिकित्सा भी आवश्यक होती है। चिकित्सक को यह तथ्य भी ध्यान में रखना होता है कि प्लेग रोग अत्यन्त खतरनाक और शीघ्र ही प्राण लेने वाला है। इसलिये उसकी चिकित्सा व्यवस्था में विलम्ब नहीं होने दें।

वात दोष की अधिकता प्रतीत हो तो उसके अनुरूप दवाएँ देनी चाहियें। पिप्पल्यादि क्वाथ प्रातःकाल दिया जाय।

पिप्पलादि क्वाथ

पीपल, अनन्तमूल, मुनक्का, सौंफ और रेणुका समान भाग लेकर, कुल मात्रा 2 तोले, अठगुने पानी में क्वाथ करें और चौथाई जल शेष रहने पर उतारें तथा छान कर थोड़ा- सा गुड़ अथवा मधु मिला कर सेवन करावें। इससे वात ज्वर का शमन होता है।

इसके अतिरिक्तसंजीवनी वटी को भी औषधिक्रम में अवश्य लगा दिया जाय। शारंगधर ने इसके द्रव्य लिखें हैं —

विडंगं नागरं कृष्णा पथ्यामल विभीतकौ।
वचा गुडूची भल्लातं सद्विषं चात्र योजयेत्॥

वायविडंग, सोंठ, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आमला, वच, गिलोय, शुद्ध भल्लातक और शुद्ध सींगिया विष समान लेकर गोमूत्र के साथ घोटें और चिरमिठी के बराबर गोलियाँ बना लें। इसे अदरक स्वरस के अनुमान से देना चाहिये। अजीर्ण और गुल्म रोग में 1 गोली, हैजा 2, सर्पदंश में 3 तथा सन्निपात में 4 गोलियाँ देनी चाहिये। यह गोलियाँ मनुष्य को नवजीवन प्रदान करने वाली हैं।

यह वटी वाताधिक्य, ज्वरांश युक्त प्लेग के रोगी को 4-4 गोली प्रतिबार अष्टावशेष या चतुर्थावशेष पानी के साथ देनी चाहिये। एक उबाल के पानी के साथ भी दे सकते हैं।

प्लेग, सन्निपात पर आनन्द भैरवी वटी

शुद्ध सींगिया विष, सोंठ, वायविडंग, काली मिर्च, पीपल, शुद्ध गन्धक, सुहागे की खील, ताम्रभस्म, शुद्ध धतूरे के बीज और शुद्ध हिंगुल समान भाग लेकर दिन- रात 24 घंटा भाँग के स्वरस में खरल करते हुए चना के बराबर की गोलियाँ बनावें।

मात्रा — 1 वटी, मदार (आक) की जड़ के क्वाथ में सोंठ, काली मिर्च और पीपल का चूर्ण डाल कर, उसके साथ देनी चाहिये। इससे दारुण सन्निपात एवं उसके उपसर्ग अवश्य दूर होते हैं। यह योग 'भैषज्य रत्नावली' का है। इस वटी का सेवन प्रातः- सायं करना उचित है। सुदर्शन चूर्ण का व्यवहार भी यथा - लक्षण किया जाना हितकर होगा। उसका नुस्खा यह है —

प्लेग एवं सर्वज्वर पर सुदर्शन चूर्ण

हरड़, बहेड़ा, आमला, हल्दी, दारुहल्दी, बड़ीकटेरी, छोटीकटेरी, कचूर, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, पीपलामूल, मूर्वा, गिलोय, धमासा, कुटकी, पित्त पापड़ा, नागरमोथा, बनपशा, नेत्रबाला, नीम की छाल, पुष्करमूल, मुलहठी, कुड़ा की छाल, अजवाइन, इन्द्रजौ, भारंगी,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
सहजने के बीज, फुलाई हुई फिटकरी, वच, दालचीनी, पद्माख, खस, श्वेत चन्दन, अतीस, खिरेटी, शालिपर्णी, पृष्टिपर्णी, वायविडंग, तगर, चित्रकमूल, देवदारु, चव्य, परवल के पत्ते, जीवक, ऋषभक, लौंग, वंशलोचन, श्वेत कमल, काकोली, तेजपात, जावित्री और तालीशपत्र, यह 52 औषधि - द्रव्य समान भाग लें और सबको कूट- कपड़छन करके चूर्ण बना लें। इस चूर्ण के बजन से आधा भाग चिरायते का चूर्ण मिला कर ठीक प्रकार से एकजीव करलें। यह सुदर्शन चूर्ण अत्यन्त प्रसिद्ध है।

इससे सब प्रकार के ज्वर, त्रिदोष (सन्निपात) तथा द्वन्द्व से उत्पन्न आगन्तुक ज्वर, विषम ज्वर, धातुगत ज्वर, मानस ज्वर, शीत ज्वर, एकाहिक, द्वयाहिक, तिजारी, चौथैया आदि सभी प्रकार के दुःसाध्य ज्वरों को दूर करता है। मोह, तन्द्रा, चक्कर, प्यास, कास, श्वास, पाण्डु, हृद्रोग, कामला, रीढ़, पीठ, कटि, जाँध, पसली आदि के दर्द को भी दूर कर देता है वात, पित्त, कफ कोई भी दोष बढ़ा हो, सभी में इसे बिना किसी प्रकार का विचार किये हुए निःसंकोच दे सकते हैं।

प्लेग में यवपटोल क्वाथ

यदि प्लेग के रोगी को पित्त - दोष की अधिकता सहित ज्वर हो तो उसे निम्न क्वाथ देना लाभकर होगा—

परवल के पत्ते और भूसी हटाया हुआ जौ 1-1 तोला लेकर 16 गुने पानी में क्वाथ करें और चतुर्थावशेष रहने पर उतार कर छान लें। इसमें इतना शहद मिलावें जितने से मीठा हो जाय। इसके सेवन से तीव्र पित्त ज्वर, तृषा और दाह भी शीघ्र नष्ट होता है।

पित्तज्वरघ्न द्राक्षादि क्वाथ

मुनक्का, बड़ी हरड़ का वक्कल, पित्त पापड़ा, नागरमोथा और कुटकी समान भाग लेकर विधिपूर्वक क्वाथ करें और उसमें अमलताश का गूदा डाल कर मथें और फिर छान लें। इसके सेवन से प्रलाप, मूर्च्छा, भ्रम, दाह, अत्यन्त प्यास तथा मुख सूखना आदि लक्षणों से युक्त पित्तज्वर में लाभ होता है।

कफ की अधिकता वाले प्लेग ज्वर का वेग रोकने के लिये प्रातःकाल यह क्वाथ देना हितकर है।

कफज्वरघ्न निम्बादि क्वाथ

नीम की अन्तरछाल, सोंठ, गिलोय, देवदारु, कचूर, कचरी, चिरायता, पुष्करमूल, छोटी पीपल, गज पीपल और बड़ी कटेरी समान भाग का जौकुट चूर्ण 2 तोला को अठगुने पानी में चतुर्थांग क्वाथ करके पिलावें। इससे कफ ज्वर और उसके सभी उपद्रव दूर होते हैं

प्लेग- प्लीहादि पर मधुपिप्पली अवलेह

छोटी पीपल का चूर्ण 3 ग्राम तक लेकर उसे चौगुने शहद में मिला कर चटावें। इसके सेवन से श्वास- कास, ज्वर, प्लीहा, हिक्का आदि में विशेष लाभ होता है। बालकों को भी यह औषधि अधिक उपयोगी है।

मिश्रित लक्षणों में त्रिफलादि क्वाथ

हरड़, बहेड़ा, आमला, सेमल की जड़, रास्ना और वासा (अडूसा) का क्वाथ कर, इसमें अमलताश का गूदा मथ, छान कर पिलाने से वातपित्त युक्तज्वर वाले प्लेग में लाभ होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अमृताष्टक क्वाथ

गिलोय, इन्द्रजौ, नीम की छाल, परवल के पत्ते, कुटकी, सोंठ, लाल चन्दन और नागरमोथा समान भाग का क्वाथ बना कर, उसमें छोटी पीपल का चूर्ण 3 ग्राम तक मिला कर पिलावें। इससे वमनेच्छा, वमन, अरुचि, तृष्णा, दाह युक्त पित्त, कफ ज्वर दूर होता है।

प्लेग- ज्वर में पंचकोलक्वाथ

छोटी पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक और सोंठ समान भाग लेकर उसके जौकुट- चूर्ण 2 तोले को अठगुने पानी के साथ चतुर्थांश शेष क्वाथ करके पिलाने से वातकफ की अधिकता वाले ज्वर में लाभ होता है।

गिल्टियों पर लेप

वरना की छाल, अमलताश, बन्दाल, धतूरा, मकोय और वत्सनाग समान भाग लेकर पीसें और जल योग से गिल्टियों पर लेप करें। गन्धा बिरोजा लेकर आग पर पिघलावें और उसमें नीला थोथा 30 ग्राम बारीक पीस कर मिलावें तथा आवश्यकतानुसार मात्रा में कपड़े पर लगावें और आग पर कुछ गर्म करके गिल्टियों पर लगा दें।

प्लेग का रोगी प्रायः चेतनाहीन सा हो जाता है। इसलिये उस अवस्था में उसे मूर्च्छा नाशक योग देने चाहिये। निम्नलिखित वटी भी मूर्च्छा दूर करने में उपयोगी है —

तज, पत्रक, वायविडंग, चित्रक, सोंठ, पीपलामूल और जावित्री 20-20 ग्राम, शुद्ध कुचला, शुद्ध वत्सनाग और ताम्रभस्म 15-15 ग्राम, कस्तूरी 10 ग्राम तथा मल्ल (संखिया) भस्म 3 ग्राम लेकर काष्ठौषधियों को कूट छान कर चूर्ण करें और फिर खरल में डाल कर 1-1 भस्म मिलाते चलें। तदुपरान्त भृंगराज के स्वरस में निरन्तर 3 दिन घोटें और चना के बराबर गोलियाँ बना लें। रोगी की मूर्च्छा अवस्था में 1 गोली गर्म पानी के साथ देने पर चैतन्यता आ जायेगी। अथवा मृत संजीवनी सुरा का प्रयोग करें।

दृष्टव्य — इस प्रकार प्लेग के रोगी का उपचार उसके दोषों की विशेषता और लक्षणों के अनुसार करने पर चिकित्सक उसे नवजीवन प्रदान करके स्वयं यश के भागी हो सकते हैं। इस प्रकरण में वर्णित औषधियाँ प्लेग के अतिरिक्त उस प्रकार के लक्षणों वाले अन्य रोगों में भी लाभकारी होती हैं।

11. ज्वर चिकित्सा

ज्वर एक ऐसा रोग है, जो सामान्य होते हुए भी कभी- कभी भीषण रूप धारण कर लेता है और अधिक कष्टकारी बन जाता है। शरीर में गर्मी का रहना स्वस्थ अवस्था में भी आवश्यक है, किन्तु जब वह गर्मी निश्चित सीमा से अधिक बढ़ जाती है, तब वह ज्वर का रूप धारण कर लेती है। ज्वर नापने के थर्मामीटर पर हम देखते हैं, वहाँ 98.5 डिग्री पर एक निशान बना रहता है उससे अधिक पारा चढ़ने पर ज्वर का होना माना जाता है। ऐलोपैथिक चिकित्सक ज्वर का निर्णय प्रायः इसी प्रकार करते हैं। किन्तु आयुर्वेदिक चिकित्सक नाड़ी की चाल आदि से ज्वर होने न होने की पुष्टि करते हैं। अनेक अनुभवी चिकित्सकों के मत में थर्मामीटर का वह निशान पाश्चात्य देशों के जलवायु और ऋतु आदि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
के अनुसार निश्चित है। भारतवर्ष में तो स्वस्थ मनुष्य के शरीर का उष्णता लगभग 97.0 होनी चाहिये। किन्तु ज्वर का तात्पर्य शरीर में ऊष्मा की वृद्धि (Rise of temporature) है, जो कि ज्वर का प्रधान लक्षण है।

ज्वर के प्रकार

ज्वर के अनेक प्रकार हैं। सभी चिकित्सा पद्धतियों में ज्वर को बहुत भाँति का माना जाता है। आयुर्वेद में इसे 25 प्रकार का कहा गया है, यथा —

पंचविंशतिरुद्दिष्टा ज्वरास्तद्भेद उच्यते।

पृथग्दोषैस्तथा द्वन्द्वभेदेन त्रिविधः स्मृतः॥

एकश्च सन्निपातेन तद्भेदा बहवः स्मृता।

ज्वर पच्चीस प्रकार के कहे हैं, पृथक् पृथक् दोषों और द्वन्द्वों के भेद से सभी तीन- तीन प्रकार के हो जाते हैं, तथा एक पच्चीसवाँ भेद सन्निपातज अर्थात् त्रिदोषज माना गया है। इनके लक्षण इस प्रकार कहे गये हैं —

वातज्वर में शरीर में कम्प, ज्वर वेग कभी न्यून, कभी अधिक, कण्ठ और होठों का सूखना, नींद न आना, देह में रूखापन, सर्वांग, विशेषकर मस्तक और हृदय में पीड़ा, स्वाद बिगड़ना, मल का शुष्क होना, पेट पर अफरा और दर्द आदि लक्षण होते हैं।

पित्तज्वर में ज्वरावेग अधिक रहता है, दस्त लग जाते हैं, नींद नहीं आती, वमन या वमनेच्छा, कण्ठ, होठ, मुख तथा नाक में पकाव, स्वेद, प्रलाप, मुख में कड़ुवापन, मूर्च्छा, दाह, तृषा तथा शरीर और मल में पीलापन आदि लक्षण होते हैं।

कफज्वर में ज्वर का वेग कम रहता है, शरीर पर कुछ द्रवता, आलस्य, मुख में मिठास, मल- मूत्र में सफेदी, शरीर में जकड़न, पेट में भारीपन, अंगों में टूटन, वमन, अपच, ठण्ड लगना, रोमांच, निद्रा की अधिकता, जुकाम, खाँसी, आँखों में श्वेतता आदि लक्षण देखे जाते हैं।

अन्यान्य ज्वरों में मिश्रित लक्षण दिखाई देते हैं। त्रिदोष (सन्निपात) के ज्वर में तीनों दोषों और उनके मिश्रित उपदोषों सहित विविध प्रकार के लक्षण प्रतीत होते हैं। सन्निपात जन्य में प्रायः पाँच भेद के विषम ज्वर कहे हैं — सन्तत, सतत, अन्यद्युष्क, तृतीयक और चातुर्थिक। सात से दस दिन तक एक जैसा बना रहने वाला ज्वर सन्तत, दिन- रात में दो बार चढ़े- उतरे वह सतत, दिन- रात में एक बार आवे वह अन्येद्युष्क, तीसरे दिन आये वह तृतीयक (तिजारी) और चौथे दिन आये वह चातुर्थिक (चौथिया) ज्वर कहलाता है।

पाश्चात्य चिकित्सक भी इन ज्वरों का इसी प्रकार भेद करते हैं। सप्ताह भर समान रूप से चलने वाले को सेविन डेज आदि कहते हैं। आयुर्वेद के मत में 13 प्रकार के आगंतुक ज्वर हैं जो अभिचार, ग्रहावेश, शापज्वर आदि के नामों से जाने जाते हैं। अधिक परिश्रम करने से, अग्नि में जलने से, चोट लगने से, इच्छित वस्तु या स्त्री आदि के प्राप्त न होने से भी ज्वर हो जाता है। इसके विषय में शास्त्रीय मत है —

कामजे चित्त विभ्रंशस्तन्द्रालस्यमभोजनम्।

हृदये वेदना चास्य गात्रं च परिशुष्यति॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

मिलाने का निर्देश दिया है (शा.सं.) किन्तु कुछेक अनुभवी चिकित्सक विषम ज्वर में तैल मिश्रित औषधि का निषेध करते हैं।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- नील कमल, खिरेंटी मूल, मुनक्का, महुआ, मुलहठी, खस, पद्माख, कम्भारी और फालसा समान भाग का हिम बना कर पिलाने से वात- पित्त ज्वर, प्रलाप, भ्रम, वमन, मूर्च्छा और प्यास आदि का निवारण होता है
- गिलोय का हिम बना कर पिलाने से जीर्णज्वर शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।
- अडूसा (वासा) का हिम बना कर पिलाने से रक्तपित्तजन्य ज्वर में शीघ्र लाभ होता है।

सभी प्रकार के हिम इस प्रकार बनते हैं कि औषधि द्रव्य 4 तोले हो तो, उसे महीन कूट कर 24 तोले पानी के साथ रात्रि में भिगो दें और प्रातःकाल छानकर रोगी को पिलावें.। इसे हिम अथवा शीतकषाय कहते हैं।

दुग्धपान एवं औषधि - सिद्ध दुग्ध

- आयुर्वेद के मत में, तरुण ज्वर (आरम्भ हुए ज्वर) में दूध विष के समान घातक है। किन्तु जीर्ण ज्वर में दूध बहुत लाभदायक होता है। जिस रोगी का कफ क्षीण हो गया हो, उसे दूध अवश्य देना चाहिये।
- धारोष्ण दूध हितकर है, उसके अभाव में जल मिला कर दूध को औटावें और दूध शेष रहे तब रोगी को पिलावें। दूध गाय या बकरी का अधिक उपयुक्त होता है।
- दूध में चौगुना पानी मिला कर पकावें, जब सब पानी जल जाय और दूध मात्र शेष रहे, उस दूध को ज्वर के रोगी के लिए उपयुक्त माना गया है।
- किसी औषधि के साथ दुग्ध पकाना हो अर्थात् क्षीरपाक करना हो तो औषधि द्रव्य से चौगुना दूध और दूध से चौगुना पानी डाल कर मन्दाग्नि पर पकावें, जब दूध मात्र शेष रहे तब क्षीरपाक सिद्ध हुआ समझें।

दूध 16 तोले में 2 तोले लघु पंचमूल की पोटली बना कर डालें तथा दूध से चौगुना पानी मिला कर मन्दाग्नि पर पकावें और दूध मात्र शेष रहने पर उतार लें।

इस दूध के सेवन से पुराना ज्वर दूर होता है। श्वास, खाँसी, सिरदर्द, पसलियों में दर्द आदि उपद्रव भी दूर होते हैं।

लघु पंचमूल के द्रव्य — शालिपर्णी, पृष्ठपर्णी, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी और गोखरू हैं।

- दोष के अनुसार ग्रहण की गई औषधियों के साथ पकाये हुए दूध को पीने से सब प्रकार के जीर्ण ज्वर शान्त हो सकते हैं। इस प्रकार के दूध पित्तज और वात- पित्तज ज्वर में ठण्डा करके पिलावें। किन्तु वातज और वात- पित्तज ज्वर में कुछ गर्म (पीने योग्य गर्म) पिलाना हितकर है।
- यदि ज्वर के रोगी को कब्ज तथा मूत्र में रुकावट हो तो उसमें गोखरू, खिरेंटी, छोटी कटेरी और सोंठ की पोटली डाल कर सिद्ध किये दूध में पुराना गुड़ 5-6 ग्राम मिला कर पिलाना चाहिये। शीघ्र लाभ होगा।
- यदि गुदा में कतरनी चलने जैसा अनुभव हो तो एरण्डमूल (अण्डी की जड़) के साथ सिद्ध किया हुआ दूध पिलाना अत्यन्त लाभदायक है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

- श्वेत पुनर्नवा, रक्त पुनर्नवा और बेलगिरी के साथ उक्त प्रकार से सिद्ध दुध के सेवन से सभी प्रकार के ज्वर नष्ट हो जाते हैं।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्वर के लाक्षणिक उपचार

- रोगी को कब्ज हो, उसके कारण बेचैनी भी हो और ज्वर भी न उतर रहा हो, उस स्थिति में 20-30 मिलीलीटर कैस्टर आइल (एरण्ड तैल) गर्म दूध के साथ अथवा त्रिफला के काढ़े के साथ पिलाना चाहिये। इससे दस्त हो जायेगा।
- रात्रि शयन समय हरड़- सोंठ अथवा हरड़- सोंफ की फंकी दूध के साथ देने से भी प्रातःकाल दस्त हो जाता है। इससे भी काम न चले तो कोई अन्य सुख विरेचक दवा देनी चाहिये।
- यदि प्यास अधिक लगे तो आमला, कूट, वट की जटा, कमलगट्टा की गिरी और धान की खील समान भाग लेकर चूर्ण करें और शहद के साथ गोलियाँ बना लें। जब प्यास अधिक लगे तब मुख में गोली रखनी चाहिये। प्यास भी शान्त होगी और ज्वर में भी लाभ होगा।
- सिर में दर्द हो तो घृत में कर्पूर मिला कर मलें। वैसलीन में अमृतधारा मिला कर लगाने से भी लाभ होता है। अमृतधारा का नुस्खा इस प्रकार है —
- सत अजवाइन, पीपरमेंट फूल और देशी कर्पूर समान भाग लेकर एक शीशी में डालकर मुख पर कड़ी डाट लगा दें। घंटे- दो घंटे में तीनों द्रव्य गल कर अमृतधारा बन जायेगी।
- बादाम रोगन की मालिश करने से भी सिर के दर्द में लाभ होता है
- ज्वरांश बढ़ने और बेचैनी होने की अवस्था में बादाम रोगन और गुलरोगन मिला कर माथे पर मालिश करें तथा पावों के तलुओं को कपड़े से सहलायें।
- पसीना न आ रहा हो, और उसकी आवश्यकता हो तो रोगी को सुहाता- सुहाता गर्म जल अथवा चाय पिलावें।
- शीत लग कर ज्वर चढ़ रहा हो तो रोगी को उसकी इच्छानुसार कम्बल, रजाई आदि ओढ़ा दें। जाड़ा उतरने पर ध्यान रखें कि पसीने में हवा नहीं लगनी चाहिये।
- चढ़ते हुए ज्वर में कोई दवा नहीं देनी चाहिये। उस समय यदि कोई अवरोधक दवा दी जायेगी तो सम्भव कि वह कुछ अन्य उपद्रव कर दे।
- रोगी को प्यास लगने पर शुद्ध पानी, छान कर दें अथवा एक उबाल का पानी ठण्डा करके पिलावें।

ज्वरान्तक वटी

कुटकी, काली मिर्च, और तुलसी के पत्ते पानी के साथ पीस कर कल्क बनावें और इसे गिलोय स्वरस के साथ घोट कर 250-250 मिलीग्राम की गोलियाँ बना लें। इनके सेवन से मलेरिया ज्वर में बहुत लाभ होता है।

मात्रा — 2-3 गोली तक दिन में 3-4 बार पानी के साथ दें। खाँसी भी हो तो अदरक के स्वरस और मधु के साथ देनी चाहिये। ज्वर का प्रकोप फैला हो तो इसे करेले के स्वरस के साथ केवल 1 या 2 गोली प्रातःकाल देनी चाहिये, मलेरिया से बचाव रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करंज पत्र, गिलोय, नीम के पत्ते, तुलसी के पत्ते, मुलहठी और पीपल 20-20 ग्राम, शुद्ध गन्धक और भीमसेनी कर्पूर 10-10 ग्राम लेकर चूर्ण कर लें और बाह्मी बूटी के स्वरस के साथ खरल करके चने के बराबर गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 2-2 गोली प्रातः- सायं उचित अनुपान के साथ देनी चाहिये। बालकों को उनकी आयु- बल के अनुमान से दें। इससे मलेरिया ज्वर में पर्याप्त लाभ होता है। रक्त- विकार, शोथ, खाज आदि के साथ ज्वरादि में भी बहुत हितकर है।

पित्तज विषमज्वर पर गोली

फिटकरी फुलाई हुई 10 ग्राम, गोदन्ती हरताल भस्म 8 ग्राम, गिलोय सत्व 6 ग्राम, छोटी इलायची के दाने, शीतल चीनी, पीपल, वंशलोचन और अभ्रक भस्म 4-4 ग्राम लेकर महीन चूर्ण करें और नीम के पत्तों के स्वरस में घोट कर 250-250 मिलीग्राम की गोलियाँ बना लें।

मात्रा— 1 से 2 गोली तक ज्वर चढ़ने से 5-6 घंटे पूर्व से दो- दो घंटे के अन्तर पर शहद के साथ देनी चाहिये। इससे पित्तदोष की अधिकता वाला विषम ज्वर दूर होता है।

नवीन ज्वर पर हिंगुलेश्वर रस

पीपल, शुद्ध हिंगुल और शुद्ध विष समान भाग लेकर पानी के साथ पीसें और आधी- आधी रत्ती की गोलियाँ बना लें। नवीन वात ज्वर में इसे शहद के साथ देना चाहिये। इससे शीघ्र लाभ होता है। रोगी के लक्षण तथा देश- काल के भेद से इस अनुपान में परिवर्तन भी किया जा सकता है, जो कि चिकित्सक के निर्णय पर निर्भर है।

ज्वर भैरव चूर्ण

सोंठ, त्रायमाण (बनफ्शा), नीम की छाल, धमासा, हरड़, नागरमोथा, वच, देवदारु, छोटी कटेरी, काँकड़ासिंगी, शतावर, पित्तपापड़ा, पीपलामूल, इन्द्रायण- मूल, कूट, कचूर, मूर्वामूल, पीपल, हल्दी, दारुहल्दी, लोध, लाल चन्दन, कमल, इन्द्रयव, कुड़ा की छाल, मुलहठी, मूसली श्वेत, पद्मकाष्ठ, अजवाइन, सरिवन, काली मिर्च, गिलोय, बेल की छाल, सुगन्धबाला, पंकपर्पटी, तेज पत्र, पारद, लौह भस्म, अभ्रक भस्म और शुद्ध मैनसिल, सभी वस्तुओं को समान भाग लेकर चूर्ण करें। सभी काष्ठौषधियों को कूट- कपड़छन करना चाहिये। गन्धक- पारद की कज्जली करके मिलावें और सभी भस्मों को डाल कर एकजीव करें। तत्पश्चात् इस पूरे चूर्ण के वजन से आधे परिमाण में चिरायते का चूर्ण मिला कर भले प्रकार खरल कर लेना चाहिये।

मात्रा और अनुपान का निर्णय रोगानुसार करें। सामान्य अनुपान ताजा पानी है। इसके सेवन से सभी प्रकार के ज्वर शीघ्र ही शान्त हो जाते हैं। अग्निमान्द्य, यकृत, प्लीहा, पाण्डु, अरुचि, उदर रोग, अन्त्र वृद्धि, रक्तपित्त, चर्मरोग, शोथ, सिरदर्द तथा वातरोग दूर होते हैं। इनके कारण उत्पन्न ज्वर तथा उनके उपज्वर भी इसके सेवन से नष्ट हो जाते हैं।

ज्वर नागमयूर चूर्ण

लौहभस्म, अभ्रक भस्म, फुलाया हुआ सुहागा, ताम्रभस्म, हरिताल, वंगभस्म, शुद्ध पारद, गन्धक, सहजने के बीज, आमला, हरड़, बहेड़ा, लाल चन्दन, अतीस, पाढ़ी, वच, हल्दी,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
दारुहल्दी, खस, चित्रकमूल, देवदारु, परवल के पत्ते, जीवक, ऋषभक, काला जीरा, तालीशपत्र, वंशलोचन, छोटी कटेरी का फल और मूल, कचूर, तेजपात, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, सत गिलोय, धनिया, कुटकी, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, सुगन्धबाला, बेल की छाल, और मुलहठी सभी 1-1 भाग लेकर कपड़- छन चूर्ण करे तथा उसमें कालाजीरा चूर्ण 4 भाग, ताड़ के पुष्प का चूर्ण 4 भाग, कमलनाल का चूर्ण 4 भाग, चिरायते का चूर्ण 4 भाग और छोटी पीपल का चूर्ण 4 भाग लेकर मिलावें और सबको एकजीव कर लें।

मात्रा — 1 से 2 माशे तक रोग तथा रोगी के बलानुसार विचार कर ठण्डे ताजा पानी के साथ देनी चाहिये। किन्तु गर्म जल के साथ इसे नहीं देना चाहिए। इसके सेवन से सब प्रकार के साध्य- असाध्य ज्वर, विषम ज्वर, क्षययुक्तज्वर, धातुगत ज्वर, कामज, शोकज, भूतावेशज, अभिचारज तथा जीर्णज्वरादि शीघ्रातिशीघ्र काबू में आते हैं। यह चूर्ण सभी ज्वरों की सर्वोत्तम महौषधि है। प्लीहा, उदर, कामला, पाण्डु, शोथ, भ्रम, तृष्णा, कास, शूल, आनाह, क्षय, यकृत, गुल्मजन्य शूल, आमवात, पीठ, जानु और पसलियों की वेदना आदि में भी यह चूर्ण अत्यन्त हितकर है।

विषमज्वर पर अर्क

करंज, तुलसी, गिलोय, चिरायता और नीम के पत्ते तथा छाल आदि लेकर एक घड़े में 10 गुना पानी डाल कर एक सप्ताह तक भीगने दें और फिर भवका में अर्क खींच लें।

यह अर्क उचित मात्रा में देने से सब प्रकार के मलेरिया (विषम ज्वर) दूर हो जाते हैं।

ज्वरादि पर त्रिपुर भैरव रस

शुद्ध विष 2 भाग, सुहागा खील 2 भाग, शुद्ध गन्धक 3 भाग, ताम्र भस्म 4 भाग और जमालगोटा 5 भाग लेकर महीन करें और जमाल गोटा की जड़ (दन्तीमूल) के काढ़े में 3 घंटे तक खरल करके 2-2 रत्ती की गोलियाँ बना लें

इस त्रिपुर भैरव रस के सेवन से नवीन ज्वर, अग्निमान्द्य, आमवात, शोथ, शूल, कोष्ठ - बद्धता, अर्श और कृमि रोग नष्ट हो जाते हैं। इस रस के सेवन काल में तक्र के साथ भोजन करायें। (भै.र.) किन्तु ज्वारावस्था या ज्वरोपरान्त आहार आदि का निर्णय देश- काल, रोग- लक्षण आदि के अनुसार लेना चाहिये।

सन्निपात में समीरपन्नग रस

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, शुद्ध मल्ल और हरताल समान भाग लें। पारद गन्धक की कज्जली करें और फिर मल्ल तथा हरताल भी एक- एक कर मिलाते हुए सर्व कज्जली बना लें। फिर इसे तुलसी पत्र के स्वरस में 48 घंटे घोट कर, श्वेत अभ्रक के पत्रों से लपेटें और शराब सम्पुट कर, 3 कपड़ मिट्टी चढ़ावें और बालुका यन्त्र में रखकर 12 घंटे तक मन्द अग्नि में पकावें। स्वांग शीतल होने पर निकाल लें।

इस रस की मात्रा 2 रत्ती तक पान में रखकर देने से सन्निपातज (ज्वरादि) उपद्रव, उन्माद, सन्धिवात तथा कफ दोष शीघ्र नष्ट होते हैं। (भै.र.)

छोटी कटेरी का ज्वरोपचार में उपयोग

यह क्षुप प्रायः सर्वत्र सुलभ है, छत्ते के रूप में धरती पर फैले हुए देखे जा सक़ते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

इसकी शाखाएँ आड़ी- तिरछी सी होती हैं तथा पत्ते लम्बे, गोल कटे हुए किनारों वाले तथा काँटेदार होते हैं। काँटों में पीलापन, चमक और कोमलता रहती है। इसमें बैंगनी रंग के फूल आते हैं तथा फल कच्चे रहते हैं- तब तक श्वेत, और पकने पर पीले हो जाते हैं।

यह वनस्पति चरपरी, कटु, सारक, दीपक, रूक्ष तथा उष्ण प्रकृति वाली मानी जाती है। ज्वर, खाँसी, जुकाम, पीनस, हृदोग तथा कफ और वात नाशक है। इसके फल अधिक उपयोग में आते हैं, जो कि हल्के, पित्तकारक, भेदक तथा वात् और कफ का शमन करते हैं। उनके प्रभाव से कृमि भी नष्ट हो जाते हैं। अनेक योगों में इसका पंचांग (जड़, शाखा, पत्र, पुष्प, फल) प्रयोग में लाया जाता है।

अनुभवी चिकित्सकों के अनुसार छोटी कटेरी में सब प्रकार के ज्वरों का शमन करने का गुण है। जीर्ण ज्वर और मन्द ज्वर में इसका उपयोग अत्यन्त लाभकारी होता है। अन्य औषध- द्रव्यों के साथ मिलने पर यह उनकी शक्ति बढ़ाने में सहायक होती है।

छोटी कटेरी मिश्रित कतिपय योग

- छोटी कटेरी का पुष्प, मुलहठी, छोटी पीपल, काली मिर्च और गिलोय समान भाग का चूर्ण, 1-2 ग्राम की मात्रा में दिन में 2-3 बार देने से ज्वर नष्ट होता है, कब्ज भी नहीं रहता। इसे ताजा पानी के साथ देना चाहिये।
- ज्वर के साथ खाँसी हो तो कटेरी के फूल और पीपल का चूर्ण शहद के साथ मिला कर चाटने से शीघ्र आराम होता है।
- ज्वर के साथ जुकाम हो तो छोटी कटेरी और पित्तपापड़ा समान भाग का क्वाथ पिलाने से शीघ्र लाभ सम्भव है।
- प्लीहा और ज्वर- नाश के लिये छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, गोखरू, हरड़ तथा रोहितक की छाल का काढ़ा बना कर, उसमें २ माशे छोटी पीपल का चूर्ण और उतना ही यवक्षार मिला पर पीना चाहिये। यह क्वाथ प्लीहा पर अनुकूल प्रभाव डालता है। ज्वर में भी बहुत कुछ लाभ दिखाता है।
- कटेरी, सोंठ, गिलोय, मोथा, चिरायता, आमला, बेल की छाल, अरलू की छाल, कम्भरी की छाल, पाडर की छाल, अरनी की छाल, कुटकी, इन्द्रजौ और नवासा का काढ़ा शहद मिला कर पीने से वातज, पित्तज, कफज, द्वन्द्वज तथा पुराना, रात्रि में आने वाला ज्वर भी नष्ट हो जाता है।

श्लेष्म ज्वरादि में कंटकार्यादि क्वाथ

कटेरी (छोटी), गिलोय, भारंगी, सोंठ, इन्द्रजौ, जवासा, चिरायता, लाल चन्दन, नागरमोथा, परवल- पत्र और कुटकी समान भाग मिला कर, विधिवत क्वाथ बनायें और ज्वर के रोगी को सेवन करायें।

यह क्वाथ पित्त- श्लेष्म ज्वर में अत्यन्त उपयोगी है। दाह, तृषा, अरुचि, वमन, खाँसी तथा पसलियों के दर्द को भी शीघ्र काबू में लाता है। इसके सेवन से मलावरोध (कब्ज) भी नहीं रहता।

आमज्वरादि में आराग्वधादि क्वाथ

अमलतास का गूदा, पीपलामूल, नागरमोथा, कुटकी और हरड़ का क्वाथ विधिपूर्वक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
बनाना चाहिये। उचित यह है कि अमलतास का गूदा क्वाथ पकाने से पहिले न डालें, वरन् अन्य चारों द्रव्य जौकुट करके क्वाथ कर लें और फिर उसमें अमलताश के गूदे का चूर्ण मिला कर पिलावें।

इस क्वाथ के सेवन से आमदोष और शूलयुक्त वातश्लेष्म ज्वर शीघ्र नष्ट होता है। क्योंकि यह क्वाथ आमदोष का पाचन अग्नि का दीपन करता है। इस कारण पेचिश भी नहीं रहती।

त्रिदोषज ज्वर में वृहत्यादिगण का काढ़ा

छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, पुष्करमूल, भारंगी, शढ़ी, काकड़ा सिंगी, दुरालभा, निर्मली के बीज, इन्द्रयव, परवल के पत्ते और कुटकी का काढ़ा देने से खाँसी- श्वास युक्त कष्टकारी लक्षणों वाला सन्निपातज ज्वर भी शीघ्र काबू में आता है।

पैत्रिक ज्वर में मुस्तकादि क्वाथ

नागरमोथा, पित्तपापड़ा, खस, देवदारु, सोंठ, हरड़, बहेड़ा, आमला, दुरालभा, गोली, कमीला, निशोथ, चिरायता, पाठा, बला की जड़, कुटकी, मुलहठी और पीपलामूल समान भाग लेकर, विधिपूर्वक क्वाथ बना कर पिलाना चाहिये।

इस मुस्तकादिगण क्वाथ के सेवन से पित्त प्रधान सन्निपात ज्वर शीघ्र नष्ट हो जाता है। यह सिरदर्द, पसलियों के दर्द तथा हृदयगत दर्द को भी दूर करता है। उरोघात एवं मन्या- स्तम्भ में भी हितकारी है।

ज्वरादि में स्वदेशी एस्प्रीन

विषम ज्वर पर एक ऐसा योग प्रस्तुत है जो चढ़े हुए ज्वर को उतारने में अवश्य सहायक होता है। वस्तुतः यह दवा एस्प्रीन के समान दर्द का भी निवारण करती है। इसके सेवन से पसीना भी आता है और ज्वर भी रुक जाता है। नुस्खा इस प्रकार है —

रीठा 250 ग्राम लेकर चूर्ण कर लें और उसे 1 लीटर जल में भिगो दें। इसे 24 घण्टे भीगने दें और फिर मिट्टी की कढ़ाही में रख कर पकावें। जब चौथाई पानी शेष रहे तब उतार कर छान लें। अब उसमें फिटकरी का फूला 12 ग्राम डाल कर फिर पकने दें। जब सब पानी जल जाय तब उसमें क्षार रह जायेगा, उसे कड़ाही से खुरचकर निकाल लें। यह क्षार ही एक प्रकार की आयुर्वेदिक एस्प्रीन है।

मात्रा — 100 से 400 मिलीग्राम तक गर्म पानी के साथ देनी चाहिये। यह दवा तत्काल प्रभावंकारी है।

मलेरिया की गोली

चूना, सोनागेरू और गोदन्ती हरताल भस्म 600-600 ग्राम तथा वायविडंग, सोंठ और फिटकरी फुली हुई 50-50 ग्राम।

सर्वप्रथम चूने को पानी में डाल कर गलावें और उसे 24 घंटे भीगने दें। फिर गेरू को भी पानी में पृथक्‌गला कर, गले हुए चूने के साथ मिलावें और उसी में बायविडंग, सोंठ और फिटकरी का महीन चूर्ण करके, उसे सोंठ के क्वाथ के साथ 5-6 घंटे लगातार खरल करें और फिर 200-200 मिलीग्राम की गोलियाँ बना कर सुखा लें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मात्रा — मलेरिया बुखार में, बुखार आने से चार घंटे पहले 1 या 2 गोली सोंठ के क्वाथ अथवा पान के रस को गुनगुना गर्म करके उसके साथ देनी चाहिये। अथवा गर्म जल के साथ भी दे सकते हैं। इसके प्रयोग से सब प्रकार के सामान्य ज्वर, मलेरिया, नित्य प्रति चढ़ने वाला, दूसरे, तीसरे या चौथे दिन चढ़ने वाला ज्वर, शीत ज्वर आदि अवश्य दूर हो जाते हैं। यदि ज्वर के साथ खाँसी- श्वास जैसे उपद्रव हों तो वह शीघ्र नष्ट होंगे। यह दवा चार- चार घण्टे के अन्तर पर देनी चाहिए। मात्रा का निर्धारण रोग और रोगी का बलाबल विचार कर करना उचित होता है।

सर्वज्वर विनाशिनी वटी

चिरायता 50 ग्राम, कुटकी, देवदारू, पित्तपापड़ा, पीपलामूल, लाल चन्दन, नागरमोथा और छोटी कटेरी मूल का छिलका 10-10 ग्राम।

सभी को कूट कर जौकुट करें और 5 लीटर पानी के साथ आग पर चढ़ावें तथा अष्टावशिष्ट रहने पर, उस क्वाथ को उतार कर छान लें। अब उसमें त्रिफला चूर्ण 50 ग्राम डाल कर पुनः मन्दाग्नि पर पकावें, जब वह गोली बनने योग्य गाढ़ा हो जाय तब उतार कर ठण्डा करें और खरल करके चना के बराबर गोलियाँ बना लें।

मात्रा —1 से 2 गोली तक ठण्डे, ताजे पानी के साथ देनी चाहिए। ज्वर चढ़ने से 3 घंटे पहले से 1-1 घंटा के अन्तर पर अथवा प्रातः- सायं, यथास्थिति दे सकते हैं। यह गोली ज्वर चढ़ा होने पर भी दे सकते हैं। उतर जाने पर भी स्थायी लाभ के लिए प्रयोग कर सकते हैं। सब प्रकार के मलेरिया अथवा अन्य नये- पुराने ज्वरों में यह अभूतपूर्व फल दिखाती है। जीर्णज्वर, मन्द ज्वर अथवा ज्वर सदा बना रहने की स्थिति में भी यह बहुत लाभकारी है। रोगादि के अनुरूप अनुपान का निश्चय किया जाता है।

ज्वर- कास- हर गोली

धतूरे के बीज, कूट कर और कायफल समान भाग लेकर महीन करें और फिर अदरक के स्वरस के साथ 3 घंटे खरल करके चना के बराबर गोलियाँ बना कर, छाया में सुखा कर रखें।

मात्रा —1-1 गोली, शहद में अदरक का स्वर मिलाकर उसके साथ देनी चाहिए। इससे ज्वर में तो लाभ होगा ही, साथ ही कफयुक्तखाँसी भी दूर होगी। किन्तु खाँसी न हो तो उस रोगी को यह दवा शहद के साथ तुलसीदल का स्वरस मिला कर देने से शीघ्र लाभ होता है।

ज्वर केशरिकावटी

शुद्ध पारद, शुद्ध मीठा विष, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, शुद्ध गन्धक, हरड़, बहेड़ा, आमला, शुद्ध जायफल समान भाग लेकर, भृंगराज के स्वरस में 3 घंटे तक भले प्रकार घोट कर 1-1 रत्ती की गोलियाँ बनावें।

मात्रा — 1-1 गोली नारियल के पानी के साथ यथावश्यक समय के अन्तर से देनी चाहिए। सन्निपातज ज्वर में काली मिर्च के चूर्ण से तथा दाहज्वर में पीपल और श्वेत जीरे के चूर्ण से सेवन करावें। इससे कब्ज युक्तपुराना बुखार, भूतज्वर, प्लीहा, मन्दाग्नि, अजीर्ण, शोथ, शूल, गुल्म, कुष्ठ तथा पित्तज विकार दूर होते हैं। बालकों को भी 1 सरसों प्रमाण मात्रा में दी जा सकती है। (भै.र.)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ज्वरनाशक अर्क

चिरायता, नीम की छाल, पटोल पत्र, करंज पत्र, नागरमोथा, कुटकी, हरड़ और लाल चन्दन समान भाग लेकर अठगुने पानी के साथ रात्रि में भिगोवें तथा प्रातःकाल भवका से अर्क खींच लें।

मात्रा — 25 से 50 मिलीग्राम तक यह अर्क मलेरिया में 3-3 घंटे के अन्तर से पिलावें। दो- तीन दिन में ज्वर नष्ट हो जायेगा। रोग और रोगी की स्थिति देख कर मात्रा न्यूनाधिक दी जा सकती है।

सर्वज्वरनाशक संजीवन रस

चन्द्रोदय 8 ग्राम, शुद्ध जयपाल 6 ग्राम, सुहागा फुलाया हुआ 4 ग्राम और सत गिलोय 2 ग्राम। सबको 3 घंटे तक खरल में घोट कर एक जीव कर लें। तदुपरान्त निम्न द्रव्यों के पृथक् पृथक् क्वाथ में क्रमशः 3-3 घंटे खरल कर 125 मिलीग्राम प्रमाण गोलियाँ बना कर छाया में सुखा लें।

क्वाथ द्रव्य — सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, चित्रकमूल की छाल और अदरक प्रत्येक 5 ग्राम।

मात्रा — 1-2 गोली तक पानी के साथ अथवा अन्य उचित अनुपान के साथ देनी चाहिये। इससे सभी प्रकार के ज्वर नष्ट होते हैं। यह रस कोष्ठ शुद्धि करता है, किन्तु शरीर में दुर्बलता नहीं लाता। यदि रोगी को गर्मी करे तो, उस स्थिति में ठण्डी वस्तुएँ देनी चाहिए। दवा बन्द कर देनी चाहिएं इसके सेवनकाल में दही- चावल पथ्य हैं।

दवा की घुटाई करते समय यह ध्यान रखें कि वह हाथ या किसी भी अंग पर न लगे, अन्यथा वहाँ सूजन हो सकती है

सर्वज्वर विनाशिनी अव्यर्थ वटी

प्रवाल भस्म, शंख भस्म, श्रृंग भस्म, गोदन्ती हरताल भस्म, फुलाया हुआ सुहागा, फुलाई हुई लाल फिटकरी, सोना गेरू, सतगिलोय और चूना (बिना बुझा हुआ), सभी समान भाग लें और महीन पीस कर सोंठ, वायविडंग और हारसिंगार के पत्तों के क्वाथ में निरन्तर 6 घंटे घोट कर 100-100 मिलीग्राम की गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1 से 3 गोली तक ताजा पानी अथवा गुनगुने पानी के साथ सेवन करानी चाहिए। मलेरिया ज्वर चढ़ने से 4 घंटे पहले से, एक गोली, एक- एक घंटे के अन्तर से 3 बार दें। इससे विषम ज्वर में तो लाभ होता ही है, अन्य सभी प्रकार के ज्वरों में भी शीघ्र लाभकारी है।

मलेरिया में कम समय के अन्तर पर (30-30 मिनट पर) ठण्डे पानी के साथ दे सकते हैं। यदि दस्त, वमन के लक्षण हों तो भी ठंडे जल से ही दें। पेट में दर्द, अफरा, अरुचि, मन्दाग्नि, कृमि, शोथ आदि हो तो गर्म पानी से देना हितकर है। जीर्णज्वर में लघु वसन्तमालती से देने पर अद्भुत लाभ दिखाती है। बालकों को भी ज्वर, सूखा तथा कृमि आदि रोगों में अमृत के समान लाभकारी है

करंजपत्रादि ज्वर वटी

करंज के पत्ते 20 ग्राम, सूखे आमले और सेंधानमक 40-40 ग्राम, फुलाया सुहागा 10

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ग्राम लेकर, सबको चूर्ण करें और जलयोग से लुग्दी बना कर, घोटते- घोटते झरबेरी तुल्य् गोली बनावें।

मात्रा — 1 गोली प्रातःकाल पानी के साथ दें। पिर ज्वर चढ़ने से 3 घंटे पहिले से 1-1 घंटे के अन्तर से दें। यदि मलेरिया के वेग के साथ दस्त लग जाते हैं तो, इसके सेवन से रुक जाते हैं तथा ज्वर का वेग भी शान्त हो जाता है। बालकों को भी उनकी आयु के अनुसार आधी अथवा और भी कम मात्रा में दी जा सकती है।

करंजफलादि ज्वरघ्नी गोली

करंज के फल 50 ग्राम, छोटी पीपल, काली मिर्च और फुलाई हुई फिटकरी 25-25 ग्राम, फुलाया हुआ सुहागा 10 ग्राम लेकर काष्ठौषधियों का कपड़छन चूर्ण करके उसमें फिटकरी और सुहागा मिला कर तुलसी पत्र स्वरस की भावना दें अथवा चिरायते के क्वाथ की भावना दें और मटर प्रमाण गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1-1 गोली पानी के साथ देने से सभी प्रकार के ज्वर, विषम ज्वर आदि दूर होते हैं।

सन्निपातज प्रलाप पर

शुद्ध अफीम, केशर, प्रवाल भस्म और स्वर्ण सिन्दूर समान भाग लेकर पानी के साथ खरल करके मटर प्रमाण गोली बना लें

मात्रा — 1 गोली, अष्टावशिष्ट पानी के साथ देने से प्रलापक सन्निपात, जिसमें रोगी उठ- उठ कर भागने का यत्न करता और प्रलाप करता है, उसमें 1 घंटे में ही प्रभाव दिखा देती है। किन्तु यदि उपद्रव के शमन होने पर रोगी का शरीर ठण्डा हो जाय तो उस समय उसे चन्द्रोदय प्रभृति कोई गर्म दवा देनी चाहिए।

विषम ज्वर पर स्वदेशी मिक्श्चर

फुलाई हुई श्वेत पिटकरी और नौसादर 10-10 ग्राम, शुद्ध हरा कसीस 5 ग्राम तथा शुद्ध मल्ल (संखिया) 50 मिलीग्राम।

सभी द्रव्यों को पृथक् पृथक् महीन पीस कर 400 मिली लीटर पानी से भरी बोतल में डाल कर हिलावें, जिससे कि दवा उस पानी में घुल- मिल जाय। दो- दो दिन के अन्तर पर दवा को इसी प्रकार हिला कर रख देना चाहिये।

मात्रा — 3 चम्मच यह मिश्रण चौगुने पानी में मिला कर तीन खुराक करें। प्रत्येक खुराक 3-4 घंटे के अन्तर पर देनी चाहिये। इसे मलेरिया दूर हो जाता है। किन्तु यदि रोगी को कब्ज हो तो यह दवा नहीं देनी चाहिये।

इससे एकहिक, द्वयाहिक, तिजारी, चौथिया आदि सभी प्रकार के विषम ज्वर दूर होते हैं। यकृत, प्लीहाजन्य ज्वर में भी लाभ करती है। किन्तु अधिक दुर्बल, क्षीणकाय अथवा रक्तपित्त ग्रस्त रोगी को यह मिक्श्चर कदापि नहीं देना चाहिये

ज्वरघ्नी पिप्पलादिवटी

छोटी पीपल का चूर्ण और सत गिलोय 10-10 ग्राम तथा चन्द्रपुटी प्रवाल भस्म 5 ग्राम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लेकर तुलसीपत्र के स्वरस में 3 घंटे खरल करके 250-250 मिली ग्राम की गोलियाँ बना कर, छाया में सुखावें और शीशी में रखें।

मात्रा — 1 से 2 गोली तक शहद अथवा गुनगुने पानी के साथ दे सकते हैं। जाड़ा लग कर बुखार आने से पहिले देने से ज्वर रुकता है। अन्य ज्वरों में भी लाभकारी है

जीर्णज्वर नाशक सुखद योग

खूबकला डेढ़ ग्राम, काली मिर्च 7 नग, गिलोय 3 ग्राम, मिश्री 6 ग्राम तथा चौथाई लीटर पानी।

खूबकला और काली मिर्च को पृथक् पृथक् मिट्टी के कुल्हड़ों में, रात्रि में भिगोवें और प्रातःकाल खूबकला को ठीक प्रकार के साफ करें और काली मिर्चों को रगड़ कर उनके छिलके अलग करदें तथा काली मिर्च के साथ गिलोय को ठंडाई के समान घोट कर, उसमें मिश्री मिलावें। अब पृथक् रखी हुई खूबकला को खाकर, ऊपर से काली मि :- गिलोय के हिम को पीवें।

यह नियमित नित्यप्रति प्रातःकाल एक मास तक करना चाहिये। इससे जीर्णज्वर तथा यक्ष्मा भी मिट जाता है।

ज्वर में अन्य उपयोगी दवाएँ

- अकरकरा का पंचांग, कपड़- छन चूर्ण करके 20 ग्राम लें और उसमें फुलाई हुई श्वेत फिटकरी 10 ग्राम लेकर मिलावें तथा खरल करके शीशी में सुरक्षित रखें।

मात्रा — 250 से 700 मिलीग्राम तक शहद के साथ चटावें। इसके सेवन से ज्वर के साथ उत्पन्न श्वासवेग शीघ्र शान्त होता है। शनैः- शनैः श्वास अपनी सहज स्थिति में आ जाती है। इसके सेवन से हृदय पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता।

- मलेरिया ज्वर को दूर करने के लिए एक अपूर्व और सुलभ दवा बताते हैं— मकान आदि के कोनों में जो मकड़ी के जाले लगे रहते हैं, उनका रंग सफेद होता है। उस एक जाले को 4-5 ग्राम गुड़ के साथ मिला लें और उसकी तीन गोलियाँ बना लें। मलेरिया ज्वर के रोगी को एक- एक घंटा के अन्तर से 1-1 गोली दे देनी चाहिये। इन तीन गोलियों में ही मलेरिया मिट जाता है। किन्तु यह गोली गर्मी करती है, इसलिये पित्तज विषम ज्वर में अथवा गर्म मिजाज वाले रोगियों को इसे न दें। अधिक दुर्बल रोगी को भी यह गोली नहीं देनी चाहिये।
- बेल के पत्तों का स्वरस मधु मिला कर ज्वर के रोगी को सेवन करायें। इससे ज्वर का शमन हो जाता है। रोगी को कब्ज की शिकायत हो तो वह भी दूर हो जाती है। यदि हृदय की धड़कन बढ़ गई हो तो वह भी ठीक हो जाती है।
- गिलोय और पित्तपापड़ा समान भाग में, कुल 24 ग्राम लेकर अठगुने पानी में चतुर्थावशिष्ट क्वाथ करें और उसमें पीपल का चूर्ण 1 ग्राम मिला कर पिलावें। इससे ज्वर के साथ खाँसी भी दूर होती है। मन्दाग्नि में भी हितकर है।
- शुद्ध अफीम 12 ग्राम, शुद्ध हिंगुल 8 ग्राम, सुहागा फुलाया हुआ तथा जायफल 6-6 ग्राम लेकर महीन करें और भेड़ के दूध में खरल करके भूभल में पका लें और फिर उस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गोला में से औषधि निकाल कर खरल करते हुए मूँग के बराबर गोलियाँ बना लें और सुरक्षित रखें।

मात्रा — 1-1 गोली चाय के साथ देने से ज्वर में शीघ्र लाभ होता है। यदि रोगी को दस्त हो गये हों तो यह दवा मूँग के पानी के साथ देनी चाहिये। दुर्बलता में केसर मिश्रित दूध के साथ देने से बहुत लाभ करती है। इसके सेवन से ज्वर, खाँसी, वमन, दस्त, दुर्बलता आदि विकार नष्ट होते हैं।

सर्वज्वर पर षडानन रस

पीतल भस्म, कांस्य भस्म, ताम्र भस्म, शुद्ध हिंगुल, शुद्ध विष और पीपल का चूर्ण समान भाग लेकर गिलोय के स्वरस में 3 घंटे घोंट कर 1-1 रत्ती की गोलियाँ बनायें।

मात्रा — 1-1 गोली शहद के साथ देनी चाहिये।

इसके सेवन से वातपित्त ज्वर, विषमज्वर, तरुण ज्वर, जीर्णज्वर आदि सभी ज्वर नष्ट होते हैं। अग्निमान्द्य में भी यह अत्यन्त हितकर है। इसके सेवन काल में मूँग का पानी, तक्र, भात और नारियल का जल सुपथ्य हैं।

ज्वर में धूप देने का विधान

आयुर्वेद में ज्वर रोग को दूर करने के लिए धूप (धूनी) देने का भी निर्देश दिया है वस्तुतः धूनी देने से मक्खी, मच्छर, कीड़े, मकोड़े आदि प्रभावित होते हैं और भाग जाते हैं। इसलिये धूनी के द्वारा वातावरण शुद्ध करना लाभकारी ही है।

अष्टांग धूप — गूगल, नीम के पत्ते, कूट, हरड़, जौ, सरसों और घी कूट कर बनाये हुए धूप की धूनी देने से सभी प्रकार के ज्वर नष्ट होते हैं। क्योंकि धूप के प्रभाव से कीटाणु नष्ट हो जाते हैं।

अपराजिता धूप — गूगल, गन्धतृण, वच, राल, नीम के पत्ते, आक के पत्ते, अगर और देवदारू की धूनी देनी चाहिये। इससे भी ज्वर के विषाणु नष्ट होते हैं और रोगी शीघ्र ही रोगमुक्त हो जाता है

माहेश्वर धूप — हिंगुल, देवदारू, सरस का गोंद, घी, गन्धतृण, बिल्वपत्र, कुटकी, सरसों, नीम के पत्ते, मोर पंख, सर्प की कैंचुली, बिल्ली का मल, सींग, मैनफल, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, वच, विनौले, धान की भूसी और हाथी दाँत कूट कर और उसमें बकरी के मूत्र की भावना देकर मिट्टी के पात्र में रखें।

इसकी धूनी देने से, सर्प भी गन्ध मिलते ही पलायन कर जाता है। एकाहिक द्वयाहिक,त्रयाहिक, चातुर्थिक आदि सभी प्रकार के विषम ज्वर दूर होते हैं। क्योंकि यह धूप रोग उत्पन्न करने वाले कीटाणुओं को नष्ट करती तथा दूषित वायु का भी शोधन कर देती है।

12. मन्थर ज्वर (मोतीझरा) की चिकित्सा

मोतीझरा वस्तुतः मन्थर का ही विकृत रूप है। दोषों के अधिक बिगड़ने से जब शरीर विक्षोभ को प्राप्त होता है, तब इसका रूप प्रकट होता है। इसमें श्वेत दाने निकल आते हैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

और छोटे- छोटे मोतियों के समान मुख के निचले भाग से नीचे तक दोनों ओर दिखाई देते हैं, इसीलिये इसका नाम मोतीझरा पड़ गया है।

चिकित्सकों ने इस रोग को अनेक नाम दिये हैं, यथा —मोतीझरा, पानीझरा, आंत्रिक- ज्वर, मन्थर ज्वर, तान्द्रिक सन्निपात आदि। ऐलोपैथिक चिकित्सक इसे टाइफाइड कहते हैं।

किन्तु मोतीझरा और पानीझरा में कुछ अन्तर है। मोतीझरा के दाने बहुत छोटे- छोटे होते हैं, जबकि पानीझरा में शरीर पर, विशेषकर हाथ- पाँवों पर बड़े छाले से प्रतीत होते हैं, जिनसे पानी निकलता है। यद्यपि अन्य लक्षणों की दृष्टि से मोतीझरा और पानीझरा में समानता रहती है।

मोती ज्वर तथा श्वसनक ज्वर

मोतीझरा (टाइफाइड) और श्वसनक ज्वर (निमोनियाँ) यद्यपि एकदम भिन्न रोग हैं। किन्तु मोतीझरा में जब कुछ विशेष उपद्रव हो जाता है, तब उसके साथ निमोनियाँ भी मिल जाता है। ऐसा होने पर चिकित्सा क्रम में अधिक सावधानी रखनी होती है। क्योंकि एक ओर यदि उसके साथ निमोनियाँ भी हो जाता है तो उसके निवारणार्थ भी उचित उपाय सोचने होते हैं।

और विशेष कठिनाई तब उपस्थित होती है, जब मोतीझरा के रोगी को दस्त लग जाते हैं। उन दस्तों को भी शीघ्र काबू में करना आवश्यक हो जाता है, क्योंकि रोगी धीरे- धीरे दुर्बल होता जाता है, इसलिये उस अवस्था में अतीसार का होना, उसके लिये अधिक कष्टदायी प्रतीत होता है।

इस रोग में जब रोगी तन्द्रावस्था में पड़ जाता है तब प्रलाप करने लगता है। उसकी चेष्टा बदल जाती है, चेतनावस्था में बहुत खिन्नता और पीड़ा का अनुभव करता है। खाँसी बढ़ जाती है, किसी- किसी को श्वास रोग जैसे लक्षण प्रतीत होने लगते हैं। कभी ज्वर में तीव्रता तो कभी शीतांग सन्निपात जैसी स्थिति हो जाती है।

- इन सब लक्षणों को उपद्रव मानते हुए, उनके शमन का उपाय करना आवश्यक होता है। यदि समय पर समुचित चिकित्सा नहीं मिल पाती तो रोगी का जीवन खतरे में पड़ सकता है। इसलिये परिचारकों को उसकी प्रत्येक स्थिति पर दृष्टि रखनी होती है और कोई विशेष बात होती तो चिकित्सक को तत्काल अवगत कराना होता है।

मन्थर ज्वर की समयावधि

सामान्यतः इसकी समयावधि तीन सप्ताह की होती है। समयावधि के आरम्भ में इसे म्यादी बुखार कहते हैं। आवश्यक नहीं कि म्यादी बुखार मोतीझरा के रूप में परिवर्तित ही हो जाय। यदि ज्वरारम्भ में ही सावधानी रखी जाय तो ज्वर का शमन एक सप्ताह में ही हो सकता है। उस स्थिति में दाने उत्पन्न नहीं होते।

उस एक सप्ताह की अवधि वाले म्यादी बुखार को ऐलोपैथ 'सेविन डेज फीवर' कहते हैं। औषधिक्रम सामान्य रखा जाता है, जिससे कि ज्वर का निवारण सहज रूप से हो सके।

मोतीझरा प्रकट होने पर, सामान्य रूप से तीन सप्ताह में ठीक हो जाना चाहिये। किन्तु

CC-0. In Public Domain. Digitized by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

षों की प्रबलता और उनके विकारयुक्त बने रहने की स्थिति में समयावधि बढ़ जाती है ोर कभी- कभी चालीस- बयालीस दिन तक का समय ले लेती है।

मोतीझरा के दानों का दब जाना

कुछ विकृतियों के कारण मोतीझरा के दाने निकल कर भी दब जाते हैं, तब उसका अर्थ ोग का शमन होना नहीं माना जाता, वरन दबे हुए दाने पुनः कुछ समय में ही दिखाई देने लगते हैं और अवस्था में रोग के ठीक होने की समयावधि और अधिक बढ़ जाती है।

उस स्थिति में रोगी अधिक बेचैन होता है। शारीरिक रूप से ही नहीं, मानसिक रूप से भी उसकी वेदना बढ़ जाती है। किन्तु, विवशता यह रहती है कि जब तक रोग पूर्ण रूप से निर्मूल नहीं हो जाता, तब तक उसकी पथ्य- व्यवस्था पर नियन्त्रण रखना होता है।

आधुनिक चिकित्सक (ऐलोपैथ) अब जिन दवाओं का प्रयोग करते हैं, उनके प्रभाव से दाने प्रायः उत्पन्न नहीं होते और रोग प्रायः एक सप्ताह में ठीक हुआ दिखाई देता है। प्रत्यक्ष में, उस चिकित्सा से वह कष्टकर स्थिति उत्पन्न नहीं होती जो देशी चिकित्सा में हो जाती है।

किन्तु ऐलोपैथी म्यादी बुखार पर तो उस समय काबू पाने में सफल प्रतीत होती है, पर मन्थर ज्वर के जीवाणुओं का उन्मूलन नहीं हो पाता। इस लिये वे कुछ समयावधि के अन्तर से भीतर ही भीतर चाहे जब विकार उत्पन्न करते रहते हैं और रोगी को ज्वर बार- बार सताता है।

हम नहीं कहते कि आधुनिक चिकित्सक मन्थर ज्वर को रोकने में सफल नहीं हुए, वरन् हमारी यही मान्यता हैं कि आयुर्वेदिक चिकित्सा मन्थर ज्वर तथा अन्यान्य रोगों में भी स्थायी लाभ पहुँचाती है। रोगी धैर्यपूर्वक चिकित्सा कराये और पूर्ण स्वास्थ्य- लाभ कर ले तो उसे पुनः उस रोग का शिकार होने की नौबत नहीं आती।

अब हम मोतीझरा रोग से सम्बन्धित समयक्रम से अवस्था भेद की चर्चा करते हैं।

प्रथम सप्ताह एवं उससे पूर्व

सामान्यतः इस रोग का प्रादुर्भाव मिथ्या आहार- विहार से ही होता है, इसलिये चाहे जब हो सकता है। किन्तु ग्रीष्म और वर्षा ऋतुओं में अधिक देखा जाता है।

आरम्भ में सामान्य ज्वर के लक्षण प्रकट होते हैं। यदि उस समय उचित उपचार के साथ अपथ्य से बचाव रहता है तो ज्वर अपनी नूतन अवस्था में ही शान्त हो जाता है। किन्तु पथ्यादि में असावधानी अथवा औषधोपचार में लापरवाही करने के कारण ज्वर शान्त नहीं होता और उसमें वातपित्त युक्त आंत्रज्वर जैसे लक्षण उभरने लगते हैं।

मोतीज्वर की उत्पत्ति में मनुष्य की कोई आयु- सीमा नहीं है। वह आबाल वृद्ध एवं नारी, सभी को हो सकता है। बालकों की अपेक्षा, वयस्क स्त्री- पुरुष इससे पीड़ित होते हैं, तो उन्हें मानसिक कष्ट भी अधिक होता है।

रोगारम्भ के प्रथम दिन से ही ज्वर अपनी जड़ जमाने लगता है। किसी को आरम्भ में ज्वर मन्द होता है और धीरे- धीरे बढ़ता है, किसी को उसके वेग में तीव्रता प्रतीत होती है। किसी को ज्वर आकर उतरता- चढ़ता है। किन्तु उन्हीं स्थितियों के कारण अनुभवी चिकित्सकों को मोतीज्वर होने का अनुमान हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्रथम सप्ताह में ज्वर का उतार- चढ़ाव, आरम्भ में रह सकता है, किन्तु उसमें सामान्य (नार्मल) अवस्था नहीं आती। वरन क्रमशः तापमान में वृद्धि होने लगती है

रोगी का पाचन तन्त्र भी गड़बड़ाया- सा प्रतीत होता है। कब्ज के कारण पेट भारी रहता है, अरुचि बढ़ती है तो भूख लगने का प्रश्न ही नहीं उठता। ज्वर के साथ बेचैनी रहती है, नींद नहीं आती। ज्वर तेज होता है तो रोगी व्यर्थ प्रलाप करने लगता है। तापमान सामान्य ज्वर की अपेक्षा अधिक रहता है। 99 डिग्री से 104 पर पहुँच सकता है।

दूसरा सप्ताह

इस सप्ताह के आरम्भ तक ज्वर की तेजी बढ़ती है और फिर वह हर समय एक जैसे तापमान में रहता है। उस स्थिति में अनिद्रा, अरुचि, बेचैनी, छटपटाहट, हाथ- पाँव और सिर में दर्द तथा तन्द्रा जैसी स्थिति भी उत्पन्न हो जाती है। रोगी प्रलाप भी अधिक करने लगता है।

उस स्थिति में जो अन्य उपसर्ग, उत्पन्न होते हैं तो उनमें अतिसार, श्वास, खाँसी, वमन, आन्त्रक्षय, कफ में रक्तहोना आदि हैं। वस्तुतः यह लक्षण कठिनाई उपस्थित करने वाले होते हैं। यदि उनका उपाय समय पर नहीं होता तो दुस्साध्यता आ सकती है।

इसी सप्ताह मुख के दाँये- बाँये से विशेषकर कण्ठ से छोटे- छोटे श्वेत दानों का निकलना आरम्भ होता है, जो धीरे- धीरे करके उदर के इधर- उधर होते हुए कटि से नीचे की ओर बढ़ते हैं। वस्तुतः उस स्थिति में उन दानों का ठीक प्रकार से निकल आना ही अधिक हितकर समझा जाता है। यदि दाने ठीक से नहीं निकलते और किसी कारणवश दबने लगते हैं तो रोग की समयावधि भी निर्धारित से अधिक हो जाती है।

किन्तु दानों का निकलना ज्वरावेग की तीव्रता पर निर्भर है। सामान्य रोग में दानों के दर्शन प्रायः नहीं होते, इसलिये अनुभवी चिकित्सक रोगी को ठण्डी दवाएँ नहीं देते, वरन गर्म दवाओं के द्वारा तापमान की तीव्रता नियन्त्रण में रखते हुए, दानों को सहज रूप से पूर्णतः निकालने का प्रयास करते हैं।

किन्तु इस अवधि में यह भी ध्यान रखना होता है कि जो दवाएँ दी जायें, उनका दुष्प्रभाव मस्तिष्क और हृदय पर न पड़े। इनको शक्ति प्राप्त होती रहे, इसके लिये मुक्तापुष्टि रस, पुष्टि देने वाली औषध व्यवस्था आवश्यक होती है।

तीसरा सप्ताह

दो सप्ताह व्यतीत होने तक मोतीझरा के दाने नाभि तक पहुँच जाते हैं और फिर नाभि के नीचे पहुँच जाते हैं। ऊपरी अंगों के दाने मुरझाने लगते हैं और उनमें भुसी सी उड़ने लगती है। इस प्रकार दाने नाभि के निचले भाग में छत्ता की तरह प्रतीत होते हैं, उनमें मुरझाने जैसे लक्षण स्पष्ट दिखाई देते हैं। उस स्थिति में ज्वर का तापमान घटता है और पसीना निकलता है। वह समय अधिक सावधानी का होता है। ज्वर एकदम न उतरे, अन्यथा शीतांग सन्निपात के उपद्रव से खतरनाक स्थिति आ सकती है।

हमने यहाँ, यह सब बहुत आवश्यक बातें लिखी हैं। इसके साथ ही, यह और कहना उचित होगा कि रोगी के पथ्य- अपथ्य का भी पूरा ध्यान रखना चाहिये। अथवा समय से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पूर्व पथ्य दिया जाना या उसमें अत्यन्त स्वल्प तथा हल्का आहार न दिया जाना, हानि का एक मुख्य कारण हो सकता है।

लंघनादि की व्यवस्था का वर्तमान परिपेक्ष्य में निर्णय

पुराने, अनुभवी चिकित्सक मोतीझरा के रोगी को लंघन कराते थे। किन्तु उसके निर्णय में कभी- कभी बड़ी चूक हो जाती थी और उसके फलस्वरूप बहुत हानि हो जाती थी। किन्तु वर्तमान परिपेक्ष्य में हम यही कहना उचित समझते हैं कि रोगी को दूध अवश्य दिया जाय। ऐसी व्यवस्था की जाय कि उसे फल, मुनक्का, शहद, कुटू के फूला आदि पदार्थ, रोग और रोगी की स्थिति के अनुसार मिलते रहें। साथ ही उसे बिना ओंटाया पानी न दिया जाय, वरन् पानी को ओंटा कर ठण्डा करें और उचित समझें तो ग्लूकोज मिश्रित करके भी कुछ बार पीने को दें।

अब हम मन्थर ज्वर में उपचारार्थ औषधियों पर प्रकाश डालते हैं। वस्तुतः औषधि- निर्धारण रोग और रोगी की स्थिति, आयु आदि पर अधिक निर्भर करती है।

मोतीझरा में औषधोपचार

ज्यों ही यह पता चले कि ज्वर मोतीझरा का है, त्योंही उसके लक्षणों पर ध्यान देना चाहिये। आरम्भ में ऐसे औषधि- द्रव्य दिये जाने चाहिये, जो ज्वर की अवस्था को असाम्य,

उपद्रवयुक्त न होने दें, वरन शरीर को हल्का रखने वाली तथा हितकर औषधियों का सेवन करायें। कुछ प्रयोग प्रस्तुत हैं —

- सितोपलादि चूर्ण 1 ग्राम, शहद के साथ प्रातः- सायं दें। साथ ही सतगिलोय भी लगभग 100 मिलीग्राम मिला दें।
- ज्वर के साथ यदि कुछ खाँसी भी प्रतीत हो तो सितोपलादि चूर्ण का सेवन वासा पानक के साथ करावें।
- यदि रोगी को प्रतिश्याय हो तो सितोपलादि चूर्ण शर्बत बनफ्शा के साथ दें।

मोतीज्वर में उपयोगी सितोपलादि चूर्ण

मिश्री 16 भाग, वंशलोचन 8 भाग, छोटी पीपल 4 भाग, छोटी इलायची 2 भाग, दालचीनी 1 भाग। इन्हें कूट- कपड़छन करके रखें, यही सितोपलादि नामक प्रसिद्ध चूर्ण है।

यह चूर्ण सब प्रकार के ज्वर, खाँसी, पाण्डु, इन्फ्लूएंजा, निमोनिया आदि में निर्विघ्न रूप से दिया जा सकता है। मन्द ज्वर में या जीर्णज्वर में धीरे- धीरे लाभ पहुँचाता हुआ, रोगी को स्वस्थ होने में सहायता देता है।

मोती ज्वर के प्रथम सप्ताह में षडंगपानीय क्वाथ भी लाभप्रद रहता है। उसके प्रभाव से कोई अन्य उपद्रव नहीं हो पाता। उसका नुस्खा निम्न प्रकार है —

मोतीज्वर में हितकर षडंगपानीय क्वाथ

नागरमोथा, पित्तपापड़ा, खस, लाल चन्दन, सोंठ, सुगन्धबाला 2-2 ग्राम लेकर जौकुट कर लें और 1 लीटर पानी के सात अर्द्धावशिष्ट (आधा जल रहे) क्वाथ करें। यह क्वाथ ठण्डा करके रख लें और रोगी को थोड़ा- थोड़ा 3-4 बार पिला दें।

यदि रोगी को प्यास अधिक हो तो उसे निम्न क्वाथ देना अधिक लाभकर होता है —

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गिलोय, लालचन्दन, पद्माख, नीम की छाल और धनियाँ समान भाग लेकर (सभी मिला कर 2 तोले) अठगुने पानी में चतुर्थावशिष्ट अथवा अर्द्धावशिष्ट, क्वाथ रोगी को पिलावें। यह क्वाथ प्यास, दाह, वमन आदि का शमन करता है ।

यदि रोगी ज्वरावेग की अधिकता में प्रलाप करे अथवा उसे वातज रक्तातिसार या रक्त पित्त के लक्षण हों तो उसे यह औषधि दी जा सकती है —

फिटकरी फुलाई हुई, मुक्तायुक्त कामदुधा तथा सर्पगन्धा का चूर्ण, प्रत्येक 1-1 ग्राम, पीपल वृक्ष की शोधित लाख 2 ग्राम लेकर, सबको एक साथ घोट कर महीन चूर्ण के समान करके आठ पुड़ियाँ बना लें।

मात्रा — 1-1 पुड़िया 3-3 घण्टे के अन्तर से शहद के साथ चटावें। इससे श्वनक कष्ट में भी लाभ होता है।

रोगी अधिक तीव्र ज्वर से पीड़ित हो और उस स्थिति में प्रलाप भी अधिक करता हो या तन्द्रा में हो तो उसे निम्न औषधि अधिक लाभदायक रहती है —

प्रवाल पंचामृत, सत गिलोय और सर्पगन्धा 1-1 ग्राम ठीक प्रकार से खरल करें और उसकी 10 पुड़ियाँ बना कर रखें।

मात्रा — 1-1 पुड़िया शहद के साथ प्रत्येक 4 घंटे के अन्तर से देनी चाहिये। इससे ज्वर का वेग नियन्त्रण में रहेगा और तन्द्रावस्था में कमी आयेगी।

यदि रोगी को खूनी दस्त (रक्तातिसार) अथवा रक्तवमन होने लगे तो उस स्थिति में अधिक सावधानी की आवश्यकता होती है। उस समय उसे निम्न औषधि देनी चाहिये —

मुक्ताभस्म और शंखभस्म 1-1 ग्राम, सत गिलोय 2 ग्राम लेकर खरल करें और आठ पुड़ियाँ बना कर रखें।

मात्रा — 1-1 पुड़िया 2 या 3 घंटे के अन्तर से 3 बार, वासापानक अथवा वासावलेह में मिला कर सेवन करावें। इससे रक्त जाने में कमी होगी।

यदि मोतीझरा के रोगी को कब्ज की अधिकता हो तो उस समय निम्न औषधि लाभदायक हो सकती है —

मुक्ताभस्म और श्रृंगभस्म 1-1 ग्राम लेकर खरल करें और 8 पुड़ियाँ बना कर रखें।

मात्रा — 1-1 पुड़िया खूबकला के शर्बत के साथ देने से लाभ हो जाता है।

किन्तु, यह भी ध्यान रखना चाहिये कि मोतीझरा के रोगी को अधिक दस्त न होने पायें। सुखपूर्वक एकाध दस्त हो, यही व्यवस्था रहे। किन्तु उसे जहाँ तक हो सके, विरेचन नहीं देना चाहिये।

संजीवनीवटी का प्रयोग, इस रोग की सभी अवस्थाओं में किया जा सकता है। कई बार यह मिश्रण, इस रोग में अधिक लाभकर सिद्ध हुआ है —

संजीवनी वटी 3 ग्राम सितोपलादि 3 ग्राम, सतगिलोय 1 ग्राम और प्रवालपिष्टी 1 ग्राम खरल करके 3 पुड़ियाँ बनावें।

मात्रा — 1-1 पुड़िया 4-4 घंटे के अन्तर से, शहद के साथ देते रहें। इससे रोगी स्वाभाविक रूप से रहता है। किसी प्रकार के उपद्रव की आशंका नहीं रहती।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बायविडंग, सोंठ, छोटी पीपल, हरड़, बहेड़ा, आमला, वच, गिलोय, शुद्ध भल्लातक और शुद्ध सींगिया विष, सभी समान भाग लेकर गोमूत्र के साथ खरल करें और चिरमिठी के बराबर की गोलियाँ बना लें। यही आयुर्वेद की प्रसिद्ध संजीवनी वटी है।

प्रथम सप्ताह या बाद में भी रोगी को दस्त लग जायें तो उसे सिद्ध प्राणेश्वर रस, गगन सुन्दर रस अथवा पंचामृत पर्पटी आदि में से कोई औषधि देनी चाहिये। पंचामृत पर्पटी का योग अन्यत्र लिख चुके हैं, सिद्धप्राणेश्वर और गगन सुन्दर रस के नुस्खे यहाँ लिखते हैं।

ज्वरातिसार शामक सिद्ध प्राणेश्वर रस

शुद्ध गन्धक, शुद्ध पारद और अभ्रक 4-4 मासे, सज्जीक्षार, सुहागा फुलाया हुआ, यवक्षार, पाँचों नमक, त्रिफला, त्रिकुट, इन्द्रयव, श्वेत जीरा, काला जीरा, चित्रक, अजवाइन, हींग, बायविडंग और सोया 1-1 माशा। खरल करके 2-2 रत्ती की गोलियाँ बना कर रखें।

मात्रा — प्रातः- सायं 1-1 गोली, रोगी के पीने के पानी के साथ दें। वरन वह पानी उस समय पर्याप्त मात्रा में (12 तोले) पीने का निर्देश है। ज्वरातिसार, सर्वातिसार, ज्वर, रक्तविकार, वात- व्याधि, परिणामशूल, ग्रहणी रोग आदि सभी में लाभदायक है। (भै.र.)

ज्वरातिसारादि में गगनसुन्दर रस

फुलाया हुआ सुहागा, शुद्ध हिंगुल, शुद्ध गन्धक और अभ्रक भस्म समान भाग लेकर दुग्धिका (दूधिया) के स्वरस में 3 दिन तक निरन्तर घोट कर 2-2 रत्ती की गोलियाँ बनायें।

मात्रा — 1-1 गोली, रोगी के पीने वाले पानी के साथ, आवश्यक अन्तर से दें। यह दवा विविध प्रकार के ज्वरातिसार तथा रक्तातिसार को दूर करती है। अग्निवर्धक और आमशूलनाशक भी है। (भै.र.)

प्रथम सप्ताह के अन्त तक मोतीझरा के दाने स्वतः निकल आते हैं ' यदि नहीं निकलते तो बेचैनी, प्रलाप, तन्द्रा आदि उपद्रव बढ़ जाते हैं। उस स्थिति में चिकित्सक को दाने निकालने के लिए उचित औषधि व्यवस्था करनी चाहिये। यदि रोगी को खूबकला का काढ़ा पिलाया जाय तो अभीष्ट सिद्धि सम्भव है। अथवा उसे मुनक्का के साथ मुक्तापिष्टी देनी चाहिए। अभ्रक भस्म भी इसमें सहायक है। दिन में 2-3 बार इनका देना पर्याप्त है।

ज्वर की अवस्था विकार- रहित रूप से चलती रहे और रोग अपने पचाव की ओर अग्रसर होता रहे, उसके लिये सर्वज्वरहर लौह का प्रयोग अधिक हितकर रहता है। उसका नुस्खा भैषज्य रत्नावली में इस प्रकार दिया है—

सर्वज्वर- हर लौह

लौह भस्म 8 तोले, शुद्ध पारद और शुद्ध गन्धक 2-2 तोले, त्रिफला, त्रिकटु, वायविडंग, नागरमोथा, गज- पीपल, पीपलामूल, हल्दी, दारुहल्दी और चित्रक 1-1 तोला लेकर अदरक स्वरस में खरल करें और 2-2 रत्ती की गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1-1 गोली अदरक के स्वरस से देनी चाहिये। इससे सब प्रकार के विषम ज्वर, भूतज्वर, प्लीहा आदि रोग दूर होते हैं। वस्तुतः यह लौह सभी प्रकार के ज्वरों को उसी प्रकार नष्ट करता है, जैसे कि सूर्य अन्धकार को। (भै.र.)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमने मन्थर ज्वर में निम्नलिखित योग का उपयोग अनेक बार किया है —

सर्वज्वरहर लौह 1 वटी, मृत संजीवनी 2 वटी, सत गिलोय 1 ग्राम, सितोपलादि चूर्ण 4 ग्राम, खरल में ठीक प्रकार से एकजीव करके 4 पुड़ियाँ बना कर शहद के साथ 4-4 घंटे के अन्तर से देते रहें। दिन भर में 3-4 पुड़ियाँ तक देना पर्याप्त होता है। अनेक रोगियों पर परीक्षित है।

इसके साथ ही रोगी को लक्षणानुसार कुटजारिष्ट, द्राक्षारिष्ट, बबूलारिष्ट आदि का भी सेवन कराना लाभकर रहता है। शरीर में शक्ति बनाये रखने के लिये निम्न औषधि की भी आवश्यकता रहती है —

लौहभस्म, प्रवाल भस्म और अभ्रक भस्म समान भाग लेकर खरल में मिला लें।

मात्रा — 3-3 रत्ती (यह भस्म मिश्रण) शहद के साथ दिन में दो बार देना पर्याप्त है।

खाँसी आदि की अधिकता होने पर खाँसी रोकने की अपेक्षा उस कारण का निवारण करने की चेष्टा करें, जिससे कि उसकी वृद्धि हुई है। यह ध्यान रखें कि मोतीझरा में खाँसी भी उसका स्वाभाविक लक्षण है, जो कि मोतीझरा के दाने निकलने में सहायक है। फिर भी रोगी को सान्त्वना की दृष्टि से निम्न मिश्रण दे देना चाहिये —

सितोपलादि चूर्ण 2 ग्राम, प्रवाल भस्म और कौड़ी भस्म 1-1 ग्राम, मिला कर रखें। इसमें से 2-2 रत्ती की मात्रा शहद के साथ प्रातः- सायं सेवन कराते रहें।

दानों को स्वाभाविक रूप से निकालने और ज्वर को सरलता पूर्वक पचाकर स्वस्थ बनाने की ओर अग्रसर करने वाली इस औषधि का सेवन दूसरे और तीसरे सप्ताह में अधिक हितकर रहता है

शंखभस्म 10 ग्राम, दालचीनी 5 ग्राम, जायफल 4 ग्राम, लौंग 3 ग्राम, छोटी इलायची के बीज और ब्रह्मी बूटी 2-2 ग्राम; मिश्री 25 ग्राम लेकर शंखभस्म के अतिरिक्त सभी द्रव्यों को कूट- छान लें और उसमें शंखभस्म मिला कर रखें।

मात्रा — प्रातः- सायं 1-1 ग्राम प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल देनी चाहिये। इससे ज्वर अपनी सहज अवस्था में रहता हुआ धीरे- धीरे चला जाता है।

ज्वर की अन्तिम अवस्था में पंचभद्र क्वाथ देना चाहिये। गिलोय, नागरमोथा, चिरायता, पित्तपापड़ा और नेत्रबाला, समान भाग का चूर्ण बना लें। इसमें से 1 तोला जल को 16 गुने पानी से क्वाथ करें, चतुर्थांश शेष रहने पर प्रातः सायं 2 बार में पिलावें।

पंचतिक्तादि क्वाथ — गिलोय, छोटी कटेरी, चिरायता, सोंठ और पुष्करमूल का काढ़ा उक्त विधि से बनाकर दें।

इस प्रकार विद्वान चिकित्सक के निर्देशानुसार चलता हुआ रोगी शीघ्र ही स्वास्थ्य- लाभ की ओर अग्रसर होता है। ज्वर निवृत्ति होने पर भी पथ्य का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिये, जिससे कि रोग समूल मिट सके।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

13. श्वसनक ज्वर (निमोनिया)

निमोनिया कारण और लक्षण

विद्वानों ने इसे अनेक नाम दिये हैं — फुफ्फुस प्रदाह, फुफ्फुस सन्निपात, कार्कोटक, श्वसनक ज्वर आदि, अंग्रेजी नाम निमोनिया या न्यूमोनिया (PNEUMONIA) है और यही आम भाषा में प्रसिद्ध है। बालकों में होने वाला यही रोग डब्बा अथवा उत्फुल्लिका के नाम से जाना जाता है।

यह एक कठिन संक्रामक रोग है, जिसमें ज्वर का वेग अधिक तीव्र हो जाता है। उस समय खाँसी आदि के साथ पसलियों में दर्द होता है, श्वास में रुकावट सी प्रतीत होती है, मुख पर लालिमा छा जाती है तथा शरीर बलहीन जैसा हो जाता है। कभी- कभी खाँसी के कफ के साथ रक्त भी आ जाता है।

इसकी उत्पत्ति में एक कीटाणु विशेष को कारण मानते हैं। वह फुफ्फुस में रह कर बढ़ते रहते हैं और रोगी की किसी कमी के कारण रोगोत्पत्ति में सहायक होते हैं। ज्वरावेग कम होने को होता है तब जोर का पसीना छूटता है और शीतांगता आने लगती है। उस समय बहुत सावधानी की आवश्यकता होती है। यदि तत्काल उपाय नहीं हो पाये तो प्राणों का खतरा हो सकता है।

इस रोग की परीक्षा रोगी की नाड़ी, आकृति, श्वासक्रिया तथा मल- मूत्रादि की जाँच के द्वारा भी की जाती है। थर्मामीटर तो ज्वर का तापमान जानने के लिए प्रयुक्त होता ही है। किन्तु निमोनिया की पहिचान का एक साधन स्टेथिस्कोप नामक यन्त्र भी है, जिसके द्वारा फुफ्फुस में होने वाले ध्वनि - परिवर्तनों का पता लगाया जाता है। जैसे कि उसमें सूँ- सूँ जैसी ध्वनि सुनाई दे तो वह फुफ्फुस के कफ- लिप्त रहने की सूचक है। यदि श्वास- गति की मन्द ध्वनि हो तो वह वहाँ विजातीय द्रव्यों की अधिकता का आभास देती है। लोहार की धोंकनी जैसे शब्द से कफ के शुष्क होने का अनुमान लगाया जाता है। इसी प्रकार उस यन्त्र के माध्यम से ध्वनि बोध के द्वारा रोग- भेद के अनुमान में सुविधा रहती है।

इस रोग को चिकित्सकीय सुविधा की दृष्टि से तीन अवस्थाओं में बाँट सकते हैं। प्रारम्भिक अवस्था प्रायः तीन दिन मानकर दूसरी अवस्था तीन से सात दिन तक और तीसरी अवस्था सात दिन से आगे अधिक दिन तक की हो सकती है। कुछ चिकित्सकों के मत में वह तीन सप्ताह तक रह सकती है। किन्तु अवस्था का समय निर्धारण रोगी की आयु और शक्तितथा रोग की मन्दता और तीव्रता पर निर्भर करती है।

निमोनिया की चिकित्सा

फेफड़े को दोष- रहित करने के लिए उपनाह लेप उपयोगी है। केमिस्टों की दुकान से एप्टीफ्लेमिन या ऐसे ही नामों से मिल सकता है। सभी चिकित्सक इसे उपयोगी मानते हैं। उसके स्थान पर, विकल्प रूप में, एक मोटे वस्त्र पर अलसी के आटे का गर्म लेप बाँध देते हैं, जो कि प्रत्येक तीन घंटे के अन्तर पर बदलना आवश्यक होता है।

फुफ्फुस को सहज अवस्था में रखने तथा शक्ति प्रदान करने के उद्देश्य से आरम्भ में ही कोई उचित औषधि सेवन कराई जा सकती है। यथा—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by Sarayu Trust Foundation

स्वर्ण भूपति रस और मृग शृंग भस्म 250-250 मिलीग्राम लें 1 ग्राम सितोपलादि चूर्ण मिला कर, दो पुड़ियाँ बना लें। 1-1 पुड़िया प्रातः- सायं शहद के साथ देनी चाहिये।

सुवर्णभूपति रस किसी अच्छी पार्मेसी का बना हुआ बाजार से उपलब्ध हो सकता है। किन्तु चिकित्सक स्वयं निर्माण कर सकें तो उसके प्रति अधिक आश्वस्त रह सकते हैं। भैषज्य रत्नावली के अनुसार इसका योग निम्न प्रकार है —

निमोनिया में स्वर्णभूपति रस

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, अभ्रक भस्म, लौह भस्म, कान्त लौह भस्म, सुवर्ण भस्म, रौप्य भस्म और शुद्ध विष 1-1 भाग ताम्र भस्म 3 भाग लेकर, पारद गन्धक की कज्जली करके, उसमें 1-1 द्रव्य मिला कर खरल करते जायें। इस प्रकार सबकी कज्जली करके एक दिन हंसराज के रस में खरल करके तथा पुनः कज्जलीवत बना कर 6-7 कपड़मिट्टी की हुई आतशी शीशी में रखकर, बालुका यन्त्र द्वारा 1 दिन पकानें तथा स्वाँग शीतल होने पर निकाल कर सुरक्षित रखें।

मात्रा — 4 रत्ती तक पिप्पली और अदरक से स्वरस के साथ देनी चाहिये। अथवा रोगानुसार अनुपान के साथ दें। इसके सेवन से त्रिदोषजन्य क्षय और 13 प्रकार के सन्निपात नष्ट होते हैं। आमवात, कटिवात, श्रृंखलावात, ऊरुस्तम्भ, पंगुवात, कम्पवात, मन्दाग्नि, तथा सब प्रकार के शूल, गुल्म, उदावर्त, जीर्ण ग्रहणी, प्रमेह, पथरी, विबन्ध, कुष्ठ आदि सब रोगों में लाभकारी है। ज्वर सभी प्रकार के तथा अजीर्ण आदि में भी इससे पर्याप्त हित- साधन होता है। अथवा रोगी को प्रथमावस्था में ही निम्न मिश्रण देना आरम्भ करें। इससे फुफ्फुस सहज एवं स्वस्थ बना रहता है :—

बृहद कस्तूरी भैरव रस 3 रत्ती और फुलाई हुई फिटकरी 6 रत्ती लेकर खरल करें और इसकी 3 पुड़ियाँ बना लें।

मात्रा — 1-1 पुड़िया प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल दें। चार घंटे से कम समय में पुड़िया प्राय नहीं दें। अनुपान में शहद और अदरक का स्वरस अथवा पान का स्वरस देना चाहिये। वृहत्कस्तूरी- भैरव बनाने की विधि यहाँ लिखी जाती है —

सर्वज्वरघ्न वृहत्कस्तूरी भैरव रस

कस्तूरी, कर्पूर, ताम्र भस्म, धाय के पुष्प, कौंच के बीज, रौप्य भस्म, सुवर्ण भस्म, मुक्ताभस्म, प्रवाल भस्म, लौह भस्म, पाठा, बायविडंग, नागरमोथा, सोंठ, सुगन्धबाला, शुद्ध हरताल, अभ्रक भस्म और आमला, सभी समान भाग लेकर काष्ठौषधियों का कपड़छन चूर्ण करें और तब उसमें सभी भस्मादि मिला कर आक की पत्तियों के स्वरस में खरल करते हुए 1-1 रत्ती प्रमाण गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1-1 गोली अदरक के स्वरस के साथ सेवन करने से सब प्रकार के ज्वर नष्ट हो जाते हैं। आमातिसार, ज्वरातिसार तथा ग्रहणी युक्त अतिसार में विल्वफल चूर्ण, जीरा और मधु के साथ सेवन कराने से लाभ होता है। यह रस मन्दाग्नि, कास, प्रमेह, हलीमक आदि को भी नष्ट करता है।

फुफ्फुसों में कफ जमने की स्थिति में, उसे तरल करके निकालने का उपाय करना होता है। उसके लिये निम्न मिश्रण अधिक उपयुक्त रहता है —

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मृगश्रृंग भस्म 100-125 मिलीग्राम को दूने यवक्षार में मिला कर, अदरक के स्वरस और मधु के साथ देना चाहिये। दिन भर में इसकी ऐसी ही तीन पुड़ियाँ प्रातः, दोपहर और रात्रि में देनी चाहिये।

1 रत्ती मृगश्रृंगभस्म, मिश्रीचूर्ण 4 रत्ती में मिला कर दे सकते हैं। इस प्रकार कफ का जमाव हट जाता है और वह ढीला होकर निकल जाता है।

यदि रोगी तीव्र ज्वर के साथ प्रलाप अधिक कर रहा हो, अथवा उसे श्वास लेने में कठिनाई सी दिखाई दे तो निम्न मिश्रण उपयोगी तथा लाभकारी हो सकता है —

वृहत्कस्तूरी भैरव रस, सर्पगन्धा चूर्ण और कामदुधा प्रत्येक 3 रत्ती, खरल करके 3 पुड़ियाँ बना लें।

मात्रा — 1-1 पुड़िया 4-4 घंटे के अन्तर पर शहद और अदरक स्वरस के साथ देनी चाहिये। इससे 3 दिन में ही रोगी प्रलाप करना छोड़कर नींद लेने लगेगा।

निमोनिया के रोगी के हृदय का बलाबल भी देखते रहना चाहिये। अच्छा हो कि उसे औषधिक्रम में किसी ऐसी औषधि का भी समावेश किया जाय, जो हृदय को शक्ति देती हुई, उसे सहज, स्वाभाविक अवस्था में बनाये रहे।

इसके लिये चिन्तामणि रस अथवा विश्वेश्वर रस का प्रयोग किया जा सकता है। निर्माण विधि इस प्रकार है।

हृदय को बलप्रद चिन्तामणि रस

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, अभ्रक भस्म, लौह भस्म, वंग भस्म और शिलाजीत 1-1 तोला, स्वर्ण भस्म 3 माशे और रजत भस्म 6 माशे लेकर खरल करें, जिससे कि सभी मिल जायें। फिर क्रमशः चित्रक स्वरस, भृंगराज स्वरस और अर्जुन की छाल के क्वाथ में सात- सात भावनाएँ देकर 1-1 रत्ती प्रमाण गोलियाँ बना कर रखें।

मात्रा — प्रतिदिन केवल 1 गोली, गेहूँ के क्वाथ के साथ सेवन करने से हृदोग, फुफ्फुस के रोग, प्रमेह, श्वास, कास आदि अनेक रोग दूर होते हैं। बल- वीर्य बढ़ाने एवं हृदय को पुष्ट करने में यह अत्यन्त हितकर है। (भै.र.)

हृदय- फुफ्फुस का बलदायक विश्वेश्वर रस

स्वर्ण भस्म, अभ्रक भस्म, लौह भस्म, वंगभस्म, शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक और वैक्रान्त भस्म 1-1 तोला लेकर, प्रथम पारद- गन्धक की कज्जली करें और फिर सभी भस्म 1-1 करके मिलावें और अर्जुन के क्वाथ की एक भावना देकर 1-1 रत्ती की गोलियाँ बना लें।

इसका सेवन करने से हृदय तथा फेफड़े के सभी दोष दूर होते हैं। (भै.र.)

मोतीझरा में औषधि- व्यवस्था क्रम

उक्त दोनों रसों में से कोई भी एक रस उचित अनुपात से दिया जा सकता है। निम्न मिश्रण देते रहने से भी रोग में विकृतियाँ उत्पन्न नहीं हो पातीं और रोगी सहज रूप से स्वस्थ होने लगता है —

मृगश्रृंग भस्म और प्रवाल भस्म 1-1 रत्ती, यवक्षार 2 रत्ती तथा सितोपलादि चूर्ण 4 रत्ती की एक पुड़िया बनावें। इस प्रकार की 3 पुड़िया दिनभर में देनी चाहियें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सुवर्ण भस्म 2 रत्ती, मृगशृंग भस्म, पीली कौड़ी की भस्म और फुलाया हुआ सुहागा 6-6 रत्ती लेकर घोटें और पुड़ियाँ बना लें। इसे देते रहने से भी लाभ रहता है। बालकों के डब्बा रोग (पसली चलने में) इसकी मात्रा शहद के साथ अथवा माता के दूध में मिला कर देने से लाभ हो जाता है।

रोग की विभिन्न अवस्थाओं में रोग के लक्षण और रोगी का बलाबल विचार कर अश्विनीकुमार रस, ज्वरांकुश रस, समीर पन्नगरस आदि से कार्य लिया जा सकता है। यदि निमोनिया के रोगी की नाड़ी क्षीण हो रही हो अथवा ठण्डा पसीना निकल कर शीतांगता के लक्षण दिखाई देते हों तो उसे यह मिश्रण दें —

संजीवनी वटी और स्वर्ण भस्म 1-1 ग्राम तथा अभ्रक भस्म 500 मिलीग्राम लेकर खरल करके 8 पुड़ियाँ बना लें।

यह मिश्रण रोगी को प्रत्येक 4 घंटे के अन्तर से, अदरक स्वरस एवं शहद के साथ दिया जा सकता है।

निमोनिया में, पसलियों में दर्द होता है, उससे बेचैनी भी रहती है। उस पर तारपीन का तैल, तिल का तैल समान भाग के साथ कुछ कर्पूर मिला कर मलना चाहिये।

अथवा तारपीन के तैल में आयुर्वेदिक महानारायण तैल मिला कर मालिश करें।

इस रोग में पथ्यादि की व्यवस्था लगभग मोतीझरा जैसी ही है। दूध, शहद, क्वथित जल आदि का प्रयोग इसमें लाभकर रहता है।

रोग की अन्तिम अवस्था में शरीर की कमजोरी मिटाने वाली दवाएँ दी जानी चाहिएं। आहार मिलने पर, उसके पचने के लिये हिंग्वाष्टक प्रभृति पाचक चूर्ण देना उचित है। भोजन के पश्चात द्राक्षासव, अंगूरासव आदि भी दिये जा सकते हैं। इन आसवों का मिश्रण भी उपयोगी रहता है —

द्राक्षासव, लौहासव, कुटजारिष्ट, दशमूलारिष्ट और कुमार्यासव। मिला कर 2 तोला तक समान भाग ताजा पानी के साथ।

इस प्रकार ध्यानपूर्वक चिकित्सा और पथ्यापथ्य विचार से निमोनिया का रोगी आरोग्य - लाभ कर सकता है।

14. यकृत रोग चिकित्सा

यकृत विकार के लक्षण

यद्यपि आयुर्वेदिक ग्रन्थों में इस रोग का संकेत मात्र मिलता है, तथापि इस रोग से बहुत- से लोग पीड़ित हैं। यकृत का अर्थ जिगर है, जिसे आंग्ल भाषा में लिवर कहते हैं।

वस्तुतः इस अंग का, शरीर में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। यह दाँयी ओर की पसलियो के नीचे रहता है, जबकि बाँयी ओर की पसलियों के नीचे तिल्ली का स्थान है।

यकृत की खराबी से अनेक उपद्रव हो जाते हैं। यदि उपचार में उपेक्षा की जाती है तो रोग पुराना पड़ जाता है। आरम्भ में ज्वर उत्पन्न होता है और वह शान्त हो जाता है तो भी यकृत की गड़बड़ी बनी रहती है। रोग के कारण यकृत कड़ा होने लगता है तथा आकार में कुछ बड़ा भी, उसे दबाने से दर्द का अनुभव होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

शरीर में ज्वर जैसी स्वल्प ऊष्मा, मलावरोध, जीभ पर सफेदी और मैल, सिर में दर्द, अरुचि, अजीर्ण, मन्दाग्नि, मल में आँव, आध्मान तथा उदरशूल आदि लक्षण देखे जाते हैं। मूल कारण तो इस रोग का भी प्रदूषित आहार- विहार ही है।

यह रोग बालकों को अधिक कष्टदायी होता है। दो वर्ष से पाँच वर्ष तक के बालक इस रोग के अधिक शिकार होते हैं। रोग बढ़ता है तो उसके कारण अन्य उपसर्ग भी उत्पन्न हो सकते हैं। कुछ लोगों को यकृत और प्लीहा के दोष से पाण्डु रोग (पीलिया) भी हो जाता है। उसकी आँखों में पीलापन आ जाता है।

यकृत रोग से छुटकारा पाने के लिये आवश्यक है कि कब्ज के निवारण की ओर ध्यान दिया जाय। उसके लिये कोई सुख - विरेचक लिया जा सकता है। कुमार्यासव इसके लिये उत्तम योग है। इसमें ग्वारपाठे की प्रधानता रहती है। ग्वारपाठे के अन्य योग भी इसमें लाभ कर सकते हैं।

यकृत पर लवणपंचक चूर्ण

सेंधा नमक, काला नमक, विड नमक, समुद्र नमक और साँभर नमक — यह पाँच नमक (पंचलवण) समान मात्रा में लेकर कपड़छन चूर्ण करके रखें।

इसके सेवन से मल- मूत्र सुखपूर्वक निकल कर मलाशय और मूत्राशय का शोधन होता है। यह पाक में मधुर तथा अग्नि को बढ़ाने वाला है। आवश्यक मात्रा में ठण्डे अथवा गर्म (गुनगुने) पानी के साथ दे सकते हैं। सामान्यतः 1 से 3 माशे तक देते हैं।

यकृत- प्लीहादि में लवणत्रितयादि चूर्ण

यह चूर्ण विशेषकर यकृत- प्लीहादि के विकारों को नष्ट करने वाला कहा है। पृष्ठशूल, कटिशूल, गुदपीड़ा, कुक्षिरोग, हृद्रोग, अर्श, कब्ज, मन्दाग्नि, वायुगोला, अष्ठीला, उदर रोग, हिक्का, अफरा, श्वास, कासादि को अवश्य दूर करता है —

सेंधा नमक, काला नमक, विडनमक, यवक्षार, सज्जीक्षार, सौंफ, सोया के बीज, वच, अजमोद, वन तुलसी, हाऊबेर, जीरा, कालाजीरा, काली मिर्च, पीपलामूल, पीपल, भुनी हुई हींग, हिंगुपत्री, कचूर, पाठा, कलौंजी, सौंठ, चित्रकमूल, चव्य, वायविडंग, अम्लवेंत, अनारदाना, तितड़ीक, निशोथ, दन्तीमूल, शतावरी, इन्द्रायन मूल, भारंगी, देवदारु, अजवाइन, धनियाँ, तुम्बरूफल, पुष्करमूल, बेर और छोटी हरड़ समान भाग लें और कूट- कपड़छन करके चूर्ण बना लें। फिर इसमें क्रमशः अदरक- स्वरस और बिजौरा नींबू के स्वरस की 7-7 भावनाएँ देकर रखें।

रोगानुसार इसका सेवन घृत, पुरानी मदिरा, गर्म जल, बेर के क्वाथ, तक्र, ऊँटनी के दूध और दही के पानी (तोड़) के साथ करने से यकृत आदि रोगों में लाभ होता है। (शारंगधर)

मात्रा — प्रायः 3 माशे।

यकृत रोग में लाभकर एक अन्य चूर्ण का वर्णन भी यहाँ कर रहे हैं। इसके सेवन से यकृत के सभी विकार दूर हो जाते हैं। नुस्खा इस प्रकार है।

यकृत दोषनाशक चूर्ण

सौंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, पुष्करमूल, भुनी हुई हींग, ढाक का क्षार, ओंगा का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
क्षार, यवक्षार, शंख भस्म और मृगशृंग क्षार तथा भस्म मिला कर खरल में ठीक प्रकार घोट कर रखें। इस चूर्ण को गर्म पानी के साथ सेवन करावें। मात्रा 1 से 3 माशे तक देनी चाहिये।

शारंगधर में यकृत- प्लीहादि पर पथ्यादि काढ़ा कहा गया है, वह वस्तुतः हितकारी है। उसका योग यह है।

जिगर- तिल्ली में पथ्यादि क्वाथ

हरड़ और रोहितक की छाल समभाग लेकर विधिपूर्वक क्वाथ करना चाहिये। इसमें छोटी पीपल का चूर्ण और यवक्षार मिला कर प्रातःकाल पिलाना चाहिये। इससे यकृत और तिल्ली के रोग (तथा उपसर्ग) दूर होते हैं।

यकृत प्लीहादि पर अनेक योग

यह कल्क देना भी यकृत रोग में हितकारी है।

- सोंठ और चित्रकमूल की छाल 3-3 माशे लेकर रात्रि में जल में भिगोवें और प्रातःकाल पीस कर कल्क बनावें।
- सोंठ, छोटी पीपल, चित्रकमूल की छाल, शालपर्णी, गिलोय, वासा (अडूसा) की जड़, तालवृक्ष की जटा का क्षार, अपामार्ग का क्षार और पुराना मानकन्द समान भाग का महीन चूर्ण करके, उसे 64 गुने गो- मूत्र के साथ पकावें, जब वह गोली बनाने योग्य गाढ़ा होने को आवे तो उतारें और ठंडा होने पर शहद के साथ 1-1 माशे की गोलियाँ बना कर सुरक्षित रखें।

यह गोली भी यकृत रोग में अच्छा काम करती है —

मात्रा — 1 से 3 गोली तक गर्म पानी के साथ देनी चाहिये। इसके सेवन से ज्वर, मन्दाग्नि, अजीर्ण, मलावरोध, श्वास, कास, शोथ आदि सभी यकृत के उपसर्गों में शीघ्र लाभ होता है। निम्न माणमण्ड का प्रयोग भी लाभकारी है—

- पुराने मानकन्द का चूर्ण 1 भाग, चावल 2 भाग, गाय का दूध 21 भाग और जल 21 भाग लेकर खीर बनावें। (भै०र०)

इस खीर का नित्य प्रति सेवन करने से वातज उदर रोग, शोथ, ग्रहणी और पाण्डु रोग नष्ट होते हैं। सिद्ध चिकित्सकों का कथन है कि इन रोगों को नष्ट करने में यह अव्यर्थ है।

यकृत के अधिक खराब होने पर यकृत संकुचित होने लगता है। उसके लिये महामृत्युञ्जय रस (भै.र.) का प्रयोग करना अत्यन्त लाभदायक है। नुस्खा इस प्रकार है—

यकृत विकारहर महामृत्युञ्जय रस

त्रिकुट, त्रिफला, शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, सुहागे की खील, शुद्ध विष, मुलहठी, हल्दी, करंज के बीज और शुद्ध जमालगोटा समान भाग लेकर, पहिले पारद- गन्धक की कज्जली करें और फिर सभी द्रव्यों को महीन करके मिलावें। तदुपरान्त भाँगरे के स्वरस में निरन्तर तीन दिनों तक घोट कर उड़द के समान गोलियाँ बनावें और छाया में सुखा कर सुरक्षित रखें।

मात्रा — 1-1 गोली रोगानुसार अनुपान के साथ देनी चाहिये। सभी रोगों को नष्ट करने में समर्थ है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

यकृतलीहोदर नाशिनी वटी

निम्न वटी यकृतोदर, प्लीहोदर, ज्वर, पाण्डु आदि पर उपयोगी है, इससे मलावरोध भी दूर होता है।

गन्धक शुद्ध और एलुआ 20-20 ग्राम, फुलाया हुआ सुहागा, फुलाई हुई फिटकरी-श्वेत, सतगिलोय, लौहकान्त भस्म और शंखभस्म 10-10 ग्राम लेकर ग्वारपाठे के रस में 4 घंटे तक खरल करके चना के बराबर वटी बना लें और छाया में सुखावें।

मात्रा — 1 से 3 वटी तक रोहितकारिष्ट के साथ प्रातः- सायंकाल बलानुसार देनी चाहिये। अथवा

यकृत- प्लीहा पर गुडूच्यादि चूर्ण

गिलोय, अतीस, सोंठ, चिरायता, कालमेघ, नागरमोथा, छोटी पीपल, यवक्षार, हराकसीस शुद्ध और चम्पा की छाल समान भाग लेकर, कूट- कपड़छन कर चूर्ण बनावें।

यह चूर्ण यकृत- प्लीहा, पाण्डु रोग, अग्निमांद्य, अरुचि तथा साध्यासाध्य ज्वरों और जल परिवर्त्तन के दोषों को दूर करने में समर्थ है। (भै.र.)

मात्रा — इसे 3 से 6 ग्राम की मात्रा में उचित अनुपात के साथ दें।

जिगर में लाभकारी रसराज रस

गन्धक योग से निर्मित ताम्रभस्म और शुद्ध गन्धक 1-1 तोला, शुद्ध पारद 6 माशे एकत्र करके जिमीकन्द के स्वरस में खरल करें और राजपुट में पकावें। स्वाँग शीतल होने पर औषधि को निकाल कर रखें।

मात्रा — आधी रत्ती यह रस शहद के साथ देने से यकृत, प्लीहा, गुल्म रोग नष्ट होते हैं। यह कान्ति और पुष्टि की वृद्धि भी करता है। (भै.र.)

मालिश का तैल — अमृतधारा (कर्पूर, पीपरमेंट और सत अजवाइन का मिश्रण) सरसों के चौगुने तेल में मिला कर जिगर- तिल्ली पर मालिश करने से उसमें कोमलता आती है। यदि वृद्धि हो गई हो तो घट कर सहजावस्था हो जाती है।

15. प्लीहा (तिल्ली) की चिकित्सा

प्लीहा में हितकारी अनेक योग

प्लीहा मानव शरीर का एक अत्यावश्यक अंग है, जिसका सहजावस्था में रहना स्वास्थ्य के लिये अत्यावश्यक है। यदि इसकी वृद्धि होती है तो अनेक प्रकार के उपसर्ग हो सकते हैं। प्लीहा (तिल्ली) का स्थान बाँयी ओर की पसलियों के नीचे है।

आयुर्वेद में प्लीहा वृद्धि के उपचारार्थ अनेक योग उपलब्ध हैं। उनके वर्णन सहित चिकित्सा यहाँ प्रस्तुत है —

- अजवाइन, चित्रक, यवक्षार, पीपलामूल, दन्तीमूल और छोटी पीपल समान भाग को कूट- कपड़छन कर चूर्ण बनावें।

मात्रा — 1 से 3 माशे तक गर्म पानी के साथ दें। अथवा दही के तोड़ से सेवन करावें। इससे प्लीहा रोग नष्ट होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- मुक्ताशुक्ति (सीप) की भस्म 2 रत्ती को पीपल चूर्ण युक्त दूध के साथ सेवन कराने से भी प्लीहा के विकार दूर हो जाते हैं।
- वायविडंग, चित्रक, घृत, सेंधा नमक, वच तथा जौ का सत्तू एकत्र करके अन्तर्धूम में भस्म करें और दूध के साथ सेवन करावें,

  मात्रा — 2 माशे। गुल्म, प्लीहा तथा सभी उदर रोगों में हितकर है।
- छोटी पीपल का चूर्ण हरड़ के क्वाथ में डाल कर पिलाने से प्लीहा रोग में लाभ होता है।
- रोहितक की छाल के काढ़े में यवक्षार मिला कर देने से भी तिल्ली सहजावस्था को प्राप्त होती है।
- चित्रकमूल को पानी के साथ पीस कर 1-1 रत्ती की गोली बना लें। पके हुए केले के रस में अथवा केले की पकी हुई फली के मध्य में तीन गोलियाँ रख कर खाने से प्लीहा रोग का शमन हो जाता है।
- हल्दी का चूर्ण पुराने गुड़ के साथ दें।
- आक की पत्ती का गुड़ के साथ सेवन करायें।
- पलाश का क्षार और यवक्षार समान भाग मिला कर 10-10 रत्ती की मात्रा में पानी के साथ देना चाहिये।
- शंख नाभि की 2 रत्ती भस्म को जंभीरी नींबू के रस के साथ देने से भी तिल्ली रोग दूर होता है।

यकृत- प्लीहा में पंच - लवण का प्रयोग

सेंधा नमक, काला नमक, विडनमक, समुद्रलवण एवं साँभरनमक इन पाँचों नमक को लवण पंचक कहते हैं। यकृत और प्लीहा की वृद्धि को ठीक करने में इनका चूर्ण भी पर्याप्त हितकर रहता है। नीचे लिखे योगों में, जहाँ पंचलवण का ग्रहण किया गया है, वहाँ इन्हीं पाँचों को लेना चाहिये।

प्लीहा वृद्धि पर गुणकारी योग

आक के पके हुए पत्ते 1 किलो ग्राम लेकर किसी कपड़े से पोंछ कर स्वच्छ करें और उन्हें खरल में कुछ कूट कर छोटे- छोटे टुकड़े कर लें। अब इनके साथ पंचलवण (सम भाग) 100 ग्राम लेकर, उनका चूर्ण मिलावें और मिट्टी की हाँडी में भर कर शरवा- सम्पुट करें। अर्थात् मुख को सरवा से बन्द करके कपड़ मिट्टी द्वारा बन्द कर दें। अब इन्हें गजपुट में 50 उपलों की आग में फूँक दें। स्वांग शीतल होने पर निकालें और खरल में महीन करके, छान कर सुरक्षित रखें।

मात्रा — 1 ग्राम तक, अर्क मकोय के साथ दिन में तीन बार सेवन करावें। प्लीहादि में यह उपयोगी और हितकारी योग है।

पंचलवण द्राव

पंच लवण और खाने का शोरा (सोडा बाई कार्ब) 100-100 ग्राम, नौसादर 200 ग्राम, ग्वारपाठे का गूदा 1 किलो ग्राम लेकर एकत्र करें और किसी काँच या चीनी के पात्र में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
(अमृतवान) में रख कर हिलावें और उठा कर रख दें। दूसरे- तीसरे दिन पुनः इसी प्रकार हिला कर रख दिया करें। इसें दो सप्ताह के बाद वस्त्रपूत करके सुरक्षित रखें।

मात्रा — 20 से 30 मिलीलीटर तक प्रातः सायं देनी चाहिये। कुछ दिनों के प्रयोग से ही तिल्ली रोग दूर हो जायेगा। यह दवा यकृत (जिगर) रोग में भी काम करती है। कब्ज, अरुचि, अफरा आदि में भी हितकर है।

प्लीहा- यकृत में पंचलवण कुमारी द्राव

पंच लवण (पाँचों सम भाग) 50 ग्राम, वायविडंग, अजमोद, फूला हुआ सुहागा, यवक्षार, सज्जीक्षार 5-5 ग्राम, लौह कान्त का चूर्ण 100 ग्राम, पुराना गुड़ 50 ग्राम और ग्वारपाठे का गूदा 2 किलो ग्राम लेकर एकत्र करें और चीनी या काँच के अमृतवान में रख कर हिला दें। बीच- बीच में 2-3 दिन बाद हिलाते रहें। फिर दो सप्ताह के बाद निकाल कर कपड़े में छानें और बोतलों में भर लें।

मात्रा — 20 से 30 मिलीग्राम तक प्रातः- सायं सेवन करने से प्लीहा तथा यकृत की वृद्धि तथा अन्य उपसर्ग दूर होते हैं। यह द्राव मलावरोध, अफरा, शूल, पाण्डु, कामला तथा सभी उदरविकारों को नष्ट करके भूख खोलता है तथा शरीर में रक्त की वृद्धि करता है।

प्लीहारि वटी

अभ्रक भस्म, कसीस, लहसुन और मुसव्वर समान भाग लेकर मिलावें और द्रोणपुष्पी के स्वरस में 3 प्रहर (9 घंटे) तक निरन्तर घोट कर 2-2 रत्ती की गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1 से 2 गोली तक सायंकाल पानी के साथ देनी चाहिये। इससे प्लीहा और यकृत दोनों में शीघ्र लाभ होता है। गुल्म, मन्दाग्नि, शोथ, कास, श्वास, प्यास, कम्प, दाह, शीत, वमन, भ्रम आदि रोग भी निःसन्देह दूर होते हैं। (भै.र.)

प्लीहारि रस

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, फुला हुआ सुहागा, शुद्ध विष, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, आमला, हरड़, बहेड़ा, प्रत्येक 1 तोला और जमालगोटा के बीज 5 तोले लेकर, सबका चूर्ण कर, पलाश (टेसू) के फूलों के स्वरस में एक प्रहर (तीन घंटे) पर्यन्त घोटते हुए 1-1 रत्ती की गोलियाँ बना कर छाया में सुखा लें।

मात्रा — 1-1 गोली अदरक स्वरस के साथ सेवन करायें। इससे अर्श, गुल्मजन्य शूल, प्लीहा, शोथ, उदावर्त, वातशूल, श्वास, कास, ज्वर तथा सब प्रकार के कोष्ठगत विकार, आमवात, कफ के रोगादि दूर होते हैं। (भै.र.)

प्लीहा और यकृत रोग पर सिद्ध लवण

कच्चा बड़ा पपीता लेकर उसे बीच से इस प्रकार काटना चाहिये, जिससे कि उसमें 200 या 250 ग्राम सेंधा नमक भर सकें। इस प्रकार पपीते में नमक भर कर, काटे हुए भाग को पपीते के उसी टुकड़े से बन्द करके, ऊपर से कपड़- मिट्टी करें और फिर पूरे पपीते पर गोबर का एक अंगुल मोटा लेप करें।

तदुपरान्त धरती में डेढ़ फुट गहरा और उतने ही चौड़ा गडढा करके, उसमें कण्डे भर दें, तथा उन कण्डों के बिल्कुल मध्य में पपीते को रख कर अग्नि दें। जब वह जल जाय,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
तब निकाल कर, उसके ऊपर से मिट्टी, गोबर आदि हटावें और उसमें से नमक निकाल कर महीन पीस कर रखें।

मात्रा —5-6 ग्राम तक यह नमक पानी के साथ प्रातः- सायं तीन सप्ताह पर्यन्त सेवन करावें। इससे प्लीहा और यकृत दोनों में अत्यन्त लाभ मिलता है। प्रथमावस्था का पाण्डु रोग भी इससे दूर हो जाता है। अन्य उदर रोगों में भी हितकर है।

प्लीहावृद्धि एवं ज्वर- नाशक योग

मूली का चूर्ण 40 ग्राम, भुनी हुई हींग 20 ग्राम तथा शुद्ध कसीस 10 ग्राम लेकर एकत्र खरल करें और मूली के ही स्वरस में 3 घण्टे घोट कर आधा- आधा ग्राम की गोलियाँ बना कर छाया में सुखा लें।

मात्रा — 1 से 2 गोली तक गर्म पानी के साथ देनी चाहिये। इससे प्लीहा वृद्धि में शीघ्र लाभ होता है तथा वृद्धि के कारण उत्पन्न हुए ज्वर का भी शमन हो जाता है।

मूली का चूर्ण बनाने के लिये मूली के टुकड़े काट कर छाया में सुखा लेने चाहियें और फिर कूट- छान लेना चाहिये।

प्लीहा पर शुण्ठ्यादि चूर्ण

सोंठ 40 ग्राम, फुलाया हुआ सुहागा, सत गिलोय, कलमी शोरा, नौसादर, जवाखार और सज्जीखार 10-10 ग्राम लेकर, सबका महीन चूर्ण करके रखें।

मात्रा — एक से डेढ़ ग्राम तक पानी के साथ भोजनोपरान्त दोनों समय देनी चाहिये।

इस चूर्ण के कुछ दिनों तक निरन्तर प्रयोग करते रहने से प्लीहा और यकृत वृद्धि दोनों में ही शीघ्र लाभ होता है।

तिल्ली पर रोहितक लौह

रोहितक (रोहिड़ा) की छाल, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, आमला, हरड़, बहेड़ा, बायविडंग, नागरमोथा और चित्रकमूल समान भाग लें, और कूट- कपड़ छन करके, चूर्ण के वंजन के बराबर लौह भस्म मिला कर खरल करें।

मात्रा — 2 रत्ती तक उचित अनुपान के साथ सेवन करने से प्लीहा वृद्धि दूर होती है। यह चूर्ण अग्रमांस और शोथ को भी दूर करने में समर्थ है।

यकृत- रोग चिकित्सा के प्रसंग में ऐसे भी अनेक योग लिख आये हैं, जो प्लीहा वृद्धि में भी बहुत लाभ करते हैं। उनका भी प्रयोग किया जा सकता है।

16. पाण्डु और कामला (पीलिया)

यह रोग अधिक कष्टकारी है। इसमें रक्त की कमी होने के कारण शरीर पर पीलापन आने लगता है। आरम्भिक अवस्था में सामान्य ज्वर रहने के कारण आभास नहीं होता, किन्तु धीरे- धीरे रोग बढ़ता है तो आँखों में पीलापन दिखाई देता है। साथ ही अन्न के प्रति अरुचि, अजीर्ण, मलावरोध आदि के साथ ज्वर का प्रायः बना रहना तथा दाह और चित्त - भ्रम जैसी अवस्था उत्पन्न हो जाती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आयुर्वेद में यह रोग पाण्डु कहा गया है। जन सामान्य में पीलिया के नाम से प्रसिद्ध है। एलोपैथ इसे जोंडिस कहते हैं। भारतीय चिकित्सा - विज्ञान इसके पाँच भेद करता है — 1. वातज, 2. पित्तज, 3. कफज, 4. त्रिदोषज, और 5. मृत्तिकाभक्षण जन्य।

पाण्डु के दोषानुसार लक्षण

- वातज पाण्डु में त्वचा, नेत्र तथा मूत्रादि में रूखापन, रंग लालीयुक्तकाला तथा शरीर में कम्प, कोंचने जैसी पीड़ा, अफरा और चित्तभ्रम जैसे लक्षण होते हैं।
- पित्तज पाण्डु में रोगी के मल- मूत्र तथा नेत्रों में पीलापन आ जाता है। शरीर में दाह के साथ प्यास बढ़ती है। मल पतला तथा शरीर पीला हो जाता है। साथ ही ज्वर उत्पन्न हो जाता है।
- कफज पाण्डु में मुख से कफ जाना, शीत, तन्द्रा, आलस्य, शरीर में भारीपन रहना, त्वचा, मुख, नेत्र और मुख पर सफेदी सी झलकना आदि लक्षण होते हैं।
- सन्निपातज (त्रिदोषज) पाण्डु में ज्वर, अरुचि, जी मिचलाना, वमन, शीत, तृषा, चित्त में व्याकुलता, शरीर में क्षीणता और इन्द्रियों की विषय - ग्राहक शक्ति का ह्रास होने लगता है।
- मृत्तिकाजन्य पाण्डु में, कषैली मिट्टी खाने से वात, खारी मिट्टी खाने से पित्त और मीठी मिट्टी खाने से कफ दोष बढ़ जाता है। इस कारण दोषानुरूप लक्षण उत्पन्न होते हैं और वे रोगी के बल, वर्ण, जठराग्नि आदि को प्रभावित करते हैं। उससे नेत्र- पलक, कपोल, भौंह, नाभि, उपस्थ तथा पाँव में शोथ, उदर- कृमि तथा मल में रक्त और कफ का मिश्रण निकलता है।

कामला हलीमक आदि

पाण्डु रोग की वृद्धि होने पर, वही कामला, कुम्भ कामला तथा हलीमक का रूप ले लेता है। **'तथैकान्कामला स्मृता'** अर्थात उसी से कामला कहा जाता है।

जब पाण्डु - रोगी खट्टे, तिक्त आदि के रूप में अपथ्य आहार ले लेता है, तब उसके पित्त, रक्त और मांस प्रदूषित होते हैं और वे कामला की उत्पत्ति कर देते हैं।

कामला भी जब काबू में न आकर पुरानी पड़ जाती है, तब कुम्भकामला का रूप ले लेती है।

कुम्भकामला की उपेक्षा होने पर उसी का नाम हलीमक हो जाता है। वस्तुतः यह तीनों ही पाण्डु रोग का ही जीर्ण स्वरूप है।

कामला में नेत्र, नख, त्वचा, मुख आदि हल्दी जैसे वर्ण के हो जाते हैं। मल- मूत्र लालिमायुक्त पीले, इन्द्रियों का अपने- अपने विषय ग्रहण करने में ह्रास, दाह, कोष्ठबद्धता, दौर्बल्य, ग्लानि और अरुचि उत्पन्न हो जाती है।

कुम्भ - कामला में वमन, अरुचि, जी मिचलाना, वमनेच्छा, ज्वर, थकान, श्वास- कास का प्रकोप, पतले दस्त आदि अनेक उपद्रव दिखाई देते हैं।

हलीमक में नेत्रादि में हरापन अथवा कालापन युक्त- पीलापन होता है। बल तथा उत्साह नष्ट हो जाता है और तन्द्रा, अग्निमान्द्य, मन्द ज्वर, अंगों में टूटन, दाह, तृषा, अरुचि आदि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

लक्षण होते हैं। रोगी को चक्कर भी आने लगते हैं। इसमें वात- पित्त का अधिक प्रकोप रहता है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीलिया का जैसे ही पता लगे, तुरन्त चिकित्सा आरम्भ कर देनी चाहिये। यह रोग बालकों को भी खान- पान की गड़बड़ी से हो जाता है। इसके लिए लोग गण्डा- ताबीज, झाड़- फूँक कराने में भी हित मानते हैं। यदि कोई वैसा करे तो करे, किन्तु औषधोपचार अवश्य कराना चाहिये। चिकित्सा में ढील देने से रोग पर नियन्त्रण कठिन होता है।

पाण्डु का औषधोपचार

- छोटी हरड़ को गोमूत्र में एक सप्ताह तक भिगोवें। तत्पश्चात 1 हरड़ नित्यप्रति सेवन करें तो पाण्डु रोग नष्ट होता है।
- घर में उड़ती हुई सामान्य मक्खी 1 पकड़ कर उसे गुड़ में लपेट कर पीलिया के रोगी को प्रातःकाल नीहारमुख निगलवा दें। यह अत्यन्त सामान्य योग बड़े - बड़े बहुमूल्य नुस्खों से अधिक कार्य करता है। पीलिया के रोगी का मल- मूत्र, नेत्र आदि में पीलापन, शरीर में भी पीलापन, अरुचि, क्षुधानाश, दुर्बलता, पिण्डलियों में दर्द आदि सब दूर हो जाता है। मूत्रादि में श्वेतता आ जाती है। यह उपचार केवल 3 दिन तक किया जाना चाहिये। रोगी को बताये बिना गुड़ में मक्खी केवल प्रातःकाल खिलानी चाहिये। इस प्रकार यह औषधि वमन नहीं करती।
- छोटी हरड़ का चूर्ण गुड़ के साथ सेवन करने से पाण्डु रोग पर काबू पाया जा सकता है।
- मण्डूर को अग्नि पर सात बार तपा- तपा कर गोमूत्र में बुझाना चाहिये। इससे वह शुद्ध हो जाता है। उस शुद्ध किये मण्डूर का महीन चूर्ण करके रखें।
- यह मण्डूर 2 रत्ती की मात्रा में, असमान भाग घी और शहद में मिला कर खायें और साथ ही भात का भोजन करें। इससे पाण्डु रोग नष्ट होगा और शोथ नहीं रहेगा तथा अग्नि की वृद्धि होगी, अरुचि दूर होगी।
- निशोथ और इन्द्रायण का चूर्ण शर्करा (मिश्री) के साथ सेवन करने से पाण्डु तथा कामला में भी लाभ होता है।
- गिलोय का स्वरस शहद में मिला कर प्रातःकाल सेवन करने से भी कामला रोग दूर होता है।
- गूमा (द्रोणपुष्पी) का स्वरस निकाल कर नेत्रों में टपकाने से कामला या पाण्डुजन्य नेत्रों का पीलापन दूर हो जाता है।
- ककोड़ा की जड़ के रस की नस्य लेने से पाण्डु और कामला में शीघ्र लाभ होता है।
- पुनर्नवा (साँठी), हरड़, नीम की छाल, दारुहल्दी, कुटकी, परवल के पत्ते, गिलोय और सोंठ का क्वाथ विधि पूर्वक पकाकर उसमें गोमूत्र डाल कर सेवन करावें।

इससे पाण्डु, खाँसी, उदर रोग, श्वास, शूल तथा सर्वांग शोथ में शीघ्र लाभ होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- हल्दी, दारु हल्दी, त्रिफला और कुटकी 10-10 ग्राम का चूर्ण करके, उसमें 50 ग्राम लौहभस्म मिलावें और 2 रत्ती की मात्रा में शहद और गोघृत (असमान भाग) के साथ प्रातः- सायं सेवन करावें। इससे पाण्डु तथा कामला नष्ट होता है।

पाण्डु में नवायस चूर्ण

चित्रक मूल, हरड़, बहेड़ा, आमला, नागरमोथा, बायविडंग, सोंठ, काली मिर्च और छोटी पीपल — यह 9 द्रव्य समान भाग लेकर, कूट- कपड़छन करें। फिर पूरे चूर्ण के वजन के बराबर लौह भस्म मिला कर खरल करें।

इस चूर्ण को उचित मात्रा में (रोगानुसार) असमान भाग शहद और गोघृत के साथ चाटकर ऊपर से तक्र अथवा गोमूत्र पीना चाहिये। इससे कैसा भी घोर पाण्डु का रोग हो, त्रिदोषज आदि हो तो भी नष्ट हो जायेगा। भगन्दर, शोथ, कुष्ठ, उदर विकार, अर्श, मन्दाग्नि, अरुचि तथा कृमि रोग में भी हितकर है। (शारंगधर)

कामला पर धात्री - लौह

आमला, त्रिकुट (सोंठ, काली मिर्च, पीपल), हल्दी और लौह भस्म को असमान भाग शहद, घी और शर्करा मिला कर सेवन करने से कामला रोग नष्ट हो जाता है।

इसमें आमला आदि की मात्रा 2 रत्ती तक होनी चाहिये।

पीलिया में विडंगादि लौह

वायविडंग, नागरमोथा, त्रिफला, देवदारु, छोटी पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ और काली मिर्च 10-10 ग्राम, लौहभस्म मिला कर हाँडी में पकावें। जब पकते- पकते गोली बनाने योग्य गाढ़ा हो जाय तब उतार कर ठण्डा करें और 2 रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बना कर रखें।

मात्रा — 1-1 गोली प्रातः- सायं उचित अनुपात से सेवन करें। इससे पाण्डु तथा कामला से छुटकारा शीघ्र मिलता है और रोगी पूर्ण स्वस्थ हो जाता है।

मृदुविरेचनार्थ योग

छोटी इलायची 1 भाग, शुद्ध गन्धक, मुर्दासंग और सौंफ 3-3 भाग लेकर महीन चूर्ण करें।

मात्रा — 1 से 2 माशे तक गोदुग्ध के साथ सेवन करावें। मिट्टी खाने से उत्पन्न पीलिया इससे मिट जाता है। उदर में जमी हुई मिट्टी दस्त द्वारा निकल जाती है। बालकों के लिये भी विशेष रूप से हितकर है। किन्तु मात्रा का निश्चय उनकी आयु के अनुसार करें।

पाण्डु- सूदन रस

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, ताम्र भस्म, शुद्ध जमालगोटा और गूगल समान भाग लेकर खरल में घोटें और फिर गोघृत के साथ घोट कर 2-2 रत्ती प्रमाण गोलियाँ बनावें।

मात्रा — 1-1 गोली प्रातःकाल और सायंकाल गर्म पानी के साथ अथवा उचित अनुपान के साथ दें। किन्तु इसके सेवन काल में रोगी को ठण्डा पानी तथा खट्टे पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

इसके सेवन करने से पाण्डु तथा शोथ रोग का शीघ्र ही निवारण होता है।

Digitized by eGangotri

पाण्डु पंचानन रस

लौह भस्म, अभ्रक भस्म और ताम्र भस्म 4-4 तोले, त्रिकटु, त्रिफला, दन्तीमूल, चव्य, काला जीरा, चित्रकमूल, हल्दी, दारुहल्दी, निशोथ, मानकन्दमूल, इन्द्रयव, कुटकी, देवदारु, वच और नागरमोथा 1-1 तोला लें तथा सभी औषधि द्रव्यों को मिला कर तौल से दुगना शोधित मण्डूर और मण्डूर से आठगुना गोमूत्र लें।

सभी काष्ठौषधियों को कूट- कपड़छन करें और उस में भस्मों को मिलावें। तदुपरान्त शोधित मण्डूर को गोमूत्र में डाल कर पका लें। जब पाक सिद्ध हो जाय, अर्थात पकते- पकते गाढ़ा हो जाय, तभी उसमें उपर्युक्त औषधि चूर्ण मिला कर 1-1 रत्ती की गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1 गोली गर्म पानी के साथ प्रातःकाल सेवन करावें। इससे पाण्डु, शोथ, हलीमक, उरुस्तम्भ, यकृत, प्लीहा, गुल्मादि अनेक रोग नष्ट होते हैं। यह बल, वर्ण तथा अग्नि की वृद्धि करने वाला श्रेष्ठ रसायन है। (भै.र.)

पीलिया में आमलक्यावलेह

आमले 25 सेर 28 तोले का स्वरस मन्दाग्नि पर पकाकर, उसमें निम्न प्रक्षेप डालें—

छोटी पीपल का चूर्ण 64 तोले, मुलहठी का चूर्ण 8 तोले, मुनक्का 64 तोले, सोंठ 8 तोले, वंश लोचन 8 तोले तथा शर्करा (चीनी अथवा मिश्री) ढाई सेर, सबको कूट- छान कर मिलावें। जब तक गाढ़ा होने को हो, तभी अग्नि से उतार कर ठण्डा होने पर उसमें 64 तोले मधु मिलाकर रखें।

मात्रा — 6 माशे से 1 तोला तक। इसके सेवन से ही हलीमक, कामला, पाण्डु, प्रभृति सभी रोग नष्ट हो जाते हैं।

पाण्डु आदि में पर्पटाद्यरिष्ट

पित्त पापड़ा 5 सेर, जल 2 मन, 22 सेर, 32 तोले के साथ यथाविधि क्वाथ करें। जब 25 सेर 48 तोले पानी शेष रहे तब उतार कर, ठण्डा होने पर छान लें। फिर उसमें गुड़ 10 सेर, धाय के फूल 64 तोले, नागरमोथा, गिलोय, दारुहल्दी, देवदारु, छोटी कटेरी, दुरालभा, चव्य, चित्रक मूल, वायविडंग, त्रिकुट प्रत्येक 4-4 तोले लेकर कूट- कपड़छन करके उक्त काढ़े में प्रक्षेप रूप से डालें और पात्रों का मुखबन्द कर 30 दिन (या 40 दिन) पर्यन्त रखा रहने दें। तत्पश्चात् छान कर बोतलों में रखें।

मात्रा — सवा तोले से ढाई तोले तक (समान भाग पानी मिला कर) भोजनोपरान्त दोनों समय सेवन करावें।

इससे कामला, उदर रोग, अष्ठीला, गुल्म, पाण्डु, हलीमक, प्लीहा, यकृत, शोथ आदि अति शीघ्र दूर होते हैं।

पाण्डु में योगराज रसायन

त्रिफला 3 भाग, त्रिकटु 3 भाग, चित्रकमूल और वायविडंग 1-1 भाग, शिलाजीत 5 भाग, रौप्यमाक्षिक भस्म 5 भाग और शर्करा 8 भाग। सबका यथाविधि सूक्ष्म चूर्ण करें और मधु में मिला कर लौह पात्र में सुरक्षित रखें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मात्रा — 4 रत्ती प्रमाण यह औषधि उचित अनुपान से देनी चाहिये। इसके सेवन से पाण्डु- विष, कास, राजयक्ष्मा, विषम ज्वर, कुष्ठ, अजीर्ण, प्रमेह, श्वास, हिचकी, अरुचि, अपस्मार, कामला तथा अर्शादि रोग दूर हो जाते हैं। यह रसायन अमृत के समान गुणकारी है। इसके सेवन काल में कुलत्थ, मकोय आदि कदापि नहीं खाना चाहिये। (भै.र.)

दृष्टव्य — इस प्रकार उचित औषधि तथा उचित अनुपान से रोग के निवारण में सहायता मिलती है। पथ्य का ध्यान रखना अत्यावश्यक है। अपथ्य से रोग धीरे- धीरे घातक बन सकता है।

17. कास (खाँसी) की चिकित्सा

कास के प्रकार और लक्षण

यद्यपि खाँसी एक ऐसा रोग है, जो विभिन्न रोगों के उपसर्ग रूप में भी उत्पन्न हो जाता है, जैसे कि ज्वर आता है तो खाँसी भी हो सकती है। क्षय के साथ भी खाँसी की अधिकता देखी जाती है। तथापि चिकित्सा शास्त्र में खाँसी (कास) को पृथक रूप मानते हुए उसके प्रकारों का वर्णन इस प्रकार किया है —

कासाः पंच समुद्दिष्टास्ते त्रयस्तु त्रिभिर्मलैः।
उरःक्षताच्चतुर्थःस्यात्क्षयाद्धातोश्चपंचमः ॥ —शारंगधर

कास (खाँसी) पाँच प्रकार की कही गयी है — 1. वातज, 2. पित्तज, 3. कफज, 4. उरःक्षत जन्य, और धातुओं के क्षय होने से 5. क्षयकास उत्पन्न होती है।

- वातज कास में हृदय, कनपटी, पसली, उदर और सिर में वेदना होती है, मुख सूखता है, बल- पराक्रम और स्वर क्षीण हो जाता है। कास के अधिक वेग के साथ स्वर में परिवर्तन के साथ शुष्क खाँसी होती है, जिसमें कफ नहीं निकलता।
- पित्तज कास में वक्षस्थल में दाह, ज्वर के साथ मुख का सूखना, मुख में कड़वापन, प्यास की अधिकता, वमन में पीला और कटु स्राव, शरीर में दाह के साथ मुख पर पीलापन आदि लक्षण होते हैं।
- कफज कास में मुख कफ से लिहसा जैसा रहता है, सिर में दर्द, भोजन से अरुचि, शरीर में भारीपन तथा खुजली, खाँसने पर गाढ़ा कफ निकलना आदि लक्षण देखे जाते हैं।
- उरःक्षत- जन्य कास में फुफ्फुस में घाव होकर खाँसी होने लगती है। अधिक मैथुन, अधिक भार उठाना, अधिक चलना अथवा अपनी शक्ति से अधिक परिश्रम करना आदि कारणों से ही उरःक्षत की उत्पत्ति होती है। आरम्भ में शुष्क कास और फिर कफ में रक्त आने लगता है। कण्ठ, हृदय आदि में दर्द का अनुभव, कभी- कभी सुई चुभने जैसी पीड़ा, जोड़ों में दर्द, ज्वर, श्वास, तृषा और स्वर में परिवर्तन, खाँसी के वेग में कफ की घरघराहट आदि लक्षण होते हैं।
- क्षयकास में शरीर क्षीण होने लगता है। अंगों में दर्द, ज्वर में दाह, बेचैनी रहती है। अथवा शुष्क कास के कारण कफ रुक जाता है, थूकने के अधिक प्रयत्न में कफ के साथ रक्त आने लगता है। शारीरिक दुर्बलता के साथ शक्ति भी क्षीण हो जाती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

खाँसी के लिये चिकित्सा शास्त्र में अनेक औषधोपचार उपलब्ध हैं। किन्तु मूलरूप से तो उसका शमन तभी होता है, जब उसके कारण का निवारण किया जाय। अन्यथा खाँसी पुनः- पुनः प्रकट होती जाती है। फिर भी खाँसी को रोकने के लिये दवा देने से रोगी को आराम तो मिलता ही है। इसलिये यहाँ ऐसे औषधोपचार प्रस्तुत हैं —

- छोटी पीपल का कपड़छन किया हुआ चूर्ण 1 ग्राम तक शहद के साथ चटाने से खाँसी और ज्वर में लाभ होता है।
- छोटी पीपल के चूर्ण में सेंधा नमक मिला कर गुनगुने पानी के साथ सेवन करने से सब प्रकार की खाँसी दूर होती है। इससे गले में रुका हुआ कफ भी निकल जाता है।
- छोटी पीपल पानी के साथ पीस कर असली गाय के घृत के साथ गर्म करें और थोड़ा- सा सेंधा नमक मिलाकर सेवन करें। यह योग सूखी खाँसी में अधिक उपयोगी है।
- सोंठ और मिश्री मिला कर चूर्ण कर लें। 1 ग्राम तक की मात्रा में शहद के साथ, दिन में 2-3 बार सेवन करायें। इससे खाँसी में बहुत आराम मिलता है।
- सोंठ, काली मिर्च और छोटी पीपल, तीनों समान भाग लेकर, पीसें और कपड़छन चूर्ण बना लें। इसे 1 ग्राम तक की मात्रा में शहद के साथ दिन में 2-3 बार चाटें। इससे सब प्रकार की खाँसी में लाभ होता है। ज्वर और बेचैनी भी मिटती है।
- तुलसी के पत्तों और अडूसा के पत्तों का स्वरस सब प्रकार की खाँसी में लाभ करता है। इन दोनों का स्वरस समान भाग मिला कर शहद के साथ सेवन करना चाहिये। इससे कफ के साथ रक्त आना भी रुक जाता है और ज्वर में भी लाभ होता है।
- अडूसा (वासा) का रस शहद के साथ चाटने से नवीन अथवा पुरानी खाँसी में भी पर्याप्त लाभ होता है। इससे कफ के साथ आने वाला रक्त रुक जाता है।
- अडूसा 4 भाग, मुलहठी 2 भाग और बड़ी इलायची 1 भाग लेकर चौगुने पानी के साथ क्वाथ करें। आधा शेष रहने पर उतारें और उसमें थोड़ा सा छोटी पीपल का चूर्ण और शहद मिला कर प्रातः- सायं पीवें। इससे सभी प्रकार की खाँसी, कुकर खाँसी, श्वास, कफ के साथ रक्त जाना आदि में बहुत लाभ होता है।
- पीपलामूल, काकड़ासिंगी, सेंधा नमक और बबूल का गोंद समान भाग लेकर, कूट- छान लें। यह चूर्ण 1 ग्राम की मात्रा में पानी के साथ दिन में तीन बार दें। खाँसी और ज्वर में हितकर है।
- पीपल, पीपलामूल, काकड़ासिंगी, मुलहठी और बबूल का गोंद समान भाग लेकर कूट- कपड़छन करें और पानी के साथ खरल करके चने के बराबर गोलियाँ बना लें। इस योग में स्वल्प मात्रा में पीपरमेंट भी मिला लें तो अधिक उपयुक्त है।

  मात्रा — दिन में 2-3 गोली मुख में डाल कर सूँघने से खाँसी में शान्ति मिलती है।
- कायफल, नागरमोथा, भारंगी, धनियाँ, चिरायता, पित्तपापड़ा, काकड़ासिंगी, हरड़, वच, देवदारु और सोंठ समान भाग (कुल मिला कर 2 तोले) का काढ़ा खाँसी, ज्वर, श्वास कफ और कण्ठरोध में अत्यन्त लाभकारी है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

- केले का छिलका जलाकर रख लें। यह पुरानी खाँसी में हितकर है। आधे ग्राम तक यह दवा मधु में मिला कर प्रातः- सायं सेवन करनी चाहिये।
- अनार की छाल, काकड़ासिंगी, सोंठ, काली मिर्च और पीपल प्रत्येक 10 ग्राम, पुराना गुड़ 50 ग्राम लें। काष्ठ द्रव्यों को कूट- छान कर गुड़ के साथ मिलावें और 1-1 ग्राम के वटक बना लें। यह वटक मुख में डाल कर चूसने से खाँसी में बहुत आराम मिलता है। श्वास रोग में भी इसके सेवन से चैन पड़ जाता है।
- अडूसा के छाया शुष्क पत्तों को जला कर भस्म कर लें। यह श्वेत वर्ण की भस्म और मुलहठी का चूर्ण 50-50 ग्राम, काकड़ासिंगी, कुलींजन और नागरमोथा 10-10 ग्राम (इन तीनों का भी चूर्ण) सबको खरल करके एक जीव करके रखें।

मात्रा — 1 से 2 ग्राम तक शहद के साथ, दिन में 2-3 बार देनी चाहिये। सब प्रकार की खाँसी में शीघ्र लाभ होगा।

- सत मुलहठी, वंश लोचन, छोटी इलायची के दाने तीनों 10-10 ग्राम, दालचीनी, कीकल की गोंद, कतीरा गोंद, यह प्रत्येक 5-5 ग्राम, छोटी पीपल 2 ग्राम लेकर कूट- छान लें तथा सबके बराबर का शहद मिला कर रखें।

मात्रा — 2-3 ग्राम यह दवा दिन में 3-4 बार सेवन करनी चाहिये। इससे सब प्रकार की खाँसी, विशेषकर सूखी खाँसी में पर्याप्त लाभ होता है।

- पुराना गुड़ 100 ग्राम, अनार का छिलका 50 ग्राम, यवक्षार 25 ग्राम, काली मिर्च और छोटी पीपल 10-10 ग्राम लेकर, गुड़ के अतिरिक्त सभी को कूट- कपड़छन करें और गुड़ में मिलावें। तदुपरान्त अडूसा के पत्तों के स्वरस के साथ खरल करके बहुत महीन पिट्ठी सी बना कर सुखा लें और फिर चूर्ण करके रखें।

अथवा इस योग को, पिट्ठी बनाने के पश्चात 1-1 ग्राम के वटक (बड़ी गोली) भी बना कर सुखा सकते हैं।

मात्रा — 2 से 3 गोली तक गर्म पानी के साथ दें। यदि चूर्ण करके रखा हो तो उसमें से 3-4 ग्राम चूर्ण को आधा पाव पानी में डाल कर अर्धावशिष्ट क्वाथ करें और छान कर रोगी को प्रातः- सायं पिलावें। प्रत्येक बार ताजा क्वाथ बनाकर देना चाहिये। सब प्रकार की खाँसी इसके सेवन से दूर होती है।

- भटकटैया का पंचांग 500 ग्राम, काकड़ासिंगी 180 ग्राम, मुलहठी 25 ग्राम, अडूसा के पत्ते 10 ग्राम, पीपल 5 ग्रामऔर मिश्री डेढ़ किलो। सभी को जौकुट कर लें और 6 लीटर पानी के साथ क्वाथ करें। जब चौथाई शेष रह जाय तब उतारें और ठण्डा होने पर छान लें।

अब इस छने हुए क्वाथ में मिश्री मिला कर पकावें, जब दो तार की चाशनी तैयार हो जाय तब किंचित पिपरमेंट पीस कर मिला दें। पानक तैयार है।

मात्रा — 1-2 चम्मच यह शर्बत दिन में 3-4 बार तक दे सकते हैं। इससे सब प्रकार की खाँसी में आराम मिलता है। सूखी खाँसी में कफ निकलने लगता है और बेचैनी दूर होती है। पुरानी खाँसी, क्षयजन्य खाँसी, कच्चा कफ निकलना, स्वर- भंग, गले में खराश आदि में बहुत हितकर है। इससे ज्वर में भी बहुत कुछ लाभ होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- अनार का छिलका, काली मिर्च, मुलहठी, बहेड़ा, पापड़िया कत्था, फुलाया हुआ सुहागा और गुल बनफ्शा 10-10 ग्राम, खाने का चूना 3 ग्राम और देशी पान 50 नग।

सबको कूट पीस कर बबूल की छाल के क्वाथ के साथ 1-1 ग्राम की गोलियाँ बना कर छाया में सुखा लें।

मात्रा — 1-1 गोली, दिन में 2-3 बार देनी चाहिये। इसके सेवन से सभी प्रकार की खाँसी में लाभ होता है।

- सितोपलादि चूर्ण 3 ग्राम, प्रवाल भस्म, स्वर्ण माक्षिक भस्म और मृगश्रंग भस्म 1-1 ग्राम लेकर, खरल में घोट कर मिलावें।

मात्रा — आधा ग्राम यह दवा, तुलसी स्वरस और शहद के साथ मिला कर देनी चाहिये। दिन में 2-3 बार देने से रोगी को पर्याप्त आराम मिलता है। सब प्रकार की खाँसी में उपयोगी है।

- बेल, श्यौनाक, खम्भारी, पाढर और अरनी (यह बृहद पंचमूल हैं) इनके क्वाथ में पीपल का चूर्ण डालकर पिलाने से वातजन्य कास में शीघ्र लाभ सम्भव है।
- भारंगी, कचूर, काकड़ासिंगी, छोटी पीपल, सोंठ और मुनक्का का चूर्ण पुराने गुड़ और सरसों के तैल के साथ सेवन करने से भी वातजन्य खाँसी दूर होती है
- कचूर, काकड़ा सिंगी, छोटी पीपल, भारंगी, गुड़, नागरमोथा और जवासा के चूर्ण को सरसों के तेल के साथ सेवन करने से भी वातजन्य खाँसी में लाभ होता है।
- मुनक्का, मुलहठी, पिण्ड खजूर, छोटी पीपल और काली मिर्च का चूर्ण 1 ग्राम तक की मात्रा में असमान भाग शहद और घृत के साथ चाटने से पित्तजन्य कास दूर होती है।
- पिण्डखजूर, छोटी पीपल, मुनक्का, लाजा (खील) और शर्करा (मिश्री) समान भाग का चूर्ण शहद- घी (असमान भाग) के साथ चाटने से भी पित्तजन्य खाँसी में लाभ होता है।
- खिरेंटी, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, अडूसा और मुनक्का के क्वाथ में शर्करा और शहद मिला कर पीने से पित्त दोष की अधिकता वाली खाँसी नष्ट हो जाती है।
- पुष्करमूल, कायफल, भारंगी, छोटी पीपल और सोंठ का क्वाथ कफजन्य खाँसी में बहुत हितकर है। श्वास, हृदग्रह आदि में भी लाभ करता है।
- पंचकोल (पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ) डाल कर सिद्ध किया हुआ दूध कफज कास को दूर करता है। ज्वर तथा श्वास में भी हितकर है। इससे बल- वर्ण और जठराग्नि में भी वृद्धि होती है।
- कटेरी (छोटी) के क्वाथ में छोटी पीपल का चूर्ण मिला कर सेवन कराने से सभी प्रकार की खाँसी दूर होती है।
- अदरक के स्वरस के साथ शहद मिला कर पिलाने से कास, श्वास, जुकाम तथा कफयुक्त उपद्रव शीघ्र दूर होते हैं।
- सूखी मूली, चित्रकमूल और छोटी पीपल का चूर्ण शहद में मिला कर चटावें। इससे कास, श्वास और हिक्का रोग नष्ट होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- नागरमोथा, छोटी पीपल, मुनक्का और पके हुए कटेरी के फल लेकर चूर्ण करें और शहद के साथ चटावें। इससे क्षयजन्य खाँसी नष्ट हो जाती है।

शुष्क कास पर अव्यर्थ योग

वंश लोचन 10 ग्राम, चोटी इलायची के दाने 8 ग्राम, बबूल का गोद, कतीरा गोंद, मुलहठी और कद्दू (काशीफल) के बीजों की गिरी 6-6 ग्राम, दालचीनी 2 ग्राम, छोटी पीपल और काली मिर्च 3-3 ग्राम, बादाम की मिंगी 10 ग्राम तथा लिसोड़े पके हुए 15 नग लेकर, काष्ठौषधियों को कूट- कपड़छन कर, उसमें अन्य द्रव्य मिला कर ठीक से खरल करें और 100 ग्राम छोटी मक्खी का शहद मिला कर रखें।

मात्रा — 2-3 ग्राम तक यह अवलेह 3-4 बार सेवन करावें। इससे सब प्रकार की खाँसी शीघ्र मिट जाती है।

खाँसी की सरल गोलियाँ

सत्यानाशी की कोमल जड़ काट कर लावें और छाया में सुखा कर चूर्ण कर लें तथा उतना ही काली मिर्च का चूर्ण भी उसमें मिलावें और लहसुन के स्वरस में 3 घण्टे घोट कर चना के बराबर गोलियाँ बना लें। इन्हें छाया में ही सुखाना चाहिये।

मात्रा —दिन में 2-3 बार 1-1 गोली ताजा पानी के साथ देनी चाहिये। अथवा रोगी इन गोलियों को खाँसी के वेग के समय मुख में रख कर भी चूस सकता है। तीव्र खाँसी को भी यह शीघ्र काबू में ले आती है।

कासनाशक विशिष्ट औषधि

कटहल की जड़ लाकर स्वच्छ करें और उसके छोटे- छोटे टुकड़े करके मिट्टी की हाँडी में रखें तथा हाँडी के मुख पर सकोरा ढँक कर, मुख पर कपड़मिट्टी कर दें, जिससे उसकी सन्धि बन्द हो जाये।

अब इसे 10 सेर आरने उपलों की आग में रखकर भस्म कर लें। स्वाँग शीतल होने पर भस्म को निकाल कर खरल में महीन पीस कर रखें।

मात्रा —2 रत्ती यह भस्म, अदरक के स्वरस में शहद मिला कर सेवन करने से भयंकर खाँसी भी ठीक हो जाती है। श्वास के वेग में भी यह दवा बहुत आराम पहुँचाती है।

कासान्तक लेह

मुलहठी, काकड़ासिंगी और वंश लोचन 25-25 ग्राम,

छोटी पीपल, लौंग, छोटी इलायची और काली मिर्च 10-10 ग्राम तथा यवक्षार 8 ग्राम। सबको कूट- पीस कर चूर्ण कर लें।

अब 1 किलोग्राम मिश्री की चाशनी बनावें और उसके इस चूर्ण को मिला कर रखें।

मात्रा — 3 ग्राम से 6 ग्राम तक प्रातः- सायं सेवन करनी चाहिये। इससे चिकित्सा शास्त्र में वर्णित पाँचों प्रकार की खाँसी नष्ट हो जाती है। कण्ठ स्वर सुरीला होता है। सामान्य ज्वर में तो यह दवा लाभ करती ही है, क्षय प्रभृति रोग में ज्वर होने पर भी लाभकारी सिद्ध होती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

खाँसी में चूसने की गोलियाँ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ी इलायची, सत- मुलहठी, बबूल का गोंद, सत- उन्नाव, बादाम की गिरी, कद्दू (काशीफल) की गिरी, तरबूजे की गिरी, खरबूजे की गिरी, फुलाया हुआ सुहागा, केशर और पिपरमेंट, सभी 10-10 ग्राम, वंश लोचन 50 ग्राम और मिश्री 100 ग्राम लेकर, सबका अत्यन्त महीन चूर्ण कर तथा अडूसा के क्वाथ के साथ मटर प्रमाण गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1 से 2 ग्राम तक प्रातः सायं देनी चाहिये। अथवा खाँसी के वेग में 1-1 गोली मुख में रखकर 3-3 घंटे के अन्तर से चुँसवानी चाहिये। इससे खाँसी का वेग शान्त होता है और रोगी चैन का अनुभव करता है। बालकों की खाँसी या कुकर खाँसी में भी यह दवा काम करती है।

वंशलोचन का कास में प्रभावी उपयोग

वंशलोचन एक ऐसा द्रव्य है जो अनेकानेक योगों में प्रयुक्त होता है। बहुत सी प्रसिद्ध औषधियाँ इसी के योग से बनती हैं और सम्बन्धित रोगों पर आश्चर्य रूप से कार्य करती है। सितोपलादि, तालीशादि तथा और भी बहुत सी दवाओं में इसका मिश्रण शरीर को रोगमुक्त और प्राणवान बनाने को दिया जाता है। खाँसी और श्वास में भी इससे अत्यधिक लाभ उठाया जाता है।

खाँसी यदि सूखी हो तो आधा ग्राम तक वंश लोचन शहद के साथ चाटने से नष्ट हो जाती है। श्वास में भी वंश लोचन बहुत लाभकारी है। आधे ग्राम की मात्रा में वंशलोचन चूर्ण में 1 चुटकी पीपल का चूर्ण मिला कर शहद के साथ देने से पर्याप्त लाभ दिखाता है।

कास ज्वर में प्रसिद्ध सितोपलादि

खाँसी, खास, क्षय, हाथ- पाँव जलन, हड़कल, मन्दाग्नि, सुप्त जिह्वा, पार्श्व - पीड़ा, अरुचि, सब प्रकार के ज्वर, ऊर्ध्वगत रक्त तथा पित्त रोगादि में सितोपलादि आश्चर्यजनक रूप से लाभकारी है। इसमें मिश्री 16 भाग, वंश लोचन 8 भाग, पिप्पली 4 भाग, छोटी इलायची 2 भाग और दालचीनी 1 भाग का मिश्रण रहता है।

इसे 1-2 ग्राम की मात्रा में शहद के साथ सेवन करने से तुरन्त आराम प्रतीत होता है। इसे अन्य औषधियों या रस, भस्मों के साथ मिला कर देने से चमत्कारी लाभ दिखाई देता है।

घोर खाँसी में वासावलेह

अडूसा का स्वरस 128 तोले लें, उसमें श्वेत शर्करा 32 तोले, छोटी पीपल का चूर्ण और गोघृत 8-8 तोले मिला कर मन्द अग्नि पर पकावें तथा गाढ़ा होने पर उतार कर ठण्डा होने दें। अब इसमें मधु 32 तोले मिला कर रखें।

यह अवलेह राजयक्ष्मा, कास, श्वास, पार्श्वशूल, हृदय के शूल, रक्तपित्त तथा ज्वर को भी नष्ट करता है। (भै.र.)

इसकी मात्रा 1 चम्मच, अथवा रोग की स्थिति के अनुसार निश्चित करनी चाहिये।

सर्वकास में कण्टकारी घृत

छोटी कटेरी का स्वरस 16 सेर (स्वरस के अभाव में कटेरी का क्वाथ बना लें) लेकर उसमें गोघृत 4 सेर मिलावें। फिर रास्ना, खिरेंटी, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल और गोखरू

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

10-10 तोले लेकर, जल के साथ पीसते हुए कल्क बनावें तथा इस कल्क को उसी रसयुक्त घृत में मिला कर मन्दाग्नि पर पकावें। जब स्वरस या क्वाथ जल कर घृत मात्र शेष रहे तब उतार कर छान लें। यह घृत पाँचों प्रकार की खाँसी को नष्ट कर देता है।

मात्रा — 3 से 6 माशे तक।

कास उरःक्षतादि में बलाद्य घृत

क्वाथ के लिये बला, नागबला और अर्जुन की छाल, सब मिला कर 4 सेर लें, इन्हें जौकुट करें।

कल्क के लिये मुलहठी 1 सेर लेकर पानी के साथ पीसें। सबको मिला कर 32 सेर जल के साथ क्वाथ करें, जब 8 सेर शेष रह जाये तब उतार लें।

अब इसमें 2 सेर घृत लेकर मन्दाग्नि पर पकावें और घृत मात्र शेष रहे तब उतार कर, ठण्डा होने पर छान लें।

मात्रा — 3 से 6 माशे तक। इसके सेवन से उरःक्षत, रक्तपित्त, खाँसी, वातरक्त तथा हृदोग दूर होता है। यह प्रयोग भैषज्य रत्नावली के हृद्रोगाधिकार का है, किन्तु खाँसी में, विशेष कर उरःक्षजन्य कास में बहुत लाभकारी है।

कासक्षयादि में महाकालेश्वर रस

लौह भस्म, वंगभस्म, ताम्र भस्म, अभ्रक भस्म, स्वर्णमाक्षिक भस्म, शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, शुद्ध हिंगुल, शुद्ध सींगिया, विष, जायफल, लौंग, दालचीनी, छोटी इलायची, नागकेशर, धतूरे के बीज और शुद्ध जमालगोटा 1-1 तोला तथा काली मिर्च 3 तोले लें।

पहिले पारद- गन्धक की कज्जली करें। काष्ठौषधियों को कूट- कपड़छन कर उसमें यह कज्जली तथा अन्य सभी द्रव्य महीन करके मिलावें। फिर भाँग की पत्तियों के स्वरस की 21 भावनाएँ दें। घोटने में लोहे की मूसली का प्रयोग करें। अन्त में 1-1 रत्ती प्रमाण गोलियाँ बना कर रखें।

मात्रा — अधिकतम 1 गोली है। बालकों, वृद्धों, दुर्बल मनुष्यों को तो आधी या उससे भी कम मात्रा देनी चाहिये। इस दवा का अनुपान अदरक का स्वरस है।

इसके सेवन से पाँचों प्रकार की खाँसी, क्षय, श्वास, यक्ष्मा, सन्निपात, कण्ठरोग, अभिन्यास, मूर्च्छा आदि दूर होती हैं।

कास- श्वासादि में स्वच्छन्द भैरव रस

शुद्ध पारद 1 भाग, शुद्ध गन्धक और सेंधा नमक 2-2 भाग। गन्धक- पारद की कज्जली करके, नमक को भी कज्जली के समान महीन करके उसमें मिलावें तथा फिर इसे ज्वालामुखी के स्वरस में 5 दिन पर्यन्त खरल करके वज्रमूषा में बन्द करें और रात्रि के समय मध्यम पुट दें। स्वाँग शीतल होने पर निकाल कर रख लें।

मात्रा — 2-3 रत्ती तक रोगानुरूप अनुपान के साथ देनी चाहिये। इससे कास, श्वास, ग्रहणी, संग्रहणी, उग्र ज्वर, तन्द्रा, निद्रानाश आदि रोगों का नाश होता है। रोगी को रोग से छुटकारा मिल कर शरीर में बल, वर्ण, शक्ति तथा तेज की वृद्धि होती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्षयजन्य कास में समशर्करा लौह

लौंग, कायफल, कूट, अजवाइन, त्रिकटु, चित्रकमूल, पीपलामूल, अडूसा, कटेरी, चव्य, काकड़ासिंगी, दालचीनी, तेजपात, छोटी इलायची, नागरकेशर, हरड़, कचूर, कंकोल, नागरमोथा, लौह भस्म, अभ्रक भस्म और यवक्षार समान भाग लेकर सभी काष्ठौषधियों को कूट- कपड़छन करें और उसमें भस्मादि भी मिला दें। फिर सब के वजन के बराबर मिश्री लेकर मिलावें और भले प्रकार घोट कर घृत के चिकने पात्र में रखें।

मात्रा —1 माशे तक इस लौह का सेवन शहद के साथ करें। रोगानुसार अन्य उचित अनुपान से भी कर सकते हैं।

इसके सेवन से कास, श्वास, रक्तपित्त, क्षयजन्य खाँसी तथा श्वास रोग भी नष्ट होता है। यह क्षीण व्यक्ति को पुष्ट करके, उसके बल और जठराग्नि का वर्धक है। (भै.र.)

क्षयकास उरक्षतादि में द्राक्षारिष्ट

मुनक्का ढाई सेर लेकर, 25 सेर 48 तोले पानी के साथ पकावें। जब चौथाई जल शेष रहे, तब उतार कर ठण्डा होने पर छानें और गुड़ 10 सेर और दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर, प्रियंगु पुष्प, काली मिर्च, छोटी पीपल और वायविडंग 4-4 तोले लेकर कूटें और उस काढ़े तथा गुड़ के साथ मिला दें। तदुपरान्त चिकने पात्रों में रखें और पात्रों का मुख बन्द करके 30-40 दिनों तक रखने के बाद छान कर बोतलों में भर लें।

इसके सेवन से उरःक्षत, क्षय, खाँसी, श्वास तथा कण्ठ के विकार दूर हो जाते हैं, इससे शरीर को शक्तिप्राप्त होती है और मल का भी शोधन होता है।

मात्रा — 2 तोले द्राक्षारिष्ट समान भाग पानी मिला कर भोजन के पश्चात् दोनों समय सेवन करना चाहिये।

18.श्वास (दमा) चिकित्सा

श्वास- भेद एवं लक्षण

यह रोग सर्वाधिक कष्टकारी है। जिसे लग गया, उसे सदैव दुःख देता है और सहज में पीछा नहीं छोड़ता। इसीलिये कहते हैं कि दमा दम के साथ जाता है। ऐलोपैथ इस रोग को अस्थमा कहते हैं।

आयुर्वेद ने इसके भी पाँच भेद माने हैं — 1. क्षुद्र श्वास, 2. तमक श्वास, 3. श्वास, 4. ऊर्ध्वश्वास, और 5.छिन्न श्वास। इसका कारण है —

यदा स्रोतांसि संरुध्य मारुतः कफपूर्वक।
विष्वग्व्रजाति संरुद्धस्तदा श्वासान् करोति सः॥

अर्थात् —जब कुपित हुआ वायु कफ से युक्त होकर, अन्न- जल आदि के स्रोतों (मार्गों) को अवरुद्ध कर देता है, तथा स्वयं भी उन मार्गों के अवरुद्ध होने से सब ओर घूमता हुआ रुकता है (निकलने का मार्ग नहीं पाता) तब वह श्वास रोग को उत्पन्न कर देता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- **क्षुद्रश्वास** — रूक्ष पदार्थ सेवन और शक्ति से अधिक परिश्रम के कारण जब वायु कुछ ऊपर की ओर उठती है, तह वह क्षुद्र श्वास को उत्पन्न कर देती है। किन्तु इसके लक्षण प्रायः अप्रकट ही रहते हैं।

- **तमक श्वास** — वायु कण्ठ को जकड़ कर और कफ को उभार कर स्रोतों में विपरीत रूप से चढ़ता है, जिससे पीनस की उत्पत्ति होती है, तब गले में घुर्र- घुर्र के साथ पीड़ा उत्पन्न करता हुआ श्वास वेग से चलता है, जिससे भय, भ्रम, खाँसी, कष्ट के साथ कफ का निकलना, कष्ट से बोल सकना, अनिद्रा, निष्क्रियता आदि लक्षण होते हैं। सिर- दर्द, मुख में सूखापन, कभी- कभी चेतना की कमी सी दिखाई देती है। इसका प्रकोप वर्षा में भीगने या शीतकाल में ठण्ड लगने से भी हो जाता है।

- **ऊर्ध्वश्वास** — ऊपर को वेग से श्वास का खिंचना, नीचे को लौटते समय कठिनाई का होना, नाड़ी स्रोतों का कफ से भर जाना, ऊपर की ओर दृष्टि का रहना, घबराहट से इधर- उधर देखना तथा नीचे की ओर श्वासावरोध के साथ मूर्च्छा का होना आदि लक्षण होते हैं।

- **महाश्वास** — वायु का ऊपर की ओर अधिक खिंचा सा रहना, खाँसने में अधिक कष्ट, उच्च श्वास, सामान्य ज्ञान का भी न रहना, मुख और नेत्रों का खुले रहना, मलावरोध, मूत्रावरोध, बोलने में कठिनाई तथा श्वास के साथ घर्र- घर्र का शब्द दूर से ही सुनाई देना आदि लक्षण होते हैं।

- **छिन्न श्वास** — सभी प्राणों के पीड़ित रहने के कारण ठीक प्रकार से श्वास न ले सकना, रुक- रुक कर श्वास लेना, पेट फूलना, पेडू में जलन, स्वेद की अधिकता, नेत्रों का सजल रहना तथा इधर- उधर घूमना, श्वास लेने में कष्ट के कारण मुख तथा नेत्रों का लाल हो जाना, मुख सूखना, चित्त में उद्विग्नता, अस्पष्ट वचन, निरर्थक बकवास करना आदि लक्षण होते हैं।

श्वास में औषधोपचार संग्रह

- अदरक के स्वरस में शहद मिला कर सेवन करने से सब प्रकार के श्वास, खाँसी, जुकाम, अरुचि आदि में लाभ होता है।

- वासा स्वरस में शहद मिला कर पीने से अधिक खाँसी युक्त श्वास में लाभ होता है। क्षय, कामला, ज्वर, रक्तपित्त में भी हितकर है।

- छोटी कटेरी का पंचांग पीस कर गोला बनावें और पुटपाक विधि से अग्नि में पका कर रस निकालें। उस रस में छोटी पीपल का चूर्ण डाल कर पीने से श्वास, खाँसी और कफ के रोग दूर होते हैं।

पुटपाक की विधि यह है कि जिस वस्तु का पुटपाक करना हो उसे पीस कर गोला बना लें और उस पर कम्भारी, बरगद, जामुन अथवा आम के पत्ते लपेट कर सूत से बाँधें और उस पर आटे का मोटा सा लेप करें तथा उस पर भी मिट्टी का दो अंगुल मोटा लेप करके, उसे आरने उपलों की अग्नि में पकावें। जब मिट्टी लाल हो जाय, तब निकाल कर, लेप, पत्ते आदि अलग करके, उस वस्तु का रस निकाल लें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- बहेड़ों को किंचित् घृत से चुपड़ कर पुटपाक विधि से पकावें। जब पक जाय, तब मिट्टी आदि हटा कर बहेड़ों को निकाल लें। इसका वक्कल मुख में रख कर चूसने से खाँसी, श्वास, जुकाम, स्वर- भंग आदि रोगों में शीघ्र लाभ होता है।
- छोटी पीपल, सोंठ और आमले समान भाग का 2-3 ग्राम तक की मात्रा में चूर्ण, असमान भाग घी और शहद के साथ खाने से श्वास तथा हिचकी दूर होती है।
- काली मिर्च, पुष्करमूल और यवक्षार को जल के साथ पीस कर बनाया हुआ कल्क, गर्म पानी में घोल कर पीने से श्वास और हिक्का का शमन होता है।
- सोंठ और हरड़ का कल्क भी 1 या 2 ग्राम की मात्रा तक, गर्म जल के साथ लेना चाहिये। श्वास में आराम मिलता है।
- छोटी पीपल का चूर्ण 1 ग्राम में चौथाई भाग मोरपंख की भस्म मिला कर शहद के साथ चाटें। अत्यन्त बढ़ा हुआ श्वास रोग भी शान्त हो जाता है।
- धतूरे का पंचांग कूट कर सुखा लें और उसको चिलम में रखकर धूम्र पान की तरह करें। इससे श्वास नष्ट होता है।
- हल्दी, काली मिर्च, मुनक्का, रास्ना, छोटी पीपल, कचूर और पुराना गुड़ पीस कर सरसों के तैल में मिलावें। इसे 1 ग्राम तक की मात्रा में सेवन करने से प्रबल श्वास में भी लाभ होता है।
- पुराना गुड़ और सरसों का तैल 1-1 तोला एकत्र मिला कर नित्यप्रति सेवन करने से 3 सप्ताह में सब प्रकार का श्वास रोग समूल नष्ट हो जाता है। हमारे विचार में इसकी मात्रा 1 ग्राम पर्याप्त है।
- हरड़, बहेड़ा, आमला और छोटी पीपल, चारों समान भाग लेकर चूर्ण करें। इसे 1 ग्राम की मात्रा में शहद के साथ मिला कर चाटने से श्वास- कास में लाभ होता है। जठराग्नि भी तीव्र होती है, कब्ज दूर होता है।
- कायफल, पुष्करमूल, काकड़ासिंगी, नागरमोथा, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल और कचूर समान भाग लेकर कूट- छान लें।

इस चूर्ण को अदरक के स्वरस और शहद के साथ सेवन करने से श्वास में कफ का वेग शान्त होता है। यह श्वास, कास, वमन, अरुचि, वात रोग तथा शूल आदि को नष्ट करने में समर्थ है।

- कायफल, पुष्करमूल, छोटी पीपल और काकड़ासिंगी का चूर्ण भी शहद के साथ चाटने से श्वास, खाँसी तथा बढ़े हुए कफ को शीघ्र दूर करता है।
- सोंठ, काला नमक, भुनी हींग, अनारदाना और अम्ल वेंत समान भाग लेकर कूट- छान लें और दुगुने गुड़ में मिला कर गोली बना लें। इसे मुख में रख कर चूसने चूँसने से श्वास- कास में लाभ होता है।
- सोंठ, हरड़ और नागरमोथा समान भाग लेकर कूट- छान लें और दुगुने गुड़ में मिला कर गोली बना लें। इसे मुख में रख कर चूँसने से श्वास- कास में लाभ होता है।
- केवल बहेड़े का छिलका मुख में रखने से भी श्वास- कास का शमन होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- पेठे का चूर्ण 3 ग्राम की मात्रा में सुखोष्ण जल के साथ सेवन करने से कठिनतम श्वास रोग भी दूर होता है। यह रोग खाँसी में लाभदायक है।
- काली मिर्च और शुद्ध गन्धक समान भाग का चूर्ण गोघृत में मिला कर सेवन करने से श्वास में शीघ्र लाभ सम्भव है।
- केवल गन्धक का चूर्ण गोघृत के साथ सेवन करने से भी श्वास का शमन होता है।
- पुष्करमूल का महीन चूर्ण दशमूल के क्वाथ में डाल कर पीने से श्वास, कास, पार्श्वशूल, हृच्छूलादि में शीघ्र लाभ हो जाता है।
- छोटी पीपल और सेंधा नमक समान भाग लेकर चूर्ण करें। इसे 1 ग्राम की मात्रा में अदरक- स्वरस के साथ, नित्यप्रति रात्रि में शयन समय सेवन करना चाहिये। इससे एक सप्ताह में ही सब प्रकार के श्वास काबू में आ जाता है।

द्रष्टव्य — उपर्युक्त सभी द्रव्य शास्त्रीय हैं।

- बहेड़ा का छिलका 40 ग्राम, फुलाया हुआ नौसादर 2 ग्राम और सोनागेरू 1 ग्राम लेकर बहेड़े के छिलकों को बहुत महीन पीस- छान लें और उसमें नौसादर और गेरू भी महीन करके मिलावें, दवा तैयार है।

मात्रा — 2-3 ग्राम तक मधु के साथ प्रातः- सायं सेवन करावें। श्वास रोग में यह दवा चमत्कारी लाभ दिखाती है।

- खसखस के दाने 60 ग्राम और पोस्त डोडे 10 ग्राम लेकर रात्रि समय चौथाई लीटर पानी के साथ एक मृत्तिका पात्र में भिगोवें और प्रातःकाल सिल पर पीस कर, कल्क को उसी पानी में घोल कर छान लें। यह द्रव्य श्वेत रंग का तैयार होगा। इसे कढ़ाई में चढ़ा कर मन्दाग्नि में पकावें और कुछ गाढ़ा होने लगे तब 10 ग्राम मिश्री का चूर्ण उसमें मिला कर उतारें और ठण्डा होने पर चौड़े मुख की शीशी में रखें।

मात्रा — 3 ग्राम यह अवलेह प्रातः- सायं सेवन करने से सब प्रकार के श्वास रोग दूर होते हैं।

- पुराना बाजरा 100 ग्राम लेकर, उसे 24 घंटे पर्यन्त अकौआ के दूध में गीला रखें और फिर उसकी भस्म बना लें।

मात्रा — 3-4 रत्ती भस्म पान में रख कर सेवन करने से सब प्रकार के श्वास में शीघ्र लाभ होता है।

- रामबाँस के पत्तों के स्वरस में सेंधा नमक डाल कर पीने से एक घंटा भर में ही कफ निकल जाता है। इस दवा का सेवन निरन्तर करते रहने से कुछ दिनों में ही श्वास रोग पूर्णरूप से नष्ट हो जाता है।
- लोवान का सत श्वास दूर करने में बहुत हितकर है। एक चावल भर लोवान सत को गर्म पानी के साथ प्रत्येक एक या दो घण्टे पर सेवन किया जा सकता है।
- अडूसा की भस्म, वन कण्डों की भस्म और नौसादर 12-12 ग्राम, श्वेत फिटकरी का फूला और सत लोबान 3-3 ग्राम सबको मिला कर महीन चूर्ण बना लें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मात्रा — 2-2 रत्ती प्रमाण यह औषधि शहद में मिला कर चटानी चाहिये। श्वास, खाँसी, यक्ष्मा को अवश्य दूर करती है।

- सितोपलादि चूर्ण 4 रत्ती, सत गिलोय 4 रत्ती और स्वर्ण वसन्त मालती 1 रत्ती मिला कर खरल करें और दो चम्मच शहद के साथ सेवन करावें। श्वास- कास, यक्ष्मा आदि में इससे अवश्य लाभ सम्भव है।

- मुलहठी, मिश्री, गुलवनफ्शा, उन्नाव और छोटी कटेरी और मिश्री 10-10 ग्राम लेकर महीन चूर्ण करें और शहद के साथ खरल करके बेर के बराबर गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1-1 गोली कत्था- चूना लगे हुए पान में रख कर धीरे- धीरे चूँसें।

इससे सब प्रकार के श्वास, खाँसी, कफ के साथ रक्तजाना तथा बिगड़ा हुआ जुकाम भी ठीक हो जाता है।

- बहेड़े की छाल 20 ग्राम, छोटी पीपल, मुलहठी, कुलिंजन, कत्था, वंशलोचन, यवक्षार और सेंधा नमक 10-10 ग्राम, काली मिर्च और छोटी इलायची के बीज 5-5 ग्राम।

सबको कूट- कपड़छन करके अदरक के स्वरस की 2 भावनाएँ देकर 2 रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनावें और छाया में सुखा कर रखें।

मात्रा — 1-1 गोली मुख में रखकर चूँसनी चाहिये। इसके प्रभाव से रुका हुआ कफ शीघ्र बाहर निकल आता है। सब प्रकार के श्वास रोग और उनके उपद्रवों में हितकर है। प्रबल खाँसी का भी शमन करती है।

श्वास रोग पर अन्य उपयोगी योग

- शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, शुद्ध धतूरे के बीज, प्रत्येक 10 ग्राम लेकर, पारद- गन्धक की कज्जली कर लें और धतूरे के बीज भी पीस कर कपड़छन करके उसी में मिला दें। फिर अदरक के स्वरस के साथ निरन्तर 10-12 घण्टे तक खरल करके 1-1 रत्ती प्रमाण गोलियाँ बना कर छाया में सुखा लें।

मात्रा — 1 से 3 गोली तक, रोग की स्थिति और रोगी का बलाबल देखकर देनी चाहिये। अनुपात असमान भाग शहद और घृत। ऊपर से पेठे का क्वाथ पिला दें।

इसके सेवन से सब प्रकार के श्वास और उनके उपसर्गों में शीघ्र ही पर्याप्त लाभ रहता है।

- आक दूध से निर्मित बारहसिंगा भस्म, आक के दूध से ही बनी हुई सेंधे नमक की भस्म, गोदन्ती हरताल भस्म, सत लोबान, अपामार्ग क्षार, वासा (अडूसा) क्षार और आक का क्षार 10-10 ग्राम, नौसादर 20 ग्राम, मुलहठी 30 ग्राम, कलमी शोरा 40 ग्राम।

सभी औषध- द्रव्यों का महीन चूर्ण करके तथा एकत्र खरल करके सुरक्षित रखें। श्वास को नष्ट करने में यह रसायन गुण वाली महौषधि है। खाँसी, जुकाम, नजला भी ठीक करती है।

मात्रा — 1 से 3 रत्ती तक अडूसा के शर्बत अथवा अडूसा की चटनी में मिला कर प्रातः- सायं सेवन करानी चाहिये।

- अमलताश का गूदा 50 ग्राम और सेंधा नमक 5 ग्राम लेकर मिलाहो और उसे ग्वार-पाठे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

के रस में तर करके, विधि पूर्वक भस्म कर लें। इस भस्म में किंचित् नौसादर मिला कर, मधु के साथ सेवन करावें। इससे श्वास तथा कफ युक्तकास में अत्यन्त लाभ होता है।

- नागफनी के पक कर लाल हुए फल लाकर, उनका रस निकालें और उस रस के साथ समान भाग मिश्री मिला कर अवलेह कर लें तथा उसमें आंशिक रूप से कुटकी का चूर्ण डाल कर सेवन करायें।

मात्रा — आधे ग्राम से एक ग्राम तक सेवन करने से श्वास का वेग (दौरा) शीघ्र रुक जाता है।

- शुद्ध सींगिया विष, शुद्ध गन्धक, शुद्ध पारद, फुलाया हुआ सुहागा, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल और मैनसिल समान भाग लें। पहले गन्धक- पारद की कज्जली करें, काष्ठौषधियों को कूट- छान कर उसमें मिलावें तथा अन्य द्रव्य भी मिला कर धतूरे के स्वरस में 8-10 घंटे खरल करके, चिरमिठी के बराबर गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1-1 गोली प्रातः- सायं शहद के साथ दें। सूखी खाँसी में मलाई के साथ देनी चाहिये। इससे सब प्रकार के कठिन श्वास तथा तीव्र कास का भी शमन होता है।

श्वासादि में लवणादि चूर्ण

यह कफ, खाँसी, श्वास, जुकाम आदि में अधिक हितकर है तथा तमक श्वास में विशेष रूप से प्रभावकारी है।

लौंग, भीमसेनी कर्पूर, छोटी इलायची के बीज, दालचीनी, नागकेशर, जायफल, खस, सोंठ, काला जीरा, काली अगर, वंश लोचन, जटामांसी, नील कमल, छोटी पीपल, श्वेत चन्दन, तगर, सुगन्धबाला और कंकोल सभी समान भाग लेकर कूट- कपड़छन करके चूर्ण बनावें और फिर चूर्ण की तौल के बराबर वजन में उसमें मिश्री को चूर्ण करके मिला दें।

यह अग्निवर्धक, रुचिकारक, धातुवर्धक, वात- पित्त- कफ का नाशक तथा बल का देने वाला है। इसके सेवन से हृद्रोग, कण्ठरोग, खाँसी, हिक्का, जुकाम, राजयक्ष्मा, तमक, श्वास, अतिसार, उरःक्षत, प्रमेह, अरुचि, संग्रहणी तथा गुल्म आदि रोग नष्ट हो जाते हैं।

कास- श्वासादि में तालीशादि चूर्ण

तालीशपत्र 1 भाग, काली मिर्च 2 भाग, सोंठ 3 भाग, छोटी पीपल 4 भाग, वंश लोचन 5 भाग, छोटी इलायची के बीज और दालचीनी आधा- आधा भाग, इनको कूट- छान कर चूर्ण करें और उसमें 32 भाग मिश्री का चूर्ण मिला कर रखें।

यह चूर्ण रोचन, पाचन है, खाँसी, श्वास, ज्वर, वमन, अतिसार, शोष, अफरा, तिल्ली, संग्रहणी तथा पाण्डु आदि रोगों को नष्ट कर देता है।

मात्रा — 1 माशा शहद के साथ।

इस चूर्ण को मिश्री अथवा चीनी की चाशनी में मिला कर गोलियाँ बी बनाई जा सकती हैं। (शारंगधर)

सर्वश्वास हर व्याधी चूर्ण

कटेरी की जड़, श्वेत जीरा और आमला समान भाग लेकर कूटें और कपड़छन चूर्ण बना लें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इसके सेवन से ऊर्ध्ववात (ऊर्ध्वश्वास), महा श्वास और तमक श्वास का योग क्षणभर में शान्त हो जाता है। (शारंगधर)

मात्रा — 1-1 माशे, गर्म जल या अन्य किसी उचित अनुमान के साथ देनी चाहिये।

प्रबल श्वास पर पिप्पलादि लौह

छोटी पीपल, आमला, मुनक्का, बेर की गुठली की मिंगी, मुलहठी, वायविडंग, पुष्करमूल और शर्करा (मिश्री) 10-10 ग्राम तथा लौह भस्म 80 ग्राम लेकर काष्ठौषधियों को कूट- कपड़छन करें और फिर सबको मिला कर जल- योग से खरल करते हुए 2 रत्ती प्रमाण गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1-1 रत्ती प्रातः- सायं अथवा आवश्यकतानुसार उचित अनुपात से देनी चाहिये। इसके सेवन से सब प्रकार का प्रबल श्वास तीन दिन में नष्ट होता है। हिक्का तथा वमन में भी हितकर है। (भै.र.)

ऊर्ध्वश्वासादि में सूर्यावर्त रस

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, दोनों समान भाग लेकर 3 घण्टे पर्यन्त ग्वारपाठे के रस में घोटें तथा उससे दुगुने प्रमाण के ताम्र- पात्र में भीतर लेप करके, उस पात्र को बालुका यन्त्र द्वारा एक दिन भर अग्नि दें। स्वाँग शीतल होने पर निकाल कर, पात्र समेत अत्यन्त महीन चूर्ण कर लें।

मात्रा — नित्यप्रति आधी रत्ती इन्द्रायन- जड़, देवदारू और त्रिकटु क्वाथ के साथ शर्करा मिला कर सेवन करावें।

इससे श्वास रोग, विशेष कर ऊर्ध्वश्वास में अत्यन्त लाभ होता है। इन्द्रायन आदि का क्वाथ न करें तो उनके चूर्ण के साथ भी सेवन कर सकते हैं। (भै.र.)

श्वासान्तक अवलेह का अव्यर्थ योग

गूलर की छाल, गूलर के पत्ते और गूलर के फल, प्रत्येक 1 किलोग्राम लेकर 8 लीटर पानी में दो दिन- रात्रि भीगने दें और फिर अग्नि पर चढ़ा कर क्वाथ बनावें। जब चौथाई पानी शेष रहे तब उतार कर छानें और उसमें खजूर की मिश्री 2 किलोग्राम मिला कर चाशनी करें। इस प्रकार अवलेह तैयार है।

मात्रा — 10-10 ग्राम तक यह अवलेह प्रातः, मध्याह्न और रात्रि में सेवन कराना चाहिये। इससे सब प्रकार के श्वास में शीघ्र लाभ होता है।

श्वासादि पर पुनर्नवा रसायन

लाल पुनर्नवा की जड़ 6 ग्राम, ताजा लेकर छाया- शुष्क होने दें। जब वह सूख जाय, तब उसे लाल पुनर्नवा की जड़ के ही स्वरस में तीन दिन तक भीगने दें और तत्पश्चात् छाया में सुखा कर श्वेत पुनर्नवा की जड़ के स्वरस में 3 दिन तक भिगो कर छाया में सुखा लें। तत्पश्चात् खरल में डाल कर उसका महीन चूर्ण बना लेना चाहिये। इस प्रकार औषधि तैयार हो गई।

प्रयोग विधि — पहिले दिन सायंकाल 50 ग्राम बढ़िया चावल पका कर एक पात्र में रखें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
और ऊपर से उसमें ताजा पानी भर दें। दूसरे दिन प्रातःकाल 3 नग काली मिर्च के साथ वह उपर्युक्त औषधि पाव लीटर पानी के साथ पीसें और उस घोल को नीहार- मुख पीवें।

औषधि सेवन के पश्चात्, उसी समय, पहिले दिन पकाये हुए चावल का पानी निथार कर फेंक दें और चावलों को दही के साथ जितने खा सकें भरपेट खायें। दही में इच्छानुसार नमक या शर्करा मिला सकते हैं। यदि चावलों की मात्रा कम हो तो 50 ग्राम से अधिक लेनी चाहिये।

अपथ्य — उस समय के पश्चात् दही, चावल, शर्करा, मिठाई, लाल मिर्च, तैल, खटाई, माँस, मछली, अण्डा तथा मादक द्रव्यों से 40 दिन तक परहेज करना चाहिये।

यह महात्मा प्रदत्त प्रयोग एक बार किसी पत्रिका में छपा था। श्वास प्रभृति रोगों में हितकर है।

श्वास में उपयोगी प्रवालमूल भस्म

प्रवाल (मूँगा) की जड़ 25 ग्राम तथा आक का दूध 1 लीटर लें। जड़ को कूट कर आक के दूध में डालें और उसे एक हाँडी में रखकर शरबा सम्पुट करें तथा 50 किलो आरने उपलों की अग्नि में पकावें। स्वाँग शीतल होने पर निकाल कर पीसें और शीशी में सुरक्षित रखें।

मात्रा — 1-2 चावल भर बंगला पान के साथ देनी चाहिये। पथ्य में अरहर की दाल के साथ गेहूँ की रोटी खानी चाहिये। दाल में असली घी डाल लेना चाहिये। शेष पदार्थ अपथ्य हैं।

श्वास- रोग नाशक रयायन

लौह भस्म 60 ग्राम, शुद्ध गन्धक आमलासार 30 ग्राम, सहस्रपुटी अभ्रक भस्म 25 ग्राम, स्वर्ण भस्म, स्वर्ण माक्षिक भस्म और रस सिन्दूर 15-15 ग्राम और मुक्ता भस्म 8 ग्राम, प्रवाल भस्म 5 ग्राम।

सबको एकत्र खरल करके क्रमशः छोटी कटेरी के स्वरस की, बकरी के दूध की, मुलहठी के रस (अथवा क्वाथ) की और नागर पान की 10-10 भावनाएँ देनी चाहिये और अन्त में 2-2 रत्ती प्रमाण गोलियाँ बना लेनी चाहिये।

मात्रा — 1-1 गोली चौंसठ प्रहरी पीपल और शहद के साथ सेवन कराने से सब प्रकार के श्वास- कास रोगों से छुटकारा मिलता है। कैसा भी नया- पुराना श्वास हो, पीव के कारण कफ पीला तथा दुर्गन्ध युक्त निकलता हो, भयंकर खाँसी, हृदय- दौर्बल्य, पाण्डु, दाह, रक्त की कमी, फेफड़ों में शिथिलता, क्षय, अग्निमान्द्य आदि में बहुत शीघ्र लाभ दिखाती तथा श्वास को समूल नष्ट करने वाली रसायन है।

उपर्युक्त योग भैषज्य रत्नावली के श्वास चिन्तामणि रस से प्रायः मिलता है। उसका योग इस प्रकार है —

श्वास चिन्तामणि रस

लौह भस्म 2 तोला, शुद्ध गन्धक 1 तोला, अभ्रक भस्म 1 तोला, शुद्ध पारद और स्वर्णमाक्षिक भस्म 6-6 माशे, मुक्ताभस्म 3 माशे और स्वर्ण भस्म 3 माशे लेकर एकत्र खरल करें और फिर क्रमशः कटेरी- स्वरस की, अदरक स्वरस की, बकरी के दूध की और मुलहठी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
के क्वाथ की एक- एक भावना देकर 2-2 रत्ती प्रमाण गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1-1 गोली प्रातः- सायं बहेड़े की छाल के चूर्ण के साथ, शहद के साथ सेवन करनी चाहिये। यह रस सब प्रकार के श्वास, कास, यक्ष्मा आदि को दूर करता है।

श्वास पर हितकर कनकासव

धतूरे का पंचांग (शाखा, मूल, पत्र और फल सहित) कूट कर 16 तोले, वासा- मूल की छाल 16 तोले, मुलहठी, छोटी पीपल, कटेरी, नागकेशर, सोंठ, भारंगी और तालीशपत्र, इन सब का चूर्ण 8-8 तोले, धाय के फूल 64 तोले, मुनक्का 80 तोले, जल 25 सेर 48 तोले, शर्करा 5 सेर और शहद ढाई सेर लेकर पर्याप्त मिलावें और मिट्टी घड़ों में बन्द करके 30-40 दिनों तक रखा रहने दें तथा बाद में छान कर बोतलों में रखें।

मात्रा — 3 माशे से 1 तोला तक समान भाग पानी मिला कर सेवन करावें। इससे सब प्रकार के श्वास, कास, यक्ष्मा, क्षत, क्षीणता, जीर्ण ज्वर, रक्तपित्त तथा उरःक्षत प्रभृति रोग समूल नष्ट हो जाते हैं। अधिक मादक होने के कारण मात्रा विचार पूर्वक देनी चाहिये।

19. हिक्का (हिचकी) चिकित्सा

हिचकी (हिक्का) सामान्यतः चाहे जब आने लगती है, इसलिये इनकी उपेक्षा की जाती है। किन्तु यह भी जब रोग का रूप धारण कर लेती है, तब कष्टकारी बन जाती है। इसलिये आयुर्वेद ने हिक्का को एक स्वतन्त्र रोग मानकर उसके औषधोपचार का विधान किया है। उस रोग की उत्पत्ति का कारण बताते हुए कहा है —

विदाही गुरु विष्टम्भी रूक्षाभिष्यन्दि भोजनैः।
शीतपानाशनस्नान रजोधूमातपानिलैः।
व्यायाम कर्मभाराध्व वेगघाताप तर्पणैः॥

विदाही, भारी, विष्टम्भी, रूखे, दही प्रभृति पदार्थों के खाने से, ठण्डा (बासी) भोजन करने से, शीतल जल पीने या शतल जल में स्नान करने से, नाक- मुख आदि में धूल या धुँआ घुसने से, शक्ति से अधिक व्यायाम करने, बोझ उठाने, मार्ग चलने तथा मल- मूत्रादि का वेग रोकने से हिक्का उत्पन्न होती है।

हिक्का के भी पाँच भेद किये गये हैं—1. क्षुद्रा, 2. अन्नजा, 3. गम्भीरा, 4. यमला, और 5. महती। उनके लक्षण इस प्रकार हैं —

- **क्षुद्रा हिक्का** — यह बहुत देर से, रुक- रुक कर आती है तथा हँसुलियों के मूल से गले तक को प्रभावित करती है।
- **अन्नजा हिक्का** — अति भोजन करने, अधिक पानी पीने से, क्षोभ को प्राप्त हुआ वायु ऊपर को अत्यन्त मन्द शब्द के साथ चढ़ता है, उससे हिचकियाँ आने लगती हैं।
- **गम्भीरा हिक्का** — इसका आरम्भ नाभिकेन्द्र से होता है। गरिष्ठ आहार आदि से उदरस्थ वायु क्षुब्ध होकर ऊपर चढ़ता है, इससे हिचकियाँ आने लगती हैं।
- **यमला हिक्का**— अधिक विलम्ब से दो- दो बार हिचकी आती हैं, उससे कण्ठ और सिर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भी काँपने लगता है।

- **महती हिक्का**— नाभि तक को कष्ट देती हुई बार- बार आती और सब अंगों को कम्पायमान करती है।

हिक्का रोग में औषधोपचार

- पीपल का चूर्ण शहद के साथ अथवा शर्करा के साथ चाटें। मात्रा 1 ग्राम तक।
- नागरमोथा का 1 ग्राम चूर्ण शहद के साथ लें।
- खजूर का चूर्ण 1 ग्राम तक शहद के साथ सेवन करें।
- कुटकी और सोनागेरू का चूर्ण शहद के साथ 1 ग्राम तक।
- मुलहठी का चूर्ण शहद के साथ चाटें।
- सोंठ का चूर्ण गुड़ के साथ लें।
- बेर के बीज की मिंगी, धान की खील और सुरमे की भस्म का चूर्ण उचित अनुपान के साथ।
- छोटी पीपल, आमला, सोंठ और शर्करा का चूर्ण।
- शुद्ध हीरा कसीस और कैथ के गूदे, समान भाग का चूर्ण शहद के साथ। हीरा कसीस को 24 घंटे अदरक स्वरस की भावना देकर शुद्ध कर लेना चाहिये।
- कांस की जड़ का चूर्ण शहद के साथ लेने से कठिन हिक्का रोग भी शान्त हो जाता है।
- सोंठ के साथ बकरी का दूध ओंटा कर पीने से भी हिचकियाँ दूर हो जाती हैं।
- मक्खी- विष्टा को नारी- दुग्ध में मिला कर नस्य लें।
- लाल चन्दन को नारी- दुग्ध में घिस कर नस्य लें।
- नींबू के रस में शहद और काले नमक का चूर्ण मिला पीने से भी हिचकियों का शमन होता है।
- उड़द के चूर्ण को आग में डाल कर, उसका धुआँ पीने से हिचकियाँ तुरन्त रुक जाती हैं।
- श्वेत इलायची का चूर्ण शर्करा के साथ खायें। इससे असाध्य हिक्का का भी निवारण होता है। मात्रा 1-2 ग्राम।
- काली मिर्च का चूर्ण शहद में मिला कर बार- बार चाटने से दुःसाध्य हिचकियाँ भी रुक जाती हैं।
- केला की जड़ 3 ग्राम तक को पानी के साथ घिस कर और उसमें शर्करा (मिश्री) मिला कर पीवें।
- छोटी पीपल, सोंठ और आमला, सम भाग का चूर्ण असमान भाग शहद- घी के साथ सेवन करें।
- मोरपंख की भस्म बना कर, उसमें समान भाग छोटी पीपल का चूर्ण मिलावें और शहद के साथ 4-5 रत्ती तक की मात्रा में चाटें। इससे प्रबल हिक्का का भी निवारण होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हिक्का पर उपर्युक्त प्रभावकारी योग

सम्भालू और गजपीपल 10-10 ग्राम लेकर जौकुट करें और पावभर पानी के साथ क्वाथ करें। जब चौथाई शेष रहे, तब उतार कर छानें और उसमें फुलाई हुई हींग 3 ग्राम डाल कर शीशी में सुरक्षित रखें।

मात्रा — 1-2 चम्मच, दिन में तीन- चार बार दे ने से हिचकियों में लाभ होता है।

हिचकी में अष्टादशांग क्वाथ

चिरायता, कुटकी, नागरमोथा, धनियाँ, इन्द्रयव, सोंठ और दशमूल की सभी दवाएँ, देवदारु गजपीपल का क्वाथ बनाकर सेवन करें। यह श्वास, कास, वमन, हिक्का, तन्द्रा, हृद्रोग आदि को शीघ्र ही नष्ट करता है।

हिक्का को दूर करने में श्वास- कास का निवारण करने वाली अनेक औषधियाँ उपयोगी हैं। श्वास प्रकरण में हम उनका उल्लेख कर चुके हैं, इसलिये पुनरोक्ति व्यर्थ है।

निम्न कट्फलादि क्वाथ भी हिक्का के शमन में अधिक प्रभावकारी सिद्ध हुआ है। शास्त्रीय योग है —

कायफल, काकड़ासिंगी, हरड़, वच, नागरमोथा, धनियाँ, भारंगी, रोहिष, पित्तपापड़ा, देवदारु और सोंठ 1-1 ग्राम लेकर अठगुने पानी में पकावें और चौथाई शेष रहने पर उतार कर गुनगुना रहने पर छान कर पिला दें।

इस क्वाथ से सब प्रकार की हिक्का में लाभ होता है।

अथवा देवदारु, हरड़, वासा, सोंठ, शालिपर्णी और काली मिर्च सम भाग के चूर्ण का उक्तविधि से बनाया हुआ क्वाथ भी हिचकियों का समन करता है। यह श्वास- कास में भी लाभकारी तथा जठराग्नि को प्रदीप्त करने वाला है।

हिक्का रोग में उपयोगी नस्य (टपका)

सेंधा नमक पिसा हुआ 1 ग्राम, 25 गुने साफ पानी में घोल कर रखें।

हिक्का के रोगी की नासिका में यह घोल 2-3 बूँद डालना चाहिये। इससे हिचकियाँ तुरन्त बन्द होती हैं।

हिक्का- हर मधु- पलाण्डु योग

प्याज का रस 3 भाग, शहद 1 भाग शीशी में भर कर रखें। इसकी 1-1 बूँद आँखों में टपकाने से हिचकियाँ रुक जाती हैं। यह योग आँखों के लिए भी बहुत हितकारी है। अन्य सामान्य योग हिचकियाँ रोकने में उपयोगी हैः—

हिक्का में अन्य उपयोगी योग

- हिचकियाँ आने पर ताजा पानी पीने से निवारण हो जाता है।
- काली मिर्च 15 नग, छोटी इलायची 2 नग और बताशे 8-10 नग को एक कप पानी के साथ पकावें, आधा शेष रहने पर रात्रि के समय पिलावें। यह क्वाथ यद्यपि जुकाम, खाँसी में अधिक हितकर है, परन्तु हिचकियों को रोकने में भी प्रभावकारी है।

हिक्का रोग में उक्त क्वाथ को प्रातः- सायं दोनों समय देना चाहिये। रोगी उसे चम्मच

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

से धीरे- धीरे पीवें। स्थायी लाभ होता है।

Digitized by eGangotri

- अमृतधारा (कर्पूर, पीपरमेंट, सत अजवाइन का मिश्रण) 1 बड़े बताशे में 4-5 बूँद डाल कर खिलावें। हिक्का में पर्याप्त लाभ होता है।
- इसी अमृतधारा को घी या वैसलीन में मिला कर कण्ठ पर मलने से हिचकियाँ रुक जाती हैं।
- नींबू, शर्करा की शिकंजवी में किंचित् सेंधा नमक और काली मिर्च का चूर्ण डाल कर पीने से हिचकियों में लाभ होता है। किन्तु इसमें बर्फ नहीं मिलानी चाहिये।

पथ्यापथ्य विचार

हिक्का रोग से पीड़ित मनुष्य का स्वेदन, वमन, नस्य, धूम्रपान तथा विरेचन कराना हितकर है। किन्तु यह सब क्रियाएँ रोगी का बलाबल देखकर ही करनी चाहिये। ठीक प्रकार से नींद आने की व्यवस्था की जाय। गरिष्ठ भोजन, क्रोध, ईर्ष्या तथा मिथ्या आहार- विहार का त्याग आवश्यक है। कैथ, परवल, लहसन, नींबू, शहद, गोमूत्र तथा वातनाशक, कफनाशक अन्न उसके लिये पथ्य हैं।

माँस- मछली, अण्डे आदि का सेवन छोड़ देना चाहिये। औषधि के अतिरिक्त, गुड़, तैल, खटाई, लाल मिर्च तथा क्षुब्ध करने वाले अन्यान्य पदार्थ हानिकारक होते हैं। कफ उत्पन्न करने वाले, कब्ज करने वाले पदार्थ तथा अपनी सहज शक्ति से अधिक परिश्रम, अधिक व्यायाम आदि से भी हानि होती है। बासी अन्न, मिष्ठान्न अथवा मिर्च मसाले युक्त चाट, बर्फ - युक्त शीतल पेय आदि भी हिक्का रोग को बनाये रखने में सशक्तकारण हैं, रोग से मुक्तिके लिये इन सब से बचना चाहिये।

हिचकियों में अन्य सरलोपचार

- ग्रीष्म ऋतु में हिचकियों का प्रकोप हो तो रोगी के मुख में पानी की बर्फ का टुकड़ा डालें और उसे चूसने दें।
- ठण्डा पानी घूँट- घूँट कर पीने से भी हिचकियाँ रुक जाती हैं।
- नाभि पर बर्फ रखना भी हिचकी में हितकर उपाय है।
- ईख का सिरका 5-10 बूँद ताज़ा पानी में मिला कर पीने से भी हिक्का में लाभ होता है।
- सोंफ का अर्क और गुलाबजल समान भाग मिला कर पीना भी हितकर है।
- नारियल का पानी भी हिचकियाँ रोकने में सहायक होता है।
- पेठे का स्वरस भी हिक्का को रोक देता है।
- चावल के चिरवे (भाड़ पर भुने हुए) पानी में 10 मिनट तक भिगो कर पीसें, जिससे कि चटनी सी बन जाय, उसमें कुछ सेंधा नमक और काली मिर्च मिला कर खिलावें। हिचकियों को रोकने में यह रोग भी सहायक होता है।
- दाक्षारिष्ट को पानी के साथ मिला कर चम्मच से मुख में डालते रहें।
- आमले के मुरब्बे की चाशनी भी हिचकियाँ रोकने में कभी- कभी चमत्कारी लाभ दिखाती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

20. जुकाम (प्रतिश्याय) चिकित्सा

जुकाम के प्रकार और लक्षण

हम देखते हैं कि जुकाम एक ऐसा रोग है, जिससे बहुत से मनुष्य पीड़ित पाये जाते हैं। खाँसी होती है तो जुकाम के आने की शंका उत्पन्न हो जाती है। ज्वर के साथ या पहिले भी जुकाम की स्थिति देखी जाती है।

वस्तुतः जल, वायु, देश- प्रदेश और ऋतुओं के परिवर्तन का प्रभाव श्वसन तन्त्र पर प्रतिकूल रूप से पड़ता है तो उसके कारण वातादि दोष कुपित होकर, क्षोभ उत्पन्न कर देते हैं, इस कारण नासिका से दूषित कफ आदि का स्राव होने लगता है।

आयुर्वेद में सभी दोषों का कारण वातादि का कुपित होना ही माना गया है और मुख्यतः इसी आधार पर उसने जुकाम के भी 18 भेद करके, उनके पृथक् पृथक् नाम रखे हैं। उन भेदों और नामों का वर्णन प्रासंगिक होने के कारण आवश्यक प्रतीत होता है। हैं —

1. वातज प्रतिश्याय, पित्तज प्रतिश्याय, 3. कफज प्रतिश्याय, 4. सन्निपातज प्रतिश्याय। इनके अतिरिक्त 5. रक्तज, 6. पीनस, पूतिनास, 8. नासार्श, 9. भ्रंशथु, 10. क्षवथु, 11. नासावह, 12. पूतिरक्त, 13. अवुर्द, 14. दुष्ट पीनस, 15. नासाशोथ, 16. घ्राणपाक, 17. पूयस्राव और 18. दीप्तक प्रतिश्याय।

इनमें से अनेक के लक्षण तो नाम से ही स्पष्ट हैं, तो भी संक्षेप में प्रकाश डालना उचित होगा —

- वातज प्रतिश्याय में पतला- सा स्राव निकलता है। कण्ठ, तालु और ओष्ठ- शोष, स्वर में खरखराहट, स्वरभंग तथा कनपटियों में दर्द आदि।
- पित्तज में गर्म, पीला स्राव, शरीर में दाह, टूटन, बेचैनी आदि।
- कफज में श्वेत, ठण्डा, चिकना, अधिक मात्रा में श्लेष्मा, सिर में भारीपन, नेत्र फड़कना, कण्ठ और तालु में खराश, खाज आदि।
- सन्निपातज में तीनों दोषों के लक्षण दिखाई देते हैं।
- रक्तज में नासिका से रक्त- स्राव, दुर्गन्धित श्वास, मुख में भी दुर्गन्ध, आँखों में लाली, स्वयं को गन्ध- ज्ञान का अभाव।
- पीनस में नासावरोध, नासा शुष्क होना या बहना, धुँआ- सा निकलना, गन्धज्ञान का अभाव, वात- कफ की अधिकता।
- पूतिनास में कण्ठ- तालु में क्षोभ, नासा और मुख से दुर्गन्धित युक्तकफ का स्राव आदि।
- **नासार्श** — वातादि दोषों के प्रकोप से नासा में अंकुर उत्पन्न होते हैं। उस समय रोगी की त्वचा, माँस, मेदादि में दोष उत्पन्न हो जाता है।
- **भ्रंशथु** — धूप की तेजी सिर पर पड़ने से पहिले से संचित हुआ गाढ़ा और लवणीय मल निकलने लगता है।
- **क्षवथु** — घ्राणेन्द्रिय के कोमल अवयवों को वायु क्षुब्ध कर देता है, तब नासिका से भारी शब्द के साथ मल निकलता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- **नासानाह** — वायु के साथ उद्वेलित कफ नासामार्ग को अवरुद्ध कर देता है, इससे प्रयत्न करने भी मल नहीं निकलता।
- **पूरिक्त** — किसी प्रकार के आघात से अथवा वात के अधिक प्रकोप से रक्तयुक्त पीव जैसा पदार्थ निकलता है।
- **अर्बुद** — नाक में गाँठ- सी बन जाती है, जिससे मल निकलने और श्वास- प्रश्वास में भी कष्ट प्रतीत होता है।
- **दुष्ट पीनस** — नाक का बार- बार बहना, सूखना, रुकना, खुलना, श्वास में दुर्गन्ध रोगी को गन्ध- ज्ञान का अभाव।
- **नासाशोथ** — नाक में शोथ, घ्राणशक्तिका शुष्क होना, नाक से श्वास लेने में कष्ट के कारण, मुख से श्वास लेना आदि।
- **घ्राणपाक** — नाक में घाव का होकर पक जाना तथा दुर्गन्ध युक्तपतली पीव निकलना।
- **पूयस्राव** — नासिका से पीला, श्वेत, गाढ़ा या पतला स्राव।
- **दीप्तक** — नाक में जलने जैसा कष्टकर प्रदाह तथा धुआँ- सा निकलना आदि।

वस्तुतः यह एक संक्रा मक रोग है, जो दुर्बल व्यक्तियों को विशेष रूप से प्रभावित करता है। किन्तु आवश्यक नहीं कि यह अन्य संक्रा मक रोगों की तरह संक्र मण करे। अनेक व्यक्ति इसका क्रारण शीत का प्रकोप मानते हैं, सम्भवतः इसी कारण आधुनिक चिकित्सक इसे कोल्ड के नाम से जानते हैं। नजला भी जुकाम ही का एक बढ़ा हुआ रूप है। यदि जुकाम बिगड़ जाता है तो उसके कारण अन्य उपसर्ग उत्पन्न हो जाते हैं, जिनका उपचार समय पर नहीं हो पाता तो दोष- वृद्धि के अनुसार, बुखार, खाँसी, श्वास, उरःक्षत, क्षय आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

इसी कारण चिकित्सक को प्रतिश्याय के विभिन्न रूपों और उनके लक्षणों को दृष्टिगत रखते हुए चिकित्सा करनी चाहिये।

प्रतिश्याय भेदों का विवेचन एवं चिकित्सा सूत्र

आयुर्वेद में वर्णित 18 भेदों को यदि ध्यान से देखें तो उनमें से अनेक में मिश्रित लक्षण मिलेंगे। इसलिये यदि हम उन्हें निम्न 6 भेदों में विभक्तकर दें तो चिकित्सा तथा औषधि- निर्णय में अधिक सुविधा हो सकती है —

- सामान्य प्रतिश्याय, जिसमें नवीन प्रतिश्याय, भी सम्मिलित हैं।
- वाताधिक्य जन्य प्रतिश्याय।
- रक्तदोष जन्य प्रतिश्याय।
- शुष्क प्रतिश्याय।
- पूति प्रतिश्याय।
- जीर्ण प्रतिश्याय।

सामान्य प्रतिश्याय, जो कि जलवायु, देश, कालादि के प्रभाव से नासाशोथ के साथ नासावरोध दिखाई देता है। बहुत प्रयत्न करने पर भी नाक ठसी रहती है। किन्तु छींकें ली जाने पर आरंभ में नाक से हल्का पतला स्राव होता है और शोथ का शमन होने लगता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

छींकों का आना औषधि सूँघने या नस्य लेने पर ही निर्भर नहीं है। बहुत बार तो रोग के अन्य लक्षण प्रकट होने से पहिले से ही छींक आने लगती हैं, उस स्थिति में कण्ठ- शोष या खराश का भी अनुभव हो सकता है। किसी- किसी को प्यास अधिक लगती है और जब वह ठण्डा पानी पीता है, तब उसका प्रतिकूल प्रभाव श्लेष्मकला पर पड़ता है और उसमें शोथ उत्पन्न हो जाता है। यह स्थिति गर्मी- सर्दी के मिश्रण से भी उत्पन्न हो जाती है।

सामान्य प्रतिश्याय कभी- कभी तो स्वतः शान्त हो जाता है। नहीं होता तो अपने आहार- विहार में परिवर्तन करने से काबू में आ जाता है। ऐसे रोगी को, वरन् सभी प्रकार के जुकाम के रोगी को धुआँ तथा धूल भरे वातावरण से दूर रहना चाहिये। क्योंकि धुआँ और धूल दोनों के ही श्लेष्मकला में क्षोभ उत्पन्न कर देते हैं।

प्रतिश्याय का रोगी यदि ठण्डा पानी न पिये, वरन् गर्म जल का प्रयोग करे तो उसका जुकाम शीघ्र ही शान्त हो सकता है। स्नान भी ठण्डे पानी से नहीं करना चाहिये। यदि रोगी बलवान हो तो उसे अत्यन्त हल्का स्वेद दिया जा सकता है।

उससे श्लेष्मिक कला पर अनुकूल प्रभाव करता है। इसके लिये सोंठ का चूर्ण 5 ग्राम, काली मिर्च 5 नग, गुड़ 20 ग्राम लेकर चौथाई लीटर पानी के साथ पका कर छानना और रोगी को पिला देना चाहिये। इससे स्वेदन भी होता है और शरीर हल्का हो जाता है।

वाताधिक्य प्रतिश्याय के निवारणार्थ आगे अनेक नुस्खे लिखे जा रहे हैं। उनमें से नस्य आदि के प्रयोग लक्षणानुसार किये जा सकते हैं।

रक्तदोष की अधिकता से उत्पन्न जुकाम में रक्तशोधक दवाएँ तथा सुँघनियों का प्रयोग हितकर रहता है। शुष्क प्रतिश्याय के निवारणार्थ श्लेष्मा को ढीला करने वाले उपाय किये जाते हैं।

पूति प्रतिश्याय का मुख्य कारण नासिका में शोथ का स्थायीपन है। उसका उपाय न होने से श्लैष्मिक ग्रन्थियों और रक्तवाहिनियों की क्रिया- शक्ति का ह्रास हो जाता है और तभी वातादि के अधिक दूषित और कुपित होने के कारण नासा में व्रण उत्पन्न हो जाते हैं, वे उपेक्षित रहने या अँगुली आदि से छिल कर सड़े हुए घाव का रूप ले लेते हैं, तब उनसे दुर्गन्ध निकलती है, तथा नासिका और मुख दोनों से ही दुर्गन्धित स्राव सा आने लगता है। इस प्रकार यह रोग धीरे- धीरे असाध्य होता जाता है।

नासांकुर अथवा नासिका में माँस- वृद्धि का कारण रक्तदोष भी हो सकता है और वातादि दोषों का कोप भी। जुकाम का बहुत समय तक बना रहना भी इनकी उत्पत्ति में सहायक कारण होता है। जीर्ण प्रतिश्याय के रहने से अन्य उपद्रव भी हो सकते हैं। उनका निवारण चिकित्सक के विवेक पर भी निर्भर है।

कृमि युक्त श्लेष्मा में तुलसी का प्रयोग अधिक हितकर है। अन्य कृमिनाशक योग भी दिये जा सकते हैं। कुछ लाभकारी योग यहाँ प्रस्तुत हैं।

प्रतिश्याय में सरलोपचार

- तुलसी के सूखे पत्तों का क्वाथ बना कर नस्य लेने से पीनस तथा नाक के कृमि, घाव आदि दूर होते हैं।
- पीली सरसों का तेल साफ कपड़े से छान कर रखें और दोनों नासा- छिद्रों में 2-3 बूँदें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
प्रातः- सायं दोनों समय डालें। कुछ दिन निरन्तर ऐसा करने से नया- पुराना सभी प्रकार का जुकाम मिट जाता है। तैल असली हो, उसमें अन्य किसी प्रकार के तैल का मिश्रण नहीं होना चाहिये।

- रात्रि- शयन समय दोनों नासा छिद्रों में असली घी लगावें, इससे भी लाभ होता है।
- पाठादि तैल की नस्य से पकी हुई पीनस ठीक होती है। यह तैल पाठा, हल्दी, दारु हल्दी, मूर्वा, छोटी पीपल, चमेली के पत्ते और और दन्तीमूल, सब मिला कर 500 ग्राम को जौकुट करके आठ लीटर पानी के साथ क्वाथ करें और चौथाई शेष रहने पर छान लें। फिर उतना ही सरसों का तैल मिला सिद्ध करलें। अर्थात् तैल मात्र शेष रहने पर उतार कर सुरक्षित रखें।
- अधिक दुर्गन्ध- युक्त पूतिनस्य वाले प्रतिश्याय में व्याघ्री तैल की नस्य लेनी चाहिये। यह तैल छोटी कटेरी, दन्तीमूल, वच, सहजने की छाल, तुलसी, काली मिर्च, पीपल और सेंधा नमक के जौकुट चूर्ण के साथ उपर्युक्तप्रकार से सिद्ध किया जाता है।
- पीनस और पूतिनस्य में इन्द्रजौ, हींग, काली मिर्च, लाख, तुलसी, कायफल, सोंठ, काली मिर्च, वच, सहजने की छाल और वायविडंग के क्वाथ की नस्य लेनी चाहिये। अथवा इन औषधि द्रव्यों का यथाविधि तैल सिद्ध करके नस्य ली जाये तो सब प्रकार के जुकाम, बिगड़े जुकाम आदि में शीघ्र लाभ होता है।
- नासापाकयुक्त प्रतिश्याय में वट वृक्ष की छाल का क्वाथ बना कर उससे सेंक करना और फिर शुद्ध घी का लेप करना चाहिये।
- क्षवथु रोग में जिसमें छींक अधिक आती हैं, सोंठ, कूट, पीपल, बिल्ब पत्र और मुनक्का के क्वाथ की नस्य लेना बहुत लाभकारी रहता है।
- रात्रि में शयन से पूर्व, बहुत सा ताजा पानी पीने से पीनस रोग से छुटकारा मिलता है।
- खट्टे दही में गुड़ मिला कर और उसमें काली मिर्च का चूर्ण डाल कर सेवन करने से नया- पुराना सब प्रकार का जुकाम दूर हो जाता है।
- जयन्ती के पत्तों का पुटपाक करके, उसमें सेंधा नमक और सरसों का तैल मिला कर सेवन करने से सब प्रकार का जुकाम शीघ्र नष्ट होता है।
- इमली के पत्तों का काढ़ा पीने से नया प्रतिश्याय शीघ्र मिट जाता है।
- सब प्रकार के पुराने जुकाम को दूर करने के लिए भोजन करने के पश्चात् गर्म- गर्म सिझाये हुए उड़दों में नमक मिला कर खाना चाहिये। पर्याप्त लाभ होता है।
- प्रतिश्याय रोग में, नाक में कीड़े पड़ जाने की स्थिति में गोमूत्र के साथ कृमिनाशक औषधि मिला कर नस्य देनी चाहिये और ऐसी ही किसी औषधि के क्वाथ से नाक धोनी चाहिये। कृमिनाशक औषधियों में नीम सर्वश्रेष्ठ है।
- शिखरि तैल की नस्य से नाशार्श (नाक में मासांकुरों का होना) शीघ्र दूर होता है। घर का धुआँ, पीपल, देवदारु, यवक्षार, करंज, सेंधा नमक और लटजीरा के बीज समान भाग के योगों से तैल सिद्ध कर लेने से शिखरि तैल बन जाता है।
- चित्रक तैल की नस्य भी नाशार्श को नष्ट कर देता है। उस तैल की सिद्धि चित्रक मूल, चव्य, अजवाइन, चोटी कटेरी, करंज के बीज, सेंधा नमक और मदार की जड़ के योग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

से होती है।

- लाल कनेर के फूल, चमेली के फूल, असना के फूल और मोतिया के फूल से सिद्ध किया हुआ करवीराद्य तैल भी, नस्य लेने से नाशांकुरों को दूर कर देता है।
- सोंठ, काली मिर्च और सोंठ का चूर्ण जुकाम, पीनस, खाँसी, अरुचि आदि को दूर करता है। इसके सेवन से अग्नि भी प्रदीप्त होती है। इसे 1 ग्राम की मात्रा में शहद के साथ देना चाहिये।
- सुदर्शन चूर्ण को गर्म पानी के साथ दिन में 2 बार प्रातः- सायं देने से जुकाम में बहुत लाभ होता है। सुदर्शन चूर्ण का नुस्खा इसी पुस्तक में अन्यत्र लिखा है।
- कागजी नींबू के छाया शुष्क पत्ते 10 ग्राम, काली मिर्च 5 ग्राम और नौसादर 15 ग्राम का कपड़छन चूर्ण बना कर रखें। इसे प्रातः- सायं सूँघने से नवीन पीनस में अवश्य लाभ होता है।
- पित्त की अधिकता वाले दीप्तक प्रभृति प्रतिश्याय में जीवनीयगण से सिद्ध घृत का पान करें। जीवनीयगण में जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, मुलहठी, वनुड़द, वन मूँग और जीवन्ती — यह दस औषधियाँ हैं।

  इस प्रयोग से रक्तज प्रतिश्याय में भी लाभ होता है।

जुकाम में दाडिमाष्टक चूर्ण

अनारदाना और शर्करा (मिश्री) 32-32 तोले, पीपल, पीपलामूल, अजवाइन, काली मिर्च, धनियाँ, जीरा और सोंठ 4-4 तोले तथा वंश लोचन 1 तोला, दालचीनी, छोटी इलायची, तेजपात और नागरकेशर 6-6 माशे। सबको कूट- कपड़छन करके रखें।

इसे उचित मात्रा में सेवन करने से सब प्रकार के जुकाम में शीघ्र लाभ होता है। खाँसी भी दूर होती है। क्षय, गुल्म, अतीसार, कण्ठस्वर भंग, मन्दाग्नि आदि में भी यह अत्यन्त उपयोगी हैं।

जुकाम- खाँसी में लवणादि चूर्ण

लोंग, भीमसेनी कर्पूर, छोटी इलायची, दालचीनी, नागकेशर, जायफल, खस, सोंठ, काला जीरा, काली अगर, वंश लोचन, जटामांसी नीलकमल, छोटी पीपल, श्वेत चन्दन का चूरा, तगर, सुगन्ध बाला और कंकोल। सभी समान भाग लेकर, कूट- कपड़छन करें तथा उसके पूरे वजन से आधी मिश्री पीस कर उसमें मिलावें।

यह जठराग्नि की वृद्धि करने वाला चूर्ण सब प्रकार के जुकाम, खाँसी, हिक्का, यक्ष्मा, श्वास, ग्रहणी, गुल्म, उरःक्षत आदि रोगों को नष्ट करने में समर्थ है।

प्रतिश्याय पर देशी चाय

तुलसी के पत्ते और गुल बनफ्शा 20-20 ग्राम, मुलहठी, दालचीनी, छोटी इलायची, सोंठ और ब्राह्मी 10-10 ग्राम। सबको एकत्र कूट कर चूर्ण कर चूर्ण बना लें।

मात्रा—6 ग्राम चूर्ण को चाय के समान पका कर एक प्याला तैयार करें।

इसके सेवन से सब प्रकार का जुकाम, नजला, खाँसी, कफ, जन्य ज्वर तथा निमोनियाँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

में भी शीघ्र लाभ होता है। इससे शरीर में शक्ति बढ़ती, नवीन स्फूर्ति प्राप्त होती तथा मस्तिष्क को भी बल और स्मृति की प्राप्ति होती है। बौद्धिक कार्य करने वाले व्यक्तियों तथा विद्यार्थियों को भी हितकर है।

बिगड़े हुए जुकाम पर गोलियाँ

मुलहठी, मुनक्का, उन्नाव, गुलवनफ्शा, बड़ी इलायची, दालचीनी, वंश लोचन और मिश्री समान भाग लेकर कूट- छान लें।

मात्रा—1 ग्राम तक शहद के साथ चटावें अथवा चूर्ण को शहद के साथ घोट कर बेर के बराबर गोलियाँ बना लें। चूर्ण को प्रातः- सायं सेवन करना चाहिये। यदि गोलियाँ बनावें तो 1-1 गोली मुख में 4-5 बार रख कर चूसनी चाहिये।

इससे बिगड़ा हुआ जुकाम भी ठीक हो जाता है। सूखी खाँसी और श्वास पर भी उपयोगी है। कफ के साथ खून आने में भी यह बहुत हितकर है।

ज्वरयुक्त जुकाम में त्रिभस्म योग

फुलाई हुई फिटकरी और गोदन्ती हरताल भस्म, दोनों 1-1 ग्राम तथा प्रवाल भस्म 2 ग्राम लेकर, खरल में घोट कर एंकजीव कर लें और शीशी में रखें।

मात्रा —2-2 रत्ती त्रिभस्म योग को शहद के साथ दिन में तीन बार चटावें। इसस सब प्रकार का जुकाम, ज्वर युक्तजुकाम तथा केवल ज्वर भी नष्ट हो जाता है।

जुकाम पर कुछ अन्य सरल योग

- एक कप गर्म जल में आधा नींबू निचोड़ कर प्रातःकाल नीहार मुख पीने से जुकाम अवश्य मिट जाता है। इसमें एक चुटकी भर सेंधा नमक भी मिला लेना चाहिये।
- श्लेष्मा के साथ रक्तजाता हो तो अनार के फूल और उसमें घी मिला कर उपलों की आग पर डाल कर नासिका द्वारा उसका धुआँ लें। इससे नकसीर में भी लाभ होता है।
- भुने चने लेकर पोटली में बाँधें और उन्हें सूँघें, इससे भी जुकाम दूर हो जाता है।
- नीलगिरी का तैल किसी कपड़े पर 1-1 बूँद छिड़क कर सूँघने से भी जुकाम नष्ट होता है।
- दारु हल्दी, हिंगोटफल और दन्तीमूल का चूर्ण लटजीरे के स्वरस में घोट कर उसकी बत्ती बना लें। इसे जला कर धूम्रपान करने से जुकाम दूर होता है।
- एकपोतिया लहसुन की 1-2 कली खाकर ऊपर से पानी पीने से नवीन जुकाम में लाभ होता है।
- पित्तजन्य जुकाम में कच्ची मूली खाने से लाभ हो जाता है।

21.सिरदर्द के औषधोपचार

सिर दर्द के भेद और लक्षण

सिर दर्द एक ऐसा सर्वव्यापी रोग [illegible] गया है, जिससे अधिकांश स्त्री- पुरुष प्रभावित देखे जाते हैं। यदि कहें कि इसका प्रसार ज्वर, जुकाम, खाँसी आदि से भी अधिक [illegible]

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

कुछ अत्युक्ति नहीं होगी। बालकों में भी इसका प्रकोप देखा जाता है, विशेषकर विद्यार्थी वर्ग इससे अधिक पीड़ित है।

आयुर्वेद में यह रोग 'शिरोरोग' शीर्षक से कहा गया है और उसके 10 भेद किये गये हैं — वातज, पित्तज और कफज, यह तीन तथा त्रिदोषज चौथा। वातज शिरोरोग के दो भेद किये हैं —एक अर्द्धावभेदक और दूसरा सामान्य। अन्य भेद रक्तजन्य, सूर्यावर्त, शिरःकम्प, कृमिजन्य और शंखक हैं।

अर्धावभेदक मिथ्या आहार- विहार, मल- मूत्रादि के वेगों को रोकना, अत्यधिक परिश्रम और व्यायाम आदि के कारण कुपित हुआ वायु कफ के सहयोग से आधे सिर को प्रभावित करता हुआ ललाट, कान, नेत्र, कण्ठ, कनपटी आदि में शरीर के एक ओर अर्थात् आधे भाग में वेदना उत्पन्न कर देता है।

इससे भी अधिक कष्टकारी सूर्यावर्त है, जिसमें सूर्योदय के समय से ही ललाट के साथ नेत्रों और भौंहों के मध्य धीरे- धीरे वेदना का आरंभ होता है और वह बढ़ती हुई रोगी को अत्यन्त व्याकुल कर देती है। मध्याह्न के पश्चात् सूर्य पश्चिम की ओर बढ़ते हैं, तब पीड़ा धीरे- धीरे कम होती हुई सूर्यास्त के समय समाप्त हो जाती है। यह रोग त्रिदोषज माना गया है।

वातज शिरोरोग में दर्द अकारण उत्पन्न होता प्रतीत होता है। रात्रि में अधिक बढ़ जाता है। पित्तज में दाह और ऊष्मा की अधिकता होती है। सिर, नेत्र और नासिका आदि जलने- से लगते हैं। कफज में सिर और शरीर ठण्डा, कफयुक्त तथा मुख पर शून्यता या विह्वलता के लक्षण दिखाई देते हैं। सन्निपात में मिश्रित लक्षण होते हैं।

रक्तजन्य शिरोरोग में पित्तजन्य के समान लक्षण होते हैं। वह अपने सिर पर किसी अन्य का स्पर्श सहन नहीं कर पाता।

शिर- कम्प रोग क्षयात्मक होता है। इसकी उत्पत्ति क्षयादि रोगों के उपसर्ग रूप में होती है। इसमें सिर में शून्यता, कम्पन, तीव्र वेदना के साथ आँखों का चढ़ना, शरीर में टूटन तथा मूर्च्छा प्रभृति लक्षण होते हैं।

कृमिजन्य में चुभन- युक्ततीव्र वेदना, नासिका से पीव- मिश्रित रक्तका स्राव तथा भीतर से चोंटने जैसा आभास।

शंखक की उत्पत्ति वायु के साथ रक्तऔर पित्त के प्रकोप से होती है। यह तीनों ही मिल कर रक्तवर्णता, शोथ, प्रदाह आदि के साथ अत्यन्त तीव्र पीड़ा उत्पन्न कर देते हैं। इसी कारण यह रोग विष के समान फैल कर [illegible] को भी अवरुद्ध करने लगता है। यह रोग आरम्भ से ही अधिक कष्टकर, फिर दुःसाध्य और अन्त में असाध्य हो जाता है।

हम इन सब लक्षणों और भेदों को आधुनिक परिपेक्ष्य में निम्न भेदों में विभाजित कर दें तो उपचार में सुविधा होगी :-

(1) सामान्य सिर दर्द, (2) अर्धावभेदक और सूर्यावर्त, (3) [illegible] शिरः- शूल

1. सामान्य सिर दर्द

आज [illegible] वृद्ध स्त्री- पुरुष सभी में देखा जाता है। खान- पान की [illegible] बड़ [illegible] युग में सर्वत्र देखा जाती है। धनोपार्जन की स्पर्धा- प्रतिस्पर्धा में दौड़ते हुए [illegible] भोजन, पान,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

शयन, पारस्परिक व्यवहार आदि के उचित परिवर्तन का न तो अवकाश है, न जानकारी। जीवनोपयोगी साधनों और दिखावटी वैभव की लालसा जब पूर्ण नहीं हो पाती, तो ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, मोह आदि द्वन्द्वों के कारण चिन्ता बढ़ जाती है। स्त्री- पुरुष में अनबन, व्यय की पूर्ति के योग्य धन की अप्राप्ति आदि अनेक कारण हैं जो मनुष्यों को चिन्ता से मुक्तनहीं होने देते। बालकों में भी, विद्याध्ययन करते हुए परीक्षा आदि में सफलता- असफलता का विचार उन्हें चिन्ताग्रत कर देता है। इन सब कारणों से सिर- दर्द की उत्पत्ति सामान्य रूप से दिखाई देती है।

2. अर्धावभेदक और सूर्यावर्त

अर्धावभेदक में आधे सिर में असहनीय दर्द होता है। सूर्यावर्त में जो दर्द होता है, वह भी अत्यन्त तीव्र, असह्य और कष्टकारी है। वातज शिरोरोग, जिसका दर्द रात्रि में अधिक पीड़ात्मक होता है, उसकी चिकित्सा में भी विचार पूर्वक औषधोपचार की आवश्यकता होती है। क्योंकि इन तीनों में ही वात प्रकोप की प्रमुखता है। सूर्यावर्त सन्निपात- जन्य है। शंखक नामक शिरोरोग भी वातदोष के अत्यधिक प्रकोप का परिणाम समझना चाहिये।

रक्तजन्य और क्षयजन्य शिरोरोग उन- उन धातुओं के अत्यन्त प्रदूषण उत्पन्न होते हैं। उनका उपचार तभी सम्भव है, जब उन रोगों का उपाय किया जाय, जिनके उपसर्ग रूप में उनकी उत्पत्ति हुई है।

3. जीर्ण सिर- दर्द

रोग पुराना पड़ जाता है तो उस पर नियन्त्रण पाने में कठिनाई होती है। आरम्भ में तो वह सामान्य उपचारों से ही मिट सकता है, वरन् बहुत बार तो बिना औषधि सेवन के ही ठीक हो जाता है। किन्तु सुखसाध्य से, दुःखसाध्य और दुःसाध्य, सःसाध्य से असाध्यत्व की ओर बढ़ते हुए रोग का शमन करने के लिये बहुत उपाय करने होते हैं। फिर भी रोगी को निराश नहीं होना चाहिये। कभी- कभी असाध्य रोग भी धूल की चुटकी मात्र से मिटते हुए देखे जाते हैं।

सिर- दर्द पर कुछ सरल योग

सिर- दर्द की विभिन्न अवस्थाओं में उपचार यहाँ प्रस्तुत किये जाते हैं —

- सामान्य सिर दर्द दबाने या सेंकने से ही ठीक हो जाता है।
- सिर और माथे पर बादाम रोगन की मालिश से सिर- दर्द में लाभ हो जाता है।
- पीपल का चूर्ण शहद के साथ चाटने से वातजन्य सिरदर्द भी ठीक होता है। चूर्ण की मात्रा लगभग 1 ग्राम लें।
- मुचकुन्द के फूलों को काँजी के साथ पीस कर लेप करें। वातज सिर दर्द में तुरन्त लाभ प्रतीत होगा। नींद भी ठीक से आयेगी। अथवा मट्ठा के साथ मुचकुन्द के फूलों को पीस कर लगाना चाहिये।
- कूठ और एरण्डमूल को काँजी के साथ पीस कर लेप करने से भी सिर दर्द मिट जाता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- पित्तजन्य शिरोरोग में घी और दूध का अधिक सेवन करें। घी सिर पर मलें तथा उसे सूँघें भी। इसमें पुराने घी का लेप या नस्य अधिक लाभप्रद है।
- जीवनीयगण से सिद्ध किया हुआ घृत पित्तजन्य शिरोरोग में अत्यन्त हितकर है।
- लाल चन्दन, खस, मुलहठी, खिरेंटी, नखी, नील- कमल समान भाग को गोदुग्ध के साथ पीस कर लेप करना पित्तज शिरःशूल का उत्तम उपाय है।

वस्तुतः पित्तज शिरोरोग में शीतल उपचार किये जाने चाहिये। उन पदार्थों और औषधि- द्रव्यों का सेवन किया जाना चाहिये, जो प्रकुपित पित्त का शमन कर सकें। ठण्डे पानी से धोया हुआ घृत अभ्यंग के लिये उत्तम रहता है। शीतल वायु का सेवन भी बहुत लाभदायक है।

- पीपल, नागरमोथा, सोंठ, मुलहठी, सोया, नील कमल और कूट समान भाग को पानी के साथ पीस कर सिर पर लेप करने से कफजन्य सिर- दर्द का शमन होता है।
- देवदारु, तगर, कूट, जटामांसी और सोंठ समान भाग को काँजी के साथ पीस कर लेप करने से सिर दर्द मिट जाता है।
- अनन्तमूल, नीलकमल, कूट और मुलहठी समान भाग को काँजी के साथ पीसें और उसे घी में या तैल में मिला कर लेप करें। इससे अर्धावभेदक (आधाशीशी) और सूर्यावर्त दोनों प्रकार के सिर- दर्द में लाभ होता है।
- सोंठ के कल्क में चौगुना दूध मिला कर नस्य लेने से सभी प्रकार का सिर- दर्द मिट जाता है।
- सूरजमुखी के चूर्ण को सूरजमुखी के ही रस के साथ पीस कर सिर पर लेप करें। इससे सूर्यावर्त और आधासीसी दोनों में ही लाभ होता है।
- दशमूल के क्वाथ में घी और सेंधानमक मिला कर सूँघने से आधा- शीशी और और सूर्यावर्त दोनों ठीक होते हैं।
- नौसादर और चूना महीन करके शीशी में, कड़ी डाट लगा कर रखें। इसे सूँघने से सब प्रकार का सिर दर्द तत्काल दूर होता है।

यदि इसके साथ किंचित् कपूर भी मिला लिया जाय तो अधिक उपयोगी होता है। मूर्च्छित व्यक्तिको सुँघा कर होश में लाया जा सकता है।

- रक्तज शिरःशूल में फिटकरी और कर्पूर को महीन पीस कर सुँघावें। इससे रक्त भी बन्द हो जाता है और सिरदर्द भी मिट जाता है। नकसीर के लिए यह उत्तम योग है।
- सिरस और मूली के बीजों के स्वरस को सूँघने से सूर्यावर्त में लाभ होता है।
- छोटी पीपल और वच के स्वरस अथवा क्वाथ की नस्य भी सूर्यावर्त और अधकपारी को दूर करती है।
- भाँगरे का रस और बकरी का दूध समान भाग लेकर मिलावें और धूप में रख कर गर्म कर लें। इसकी नस्य सूर्यावर्त में अत्यन्त लाभदायक और उत्तम है। आधा शीशी में हितकर है।
- नासिका द्वारा ठण्डा जल चढ़ाने से अधकपारी और सूर्यावर्त में लाभ होता है। अथवा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

नारियल का पानी नासिका के द्वारा चढ़ाना चाहिये।

- शर्करा मिश्रित दूध की नाक के द्वारा सेवन करना भी अधकपारी और सूर्यावर्त में हितकारी होता है।
- तिल और जटामाँसी पानी में पीस कर, उसमें नमक मिलावें तथा सिर पर लेप करें। अधकपारी के लिये बहुत प्रभावकारी है।
- काले तिल और वायविडंग समान भाग पीस कर और गर्म पानी में मिला कर नस्य लें। इससे भी आधा शीशी में शीघ्र लाभ होता है।
- चूल्हे की जली हुई मिट्टी और काली मिर्च महीन पीस कर, नस्य लेने से अधकपारी का दर्द दूर हो जाता है।
- शंखक नाम के शिरोरोग में भी यही सब उपाय काम में लाये जा सकते हैं। अथवा शतावर, काले तिल, मुलहठी, नील कमल, दूर्वा और पुनर्नवा का पानी के साथ लेप करने भी शंखक में शीघ्र लाभ होता है।
- बरगद के कल्क का लेप भी शंखक नामक शिरोरोग में लाभदायक है।

ठण्डे पानी और ठण्डे दूध से सिर पर तरड़ा देना चाहिये। इससे भी शंखक में शीघ्र लाभ होता है।

- विष्णुकान्ता के फल का स्वरस अथवा उसकी जड़ का चूर्ण नस्य में प्रयुक्त करें और विष्णुकान्ता की ही जड़ को कान में बाँधें। इससे सब प्रकार का सिर दर्द दूर होता है।
- गुंजा और कंजा के बीजों को पानी के साथ पीस कर नस्य लेने से सब प्रकार के सिर दर्द में लाभ होता है।
- काली मिर्च का चूर्ण, भाँगरे के रस के साथ पीस कर नस्य लेना भी सब प्रकार के सिर-दर्द में हितकर है।
- छोटी लाल मिर्च और बड़ी लाल मिर्च, समान भाग लेकर थूहर के दूध के साथ पीस कर लेप करें। इससे सब प्रकार की शिरोवेदना मिट जाती है।

उपर्युक्त सभी योग शास्त्रीय हैं। अब अन्य कतिपय योग प्रस्तुत हैं।

- कृमिजन्य शिरोरोग में, हुलहुल के पत्तों का स्वरस नाक में टपकाना चाहिये। दोनों नासा- छिद्रों में 7-8 बूँद यह स्वरस टपका कर कुछ देर रोगी को लेटे रहने का निर्देश दें। ऐसा करने से छींकें आने लगेंगी तथा दूषित स्राव के साथ कृमियाँ भी निकल जायेंगी। वस्तुतः कृमिजन्य सिर दर्द तभी ठीक हो सकता है जब कृमियाँ नष्ट हो जाती हैं।
- बादाम की मिंगी 10 ग्राम, कर्पूर और केशर 1-1 ग्राम, मिश्री तथा गोघृत मिला कर मन्दाग्नि पर पकावें तथा घृत मात्र शेष रहने पर छान कर शीशी में रखें।

सभी प्रकार के सिर दर्द में इसकी मालिश और मुख द्वारा सेवन करने से शीघ्र लाभ होता है। कफजन्य शिरोरोग में तो विशेष रूप से उपयोगी है।

- तुलसीपत्र के स्वरस में कर्पूर डाल कर उसे चन्दन काष्ठ से घिसें और मस्तक पर लेप करें। इससे सब प्रकार का सिरदर्द मिट जाता है।
- भाँगरे का स्वरस और गोदुग्ध समान भाग मिला कर पीने से सब प्रकार का सिरदर्द

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मिटता है। सूर्यावर्त में इसे सूर्योदय होने से एक घण्टा पहिले ही पीना चाहिये।

- वस्तुतः भाँगरा (भृंगराज) बहुत ही उपयोगी वनोषधि है। यह सिर सम्बन्धी सभी रोगों में चमत्कारी है। अन्य बहुत से रोगों में बहुत लाभकर सिद्ध हुई है।
- दशमूलादि के साथ सिद्ध भाँगरे का तैल भयंकर शिरःशूल को नष्ट कर देता है।
- हरड़, बहेड़ा, आमला, सुगन्ध बाला और सिर धोने की सज्जी 10-10 ग्राम लेकर अलसी के तैल में गाढ़ा लेप तैयार करें।
- सिर और कनपटी में तीव्र दर्द हो तो उक्त लेप पानी के साथ सिर, भौंह और कनपटियों पर लगावें। दर्द शान्त न हो तो दिन में 2-3 बार लेप कर सकते हैं। अवश्य लाभ होगा।
- यदि रोगी को कब्ज के कारण सिर दर्द हो तो उसे कोई हल्का विरेचन रात में ले लेना चाहिये, जिससे कि प्रातःकाल खुल कर दस्त हो सके।
- आक (अर्क) भी एक उपयोगी वनस्पति है। सिरदर्द में भी लाभदायक है। आक के पत्ते गर्म करके सिर पर बाँधने से सिर दर्द शान्त हो जाता है।
- तकिया में आक की रुई भरें। उस तकिया को सिर के नीचे लगाने से सिर दर्द शीघ्र मिट जाता है।
- सेमल की पुरानी रुई 50 ग्राम, केशर 5 ग्राम और गोघृत 25 ग्राम लेकर एकत्र घोट लें। इसकी धूनी देने से सूर्यावर्त, अधकपारी तथा अन्य प्रकार के साध्य- कष्टसाध्य शिरोरोग शान्त होते हैं।
- सन्निपात शिरोरोग में लौहभस्म बहुत हितकर है। इसे इस प्रकार प्रयुक्त करें—
- त्रिफला चूर्ण 10 ग्राम, लौह भस्म 1 ग्राम और मिश्री5 ग्राम महीन पीस कर रखें। एक ग्राम की मात्रा में शहद के साथ सेवन करायें। ऊपर से दूध पिला दें। नित्य प्रति दिन भर में 2-3 मात्राएँ देते रहने से लाभ होता है।
- अनार की कली 20 ग्राम, शर्करा 10 ग्राम, मिला कर महीन पीसें। इसे सूँघने से सिर दर्द ठीक होता है।
- अनार- पुष्पों का स्वरस, आम के बौर के स्वरस में मिला कर सूँघने से रक्तज शिरशूल तथा नकसीर में तुरंत लाभ होता है।
- सामान्य सिर दर्द में पाँव के तलुओं पर पीली मिट्टी का लेप करें। अवश्य लाभ होगा।
- धूप में घूमने से सिर दर्द हुआ हो तो सिरका के साथ मेंहदी के फूल पीस कर माथे पर लेप कर लें।
- ठण्डी वायु लगने से अथवा शीत ऋतु में घूमने और ठण्ड लगने से सिर- दर्द हुआ हो तो दालचीनी को महीन पीस कर, जल के साथ माथे पर लेप करना चाहिये।
- कृमिजन्य सिर- दर्द में मूली क्षार को महीन पीस कर दिन में कई बार सूँघें।
- मूली का स्वरस सूँघने से भी कृमिजन्य सिर दर्द में शीघ्र लाभ होता है। कृमियाँ स्वयं झड़ जाती हैं।
- लोंग का तैल सिर, माथे पर लगावें अथवा दोनों नासा- छिद्रों में डालें। सिर दर्द दूर हो जायेगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- स्थायी लाभ के लिये लौंग का तैल 4-5 बूँद तक शहद के साथ प्रातः सायं नित्य प्रति खाना चाहिये।
- पीपरमेंट के तैल की नस्य अथवा माथे पर लेप करने से सिर- दर्द, जुकाम तथा मूर्च्छा भी दूर हो जाती है।
- तारपीन के तैल में किंचित् कर्पूर मिला कर नस्य लेने से कुछ ही दिनों में पीनस और बिगड़ा हुआ जुकाम तक ठीक हो जाता है।

सिरदर्द नाशक मरहम (देशी बाम)

देशी मोम 120 ग्राम, पिपरमेंट और कर्पूर 15-15 ग्राम, मालकाँगनी का तैल चौथाई लीटर, चन्दन का तैल (सन्दल), इलायची का तैल और दालचीनी का तैल और लौंग का तैल 10-10 मि.ली. लेकर रखें।

पहिले मालकाँगनी के तैल को गर्म करके, मोम को उसमें डालें। जब मोम गल जाये तब अन्य सभी द्रव्यों को एकत्र करके थोड़े से गले हुए मोम में मिलावें और फिर उसी में डाल कर ठीक प्रकार से मिश्रित करें।

यह मरहम ठण्डी होने पर जम- सी जाती है, इसलिये चौड़े मुख के पात्र में रख कर ढक्कन लगा देना चाहिये। जब बिल्कुल ठण्डी हो जाय, तब पात्र में भरें।

इसके लगाने से हर प्रकार का सिर- दर्द शीघ्र दूर हो जाता है।

सिरदर्द में विशिष्ट दशमूल तैल

दशमूल का काढ़ा 6 सेर 32 तोले, सरसों का तैल 128 तोले, दूध 6 सेर 32 तोले, कल्क के लिये दशमूल 32 तोले।

सबको यथा- विधि एकत्र करके तैल सिद्ध करना चाहिये। इसके सेवन से शोथ नष्ट होता है, नस्य से असमय में उन्नत पलित रोग दूर होता है और ज्वर अरुचि में भी लाभ होता है। इसकी मालिश करने से सभी प्रकार के सिरदर्द दूर हो जाते हैं।

त्रिदोषजादि सिरदर्द में अपर दशमूल तैल

दशमूल का क्वाथ 6 सेर 32 तोले, सरसों का तैल 128 तोले, दूध 3 सेर 16 तोले, कल्क लिये अष्ट वर्ग 32 तोले। यथा विधि तैल सिद्ध करना चाहिये।

यह तैल शिरोरोग को वैसे ही दूर करता है, जैसे अन्धकार को सूर्य। वातज शूल, पित्तज शूल, कफज शूल, सन्निपातज शूल, सूर्यावत, अभिष्यन्द, जलदोष तथा सभी प्रकार के सिर दर्दों को दूर करने में उपयोगी है।

शिरःशूलादि में षड्बिन्दु तैल

कल्क के लिये एरण्डमूल, तगर, सौंफ, जीवन्ती, रास्ना, सेंधा नमक, भाँगरा, वायविडंग, मुलहठी और सोंठ, सब मिला कर आधा सेर, काले तिल का तैल 2 सेल, बकरी का दूध 2 सेर, भाँगरे का स्वरस 8 सेर। यथा विधि तैल सिद्ध करके रखें।

इसकी 6-6 बूँद दोनों नासा- छिद्रों में डालें। इससे सब प्रकार के शिरोरोग में शीघ्र नष्ट हो जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अन्य गुण — गिरते हुए सिर के बाल और हिलते हुए दाँत जम जाते हैं। नेत्रों में भी पर्याप्त प्रकाश अथवा दर्शन शक्ति उत्पन्न हो जाती है। भुजाओं में बल बढ़ता है। आयुर्वेद में इस तैल की बहुत महिमा लिखी है।

शिरोरोग में चन्द्रकान्ता रस

पारद भस्म, अभ्रक भस्म, तीक्ष्ण लौह भस्म, ताम्र भस्म और शुद्ध गन्धक समान भाग लेकर और पारद- गंधक की कज्जली करके, थूहर के दूध के साथ खरल करते हुए आधी- आधी रत्ती की गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1 वटी शहद के साथ घोंट कर प्रातः- सायं देनी चाहिये। एक सप्ताह सेवन करने से सूर्यावर्त आदि सभी प्रकार के शिरोरोग (सिर- दर्द) नष्ट हो जाते हैं। (भै.र.)

शिरोरोग- हर रस

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, अभ्रक भस्म, लौह भस्म, प्रत्येक 2 तोला, स्वर्ण भस्म और शुद्ध संखिया 6-6 माशे।

पारद- गन्धक की कज्जली करके शेष द्रव्य उसमें मिलायें और भाँगरे के स्वरस में खरल करके सरसों प्रमाण गोलियाँ बना लें। इसके सेवन से सब प्रकार के शिरोरोग नष्ट होता है अथवा उसका आक्रमण रुक जाता है। (भै.र.)

संखिया मिश्रित योगों में आवश्यक है कि उन्हें स्वरस में पर्याप्त खरल करना चाहिये। कम से कम 12 घण्टे तो किया ही जाय।

शिरःशूलादिवज्र रस

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, लोह भस्म और निशोथ 4-4 तोले, गुग्गुलु 16 तोले, त्रिफला का चूर्ण 8 तोले, कूट, मुलहठी, छोटी पीपल, सोंठ, गोखरू, वायविडंग और दशमूल 1-1 तोला लें।

फिर पारद- गन्धक की कज्जली करें, काष्ठौषधियों को कूट- छान कर मिलावें, अन्य द्रव्य भी मिश्रित करके दशमूल क्वाथ की भावना दें और घृत- योग से चिरामेठी के तुल्य गोलियाँ बना कर छाया में सुखा लें। (ग्रन्थ में दो रत्ती की गोली लिखी है)

मात्रा—1-2 गोली, अथवा आवश्यकतानुसार, बकरी के दूध से या दूध, शहद से अथवा अन्य, उचित अनुपान के साथ देनी चाहिये। यह रस एकदोष, दो दोष, त्रिदोष से उत्पन्न अथवा सभी प्रकार के शिरोरोगों को नष्ट कर देता है। (भै.र.)

महालक्ष्मी विलास रस का शिरःशूल में प्रयोग

लौह भस्म, अभ्रक भस्म, शुद्ध विष, नागरमोथा, त्रिफला, त्रिकुटा, धतूरे के बीज, विधायरे के बीज, भाँग के बीज, छोटा गोखरु, बड़ा गोखरु और पीपलामूल समान भाग लेकर, धतूरे के स्वरस ही भावना देकर दो रत्ती प्रमाण गोलियाँ बना कर रखें।

इससे सब प्रकार के शिरोरोग नष्ट होते है। (भै.र.)

सिरदर्द पर उत्तम प्रयोग

पिस्ता, चिरोंजी, बादाम की गिरी, तिल और राई 10-10 ग्राम, लोबान- कौड़िया 5 ग्राम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तथा कुचला कुटे हुए (अशुद्ध) 8 ग्राम। सबको जल- योग से पीसें और घृत मिला कर पुल्टिस बना लें।

सिर दर्द में इसे सिर और माथे पर बाँधने से वातजन्य और कफजन्य पीड़ा शीघ्र नष्ट हो जाती है। पुराने सिर दर्द में भी उपयोगी है।

शिरःशूलघ्न नस्य एवं लेप

श्वेत चन्दन का चूरा, छोटी इलायची के दाने, देशी कर्पूर और शर्करा 10-10 ग्राम, निम्बक्षार 5 ग्राम तथा नौसादर 50 ग्राम।

सबको एकत्र खरल कर महीन चूर्ण बनावें। इसकी नस्य लेने से, अथवा किंचित पानी के साथ सिर पर लगाने से सब प्रकार का सिर दर्द दूर होता है। इससे बिच्छू, विष, बर्र का विष, चोट आदि में लाभ होता है। योषापस्मार और प्रतिश्याय में भी उपयोगी है।

सिर- दर्द में कड़ुए तैल की नस्य

सरसों का तैल वस्त्र में छान कर रखें। यह आधा शीशी के दर्द में प्रयोग करने से बहुत लाभ करता है।

जिस ओर दर्द हो रहा हो, उस ओर के नासा छिद्र में 8-10 बूँद डालें। रोगी को वह तैल मुख बन्द करके नासा छिद्र से ही ऊपर खींच कर चढ़ाना चाहिये। इससे अर्ध- कपारी का दर्द तुरन्त मिट जाता है।

22.राजयक्ष्मा (तपेदिक) की चिकित्सा

क्षय के प्रकार एवं लक्षण

यह रोग आरम्भ में तो सामान्य प्रतीत होता है, किन्तु बढ़ता है तो दुःसाध्य रूप धारण कर लेता है। इसमें धीरे- धीरे शरीरस्थ धातुओं का क्षय होने लगता है, इसलिये इसका नाम क्षय भी है। पूर्वकाल में यह रोग चन्द्रमा को हुआ था, और चन्द्रमा नक्षत्र- मण्डल का राजा माना गया है, अतः इसका नाम राजयक्ष्मा हुआ। अंग्रेजी में इसे ट्यूबरक्लोसिस (टी.बी.) तथा थाइसिस कहते हैं। सामान्य भाषा में यह तपेदिक के नाम से प्रसिद्ध है।

आयुर्वेद ने क्षय रोग के पाँच भेद कहे हैं — तीन तो वात, पित्त कफ के प्रकोप से और चौथा भेद सन्निपातज तथा पाँचवीं प्रकार का क्षय उरःक्षतजन्य माना है। वातजक्षय में स्वरभेद के साथ ही, स्कन्ध और पार्श्वों (पसलियों) में संकोच तथा दर्द होने लगता है। पित्तज क्षय में ज्वर, दाह, अतिसार और मुख से कफ के साथ रक्त आता है। कफज में सिर में कफ की अधिकता से भारीपन, ज्वर, दाह, अतिसार और कफ के साथ रक्त आदि लक्षण होते हैं।

सन्निपात- जन्य क्षय में खाँसी की अधिकता, ज्वर, स्वरभंग, पार्श्व- पीड़ा, अतिसार, अरुचि, कफ में रक्त की अधिकता आदि मिश्रित लक्षण रहते हैं। उरःक्षतजन्य क्षय में, वक्षःस्थल में अत्यन्त वेदना, पसलियों में दर्द, अंगशोष, कम्पन, ज्वर, मन्दाग्नि, मल का पतलापन आदि अनेक लक्षण हो सकते हैं। बल, वीर्य, वर्ण आदि के क्षीण होने के कारण रोगी अत्यन्त क्षीण और दुर्बल हो जाता है।

रोगोत्पत्ति के कारणों पर विचार करें तो सभी रोगों में मुख्य कारण तो मिथ्या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
आहार- विहार ही है। प्राचीन मनीषियों ने मनुष्यों के लिये जो दिनचर्या निर्धारित की थी, उसका पालन न होने से विभिन्न प्रकार की व्याधियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। रात्रि के अवसान से ही हमारे दैनिक क्रिया- कलापों का आरम्भ हो जाता है —

ब्रह्मे मुहूर्ते उत्तिष्ठेत् स्वस्थोरक्षार्थमायुषः

अर्थात् "आयु और स्वास्थ्य की रक्षा के लिये ब्रह्म मुहूर्त में उठना चाहिये।" किन्तु आज का नव युवक कहेगा कि अभी तो रात्रि ही है, नींद ही नहीं भरी। यह सर्वमान्य है कि रात्रि में जल्दी शयन करे और प्रातःकाल जल्दी उठे। आज, इस मान्यता को प्रायः नकार दिया गया है, लोग रात्रि में विलम्ब से तो सोते हैं और प्रातः काल भी विलम्ब से ही उठते हैं। बहुत से तो बिस्तर ही तब छोड़ते हैं, जब उन्हें चाय के प्याले (बैड टी) की प्राप्ति हो जाती है।

क्षय के तीन स्तर (स्टेज)

आधुनिक चिकित्सक क्षय रोग को तीन स्तर में विभाजित करते हैं। यद्यपि आयुर्वेद भी सुखसाध्य, दुःसाध्य और असाध्य रूप में तीन प्रकार से चिकित्सा- क्रम निश्चित करते हैं। प्रथमावस्था (प्रथम स्टेज) में पसलियों में दर्द, हाथ- पाँव में हड़कल, सर्वांग में हल्की सी टूटन और ज्वर की स्थिति। वस्तुतः क्षय का निर्णय इस अवस्था तक ठीक से नहीं हो पाता, इसलिये सामान्य ज्वर का ही औषधोपचार चलता है। उससे लगता है कि रोग आया और गया, किन्तु वह फिर लौट आता है, तब कुछ सन्देह होता है।

दूसरी अवस्था (द्वितीय स्टेज) स्वर- भंग, वायुशूल, पार्श्वशूल, ज्वर, प्रदाह, दस्त, पतला पित्त आदि लक्षण प्रकट होते हैं। आरम्भ में तो इनका उपचार सहज रूप से अथवा सामान्य औषधि आदि से हो जाता है। किन्तु किसी कारणवश रोग में वृद्धि हो जाती है, तो कठिनाई उपस्थित होती है। किसी- किसी रोगी को अन्य उपसर्गों की प्राप्ति हो जाती है, तब उन- उन उपसर्गों के शमन का उपाय भी आवश्यक होता है।

तीसरी अवस्था (तृतीय स्टेज) में ज्वर में विषमता, तीव्रता आदि के साथ खाँसी बढ़ जाती है, जो कि रोगी को अधिक परेशान करती है। कफ के साथ, खाँसते- खाँसते अथवा सामान्य खाँसी में भी रक्तांश का जाना और उसके कारण स्वरभंग हो जाना भी एक समस्या का रूप ले लेता है। वह काबू में न आये तो रक्त गिरने की मात्रा बढ़ जाती है, जिससे रोगी निराश- सा होने लगता है।

तृतीयावस्था ही रोग की वह प्रतिकूल स्थिति है, जिसमें एक- एक कर धातुओं का क्षय आरम्भ हो जाता है। आवश्यक नहीं कि सभी धातुओं का क्षय एक साथ होता हो, शनैः- शनैः होने के कारण, चिकित्सक की सावधानी से उनका क्षय होना रुक जाता है।

किन्तु किसी भी रोग को असाध्य रहने का तात्पर्य यह नहीं है कि रोगी ठीक हो ही नहीं सकता। यद्यपि कहा गया है कि असाध्य रोगियों को त्याज्य समझ कर उनकी चिकित्सा नहीं करनी चाहिये। किन्तु वर्तमान परिपेक्ष्य में यह सिद्धान्त निरर्थक समझा गया है। रोगी की अवस्था कैसी भी हो, 'जब तक श्वास तक आश' की लोकोक्तिके अनुसार चिकित्सा अवश्य की जाय। क्योंकि बहुत बार मरते- मरते भी रोगी को नवजीवन मिलता देखा गया है।

रोगी की परिचर्या

यक्ष्मा के रोगी को स्वच्छ जलवायु मिलना अत्यावश्यक है। उसके बिस्तर आदि की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
नित्यप्रति सफाई की जाय और धुले हुए स्वच्छ वस्त्र पहनने को दिये जाय। ज्वर न हो तो स्नान कराना हानिकारक नहीं होता। ज्वरादि की स्थिति में भी हाथ- पाँव और मुख की सफाई तो की ही जा सकती है। प्रातःकाल नीम की दाँतुन का प्रयोग कृमियों की रोक में सहायक होता है। वर्तमान में अनेक जीवाणु नाशक पेस्ट बाजार में मिलते हैं। किन्तु आयुर्वेदिक दन्त मंजन का उपयोग अधिक लाभकारी हो सकता है।

प्रातःकाल शुद्ध वायु में रोगी जितना शक्ति भर घूम सके, घुमाने की सुविधा देनी चाहिये। उसे विश्वास देते रहना चाहिये कि वह शीघ्र ही स्वस्थ हो जायेगा। सब प्रकार की चिन्ताओं से उसे मुक्त रखा जाय, क्योंकि ऐसे रोगों में चिन्ता बहुत बड़े विष का रूप ले लेती है।

काम, क्रोध, लोभ, मोह यह चारों उद्वेग गृहस्थ जीवन में लगे रहते हैं। रोगी को इनसे बचना चाहिये। इन्हीं के कारण ईर्ष्या और द्वेष उत्पन्न होकर व्यग्र बना देते हैं। इस प्रकार के अहितकर अवसरों से रोगी को दूर रखा जाय तो उसका बहुत कुछ उपकार हो सकता है।

क्षय रोगी को स्नेहन, स्वेदन, वमन, विरेचन आदि कर्म का निर्देश चिकित्सा शास्त्र में दिया गया है। किन्तु वैसा निर्देश के बल उन्हीं रोगियों के लिये है, जो उन- उन कर्मों के योग्य हैं। बलहीन रोगी को स्वेदन, विरेचनादि कर्म अहितकर हो सकते हैं। इसलिये रोगी की स्थिति देख कर ही कुछ निर्णय लेना चाहिये। आवश्यक होने पर कोई मृदु विरेचन देना चाहिये, जैसे कि रात्रि- शयन समय छोटी हरड़ और सोंफ की फंकी दूध के साथ दी जाय अथवा कोई अन्य औषधि जो रोगी के अनुकूल रह सकती हो। शास्त्र में स्पष्ट कहा गया है—

बलिनो बहुदोषस्य पंचकर्माणि कारयेत्।
यक्ष्मिणः क्षीणदेहस्य तत्कृतं स्याद्विषोपमम्॥

यक्ष्मा का रोगी यदि बलवान हो तो उसे बहुत दोषों की स्थिति में पंचकर्म कराये जायें। किन्तु यदि रोगी दुर्बल शरीर वाला हो तो वे ही कर्म क्षय रोगी के लिये विष के समान हानिकारक हो जाते हैं।

यक्ष्मा में सरल औषधि- योग संग्रह

यहाँ, यक्ष्मा रोग के निवारण में उपयोगी कतिपय सामान्य योग प्रस्तुत किये जाते हैं —

- नागबला का चूर्ण असमान भाग घी और शहद के साथ सेवन करने से क्षय में लाभ होता है।
- काकजंघा का चूर्ण भी क्षय रोगी को इसी प्रकार दिया जा सकता है। आरम्भिक अवस्था में उपयोगी है।
- श्वेत दूर्वा (दूब) का छाया शुष्क चूर्ण, बकरी के फीके दूध के साथ प्रतिदिन 5-6 बार दें। चूर्ण की मात्रा 6 ग्राम से 1 तोला तक दो- ढाई घण्टे के अन्तर से। रोगी को केवल दूर्वा और दूध पर रखा जाने से शीघ्र लाभ हो सकता है। क्षय रोगी के लिये दूर्वा प्राणदायिनी सर्वोत्तम औषधि है।
- लहसुन की 1-2 कली प्रातःकाल खाकर ऊपर से ताजा पानी पीना चाहिये। सायंकाल भी ले सकते हैं। वस्तुतः लहसुन यक्ष्मा को दूर करने में बहुत सहायक होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- पेठा क्षय रोग में अत्यन्त लाभकारी है। इसका स्वरस शहद में मिला कर दिन में 3-4 बार लेना चाहिये। बाजार में बिकने वाली पेठे की मिठाई भी क्षयरोगी के लिये लाभदायक होती है।
- हरड़, बच, अम्लवेत, रास्ना और सेंधानमक का क्वाथ यक्ष्मा रोग में बहुत लाभ करता है। इसमें गाय का घी 6 ग्राम मिला कर पिलावें। अथवा शहद मिला कर भी दे सकते हैं।
- क्षय रोगी को रात्रि में पसीना अधिक आने की शिकायत रहती है, उसे रोकने के लिये त्रिवंग भस्म 2 रत्ती शहद के साथ सेवन करानी चाहिये। त्रिवंग में वंग, सीसा और यशद की भस्म, तीनों मिला कर दी जाती है। मात्रा तीनों भस्मों की मिला कर ही 2 रत्ती है।
- त्रिवंग भस्म के अभाव में अकेली यशद भस्म का भी व्यवहार किया जा सकता है। इस अकेली की मात्रा 1 रत्ती शहद के साथ देनी चाहिये।
- शिलाजीत क्षयरोग को दूर करने में बहुत उपयोगी है। इसका सेवन शहद के साथ, दूध के साथ अथवा अन्यान्य औषधि योगों के साथ किया जा सकता है। किन्तु वर्तमान में मिलावट करने या नकली वस्तु बेचने वालों ने जीवनदायिनी औषधि को भी नहीं छोड़ा है। इस कारण शिलाजीत असली मिल सके तो ही प्रयोग में लाना हितकर है।
- वासा (अडूसा) क्षय रोग में चमत्कारिक रूप से कार्य करता है। इसका किसी भी रूप में नियमित सेवन करने वाले को खाँसी से छुटकारा मिलता है। कफ में रक्तनहीं आता, ज्वर का भी शमन हो जाता है। इसका प्रयोग स्वरस रूप में अधिक लाभकारी है। वासा- स्वरस में शहद मिला कर दिन में 2-3 बार दिया जाय अथवा इसका पानक शरबत बनाकर रख लिया जाय।

क्षय में लहसुन

लहसन में एक प्रकार का उड़नशील तैल रहता है, जिसका नाम अलील सल्फाइड है। वस्तुतः क्षय के जीवाणुओं को बढ़ने से रोकना और उन्हें समाप्त करना उसी तैल का गुण है। यह ऑक्सीजन के साथ मिल कर त्वचा, फुफ्फुस, यकृत तथा मूत्राशयादि अंगों की विकारयुक्त हुई क्रिया को ठीक करता हुआ, उन- उन विकारों को भी बाहर निकालने का प्रयत्न करता है। यही कारण है कि शरीर में जहाँ कहीं भी क्षय के कीटाणु हों, उन्हें नष्ट करने में लहसुन एक अद्वितीय वस्तु सिद्ध हुई है। यदि इसका नियमित उपयोग किया जाय तो शरीर के किसी भी अवयव में विद्यमान क्षय के कीटाणुओं को नष्ट होना ही पड़ेगा।

इस कारण क्षय के रोगियों को लहसन का सेवन उचित प्रकार से करना चाहिये। लहसन के साथ समान भाग वायविडंग लेकर क्वाथ बनाना चाहिये। इसमें आवश्यकतानुसार मधु, मिश्री अथवा नमक मिलाया जा सकता है।

यह क्वाथ इस रोग में बहुत लाभदायक है।

कूष्माण्ड (पेठा) क्षय नाशक है

पेठा के नाम से इसे सभी जानते हैं। इसकी मिठाई हमारे देश के अधिकांश भागों में बनाई जाती है। उत्तर प्रदेश के आगरा नगर की बनी हुई पेठे की मिठाई तो विश्व प्रसिद्ध

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

है।

Digitized by eGangotri

कुछ लोग इसे श्वेत कद्दू अथवा श्वेत कूष्माण्ड कहते हैं। आयुर्वेद के अनेक योगों में इसे सम्मिलित किया हुआ है। भैषज्य रत्नावली के हिक्का- श्वासाधिकार प्रकरण में पेठे के चूर्ण को गुनगुने पानी के साथ सेवन करने का निर्देश दिया गया है। उसके अनुसार यह अकेला चूर्ण ही अत्यन्त दारुण खाँसी और श्वास को नष्ट करने में समर्थ है।

यदि क्षय के रोगी को तीव्र खाँसी है तो उसमें भी यह कूष्माण्ड चूर्ण 1 ग्राम की मात्रा में शहद में मिला कर भी दिया जा सकता है। इससे खाँसी में तो लाभ होगा ही, कफ के साथ रक्तांश निकलने में भी लाभ होगा।

एक बार एक सन्यासी ने बताया था कि पेठे का चूर्ण पेठे के ही स्वरस में तीन दिन खरल किया जाय तो उसमें रसायन गुण आ जाते हैं। उनका कहना था कि इस महौषधि के सेवन से ही क्षय रोग दूर हो जाता है। साथ ही रोगी को पेठा भी अधिक खाना चाहिये। उसके लिये शुद्धता पूर्वक बनाई गई पेठे की मिठाई भी आहार में सम्मिलित की जा सकती है।

कूष्माण्ड रसायन इस प्रकार बनायें कि पेठे को काट कर, उसके छोटे- छोटे टुकड़े करके छाया में सुखा लें और फिर उन सूखे हुए कूष्माण्ड खण्डों को पेठे के ही स्वरस में कम से कम 3 दिन खरल करें। यदि 4-5 दिन तक कर सकें तो अधिक गुणकारी रहेगा। उसका सेवन 1 ग्राम की मात्रा में शहद के साथ मिला कर करना चाहिये। ऊपर से सुखोष्ण दूध, गाय अथवा बकरी का पी सकते हैं।

पेठे को क्षय चिकित्सा में स्थान तो पहिले से ही मिला हुआ है। उधर तिब्बत के लामा लोग भी क्षय की चिकित्सा पेठा के द्वारा ही करते हैं। कहा जाता है कि वे पेठा खिला कर ही कठिन राजयक्ष्मा को दूर करने में सिद्धहस्त रहे हैं।

शोध परीक्षणों से भी पाया गया है कि क्षय में फुफ्फुसों से रक्त गिरना आरम्भ होने पर तुरन्त पेठे का स्वरस सेवन कराना चाहिये। क्षय की आरम्भिक अवस्था में तो यह तुरन्त ही अपना काम आरम्भ कर देता है।

इसे इस प्रकार प्रयोग में लायें— पेठे का स्वरस 6 चम्मच और वासा पुष्प स्वरस 3 चम्मच मिला कर उसमें उतना ही शहद डालें। यदि रक्त निकलता हो तो प्रतिदिन 3 बार सेवन करने से स्थायी लाभ हो सकता है।

अथवा मुक्ताभस्म 1 या 2 रत्ती की मात्रा में, पेठे के ताजा स्वरस के साथ सेवन करायें। इससे रक्त रुकेगा और शरीर में शक्ति भी उत्पन्न होगी।

कुछ चिकित्सकों का मत है कि पेठा क्षय रोग में उपयोगी औषधि रूप में भी है और अनुपान रूप में भी इसका प्रयोग किया जा सकता है। अन्य औषधियों के साथ पेठे का स्वरस आसानी से 10-15 तोला तक दिया जा सकता है, उससे भी पर्याप्त लाभ होते देखा गया है।

क्षय में केला का सेवन

केला एक ऐसा फल है जो औषधि रूप भी है और आहार की भी पूर्ति करता है। कुछ लोग करते हैं कि केला देर में पचता है तथा आँव भी बनाता है। किन्तु यह एक भ्रान्ति ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

है। वरन् इसे अनेक रोगों में दिया जाता है। शारीरिक शक्ति बढ़ाने में इसका अत्यधिक उपयोग है। यह बात अवश्य है कि उसके सेवन में अति नहीं करनी चाहिये।

जिनकी पाचन- शक्ति ठीक नहीं हो, उन्हें केले की फली का छिलका हटा कर और उस छोटी इलायची का चूर्ण छिड़क कर या लगा कर खाया जाय। इससे आँतों की दुर्बलता दूर होती है, अस्थियों को भी बल मिलता है। शरीर का भार बढ़ाने की इसमें पर्याप्त क्षमता है। इसलिये क्षयग्रस्त दुर्बल रोगियों के लिये यह अधिक उपयोगी है।

दक्षिण अमेरिका के ब्राजील में एक क्षय- चिकित्सक मेंटलबोन ने क्षय रोग पर प्रकाशित अपने अनुभवों में लिखा है कि एक रोगी का क्षय रोग अधिक बढ़ गया था। बार- बार खाँसी, कफ में रक्तकी अधिकता, रात्रि में स्वेद का बाहुल्य, तीव्र ज्वर, शरीर शुष्क, दुबला, पतले दस्त आदि से त्रस्त था। यह व्याधि उसे अपने माता- पिता से मिली थी। उसे केले का रस बतलाया गया। नित्यप्रति केले के पिण्ड से ताजा स्वरस निकाल कर उसे 1 ओंस स्वरस और 1 ओंस दूध मिला कर 2-2 घण्टे के अन्तर से पिलाया जाता था। इस प्रकार वह रोगी, जो चलने- फिरने में भी असमर्थ था, तीन दिन में चलने लगा। उसकी खाँसी कम हुई, भूख भी खुली तो केले का स्वरस का वह प्रयोग दो महीने तक लगा कर चलाया गया, जिससे वह पूर्ण स्वस्थ हो गया।

केला मूत्रावरोध दूर करता है, मूत्र को स्वच्छ भी करता है। मल को बाँधकर निकलता है, इसलिये अतिसार में इसका प्रयोग हितकर रहता है। किन्तु लक्षणानुसार अनुकूल प्रतीत होने पर सेवन कराने से अधिक लाभकारी होता है। यदि मलावरोध हो तो इसका सेवन नहीं कराना चाहिये।

यक्ष्माहर द्राव

पहाड़ी गोखरू का चूर्ण, मिश्री और पुराना गुड़ तीनों पाव- पाव भर लेकर 1 लीटर जल के साथ घोलें और काँच के अमृतवान में भर कर तीन दिन तक धूप में पकने को रखते रहें। तत्पश्चात् छान कर बोतलों में भरें।

मात्रा — यह द्राव 2 तोले की मात्रा में प्रातः- सायं सेवन करना चाहिये। क्षय की आरम्भिक अवस्था में तो बहुत ही उपयोगी है। मध्य अवस्था 'द्वितीय स्टेज' में भी इससे लाभ मिलता है। क्षय के विभिन्न उपसर्ग- खाँसी, कफ के साथ रक्त जाना, धातुक्षय, मूत्र का पीलापन, ज्वर, अरुचि आदि उपद्रव भी इससे मिट जाते हैं। इसका निरन्तर सेवन करते रहने से रोग का शमन होता है, बल- वीर्य की वृद्धि होती है, तथा रोग तृतीयावस्था पर पहुँचने से पहले ही समूल नष्ट हो जाता है।

यक्ष्मा विध्वंसिनी वटी

शुद्ध खर्पर (खपरिया) 10 ग्राम, काली मिर्च 5 ग्राम, शुद्ध हिंगुल 3 ग्राम, मुक्तापिष्टी और सनाय- पत्र 1-1 ग्राम, मक्खन 20 ग्राम लें। प्रथम काली मिर्च और सनाय को महीन पीसें और फिर उसमें एक- एक कर अन्य सभी द्रव्य डाल कर घोटते रहें। अन्त में मक्खन मिला कर इतना घोटें कि वह एकजीव हो जाय, तब 1-1 रत्ती की गोली बनावें।

मात्रा — 1-1 गोली, शहद में छोटी पीपल का चूर्ण मिला कर प्रातः- सायं सेवन करायें। पीपल चूर्ण की मात्रा लगभग 1 ग्राम तक रह सकती है। इसके सेवन से सब प्रकार का राजयक्ष्मा और उसके अन्यान्य दोष दूर हो जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कासनी 5 ग्राम, सौंफ 2 ग्राम, खीरा के बीज की मिंगी और खरबूजे के बीज की मिंगी 1-1 ग्राम, कालीमिर्च 5 नग, लौंग 2 नग, बादाम की मिंगी 2 नग, किशमिश 10 ग्राम और मिश्री 40 ग्राम।

मिश्री को छोड़कर, सभी को पहिले दिन, रात्रि में भिगोवे और प्रातःकाल बादाम की मिंगी का लाल छिलका उतार फेंके और ठण्डाई के समान सिल पर घोट- छान कर मिश्री भी मिला दें। प्रातःकालीन नाश्ते पर यह ठण्डाई इच्छानुसार पीनी चाहिये। नित्यप्रति 1 बार इसे लेते रहने से क्षय रोग और उसके उपद्रव मिट जाते हैं।

क्षय रोग नाशक सलाद

अदरक, टमाटर, प्याज और पालक का पत्ता कतर कर एक साथ मिलायें और उस पर कागजी नींबू का रस निचोड़ें, भोजन के साथ अथवा पश्चात् इसे खाने से अरुचि दूर होगी, भूख भी बढ़ेगी। इससे कब्ज भी दूर होता है और रक्त भी बढ़ता है।

क्षयनाशक अवलेह

पुराना भूमि कूष्माण्ड 1 किलोग्राम तथा नासा की छाल 1 किलो 250 ग्राम लेकर जौकुट करें तथा 12 लीटर पानी के साथ चतुर्थावशिष्ट क्वाथ बनावें और छान कर 800 ग्राम मिश्री मिलावें तथा 800 ग्राम भूमि कूष्माण्ड का चूर्ण 100 ग्राम गोघृत के साथ भून कर मन्दाग्नि पर चढ़ावें और उसे 2 किलोग्राम मिश्री की चाशनी में डाल कर पाक करें। चाशनी कुछ गाढ़ी होने पर उसमें आमला, वंशलोचन, नागरमोथा, दालचीनी, भारंगी और छोटी इलायची 4-4 ग्राम, और छोटी पीपल 40 ग्राम का कपड़छन चूर्ण उसमें मिलावें। तदुपरान्त चाटने योग्य होने पर उसमें अभ्रक भस्म 15 ग्राम मिला कर नीचे उतारें और शीतल होने पर 200 ग्राम मधु मिला कर रखें।

मात्रा —3 से 6 ग्राम तक सेवन करें और ऊपर से बकरी का दूध पीवें। इससे राजयक्ष्मा, धातुगत क्षय, खाँसी, श्वास, रक्तपित्तादि का शमन होकर बल, वीर्य की वृद्धि होती है।

क्षय में उपयोगी भल्लातक योग

शुद्ध भल्लातक (भिलावा) 1 बीच में से काट कर उसे गोदुग्ध में समान भाग पानी के साथ सिद्ध करके और छान कर पिलाने से क्षय रोग नष्ट हो जाता है। दूध में मिश्री मिला कर देना चाहिये।

भल्लातक शोधन के लिये, उसे गोमूत्र में 3-4 दिन भीगने दें और फिर उसे बीच में से सरोंते से काट कर 2 दिन ईंट के चूरे में रख कर निकालें और गर्म पानी से धोकर काम में लावें। यह भल्लातक दूध- पानी के साथ ओंटा एवं छान कर पिलाना चाहिये।

यह योग क्षय- रोगी को ही देना चाहिये। यदि क्षय नहीं हुआ तो हानि कर सकता है। आहार में केवल दूध दिया जाय अथवा दूध की अधिकता होनी चाहिये।

क्षय में दौर्बल्यनाशक योग

मुनक्का 25 ग्राम लेकर उनके बीज निकाल फेंके और बादाम (भिगो कर छिलका हटाई हुई) भी उतनी ही लें। साथ ही लहसुन की कली, छील कर, नुका कर 3 ग्राम लें और तीनों को सिल पर जल- योग से महीन चटनी के समान पीस कर अवलेह जैसा बनायें और फिर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उसे लोहे की कढ़ाई में 25 ग्राम गोघृत डाल कर मन्दाग्नि पर पकावें। जब वह गाढ़ा हलुआ सा होने लगे, तब उसमें 12 ग्राम मिश्री का चूर्ण मिला कर एक जीव करके उतार लें और ठण्डा होने पर उसमें 1 रत्ती मुक्तापिष्टी और 2 से 4 चावल भर तक सिद्ध मकरध्वज मिला कर सेवन करावें। यह हलुआ रूप औषधि प्रातःकाल नाश्ते के रूप में सेवन करानी चाहिये।

इसके सेवन से शारीरिक कृशता, दुर्बलता दूर होकर क्षयरोगी का वजन बढ़ने लगेगा। शुक्रक्षय के रोगियों के लिये तो यह योग बहुत ही हितकर है।

यक्ष्माहर रसायन

अभ्रक भस्म, प्रवाल भस्म, श्रृंग भस्म, गोदन्ती भस्म, अकीक पिष्टी, कँहरवा पिष्टी और मुक्ता भस्म 10-10 ग्राम लेकर खरल में घोटें और फिर आक के दूध के साथ खरल करते हुए चना प्रमाण गोलियाँ बना लें।

मात्रा —1-1 गोली दिन में 3 बार 6-6 घंटे के अन्तर से बकरी के दूध से साथ सेवन करनी चाहिये। गोली खाने के 30 मिनट पश्चात् मक्खन, मिश्री और शहद 12-12 ग्राम में आधा तुलसी का रस मिला कर पीवें। यह प्रयोग अकेला ही क्षय रोग की निवृत्ति कर सकता है। आहार में बकरी का दूध मात्र लेना अधिक हितकर है। किन्तु केवल दुग्धाहार पर न रहा जा सके तो अन्नाहार के अतिरिक्त, अधिक मात्रा में बकरी का दूध दिया जाना चाहिये।

क्षयनाशक सरल सफल योग

नौसादर शुद्ध, श्वेत मिर्च और फुलाई हुई फिटकरी 10-10 ग्राम, शुद्ध विष 1 ग्राम लें और ठीक प्रकार से घोट कर रखें।

मात्रा — आधा से एक ग्राम तक इस औषधि की चूर्णित मिश्री के साथ दिन में तीन बार देना चाहिये। ऊपर से बकरी का दूध पिलाया जाय। आवश्यकतानुसार लक्षण- भेद से अनुपान में परिवर्तन कर सकते हैं। शहद के साथ, वासा- क्वाथ के साथ या अन्य कोई अनुपान।

सामान्य प्रकार के क्षय में यह दवा बहुत लाभ करती है। क्षय की प्रथमावस्था, क्षयज कास, क्षय के साथ ज्वर में भी लाभकर है। यदि इसकी प्रत्येक मात्रा के साथ 1 ग्राम तक सितोपलादि चूर्ण मिलाकर शहद के साथ दें तो क्षय के साथ मन्द ज्वर में लाभ होता है। रोगी को पौष्टिक आहार दूध, घी, मक्खन, गेंहूँ की रोटी तथा अंगूर, अनार, केला प्रभृति फल देने चाहिये।

क्षय में लाभकारी भृंगराजासव

भाँगरे का स्वरस 5 लीटर, गुड़ 4 किलोग्राम और हरड़170ग्राम० को जौकुट करें और फिर सब को मिट्टी के भीतर से चिकने तथा चन्दन, कर्पूर, अगर आदि की धूनी दिये हुए घड़े में डाल कर ऊपर से सरवा द्वारा मुख बन्द करके, सन्धि पर कपड़मिट्टी कर दें और कम्बल आदि में लपेट कर एकान्त स्थान में 2 सप्ताह पर्यन्त रखें। फिर निकाल कर छानें और उसमें निम्न प्रक्षेप द्रव्य डालें। छोटी इलायची, छोटी पीपल, जायफल, दालचीनी, लौंग, तेजपात और नागरेशर 30-30 ग्राम, बहुत महीन चूर्ण करके मिलाना चाहिये। उन सबको पुनः उसी घड़े में डाल कर दो सप्ताह उसी प्रकार रखें फिर छान लें और बोतलों में भर कर रखें।

मात्रा —30 मिलीलीटर, समान भाग जल मिला कर दिन में दो बार दें। इससे धातुक्षय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वाले रोगी को अत्यन्त लाभ होगा। क्षयजन्य कास, दुर्बलता, कृशता आदि के निवारणार्थ यह आसव बहुत उपयोगी है। इसके साथ अन्य औषधियों की भी लक्षणानुसार योजना की जा सकती है।

क्षय, क्षयकास में श्रृंग्यर्जुनाद्य चूर्ण

काकड़ासिंगी, अर्जुन की छाल, असगन्ध, नागबला, पुष्करमूल और हरड़ समान भाग लेकर, कूट- कपड़छन करें तथा तालीशादि चूर्ण भी समान मात्रा में मिला कर रखें।

मात्रा — 1 से 3 ग्राम तक असमान भाग मधु और घृत के साथ सेवन करना चाहिये। इससे सब प्रकार के यक्ष्मा में लाभ होता है तथा क्षयजन्य खाँसी और शारीरिक दुर्बलता आदि उपसर्ग मिट जाते हैं।

क्षयज कास में कर्पूराद्य चूर्ण

कर्पूर, दालचीनी, शीतल चीनी, जायफल, जावित्री 1-1 भाग, लोंग 2 भाग, जटामाँसी 3 भाग, काली मिर्च 4 भाग, पीपल 5 भाग और सोंठ 6 भाग लेकर सबका कपड़छन चूर्ण बनावें। फिर इस चूर्ण के बराबर वजन में मिश्री मिला कर रखें।

मात्रा — 1 से 3 माशे तक यह चूर्ण हृदय को बल देता है। दाह, क्षय, खाँसी, स्वर- भेद, पीनस, श्वास, वमन, तथा काष्ठ रोगों को भी नष्ट करता है। क्षयजन्य सभी उपसर्गों में हितकर है।

कास- क्षय शामक एलादि चूर्ण

छोटी इलायची, तेजपात, नागकेशर और लोंग 1-1 भाग, मुनक्का, मुलहठी, मिश्री और छोटी पीपल 4-4 भाग लेकर कूट- छान कपड़छन कर लें।

मात्रा — 1 से 3 ग्राम तक शहद के साथ सेवन करने सब प्रकार के क्षय रोग में हितकारी है।

क्षयहारी अल्प व्यय का अपूर्व योग

श्वेत चन्दन का बुरादा 10 ग्राम, धनियाँ 5 ग्राम, श्वेत इलायची छिलका सहित 2 ग्राम और संगजराहत 1 ग्राम लेकर एकत्र करें और पानी के साथ पीस कर छान लें तथा बकरी के पावभर दूध में मिश्री मिला कर प्रातःकाल नीहार- मुख पी लें। निरन्तर एक मास तक इसे चलावें। इससे सब प्रकार का राजयक्ष्मा दूर हो जाता है।

क्षय में जीवन्त्यादि घृत

जीवन्ती, मुलहठी, मुनक्का, इन्द्रजौ, कचूर, पुष्करमूल, छोटी कटेरी, गोखरू, खिरेंटी, नीलकमल, तामलकी (भुई आमला), त्रायमाणा (बनफ्शा), जवासा और छोटी पीपल, सभी समान भाग लेकर, इनके कल्क और क्वाथ के साथ विधिपूर्वक घृत सिद्ध करें।

मात्रा —6 माशे से 1 तोला तक। इसके सेवन से ग्यारह लक्षणों से युक्त, दुःसाध्य, भयंकर यक्ष्मा भी दूर हो जाता है।

क्षय ज्वरादि में पाराशर घृत

मुलहठी, बला, गिलोय तथा स्वल्प पंचमूल शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, बड़ी कटेरी, छोटी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कटेरी और गोखरू सब मिला कर 5 सेर, घृत 6 सेर बत्तीस तोला, पानी 1 मन 11 सेर 16 तोला जिसके क्वाथ का अवशिष्ट जल 6 सेर 32 तोला, आमलों का स्वरस 6 सेर 32 तोला, ईख का रस 6 सेर 32 तोला तथा दूध 25 सेर 28 तोला और कल्क के लिये जीवनीगण (जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीर काकोली, मुलहठी, माषपर्णी, मुद्गपर्णी और जीवन्ती। सब समान भाग मिला कर) 128 तोला लेकर यथा विधि घृत सिद्ध कर लेना चाहिये।

मात्रा — 4-6 माशे। इसके सेवन से खाँसी, ज्वर आदि उपद्रवों से युक्त यक्ष्मा नष्ट हो जाता है।

यक्ष्मारि कुंकुमाद्य घृत

केशर मिश्रित गीघृत 3 सेर 16 तोला, क्वाथ के लिये मुलहठी 5 सेर, जल 25 सेर 48 तोला, अवशिष्ट क्वाथ 6 सेर 32 तोला, दशमूल 5 सेर के साथ जल 25 सेर 48 तोला, अवशिष्ट क्वाथ 6 सेर 32 तोला, छोटी कटेरी 5 सेर, जल 25 सेर 48 तोला, अवशिष्ट क्वाथ 6 सेर 32 तोला, इस प्रकार 3 द्रव्यों में से किसी भी एक का घृत बनालें। बकरी का दूध 12 सेर 64 तोला, दुग्ध- पाक हेतु जल 1 मन 11 सेर 16 तोला।

कल्क द्रव्य —लौंग, मोथा, वच, केशल, जीवनीयगण, बला, त्रिकुटा, नीलकमल, रेणुका, पृश्निपर्णी, वाराहीकन्द, गिलोय, कलवालुकं, प्रियंगु, छोटी इलायची, बड़ी इलायंची, आमला, मालती के पुष्प, हाऊबेर, चव्य, तेजपात, तालीशपत्र, नागकेशर, असगन्ध, जीरा और अजवाइन 2-2 तोला। यथविधि घृत सिद्ध कर लें।

मात्रा — 6 माशे, यह घृत कास, श्वास, क्षय, यक्ष्मा प्रमेह रक्त पित्त आदि अनेक रोगों को नष्ट करने में समर्थ है।

क्षय, कास ज्वरादि में पानीय कल्याणक घृत

हरड़, बहेड़ा, आमला, हल्दी, दारुहल्दी, रेणुका बीज, दोनों सारिवा, प्रियंगु- पुष्प, शालिपर्णी, पृष्ठिपर्णी, देवदारु, एलुआ, तगर, इन्द्रायण- मूल, दन्तीमूल, अनारदाना, नागकेशर, नीलकमल, छोटी इलायची, मंजीठ, वायविडंग, कूट, लाल चन्दन, तालीशपत्र और बड़ी कटेरी, प्रत्येक 1-1 तोला, यह कल्क- द्रव्य हुए। घृत 64 तोला, पानी 3 सेर 16 तोला। यथा विधि घृत सिद्ध करें।

मात्रा — 6 माशे से 1 तोला तक इसके सेवन से क्षय रोग, क्षयजकास, ज्वर, अपस्मार, उन्माद, वातरक्त, मन्दाग्नि, दुष्कर खाँसी, जुकाम, कटिदर्द, विषमज्वर, मूत्रकृच्छ्र, पाण्डु, प्रमेह, कण्डुतथा विष आदि को नष्ट करने में समर्थ है।

यक्ष्मादि में पंचतिक्त घृत

कल्क हेतु वासा, नीम की छाल, गिलोय, कटेरी और परवल के पत्ते, सब मिला कर 4 छटाँक, क्वाथ के लिये जल 4 सेर का चतुर्थांश शेष काढ़ा 1 सेर, घृत 1 सेर। यथाविधि घृत सिद्ध करें।

इसके सेवन से यक्ष्मा में लाभ होता है। विषम ज्वर, पाण्डु, कुष्ठ, विसर्प, कृमि रोग और अर्श में हितकर है। कृमिजन्य मलयुक्त क्षय में उपयोगी है।

मात्रा — 6 माशे से 1 तोला तक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

घृत- तैल निर्माण की विधि

घृत और तैल की निर्माण विधि प्रायः एक जैसी है। कल्क द्रव्य से चौगुना अथवा निर्दिष्ट मात्रा में घृत या तैल लेना चाहिये। घृत या तैल से चौगुना, जल, दूध या अन्य तरल पदार्थ लिया जाय। क्वाथ द्रव्यों से चौगुना पानी लेकर चतुर्थावशिष्ट काढ़ा करके, उस अवशिष्ट क्वाथ के बराबर घृत या तैल लेकर पकावें, तब घृत या तैल मात्र शेष रहे तब सिद्ध हुआ समझें।

क्षयादि में चन्दनादि तैल

तिल का तैल 3 सेर 16 तोला, भारंगी का स्वरस, गिलोय का स्वरस, कटेरी का क्वाथ, बला का क्वाथ, प्रत्येक 6 सेर 32 तोला, कल्क के लिये श्वेत चन्दन, अगर, तालीसपत्र, नखी, मंजीठ, पद्माख, नागरमोथा, कर्पूर, लाक्षा, हल्दी, दारूहल्दी और लाल चन्दन प्रत्येक का चूर्ण 4 तोला लेकर यथा विधि तैल सिद्ध करें।

इस तैल की मालिश करने से राजयक्ष्मा, खाँसी, विष आदि को नष्ट करके बल,वर्ण और अग्नि की वृद्धि करता है।

क्षय ज्वरादि में महाचन्दनादि तैल

तिल का तैल 128 तोले, कल्क के लिये लाल चन्दन, गन्ध बाला, नखी, कूट, मुलहठी, पद्माख, मंजीठ, चीढ़, देवदारु, कपूर, छोटी इलायची, पूति, नागकेशर, तेजपात, शिलारस, मुरामांसी, शीतलचीनी, प्रियंगु, नागरमोथा, हल्दी, दारुहल्दी, अनन्तमूल, श्यामलता, लता कस्तूरी, लौंग, अगर, केशर, दालचीनी, रेणुका और नालुका, सब समान भाग, मिला कर 32 तोले, दही का पानी (तोड़) 6 सेर 32 तोले तथा लाक्षारस 128 तोले लेकर यथाविधि तैल सिद्ध करें। इस तैल की मालिश से क्षय, ज्वर, अपस्मार प्रभृति अनेक रोग नष्ट होते हैं।

क्षय में सुखद उत्सादन (उबटन)

जीवन्ती, श्वेत दूर्वा, पुनर्नवा, मंजीठ, बिल्वमूल, असगन्ध, कूट, अलसी, उड़द, साठी चावल, काले तिल, अपामार्ग, हरड़ का वक्कल, मुलहठी, बला, विदारीकन्द और सरसों 10-10 ग्राम, जौ का आटा 100 ग्राम।

सबको अत्यन्त महीन पीस कर, इसमें थोड़ा दही, शहद मिला कर इस भाँति का पेस्ट जैसा बना लें, जिससे कि उबटन करने में सुखद रहे। इस उबटन को सिर से पाँव तक सर्वांग में धीरे- धीरे करना चाहिये। उबटन लगाने के कुछ देर बाद रोगी को ऋतु अनुसार ठण्डे या सुखोष्ण पानी से स्नान कराया जाय और धुले हुए वस्त्र पहिनाये जायें। किन्तु यह प्रयोग ज्वरग्रस्त रोगी को न करायें।

क्षयादि में द्राक्षावलेह

मुनक्का उत्तम कोटि की, फूली हुई हों, पिचकी हुई न हों 1 किलो ग्राम, जावित्री,जायफल, लौंग, छोटी इलायची के दाने, दालचीनी, नागकेशर, तेजपात और कमलगट्टा की गिरी 15-15 ग्राम, केशर 3 ग्राम और मिश्री 2 किलोग्राम।

मुनक्काओं को बीज निकाल कर, पानी में घोल कर, सिल पर पीसें, जिससे उनका कल्क बन जाय। सब काष्ठौषधियों को कूट- कपड़छन करके रखें। मिश्री की चाशनी तैयार करें और उसमें औषधि- चूर्ण और कल्क मिला कर, ठीक प्रकार से चला कर अमृतवान में रखें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मात्रा — यह अवलेह 10 से 20 ग्राम तक की मात्रा में बकरी के दूध के अनुपात से प्रातःकाल और रात्रि शयनकाल में सेवन करायें। आवश्यक समझें तो एक मात्रा मध्याह्न काल में भी दें। इससे क्षय, दाह, पाण्डु, रक्तपित्त, अम्लपित्त, मन्दाग्नि, रक्तार्श तथा शिरोरोगों में पर्याप्त लाभ सम्भव है।

सन्निपातज क्षयादि में अष्टांगावलेह

कायफल, पुष्करमूल, काकड़ासिंगी, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, जवासा और काला जीरा, इन आठ औषधियों को कूट- कपड़छन करके रखें।

मात्रा — 2 से 4 माशे तक यह चूर्ण शहद के साथ मिला कर प्रात- सायं सेवन कराना चाहिये। इसके सेवन से घोर सन्निपातज विकार भी दूर हो जाते हैं। खाँसी, श्वास, हिचकी तथा गले के रोग एवं स्वरभंग आदि में भी उपयोगी है।

यदि वक्षस्थल और कण्ठ आदि में रुके हुए कफ को निकालने में इसका उपयोग करना हो तो इसे अदरक के स्वरस के साथ सेवन करना चाहिये।

क्षयजकासादि में चातुभद्रावलेह

कायफल, पुकरमूल, काकड़ासिंगी और छोटी पीपल समान भाग का कपड़छन चूर्ण दुगुने शहद में ठीक प्रकार से मिला कर काँच के पात्र में रखें।

मात्रा — 2 या 3 माशे तक। खाँसी, श्वास, ज्वर तथा कफ की अधिकता का शमन करने में उपयोगी है। क्षय की प्रारम्भिक अवस्था में इसका उपयोग किया जा सकता है।

राजयक्ष्मा पर वासावलेह

वासा (अडूसा) के 128 तोले स्वरस में 32 तोले मिश्री मिला कर मन्दाग्नि पर पकायें। जब गाढ़ा होने को हो, तब उसमें 8 तोले छोटी पीपल का चूर्ण मिलायें, जब ठीक प्रकार से चाटने योग्य पक जाय तब उसमें गाय का घी 16 तोले मिला कर पर्याप्त चलावें तथा ठण्डा होने पर उसमें 32 तोले शहद मिलावें।

मात्रा —6 माशे से 1 तोला तक। रोगी के बलानुसार कम मात्रा में भी दे सकते हैं। यह वासावलेह राजयक्ष्मा में अत्यन्त हितकर है। खाँसी, श्वास, पार्श्वशूल, हृदय का शूल, रक्तपित्त तथा ज्वर को भी दूर करता है। क्षय- रोगी में इन उपसर्गों की अधिकता मिले तभी शीघ्र लाभ करेगा।

राजयक्ष्यादि में वृहद्वासावलेह

वासा (अडूसा) की जड़ की छाल लेकर उसे 32 सेर 28 तोले पानी में पकावें और जब 6 सेर 32 तोले शेष रहे, तब उस क्वाथ में 5 सेर मिश्री मिला कर मन्दाग्नि पर पकायें। जब काढ़ा हो जाय, तब इसमें त्रिकुट, दालचीनी, तेजपात, छोटी इलायची के बीज, कायफल, नागरमोथा, कूट, जीरा श्वेत, पीपलामूल, आमला, चव्य, वंशलोचन, कुटकी, गजपीपल, तालीसपत्र और धनियाँ प्रत्येक 1- 1 तोला चूर्ण मिला कर उतार लें तथा ठण्डा होने पर 32 तोले शहद मिला कर घी के चिकने पात्र अथवा स्वच्छ काँच या चीनी के पात्र में रखें।

मात्रा —रोगी का अग्नि- बल आदि विचार कर निश्चित करें, जो कि 6 माशे तोला तक हो सकती है। अनुपान में ठण्डा किया हुआ उष्णजल दिया जाय, अथवा लक्षणानुसार अन्य कोई अनुपाननिश्चित किया जाय।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

यह अवलेह सब प्रकार के राजयक्ष्मा, रक्तपित्त, हृदयशूल, पार्श्वशूल, वमन, अरुचि तथा ज्वरादि का शमन करने में समर्थ है। सामान्य क्षय में तो बहुत ही उपयोगी है।

प्रबल राजयक्ष्माहर वृहद्वासावलेह

वासा अडूसा, पंचांग, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी और भारंगी, प्रत्येक सवा सेर को जौकुट करके 25 सेर 28 तोले पानी के साथ मन्दाग्नि पर पका कर चतुर्थावशिष्ट क्वाथ करें और उसमें 64 तोले मिश्री मिलावें। गाढ़ा होने पर 16 तोले शहद, 23 तोले अभ्रक भस्म, 26 तोले छोटी पीपल का चूर्ण और कूट, तालीशपत्र, काली मिर्च, तेजपात, मुरामांसी, जटामांसी, खस, लौंग, नागकेशर, दालचीनी, भारंगी, सुगन्धबाला और नागरमोथा का 1-1 तोला चूर्ण मिला कर उतार लें।

मात्रा —6 माशे से 1 तोला तक। इससे प्रबल राजयक्ष्मा पाँचों प्रकार की खाँसी, रक्तपित्त, क्षय, श्वास, ज्वर, पार्श्वशूल, हृदयशूल, अम्लपित्त तता वमन उपद्रव नष्ट हो जाते हैं। यह अवलेह बालक, तरुण, वृद्ध, स्त्री या पुरुष सभी के लिये समान रूप से हितकारी है।

क्षयादि पर अगस्त्य हरीतकी

हरड़ 100 नग, जौ तेरह सेर 5 तोले, दशमूल 1 सेर, चित्रकमूल, पीपलामूल, अपामार्ग, कचूर, केवाँच के बीज, शंखपुष्पी, भारंगी, गजपीपल, खिरेंटी मूल और पुष्करमूल प्रत्येक 8 तोले। सबको जौकुट करके उसे 16 सेर पानी में औटावें। जौ एक पोटली में बाँध कर डालने चाहिएं। चौथाई शेष क्वाथ जल रहने पर, हरड़ों को पृथक् करें और छने हुए उस क्वाथ में 16 तोले घी, 16 तोले सरसों का तैल, 5 सेर गुड़ और उन हरड़ों को डाल कर पकावें। इस प्रकार अवलेह सिद्ध होने पर उसमें 16 तोले छोटी पीपल का चूर्ण मिला कर नीचे उतार लें। जब ठण्डा हो जाय तब उसमें 16 तोले शहद, ठीक प्रकार से मिला कर अमृतवान में रखें।

मात्रा —2 हरड़ और 4 तोले अवलेह लिखी है। किन्तु यह मात्रा वर्तमान बलादि के अनुसार बहुत अधिक है। इसलिये रोगी और रोग का बलाबल विचार कर निश्चित करनी चाहिये। जो कि 1 हरड़ और 1 तोला अवलेह तक होनी चाहिये। इस हरीतकीयुक्त अवलेह के निरन्तर सेवन करने से क्षय, कास, ज्वर, श्वास, हिक्का, अर्श, अरुचि, पीनस, संग्रहणी, वली- पलित आदि रोगों को दूर कर देता है।

राजयक्ष्मा रोग में प्राशावलेह, यक्ष्मान्तक लौह, सर्वांग सुन्दर रस, क्षय केसरी आदि औषधियाँ अत्यन्त हितकर रहती हैं। इनका उपयोग रोग के लक्षणानुसार करने पर शीघ्र लाभ सम्भव होता है।

क्षयादि में उपयोगी सूतशेखर रस

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, फुलाया हुआ सुहागा, शुद्ध बच्छूनाग, स्वर्ण भस्म, ताम्र भस्म, शंख भस्म, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, दालचीनी, तेजपात, नागकेशर, शुद्ध धतूरे के बीज, छोटी इलायची, बेलगिरी और कचूर समान भाग लेकर भृंगराज के स्वरस की 7 भावनाएँ दें। यदि तीन सप्ताह तक भृंगराज स्वरस में निरन्तर खरल करें तो यह महौषधि अत्यन्त प्रभावकारी और तुरन्त लाभ करने वाली बनेगी। खरल करते- करते अन्त में 1-1 रत्ती की गोलियाँ बनाकर छाया में सुखावें।

मात्रा —1 से 3 गोली तक प्रातः- सायं मिश्रीयुक्त दूध अथवा असमान भाग घृत और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मधु के साथ सेवन करावें। आवश्यक होने पर दिन भर में 3 मात्राएँ भी दे सकते हैं। इसके सेवन से सब प्रकार की खाँसी, गुल्म, वमन, ग्रहणी, अतीसार, अग्निमांद्य, हिक्का, श्वास तथा क्षय आदि रोग नष्ट हो जाते हैं।

धातुगत ज्वरादि पर सितपूर्णेन्दु रस

मिश्री 32 तोले, वंशलोचन 16 तोले, सत गिलोय 10 तोले, छोटी पीपल 8 तोले, अडूसा का सत और श्रृंग भस्म 5- 5 तोले, छोटी इलायची के बीज,यशद भस्म और मुक्ताशुक्ति भस्म 4- 4 तोले, दालचीनी और रस सिन्दूर 2- 2 तोले लेकर पहिले सभी काष्ठौषधियों को एक साथ कूट- छान लें, तदुपरान्त अन्य भस्मादि को पृथक् घोट कर चूर्ण में मिलावें और मिश्री को पृथक् पीस कर मिला दें। पर्याप्त घोटकर एकजीव कर लें।

मात्रा —1 से 3 माशे तक मधु, मक्खन, दुग्ध, वासा - पानक, वनफ्शा पानक आदि किसी भी योग्य अनुपान के साथ प्रातः- सायं सेवन करानी चाहिये। यह रस क्षय, कास, श्वास, ज्वर, मन्द ज्वर, धातुगत ज्वर, अग्निमान्द्य, अरुचि, दौर्बल्य, प्रदाह आदि अनेक रोगों को करने में समर्थ हैं। क्षय के साथ ज्वर एवं खाँसी की अधिकता में इसका व्यवहार अधिक हितकर है। फित्त दोष के प्राबल्य से हाथ- पावों में हड़कल, गर्मी, बेचैनी तथा नेत्रों में जलन आदि शमन में भी यह रस उपयोगी है।

सर्वक्षयभेद में जयमंगल रस

हिंगुल से निकाला हुआ पारद, शुद्ध गन्धक, फुलाया हुआ सुहागा, ताम्रभस्म, वंगभस्म, स्वर्णमाक्षिक, भस्म, कान्तलौह भस्म और रजत भस्म 1- 1 तोला, स्वर्णभस्म 2 तोले, तथा सेंधा नमक और काली मिर्च 1- 1 तोला। सबको महीन खरल करके क्रमशः धर्तूरपत्र के स्वरस, सम्भालू- पत्र के स्वरस, दशमूल क्वाथ और चिरायता क्वाथ में न्यूनतम 3- 3 भावनाएँ दें। अधिक प्रभावी बनाने के लिये 7- 7 भावनाएँ देनी चाहियें। फिर 2- 2 रत्ती की गोलियाँ बनावें।

मात्रा —1-1 गोली जीरे के चूर्ण और शहद केसाथ 3 बार प्रतिदिन देनी चाहिये। इसके सेवन से अति पुराना जीर्णज्वर, साध्यासाध्य सभी प्रकार के ज्वर, मेदोगत, माँसगत, अस्थिगत तथा मज्जागत ज्वर भी नष्ट हो जाता है। शुक्रगत ज्वर भी इससे दूर होता है। बल और पुष्टि की भी इससे वृद्धि होती है।

क्षयोपयोगी वसन्तमालती रस

शिंगरफ और खपरिया को बड़हर के स्वरस की 7- 7 भावनाएँ देकर छायाशुष्क करें। फिर उन्हें लोहे की कढ़ाई में रख कर, शिंगरफ के बजन के बराबर मुर्गी के अण्डे लेकर उनकी सफेदी और जर्दी शनैः- शनैः डाल कर, लोहे के करछुल से बार- बार चलाता हुआ, बेर की अग्नि की मन्द अग्नि में पकावें। जब गोलियाँ फूट जायें और सूख जायें, तब सबके वजन से आधा कचूर जिसके टुकड़े मिर्च के बराबर कर लिये हों उसमें डालें तथा उतना ही श्वेत मिर्च का चूर्ण डाल कर घोटें और बड़हर के स्वरस की 7 भावनाएँ देकर 1-1रत्ती प्रमाण गोलियाँ बना लें।

मात्रा —1-1 गोली घृत और शर्करा के साथ सेवन कराने से जीर्णज्वर, शीत ज्वर और वायु का शमन होता है। बल- पुष्टि होकर अग्नि भी बढ़ती है। गर्भिणी स्त्री को देने से गर्भ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

की वृद्धि होती है।

उक्त योग में खपरिया के स्थान पर यशद भस्म डाल कर बनाया हुआ रस यक्ष्मा रोग के शमन में अधिक लाभकारी होता है। क्योंकि यक्ष्मा रोगी के वक्षस्थल में तथा कफ स्थान में दोष उत्पन्न हो जाते हैं, उनको दूर करने में यशद भस्म अधिक उपयोगी है।

सर्वक्षयादि लक्ष्मी विलास रस

अभ्रक भस्म 4 तोले, शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, शुद्ध कर्पूर, भीमसेनी कर्पूर, जावित्री और जायफल 2- 2 तोले, विधायरे के बीज, धतूरे के बीज, भाँग के बीज, विदारीकन्द, शतावरी, गंगेरन, कंघी, गोखरू और समुद्र फल के बीज 1- 1 तोला लेकर कूट- कपड़छन करके 3- 3 रत्ती की गोलियाँ बनावें।

मात्रा —1- 1 गोली दूध, दही, काँजी या शहद आदि के साथ सेवन करनी चाहिये। इसके सेवन से क्षय, कास, पीनस, शिरःशूल, स्थूलता, अशक्तता, अतिसार, आमवात, प्रेह, नपुंसकता, नासूर, घाव आदि रोग नष्ट होते हैं। स्त्रियों के रोग भी दूर होते हैं तथा अनेक रोगों का शमन और बलवीर्य की वृद्धि होती है।

महालक्ष्मी विलास रस

काले अभ्रक की भस्म 4 तोले, शुद्ध गन्धक और शुद्ध पारद 2- 2 तोले, बंगभस्म 1 तोला, पौप्य भस्म और स्वर्णमाक्षिक भस्म 6-6 माशे, ताम्रभस्म 3 माशे तथा शुद्ध कर्पूर, जायफल और जावित्री 2- 2 तोले, विधायरे के बीज और धतूरे के बीज 1- 1 तोला, और स्वर्ण भस्म 6 माशे लेकर सभी काष्ठौषधियों का कपड़छन चूर्ण करें। गन्धक- पारद की कज्जली करें और एक- एक कर सभी भस्म उसमें मिलावें। इस प्रकार सबको 3 घंटे खरल करके रखें अथवा मधु योग से खरल कर 1- 1 रत्ती की गोलियाँ बनावें।

मात्रा —1 से 2 गोली तक दूध, दही, जल आदि के साथ दें। यह राजयक्ष्मा, खाँसी, पीनस, भगंदर, सब प्रकार के प्रमेह तथा नपुंसकता आदि रोगों को नष्ट करने में अत्यन्त हितकर है।

सर्वज्वर- हर लौह

लौहभस्म, शुद्ध पारद और शुद्ध गन्धक 8- 8 तोले, त्रिफला, त्रिकटु, विडंग, नागरमोथा, गजपीपल, पीपलामूल, हल्दी, दारुहल्दी और चित्रक 1- 1 तोला। अदरक के स्वरस में खरल करके 2-2 रत्ती की गोलियाँ बना लें।

मात्रा —1- 1 गोली प्रातः- सायं अदरक- स्वरस के साथ सेवन करावें। सब प्रकार के ज्वर, विषम ज्वर इससे नष्ट होते हैं।

क्षयज कास में मुस्तकाद्यवलेह

नागरमोथा, छोटी पीपल, मुनक्का और कटेरी के पके हुए फल समान भाग लेकर महीन चूर्ण बनावें।

मात्रा —3 माशे चूर्ण असमान भाग घृत और मधु के साथ सेवन करानी चाहिये। यह क्षय और खाँसी तथा क्षय से उत्पन्न खाँसी में अत्यन्त लाभकारी है।

यक्ष्मान्तक लौह

रास्ना, तालीसपत्र, कर्पूर, मंडूकपर्णी, शिलाजीत, त्रिकुटा, त्रिफला, त्रिमद (वायविडंग,

CC-0. In Public Domain. Digitized by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मोथा, चित्रक) 1- 1 भाग, लौहभस्म 14 भाग। सभी काष्ठौषधियों को कूट- छान कर उनके साथ लौह भस्म मिला कर रखें।

मात्रा —2 रत्ती मधु योग से। इसके सेवन से असाध्य एवं सभी उपद्रवों वाला राजयक्ष्मा नष्ट हो जाता है। खाँसी, श्वास, स्वरभंग, क्षयकास तथा क्षत क्षीण प्रभृति रोग भी इससे दूर होते हैं। बल, वर्ण, पुष्टि और अग्नि की वृद्धि में भी यह औषधि लाभदायक है।

क्षय में अत्यन्त हितकर शिलाजत्वादि लौह

शिलाजीत, मुलहठी, त्रिकुटा, स्वर्णमाक्षिक भस्म, लौह भस्म और शहद समान भाग लेकर, पर्याप्त समय तक खरल करके चौड़े मुख की शीशी या अमृतवान में रखें।

मात्रा —3 रत्ती, यह औषधि दूध अथवा शहद के साथ सेवन करनी चाहिये। क्षय की सभी अवस्थाओं में इससे बहुत लाभ होता है।

क्षयकेसरी रस

त्रिकुटा, त्रिफला, छोटी इलायची, जायफल और लोंग एक- एक भाग तथा सिन्दूर के समान लाल रंग की लौह भस्म नौ भाग लेकर बकरी के दूध के साथ एक दिन खरल करें और 2 रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बना लें।

मात्रा —1- 1 गोली प्रातः- सायं शहद के साथ सेवन करनी चाहिये। इससे सब प्रकार का क्षय रोग दूर होता है।

वृहद् क्षय केसरी रस

अभ्रक भस्म, रस सिन्दूर, लौह भस्म, ताम्र भस्म, सीसा भस्म, कांस्य भस्म, मण्डूर भस्म, रौप्यमाक्षिक भस्म, वंग भस्म, खर्पर (खपड़िया) भस्म, हरताल भस्म, शंख भस्म, फुलाया हुआ सुहागा, स्वर्णमाक्षिक भस्म, वैक्रान्तभस्म, कान्तलौह भस्म, स्वर्ण भस्म, मूँगा भस्म, मुक्ता भस्म, कौड़ी भस्म, शुद्ध सिंगरफ, कान्त पाषाण भस्म और शुद्ध गन्धक समान भाग लेकर चित्रक और आक के स्वरस से भावना दें और फिर 3 दिन मन्दाग्नि पर लघुपुट पाक करें। इस प्रकार भावना देकर, तत्पश्चात् 3 बार पुटपाक किया जाय। तदुपरान्त बिजौरा नींबू, त्रिफला, चित्रक, अम्लवेंत, भाँगरा, कनेर और अदरक के स्वरस से मन्दाग्नि पर पकाते हुए भावनाएँ देनी चाहिये। अर्थात् क्रमशः एक रस की भावना दे- देकर मन्दाग्नि पर पकावें और अन्त में ठीक प्रकार खरल करके आधी- आधी रत्ती गी गोलियाँ बना लें, अथवा बिना गोली बनाये ही रखें।

मात्रा —1 से 2 गोली तक शर्करा, पीपल का चूर्ण, मधु और अदरक का रस। इसके सेवन से रसक्षययुक्त यक्ष्मा नष्ट होता है। शोथ, पाण्डु, कृमि, कास, श्वास, प्रमेह, मेदोरोग, महोदर, पथरी, शर्करा, शूल, प्लीहा, गुल्म, हलीमक आदि रोगों को दूर करने में भी उपयोगी है। वात, पित्त, कफ की अधिकता वाले रोग, ज्वर, सन्निपात, सर्वांगवात और एकांग वात में भी यह रस बहुत हितकर है।

सर्वयक्ष्मा में उपयुक्त सर्वांग सुन्दर रस

शुद्ध पारद और शुद्ध गन्धक 1- 1 भाग, फुलाया हुआ सुहागा 2 भाग, मुक्ताभस्म 1 भाग, मूँगा भस्म और शंख भस्म 1- 1 भाग तथा स्वर्ण भस्म आधा भाग लेकर कागजी नींबू के स्वरस में खरल करके गोला बनावें और लघुपुट में फूँकें। स्वाँग शीतल होने पर औषधि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

को निकाल कर उसमें में औषधि से आधा भाग लौह भस्म तथा लौह भस्म से आधा भाग शुद्ध सिंगरफ मिला कर महीन चूर्ण करके सुरक्षित रखें।

मात्रा —1 से 2 रत्ती तक पीपल- चूर्ण मधु, घृत, पान के स्वरस अथवा अदरक के स्वरस के साथ देनी चाहिये। इसके सेवन से राजयक्ष्मा, अर्श, ग्रहणी, प्रमेह, गुल्म, भगन्दर, वातज तथा कफज रोग दूर हो जाते हैं।

यक्ष्मा में लाभकारी गर्भ पोटली रस

रस सिन्दूर 3 भाग, स्वर्ण भस्म, ताम्रभस्म और शुद्ध गन्धक 1-1 भाग लेकर 6 घंटे तक चित्रक क्वाथ से घोंट कर एक कौड़ी में भरें और सुहागे से कौड़ी का मुख बन्द करके मिट्टी के पात्र में बन्द करें और गजपुट में फूँक दें। स्वाँग शीतल होने पर निकालें और खरल में घोट कर अत्यन्त महीन कर लें।

मात्रा —आधी से 1 रत्ती तक। राजयक्ष्मा में बहुत लाभकर है।

राजयक्ष्मानाशक अस्त्रहारिष्ट

अस्त्रघ्नी (विशल्यकरणी) का स्वरस और मृत संजीवनी सुरा 4- 4 तोले एकत्र कर, किसी एक बोतल में डाल कर मुख बन्द करके एक सप्ताह तक रखें, फिर किसी गाढ़े कपड़ा में उसे छान लें। अरिष्ट तैयार है।

मात्रा —5 बूँद से 10 बूँद तक ठण्डे पानी के साथ 3 या 4 घंटे के अन्तर से देनी चाहिये। इसके सेवन से राजयक्ष्मा शीघ्र नष्ट होता है। उरःक्षत, रक्तपित्त, रक्तातिसार, रक्त प्रदर तथा खाँसी आदि में अत्यन्त हितकर है। कफ से रक्त गिरना आदि में भी उपयोगी है। आवश्यक होने पर मात्रा कुछ बढ़ाई भी जा सकती है अर्थात् 20 बूँद तक।

क्षय में उपयोगी द्राक्षारिष्ट

मुनक्का ढाई सेर लेकर 1 मन 11 सेर पानी के साथ पकावें। जब 12 सेर 48 तोला शेष रहे तब उतार कर छान लें। ठण्डा हो जाय तब इस क्वाथ में गुड़ दस सेर 40 तोले मिलावें तथा दालचीनी, छोटी इलायची, तेजपात, नागकेशर, प्रियंगु पुष्प, काली मिर्च, छोटी पीपल और वायविडंग का 4- 4 तोले चूर्ण मिलावें। फिर इसे घी से चिकने मिट्टी के घड़े में भरें और मुख को सकोरे से बन्द करके, बाँध कर 30- 40 दिनों तक रखा रहने दें, तत्पश्चात् छान कर बोतलों में भर लें।

मात्रा — 1 तोला से 2 तोला तक समान भाग पानी मिला कर भोजनोपरान्त दोनों समय सेवन करें। इससे सब प्रकार क्षय उरःक्षत, खाँसी, श्वास तथा गले के रोग नष्ट हो जाते हैं। यह अरिष्ट बल बढ़ाने वाला तथा मल का शोधन करने वाला है।

क्षय पर बब्बूलारिष्ट

कीकर (बबूल) की छाल 10 सेर को जल 1 मन 11 सेर, 16 तोला के साथ क्वाथ करें। चौथाई जल शेष रहने पर उतारें और ठण्डा होने पर छान लें। फिर इस क्वाथ में गुड़ 15 सेर, धाय के पुष्प 64 तोले, छोटी पीपल का चूर्ण 8 तोले तथा जायफल, शीतल चीनी, छोटी इलायची, दानचीनी, तेजपात, नागकेशर, लौंग और काली मिर्च, प्रत्येक का चूर्ण 4- 4 तोले डाल कर चिकने घड़े में भर कर मुख बन्द कर दें। एक महीने के पश्चात् निकाल कर छान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

लें और बोतलों में भर कर रखें।

Digitized by eGangotri

मात्रा —1 से ढाई तोले तक समान भाग ताजा पानी मिला कर सेवन करें। इससे क्षय, कुष्ठ३, अतीसार, प्रमेह, श्वास, खाँसी आदि में बहुत लाभ होता है।

क्षयजदौर्बल्य में पिप्पल्यासव

छोटी पीपल, काली मिर्च, चव्य, हल्दी, चित्रक - मूल, नागरमोथा, वायविडंग, सुपारी, लोध, पाढ़, आमला, दालचीनी, छोटी इलायची, तेजपात, प्रियंगु - पुष्प और नागकेशर प्रत्येक 2 तोले का महीन चूर्ण, 25 सेर 48 तोले पानी में डालें तथा 15 सेर गुड़, आधा सेर धाय के फूल और 3 सेर मुनक्का, उसी में डाल कर घड़े में भर कर रखें और एक मास पश्चात् छान कर बोतलों में भर लें।

मात्रा —1 से 2 तोले तक समान भाग पानी के साथ लेनी चाहिये। इससे सब प्रकार का क्षय, गुल्म, उदर विकार, कृशता, दुर्बलता, ग्रहणी, पाण्डु, अर्श आदि रोग दूर होते हैं।

क्षयज ज्वरादि में अमृतारिष्ट

गिलोय 5 सेर, दशमूल 5 सेर, जल 2 मन 11 सेर, 16 तोले लेकर चतुर्थावशिष्ट क्वाथ करें। क्वाथ को छान कर उसमें गुड़ 15 सेर डालें तथा श्वेत जीरा 64 तोले, पित्तपापड़ा 8 तोले, सप्तपर्ण (सतौना) की छाल, त्रिकटु, नागरमोथा, नागकेशर, कुटकी, अतीस और इन्द्रजौ 4- 4 तोले, महीन चूर्ण करके मिलावें और घृत के चिकने मिट्टी के घड़ों में भर कर मुख बन्द करें और एक मास तक रखें। तैयार होने पर, छान कर बोतलों में भर लें।

मात्रा — 2 से ढाई तोले अरिष्ट को समान भाग गर्म अथवा ताजा पानी मिला कर सेवन करावें। क्षय के साथ ज्वर और उसके कारण घबराहट तथा बेचैनी की स्थिति में इसका सेवन शीघ्र लाभकारी होता है।

क्षयावस्थानुसार उपयोगी औषधि क्रम

क्षय की चिकित्सा करते समय चिकित्सक को, उसके लक्षणानुसार औषधिक्रम निश्चित करना होता है। उसकी कुछ रूपरेखा प्रस्तुत करना आवश्यक प्रतीत होता है —

प्रथमावस्था, जिसमें सामान्य ज्वर के साथ खाँसी आने लगती है। कभी- कभी कफ से खून आता हुआ दिखाई देता है, तभी सन्देह होता है कि रोगी यक्ष्मा से ग्रस्त हो गया है। फिर भी आधुनिक ढंग से उसके मल- मूत्र, रक्तआदि का परीक्षण और एक्सरे आदि के द्वारा परीक्षा करानी चाहिये। यदि यक्ष्मा अर्थात् क्षय होने का निश्चय हो जाय, तब इस प्रकार औषधिक्रम निर्धारित करना चाहिये।

- प्रातःकाल चन्दनादि तैल की मालिश करायें और प्रकृति के अनुसार गर्म या ठण्डे पानी से स्नान करा दें। उबटन लगाकर भी स्नान कराया जा सकता है। किन्तु ज्वर की तीव्रता में स्नान नहीं कराना चाहिये। तैल मालिश से शरीर के बन्द स्रोत भी खुल जाते हैं।
- प्रातः- सायं सितोपलादि चूर्ण 1 से डेढ़ ग्राम तक, आधा ग्राम सत गिलोय मिला कर, शहद के साथ दें। ज्वर की अधिकता होने पर इसी में 1 रत्ती सर्व ज्वरहर लौह मिला कर दे सकते हैं।
- खाँसी की अधिकता में वासावलेह, वृहद् वासावलेह, वासा पानक आदि का प्रयोग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

किया जा सकता है। सामान्य रूप से खाँसी हो तो वासारिष्ट ही पर्याप्त है, इसे भोजन के पश्चात् समान भाग पानी मिला कर देना चाहिये। रक्तस्राव की अधिकता में अस्रहरारिष्ट, द्राक्षारिष्ट या बब्बूलारिष्ट दिया जा सकता है।

द्वितीयावस्था में ज्वर और खाँसी दोनों ही बढ़ते दिखाई देते हैं। कफ के साथ रक्ताधिक्य भी दिखाई देता है। इस कारण रोगी उत्तरोत्तर दुर्बल होता जाता है। लगता है कि शीघ्र ही अस्थियों का ढाँचा मात्र रह जायेगा। क्योंकि उसमें धातुओं का क्षय बढ़ जाता है।

उसमें निम्न औषधिक्रम ठीक रह सकता है —

- वृहद् सितोपलादि चूर्ण सर्व ज्वरहर लौह और सत गिलोय के साथ दिन 3 बार, प्रातः- दोपहर और सायंकाल।
- च्यवनप्राशावलेह, मुक्ता- पिष्टी, प्रवालपिष्टी और अभ्रक भस्म के साथ प्रातः- सायं दोनों समय।
- च्यवनप्राश 3 से 6 ग्राम, स्वर्णभस्म आधी रत्ती, मुक्ताभस्म या पिष्टी आधी रत्ती तथा हेमगर्भ पोटली 2 चावल भर मिला कर प्रातः सायंकाल।
- भोजनोपरान्त दोनों समय अश्वगन्धारिष्ट।
- खाँसी में रक्त की अधिकता रोकने के लिये 6 ग्राम शहद में 3 ग्राम दूर्वाघृत मिला कर दें। आवश्यकतानुसार व्योषादिवटी, कूष्माण्डावलेह, वृहद्श्रृंगाराभ्रक प्रभृति औषधियों का प्रयोग करना चाहिये।

तृतीयावस्था में ज्वर और खाँसी तो रहती ही है, यकृत में भी खराबी आ सकती है। पाचन- तन्त्र काम नहीं करता, इससे कभी कब्ज, कभी पतले दस्त, अरुचि, दर्द आदि की शिकायत भी बढ़ जाती है। इस स्तर पर निम्न चिकित्सा- व्यवस्था उचित रह सकती है—

- वृहद् सितोपलादि चूर्ण 1 ग्राम, मुक्ता पिष्टी और प्रवाल भस्म 1- 1 रत्ती, गोदन्ती हरताल भस्म 2 रत्ती और सत गिलोय 4 रत्ती मिला कर शहद 6 ग्राम के साथ प्रातः- सायं।
- वसन्तकुसुमाकर और स्वर्णयुक्तजयमंगल रस, प्रत्येक आधी रत्ती को च्यवनप्राशावलेह 4-5 ग्राम के साथ मिला कर प्रातः 9- 10 बजे और रात्रि में शयन समय। ऊपर से गोदुग्ध- मिश्री का सेवन करायें।
- खाँसी की अधिकता में वासारिष्ट और द्राक्षारिष्ट समान भाग मिला कर, पानी मिलाकर दें। या कब्ज की अधिकता हो तो कुमार्यासव और द्राक्षारिष्ट का मिश्रण दिया जा सकता है।
- रोगी कृशकाय हो जाता है, यदि योग्य हो तो उसके शरीर पर महाचन्दनादि तैल की मालिश करानी चाहिये। शीत ऋतु हो तो उसे मालिश के पश्चात् निर्वात स्थान पर सूर्य स्नान धूप सेवन कराया जा सकता है।

तृतीयावस्था के पश्चात् भी चौथी और पाँचवी अवस्था रूप में भेद - कल्पना हुई है। वह रोगी की अधिक दुःसाध्यावस्था की सूचक हैं। उनमें निम्न चिकित्साक्रम रह सकता है—

चतुर्थावस्था में प्रतिकूल लक्षणों की उत्तरोत्तर वृद्धि होती है। कुछ अन्य उपद्रव भी उत्पन्न हो सकते हैं। ज्वर, खाँसी, पतले दस्त या विष्टम्भ, पेट में गुड़गुड़ाहट, आँतों में दर्द, अफरा, तथा शारीरिक दुबलापन बढ़ जाता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- च्यवनप्राशावलेह 6 माशे से 1 तोला तक, मुक्ताभस्म और अभ्रक भस्म आधी- आधी रत्ती तथा स्वर्ण भस्म चौथाई रत्ती मिला कर शहद के साथ प्रातः- सायं।
- वृहद् क्षयकेसरी एक रत्ती, पिप्पलीचूर्ण 4 रत्ती मधु और अदरक स्वरस के साथ। प्रातःकाल लगभग 10 बजे, केवल एक बार।
- अश्वगन्धारिष्ट और द्राक्षासव का मिश्रण समान भाग पानी मिलाकर भोजनोपरान्त दोनों समय।
- सूतशेखर रस योगरत्नाकर 1 रत्ती की मात्रा में बकरी के दूध के साथ दिन में 3- 4 बार, अथवा अतीसार की अधिकता हो तो 2- 2 घंटे के अन्तर से दें। अथवा निम्न मिश्रण बना कर देना चाहिये।

शंख भस्म और वरटिका कौड़ी भस्म 2- 2 रत्ती, मुक्त भस्म और अभ्रक भस्म आधी- आधी रत्ती, बकरी के दूध के साथ दिन भर में 3-4 बार तक।

पाँचवी अवस्था में उपर्युक्त सभी लक्षणों या उपद्रवों में वृद्धि का होना, ज्वर, कास, सर्वधातुक्षय, रक्तनिष्ठीवन आदि के कारण प्राणान्त की शंका भी बढ़ जाती है। किन्तु यह अवस्था चिकित्सक को भी, औषधि- निर्णय में अधिक सावधानी का संकेत देती है—

- पूर्वोक्त औषधियाँ, लक्षणानुसार सुधार कर चलाई जायें।
- भैषज्य रत्नावल्योक्त जयमंगल रस 1 रत्ती को श्वेत बकरी के 2- 3 ग्राम महीन चूर्ण के साथ मिला कर बकरी के दूध के साथ प्रातः- सायंकाल।
- खाँसी की अधिकता, सूखी खाँसी हो तो सितोपलादि चूर्ण 1 ग्राम, प्रवाल पिष्टी और अभ्रक भस्म 1- 1 रत्ती मिला कर शर्बत अनार और शहद के साथ दिन में 3-4 बार दें तथा यदा- कदा चूसने को कर्पूरादि वटी या वैसा ही कोई गोली दें।

यदि खाँसी में कफ की अधिकता हो तो 3-4 रत्ती की मात्रा में श्रृंगभस्म मिश्री के साथ मिला कर दिन में 2 या 3 बार देने से लाभ हो सकता है।

- रक्त निष्ठीवन की अधिकता में निम्न योग हितकर हो सकता है — गिलोय सत, वंशलोचन, स्वर्ण गैरिक, छोटी इलायची के दाने, संगज- राहत भस्म, हीरा बोल (खून खराबा), हीरा दोखी गोंद तथा तृण कान्तिमणि भस्म सभी को समान भाग मिला कर खरल करें और शीशी में सुरक्षित रखें।

मात्रा —1 ग्राम, शहद या अनार के शर्बत के साथ प्रातः- सायं दो अथवा 3 बार सेवन करायें।

- यदि वमन की अधिकता हो तो फुलाई हुई श्वेत फिटकरी 2-4 रत्ती की मात्रा में 2 ग्राम मिश्री चूर्ण के मिला कर दिन में 3- 4 बार दे सकते हैं।

इस प्रकार यह चिकित्सा क्रम सामान्य ढंग पर लिख दिया है। किन्तु लक्षणों की किंचित भिन्नता भी औषधिक्रम में परिवर्तन के लिये विवश कर सकती है। इसलिये स्वविवेक से निर्णय लेना ही चिकित्सक को यश का भागी बना सकता है।

क्षय निवारणार्थ एक सामान्य औषधि क्रम

क्षय रोग की सभी अवस्थाओं में सामान्य रूप से निम्न औषधि- क्रम चलाया जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- सितोपलादि चूर्ण 32 ग्राम, सत गिलोय 16 ग्राम, श्रृंग भस्म 8 ग्राम, मुक्ता भस्म और कौड़ी भस्म 4-4 ग्राम, स्वर्णमालिनी वसन्त, नवरत्न मृगांक और सहस्रपुटी अभ्रक भस्म 1- 1 ग्राम मिला कर खरल करें।

इन सबकी 40 पुड़ियाँ बना लें। एक- एक पुड़िया शहद के साथ प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल नित्यप्रति दें।

- च्यवनप्राशावलेह, मुक्तापिष्टी 1 रत्ती मिला कर प्रातः 10 बजे और रात्रि में शयन समय दें। किन्तु जिन्हें पतले दस्त हों उन्हें च्यवनप्राशावलेह नहीं देना चाहिये। क्योंकि यह दस्तावर है। इसके स्थान पर कोई अन्य औषधि लगानी चाहिये।
- भोजनोपरान्त बब्बूलारिष्ट और द्राक्षासव मिला कर ढाई तीन तोले तक समान भाग जल मिला कर देना चाहिये।

ध्यान रखें कि यक्ष्मा की चिकित्सा बहुत कठिन कार्य है। यदि किसी औषधि के विषय में कुछ सन्देह हो तो उसके स्थान पर अन्य औषधि लगाई जा सकती है। आवश्यकता होने पर अन्य अनुभवी चिकित्सक से परामर्श लेने में संकोच न करें। सम्भव है, कोई नई उपयोगी बात सामने आ जाय।

रोग- मुक्ति पर औषधि व्यवस्था

क्षय रोग के दूर होने पर भी कुछ दिनों तक किसी सामान्य औषधि का चलते रहना आवश्यक होता है, जिससे कि रोगांश की पूर्णतः समाप्ति हो जाय और उसके पुनः आक्रमण की सम्भावना न रहे। इसके लिये निम्न औषधियाँ अधिक उपयुक्त रहेंगी। इनमें से कोई भी दवा रोगी की प्रकृति और स्वास्थ्य के अनुरूप दी जा सकती है।

- सितोपलादि चूर्ण, केवल एक मात्रा प्रातःकाल शहद के साथ, 1 ग्राम की मात्रा में। अथवा च्यवनप्राशावलेह, 3 ग्राम की मात्रा में मिश्रीयुक्त दूध के साथ। भोजनोपरान्त द्राक्षासव, समान भाग पानी के साथ। अथवा कब्ज न रहे, इसलिये कुमार्यासव लें अथवा कुमार्यासव और द्राक्षासव का मिश्रण काम में लायें। अथवा शक्तिवर्धनार्थ अश्वगंधारिष्ट और द्राक्षारिष्ट का मिश्रण।

क्षय रोग में पथ्यापथ्य

क्षय में उत्तम पथ्य स्वस्थ बकरी का दूध है, उसके स्थान पर गाय का दूध भी दिया जा सकता है। साठी चावल, शालिधान्य, गेहूँ, जौ, मूँग की दाल, दलिया, खिचड़ी प्रभृति हल्का अन्न देना चाहिये। भारी और गरिष्ठ, मिर्च, मसाले, खटाई युक्त शाक- सब्जी का सेवन हानिकारक है। बकरी के दूध से अथवा गाय के दूध से निकाला गया मक्खन, घृत, शहद आदि वस्तुएँ रोगी के अनुकूल होंगी। पके हुए आम, केला, फालसा, खजूर, शहतूत, पपीता, नारियल, अंजीर आदि ऋतु फलों का उपयोग क्षयरोग में लाभकारी रहेगा। प्रातःकालीन स्वच्छ वायु सेवन भी हितकर है। औषधि रूप में उत्तम प्रकार के मद्य का प्रयोग भी स्वल्प मात्रा में किया जा सकता है।

जिन कार्यों से थकावट हो, उनका परित्याग करना आवश्यक है। सम्भोग से पूर्णतः बचना चाहिये। विरेचन, स्वेदन, आदि का प्रयोग बहुत आवश्यक हो, तो भी दुर्बल क्षय रोगी को न कराया जाय। मल- मूत्र का वेग रोकना, भूख लगने पर न खाना, बासी अन्न का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
भोजन, पकवान, मिठाई, उड़द आदि से भी हानि होती है। मांसाहारियों को भी वही मांस खाना उचित है, जो प्रतिकूल न हो, बासी या सड़ा हुआ न हो। इस प्रकार पथ्यापथ्य का ध्यान रोग- मुक्त होने पर भी रखना चाहिये, जिससे कि रोग की पुनरांवृत्ति न हो जाये! गृहस्थ जीवनोचित व्यवहार भी संयम पूर्वक ही करने चाहिये।

23. कांस्यक्रोड (प्लूरिसी) की चिकित्सा

रोग के मुख्य भेद — कांस्यक्रोड का अंग्रेजी नाम प्लूरिसी है। इस रोग में फुफ्फुसावरण की कला में प्रदाह उत्पन्न हो जाता है। नये और पुराने के भेद से हम इसे दो भेदों में बाँट सकते हैं। किन्तु इस रोग के दो मुख्य रूप हैं — 1. सजल और 2. शुष्क। सजल में यह भेद किया जाता है कि पानी अधिक है अथवा अल्प। मुख्य और गौण के रूप में दो भेद माने जाते हैं — 1. स्वतन्त्र रूप से उत्पन्न कांस्यक्रोड, और 2. अन्य रोगजन्य कांस्यक्रोड। प्रथम प्रकार के कांस्यक्रोड की उत्पत्ति ऋतु- परिवर्तन, शीत के आक्रमण तथा मिथ्या आहार- विहार के फलस्वरूप होती है। जब कि द्वितीय प्रकार का रोग अन्यान्य रोगों के उपसर्ग स्वरूप में प्राप्त हो जाता है। यथा — उरःक्षत, श्वसनक प्रदाह, हृदयावरण प्रदाह, आमवात, चेचक, यकृत रोग अथवा क्षयादि के कारण उत्पन्न होकर प्लूरिसी का रूप धारण कर लेता है।

प्लूरिसी के सामान्य लक्षण

विभिन्न कारणों से प्रकुपित हुआ वाट् वृक्ष स्थल के सब ओर की झिल्लियों को प्रभावित करता हुआ प्रदाह उत्पन्न कर देता है, उसके कारण ज्वर, कम्पन, शुष्क कास और पार्श्वशूल की प्राप्ति होती है। वह शूल खाँसने से बढ़ता है, श्वास लेने पर भी पसलियों में दर्द होता है। यदि दर्द के कारण व्यग्र रोगी की पसलियों को कुछ दबा कर देखा जाय तो उसकी पीड़ा अधिक तीव्र हो जाती है। जिस ओर की पसली में दर्द होता है, रोगी को उस ओर की करबट से लेटना कठिन हो जाता है।

किन्तु आवश्यक नहीं कि खाँसी का वेग सब समय बना ही रहे। कभी कम अथवा अधिक, अथवा कभी नहीं भी होती। ज्वर भी एक जैसा नहीं रहता, घटता- बढ़ता है। किन्तु नितान्त सामान्य नहीं हो पाता। सामान्यतः 100 डिग्री से कम भी और अधिक102 तक पहुँच जाता है। किसी- किसी रोगी का तापमान उससे अधिक भी हो जाता है। यकृत- वृद्धि, मूत्र की कमी, कोष्ठ- बद्धता आदि लक्षण भी प्रतीत होते हैं।

कांस्यक्रोड अजल अर्थात् शुष्क होता है तो पार्श्व पर कान लगाकर सुनने से कुछ घिसने जैसा शब्द सुनाई देता है। उसका कारण फुफ्फुस का दोनों कलाओं का परस्पर में घर्षण करना ही है। जब तक जल का संचय नहीं होता, तब तक यही स्थिति रहती है।

सजल प्लुरिसी में फुफ्फुस कला (प्लुरा) में जल का संचय हो जाता है। यदि वह काबू में नहीं आता, तो जल के पूय रूप में परिवर्तन हो जाता है। श्वास लेने छोड़ने में भी कष्ट होता है। छाती में ऐसा दर्द होता है, जैसे कि बिच्छू आदि ने डंक मार दिया हो। अथवा चपका- से चलने लगते हैं। किंचित् हिलने से ही दर्द बढ़ जाता है। कभी- कभी रोगी जल्दी- जल्दी श्वास लेने लगता है। प्यास भी अधिक हो जाती है। शुष्क कास के कारण बार- बार खाँसने पर भी कफ, अरुचि, वमनेच्छा, ज्वरादि अनेक लक्षण देखने में आते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कभी- कभी कफ अधिक निकलता है, हृदय की धड़कनें बढ़ जाती हैं। क्षयज कांस्यक्रोड में, रात्रि में स्वेद की अधिकता होती है। स्वेदागम से भी चैन नहीं मिलता। ज्वर का वेग अधिक होता है, तब तो बैचेनी अधिक होती है, किन्तु तापमान कम हो जाने पर भी कष्ट में किसी प्रकार की कमी नहीं मालुम होती।

चिकित्सा सूत्र

रोगी को धैर्य देना चिकित्सक और परिचारक दोनों का ही कर्तव्य है। उसे धैर्य पूर्वक लेटे रहने की आवश्यकता है। गर्म सेंक देने से आराम प्रतीत होता है। लेप आदि करने या पुल्टिस बाँधने से भी रोगी की वेदना कम हो जाती है। रोगी के पथ्य की ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये। आहार हल्का दिया जाय। यदि रोगी केवल दुग्धाहार पर रह सके, उससे रोग- निवारण में अधिक सहायता मिलेगी। दूध गाय अथवा बकरी का ही देना हितकर रहता है। ऋतुफल, जो रोगी की प्रकृति के भी अनुकूल प्रतीत हों, उनका रस निकाल देना उपयुक्तहै। फलों में पपीता, सन्तरा, अंगूर, सेब, अनन्नास, मुसम्मी आदि दिये जा सकते हैं। रोगी को क्रोध, ईर्ष्या, चिन्ता आदि विपरीत उद्वेगों से मुक्त रखना चाहिये। क्योंकि यह सब द्वन्द्व पीड़ा वृद्धि में सकारण बन जाते हैं। उसे अधिक शान्ति और विश्राम की आवश्यकता रहती है। कभी- कभी रोगी जीवन से निराश- सा होने लगता है, उस समय सान्त्वना दी जानी चाहिये। चिकित्सा आरम्भ करने के साथ ही मल- मूत्र शोधन की ओर ध्यान दिया जाना चाहिये। कुछ चिकित्सक रक्त मोक्षण का परामर्श देते हैं, किन्तु उसका विचार त्याग देना चाहिये। यदि सेवनार्थ उचित औषधियाँ दी जाय, लेप आदि का प्रयोग किया जाय तो भी रोग का उन्मूलन सहज सम्भव है। अब यहाँ चिकित्सार्थ औषधि- प्रयोग प्रस्तुत किये जाते हैं —

- हरड़ और सोंफ का मिश्रित चूर्ण रात्रि शयन समय सेवन करावें, इससे कोष्ठ बद्धता दूर होगी तथा प्रातःकाल सुखपूर्वक एक दस्त हो सकता है।
- यदि उत्तम प्रयोग से मल न निकले तो एरण्ड तैल कैस्टर आइल दूध के साथ देना चाहिये।
- यदि अफरा, शूल आदि भी हो तो पिप्पल्यादि चूर्ण दिन में 2 बार, प्रातः- सायं 3-3 ग्राम की मात्रा में सुखोष्ण पानी अथवा मधु के साथ देना चाहिये। इस चूर्ण में निम्न द्रव्य रहते हैं - छोटी पीपल 10 ग्राम, निशोथ और मिश्री 40-40 ग्राम, इनका महीन चूर्ण करके रखें। इसके सेवन से उदर पर अफरा, मल की गांठें बन जाने के कारण दस्त में कठिनाई, पित्तशूल तथा कफ के विकार भी दूर हो जाते हैं।
- पंचसम चूर्ण का प्रयोग भी उदरशूल और आध्मान के साथ फुफ्फुसों पर अनुकूल प्रभाव डालता है। प्रयोग यह है - सोंठ, छोटी पीपल, हरड़, निशोथ और संचार नमक समान भाग लेकर कपड़छन चूर्ण बना कर रखें।
- त्रिफला- पिप्पली चूर्ण को कोष्ठबद्धता दूर करने और मूत्र साफ लाने में सहायक है - त्रिफला हरड़, बहेड़ा, आमला के साथ छोटी पीपल मिला कर, कूट- कपड़छन करने से यह चूर्ण बनता है।

मात्रा — 2 या 3 ग्राम, प्रातः- सायं देनी चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- त्र्यूषण चूर्ण फुफ्फुसावरण और मूत्राशय को अनुकूल रूप से प्रभावित करने में अधिक सहयोगी है । इसके विषय में शाङ्ग का कथन है

पिप्पली मरिचं शुण्ठी त्रिभिस्त्र्यूषणमुच्यते।
दीपनं श्लेष्ममेदोघ्नं कुष्ठपीनस नाशनम् ॥
जयेदरोचकं सामं मेहगुल्म गलामयान् ॥

छोटी पीपल, काली मिर्च और सोंठ, तीनों समान भाग का चूर्ण ही त्र्यूषण कहा गया है। यह अग्नि को दीप्त करने वाला कफनाशक, मेद निवारक, कुष्ठ, पीनस, अरुचि, आँव, प्रमेह, गुल्म तथा गले के उपद्रवों को भी दूर करने वाला है।

- अभयादि कल्क भी इस रोग में हितकर है —

हरड़, छोटी पीपल, सोंठ और सेंधा नमक समान भाग 1 तोला लगभग 12 ग्राम लेकर पानी के साथ पीसकर कल्क बनावें, इसके सेवन से वात, पित्त, कफ के सभी उपद्रव नष्ट होते हैं।

अथवा हरड़, सोंठ और सेंधा नमक मिला कर ही कल्क बनावें। इसमें पीपल न डालें, यह मुख्य रूप से अग्नि को दीप्त कर देता है।

- त्रिफलादि क्वाथ का सेवन भी फुफ्फुसावरण प्रदाह में अनुकूल प्रभावकारी होता है —

हरड़, बहेड़ा, आमला, देवदारु, नागरमोथा, मूषाकर्णी और सहजने की छाल, समान भाग लेकर जौकुट करें। यह सब मिला कर 2 से 4 तोले की मात्रा में लेकर 16 गुने पानी में मिला कर अष्टावशिष्ट क्वाथ करें। फिर इसमें छोटी पीपल और वायविडंग का चूर्ण 3 माशे 3 ग्राम की मात्रा में डाल कर पिलावें। इससे कृमिजन्य उपद्रवों का भी शमन होता है।

कांस्यक्रोड के रोगी को काढ़े के द्रव्य 24 ग्राम लेकर 8 गुने पानी में पकाकर चौथाई शेष क्वाथ करके भी दे सकते हैं। प्रक्षेप में केवल छोटी पीपल का चूर्ण 3 ग्राम मिलावें अथवा लक्षणानुसार द्रव्यादि घटा- बढ़ा कर सेवन करावें।

- निधिग्घिकादि क्वाथ और क्षुद्रादि क्वाथ में से किसी एक का सेवन करा सकते हैं।

निदिग्धिकादि क्वाथ — छोटी कटेरी, गिलोय और सोंठ के क्वाथ में छोटी पीपल का चूर्ण मिला दें। कास, श्वास, अर्दित, पीनस, अरुचि, स्वरभंग, शूल तथा जीर्णज्वर को भी दूर करता है।

क्षुद्रादि क्वाथ — छोटी कटेरी, धनियाँ, सोंठ, गिलोय, नागरमोथा, पद्माख, रक्तचन्दन, चिरायता, परवल के पत्ते, वासा, पुष्कर मूल, कुटकी, इन्द्रयव, नीम की छाल, भारंगी और पित्त- पापड़ा समान भाग का विधिवत् क्वाथ करके सेवन कराने से शीत ज्वर नष्ट होता है।

- **पुनर्नवादि क्वाथ** — पुंनर्नवा साँठी, गिलोय, देवदारु,हल्दी, दारुहल्दी, चित्रकमूल, भारंगी,हरड़ और सोंठ, समान भाग के क्वाथ पिलाने से उदर- शोथ, मुखशोथ, हाथ- पाँव में शोथ तथा सर्वाङ्ग शोथ दूर होता है।
- **पथ्यादि क्वाथ** — हरड़ और रोहितक रोहिड़ा की छाल के क्वाथ में छोटी पीपल का चूर्ण और यवक्षार मिला कर पिलाने से यकृत- तिल्ली से सम्बन्धित उपद्रव शान्त होते हैं।
- प्रातः- सायं 6 ग्राम च्यवनप्राशावले हरीतकी गोदुग्ध के साथ सेवन कराना हितकर है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- अथवा कूष्माण्डावलेह का सेवन रक्तपित्त, क्षय, ज्वर, शोष अंगों का सूखना, जिसमें आन्तरिक शोष भी सम्मिलित है, प्यास, भ्रम, चक्कर, वमन, कास, श्वास तथा उरःक्षत रोग को भी नष्ट करता है।
- अगस्त्य हरीतकी के सेवन से भी प्लुरिसी में लाभ हो सकता है।

प्लूरिसी में लौहरसायन 1

शुद्ध पारद 1 भाग और शुद्ध गन्धक 2 भाग की कज्जली करके उस कज्जली के बराबर फौलाद या कान्ति लौह का चूर्ण अथवा भस्म डाल कर 3 घण्टे तक पर्याप्त घुटाई करें। फिर 3 दिन तक ग्वारपाठा के स्वरस में, धूप में रखकर घोटें। जब उसमें गर्म धुआँ- सा निकलता प्रतीत हो तब उसका गोला बनावें और ताम्रपात्र में रखकर, उसके ऊपर एरण्ड का पत्ता ढकें और अन्न की कोठी में 3 दिन पड़ा रहने दें। तदुपरान्त निकाल कर, खरल में डाल कर धूप में रख दें तथा इसमें बबई (वन तुलसी विशेष) के स्वरस की 3 भावनाएँ देकर सुखावें तथा क्रमशः 3- 3 भावनाएँ दें। तत्पश्चात् वासा, गिलोय और चित्रक की भी पृथक् पृथक् 3- 3 भावनाएँ देनी चाहिये।

अब इस रसौषधि को एक लोहे की कढ़ाई या लौह- खरल में रख कर क्रमशः त्रिफला, निर्गुण्डी, सम्भालू, अनार की छाल, कमलनाल, भृंगराज, पियावासा, पलाश का गोंद, केला की जड़, विजयसार, नील, गोरखमुण्डी और बबूल की फली के स्वरसों अथवा क्वाथों की 3- 3 भावनाएँ देकर, फिर गंगेरन, शतावर, गोखरू और पातालगारुणी रसों की 3- 3 भावनाएँ देनी चाहिये। इन भावना के क्वाथ द्रव्यों या स्वरस द्रव्यों के अभाव में अन्यान्य जो भी औषधियाँ मिलें, उन्हीं से भावनाएँ देनी चाहिये। किन्तु उनके अभाव में अन्य द्रव्यों के क्वाथ या स्वरस नहीं लेने चाहिये। जो- जो औषधियाँ स्वरस या क्वाथार्थ उपलब्ध हों, उन्हीं में सन्तोष कर लेना होता है, इस कारण अभाव (द्रव्य के गुण से वंचित रहना) स्वाभाविक है।

यह लौह रसायन सर्वाधिक गुणकारी और सभी रोगों को दूर करने में समर्थ है। मात्रा 6 माशे कही है, जो कि वर्तमान समय में अत्यधिक प्रतीत होती है। अतएव इसका सेवन न्यून मात्रा में प्रायः 1 या डेढ़ माशे तक करना चाहिये। इसे शहद में मिला कर संवन करें और और ऊपर से त्रिफला क्वाथ का पान करें अथवा छोटी पीपल का चूर्ण और शहद मिला कर उसके साथ लें। इससे शरीर का आन्तरिक संकोच, त्वचा में सिकुड़न, श्वास, कास, अग्निमान्द्य, पाण्डु, कफ रोग और वात रोग दूर होते हैं। निरन्तर कुछ दिनों तक सेवन करने से सब प्रकार के दुःसाध्य उपद्रव भी नष्ट हो जाते हैं। इसके सेवन काल में कूष्माण्ड (कुम्हड़ा), तिल- तैल, उड़द, राई, खटाई और मद्य का सेवन नहीं करना चाहिये।

प्लूरिसी में लौह रसायन 2

गूगल आधा सेर, वस्त्र की एक ढीली पोटली में बाँधें, तालमूली, त्रिफला, खैर की लकड़ी, वासा की छाल, निशोथ, भुईकदम्ब, निर्गुण्डी, चित्रकमूल और थूहर, यह भी प्रत्येक आधा सेर लें। इन्हें 32 सेर पानी में पका कर क्वाथ करें। जब चौथाई शेष रहे तब वस्त्र से छानें। अब इस गूगल मिश्रित क्वाथ में तीक्ष्ण लौह की भस्म 48 तोले, पुराना गुड़ 128 तोले और मिश्री 35 तोले मिला कर ताम्रपात्र में अथवा लौहपात्र में डाल कर पका लें। जब चाशनी गाढ़ी होने लगे, तब उसमें छोटी इलायची के दाने और दालचीनी 2- 2 तोले तथा शिलाजीत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

शुद्ध, वायविडंग, कालीमिर्च, शुद्ध रसौत, छोटी पीपल, त्रिफला और हीरा कसीस शुद्ध प्रत्येक 8- 8 तोले महीन चूर्ण करके मिला दें। फिर ठण्डा होने पर उसमें 32 तोले शहद मिला कर घृत के चिकने पात्र अथवा अमृतवान में रखें।

यह लौह रसायन 1 माशे की मात्रा में दूध के साथ सेवन करावें। यदि रोगी बलवान हो तो विरेचन से उसकी कोष्ठ शुद्धि करने के उपरान्त इस रसायन का आरम्भ करावें। दुर्बल हो तो तुरन्त आरम्भ कर दें। इससे वात, श्लैष्मिक रोग, प्रमेह, ज्वर, कामला, पाण्डु, शोथ, भगन्दर, कुष्ठ, मोह, मूर्च्छा, विष, उन्माद, गले के रोग, स्थूलता आदि रोग दूर हो जाते हैं। यह रसायन सब प्रकार से बलवर्धक, कान्तिवर्धक, मेधाजनक, बाजीकर, पुत्रोत्पादक, शक्तिवर्धक तथा वली- पलित नाशक है।

इस रसायन के सेवनकाल में केले की फली, करोंदा, करेला, काँजी, करील आदि का सेवन वर्जित है। (भै.र.)

कांस्याक्रोड में त्र्यूषणादि लौह

त्र्यूषण चूर्ण का योग पहले कहा जा चुका है — छोटी पीपल, काली मिर्च और सोंठ, यह त्रिकुट ही त्र्यूषण है। प्रथम छोटी पीपल को पानी से धोकर, हाथ से रगड़- पोंछ कर छाया में सुखा लें। काली मिर्च को भी पानी में कुछ समय भिगोकर निकालें और हाथ से रगड़ कर उनका छिलका दूर करें, यह श्वेत मिर्च अधिक गुणकारी बन जाती है। इसे भी सुखा लें। सोंठ को भी साफ करके रखें। इस प्रकार इन दीनों का पृथक् पृथक् चूर्ण करके, कपड़छन करें और समान भाग लेकर मिलावें यह परिष्कृत त्र्यूषण चूर्ण 30 ग्राम लें, इसमें 40 ग्राम वारितर लौहभस्म और 10 ग्राम यवक्षार मिला कर, 3 घण्टे तक खरल में ठीक प्रकार से घोंट कर शीशी में रखें।

मात्रा —2- 2 रत्ती प्रमाण। त्रिफला 20 ग्राम, पुनर्नवा पंचांग 10 ग्राम और बड़े गोखरू 5 ग्राम को जौकुट करके अठगुने पानी में चतुर्थांश शेष क्वाथ करके, उसके साथ दिन में 3 बार प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल सेवन कराना चाहिये। क्वाथ एक बार बना हुआ ही शीशी में भर कर रखें और उसकी 3 **खुराक कर लें**।

इस लौह का इस रोग में बहुत **अनुकूल प्रभाव** पड़ता है और रोगी शीघ्र ही आराम का अनुभव करता हुआ पूर्ण स्वास्थ्य लाभ की ओर बढ़ता है।

औषधि का सेवन आरम्भ करने से पूर्व किसी भी सुख विरेचन से कोष्ठ शुद्धि करा दी जाय तो मुख्य औषधि शीघ्र प्रभावकारी सिद्ध होती है। इसके साथ ही सप्ताह में एक- आध बार कोष्ठशुद्धि सामान्य रूप से होती रहे, ऐसी व्यवस्था करनी चाहिये। किन्तु अधिक दस्त न हो जायें, यह भी ध्यान रखना आवश्यक है।

कोष्ठ शुद्धि के लिये हरंड़- सोंफ मिश्रण, त्रिफलादि क्वाथ या त्रिफला- पिप्पली चूर्ण भी सहयोगी हो सकता है। अन्यथा एरण्ड तैल या पैराफिन लिक्विड का प्रयोग किया जा सकता है। यदि साधारण कब्ज नाशक औषधि से काम न चले तो इस चूर्ण का प्रयोग, उस स्थिति आवश्यक हो जाता है, जबकि रोगी कोष्ठबद्धता के कारण अधिक परेशानी में हों — ब 20 ग्राम, सनाय की पत्ती 15 ग्राम और काला नमक 10 ग्राम। एकत्र कूट कर, कपड़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मात्रा — 6 से 12 ग्राम तक यह चूर्ण गर्म पानी के साथ सेवन कराने से प्रातः दो- एक दस्त अवश्य हो जायें। यदि इससे भी न हो तो अधिक कठिन कोष्ठ मान कर दूसरे दिन 1 मात्रा पुनः दे सकते हैं। वैसे इस औषधि से किसी प्रकार की परेशानी नहीं होती, दस्त साफ होकर शरीर हल्का- सा प्रतीत होता है।

कभी- कभी किसी रोगी को मध्यम प्रभाव वाली दवाएँ भी व्यर्थ हो जाती हैं। फिर भी इस रोग में तीव्र विरेचन नहीं दिया जाना चाहिये। एक अन्य औषधि इसी उद्देश्य से यहाँ लिखी जा रही है, जो सामान्य रूप से कोष्ठबद्धता को दूर कर सके।

प्लूरिसी में कोष्ठबद्धता पर हरीतकी खण्ड

बड़ी हरड़ 75 ग्राम, सनाय 40 ग्राम, विधायरा 20 ग्राम, निशोंथ 5 ग्राम, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, त्रिफला, लोंग, सोंफ, बड़ी इलायची, नागरमोथा, धनियाँ , दालचीनी, तेजपात, खुरफा, अजवाइन प्रत्येक 3- 3 ग्राम तथा शर्करा मिश्री 300 ग्राम लेकर सभी काष्ठौषधियों को कूट- छान लें और शर्करा या मिश्री की चाशनी करके उसमें मिलालें तथा अमृतवान में रखें।

मात्रा — 5 ग्राम 25 तक उष्ण जल अथवा दूध के साथ रात्रि में शयन समय सेवन करावें। इससे प्रातःकाल खुल कर दस्त होगा। कब्ज दूर हो जायेगा तथा मल पतला नहीं, बँधा हुआ होगा। इसके सेवन से गुड़गुड़ाहट, मरोड़न, बेचैनी आदि भी नहीं होगी। इसे आबाल वृद्ध नर- नारी, सभी निःशंक भाव से ले सकते हैं। पुरानी कोष्ठबद्धता भी इससे दूर हो जाती है।

प्लूरिसी में एक अन्य रसायन योग

श्रृंग भस्म और अभ्रक भस्म 16- 16 ग्राम, मुक्ता पिष्टी और कस्तूरी 2- 2 ग्राम, जहरमोहरा खताई 4 ग्राम, केशर 6 ग्राम, जायफल और जावित्री 8- 8 ग्राम, लोंग 12 ग्राम तथा तुलसी के पत्ते 15 ग्राम।

सभी काष्ठौधियों को कूट कर, कपड़छन करें और सभी भस्मादि पृथक् खरल करके उसमें मिला दें। फिर इसमें क्रमशः अदरक के स्वरस की और ब्रह्मी स्वरस की 7-7 भावनाएँ देकर चना प्रमाण गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1- 1 गोली दिन में तीन बार लक्षणानुसार अनुपान के साथ देनी चाहिये आवश्यक होने पर कम या अधिक बार दे सकते हैं। यह महौषधि सभी प्रकार के फुफ्फुस विकारों में लाभदायक है। निमोनिया, ज्वर, मन्थर ज्वर, मोतीझरा आदि में शीघ्र हित साधन करती है। सन्निपातजन्य ज्वरादि उपद्रवों में भी प्रभाव दिखाती है। निमोनिया के साथ भी किसी- किसी को प्लूरिसी जैसे लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। उसे फुफ्फुस और फुफ्फुसावरण प्रदाह या प्लूरो- निमोनिया कहते हैं। उसमें भी यह औषधि अत्यधिक प्रभाव दिखाती है।

मलमूत्र शोधनार्थ त्रिफलादि योग

हरड़, बहेड़ा, आमला, छोटी पीपल, निर्गुण्डी, गोखरू, लाल पुनर्नवा और श्वेत पुनर्नवा 6-6 ग्राम लेकर जौकुट करें और आधा लीटर पानी के साथ चतुर्थावशेष क्वाथ करें। इसे ठण्डा होने पर इसमें 25 ग्राम शहद मिला कर, प्रातः- सायं दोनों समय पिलावें।

इसके सेवन से मल- मूत्र का शोधन होता है। दस्त साफ होता है और मूत्र पर्याप्त मात्रा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
में उतरता है। दोनों पार्श्वों में संचित पानी भी इससे स्वतः ही निकल जाता है। रोगी को पथ्य रूप में केवल दुग्धाहार पर रखना चाहिये।

तैल मर्दन एवं सेंक

पसलियों में अधिक पीड़ा को रोकने के लिये महानारायण तैल और तारपीन का तैल समान भाग लेकर हल्का- सा मल देना चाहिये। दर्द में आराम मिलेगा। ऊपर से मन्द- मन्द सेंक भी किया जा सकता है।

किन्तु सेंक पार्श्वशूल में पसलियों पर ही करना चाहिये, यदि हृदय में दर्द हो तो वहाँ सेंक नहीं करना चाहिये।

उपर्युक्त औषधोपचार सामान्य रूप से प्रस्तुत किये गये हैं। सभी रोगियों में उपसर्गों की समानता नहीं होती। इसलिये लक्षण विशेष को ध्यान में रख कर औषधि आदि का निर्णय लिया जाना अपेक्षित है।

24.हिस्टीरिया की चिकित्सा

हिस्टीरिया या अपतन्त्रक कारण और लक्षण

हिस्टीरिया एक ऐसा रोग है, जो रोगी को, आक्रमण काल में अचेतावस्था में पहुँचा देता है। उसमें वह अनेक प्रकार की कुचेष्टाएँ करता- सा प्रतीत होता है। कुछ रोगियों को असम्बद्ध प्रलाप करते हुए भी देखा गया है। कुछ रोगी मौन, स्तब्ध, मोहित- से पड़ जाते हैं।

मिथ्या आहार- विहार से कुपित हुआ वायु पक्वाशय ऊपर की ओर उठने लगता है और हृदय पर पहुँच कर आघात करता है। इससे पीड़ित हुए हृदय में पीड़ा के साथ घबड़ाहट होने लगती है। इस कारण इन्द्रियाँ विमोहित- सी हो जाती हैं। तब हाथ- पाँवों में खेंचन और शरीर में अकड़न होने लगती है। सिर से पृष्ठ भाग तक भी किसी- किसी को वेदना का अनुभव होता है तब शरीर में धनुष के समान टेढ़ापन अथवा खिंचाव सा होता है।

इस रोग की उत्पत्ति के अन्य कारणों में रक्त का अधिकता से क्षय, शोक, चिन्ता, मलावरोध, रजःस्रावावरोध, गर्भाशय के विकास, अधिक संसर्ग, उत्पीड़न आदि भी मुख्य हैं। रोगोत्पत्ति से पूर्व या आरम्भ में हृदय में पीड़ा, जँभाई, बेचैनी आदि लक्षण दिखाई देते हैं।

रोग का ज्ञान इन लक्षणों से भी हो जाता है — चित्त में व्याकुलता, बुद्धिभ्रम, अकारण हँसना या रोना, उच्च स्वर में रोना अथवा अट्टहास करना, चक्कर आना, प्रकाश से बचने का प्रयत्न करना, श्वास में कष्ट, कण्ठ और आमाशय में पीड़ा, उदर से कण्ठ पर्यन्त वायु का गोला- सा उठना, अर्धचेतन की अवस्था में प्रलाप अथवा कोई उपद्रव करना अच्छा एकदम अचेत हो जाना आदि असंगत लक्षण प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं।

हृद्देश की पीड़ा के साथ ही श्वसन - तन्त्र भी प्रभावित हो जाता है, तब श्वास- प्रश्वास में कष्ट, नेत्रों की स्तब्धता, कण्ठ में कुछ शब्द सा प्रतीत होता है। जब रोगी की संज्ञा नष्ट होती है, तब आँखें चढ़ जाती हैं, अथवा अर्धोन्मीलित- सी ठहर जाती हैं। कोई रोगी मौन रहता है तो कोई प्रलाप करता हुआ भी देखा गया है, जिससे लोगों को भ्रान्ति होती है कि कोई ऊपरी बाधा या प्रेतबाधा हो गई है और तब वे भोपे, सयाने आदि को बुलाकर झाड़- फूँक या तन्त्र- मन्त्र कराने लगते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वस्तुतः हिस्टीरिया रोग में दौरे (फिट) आते हैं। किसी- किसी रोगी को तो यह दौरे जल्दी- जल्दी पड़ने लगते हैं। यहाँ तक कि एक ही दिन में कई- कई बार। दौरों की समयावधि प्रायः अधिक लम्बी नहीं होती। जब तक झाड़- फूँक या तन्त्र- मन्त्र का प्रयोग चलता है, तब तक स्वतः ही रोगी को चेत होने लगता है। उस स्थिति में परिचारक समझते हैं कि रोग निवृत्ति झाड़- फूँक से हुई है। इसलिये वे उस रुग्णावस्था को भूत- प्रेत बाधाजन्य मान लेते हैं।

आयुर्वेद में हिस्टीरिया या उसके पर्याय नामों का उल्लेख नहीं मिलता है। अपतन्त्रक नामक रोग का निदान और चिकित्सा अवश्य मिलती है। उस अपतन्त्रक के लक्षण प्रायः हिस्टीरिया से ही अधिक मिलते हैं, इसलिये मानना होगा कि यह रोग आयुर्वेदोक्त अपतन्त्रक हैं अथवा उसी का भेद है।

यह रोग पुरुषों को बहुत कम होता है, किन्तु स्त्रियों में ही अधिक होने के कारण इसका नाम योषापस्मार भी प्रचलित हो गया है। वस्तुतः यह रोग वात दोष की अधिकता से ही होता है, इसलिये इसकी चिकित्सा में वातनाशक औषधियों का प्रयोग आवश्यक है। प्रकुपित वायु ऊपर की ओर चढ़ता है, इसलिये उस का अनुलोमन होना चाहिये। आजकल जिसे गैस की बीमारी कहते हैं, मुख्यतः वही इस व्याधि के लिये अधिक बल देती है।

हिस्टीरिया निवारणार्थ सरलोपचार संग्रह

- रोगी को कब्ज आदि के रहने से सभी उपसर्गों की प्राप्ति होती है, इसलिये उसे कोष्ठबद्धता नाशक दवाएँ दी जानी चाहियें। कोष्ठशुद्धि के बिना रोग निवृत्ति नहीं हो सकती।

इसके लिये रात्रि शयन करते समय छोटी हरड़ और सौंफ समान भाग, कूट कर गर्म पानी के साथ फंकी लेनी चाहिये। यह दवा 3 दिन तक नियमित रूप से दी जाय। इससे प्रातःकाल खुल कर दस्त होगा और वायु ऊपर की ओर चढ़ने से रुकेगा।

- गुलकन्द के साथ बड़ी हरड़ का चूर्ण गर्म पानी के साथ देना चाहिये।
- मृदु कोष्ठ वालों को तो 8-10 मुनक्का खा कर मर्म पानी से भी दस्त हो जाता है।
- कठिन कोष्ठ वालों को उक्त दवाओं से लाभ नहीं होता तो उन्हें कुछ तीव्र औषधि देनी होती है। किन्तु अधिक तीव्र भी न दी जाय, विशेषकर उन रोगियों को जो सशक्त न हों या अल्प बल हों।

सनाय की पत्तियाँ बड़ी हरड़ 50- 50 ग्राम और काला नमक 15 ग्राम लेकर, कूट- छान कर रखें।

मात्रा — 10- 12 ग्राम तक यह चूर्ण गर्म पानी के साथ, रात्रि शयन समय देना चाहिये। इससे एक या कुछ अधिक दस्त हो सकते हैं। जब दस्तों में संचित मल निकल जाता है, तब शरीर हल्का हो जाता है। गैस उठना भी रुक जाता है।

यदि अधिक कठिन कोष्ठ वाले व्यक्ति को इस दवा के एक बार प्रयोग से दस्त नहीं हो तो दूसरे या तीसरे दिन भी इसका प्रयोग कर सकते हैं। किन्तु 24 घंटे के अन्तराल से ही प्रयोग करना उचित रहता है। बहुत आवश्यक हो तो 12 घंटे के अन्तराल पर दे दें।

- एरण्डतैल (कैस्टर आइल) का प्रयोग भी दस्त लाने में पर्याप्त सहायक रहता है। आवश्यक मात्रा में दूध के साथ देनी चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हिस्टीरिया पर अव्यर्थ औषधि

अर्जुन वृक्ष की छाल, चौलाई की जड़, काले तिल और तीसी का लुआब 25-25 ग्राम, मिश्री 30 ग्राम।

इन सबको घोटें और फिर अर्जुनपत्र स्वरस के साथ 3 घंटे खरल करके छाया में सुखावें और फिर खरल में घोंट कर महीन चूर्ण करें और शीशी में भर लें।

मात्रा —4 से 6 ग्राम तक यह औषधि अर्जुनपत्र के स्वरस में ही मिला कर प्रातः- सायं सेवन करानी चाहिये। हिस्टीरिया रोग में इससे आवश्यक लाभ होता है।

हिस्टीरिया विनाशिनी वटी

कूट और श्वेत वच 25- 25 ग्राम, श्वेत चन्दन का चूरा 12 ग्राम, शुद्ध कर्पूर और भुनी हुई हींग, 10- 10 ग्राम और केशर 6 ग्राम तथा कस्तूरी आधा ग्राम। सब को पृथक- पृथक् खरल करके अत्यन्त सूक्ष्म बनावें।

कस्तूरी और केशर को गुलाबजल के साथ पर्यात खरल करके उसमें कर्पूर मिला कर खरल करें और फिर एक- एक कर सभी द्रव्यों को मिला कर गुलाबजल के साथ घोंट कर ही उस सबकी 200 गोलियाँ बना कर छाया में सुखा लें।

मात्रा —1- 1 गोली पीस कर, 5- 6 ग्राम मधु के साथ मिला कर प्रातः, मध्याह्न और रात्रि में दें। आवश्यक समझें तो 5- 5 घंटे के अन्तर से दिन भर में 4 गोलियाँ सेवन करा सकते हैं। भोजन के पश्चात् दोनों समय कुमार्यासव और अशोकारिष्ट का मिश्रण पानी मिला कर देना चाहिये। इसके सेवन से हिस्टीरिया का अत्यन्त वेग रुकता है तथा पुराना रोग हो तो भी नियमित सेवन करने से दूर हो जाता है। पुराने रोग में कुछ दिन बाद दवा की मात्रा प्रातः- सायं, दो बार दी जा सकती है।

योषापस्मारघ्न रसायन

मल्लचन्द्रोदय 24 ग्राम, घोड़ा चोली रस 12 ग्राम और शुद्ध कुचला 3 ग्राम लेकर नाड़ी स्वरस में 24 घंटे खरल करके छाया में सुखावें और पुनः महीन खरल करके सुरक्षित रखें।

मात्रा —1 से 3 रत्ती तक, 5- 6 ग्राम ताजा घृत के साथ मिला कर प्रातः- सायं सेवन करावें। हिस्टीरिया में बहुत लाभदायक है।

योषापस्मार नियंत्रक मरिचादि वटी

काली मिर्च 20 ग्राम, वच 40 ग्राम तथा गुड़ 60 ग्राम लेकर काली मिर्च और वच का कपड़छन चूर्ण करके और उसे गुड़ में मिला कर 1- 1 ग्राम की गोलियाँ बना लें।

मात्रा — आरम्भ में 1 गोली प्रातः- सायं कुछ खट्टे दही के साथ दें। फिर 2- 3 या 4 गोली तक दे सकते हैं। प्रातःकाल सूर्योदय के समय तक यह गोलियाँ दे देनी चाहिये सायंकाल भी 4- 5 बजे के मध्य दे दी जायें। गोलियाँ निगलवा कर ऊपर से कुछ खट्टा हुआ दही 100 ग्राम से 200 ग्राम तक की मात्रा में खिला देना चाहिये।

यह गोलियाँ साधारण- सी प्रतीत होने पर भी एक प्रकार से चमत्कारिक ही हैं। इसमें काली मिर्च उष्ण और वात नाश करने वाली है। वच भी गैस को नष्ट करने में सहायक है। दही भी अभिष्यन्दी होने के कारण वायु को प्रतिलोम होने से रोकता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by Sarayu Trust Foundation

इन गोलियों के सेवन काल में रसादि क्वाथ, कुमार्यासव, अशोकारिष्ट तथा अन्य वातनाशक दवाएँ भी, आवश्यकतानुसार लगाई जा सकती हैं।

हिस्टीरिया पर वृहत्भूतभैरव रस

स्वर्णसिन्दूर और स्वर्णभस्म 2- 2 भाग, मुक्ताभस्म, प्रवाल भस्म, कान्त लौह और राजपट्टमणि भस्म 1- 1 भाग लेकर सबको एक साथ खरल करके क्रमशः ग्वारपाठे के स्वरस और मण्डूकपर्णी के स्वरस में घोट कर गोली बनावें और उस पर एरण्डपत्र लपेट कर अनाज के ढेर में दबा कर 3- 4 दिन रखें और फिर खरल करके 2- 2 रत्ती की गोलियाँ बना कर शीशी में रखें।

मात्रा — 1- 1 गोली त्रिफलाचूर्ण में शर्करा मिला कर उसके साथ प्रातः- सायं लेनी चाहिये। अथवा गाय के दूध में मिश्री मिला कर सेवन की जाय। इससे भूतोन्माद, घोर अपस्मार, योषापस्मार, मद, मूर्च्छा तथा अनेक प्रकार की वात- वेदनाएँ दूर होती हैं। (भै.र.)

हिस्टीरिया में ब्राह्मी बूटी का प्रयोग

ब्राह्मी बूटी के अनेक योगों का वर्णन आयुर्वेद में मिलता है। विशेष - कर मस्तिष्क को बल देने और स्मरण शक्ति बढ़ाने तथा बुद्धि को स्थिर करने में यह बूटी अद्भुत चमत्कार दिखाती है। योषापस्मार, अपस्मार, उन्मादादि में भी इसका उपयोग हितकर रहता है। यहाँ ऐसा ही एक योग प्रस्तुत है —

ब्रह्मीबूटी का सूक्ष्म चूर्ण 25 ग्राम, शतावर, श्वेत चन्दन, पुष्करमूल, पीपलामूल, कूट, जावित्री, जायफल, वायविडंग, सौंफ, श्वेत निशोथ, अजमाइन खुरासानी, अजमोद, तज, लौंग, काली मिर्च, किरात, सोंठ, धनिया, अकरकरा, वच, अगर, असगन्ध, गजपीपल, काला जीरा, चित्रकमूल प्रत्येक 5- 5 ग्राम, इन सबको कूटें और कपड़छन करके इसमें ब्राह्मी का चूर्ण मिला दें। तदुपरान्त स्वर्णस्म, कान्तलौह भस्म, संगयशव पिष्टी, प्रवाल पिष्टी, कहरवा पिष्टी, नीलम पिष्टी, मुक्ता पिष्टी, माणक्य पिष्टी, अम्बर, शुद्ध हिंगुल, कस्तूरी और स्वर्णघटित मकरध्वज, प्रत्येक 4- 4 ग्राम लेकर, मिला कर खरल करें और चूर्ण के साथ मिलावें। पिर ब्राह्मी के स्वरस में निरन्तर 3 दिन तक खरल करना चाहिये। इस प्रकार खरल करते- करते चना के बराबर गोलियाँ बना कर छाया में सुखा लें।

मात्रा — प्रातः- सायं 1- 1 गोली शहद के साथ अथवा अन्य उचित अनुपान के साथ सेवन करावें। आवश्यक होने पर यह महौषधि 5- 6 घंटे के अन्तराल पर 3 या 4 बार भी दी जा सकती है। हिस्टीरिया, अपस्मार, बुद्धि- स्मृति- भंग, खाँसी, श्वास, उन्माद, सन्निपात, हनुर्वात तथा राजयक्ष्मा और उसमें रहने वाली घोर खाँसी भी मिट जाती है। मस्तिष्क और शरीर को शीघ्र ही बल, पुष्टि देती है और हृदय को भी बल प्रदान करती है।

हिस्टीरिया में खमीरा गाजवाँ

यह एक यूनानी योग है जो इसी नाम से प्रसिद्ध है। इससे हृदय, मस्तिष्क आदि को पर्याप्त शक्ति प्राप्त होती है।

गाजवाँ के फूल, धनिया, छोटी इलायची के बीज, तोदरी लाल, तोदरी सफेद, बहमन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लाल, बहमन सफेद, आबरेशम मुकर्रज, कुल्फा, श्वेत चन्दन का चूरा, कुल्फा की जड़, मूँगा की जड़, करंज के बीज, बालंगा के बीज, उस्तखद्दूस और वंशलोचन 10- 10 ग्राम, कहरवा पिष्टी, जहर मोहरा और केशर कश्मीरी 5- 5 ग्राम, चाँदी के वर्क 40 नग, मिश्री 1 किलोग्राम, शहद 300 ग्राम, गुलाबजल और केवड़ा जल 100- 100 मिलीलीटर।

उसमें से बहमन दोनों, मूँगा की जड़, वंश लोचन, केशर, चाँदी के वर्क, कहरवा पिष्टी, इलायची बीज और जहर मोहरा को पृथक् रखें तथा अन्य सभी काष्ठौषधियों को जौकुट करके चौगुने पानी के साथ किसी कलईदार या स्टील के पात्र में 12 घण्टे भिगोवें और फिर मन्दाग्नि पर चतुर्थांश शेष क्वाथ करके छान लें। मिश्री की चाशनी करें और जब वह चाटने योग्य हो जाय तब उसमें पृथक् रखे बहमन आदि द्रव्यों को अत्यन्त महीन करके मिलावें। केशर को गुलाबजल में घोंट कर मिलाना चाहिये। तदुपरान्त उसमें एक- एक चाँदी का वर्क डाल- डाल कर घोटें और फिर शहद मिला कर घोटें और गुलाब जल तथा केवड़ा जल भी धीरे- धीरे मिलाते हुए 24 घण्टे तक घुटाई करें। तत्पश्चात् अमृतवान में भरकर रखें।

मात्रा — 4 से 12 ग्राम तक प्रातः- सायं सेवन करनी चाहिये। उन्माद, अपस्मार, योषापस्मार, हृदय की दुर्बलता, हृदय का धड़कना आदि में अत्यन्त लाभकारी है।

योषापस्मार में खमीरा गाजवाँ नामक इस महौषधि को निम्न द्रव्यों के साथ मिला कर देने से चमत्कारिक लाभ जैसी उपलब्धि सम्भव है —

ब्रह्मी बूटी, शंखपुष्पी, बालछड़ इन तीनों का चूर्ण 2- 2 ग्राम और खरीमा गाजवाँ भी 2 ग्राम। खरल में ठीक प्रकार से घोट कर 4 मात्रा बनावें। इसे दिन में 3- 4 बार, 1- 1 मात्रा देने से हिस्टीरिया, अपस्मार, चक्कर आना, मूर्च्छा, प्रलाप आदि में लाभ होता है।

योषापस्मार- हर वटी

शुद्ध कुचला 100 ग्राम और भीमसेनी कर्पूर 50 ग्राम खरल में घोट कर महीन करें तथा ब्राह्मी के स्वरस अथवा ब्राह्मी के क्वाथ में 12 घंटे खरल करके 2-2 रत्ती प्रमाण गोलियाँ बना लें।

मात्रा -— 1 से 2 गोली तक ठण्डे पानी के साथ हिस्टीरिया के दौरे के समय 2- 2 घण्टे के अन्तर पर दें। जब दौरा शान्त हो जाय तो यह गोली प्रातः- सायं नित्यप्रति कुछ दिनों तक देनी चाहिये।

25.मृगी रोग की चिकित्सा

मृगी के कारण और लक्षण

यह रोग बहुत खतरनाक है। इसका दौरा चाहे जब पड़ सकता है। विशेषकर पानी आदि को देखकर फिर चाहे अग्नि के पास बैठकर कुछ करते हुए या नदी में स्नान करते हुए। मार्ग चलते हुए भी और घर में भी। आयुर्वेद में इसका नाम अपस्मार कहा गया है।

यह वात, पित्त, कफ के विशेष प्रकोप से 3 प्रकार का और त्रिदोषज (सन्निपातज) चौथे प्रकार का होता है। इसमें सहसा आँखों के आगे अँधेरा छा जाता है। दोषों की अधिकता से बुद्धि और स्मृति का भंग होना, उसके कारण हाथ- पाँव फेंकना अथवा कम्पन के साथ अथवा सामान्य- सी स्थिति में मौन रहते हुए गिर जाना और मुख से झाग निकलना आदि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मुख्य लक्षण हैं।

वातजन्य अपस्मार में काँपना, मुख का कटकटाना, श्वास की अधिकता, मुख से झाग गिरना तथा लाल- काले रंग के दृश्य दिखाई देना आदि लक्षण होते हैं।

पित्तजन्य मुख से झाग, मुख, नेत्र तथा अन्य अंगों में पीलापन, प्यास की अधिकता, लाल- पीले दृश्य दिखाई देना आदि लक्षण होते हैं।

वातज में मुख से श्वेत झाग, नेत्रों में सफेदी, सर्वांग शीतल, दृश्य भी श्वेत जैसे वर्ण में दिखाई देना अथवा मूर्च्छित हो जाना आदि लक्षण होते हैं।

सन्निपातजन्य अतिसार में तीनों दोषों के मिश्रित लक्षण होते हैं।

यह रोग बालक, युवक पुरुष अथवा स्त्रियों को भी होता हुआ देखा गया है। मुख्य कारण तो इसमें आहार विहार में असंयम होना ही है। उसी कारण से दोषों की वृद्धि और प्रकोप होता है। और इसी कारण मलावरोध, मन्दाग्नि, अरुचि आदि की व्याप्ति भी रहती ही है। यदि कब्ज प्रभृति व्याधि न हो तो अपस्मार, योषापस्मार, उन्माद जैसे रोग प्रायः उत्पन्न ही नहीं होते।

चिकित्सा सूत्र

रोगी की कोष्ठशुद्धि आवश्यक है। उसे पहले हल्के विरेचन दिये जा सकते हैं। यदि उनसे काम न चले तो कुछ तीव्र दवाएँ देनी होती हैं। योषापस्मार प्रकरण में अथवा अन्य प्रकरणों में वैसे अनेक योग लिखे जा चुके हैं। रोगी की प्रकृति और शक्तिके अनुसार उनमें से किसी का सेवन करा सकते हैं।

योषापस्मार (हिस्टीरिया) के लिये जो औषधियाँ लिखी गई हैं, वे प्रायः सभी दवाएँ मृगी रोग में भी हितकारी हो सकती हैं। इसलिये लक्षणानुसार उनका उपयोग करना चाहिये।

अपस्मार (ऐपीलैप्सी) के लिये एक विचित्र- सी दवा जानकारी में आई, उसका वर्णन यहाँ करते हैं।

अपस्मार की विचित्र दवा फकीरी योग

खटमल, जो कि स्वतः सूख कर मर गया हो, अथवा चारपाई से निकाल कर मार दिया हो, उसे 1 नग खटमल को गुड़ में रखकर गोली सी बना लें और पानी के साथ निगलवा दें। इससे अपस्मार अवश्य दूर होता है। यह फकीरी दवा है, 21 दिन का प्रयोग है।

इसके लिये 21 खटमल मार कर तथा गुड़ में रख कर 21 गोलियाँ एक साथ बना कर रख लें। 1- 1 गोली प्रतिदिन सेवन करावें। यदि लाभ न हो तो पुनः 21 दिन सेवन करानी चाहिए।

पूर्ण लाभ के लिये निम्न नस्य का प्रयोग उक्त फकीरी योग के साथ करें तो मृगी के निर्मूल होने की आशा में कोई बाधा नहीं रहती है। नस्य यह है —

अपस्मार- हर नस्य

ब्राह्मी बूटी 10 ग्राम को अत्यन्त महीन पीसें और उसे पाँचगुने बादाम के तैल में ठीक प्रकार से खरल करके, वस्त्र में छान लें और शीशी में सुरक्षित रखें। यह तैल रोगी के दोनों नासा- छिद्रों में इस प्रकार टपकावें कि मस्तिष्क तक पहुँच जाय।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इसके लिये रोगी को चारपाई अथवा बैंच पर इस प्रकार लिटायें कि सिर चारपाई बैंच से लटकी हुई स्थिति में रह सके और तब तैल की बूँदें टपकानी चाहियें।

अपथ्य —मादक द्रव्य - सुरा, भाँग इत्यादि का त्याग करावें। रोगी पाँव गर्म रखें और सिर ठण्डा। पाँवों में मोजे पहिनाना हितकर है। आहार में घी, मक्खन, दूध, चावल, हरे शाक- सब्जी और गेहूँ की चपातियाँ खाने को देनी चाहियें। गरिष्ठ पकवान, तैल, लाल मिर्च, खटाई आदि का परहेज करना आवश्यक है। रोगी प्रातः भ्रमण, हल्का व्यायाम करता रहे तथा कब्ज न होने दे।

अपस्मार (मृगी) पर शास्त्रीय योग

- मैनसिल, रसौत और कबूतर की बीट को अत्यन्त महीन पीस कर अपस्मार रोगी की आँखों में आँजना चाहिये। इससे अपस्मार, विशेष कर उन्माद रोग दूर होता है।
- श्वेत तुलसी, कूट, हरड़, सुगन्ध बाला और गठिवन समान भाग लेकर गोमूत्र के साथ पीसें। रोगी के शरीर पर इसका उबटन लगायें तथा शरीर पर गोमूत्र का सेवन करें। इससे भी अपस्मार रोग नष्ट होता है।
- चिमगादड़ की विष्टा का गोमूत्र के साथ लेप करें।
- पिसी हुई सरसों और सहजने की छाल गोमूत्र में मिल कर शरीर लेप करना चाहिये।
- बकरे के बालों की भस्म भी गोमूत्र के साथ लेप करने से लाभ करती है।
- वच का चूर्ण शहद में मिला कर इच्छित मात्रा में नित्यप्रति सेवन करके दूध- भात का भोजन करें। उससे पुराना मृगी रोग भी शान्त नष्ट हो जाता है।
- लहसन को तैल में मिला कर खायें।
- शतावर का चूर्ण दूध में मिला कर सेवन करें।
- ब्राह्मी का स्वरस मधु के साथ मिला कर लें।
- दशमूल का क्वाथ तथा कल्याणघृत का सेवन करने से अपस्मार में हृत्कम्प, नेत्रों में दर्द तथा हाथ- पाँवों का ठण्डा होना प्रभृति लक्षण समूल नष्ट होते हैं।
- गोघृत 2 सेर, पेठे का रस 36 सेर तथा मुलहठी का कल्क आधा सेरलें। यथाविधि घृत सिद्ध करें। इस घृत का पान करने से अपस्मार रोग नष्ट हो जाता है।
- सूतभस्म प्रयोग — शंखपुष्पी, वच, ब्रह्मी, कूट और छोटी इलायची का यथाविधि क्वाथ करें और इसके साथ 1 रत्ती पारद भस्म अथवा रससिन्दूर का सेवन करें। इससे अपस्मार नष्ट हो जाता है।

मृगी में वातकुलान्तक वटी

कस्तूरी, मैनसिल, नागकेशर, बहेड़ा, शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, जायफल, छोटी- इलायची और लौंग समान भाग लेकर पानी के साथ खरल करें और आधी रत्ती प्रमाण गोलियाँ बनावें। इसे उचित अनुपान से सेवन करावें। इससे अपस्मार, मूर्च्छा तथा वात दोष से उत्पन्न सभी रोग नष्ट हो जाते हैं। अपस्मार के लिये यह अत्यन्त श्रेष्ठ रस- योग है।

मृगी में चण्ड - भैरव रस

रससिन्दूर, ताम्रभस्म, लौह भस्म, हरताल, शुद्ध गन्धक, मैनसिल और रसौत समान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
भाग लेकर गोमूत्र में घोटना चाहिये। फिर इसका गोला बनायें और इस सबसे दुगुनी शुद्ध गन्धक मिला कर, लोहे की कढ़ाई में डाल कर कुछ देर पकावें और फिर सुरक्षित रखें।

मात्रा —1 रत्ती। हींग भुनी 1 रत्ती, काला नमक 1 रत्ती और कूट 2 रत्ती का चूर्ण 1 तोला गोघृत और गोमूत्र के साथ पीवें। अर्थात् चण्ड भैरव रस 1 रत्ती खिला कर ऊपर से गोघृत- गोमूत्र मिश्रित चूर्ण पिलाना चाहिये।

अपस्मार में स्मृतिसागर रस

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, शुद्ध हरताल तथा मैनसिल, स्वर्णमाक्षिक भस्म और ताम्रभस्म समान भाग लेकर पहिले पारद- गन्धक की कज्जली करें, फिर एक- एक द्रव्य मिला कर घोटें, तदुपरान्त क्रमशः वच के स्वरस और ब्राह्मी के स्वरस में 21-21 बार खरल करके, अन्त में 1 बार मालकाँगनी के तैल में खरल करके रखें।

मात्रा —1- 1 माशे यह रस गोघृत के साथ सेवन करावें। इसके सेवन से अपस्मार नष्ट होता है तथा स्मृति- शक्ति तीव्र हो जाती है।

मृगी में लघु पंचगव्य घृत

गोबर का रस, खट्टा दही, दूध, गोमूत्र और गोघृत, प्रत्येक 128 तोले लेकर यथाविधि घृत सिद्ध कर लें।

इसे उचित मात्रा में, बलाबल विचार कर देने से उन्माद, अपस्मार, चातुर्थिक ज्वर तथा ग्रहदोषादि सभी नष्ट हो जाते हैं।

मृगी में ब्रहद् पंचगव्य घृत

क्वाथ के लिये औषधियाँ —दशमूल, त्रिफला, हल्दी, दारुहल्दी, कुड़ा की छाल, सप्तपर्ण, लटजीरा, नील, कुटकी, अमलताश, कठूमर- मूल, पुष्करमूल और जवासा 8-8 तोले। क्वाथ के लिये जल 25 सेर, 48 तोले अवशिष्ट क्वाथ 6 सेर 32 तोले, गोमूत्र, गोबर का रस, खट्टा दही, गोदुग्ध और घृत, प्रत्येक 128 तोले।

कल्क के लिये भारंगी, पाठा, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, निशोथ, ममुद्र फल, गजपीपल, अरहर की जड़, मरोरफली, दन्तीमूल, चिरायता, चित्रकमूल, अनन्तमूल, कालीसर, रोहिड़ा की छाल, अजवाइन और बेला के फूल, प्रत्येक 1-1 तोला। इनका यथाविधि घृत सिद्ध करना चाहिये।

रोगी का बलाबल देख कर मात्रा और अनुपान का निर्णय करें। इसके सेवन से अपस्मार, कास, शोथ, उदर- विकार, गुल्म, अर्श, पसली की पीड़ा, कामला, हलीमक, चातुर्थिक ज्वर, भूतावेश आदि रोग अवश्य नष्ट होते हैं।

अपस्मार में महाचैतस घृत

क्वाथ के लिये औषधियाँ — सन के बीज, निशोथ, एरण्डमूल, दशमूल, शतावर, रास्ना, छोटी पीपल और सहजने की छाल 8-8 तोले। क्वाथार्थ जल 25 सेर 48 तोले, अवशिष्ट क्वाथ 6 सेर 32 तोले तथा घृत 128 तोले।

कल्क के लिये विदारीकन्द, मुलहठी, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, मिश्री,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
पिंडखजूर, मुनक्का, शतावर, युज्जातक (कन्द विशेष) गोखरू और स्वल्प चैतस घृत के सभी कल्क द्रव्य अर्थात् इन्द्रायन, त्रिफला, सँभालू के बीज, देवदारु, एलुआ, शालपर्णी, तगर, हल्दी, दारुहल्दी, श्वेत सारिवा, काली सारिवा, प्रियंगु पुष्प, नीलकमल, इलायची छोटी, मंजीठ, दन्ती, अनार, केशर, तालीसपत्र, बड़ी कटेरी, चमेली के फूल, वायविडंग, पृश्निपर्णी, कूट, श्वेत चन्दन और पद्माख, सब मिला कर 64 तोले। इन सबके साथ यथाविधि घृत सिद्ध करके रखें।

यह घृत रोग और रोगी के लक्षण और बलाबल देख कर निश्चित की गई मात्रा और अनुपात के साथ सेवन कराने से सब प्रकार अपस्मार और उनके उपद्रव, विषदोष, उन्माद, प्रतिश्याय, तृतीयक- चातुर्थिक ज्वर, श्वास, कास तथा ग्रहणी युक्तव्याधियों को दूर करके शुक्र और रज का भी शोधन करता है।

अपस्मारादि में पानीय कल्याणक घृत

कल्क के लिये औषधियाँ — हरड़, बहेड़ा, आमला, हल्दी, दारुहल्दी, रेणुका बीज, दोनों प्रकार की सारिवा, पुष्पप्रियंगु, शालिपर्णी, पृष्ठपर्णी, देवदारु, एलुआ, तगर, इन्द्रायनमूल, दन्तीमूल, अनारदाना, नागकेशर, नीलकमल, छोटी इलायची, मंजीठ, वायविडंग, कूट, पद्माख, चमेली के पुष्प, लालचन्दन, तालीशपत्र और बड़ी कटेरी 1- 1 तोला, जल 3 सेर 16 तोले और घृत 64 तोले। यथाविधि घृत सिद्ध करके अमृतवान में सुरक्षित रखें।

इसके सेवन से अपस्मार, ज्वर, यक्ष्मा, उन्माद, वातरक्त, खाँसी, अग्निमांद्य, प्रतिश्याय, कटिशूल, तृतीयक- चातुर्थिक ज्वर, मूत्रकृच्छ, विसर्प, कण्डु, पाण्डु, विष- विकार तथा प्रमेहादि रोग नष्ट हो जाते हैं। वन्ध्या स्त्रियों को इसके सेवन से पुत्र- प्राप्ति होती है तथा भूत, यक्षादि की बाधाएँ भी नष्ट हो जाती हैं।

द्रष्टव्य — क्वाथ वाली औषधियों को जौकुट करके पानी में औटावें और चौथाई जल रहने पर उतार- छान कर गोमूत्र आदि तथा कल्क द्रव्यों के साथ पाक करें, जब घृत मात्र शेष रहे, तब उतार कर छान लें। इस विधि से सभी प्रकार के घृत सिद्ध होते हैं।

पानीय कल्याणक में औषधियों का कल्क बनाकर, उसके साथ घृत और जल मिला कर पाक करें। घृत मात्र शेष रहने पर उतार कर छान लें। तैल- पाक की भी यही विधि है।

मृगी में हितकर पलंक पाद्य तैल

शुद्ध गूगल, वच, हरड़, वृश्चिकाली, आक की जड़, सरसों, जटामाँसी, गन्धमाँसी, कालिहारी, हींग, ग्रन्थिपर्ण, लहसन, अतीस, चित्रकमूल, कूट और सभी मांसभक्षी पक्षियों की बीटें जितनी मिल सकें, उतनी ले लें, सब मिला कर आध सेर कल्क बनावें।

सरसों का तैल 2 सेर और बकरी का मूत्र 8 सेर। यथा विधि तैल- पाक करके, तैल सिद्ध सिद्ध कर लें।

इसकी मालिश करनी चाहिये, मुख द्वारा सेवन नहीं करना चाहिये। मालिश मात्र से अपस्मार (मृगी) का शमन होता है। मालिश के पश्चात् गोबर का उबटन करने के पश्चात् रोगी को गोमूत्र से स्नान करना चाहिये। यह 4 क्रियाएँ अपस्मार को दूर करने में अत्यन्त उपयोगी हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मृगी में कल्याणक चूर्ण

पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, काली मिर्च, त्रिफला, विड नमक, सेंधा नमक, छोटी पीपल, वायविडंग, करंज, अजवाइन, धनियाँ और श्वेत जीरा समान भाग लेकर, कूट- कपड़छन करके रखें।

मात्रा—1 माशा, गर्म पानी के साथ अथवा किसी अन्य उचित अनुपान के साथ सेवन करने से अपस्मार, उन्माद, अर्श, ग्रहणी तथा वात और कफ के प्रकोप से उत्पन्न अन्यान्य व्याधियाँ दूर हो जाती हैं।

मृगी में पदत्राण नस्य या उपानह नस्य

यह नस्य लोक में प्रचलित धारणा के अनुसार मृगी के रोगी को दी जाती है। कई बार इसका प्रभाव भी तुरन्त होता देखा गया है —

प्रयोग में लाया हुआ चमड़े का जूता मृगी के दौरे से मूर्च्छित हुए व्यक्ति को सुँघाना चाहिए। यही पदत्राण नस्य है। इसके सुँघाने से बेहोशी दूर होकर रोगी स्वस्थ हो जाता है।

मृगी में सर्पगन्धा का उपयोग

आधुनिक परीक्षणों से अपस्मार, अपतन्त्र, उन्माद, उच्च रक्तचाप आदि रोगों में सर्पगन्धा नामक वनस्पति अधिक हितकर पाई गई है। मस्तिष्क की अत्यधिक दुर्बलता एवं उच्च रक्तचाप के रोगियों पर प्रयोग किये जाने पर इसका शामक प्रभाव पाया गया है। उससे विक्षोभ आदि में सुधार हुआ तथा रक्तचाप भी कम हो गया।

वस्तुतः इस वनस्पति शामक, निद्रा उत्पन्न करने वाला (सैडेटिव) प्रभाव, तनाव तथा शौथिल्य में सहायक होता है। अमेरिका में उच्च रक्तचाप के रोगियों पर इसका प्रयोग सफलता पूर्वक किया जाता है, भारतवर्ष में भी औषधि निर्माता इसका प्रयोग अपने पेटेंटों में भी करने लगे हैं। सर्पीना या अन्य नाम की कुछ गोलियाँ बाजारों भी मिलती हैं।

उन्माद, अपस्मार, योषापस्मार आदि में यह बूटी अधिक गुणकारी मानी जा रही है। जन सामान्य भी इसके उपसर्गों की बात करने लगे हैं। उच्च रक्तचाप (हाई ब्लडप्रेशर) में भी इसका उपयोग होने लगा है।

सर्पगन्धा की खोज कुछ नवीन नहीं है, आयुर्वेद में इसका प्रयोग न जाने कब से होता रहा है। शास्त्रों में इसके अनेक पर्याप्त नाम मिलते हैं, सर्पगन्धा, चन्द्रिका, नाकुली, धवल वरुआ आदि। लिनियस नामक एक पाश्चात्य वनस्पति- वैज्ञानिक ने इसे ओफिक्सीलोन सर्पेटाइनम नाम दिया, किन्तु बाद में इसका नाम रोबुल्फिया सर्पेन्टाइना कर दिया गया।

सर्पगन्धा का वृक्ष, एक प्रकार का क्षुप (पौधा) है, जिसकी ऊँचाई प्रायः 40 सेंटीमीटर से अधिक नहीं होती। सामान्यतः 15-20 सेंटीमीटर के ही क्षुप अधिक पाये है। इस सीधे, झाड़दार, क्षुप पर आरम्भ में श्वेत पुष्प लगते हैं, जो शनैः- शनैः लाल वर्ण के हो जाते हैं। ग्रीष्म ऋतु में इसमें फल आने लगते हैं, जो कि शरद ऋतु में पकते हैं। एक साथ जुड़े हुए दो- दो फल अपरिपक्व अवस्था में हरे, फिर लाल, बैंगनी और पकने यह काले चमकदार हो जाते हैं।

यह क्षुप उत्तराखण्ड में अधिक पाया जाता है। हिमालय की तलहटी में हजार- बारह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
सौ मीटर की ऊँचाई पर उत्पन्न होता देखा गया है। बिहार और नेपाल में भी अधिक होता है।

उन्माद, अपस्मार, हिस्टीरिया प्रभृति रोगों में सर्पगन्धा की जड़ का चूर्ण 20 ग्रेन की मात्रा में दिन में 2 बार पानी के साथ देने से लाभ होता है। यही मात्रा उच्च रक्तचाप के रोगी को दी जा सकती है। सर्पगन्धा मिश्रित एक अत्यधिक प्रभाव उत्पन्न करने वाली गोली का एक योग यहाँ प्रस्तुत है।

मृगी में सर्पगन्धादि वटी का विशिष्ट योग

सर्पगन्धा का घनसत्व 100 ग्राम, ब्राह्मी बूटी, शंखपुष्पी, कूट, मीठी वच, शुद्ध कुचला, केशर और मल्ल चन्द्रोदय 10-10 ग्राम, कस्तूरी 2 ग्राम लेकर काष्ठौषधियों को कूट- छान लें। उसमें कुचला, केशर और मल्लचन्द्रोदय एक- एक कर खरल करते हुए मिलायें। सर्पगन्धा घनसत्व को खरल में महीन करके, सब द्रव्यों को इसमें मिलायें जटामाँसी के क्वाथ में 3 घंटे घोट कर 2-2 रत्ती प्रमाण गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1-1 गोली, ताजा पानी के साथ दिन में 3 बार देनी चाहिये। इसके सेवन से अपस्मार मृगी, हिस्टीरिया, उन्माद, अनिद्रा तथा उच्च रक्तचाप आदि में अद्भुत प्रभाव दिखाती है।

सर्पगन्धा घनसत्व बनाने के लिये सर्पगन्धा का चूर्ण चौगुने जल के साथ क्वाथ करके, चतुर्थांश शेष रहने रहने पर उतार कर छान लें और पुनः मन्दाग्नि पर चढ़ाकर पकावें। जब गाढ़ा हो जाय तब उतार कर, ठण्डा होने पर सुरक्षित रखें। यही घनसत्व प्रयोग में लाया जाता है।

अपस्मारादि में हिंग्वाद्य घृत

एक और सरल घृत का योग स्मरण आ गया, जो कि घोर तथा पुराने अपस्मार को भी दूर कर देता है। उन्माद को नष्ट करने में भी अत्यन्त प्रभावकारी है। योग शास्त्रीय है —

कल्क के लिये हींग, काला नमक, सोंठ, काली मिर्च और छोटी पीपल 8-8 तोले, घृत 6 सेर 32 तोले तथा गोमूत्र 25 सेर 48 तोले लेकर यथाविधि घृतसिद्ध करें।

उचित मात्रा और अनुपान के साथ सेवन करने से उन्माद प्रभृति रोग दूर होते हैं।

अपस्मारादि में चतुर्भुज रस

रस सिन्दूर 2 भाग, स्वर्ण भस्म, मैनसिल, कस्तूरी और शुद्ध हरताल 1-1 भाग लेकर, ग्वारपाठे के स्वरस में घोटें और फिर एरण्ड- पत्रों में लपेट कर अनाज के ढेर में 3 दिन तक रख कर निकाल लें।

मात्रा — 1 रत्ती। यह रस त्रिफला चूर्ण और शहद के साथ सेवन करना चाहिये। अपस्मार, उन्माद, हिस्टीरिया, ज्वर, खाँसी, शोष, मन्दाग्नि, क्षय, हस्तकम्प, शिरःकम्प, गात्रकम्प आदि सभी विकारों को नष्ट करने में समर्थ है।

अपस्मार पर एक अन्य मिश्रण

ब्राह्मी पंचांग का चूर्ण 45 ग्राम, मीठी वच का चूर्ण तथा शुद्ध नौसादर 20-20 ग्राम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
लेकर 3 घण्टे तक खरल करके सुरक्षित रखें।

मात्रा — 1 से 2 ग्राम तक, पानी के साथ देनी चाहिये। अपस्मार, हिस्टीरिया, चक्कर आना तथा मस्तिष्क दौर्बल्य में लाभदायक है। आरम्भिक अवस्था में अधिक काम करती है।

पथ्यापथ्य

स्नान, उबटन, अभ्यंग, नस्य, स्वच्छ वायु में निवास अधिक लाभकारी हैं। भोजन हल्का, गेहूँ, घी, दूध, पुराना पेठा, लाल शालि, चावल, मूँग, नारियल, मीठा अनार, आमला, अंगूर, हरे शाक- सब्जी आदि पथ्य हैं। शोक, चिन्ता, भय, तीक्ष्ण, उष्ण तथा भारी पदार्थों के सेवन से बचना चाहिये।

26.उन्माद और उसके उपचार

उन्माद के भेद और लक्षण

आयुर्वेद में उन्माद के 6 प्रकार माने गये हैं — वात, पित्त, कफ के पृथक् पृथक् दोष से 3 प्रकार, सन्निपात से चौथा प्रकार, पाँचवाँ विष के प्रभाव से उत्पन्न और छठा उन्माद शोक, चिन्ता, शोक- प्रतिशोधादि कारणों से मस्तिष्क पर पड़ने वाले कुप्रभाव से उत्पन्न हो जाता है।

वातज उंन्माद में बुद्धि और स्मृति का ह्रास, अकारण हँसना, रोना, उछलना, नाचना, गाना, अंगों को मटकाना आदि लक्षण होते हैं।

पित्तजन्य उन्माद में क्रोध, असहनशीलता, डरना, भागना, नग्न हो जाना, शीतल अन्न- जल की इच्छा करना, छाया में लेटना- बैठना, शरीर में उष्णता आदि लक्षण होते हैं।

कफज उन्माद में अल्प भाषण, अरुचि, निद्रा की अधिकता, वमन, मुख से लाल स्राव तथा नखादि में श्वेतता आदि लक्षण होते हैं।

सन्निपातजन्य उन्माद में उपर्युक्त तीनों प्रकार के मिश्रित उपद्रव होते हैं।

विषजन्य उन्माद में नेत्र लाल, विवर्णता, कान्ति- नाश, मुख तथा शरीर पर काला- नीलापन, मुख से झाग निकलना तथा संज्ञा का नष्ट होना आदि लक्षण होते हैं।

मानसिक उन्माद में प्रलाप की अधिकता, गाना, हँसना, रोना अथवा निस्तब्ध बैठे रहना आदि लक्षण होते हैं।

चिकित्सा सूत्र

सभी प्रकार के उन्माद वस्तुतः मानसिक दुर्बलता युक्त ही होते हैं। उनमें मस्तिष्क को बल प्रदान करने वाली औषधियाँ दी जानी चाहियें। नींद लाने वाली (सैडेटिव) दवाएँ भी इसमें लाभ करती हैं। आधुनिक परीक्षकों के मत से सर्पगन्धा तथा उसके मिश्रित योग इस रोग में अत्यन्त प्रभावकारी सिद्ध होते हैं।

अपस्मार के प्रसंग में लिखी गई सर्पगन्धादिवटी का सेवन कराने से उन्माद रोग पर शीघ्र काबू पाया जा सकता है। उसके साथ, आवश्यक होने पर अन्य औषधियाँ भी लगाई जा सकती हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सामान्यतः हिस्टीरिया और मृगी में प्रयुक्त की जाने वाली औषधियाँ उन्माद रोग में भी लाभ करती हैं। मुख्य रूप से मस्तिष्क सम्बन्धी इन तीनों रोगों के मुख्य कारण न्यूनाधिक रूप में एक जैसे ही हैं।

क्षीर कल्याणक, पानीय कल्याणक, वृहद् पंचगव्य घृत, महा चैतस घृत, कल्याणक चूर्ण आदि ऐसी औषधियाँ हैं, जो मृगी, हिस्टीरिया, पागलपन आदि को दूर करने में समान प्रभावकारी है। रोग के कारणों का निवारण किया जा सके तो रोग शीघ्र दूर हो सकता है। इस विषय में भैषज्य रत्नावली का मत है —

शुद्धस्याचार विध्वंसे तीक्ष्णं नावनमञ्जनम्। ताडनश्च मनोबुद्धिस्मृति संवेदनं हितम्॥
तर्जनं त्रासनं दानं सान्त्वनं हर्षणं भयम्। विस्मयो विस्तृतेर्हेतोर्नयन्ति प्रकृतिं मनः॥

जिसका शुद्ध आचार- विचार नष्ट हो गया हो, उस उन्मादी को वमन, विरेचनादि से शुद्ध करने के पश्चात्, तीक्ष्ण नस्य, अंजन, ताड़न, भयप्रदर्शन, दान, सान्त्वना, हर्षोत्पादन और विस्मयकारी दृश्यों से, बातों से, मन, बुद्धि और स्मृति को स्थिर तथा मन को प्रकृतिस्थ करना चाहिये।

आगे कहा है कि काम, क्रोध, भय, हर्ष, ईर्ष्या और लोभ से उत्पन्न उन्मादों को परस्पर प्रतिद्वन्द्वी उपायों के द्वारा शान्त करना चाहिये।

जिस वस्तु के नष्ट होने या न मिलने से चित्त को चोट पहुँची हो, उसे वैसी ही वस्तु की प्राप्ति का आश्वासन तथा सान्त्वना देनी चाहिये, जिससे कि वह शीघ्र स्वस्थ हो सके।

रोगी को कब्ज न रहे, इसका ध्यान इस रोग में भी आवश्यक है। चिकित्सा के आरम्भ में विरेचन द्वारा कोष्ठ- शुद्धि कराई जाय और तब सम्बन्धित औषधि- क्रम आरम्भ किया जाय। ऐसा करने पर ही रोगी औषधोपचार से लाभ उठा सकता है।

उन्माद में सरलोपचार

- ब्राह्मी बूटी मस्तिष्क पर बहुत अनुकूल प्रभाव डालती है। सामान्य रूप से मस्तिष्क दौर्बल्य के रोगी को ब्राह्मी, बादाम, काली मिर्च, सौंफ, गुलाब के फूल, मुनक्का, मिश्री आदि के योग से निर्मित ठण्डाई सेवन कराते रहने से शीघ्र लाभ होता है। मानसिक तनाव दूर होकर बुद्धि और स्मृति बढ़ती है।
- ब्राह्मी के रस में कूट का चूर्ण और शहद मिला कर सेवन कराने से उन्माद में लाभ होता है।
- पेठा या वच के स्वरस में भी कूट का चूर्ण और शहद युक्त पेय उन्माद को दूर करता है।
- शंखपुष्पी का स्वरस, शहद और कूट का चूर्ण मिला कर पिलाना विक्षिप्तता को दूर करने में सहायक है।
- पेठा के बीजों का चूर्ण शहद के साथ चटावें। यह भी उन्मादादि रोगों को नष्ट करने में सहायक है।
- ताड़ की शाखा का स्वरस उन्मादादि में लाभकारी है। यदि इसमें शहद मिला कर पान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

करें तो अत्यधिक गुणकारी हो जाता है।

- पीपल छोटी, काली मिर्च, सेंधा नमक, गोरोचन और शहद महीन पीसें और एकत्र कर, नेत्रों में अंजन करें। इससे उन्माद दूर होता है।
- नीम के पत्ते, वच, हींग, सर्प की केंचुली और सरसों एकत्र करके, इन की धूप देनी चाहिये।
- विनौला, मोरपंख, बड़ी कटेरी, मैनफल, दालचीनी, वंशलोचन, बिल्ली की विष्ठा, जौ की भुसी, वच, बाल, सर्प की केंचुली, गोश्रृंग, हाथी- दाँत, हींग और काली मिर्च समान भाग लेकर धूप बनावें। भैषज्य रत्नावली में इन द्रव्यों के साथ शिवनिर्माल्य अर्थात् शिवलिंग से उतरी हुई माला भी सम्मिलित की है।

यह धूप आवेशजन्य उन्माद में अधिक हितकर है।

उन्माद भंजन रस

त्रिकुटा, त्रिफला, गजपीपल, देवदारु, वायविडंग, चिरायता, कुटकी, छोटी कटेरी, मुलहठी, इन्द्रयव, चित्रक, खिरेंटी, पीपलामूल, खस, सहजने के बीज, निशोथ, इन्द्रायन, वंगभस्म, रजतभस्म, अभ्रक भस्म और प्रवाल भस्म प्रत्येक 1 तोला तथा लौह भस्म 25 तोले।

काष्ठौषधियों को कूट- छान कर, उनमें सभी भस्म मिलावें और पानी के साथ एक प्रहर घोट कर 2-2 रत्ती प्रमाण गोलियाँ बना कर सुखावें और शीशी में रखें।

उन्मादगज केसरी 1

- शुद्ध पारद और शुद्ध गन्धक समान भाग लें। पारद को वच के क्वाथ में लगातार खरल करें और गन्धक को शंखपुष्पी के स्वरस में खरल करें तथा दोनों को मिला कर, घोंट कर एकजीव कर लें। तदुपरान्त उसे गोमूत्र में घोंट कर मूषा में रखें और उस पर सात बार कपड़ मिट्टी करें। सूखने पर भूधर यन्त्र में लघुपुट दें। फिर स्वाँग शीतल होने पर निकालें और महीन खरल करके रखें।

मात्रा — एक से डेढ़ माशे तक, समान भाग पीली सरसों का चूर्ण मिला कर पुराने घृत के साथ दें।

नस्य — सरसों के तैल की नस्य दें तथा शरीर पर अभ्यंग मालिश भी सरसों के तैल की ही करावें।

इस प्रकार 21 दिनों तक औषधि सेवन, नस्य और अभ्यंग के प्रयोग से उन्माद और अपस्मार रोग नष्ट हो जाते हैं।

उन्मादगज केसरी 2

- शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक और शुद्ध मैनसिल 1-1 तोला, शुद्ध धतूर बीज 3 तोले लेकर, पहिले पारद और गन्धक की कज्जली करें और फिर उसमें अन्य दोनों द्रव्यों को पृथक् महीन करके, मिलायें। तदुपरान्त क्रमशः वच, रास्ना और ब्राह्मी के स्वरस की 7-7 भावनाएँ देकर 1-1 रत्ती प्रमाण गोलियाँ बनावें और छाया- शुष्क करें।

मात्रा — 1-1 गोली उचित अनुपान के साथ दिन में 2 बार अथवा आवश्यकतानुसार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
कम या अधिक बार देना निश्चित करें।

उन्माद में महावत विध्वंसन रस

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, नागभस्म, वंगभस्म, लौहभस्म, ताम्रभस्म, अभ्रक भस्म, छोटी पीपल, फुलाया हुआ सुहागा, काली मिर्च और सोंठ प्रत्येक 1-1 भाग तथा शुद्ध विष भी 1 भाग लें।

पारद- गन्धक की कज्जली करके, अन्य द्रव्य भी एक- एक कर मिलाते और घोटते चलें। पीपल, मिर्च आदि को पृथक् पीस- छान कर मिलाना चाहिये। फिर इस मिश्रण को क्रमशः त्रिफला, त्रिकुटा, चित्रक, भृंगराज, कूट, अकरकरा, निर्गुंडी, अमलोनिया, अदरक और नींबू के स्वरस में पृथक् पृथक् तीन- तीन बार खरल करके 2-2 रत्ती की गोलियाँ बना कर छाया में सुखा कर शीशी में रखें।

मात्रा — 1 से 3 गोली तक रोगी का बलाबल देखकर उचित अनुमान के साथ देनी चाहिये।

इसके सेवन से भयंकर वात रोग नष्ट होते हैं। शूल, संग्रहणी, सन्निपात, विमूढ़ता, अपस्मार आदि में विशेष उपयोगी है। कफजन्य सभी विकारों, शीतपित्त, अग्निमान्द्य, प्लीहा, कुष्ठ, अर्श को भी दूर करने वाली महौषधि है तथा सभी प्रकार के उदर रोग तथा अनेक प्रकार के स्त्री रोगों का भी शमन होता है।

इसके सेवन से भूतोन्माद, वातज उन्माद, अपस्मार, कृशता एव रक्तपित्तादि रोग नष्ट हो जाते हैं।

उन्माद गजांकुश रस

शुद्ध पारद 2 तोले लेकर उसे क्रमशः पृथक्- पृथक् धतूरे के स्वरस, गजपीपल के स्वरस या क्वाथ तथा कुचला के पानी के साथ तीन- तीन दिन खरल करके ऊर्ध्वपातन करें और उसमें शुद्ध गन्धक 2 तोले मिला कर गोल टिक्की बना लें। उस टिक्की को स्वल्प गजपुट में पकावें और फिर उसमें शुद्ध धतूरे के बीज, अभ्रक भस्म, शुद्ध गन्धक और मीठा विष 2-2 तोले मिला कर 3 दिन तक खरल करें और आधी- आधी रत्ती की गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1-1 गोली प्रातः- सायं, अथवा एक ही गोली, उचित अनुपान के साथ दें। इससे त्रिदोषजन्य उन्माद एवं भूतोन्माद प्रभृति व्याधि का शमन होता है।

पागलपन में भूताङ्कुश रस

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, लौह भस्म, रजत भस्म, ताम्र भस्म, मुक्ता भस्म, हीरक भस्म, शुद्ध हरताल, शुद्ध मैनसिल, शुद्ध तूतिया, काला सुरमा, समुद्रफेन, शुद्ध रसौत और पाँचों नमक सभी समान भाग लेकर क्रमशः 1-1 दिन भृंगराज स्वरस, चित्रक क्वाथ और थूहर के दूध में खरल करके गोला बनावें और उस गोले को सम्पुट में बन्द करके गजपुट में फूँकें। स्वाँग शीतल होने पर निकाल कर महीन पीसें।

मात्रा — 2 रत्ती, अदरक के स्वरस के साथ सेवन करें। सब प्रकार के उन्माद, विशेषकर जिसे भूतोन्माद कहते हैं, उसे भी नष्ट कर देता है।

इस रस के सेवनकाल में भैंस का दूध, दही तथा पौष्टिक पदार्थों का भोजन करना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
चाहिये। शरीर पर सरसों के तैल की अभ्यंग मालिश नित्यप्रति कराते रहें। इसमें गुरु पदार्थों का भोजन करना पथ्य कहा है।

विक्षिप्तता में काम- दुधारस

मुक्ता भस्म, मुक्ता शुक्तिभस्म, प्रवाल भस्म, वाराटिका कौड़ी भस्मी, स्वर्ण गैरिक और गिलोय सत समान भाग लेकर सबको महीन घोटें और रख लें।

मात्रा — 2 रत्ती यह रस जीरा चूर्ण 2 माशे और शर्करा 3 माशे के साथ मिला कर सेवन करावें। इससे जीर्ण ज्वर, भ्रम, चक्कर, उन्माद, पित्तजन्य रोग, अम्लपित्त तथा सोम रोग इत्यादि नष्ट हो जाते हैं।

उन्मादनाशिनी वटी

मल्ल सिन्दूर और शुद्ध कुचला 25-25 ग्राम, ब्राह्मी बूटी, शंखपुष्पी, मीठा कूट, मीठी वच, भीमसेनी कर्पूर, स्वर्णमाक्षिक भस्म, अभ्रक भस्म और केशर 10-10 ग्राम, मुक्ताभस्म 3 ग्राम और कस्तूरी 2 ग्राम लेकर काष्ठौषधियों को कूट- छान लें तथा अन्य सभी भस्मादि द्रव्यों को मिला कर एकजीव कर लें। फिर निम्न द्रव्यों का क्वाथ बनावें —

ब्राह्मी, जटामांसी, वायविडंग, अजवाइन और एलुआ 20-20 ग्राम, जौकुट करके चौगुने पानी के साथ क्वाथ करें और चौथाई जल शेष रहने पर उतार कर छान लें। इस क्वाथ के साथ उपर्युक्त औषधि- द्रव्यों को 3 घंटे तक घोट कर 2-2 रत्ती प्रमाण गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1-1 गोली ताजा पानी के साथ प्रातः- सायं सेवन करावें। रोग की स्थिति देख कर, आवश्यक हो तो दिन में 3-4 बार तक दे सकते हैं।

इसके सेवन से उन्माद, अपस्मार, हिस्टीरिया आदि रोगों का शमन हो जाता है।

पथ्यापथ्य

उन्माद रोग में गेहूँ, लाल शालि, धारोष्ण दूध, घृत, पुराना घृत, पुराना पेठा, आम, परवल, नारियल, अंगूर, कटहल, बथुआ, कैथ आदि का सेवन पथ्य है।

विरुद्ध भोजन, उष्ण आहार, मद्य, भूख, निद्रा, प्यास के वेग को रोकना आदि अपथ्य है।

27.चर्म रोगों के औषधोपचार

अनेक प्रकार के चर्मरोग

विरुद्ध आहार-विहार के कारण जब शरीरस्थ रक्त दूषित होने लगता है, तब अनेक प्रकार के चर्म रोग उत्पन्न हो जाते हैं। उन्हें मुख्य रूप से दो प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है — 1 सामान्य प्रकार के चर्म रोग और 2. गम्भीर प्रकार के चर्म रोग। सामान्य कोटि में खाज, फुन्सी, मरोरी, घमौरी; मस्से, छलौरी, कखराई, बिवाई आदि तथा गम्भीर कोटि के रोगों में श्वेत कुष्ठ (खित्र), कुष्ठ, पृष्ठव्रण, नाड़ीव्रण (नासूर), कण्ठमाला आदि को सम्मिलित किया जाता है। इन सभी पर विस्तार से लिखें तो एक बहुत बड़ी पुस्तक बन जायेगी। अतः संक्षेप में, केवल उनके औषधोपचार ही प्रस्तुत कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

खुजली, कण्डु या पामा

यह रोग प्रायः उन लोगों को अधिक होता है, जो शारीरिक स्वच्छता की ओर ध्यान नहीं देते। गन्दगी के कारण शरीर में जो विषाणु उत्पन्न हो जाते हैं, उनके संक्रमण से शरीर के विभिन्न अंगों में, गाइयों आदि में खुजली होने लगती है। रोग बढ़ता है तो बेचैनी बढ़ जाती है और रोगी खुजाते- खुजाते परेशान हो जाता है।

आयुर्वेद, चर्म रोगों में शोधन कर्मों को विशेष महत्व देता है। उपवास के साथ वास्तविक कर्म एनिमा का प्रयोग किया जाय। उपवास के रूप में फलों का रस तथा शुद्ध जल में नींबू और शहद मिश्रित पेय अथवा बकरी या गाय का दूध लेना चाहिये तथा रोगी को शरीर की पूरी तरह सफाई के लिये सर्वांग स्नान नित्य प्रति करना चाहिये।

खुजली पर सरल औषधियाँ

- नारियल के तैल में फुलाया हुआ सुहागा मिलाकर शरीर पर मालिश करनी चाहिये।
- सत्यानाशी के बीज़, पानी के साथ पीस कर लगावें अथवा उनका उबटन करें।
- शुद्ध आमलासार गन्धक को शहद के साथ सेवन करने से खुजली में पर्याप्त लाभ होता है। गन्धक की मांत्रा लक्षणानुसार 100 से 400 मिलीग्राम तक ले सकते हैं।
- पँवाड़ के बीज, बावची, सरसों, तिल, हल्दी, दारुहल्दी, कूट और मोथा समान भाग लेकर ताजा तक्र के साथ पीस कर लेप करने से खुजली और दाद में भी लाभ होता है।
- 10 ग्राम आमलासार गन्धक- शुद्ध को रात्रि में जल के साथ भिगोयें और प्रातःकाल मोटे वस्त्र में छान कर पीवें। इससे खुजली में शीघ्र लाभ होता है। इसी गन्धक का पानी छानने पर वस्त्र में जो गन्धक रहे, उसे नारियल के तैल में घोट कर रखें। इसे धूप में बैठकर लगाने से खुजली दूर होती है।
- शुद्ध आमलासार गन्धक, आँवाहल्दी, बावची के बीज और काला जीरा प्रत्येक 12 ग्राम लेकर दरदरी कूट कर रखें। इसमें से 12 ग्राम तक यह चूर्ण पानी के साथ रात्रि में एक मिट्टी के पात्र में भिगोवें और प्रातः पानी निथार कर या छान कर पीवें। ऊपर से 20-25 ग्राम भुने चने खायें। यह प्रयोग नित्यप्रति तीन दिन तक करें। खुजली मिट जायेगी।
- उक्तयोग में पानी निथारने के पश्चात् जो औषधि शेष रहे, उसमें 2 ग्राम मैनसिल मिला कर पीसें और तिली के तैल में मिला कर रखें। इसे धूप में बैठकर रुग्ण स्थान पर मलना चाहिये।

इस प्रकार खाने और लगाने के प्रयोग से 3 दिन में लाभ हो जाता है।

खाज पर अचूक मरहम

शुद्ध आमलासार गन्धक, शुद्ध पारद, आवाँ हल्दी, अजवाइन और शुद्ध सिंगरफ प्रत्येक 12 ग्राम, शुद्ध तूतिया 3 ग्राम, गाय का घृत 100 ग्राम तथा इतना ही भाँगरे का स्वरस।

पारद- गन्धक की कज्जली करके, उसमें आँवा हल्दी का अत्यन्त महीन चूर्ण मिलावें। सिंगरफ और तूतिया भी सूक्ष्म करके मिला दें और घी के साथ पर्याप्त मन्थन करें, साथ ही भाँगरे का रस भी बीच- बीच में मिलाते रहें। इस प्रकार सब एकजीव होकर उत्तम मरहम तैयार होगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इसका व्यवहार करने से पूर्व किसी विषाणु नाशक साबुन (नीम आदि से निर्मित साबुन) से ठीक प्रकार स्नान करें। अथवा स्नान के पानी में नीम का क्वाथ मिला कर, उससे ठीक प्रकार से स्नान करके और शरीर को मोटे तौलिये से रगड़- पोंछ कर सुखावें और तब यह मरहम रुग्ण स्थानों पर लगावें। फिर 3 दिनों तक स्नान न करें और मरहम का व्यवहार करते रहें। तीन दिन तक इस प्रयोग के करने से खुजली अवश्य नष्ट हो जायेगी।

खाजहर अव्यर्थ औषधि

त्रिफला चूर्ण 8 ग्राम, शुद्ध गन्धक 2 ग्राम और रसमाणक्य 1 ग्राम, खरल में घोंट कर एकजीव कर लें तथा 10 पुड़ियाँ बना लें।

मात्रा — 1-1 पुड़िया प्रातः- सायं पानी के साथ अथवा त्रिफला कषाय के साथ सेवन करावें। इसके प्रयोगकाल में घृत, मक्खन आदि का अधिक सेवन करें। क्योंकि दवा गर्मी करती है। खुजली पर अव्यर्थ योग है।

दाद या दद्रु रिंग वार्म

यह भी त्वचा पर होने वाला एक दुष्ट रोग है। इसमें कुछ चकत्ता- सा बन जाता है, जो बीच में नीचा और चारों ओर उठा हुआ सा रहता है। किसी- किसी रोगी में इससे कुछ अलग लक्षण भी देखे जाते हैं।

इस रोग में भी अत्यधिक खुजली चलती है। किन्तु खुजाने में कुछ सुख का- सा अनुभव भी होता है। रोगी खुजाते- खुजाते थक कर भी पुनः खुजाने लगता है।

दाद पर औषधियाँ

- गन्धक, सुहागा और मिश्री समान भाग मिला कर पीसें। यह मिश्रण 40 ग्राम लेकर पाँच गुने पानी में डाल कर घोल कर तैयार करें। 24 घण्टा रखने के बाद प्रयोग में लावें। इसे दिन भर में 2 बार, दाद पर मलते रहने से 2-3 दिन में दाद नष्ट हो जाता है।
- नींबू का टुकड़ा काट कर दाद पर मलने से पहले कुछ जलन- सी प्रतीत होती है, किन्तु दाद की खुजली कम हो जाती है तथा कुछ दिन में रोग मिट जाता है।
- आमलासार गन्धक, सुहागा और राल समान भाग लेकर महीन पीसें तथा तीनों के बराबर घी के साथ मन्दाग्नि पर पकावें। जब ठीक प्रकार से मिल कर एक जीव हो जायें तब उतार कर उस पात्र में जल डालें. जिससे कि जल उस पर ऊपर रहे। ठण्डा होने पर जल ऊपर हो जायेगा और वह पदार्थ मरहम रूप में जम जायेगा। उस जल को फेंक दें और मरहम को काम में लावें। दाद, खाज, फोड़ा- फुंसी सभी में इसे लगाने पर लाभ हो जाता है।
- गन्धक- आमलासार, तूतिया, मुर्दासंग, मैनसिल, सफेद जीरा, काला जीरा, पंवाड़ के बीज, बावची और सुहागा, समान भाग लेकर कूट- कपड़छन करें। दाद, खाज में अत्यन्त उपयोगी है। इसका प्रयोग इस प्रकार करें —
- दाद में ताँबे के पैसे से दाद को खुजावें और इस दवा को नींबू के रस में मिला कर दाद पर लगावें। दाद अवश्य मिट जायेगा। सूखी खुजली में यह दवा सरसों के तैल में मिला कर लगावें तथा सब शरीर पर गोबर मल कर स्नान करें। पकी खुजली में 100 बार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पानी से धोये हुए घृत या मक्खन में मिला कर लगावें।

केश- दद्रु नाशक दवाएँ

दन्तीमूल, चित्रक मूल, कड़वी तोरई, तीनों समान भाग लेकर, सिल पर पीसें और कल्क बना लें। इस कल्क को पानी में घोल कर समान भाग तैल के साथ मन्दाग्नि पर पकावें। पानी जल कर, तैल मात्र शेष रहे, तब उतार कर छान लें। इस तैल को सिर में उत्पन्न हुए दाद पर लगाने से शीघ्र लाभ होता है। अथवा

गुंजाफल का कल्क करके उसे चौगुने भाँगरे के स्वरस में घोलें और उतने ही तैल के साथ पकावें। तैल मात्र शेष रहे तब उतार कर छानें और शीशी में रखें। सिर में, जहाँ दाद हो वहाँ इस तैल के मलने से दाद- खाज तो ठीक होता ही है, कुष्ठ अथवा सिर के अन्य त्वचा रोग भी मिट जाते हैं।

चर्मकील और मस्सों की दवा

चर्मकील, अंकुर, मस्सा, तिल आदि को दूर करने के लिये उसे एरण्ड- पत्र के डंठल से घिसना चाहिये। अथवा सर्प की कैंचुल जला कर भस्म कर लें। वह भस्म मस्से आदि पर मलने से शीघ्र लाभ होता है। अथवा धनियाँ, तज और लोध समान भाग लेकर पानी के साथ पीसें और मस्से पर लेप करें तो शीघ्र लाभ सम्भव है। इस लेप से मुँहासों में भी लाभ होता है।

छाजन की दवा

- पीपल की छाल का कपड़छन चूर्ण करके रखें। छाजन सूखी हो तो नारियल के तैल में मिला कर उस पर लगावें। यदि गीला छाजन हो तो उस पर, इस चूर्ण को पाउडर के समान बुरकना चाहिये।
- मोम, सिन्दूर और राल 10-10 ग्राम तथा महुए का तैल 100 ग्राम लेकर यथा विधि मरहम बनावें।

पहिले छाजन को आकाशबेल (अमरबेल) के क्वाथ से धोये और फिर यह मरहम लगावें। छाजन शीघ्र नष्ट हो जायेगी।

- रीठा की छाल, सड़ा हुआ गोला, नारियल, सड़ी- गली सुपारी, प्रत्येक 50 ग्राम, तिली का तैल सब से दुगुना और पानी तैल से चौगुना। सब द्रव्यों को पानी के साथ पीसें और पानी में घोल कर तैल के साथ मंदाग्नि पर पकावें। जब पानी जल कर तैल मात्र रह जाय तब छान लें। इस तैल के मलने से छाजन, दाद, खुजली, चकत्ते, फोड़ा- फुन्सी आदि सभी चर्म रोग नष्ट होते हैं।

फोड़े- फुन्सी आदि पर बिरोजा का मरहम

गीला गन्धा बिरोजा 200 ग्राम, सफेदा काशगरी 10 ग्राम, जंगाल 6 ग्राम, भुनी हल्दी का चूर्ण 4 ग्राम, सेंधा नमक 2 ग्राम, भुना तूतिया आधा ग्राम।

बिरोजे को गर्म करके वस्त्र में छानें, तत्पश्चात् उसमें जंगाल आदि सभी द्रव्य महीन करके डालें और मिला कर 5 मिनट तक अग्नि पर रख कर लकड़ी के डंडे से चलावें और उतार कर रखें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

यह मरहम सभी प्रकार के फोड़ा- फुन्सी, बालतोड़, पीले मुख वाली अन्य प्रकार की अधिक फुन्सियों को मिटाने में बहुत उपयोगी है। यदि फोड़ा आदि कच्चा है, पूय- स्राव नहीं होता है तो वह इसके लगाने से बैठ जायेगा। यदि पक गया है, तो फूट कर ठीक हो जायेगा। इस मरहम को स्वच्छ वस्त्र पर लगा कर फोड़ा आदि पर चिपका दें। आवश्यक होने पर कपड़े पर मरहम लगा कर गर्म कर सकते हैं।

अथवा इस कटुफलादि लेप का प्रयोग करें —

कायफल का चूर्ण 10 ग्राम को ढाई गुने गोमूत्र के साथ पकावें और कुछ गाढ़ा होने पर उतार लें। किसी महीन वस्त्र पर इस दवा को गर्म- गर्म फैला कर लगावें और फोड़ा- फुंसी, बालतोड़ आदि पर चिपका कर बाँध दें। इसके लगाने से व्रणादि में तुरन्त लाभ होता है। कच्ची फुन्सी आदि बैठ जाती है। यदि पक गई हो तो फूट कर ठीक हो जाती है। पीड़ा भी शीघ्र शान्त होती है।

फोड़ा आदि पर अन्य मरहम

सफेद राल, सफेद कत्था, तिल का तैल और शर्करा युक्त मीठा पानी शर्वत 4-4 भाग, सफेद फिटकरी 1 भाग लें।

पानी में शर्करा डाल कर शर्वत तैयार कर लें। उसी शर्वत में तैल मिला कर पर्याप्त फेंटना चाहिये। राल और कत्था को कपड़छन चूर्ण करके, उसी में मिला दें। उत्तम मरहम तैयार होगी।

यह मरहम भी स्वच्छ वस्त्र पर फाया बना कर उस लगावें और फोड़ा आदि पर चिपका दें। फाये के मध्य में पूय निकलने के लिये एक छेद कर दें। जब तक फाया स्वतः न हटे, तब तक हटाने का प्रयत्न न करें। घाव या व्रण को नीम के क्वाथ से धोकर मरहम लगाना अधिक लाभकारी होता है।

सभी प्रकार के रोगों पर अर्क - उसवा

उसवा, नीम की निबौली, नीम की छाल, श्वेत चन्दन चूरा, लाल चन्दन चूरा, मेंहदी के पत्र, वकायन की मिंगी, कचनार की छाल, गुलाब के पुष्प, धनिया, गूलर की छाल, गिलोय, पुष्प- नीलोफर, उन्नाव, चोबचीनी, घमरा का चांग, वकायन की छाल, मौलश्री, यवासा तथा कासनी के पत्र 50-50 ग्राम, मुण्डी 400 ग्राम, शीशम का बुरादा और चिरायता 200-200 ग्राम। सबको जौकुट करके 8 गुने पानी में, रात्रि में भिगोवें तथा प्रातःकाल भवके द्वारा अर्क खींच लें। यदि 3 दिन तक पानी में भिगोये रखने के पश्चात् अर्क खींचें तो अधिक गुणकारी बनेगा।

मात्रा — 12 मि.ली. से 30 मि.ली. तक शहद मिला कर प्रातः- सायं सेवन करें। इससे दाद, खाज, छाजन, कुष्ठ, उपदंश, मूत्रकृच्छ आदि सभी चर्म रोगों में आशातीत लाभ होता है।

पाँवों में बिवाई (पाददारी) फटने की दवाएँ

- राल और सेंधा नमक समान लेकर चूर्ण करें तथा उसे शहद और घी के साथ मिलाकर पर्याप्त मन्थन करें। फिर इसमें सरसों का तैल मिला कर रखें।

फटी हुई बिबाई पर इसका लेप करने से शीघ्र लाभ होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- गुड़, सेंधा नमक, इमली और घृत 1-1 भाग मिला कर पीसें और दुगुना गोमूत्र मिला कर फटी हुई बिबाई पर लगावें। यह भी उत्तम दवा है।
- पोई का साग, सरसों, नीम की छाल, केले के मध्य का डंडा, कुम्हड़ा और ककड़ी समान भाग लेकर भस्म कर लें। इसके साथ सेंधा नमक पीस कर मिलावें और कल्क करके यथाविधि तैल सिद्ध करें। इसे मलने से भी बिवाई में शीघ्र लाभ होता है।
- यदि पाँव में कंकड़- काँटा आदि लगने से वहाँ गाँठ बन जाय और उसमें दर्द हो तो हरड़ को हल्दी के स्वरस में घिस कर लेप करने से लाभ होता है। अथवा उस गाँठ पर सरसों का तैल गर्म करके मलें और पोटली में नमक बाँधकर, उससे सेंक करें।
- कुनख रोग- नख के फटने, टूटने, टेढ़े होने या वहाँ कट जाने पर उसमें सुहागे का चूर्ण भर देना चाहिये।
- नीम के क्वाथ से कटे, फटे, क्षत या व्रण स्थान को धोने से बहुत लाभ होता है। फिर उस पर हल्दी चूर्ण को घृत में मिला पर लगाना चाहिये।

श्वित्र, श्वेत कुष्ठ या ल्यूकोडर्मा पर औषधियाँ

- बावची, सरसों, श्वेत चोंटनी, रेणुका, हल्दी, हाथी दाँत, काले तिल और शुद्ध गन्धक समान भाग लेकर, कूट- कपड़छन करें और भाँगरे के स्वरस में 1 दिन भर घोट कर 1-1 ग्राम की गोलियाँ बना कर छाया में सुखा लें।

यह गोली गोमूत्र के साथ घिस कर दिन में 2-3 बार लगाते रहने से कुछ दिनों में ही सफेद दाग मिट जाते हैं। यह योग नवीन श्वित्र में आशातीत लाभकारी है।

- **खाने की औषधि** — पाव भर बावची जौकुट करके गौमूत्र में भिगोवें। नित्यप्रति पहला मूत्र फेंक दें और नया मूत्र बदलें। इस प्रकार 21 दिनों तक गोमूत्र में भिगोने के पश्चात् चना के समान गोलियाँ बना कर रखें।

मात्रा — 1 से 2 गोली तक शहद के साथ प्रातः- सायं सेवन करनी चाहिये। इस प्रयोग को 3-4 मास तक निरन्तर, धैर्य पूर्वक सेवन करना होता है, तभी लाभ हो सकता है। वैसे यह योग श्वेत कुष्ठ के लिये अत्युत्तम है।

- आँवला और कत्था का क्वाथ, शहद डाल कर पीने से श्वेत कुष्ट नष्ट हो जाता है। यदि आँवला और कत्था के क्वाथ में बावची का चूर्ण भी मिला लें तो बहुत लाभकारी होता है।
- श्वेत जयन्ती, अरनी की जड़ गोदुग्ध में पीस कर तथा गोदुग्ध में ही घोल कर पीना चाहिये।
- बावची के बीजों का चूर्ण 1 ग्राम की मात्रा में गर्म पानी के साथ नित्यप्रति पीने से श्वेत कुष्ठ तथा अन्य प्रकार के कुष्ठ भी नष्ट हो जाते हैं। पथ्य में घृत का भोजन अधिक करना चाहिये।
- मैनसिल और अपामार्ग की भस्म का पानी के साथ लेप करने से श्वित्र में शीघ्र लाभ होता है।
- करंज, मदार, थूहर और अमलताश के पुष्प तथा पत्ते गोमूत्र के साथ पीस कर लेप करने से भी श्वेत कुष्ट, दाद, व्रण, नासूर आदि चर्म रोग दूर हो जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- बावची के बीज 12 ग्राम, हरताल 3 ग्राम लेकर गोमूत्र के साथ पीस कर लेप करें। इससे भी श्वेत कुष्ठ शीघ्र मिट कर विवर्णता दूर हो जाती है।

कुष्ठ रोगों में औषधियाँ

- देह (पूरे शरीर) पर तैल लगा कर, निम्न मिश्रण का उबटन करने से सब प्रकार के कुष्ठ रोग दूर होते हैं —
- अमलताश, कनेर और मकोय के पत्ते समान भाग लेकर मट्ठे के साथ पीसें और उबटन लगावें।
- कसौदी की जड़ को काँजी के साथ पीस कर लेप करने से कुष्ट, दाद तथा अन्य चर्म रोग दूर होते हैं।
- वायविडंग, हरड़, सेंधा नमक, बावची के बीज, सरसों, करंज और हल्दी समान भाग को गोमूत्र के साथ पीस कर लेप करने से कुष्ठ नष्ट हो जाता है।
- चालमूँगरा के तैल को मलने से कुष्ठ, श्वेत कुष्ठ तथा अन्यान्य चर्म रोग शीघ्र दूर हो जाते हैं।

कुष्टादि पर लघुमंजिष्ठादि क्वाथ

मंजीठ, हरड़, बहेड़ा, आमला, कुटकी, वच, दारुहल्दी और नीम की छाल, सब मिला कर 2 तोले, क्वाथ को पानी 32 तोले, अवशिष्ट क्वाथ 8 तोले। यथा विधि क्वाथ करके पीवें। इससे सब प्रकार के कुष्ठ, मण्डलकुष्ठ, श्वित्र, पामा, विसर्प तथा दाद प्रभृति, सभी चर्म रोग मिट जाते हैं।

नाड़ीव्रण या नासूर पर औषधियाँ

- दारुहल्दी का चूर्ण थूहर और आक के दूध के साथ बत्ती बना कर गुदा के नासूर में रखने से शीघ्र लाभ होता है।
- यदि नाडी- ब्रण अधिक वेदनायुक्त हो, पक न रहा हो तो उस पर चौलाई के पत्तों की पुल्टिस बाँधनी चाहिये।
- ग्वारपाठे का गूदा अग्नि में पका कर बाँधने से भी नासूर या दुष्ट फोड़ा पक जाता है।
- बहुत बहने वाले (पूयस्रावी) फोड़े या नासूर पर नीम की छाल की भस्म लगानी चाहिये।
- पीपल की छाल का चूर्ण बुरकने से भी पूयस्रावी फोड़ा शीघ्र भरता है।
- नीम के पत्ते और बेर के पत्ते पीस कर कल्क करें। उसे लगाने से भी नासूर तथा फोड़ा दूर होता है।
- आग से जले घाव में इमली की छाल का चूर्ण घृत के साथ मिला कर लगाना चाहिये।
- ईंगुर (बंगाल में जिसकी बिन्दी लगाते हैं), 10 ग्राम और उससे अठगुनां अलसी का तैल मिला कर मन्दाग्नि पर पकावें। जब ईंगुर जल कर काला हो जाय तथा तैल गाढ़ा हो जाय, तब उतार कर, ठण्डा होने पर चौड़े मुख के कलईदार या शीशे के पात्र में रखें।

इसे स्वच्छ वस्त्र के ऊपर लगा कर व्रण पर चिपका दें। नासूर के भीतर से पीव निकलता रहेगा और घाव सूखने लगेगा। कपड़ा हट जाये तो दूसरा बदल दें। न हटे तो पीव को ऊपर से पोंछते रहें। इससे सब प्रकार के नाड़ी व्रण, दुष्ट व्रण, घाव आदि अवश्य दूर हो जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- श्वेत एरण्ड का गोंद और कत्था समान भाग लेकर लगाने से नाड़ीव्रण नासूर ठीक होता है।
- वायविडंग, पिप्पली और त्रिफला का चूर्ण शहद के साथ सेवन करने से सब प्रकार के फोड़े, नासूर, कुष्ट, भगन्दर तथा कृमि रोग दूर हो जाते हैं।

नासूर पर सप्तांग गूगल

गूगल, हरड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ, काली मिर्च और छोटी पीपल समान भाग का कूट- कपड़छन किया चूर्ण घी के साथ मिला कर सेवन करना चाहिये। इससे नासूर, दुष्ट व्रण, वेदना युक्त घाव, भगन्दर आदि सभी रोगों में लाभ होता है।

व्रणशोथ नाशक औषधियाँ

- बिजौरे की जड़, अरणी की छाल, देवदारू, सोंठे, अहिंस्रा और रास्ना समान भाग, पीस कर लेप करने से व्रण के साथ बादी की सूजन हो तो वह शीघ्र दूर होती है।
- यदि पित्त- दोष की अधिकता से सूजन वाला फोड़ा या घाव हो तो उस पर अजवाइन, असगन्ध, हिंस्रा, चीड़, निशोथ और कांकड़ासिंगी को पानी के साथ पीस कर लेप करें।
- पुनर्नवा, देवदारु, सहजना, दशमूल, सोंठ समान भाग को पीसकर कफजन्य सूजन वाले व्रण पर लेप करने से लाभ होता है।
- असगन्ध, कुटकी, लोध, कटफल, मुलहठी, मंजीठ और धाय के फूल को पीस कर लेप करने से व्रण का रोपण होता है तथा सूजन भी नष्ट हो जाती है।

गलग्रन्थि या कण्ठमाला रोग

रोगी कण्ठ में बाहरी ओर छोटी- छोटी गाठें या गिल्टियाँ उत्पन्न होकर, धीरे- धीरे बढ़ती और बेर की गुठली जैसे आकार की हो जाती हैं। यह ग्रन्थियाँ ठोस होती हैं, इनमें दबाने पर भी किसी प्रकार की पीड़ा प्रतीत नहीं होती। शरीर के अन्य स्थानों, जाँघों की सन्धियों, काखों तथा कान के पास भी दिखाई दे जाती हैं। कभी- कभी पकने पर, इनसे पूय- स्राव भी होने लगता है।

आरम्भ में यह रोग बहुत साधारण- सा प्रतीत होता है, किन्तु बढ़ जाता है, तब उसकी भयानकता का अनुमान होता है। रात्रि में पसीना, कानों का पकना, उनमें पीड़ा के साथ पूय- स्राव, दाँतों में कृमियों के कारण पायरिया जैसी स्थिति, हृदय का विशेष रूप से धड़कना, कब्ज, क्षुधानाश, अपच तथा जुकाम- खाँसी और रोग बढ़ने पर ज्वर की उपस्थिति आदि लक्षण देखे जाते हैं। कण्ठमाला के निवारणार्थ कुछ औषधोपचार प्रस्तुत हैं —

कण्ठमाला नाशक वटी

शुद्ध गन्धक, शुद्ध पारद, लौह भस्म, वरुण (बन्ना) का घनसत्व, नीम का घनसत्व, विष्णुकान्ता का घनसत्व और कचनार का घनसत्व 6-6 ग्राम, श्वेत इलायची के दाने, दालचीनी, तेजपात और चाँदी की भस्म 3-3 ग्राम, मुक्तापिष्टी 2 ग्राम और स्वर्ण भस्म 1 ग्राम। गन्धक- पारद की कज्जली करें। एक- एक कर सभी भस्म और घनसत्व डाल कर खरल करें। सभी काष्ठौषधियों का कपड़छन चूर्ण मिलावें और क्रमशः वरुण स्वरस की 7, मुण्डी स्वरस की 3 और कांचनार पुष्प के स्वरस की 1 भावना देकर 1-1 रत्ती की गोलियाँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बनावें और छाया में सुखा कर रखें।

मात्रा —1-1 गोली प्रातः- सायं शुण्ठयादि अर्क के साथ सेवन करायें। इससे कण्ठमाला शीघ्र नष्ट होती है। यह औषधि क्षयरोग में भी हितकर है।

कण्ठमाला पर अव्यर्थ रसायन

शुद्ध गन्धक, शुद्ध पारद, शुद्ध विष, ताम्र भस्म और सेंधा नमक 3-3 ग्राम, लौह भस्म और अभ्रक भस्म, प्रत्येक 15 ग्राम, स्वर्ण भस्म 2 ग्राम लेकर गन्धक- पारद की कज्जली करें और उसमें 1-1 द्रव्य, भस्मादि डाल कर, लोहे के खरल और लोहे की मूसली से ही घोटें और सँभालू पत्र स्वरस में 12 घंटे खरल करें। अब इसमें 3 ग्राम काली मिर्च का महीन चूर्ण डाल कर उक्तस्वरस से घोटने के पश्चात् सुखावें तथा कांचनार के स्वरस की और फिर वरुण के स्वरस की क्रमशः 1-1 भावना देकर, अन्त में पुनः सँभालू स्वरस की भावना देकर 1-1 रत्ती प्रमाण गोलियाँ बनावें और छाया में सुखा कर रखें।

मात्रा — 1-1 गोली प्रातः सायं गाजवाँ के अर्क, काँचनार स्वरस, पान के स्वरस अथवा पानी के साथ यथा लक्षण देनी चाहिये। यह गोली कण्ठमाला और उसके उपसर्गों को शीघ्र नियन्त्रण में लाती है। ग्रन्थियों पर अनुकूल प्रभाव डालती है, विष प्रभाव, ज्वर, धातु ज्वर, क्षय, प्रदाह, यकृत, प्लीहा, गुल्म, खाँसी, श्वास तथा उदर रोगों को भी दूर करती है।

कण्ठमाला पर एक उत्तम योग

कड़वी तुम्बी (कड़वी घिया) 250 ग्राम लेकर सिल पर पीसें और उस कल्क को 1 लीटर रेक्टीफाइड स्प्रिट में डाल कर 1 महीने तक कड़ी कार्क वाली बोतल में बन्द करके रखें तथा एक 1 मास के पश्चात् छान कर सुरक्षित रखें।

यह अरिष्ट शरीरस्थ विष प्रभाव को दूर करने में सहायक है। इसकी मात्रा 60 बूँद तक है, जो कि 25 मि.लि. सारिवाद्यासव के साथ, समान भाग पानी मिला कर देनी उचित है। इसका सेवन अन्य औषधियों के अनुमान रूप में भी किया जाता है।

कण्ठमाला पर काञ्चनार गुटिका

त्रिफला 3 भाग, त्रिकुटा 6 भाग, कचनार की छाल 10 भाग और सब के बराबर शुद्ध गूगल लेकर ठीक प्रकार से चूर्ण करें और उसमें 30 भाग शहद मिला कर घुटाई करें। और फिर 3-3 रत्ती की गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1-1 रत्ती प्रातः- सायं काञ्चनार क्वाथ के साथ या गुनगुने दूध के साथ सेवन करावें। कण्ठमाला, गलगण्ड तथा नासूर आदि में भी उत्तम है।

गण्डमालानाशक कण्डन रस

शुद्ध पारद 1 तोला, शुद्ध गन्धक 6 माशे, ताम्रभस्म डेढ़ तोला, मण्डूर भस्म 3 तोले, त्रिकुटा 6 तोले, सेंधा नमक 6 माशे, कचनार छाल का चूर्ण 12 तोले तथा शुद्ध गूगल 12 तोले लेकर, प्रथम गूगल को ओखली में डाल कर गाय के घी का हाथ फेर कर कूटें। जब वह कूटते- कूटते पतला हो जाय, तब उसमें थोड़ा- थोड़ा चूर्ण उक्तऔषधियों का डाल कर मिलावें। जब बिल्कुल मिल जाय, तब 1-1 माशे की गोली बनावें।

मात्रा — रोगी का बलाबल देखकर काचनार और वरुणादिगण के क्वाथ के साथ दें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
इससे गलगण्ड, गण्डमाला, अपची, व्रणादि दूर होते हैं।

कण्ठमाला पर अन्य सामान्य योग

- गोरखमुण्डी के पत्तों का स्वरस शहद के साथ मिलावें।
- भैंस मूत्र में मण्डूर को डाल कर मिट्टी के पात्र में 1 मास तक रखें और फिर उसकी अन्तर्धूम भस्म करें और शहद के साथ चटावें।
- कायफल का चूर्ण गले की गिल्टियों पर घिसें।
- श्वेत विष्णुकान्ता मूल का चूर्ण गो- घृत के साथ सेवन करावें।
- जलकुम्भी की भस्म को गोमूत्र के साथ पका कर छानें और उचित मात्रा में सेवन करावें। पथ्य में कोदों का भात खिलावें।
- सामान्यतः जौ, मूँग, परवल आदि का सेवन कण्ठमाला में लाभकारी होता है।

उक्त सभी योग शास्त्रीय हैं।

कण्ठमाला में शुण्ठ्यादि अर्क

सोंठ 300 ग्राम, गूलर के फल, इन्द्रायण के फल और कालीमिर्च 100-100 ग्राम, श्वेत चन्दन, रक्त चन्दन, मकोय और मुण्डी, प्रत्येक 60 ग्राम, इन्द्रायण की जड़ 5 ग्राम तथा केशर 3 ग्राम लेकर, काष्ठौषधियों को जौकुट करें और केशर मिला कर पहिले दिन 20 लीटर पानी में भिगोवें और दूसरे दिन भवके से अर्क खींच लें।

इस अर्क की मात्रा 50 मि.ली. तक है, इसमें 20 ग्राम शहद मिला कर सेवन करायें। अन्य औषधि के साथ अनुपान रूप में देने को अधिक उपयुक्त है।

कण्ठमाला में सामान्य औषधोपचार

- विष्णुकान्ता- मूल पुष्य नक्षत्र में तोड़ कर लावें। इसे छाया में सुखा कर चूर्ण करें। यह चूर्ण 10 ग्राम तथा उतनी ही बकरी के सींग की भस्म मिला कर रखें।

मात्रा — 2 से 5 ग्राम तक गाय के मक्खन के साथ प्रातः- सायं सेवन करायें। ऊपर से गाय का गुनगुना दूध पिलावें।

बकरी के सींग की भस्म, आरने उपलों की अग्नि में सरलता से बनाई जा सकती है।

- सिरस के बीजों का कपड़छन चूर्ण 10 ग्राम, शहद 20 ग्राम के साथ मिला कर, काँच के बर्तन में रखें और 15 दिन तक धूप दिखावें। तत्पश्चात् व्यवहार में लें।

मात्रा — 5 से 10 ग्राम तक नित्यप्रति प्रातःकाल सेवन करावें और ऊपर से मिश्रीयुक्त दूध पिला दें। कण्ठमाला के शमन में सस्ता, सरल और उत्तम योग है।

- कांचनार गुग्गल, इस रोग की बहुत लाभकारी औषधि है। उसे रोगी के बलानुसार मात्रा में प्रातः- सायं सेवन करायें। अनुपान में हरड़, मुण्डी, कचनार की छाल और विजयसार का क्वाथ, शहद मिला कर देना चाहिये।
- सारिवाद्यासव, खदिरारिष्ट आदि का सेवन भी इस रोग में हितकर है।
- रोगी अधिक दुर्बल हो गया हो तो उसे मुक्तायुक्त योग, स्वर्ण पर्पटी, वसन्त मालती आदि में से कोई औषधि देनी चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कण्ठमाला की गिल्टियों पर मरहम

मोम 50 ग्राम, शुद्ध गन्धक 25 ग्राम, फुलाया सुहागे का चूर्ण 12 ग्राम, नारियल का तैल 200 ग्राम लेकर प्रथम नारियल तैल को मन्दाग्नि पर चढ़ावें और मोम भी डाल दें। जब मोम पिघल जाये तब सुहागे का चूर्ण डालें। इससे झाग उठेंगे तभी गन्धक डालकर करछुल से घोंटते जायें। गन्धक भी गल जाय, तब उतार कर उसे निरन्तर घोटें। यदि कम घोटेंगे तो गन्धक जम सकती है। घोटते रहने से गन्धक मोम और तैल में सात्म्य हो जाती है, तब मरहम में मुलायमी बनी रहती है।

तैल और मोम आदि गलाने की सब क्रिया पीतल के पात्र में करनी चाहिये। करछुल भी पीतल का हो। सामान्य गाँठों के लिये यह मरहम उपयोगी है। कण्ठमाला में प्रयोगार्थ निम्न प्रकार मिश्रण कर लें —

शुद्ध पारद (हिंगुलोत्थ) 1 भाग लेकर उसमें चौगुनी खड़िया मिट्टी मिला कर खरल में तब तक घोटते रहें, जब तक कि पारद के अंश दिखाई देते रहें। पारद अदृश्य हो जाने पर, इस चूर्ण का 1 भाग चौनुनी उपर्युक्त मरहम के साथ मिला कर, कांस्य- पात्र में डालें और नीम के डंडे से निरन्तर घुटाई करें। जब घोटते- घोटते उसका रंग बदल कर कालापन युक्त सिलेटी हो जाय, तब समझें कि कण्ठमाला के लिये उपयुक्त मरहम तैयार हो गई।

गिल्टियों पर सरल लेप

सरसों, सहजने की बीज, सन के बीज, अलसी के बीज, जौ और मूली के बीज लेकर खट्टी छाछ के साथ पीसें और गिल्टियों पर लेप करें। अथवा अण्डी की जड़ को चावलों के पानी के साथ पीस कर लेप करें।

पके हुए कुम्हड़े के स्वरस में विड़ नमक और सेंधा नमक मिला कर नस्य लेने (सूँघने) से नवीन कण्ठमाला में शीघ्र लाभ होता है।

सूरजमुखी और लहसन पीस कर पुल्टिस बाँधने से कण्ठमाला की गिल्टियाँ पक कर फूट जाती हैं और तब वह रोग शीघ्र शान्त हो जाता है।

28. गठिया आमवात के औषधोपचार

गठिया रोग के लक्षण

यह रोग अत्यन्त कष्टदायक है। इसमें हाथ- पाँव, घुटने, कन्धे, उदर आदि के साथ शरीर के विभिन्न सन्धि स्थानों में पीड़ाकारी शोथ उत्पन्न हो जातीं है। अंग पीड़ा के साथ पाचनतन्त्र ठीक से कार्य नहीं करता, इसलिये अग्निमान्द्य, अरुचि, आलस्य, मुख से पानी जाना, स्वाद बिगड़ना, दाह, प्यास, बहुमूत्र, शूल, अनिद्रा, वमन, कब्ज और रोग बढ़ने पर ज्वर भी हो सकता है। प्रौढ़ावस्था के पश्चात् इसकी उत्पत्ति अधिक लोगों में देखी जाती है, किन्तु विरुद्ध आहार- विहार के कारण आबाल वृद्ध स्त्री- पुरुष सभी में इसका प्रकोप पाया जाता है।

आयुर्वेद में इस रोग को दूर करने के लिये अनेक औषधि- योग उपलब्ध हैं। यदि उनका उचित रूप से, लक्षणानुसार प्रयोग किया जाय तो रोग निवृत्ति अवश्य हो सकती है। यदि रोग नवीन हो तो साधारण औषधियों से कार्य लेना चाहिये। रोग के पुराने या अधिक कष्टकारी होने की स्थिति में विशिष्ट, बहुमूल्य रस, भस्मादि मिश्रित योगों से काम लेना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

आवश्यक होता है। चिकित्सा धैर्य पूर्वक करते रहने पर नैराश्य का कोई कारण नहीं है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आमवात पर सामान्य औषधियाँ

- वरुण की छाल का क्वाथ मधु मिला कर सेवन करावें।
- गोखरू का चूर्ण 3 ग्राम लें और पानी के साथ या गर्म दूध के साथ दें।
- नागरमोथा का चूर्ण 3 ग्राम की मात्रा में उचित अनुपान से दें।
- पिप्पली, पीपलामूल, चव्य, चीता और सोंठ के समान झाग, सब मिलाकर 10-15 ग्राम लें, उसे 3 लीटर पानी के साथ उबालें और उतार कर ठण्डा होने पर छान लें। थोड़ा- थोड़ा यह पानी दिन में कई बार पीने से बहुत लाभ होता है। रोगी को कच्चा पानी न पीने दें।
- हरड़ का चूर्ण 1 ग्राम, एरण्ड तैल के साथ सेवन करने से आमवात और गृध्रसी में भी लाभ होता है।
- सोंठ का चूर्ण 1 ग्राम लेकर काँजी के साथ पिलावें।
- सोंठ, निशोथ और सेंधा नमक का चूर्ण 1-2 ग्राम की मात्रा में काँजी के साथ दें।
- अमलताश के पत्ते, सरसों के तैल में तल कर रखें। इन्हें भोजन के साथ खाने से नवीन आमवात नष्ट होता है।
- एरण्ड- तैल (कैस्टर आइल) का प्रयोग आमवात में बहुत लाभकारी है। इसे 1 से 2 तोले तक की मात्रा में दूध अथवा गर्म जल के साथ प्रयोग करें।
- एरण्ड- तैल को दशमूल क्वाथ के साथ पीना बहुत हितकर है। क्योंकि एरण्ड- तैल कटिशूल, कुक्षिशूल, वास्तविक शूल तथा सन्धिशूल को नष्ट करने में शीघ्र प्रभावकारी होता है।
- **रास्नापंचक** — रास्ना, गिलोय, देवदारु, एरण्डमूल और सोंठ समान भाग सब मिला कर 2 तोले का क्वाथ सन्धि, मज्जा, अस्थि में प्राप्त तथा सर्वांग में स्थित आमवात को दूर कर देता है।
- **रास्ना सप्तक** — रास्ना, गिलोय, अमलताश का गूदा, देवदारू, गोखरू, एरण्डमूल और पुनर्नवा, सब मिलाकर 2 तोले, आधा सेर जल के साथ क्वाथ करें तथा आधा पाव शेष रहने पर उतारें और इसमें सोंठ का चूर्ण 1 माशे तक डाल कर पिलावें। इससे जंघा, अरु. पार्श्व, त्रिक और पीठ के दर्द युक्त आमवात दूर होता है।
- **रास्नादि दशमूल** — दशमूल, गिलोय, एरण्डमूल, रास्ना, सोंठ और देवदारु सब मिला कर 2 तोले, का क्वाथ बनाकर उसे एरण्ड तैल के साथ पिलाने से सब प्रकार का आमवात दूर होता है।
- **रास्नादि क्वाथ** — रास्ना, एरण्डमूल, शतावरी, पियाबांसा, धमासा, अडूसा, गिलोय, देवदारु, अतीस, हरड़, नागरमोथा, कचूर और सोंठ सब मिला कर 2 तोले, लेकर जौकुट करें और 32 तोले पानी के साथ चौथाई शेष क्वाथ करें। अर्थात् जब 8 तोले जल शेष रहे, तब उतारें और एरण्ड तैल मिला कर रोगी को पिलावें। इससे जंघा, उरु, त्रिक- सन्धि, पसली, पीठ, उदर तथा कुक्षिगत वात वेदनायुक्त गठिया रोग नष्ट होता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

है।

- **शुण्ठ्यादि क्वाथ** — कचूर, सोंठ, हरड़, वच, देवदारु, अतीस और गिलोय सब मिला कर 2 तोले को 32 तोले पानी के साथ चतुर्थांश शेष क्वाथ करें। आमवात के पाचन में यह क्वाथ अधिक उपयोगी है।
- **विरेचनार्थ त्रिवृत चूर्ण** — आमवात के रोई को कब्ज- मुक्त रखने के लिये आरम्भ में और कभी- कभी बीच में भी विरेचन जुलाब की आवश्यकता होती है, उसके लिये निशोथ को कूट- छान कर, निशोथ के ही क्वाथ की सात दिनों तक भावना दें और छाया में सुखा कर रखें। इसे 1 से 3 माशे तक की मात्रा में बलाबल के अनुसार काँजी के साथ पिलाना चाहिये।
- **आमवात में स्वेदन** — बालू को पोटली में बाँधकर गर्म करें और रूक्ष स्वेदन दें। इससे पसीना आकर, रोग का वेग कम होता है।
- आमवात में अति लाभकर शंकर स्वेदन — बिनौला, कुलथी, तिल, जौ, एरण्डमूल, अलसी और सन के बीज इन सबको काँजी में भिगोकर दो पोटलियाँ बनायें। फिर एक हाँडी में अग्नि रख कर, हाँडी के मुख पर छेदयुक्त ढकना ढकें। जब झाग निकलने लगे तब उस पर पोटलियों को गर्म करके रुग्ण अंगों को सेंकें। इस प्रकार स्वेदन करने से कूर्पर (कुब्ब) उदर, सिर, स्फिक, हाथ, पाँव, टखने, अंगुली, कमर आदि की आमवातिक वेदना शान्त हो जाती है।
- उपर्युक्त औषधि- द्रव्यों में से जितने मिलें, उतने ही ले लें। अधिक द्रव्यों की आवश्यकता न होने पर, उनमें से किसी एक द्रव्य को ही रोग के लक्षणानुरूप पोटली बनाने में प्रयुक्त करना चाहिये।
- **आमवात पर हिंस्रादि लेप** — छोटी कटेरी, केउआँ, सहजने की जड़ तथा वामी की मिट्टी समान भाग को गोमूत्र के साथ पीस कर दर्द वाले अंगों पर लेप करने से वेदना शान्त होती है।
- **आमवात पर शतपुष्पादि लेप** — सोंफ, बच, सहजने की छाल, गोखरू, वरुण की छाल, खिरेंटी, पुनर्नवा, कचूर, सम्प्रसारिणी, जयन्ती की फली और हींग समान भाग को सिरका अथवा काँजी के साथ पीस कर किंचित गर्म करके लेप करें। सब प्रकार की आमवातिक पीड़ा को शीघ्र दूर करता है।
- सोंफ, वायविडंग, कालीमिर्च और सेंधा नमक समान भाग का चूर्ण गर्म पानी के साथ फाँकें। मात्रा 3 माशे तक।
- हींग 1 भाग, चव्य 2 भाग, विड नमक 3 भाग, सोंठ 4 भाग, छोटी पीपल 5 भाग, काला नमक 6 भाग और पुष्कर मूल 7 भाग का चूर्ण 3 माशे तक की मात्रा में गर्म जल से लें।
- श्वेत पुनर्नवा, गिलोय, सोंठ, सोया, विधायरा, कचूर और गोरखमुण्डी समान भाग का चूर्ण, 3 माशे तक की मात्रा में काँजी अथवा गर्म जल के साथ फंकी लेनी चाहिये। इससे आमवात, आमाशयिक वात तथा गृध्रसी आदि में शीघ्र लाभ होता है। यह आयुर्वेद का पुनर्नवादि चूर्ण है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- सेंधा नमक और अजवाइन 2-2 भाग; अजमोद 3 भाग अजमोद के अभाव में 3 भाग अजवाइन ही और ले लेनी चाहिये, सोंठ 5 भाग और बड़ी हरड़ 12 भाग लेकर कपड़छन चूर्ण करें। इसे भी 3 माशे तक की मात्रा में काँजी, दही का तोड़, मट्ठा, गर्म जल अथवा घृत के साथ उपसर्गानुसार सेवन करावें।
- यह आमवात, वस्तिशूल, गुल्म, हृद्रोग, प्लीहा, ग्रन्थिशोथ, अफरा, कब्ज, हाथ- पाँव आदि में दर्द युक्त वातजन्य रोग दूर करता है।
- बड़ी हरड़, सोंठ और अजवाइन समान भाग का चूर्ण 3 माशे तक, तक्र, काँजी या गर्म पानी के साथ दें। आमवात. शोथ, मन्दानि, पीनस, कास, स्वरभंग, अरुचि आदि में उपयोगी है।

आमवात पर योगराज गुग्गुलु

चित्रकमूल, पीपलामूल, वायविडंग, अजवाइन, अजमोद, कलौंजी, देवदारु, चव्य, इलायची के दाने, रास्ना, कूट, गोखरू, धनिया, सेंधा नमक, त्रिफला, नागरमोथा, त्रिकुटा, तेजपात, दालचीनी, तालीशपत्र, खस और जवाखार समान भाग लेकर कूटें और कपड़छन कर लें। इस चूर्ण के वजन के समान वजन में गूगल लें और उसे गाय का घी लगा- लगा कर बहुत कूटें तथा धीरे- धीरे चूर्ण मिलाते हुए भी घी के साथ घोट कर घी के चिकने बर्तन में रखें। इसकी मात्रा रोग की अवस्था तथा रोगी का बलाबल देखकर निश्चित करें। सामान्यतः 1 ग्राम से 2 ग्राम तक पर्याप्त है। इसका सेवन गर्म जल से करायें। आमवात में अद्वितीय है। अन्य वात रोग, ऊरुस्तम्भ, अफरा, दुष्टव्रण, गुल्म, अर्श, अस्थिगत या मज्जागत वात में भी बहुत हितकर है।

आमवात पर सरल योग

वासा पत्र स्वरस 1 तोला को गोघृत 1 तोला के साथ मिला कर, उसमें हरताल भस्म 1 रत्ती डालें। आमवात के रोगी को यह दवा प्रातः- सायं सेवन करानी चाहिये। इसके सेवन से आमवात की सूजन तथा दर्द में शीघ्र लाभ होता है। खाँसी हो तो उसे भी दूर करता है। औषधि- सेवनकाल में रोगी को दूध या घी के साथ रोटी आदि देनी चाहिये।

आमवात पर अजमोदादि वटक

अजमोद, कालीमिर्च, छोटी पीपल, वायविडंग, देवदारु, चित्रकमूल, पीपलामूल, सौंफ और सेंधा नमक प्रत्येक 4 तोले, सोंठ और विधायरा के बीज आध- आध सेर तथा हरड़ पावभर लेकर कूट- छान कर रख लें और इक चूर्ण के समान भाग गुड़ में मिला कर 2-2 माशे के वटक बना लें। वटक बनाने के लिये गुण की चाशनी करके उसमें चूर्ण मिलाना चाहिये।

मात्रा — 1 से 2 वटक तक अथवा बलाबलानुसार अधिक भी गर्म पानी के साथ या लक्षणानुसार अन्य उचित अनुपात के साथ सेवन करायें। इससे आमवात और आमवात जन्य अन्यान्य उपसर्गों में शीघ्र लाभ होता है। उग्र गृध्रसी, कटिशूल, वस्तिशूल, गुदा, अस्थि, जंघा आदि की तीव्र पीड़ा तथा सन्धि शूल आदि में अत्यन्त हितकर है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

द्वितीय खण्ड

स्त्री रोगों की चिकित्सा

1. प्रदर

वर्तमान समय में आहार- विहार का असंयम बहुत बढ़ गया है, जिसके कारण पुरुष तो प्रमेहादि रोगों से पीड़ित होते ही हैं, महिलाएँ भी पुरुषों की उच्छृंखलता से अथवा अपनी मिथ्या धारणादि से प्रदर प्रभृति रोगों का शिकार बन जाती है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि उनके रोगों के लिये पुरुष समाज ही उत्तरदायी है, वरन् उनकी स्वयं की भूलें भी अनेक रोगों की उत्पत्ति में सहायक होती हैं।

प्रदर एक ऐसा रोग है, जो कि अधिकांश नवयुवतियों में पाया जाता है, जिसके विषय में वे संकोच या लज्जावश किसी को बताती नहीं और चुपचाप रोग की वृद्धि सहन करती रहती हैं। पति भी अनभिज्ञ रहता है तो रोग बढ़ता हुआ दुःसाध्य रूप धारण कर लेता है। चिकित्सा शास्त्र में उसके निवारणार्थ अनेक उपचारों का निर्देश तथा योग- प्रयोग मिलते हैं।

शारंगधर ने चार प्रकार के प्रदर रोगों की चर्चा की है। वात, पित्त, कफ और त्रिदोष से उत्पन्न प्रदर, उनमें रक्तप्रदर भी सम्मिलित है। लक्षण इस प्रकार कहे हैं —

वातजन्य प्रदर में रूक्ष, लाल, झागदार तथा मांस के जल के समान अल्प स्राव होता है। पित्तजन्य प्रदर में पीला, नीला, काला, लाल, गर्म तथा पित्त मिश्रित स्वाव वेग पूर्वक होता है। कफजन्य प्रदर में आँव के समान चिकना, उज्वल तथा पीलापन लिये हुए, मांस के जल के समान स्राव होता है। इसे श्वेत प्रदर कहते हैं। सन्निपातजन्य प्रदर में शहद, ई, हरताल तथा चर्बी के वर्ण का शव जैसी दुर्गन्ध वाला स्राव होता है। इसमें तीनों दोषों के मिश्रित लक्षण देखे जाते हैं।

एक मत यह भी है कि योनि से स्राव स्वाभाविक रूप से भी होता रहता है। किन्तु उस स्वाभाविक स्राव का कार्य योनि को नम तथा कोमल रखना है। जो लोग इस तथ्य पर ध्यान नहीं देते और उसे रोकने का विचार रखते हैं, वे वास्तव में बहुत बड़ी भूल करते हैं। किसी भी प्राकृतिक क्रिया में जाने या अनजाने हस्तक्षेप का प्रतिफल हानिकारक भी हो सकता है। श्वेत प्रदर के निम्न कारण समझे जाते हैं —

- **योनिदोष से उत्पन्न प्रदर रोग** — जिसमें अधिक संसर्ग आदि कारणों से योनि प्रदाह होने लगता है। अथवा योनि में व्रण अथवा अन्य किसी प्रकार का प्रदूषण।
- **गर्भाशय ग्रीवा के रोग** — नवीन या पुराना ग्रीवा- प्रदाह, गर्भाशय- ग्रीवा में व्रण या क्षत अथवा ग्रीवा का बाहर की ओर झुकाव।
- जीर्ण गर्भाशय प्रदाह, जिसमें शूल, स्राव, शोथ आदि भी हो सकता है। किन्तु, आवश्यक नहीं कि प्रदर के कारणों में उक्त कारणों को प्रमुख माना जाय। क्योंकि उक्त उपद्रवों में प्रदर स्वयं भी, उनका कारण बन सकता है। इसलिये मानना होगा कि यह सभी उपद्रव अथवा व्याधियाँ परस्पर में अन्योन्याश्रित सम्बन्ध रखती हैं।

प्रदर के स्वरूप निर्णय में शास्त्र की मान्यता है — **'रजः प्रदीयते यस्मात्प्रदरस्तेन स्मृतः'**,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
इसका भावार्थ यह है कि रज को क्षुब्ध करके, प्रदाह उत्पन्न करने वाले रोग को प्रदर कहते हैं।

प्रदर की उत्पत्ति के विषय में चरक का कहना है कि अधिक खट्टे, खारे, भारी, कड़वे, विदाही, स्निध, ग्राम्य और उपौदक पशुओं के माँस, सुरा, बिजौरे आदि के अधिक सेवन से वायु कुपित होकर गर्भाशय की रजोवाहिनी शिराओं में रक्तके साथ पहुँच कर रज को प्रभावित करता है, उसे असृग्दर (प्रदर) कहते हैं। अन्य कारणों में विरुद्ध आहार- विहार, उपवास, अत्यन्त स्वेद- स्राव, शूल, क्षत आदि के कारण स्राव में वृद्धि हो जाती है। उत्तेजक दृश्यावलोकन, अश्लील वार्तालाप, अधिक मद्यादि का सेवन, विपरीत रति, अधिक रति, रोगग्रस्त पुरुष से संसर्ग भी इसके कारण हो सकते हैं। मैथुन के अन्त में स्वच्छता के प्रति उपेक्षा रखते हुए योनि का प्रक्षालन न करने से भी यह रोग उत्पन्न हो सकता है।

आयुर्वेदोरक्त चार कारणों अथवा आधुनिक चिकित्सकों द्वारा निश्चित किये ये तीन कारणों को जन सामान्य नहीं जानते। इसलिये इस रोग की प्रसिद्धि दो ही रूप में है— 1श्वेत प्रदर, और 2. रक्त प्रदर। चिकित्सा जगत में भी उपचारार्थ यही भेद अधिक स्वीकार्य हैं, क्योंकि श्वेत प्रदर में श्वेत या पीलेपन पर स्राव होता है, जबकि रक्त प्रदर में लाल रंग का स्राव होता है। इन सब में प्रारम्भिक चिकित्सा के रूप में योनि प्रक्षालन की ओर सर्व प्रथम ध्यान दिया जाता है। योनि प्रक्षालनार्थ सर्वोत्तम तो फिटकरी का घोल है। दो तोला फिटकरी का घोल बनाकर दिन में 2 बार, उससे योनि को धोना चाहिये अथवा श्वेत फिटकरी के साथ सुहागा या बोरिक एसिड मिला कर भी योनि प्रक्षालनार्थ द्राव तैयार किया जा सकता है। तक्र से अथवा दही के तोड़ से भी प्रक्षालन क्रिया की जा सकती है, किन्तु यह फिटकरी के घोल जैसा कार्य प्रायः नहीं कर पाते। यदि डूश में नारायण तैल का प्रयोग किया जाय तो उससे अधिक लाभ हो सकता है। अब औषधोपचार लिखते हैं:—

प्रदर पर एक अनुभूत सरल योग

शकरकन्द और जिमीकन्द समान भाग लेकर छाया में सुखावें और महीन चूर्ण करके रखें। 5-6 ग्राम तक ताजा पानी, बकरी के दूध अथवा अशोक की छाल के क्वाथ में शहद मिला कर सेवन करायें। सब प्रकार के प्रदर, विशेष कर श्वेत प्रदर में अत्यन्त हितकर है।

प्रदर रोग पर उपयोगी चूर्ण

दारुहल्दी, बबूल का गोंद और शुद्ध रसांजन 10-10 ग्राम, पीपल की लाख, नागरमोथा और सोना गेरू 5-5 राम तथा मिश्री 20 ग्राम। कूट- कपड़छन कर लें। 2-3 ग्राम प्रातः- सायं पानी के साथ सेवन कराने से सभी प्रकार के प्रदर रो दूर होते हैं।

श्वेत प्रदर पर उत्तम योग

मोचरस, अनार की कली और ढाक का गोंद 10-10 ग्राम, पठानी लोध और समुद्र शोष 40-40 ग्राम तथा मिश्री 50 ग्राम, सबको कूट- कपड़छन करके रखें। 6 से 12 ग्राम तक मिश्रीयुक्त गर्म दूध के साथ प्रातः- सायं सेवन करानी चाहिये। श्वेत प्रदर को शीघ्र नष्ट करती है।

सब प्रकार के प्रदर पर

गोखरू, पापड़िया तथा कतीरा गोंद और सेलखड़ी समान भाग लेकर कपड़छन चूर्ण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बनावें। 5 से 10 ग्राम तक बकरी के दूध के साथ-सेवन करायें। इस प्रयोग से सब प्रकार के प्रदर रोगों में शीघ्र लाभ होता है।

प्रदर पर सरल औषधोपचार संग्रह

- चौलाई की जड़ का चूर्ण 3 ग्राम से 5 ग्राम की मात्रा में, चावलों के धोवन में शहद मिला कर, उसके साथ सेवन करावें।
- त्रिफला, मुलहठी, नागरमोथा और लोध के चूर्ण को शहद में मिला कर सेवन करायें। वातज प्रदर में उपयोगी है।
- मुलहठी, शंखजीरा, नीलकमल और काला नमक 2-2 रत्ती लेकर मिलावें। यह एक मात्रा है, इसे दही और शहद 25-25 ग्राम मिला कर, उसके साथ सेवन करायें। इससे वातज प्रदर नष्ट होता है।
- वासा स्वरस मधु में मिला कर देना चाहिये।
- गिलोय को स्वरस शहद में मिला कर दिया जाय।
- कुशा की जड़ चावलों के धोवन के साथ पीस कर पिलाने से सब प्रकार का प्रदर रोग दूर होता है।
- दारुहल्दी, रसौत, वासा, नागरमोथा, चिरायता, बेलगिरी, शुद्ध भल्लातक और कुमुद समान भाग के क्वाथ में मधु मिला कर पिलाने से सब प्रकार के पीले, काले, नीले, लाल अथवा श्वेत प्रवाह वाले प्रदर रोग नष्ट होते हैं। अति पीड़ायुक्त प्रदर में भी यह क्वाथ हित साधन करता है।
- कठूमर के फल के स्वरस में मधु मिला कर पिलावें। इससे रक्तप्रदर दूर हो जाता है।
- इस औषधि के सेवन काल में रोगिणी को केवल दूध, चावल और शर्करा ही खाने का निर्देश देना चाहिये।
- कुशा की जड़ और खिरेंटी की जड़ के चूर्ण को चावलों के पानी के साथ पिलावें। रक्त प्रदर में हितकर है। अथवा केवल खिरेंटी की जड़ का कल्क बनावें और उसे दूध में डाल कर गर्म करके पिलावें। रक्त प्रदर दूर होगा।
- बेर का चूर्ण गुड़ में मिला कर रक्त प्रदर में सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है।
- लाख का चूर्ण गोघृत में मिला कर खिलाने से रक्त प्रदर में लाभ सम्भव है।
- रुहेड़ा (रोहितक) की जड़ के कल्क में शहद अथवा मिश्री मिलाकर सेवन कराने से पीतस्राव प्रदर नष्ट हो जाता है।
- आमले के बीजों का कल्क शर्करा और शहद के साथ सेवन करायें। इससे पीत प्रदर में लाभ होता है। उपर्युक्त सभी प्रयोग शास्त्रीय हैं।
- छिलके उतारे हुए भुने चने, भाड़ पर भूने हुए, लेकर चूर्ण करें और उसमें समान भाग मिश्री का चूर्ण मिला कर 6-6 ग्राम की मात्रा में ठण्डे पानी के साथ सेवन करायें। यह प्रयोग सामान्य होते हुए भी प्रभावकारी है।
- यह योग एक ग्रामीण सज्जन ने बताया था। हमने इसे अधिक लाभकारी तो नहीं पाया, किन्तु कुछ अंशों में स्राव की मात्रा कम हो गई। तब इसका प्रयोग इस प्रकार किया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गया — उत्तम प्रकार के चने लेकर उन्हें अंकुरित करें और 25 ग्राम की मात्रा में, मिश्री का चूरा मिला कर सेवन करायें। ऊपर से आमले का क्वाथ ठण्डा करके पिलायें। यह योग प्रातः- सायं दोनों समय दिया जाय। श्वेत प्रदर में अधिक हितकर है।

चना अंकुरित करने की विधि — चना को पानी में एक रात भिगोये रखें। दूसरे दिन पानी निकाल फेकें और चनों को वस्त्र में लपेट कर रख दें। उनमें अंकुर फूट आयेंगे।

- श्वेत जीरा का चूर्ण 2 ग्राम, मिश्री 1 ग्राम का चूर्ण कडुए नीम की छाल के काढ़े में शहद मिला कर सेवन कराने से श्वेत प्रदर में लाभ होता है।
- गूलर का पका फल साबुत खाकर ऊपर से ताजा पानी पियें तो श्वेत प्रदर दूर होगा।
- गूलर के फल का स्वरस मधु- योग के साथ सेवन किया जाय उपयोगी है।
- मुल्तानी मिट्टी 3 ग्राम को समान भाग मिश्री के साथ मिला कर चूर्णित करें और उसे ताजा पानी के साथ सेवन करायें। श्वेत प्रदर में हितकर है।
- मोचरस का 1 ग्राम चूर्ण बकरी के दूध के साथ श्वेत प्रदर ग्रस्त रोगिणी को सेवन कराना चाहिये।
- आमला चूर्ण 3 ग्राम, मधु- योग से प्रातः- सायं सेवन कराना भी श्वेत प्रदर में लाभकारी है।
- कपास की जड़ का चूर्ण चावलों के धोवन के साथ दें अथवा कपास की जड़ को चावलों के धोवन के साथ पीस कर पीवें। श्वेत प्रदर में लाभ होगा।
- माजूफल का चूर्ण 1 से 2 ग्राम तक की मात्रा में ताजा पानी के साथ प्रातः- सायं देने से श्वेत प्रदर का स्राव रुकता है।
- श्वेत मूसली का चार्ण 3 ग्राम, आमला- पानक के साथ दें। श्वेत प्रदर दूर होगा।
- नागकेशर का चूर्ण 3 ग्राम ताजा पानी के साथ देने से श्वेत प्रदर में लाभ होता है।
- अनार के पत्ते 20 ग्राम, काली मिर्च 5 नग, सौंफ 1 ग्राम, पानी के साथ पीस कर छानें और प्रातःकाल पिलावें। श्वेत प्रदर, रक्तप्रदर तथा उनके उपसर्ग दूर होंगे।
- पुनर्नवा पंचांग 3 ग्राम, भृंगराज 2 ग्राम, मिश्री 5 ग्राम, चूर्ण करके पानी के साथ दें। प्रदर तथा गर्भाशय के विकार और शोथ में भी हितकर है।
- बड़ी इलायची 10 ग्राम, छोटी इलायची 5 ग्राम, दालचीनी 1 ग्राम, मिला कर चूर्ण करें। इसकी 4 मात्राएँ कर लें। इसमें थोड़ी मिश्री मिला कर पानी के साथ दें। श्वेत प्रदर में लाभकारी है
- केले की पकी हुई फली भी श्वेत प्रदर में लाभ करती है। उस पर छोटी इलायची का चूर्ण बुरक कर देना चाहिये।
- नीम का तैल 1 चम्मच, चौगुने गोदुग्ध में मिला कर सेवन करावें तथा ऊपर से भी मिश्री युक्त गो- दुग्ध पिलावें। इससे प्रदर के सभी उपसर्ग तथा विषैला प्रभाव नष्ट होता है।
- हंसपदी का चूर्ण दही में मिला कर सेवन करायें। श्वेत प्रदर में हितकर है।
- वासा स्वरस और मधु मिला कर पिलावें। रक्त प्रदर में लाभकारी है।
- श्वेत चन्दन और मिश्री समान भाग का सूक्ष्म चूर्ण दूब के रस में मिला कर पिलावें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दोनों प्रकार के प्रदर रोग में लाभकारी है।

- सूखा सिंघाड़ा चूर्ण करके रखें और 3-3 ग्राम की मात्रा में शहद के साथ प्रातः- सायं सेवन करायें। सब प्रकार प्रदर में लाभ करेगा।
- ऊन की भस्म और मिश्री समान भाग का चूर्ण 5 ग्राम गोदुग्ध के साथ प्रातः- सायं सेवन करायें। श्वेत प्रदर में बहुत लाभकारी है।
- शकरकन्दी का छाया- शुष्क चूर्ण श्वेत प्रदर में हितकर होता है। इसे 3 से 5 ग्राम तक की मात्रा में धारोष्ण गाय के दूध के साथ सेवन कराना चाहिये।
- असगन्ध और शतावर समान-भाग का चूर्ण 3 ग्राम ताजा पानी के साथ सेवन करायें। प्रदर में लाभकारी है।
- श्वेत प्रदर में निम्न योग भी लाभकारी हैं —

सोना गेरू 25 ग्राम, सज्जी खार 10 ग्राम, शुद्ध कसीस 3 ग्राम, वज्रक्षार 50 ग्राम और मल्लभस्म 3 रत्ती। सबको यथाविधि खरल करके रखें।

मात्रा — 1 से 4 चावल तक मलाई, मक्खन अथवा शहद के साथ प्रातः- सायं सेवन करायें। श्वेत प्रदर में अधिक उपयोगी है।

- नागकेशर 40 ग्राम, मुलहठी और राल 30-30 ग्राम, मिश्री 100 ग्राम लेकर कूट- छान कर चूर्ण बनावें।

मात्रा — 3-4 ग्राम तक, मिश्रीयुक्त गर्म दूध के साथ प्रातः- सायं सेवन करावें। यह चूर्ण सब प्रकार के प्रदर रोगों और उनसे उत्पन्न विकारों को दूर करता है।

- कान्तिसार लौह भस्म 20 ग्राम, कौड़ी भस्म, रौप्य भस्म, त्रिवंग भस्म, संगजराहत भस्म, शंख भस्म, शुद्ध राल, हिंगुलोत्थ, शुद्ध पारद और शुद्ध गन्धक 6-6 ग्राम लेकर प्रथम पारद- गन्धक की कज्जली करें, तत्पश्चात् एक- एक भस्म डाल कर मर्दन करते हुए अन्त में में राल का चूर्ण भी मिला कर कम से कम 3 घण्टे तक खरल करके, ग्वारपाठे के स्वरस की तीन भावनाएँ दें और मूँग के बराबर गोलियाँ बना कर छाया में सुखा लें।

मात्रा — 1-1 गोली, बला के स्वरस के साथ प्रातः- सायं सेवन करायें। इसके सेवन से घोर प्रदर भी नष्ट हो जाता है तथा बल, वर्ण और सौन्दर्य की वृद्धि होती है।

प्रदर पर अव्यर्थ योग

मुक्ताशुक्ति भस्म 20 ग्राम, लौह भस्म 5 ग्राम, वंग भस्म, कृष्णाभ्रक भस्म और यशद भस्म 3-3 ग्राम, पुष्यानुग चूर्ण और सुपारी पाक 40-40 ग्राम लेकर सबको खरल में 3 घण्टे घोट कर शीशियों में भर लें।

मात्रा — 5-6 ग्राम तक यह मिश्रण, अशोक छाल के क्वाथ से अथवा अशोकारिष्ट के साथ, प्रातः- मध्याह्न और सायंकाल सेवन कराना चाहिये।

इसके 3 सप्ताह प्रयोग करने से ही पर्याप्त लाभ दिखाई देने लगता है। किन्तु रोग निवृत्ति के लिये 6-7 सप्ताह तक सेवन करायें। इससे सभी प्रकार के प्रदर, रंगीन या श्वेत तथा दुर्गन्धित स्राव भी काबू में आ जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

नारी रोग नाशक अशोक वृक्ष

अशोक एक सुप्रसिद्ध वृक्ष है। आयुर्वेद ने इसे नारी रोगों पर अधिक प्रभावकारी मान कर अपने विभिन्न योगों में सम्मिलित किया है। न जाने कब से इसका उपयोग औषधियों के रूप में किया जाता रहा है।

अशोक को संस्कृत में हेमपुष्प भी कहते हैं, गुजराती में आशुपाली और लेटिन में सराका का इंडिका अथवा चौनेसिया अशोका, जन सामान्य इसे बहु प्रचलित नाम अशोक से ही जानते हैं।

यह वृक्ष बहुशाखा वाला सघन वृक्ष है, जिसकी ऊँचाई प्रायः 5 मीटर से अधिक नहीं होती। इसके पत्ते लम्बे, गोल और नौंकयुक्त, श्वेत- लालिमा मिश्रित उत्पन्न होते, फिर हरे रंग के हो जाते हैं। किन्तु सूखने पर लाल रंग के हो जाते हैं।

इसके पुष्प वसन्त ऋतु में, पृथ्वी की ओर मुख झुकाये हुए तथा गुच्छाकार होते हैं पहले कुछ नारंगी, फिर लाल से हो जाते हैं। इसकी फलियाँ, प्रायः 10 से 20 सेंटीमीटर तक लम्बी होती हैं, जो कि पकने पर काले रंग की हो जाती हैं। बीज कुछ चपटे से लालिमायुक्त होते हैं।

औषधि- कार्य में अशोक वृक्ष की छाल की प्रायः प्रयोगं में लाई जाती है। यह छाल स्पर्श में खुरदरी, बाहर से धूसर वर्ण की तथा भीतर से लाल वर्ण की होती है। यह हेमन्त ऋतु में संग्रहीत करके सुरक्षित रखी जाय तो अपने सभी गुणों से सम्पन्न रहती है।

आयुर्वेद में इसके गुण- कर्म आदि के विषय में कहा है कि यह कडुवी, कसैली, शीतवीर्य, ग्राही, रक्तसंग्राहक, वर्ण को निखारने वाली, अस्थियों को जोड़ने वाली, हृद्य, त्रिदोष नाशक, दाह, तृषा, शोष, भ्रम, कृमि आदि को नष्ट करने वाली है। उदर रोग, शूल, गुल्म, अफरा, अर्श, रक्तदोष, प्रदर, गर्भाशय- शैथिल्य, अपची, ज्वर आदि को भी दूर करती है।

आधुनिक मतानुसार अशोक की छाल में टेनिन और कैटचिन नामक तत्वों की अधिकता रहती है। इस कारण गर्भाशय की मांसपेशियों पर सीधा प्रभाव डालती है। गर्भाशय के सभी विकारों में तथा मासिक स्राव की अधिकता में यह बहुत उपयोगी है। इस छाल के साथ सिद्ध किया दूध मासिक स्राव के चतुर्थ दिन से तब तक सेवन कराते रहना चाहिये, जब तक कि स्राव बन्द न हो जाय।

रासायनिक विश्लेषण के अनुसार अशोक छाल में टेनिन की अधिक मात्रा होने के साथ ही, एक इस प्रकार का आर्गेनिक सब्सटेंस मिलता है जिसमें आयरन की अधिकता है। इसमें ईथर एक्सट्रैक्ट 0.235 तथा एब्सलूट एल्कोहलिक एक्सरैक्ट 14.2 प्रतिशत है। इस कारण स्त्री रोगों पर यह अधिक महत्वपूर्ण सिद्ध होती है।

आयुर्वेद के अनुसार यह 'ग्राही वर्ण्यः कषायकः' अर्थात् ग्राही होने के साथ ही वर्ण को भी उज्ज्वल करने वाली है। उसका समर्थन आधुनिक चिकित्सा विज्ञान भी करता है। वह भी इसमें आस्ट्रीजेंट (ग्राही) गुण होना स्वीकार करता है। इस मान्यता के अनुसार उसमें स्नायुओं को संकुचत करके रक्तवाहिनी शिराओं का आकार घटाने की शक्ति है। इसी कारण इसका उपयोग आन्तरिक स्राव रोकने, पाचन क्रिया को सुधारने रक्तादि की प्रवाहिका नलिकाओं के नियमनार्थ किया जाता है। वर्तमान विज्ञान इसमें विद्यमान टॉनिक एसिड

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

नामक ग्राही तत्व को पृथक् निकालने का साधन भी उपलब्ध कराता है।

इस प्रकार के विश्वेषण और परीक्षण अशोक वृक्ष की त्वचा को तो अत्यन्त प्रभावकारी सिद्ध करते ही हैं, साथ ही उसके अन्य अंगों का भी, विभिन्न रोगों की औषधियों में प्रयोग करने लगे हैं। आयुर्वेदज्ञ भी विभिन्न योगवाही औषधियों में अशोक का समावेश करके, रोगों में सफलतापूर्वक प्रयोग करते हैं। शास्त्र भी अरिष्ट आदि के रूप में अन्य औषधि- द्रव्य भी इसके साथ मिलाये जाने का विधान करते रहे हैं।

औषधि रूप में अशोक का उपयोग

आयुर्वेद द्वारा निर्दिष्ट शास्त्रीय योगों में अशोकारिष्ट तो अत्यन्त प्रसिद्ध है ही, अशोकघृत, अशोकावलेह, अशोक पानक आदि का उपयोग भी अधिकता से किया जाता है। आधुनिक औषधि- निर्माता अशोका कार्डियल, अशोका मिक्श्चर, सीरप अशोका आदि विभिन्न नामों से इसका प्रचार करते रहे हैं। अशोकारिष्ट आदि के योग लिखने से पहले हम उसके सामान्य योग प्रस्तुत करते हैं, जो कि प्रभावकारी होने के साथ ही अत्यन्त सरल और सस्ते हैं —

- अशोक की छाल को कूट- कपड़छन करके रखें। इसे 3 ग्राम की मात्रा में मधु- योग से दिन में 3 बार सेवन करावें। यह सभी प्रकार के प्रदर में उपयोगी है।
- अशोक की छाल के क्वाथ में दूध डाल कर पकावें और ठण्डा होने पर रोगिणी को, उसके बलानुसार मात्रा में पिलावें। इसके सेवन से घोर असृग्दर (प्रदर) भी नष्ट हो जाता है। भै.र.
- इस योग में अशोक की छाल 2 तोले लगभग 24 ग्राम, लेनी चाहिये उससे अठगुने पानी के साथ पकाकर चतुर्थावशेष काढ़ा बना लें और फिर पावभर दूध के साथ उबालकर रोगिणी को पिला दें। सभी प्रकार के प्रदर रोग इसके सेवन से नष्ट हो जाते हैं।
- अशोक की छाल को चावलों के धोवन के साथ पीस कर छानें और उसमें शुद्ध रसांजन अल्प मात्रा में मिला कर तथा शहद डाल कर पिलावें। सभी प्रकार के प्रदर में लाभप्रद है।
- अशोक के बीज और पुष्पों को भी औषधि कर्म में प्रयुक्त किया गया; उसके भी हितकर परिणाम सामने आये। योग इस प्रकार है —
- अशोक के बीज 2 ग्राम, ताजा जल के साथ ठण्डाई समान पीसें, उसमें आवश्यक मात्रा में मिश्री मिला कर, रोगिणी को पिलावें। इससे रक्तप्रदर तथा मूत्रावरोध, पथरी आदि में लाभ होता है।
- अशोक के पुष्पों का स्वरस, मधु मिला कर देने से सामान्य प्रदर रोग दूर होता है।
- अशोक के छाया शुष्क पुष्पों का क्वाथ भी रक्त प्रदर में लाभ करता है। इसमें मधु अथवा मिश्री का चूर्ण मिला सकते हैं।
- अशोक के सूखे पुष्प, ब्राह्मीबूटी, काली मिर्च और बादाम के योग से बनाई गई ठण्डाई प्रातः- सायं पिलाने से रक्त प्रदर तथा श्वेत प्रदर भी नष्ट होता है।
- अशोक का प्रयोग यद्यपि सभी प्रकार के प्रदर रोगों में किया जाता है, तथापि रक्त प्रदर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पर यह अधिक प्रभावकारी है। यथा — अशोकस्य त्वचा रक्तप्रदरस्य विनाशिनी, अशोक वृक्ष की त्वचा (छाल) रक्तप्रदर को नष्ट करने वाली है।

- अशोक की छाल के क्वाथ में वासा पंचांग का चूर्ण 2 ग्राम तथा मधु 2 चम्मच मिला कर पिलाने से रक्तप्रदर में शीघ्र लाभ होता है। दिन में 2 बार देना चाहिये।
- अशोक की अन्तर्छाल का चन्दन के समान बोटा बनावें। इसके साथ वासा के पुष्प घिस कर कल्क तैयार करें। कल्क बनाने में जल के स्थान पर चावलों का पानी प्रयोग करना चाहिये। इसमें मिश्री और शहद मिला कर पीने से रक्तप्रदर में लाभ होता है।
- अशोक की छाल के काढ़े से योनि- प्रक्षालन किया जाये तो स्राव को रोकने में सहायता मिलती है। इससे रक्त प्रदर, श्वेत प्रदर, योनि की सड़न आदि में भी लाभ होता है।
- अशोक की छाल का काढ़ा, श्वेत फिटकरी चूर्ण मिलाकर गुप्त स्थान में पिचकारी देनी चाहिये। इससे दोनों प्रकार के प्रदर और उनके उपसर्ग दूर होते हैं।
- अशोक और पुनर्नवा मिश्रित क्वाथ से योनि- प्रक्षालन करने से योनिशोथ में लाभ होता है तथा स्राव में भी कमी आती है। प्रदर और योनिशोथ का यह सहायक उपचार है।
- सबल प्रक्षालन — यह प्रक्षालन सर्वोत्तम है। इसे इस प्रकार बनाना चाहिये —

अशोक की छाल और बबूल की छाल, प्रत्येक 100 ग्राम, लोध की छाल और नीम के सूखे हुए पत्ते 50-50 ग्राम जोकुट करें और चौगुने पानी में औटावें। जब आधा पानी जल जाय, आधा शेष रहे, तब उतार कर छान लें। ठण्डा होने पर बोतल में भर कर रखें।

इस क्वाथ से योनि- प्रक्षालन करावें और सेवन के लिये कोई भी अशोक मिश्रित योग दें। ऐसा करने से श्वेत प्रदर और रक्त प्रदर, दोनों ही शीघ्र काबू में आते हैं।

प्रदर पर अत्युत्तम अशोक - घन वटी

अशोक की छाल को सोलहगुने पानी के साथ पकावें और चौथाई शेष रहने पर उतार कर छानें तथा उस छने हुए क्वाथ को पुनः अग्नि पर चढ़ा कर गाढ़ा कर लें, यही घनसत्व है। इस घनसत्व की 400 मिलीग्राम प्रमाण की गोलिया बना कर शीशियों में रखें।

मात्रा — 1-2 गोली चावलों के पानी अथवा सादा पानी के साथ देने से दोनों प्रकार के प्रदर रोगों का शमन होता है। यह औषधि नित्य प्रति नियमित रूप से प्रातः- सायं अथवा दिन में तीन बार 30 या 40 दिन तक सेवन करानी चाहिये।

प्रदर पर अशोकघनादि अन्य योग

अशोक का घनसत्व, लोध का घनसत्व, कमल केशर का घनसत्व, मुलहठी चूर्ण, वंशलोचन, पत्थर का दिल और गिलोय सत्व समान भाग लेकर खरल में घोट कर एकजीव करलें।

इस औषधि का प्रयोग इसी रूप में करना चाहें तो 1 ग्राम की मात्रा में, अशोक क्वाथ अथवा शीतल जल के साथ दिन भर में 2 बार प्रातः- सायं दें।

यदि गोलियाँ बनाना चाहें तो अशोक क्वाथ में 3 घंटे तक खरल करके आधा- आधा ग्राम की गोलियाँ बना लें। इनकी मात्रा 1-1 गोली दिन में 3-4 बार तक, पानी के साथ दे सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

यह योग दोनों ही प्रकार से, रक्तप्रदर और श्वेत प्रदर में समान रूप से काम करता है।

Digitized by eGangotri

प्रदर पर अत्यन्त प्रभावकारी अशोक मिश्रण

अशोक की छाल 100 ग्राम, सोना गेरू और संगजराहत 20-20 ग्राम, प्रवाल भस्म और लौह भस्म 3-3 ग्राम तथा मिश्री 125 ग्राम लेकर, सबका अत्यन्त सूक्ष्म चूर्ण करें और सुरक्षित रखें।

मात्रा — 2 या 3 ग्राम यह औषधि पानी के साथ प्रातः- सायं सेवन करावें, अथवा अजा- दुग्ध के साथ दें। इससे घोर श्वेत प्रदर या रक्तप्रदर नष्ट होता है। मासिक गड़बड़ी की सभी स्थितियों में इसका व्यवहार हितकर है। अति रजःस्राव, दूषित रजःस्राव, रक्त मिश्रित स्राव अथवा रक्त दोष भी दूर हो जाते हैं। दुर्बल स्त्रियों को इससे शक्तिप्राप्त होती है।

प्रदर पर लाभकारी क्वाथ

अशोक की छाल, आम की छाल, बंबूल की छाल और वटवृक्ष के अंकुर समान भाग लेकर, यथाविधि क्वाथ करें। इसका सेवन शहद मिला कर प्रातः- सायं कराना चाहिए। दोनों समय ताजा क्वाथ बनाया जाय।

यह क्वाथ छाल के काढ़े में शुद्ध आमलासार गंधक सूक्ष्म पीस कर आधे से 1 ग्राम तक की मात्रा में मिला कर सेवन कराना चाहिये। यदि रक्त दोष के साथ प्रदर है तो इस प्रयोग से शीघ्र नष्ट होना सम्भव है।

नारी- स्वप्नदोष तथा मिथ्या गर्भ

पुरुषों के समान स्त्रियों को भी स्वप्नदोष की शिकार हो जाती हैं। स्वप्न में समागम- क्रिया से उत्तेजित वायु आर्तव बाँयी कुक्षि में पहुँचा कर मिथ्या गर्भ धारण की भ्रान्ति, उत्पन्न कर देती है। ऐसी स्त्री को कब्ज होता है तथा गुल्म के साथ वायुगोला- सा हो जाता है। उससे लगता है कि यह गर्भवती है। किन्तु वह गर्भवती होती नहीं। ऐसी स्थिति में भी केवल अशोक की छाल का क्वाथ लाभदायक होता है। वह उसे शहद के साथ सेवन कराना चाहिये। कुछ सप्ताह निरन्तर सेवन करने से अवश्य लाभ होगा।

नारी रोगों में अशोक घृत

अशोक की छाल 64 तोले, क्वाथ के लिये जल 6 सेर 32 तोले, अवशिष्ट क्वाथ 128 तोले, चावलों का पानी, बकरी का दूध, भाँगरे का रस तथा घृत, यह सब भी प्रत्येक 128 तोले।

कल्क के लिये जीवनीय गण की प्रत्येक औषधि 2-2 तोले, चिरोंजी, फालसा, रसौत, मुलहठी, अशोक की जड़, चौलाई की जड़ और मुनक्का प्रत्येक 2-2 तोले। यथाविधि घृत सिद्ध करें, शीतल होने पर छानें और उसमें मिश्री का चूर्ण 32 तोले मिलां कर सुरक्षित रखें।

मात्रा — बलाबल देख कर निश्चित करें। इसके सेवन से सभी दोषों से उत्पन्न श्वेत, नीला, काला, कठिन प्रदर, योनि शूल, कटिशूल, कुक्षिशूल, मन्दाग्नि, अरुचि, दौर्बल्य, पाण्डु, श्वास- कास आदि रोग नष्ट हो जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

नारी रोगों पर प्रसिद्ध अशोकारिष्ट

अशोक की छाल 5 सेर, जल 1 मन 11 सेर 16 तोले, अवशिष्ट क्वाथ 12 सेर 64 तोले, शीतल होने पर छानें और उसमें 10 सेर गुड़ मिला कर निम्न प्रक्षेप द्रव्य चूर्ण करके डालें —

धाय के पुष्प 64 तोले, काला जीरा, नागरमोथा, सोंठ, दारुहल्दी, कमल, त्रिफला, आम की गुठली की गिरी, जीरा, वासा और लाल चन्दन, प्रत्येक 4-4 तोले। सबका कपड़छन चूर्ण करके मिलाना चाहिये। चिकने घड़े में भर कर इसे 1 मास तक रखें और तत्पश्चात् छान कर बोतलों में भर लें।

मात्रा — सवा तोले से ढाई तोले तक यह अशोकारिष्ट समान भाग पानी मिला कर भोजनोपरान्त दोनों समय सेवन कराना चाहिये। रक्त प्रदर के लिये तो यह अत्यन्त हितकर है ही, रक्तपित्त, अर्श, अग्निमान्द्य, ज्वर, अजीर्ण, शोथ, अरुचि आदि अनेक रोगों में हितकर है। यहाँ तक कि पुरुषों के प्रमेह रोग को भी दूर करने में उपयोगी है। स्त्रियों को गर्भाशय सम्बन्धी सभी रोगों में व्यवहृत किया जाता है।

प्रदरादि पर अशोक पानक

अशोक की छाल 50 ग्राम, वासा पुष्प 25 ग्राम, मुलहठी, मुनक्का, शतावर, नागरमोथा और बेलगिरी 10-10 ग्राम लेकर 1 लीटर पानी के साथ क्वाथ करें तथा चौथाई शेष रहने पर उतार कर छान लें। इस क्वाथ में समान भाग शर्करा मिला कर शर्बत की, एकतार की चाशनी बना लें।

मात्रा — 3-4 चम्मच यह शर्बत, दन में 3 बार पिलाना चाहिये। इससे श्वेत तथा रक्त, दोनों प्रकार के प्रदर रोगों और उनके उपसर्गों में लाभ होता है। रक्तस्राव, दूषित रक्तस्राव, मासिक गड़बड़ी में भी उपयोगी है। स्वकल्पित तथा स्वानुभूत है।

नारी रोगों पर अशोकावलेह

अशोक की छाल का क्वाथ 240 मि.ली., वासा स्वरस 120 मि.ली., श्वेत शर्करा अथवा मिश्री 90 ग्राम, शकरकन्द का छाया शुष्क चूर्ण और छोटी पीपल का चूर्ण 10-10 ग्राम, लौह भस्म 3 ग्राम।

क्वाथ और स्वरस को मिश्री के साथ मिला कर मन्दाग्नि पर पकावें, उसी में शकरकन्द और पीपल का चूर्ण डालें। जब गाढ़ा हो जाय, तब उसमें लौह भस्म मिलावें और उतार कर, ठण्डा होने पर उसमें 90 ग्राम शहद मिला कर रखें।

मात्रा — 1 से 2 चम्मच तक यह अवलेह प्रातः- सायं सेवन करावें, ऊपर से बकरी का दूध, थोड़ी मिश्री मिला कर पिला दें। इससे रक्त प्रदर, श्वेत प्रदर, खाँसी, दुर्बलता, स्रावजनित क्षय, रक्तपित्त तथा ज्वर में भी लाभ होता है। स्वकल्पित तथा स्वानुभूत है।

सर्व प्रदर- हर अर्क - अशोक

बिना बुझा चूना 100 ग्राम की डली लेकर 20 लीटर पानी में डालें और 24 घण्टे भीगने दें। फिर उसे छान कर, उसमें अशोक की छाल 50 ग्राम, वासा पंचांग, त्रिफला, नागरमोथा, सौंफ और गुलाब के फूल 10-10 ग्राम, जौकुट करके डालें और 24 घण्टे रखा रहने दें। तदुपरान्त भवके द्वारा अर्क खींच लें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मात्रा — 30-40 मि.ली. तक यह अर्क प्रातः-सायं सेवन करावें। इससे श्वेत रक्त, नीला, पीला सब प्रकार के प्रदर में लाभ होता है। खाँसी, उदर- विकार, मलावरोध आदि उपसर्गों को दूर करने में भी उपयोगी है। रोगिणी चाहे तो इसमें 1 चम्मच शहद मिला सकते हैं। स्वकल्पित तथा स्वानुभूत है।

प्रदरनाशक पुष्यानुग चूर्ण

पाठा, जामुन की गुठली की मिंगी, आम की गुठली की मिंगी, पाषाणभेद, रसौत, अम्बष्ठकी, मोचरस, लजालु, कमल केशर, केशर, अतीस, नागरमोथा, बेलगिरी, पठानी-लोध, गेरू, कायफल, काली मिर्च, सोंठ, मुनक्का, लाल चन्दन, अरलू, इन्द्रायव, अनन्तमूल, धाय के पुष्प, मुलहठी और अर्जुन की छाल समान भाग का यथाविधि चूर्ण करें। केशर बाद में मिला कर रखें।

मात्रा — 2 माशे तक चावलों के पानी के साथ दिन में 2 बार सेवन करावें। इससे सभी योनिदोष, रजोदोष, श्वेत, नीला, पीला, काला या लाल प्रदर नष्ट होता है। रक्तार्श, रक्ततिसार तथा बालकों के आगन्तुक रोग में भी हितकर है।

प्रदरहर चन्दनादि चूर्ण

लाल चन्दन, जटामासी, पठानी- लोध, खस, कमल- केशर, नागकेशर, बेलगिरी, नागरमोथा, सुगन्धबाला, शर्करा, पाठा, इन्द्रयव, कुड़ा की छाल, सोंठ, अतीस, धाय के फूल, रसौत, आम की गुठली की गिरी, जामुन की गुठली की गिरी, मोचरस, नीलकमल, मंजीठ, छोटी इलायची, और अनारदाना समान भाग लेकर कूट- कपड़छन करके रखें।

मात्रा — डेढ़ माशे से 4 माशे तक, चावल के धोवन में शहद मिला कर, उसके साथ दें। इससे चारों प्रकार के प्रदर, दारुण अतीसार तथा रक्तार्श आदि अनेक रोग नष्ट हो जाते हैं।

प्रदरारि लौह

कुड़ा की छाल 5 सेर, क्वाथ के लिये जल 25 सेर 48 तोले, अवशिष्ट, अष्टमांश, क्वाथ 3 सेर 36 तोले। क्वाथ बनने पर उतार कर छानें और पुनः अग्नि पर चढ़ाकर पकावें। जब गाढ़ा होने लगे, तब उसमें निम्न औषधिद्रव्य कूट- छान कर मिलावें —मंजीठ, मोचरस और लौहभस्म 4-4 तोले। इस प्रकार मिला कर शुष्क कर लें और खरल में घोट कर सूक्ष्म चूर्ण के समान बना कर रखें।

मात्रा — 2 माशे तक, कुशा की जड़ को पीस कर बनाये हुए पानी के साथ दें। यह श्वेत, लाल, नीले, पीले प्रदर- स्राव, कठिनतर प्रदर रोग, कुक्षिशूल, कटिशूल तथा सर्वांग शूल आदि को नष्ट करके आयु, पुष्टि, बल और वर्ण की वृद्धि कमता है

प्रदरान्तक लौह

लौहभस्म, ताम्रभस्म, वंगभस्म, अभ्र भस्म, कौड़ी भस्म, शंख भस्म, शुद्ध हरताल, त्रिकुटा, त्रिफला, चित्रक, वायविडंग, पाँचों नमक, चव्य, पीपल, वच, हाऊबेर, कूट, कचूर, पाठा, देवदारु, छोटी इलायची और विधायरा समान भाग लेकर, सभी काष्ठौषधियों को कूट- कपड़छन करें और भस्मादि मिला कर, पानी के साथ खरल करके 2-2 रत्ती की गोलियाँ बनावें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मात्रा — 1 से 2 गोली, शर्करा, मधु और घृत के साथ मिलाकर सेवन करावें। इससे लाल, श्वेत, पीला, नीला, स्रावयुक्तप्रदर, दुःसाध्य प्रदर, कुक्षिक- शूल, कटिशूल, योनिशूल, मन्दाग्नि, अरुचि, पाण्डु, कास तथा कृच्छश्वास आदि रोग दूर होते हैं और आयु, वर्ण, बल की वृद्धि होती है।

प्रदरारि रस

वंग भस्म, लौह भस्म, शुद्ध अफीम, षड़गुण जारित गन्धक, रस सिन्दूर, रक्त कमल की जड़ तथा रक्त चन्दन, समान भाग लेकर अशोक की छाल के क्वाथ में खरल करके चना के बराबर गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1 से 2 गोली तक अशोक के क्वाथ के साथ सेवन करानी चाहिये। अथवा अशोक छाल, वासा छाल, गिलोय, रसौत, नागरमोथा और रक्तचन्दन का क्वाथ बनाकर उसके साथ सेवन करावें। इससे सब प्रकार रक्त, श्वेतादि प्रदर, वस्तिशूल, रक्तस्राव, घोर ज्वरावेग तथा बहुमूत्रादि रोग शीघ्र नष्ट होते हैं।

प्रदरादि पर रत्न- प्रभा- वटी

स्वर्णभस्म, मुक्ताभस्म, अभ्रक भस्म, नागशांसा- भस्म, वंगभस्म, पीतल भस्म, स्वर्णमाक्षिक भस्म, रजतभस्म, हीराभस्म, लौह भस्म, हरताल भस्म और खपरिया भस्म समान मात्रा में लेकर एकत्र करें तथा क्रमशः कदली- मूल (केला की जड), मकोय, वासा, नीलकमल, जयन्ती के रस और कर्पूरोदक से 1-1 भावना देकर आधी- आधी रत्ती की गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1 से 2 गोली बला के क्वाथ, दूध अथवा केशराज के स्वरस से केवल प्रातःकाल सेवन करावें, अधिक आवश्यक होने पर ही 1 मात्रा रात्रि को दें। यह सभी स्त्री रोगों को नष्ट करके बल बढ़ाने वाली वृष्या औषधि है।

2. कष्टार्तव

मासिक स्राव का सहज रूप से न होना, उसमें दर्द होना, कष्टार्तव कहलाता है। उसका कारण जरायु का संकोचन ठीक स्वाभाविक रूप से न होना तथा दोषों का कुपित होना है। यह मासिक स्राव के दिनों में बार- बार स्नान, बार- बार हाथ- मुख धोना, गर्भाशय में व्रण, मस्सा, क्षत आदि अथवा शीत के कारण गर्भाशय शोथ का होना, (इस पर आगे प्रकाश डालेंगे), वसा की वृद्धि से भीतरी तौर पर यह विकार अनजाने ही पनपते रहते हैं।

उपवास, परिश्रमाधिक्य, रक्तल्पता या जरायु में रक्ताधिक्य, श्वेत प्रदर, पाण्डु, क्षय तथा क्रोध, चिन्ता, शोक आदि अनेक कारणों से सम्भव है। उचित तो यह है कि रोग के कारण की जानकारी करके, मूल कारण ही चिकित्सा की जाय। यदि वैसा सम्भव न हो तो अनुमान से औषधोपचार करना ही पड़ता है।

इस व्याधि में, पेडू में अत्यन्त वेदना रहती है। कटि, मेरुदण्ड और सिर भी प्रभावित (पीड़ाग्रस्त) प्रतीत होता है। वमनेच्छा, वमन तथा चक्कर, अल्प मात्रा में रजःस्राव अथवा आर्तव के साथ अन्य विजातीय द्रव्य का निकलना, जिससे अन्य उपद्रव भी हो सकते हैं। यथा —अजीर्ण, अरुचि, अग्निमान्द्य, क्षुधानाश, वमनेच्छा या वमन प्रभृति लक्षण। कटि, मेरुदण्ड, कण्ठ तथा सिर में दर्द या सर्वांग दर्द। गर्भाशय में खिंचाव, गर्भाशय- शोथ तथा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
अन्य आन्तरिक अंगों में शोथ के कारण बेचैनी। खाँसी, श्वास, हृदय तथा फुफ्फुस के विकार, वृक्क एवं यकृत के रोग तथा पित्तदोष या पित्तज्वर। हिस्टीरिया, मृगी, विक्षिप्तता अथवा पक्षघात। प्रजनन क्षमता का अभाव या कमी।

कष्टार्तव में निम्न औषधोपचार किया जा सकता है —

सरल औषधोपचार

- पेडू पर सेंक, योनि प्रक्षालनादि का प्रयोग।
- शास्त्रोक्त विजयावटी अथवा रजःप्रवर्तिनी वटी का सेवन।
- फुलाया हुआ सुहागा, घृत के साथ भुनी हुई हींग, शुद्ध कसीस और मुसव्वर समान भाग का चूर्ण ग्वारपाठे के स्वरस में खरल करके 1-1 ग्राम की गोलियाँ बना कर छाया में सुखा कर शीशी में रखें।

मात्रा — 1 से 2 गोली, 50 ग्राम तिल का क्वाथ बना लें और उसके साथ प्रातः- सायं सेवन करावें। कष्टार्तव में शीघ्र लाभ होता है। अथवा निम्न योग देना अधिक हितकर है—

- एलुआ, अमरबेल और गाजर के बीज 10-10 ग्राम, सोंठ, छोटी पीपल, शुद्ध कसीस और केशर 5-5 ग्राम लेकर केशर को पानी के साथ पृथक् पीसें। अन्य सब द्रव्यों को पीस- छान लें। सभी को जल के साथ खरल करके मटर प्रमाण गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1-1 गोली प्रातः- सायं निम्न क्वाथ के साथ सेवन करानी चाहिये —

वासामूल, इन्द्रायणमूल, कपास- मूल, काले तिल, सोंठ, काली मिर्च, पीपल और भारंगी 2-2 ग्राम लेकर, 1 लीटर पानी के साथ क्वाथ करें, जब आधा शेष रह जाय, तब उतार कर छान लें और शीशी में भर कर 3 खुराक करें। प्रत्येक बार गोली के ऊपर यह क्वाथ पिलाना चाहिये। इससे कष्टार्तव, नष्टार्तव तथा मासिक धर्म सम्बन्धी सभी गड़बड़ियाँ दूर होती हैं।

कष्टार्तव में विजयावटी

भाँग का सत, एलुआ, रक्तकमल की जड़ और लटजीरे की जड़ समान भाग लेकर, जल योग से 2-2 रत्ती की गोलियाँ बना लें। मात्रा 1-1 गोली गर्म पानी अशोक- क्वाथ के साथ सेवन करायें। इससे कष्टार्तव, कटिशूल, विषम रजःस्राव आदि रोगों की निवृत्ति होती है।

रजःप्रवर्तिनी वटी

एलुआ, शुद्ध कसीस, हींग और फुलाया हुआ सुहागा समान भाग लेकर ग्वारपाठे के स्वरस के साथ खरल करें और 2-2 रत्ती की गोलियाँ बना कर रखें।

मात्रा — 1-1 गोली उचित अनुपान के साथ देने से कष्टार्तव और नष्टार्तव दोनों में ही लाभ होता है।

3. नष्टार्तव

मासिक धर्म का न होना अर्थात् रजोदर्शन का न होना नष्टार्तव कहा जाता है। इसके मूल कारण कष्टार्तव के जैसे ही हैं।

यदि गर्भाशय का मुख किसी एक ओर मुड़ जाता है तो भी रजःस्राव नहीं होता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- गुड़हल के पुष्पों को काँजी के साथ पीस कर पिलावें। रजःस्राव होने लगेगा।
- मालकाँगनी के पत्ते पीस कर तथा घृत में भून कर खिलाने से भी स्त्री रजोवती होती है।
- कटुतुम्बी के बीज, दन्तीमूल, छोटी पीपल, गुड़, मैनफल की जड़, मुलहठी को अत्यन्त सूक्ष्म करके तथा थूहर के दूध के साथ बत्ती बना कर योनि- मार्ग में रखने से नष्टार्तव पुनः आरम्भ हो जाता है।

नष्टपुष्पान्तक रस

रजत भस्म, लौह भस्म, अभ्रक भस्म, वंग भस्म, ताम्र भस्म, फुलाया हुआ सुहाग, शुद्ध गन्धक और शुद्ध पारद 4-4 तोले भाग लेकर मिलावें। फिर इस मिश्रण को निम्न द्रव्यों के क्वाथ से भावनाएँ दें —

त्रिफला, कूट, देवदारू, दन्तीमूल, वासा- छाल, खिरेंटी की जड़, गिलोय, हारसिंगार, गोखरू, वेंत की कोंपल, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, करंज, जीवन्ती, तालीसपत्र और मकोय। इनमें से जितनी भी औषधियाँ मिल सकें, उनके स्वरस अथवा क्वाथ से क्रमशः तीन- तीन बार भावनाएँ देनी चाहिये।

तदुपरान्त वंशलोचन, रास्ना, मुलहठी, सेंधा नमक, लौंग, दन्तीमूल और गोखरू के बीज 6-6 माशे सूक्ष्म चूर्ण मिला कर जयन्तीपत्र के स्वरस और तुलसीपत्र के स्वरस में खरल करके 2-2 रत्ती की गोलियाँ बना कर, छाया में सुखा लें।

मात्रा और अनुपान रोगानुसार तथा बलानुसार निश्चित करना चाहिये। इसके सेवन से नष्टपुष्प (नष्टार्तव) योनिशूल, योनिप्रदाह, योनिक्लेद तथा रजोलोप आदि व्याधियाँ दूर हो जाती हैं।

नष्टावत्तर्व पर सरल योग

सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल और भारंगी 10-10 ग्राम तथा घृत में भुनी हुई हींग 10 ग्राम, कूट- छान कर रखें।

मात्रा — 250 मिलीग्राम ताजा पानी अथवा गोदुग्ध के साथ प्रातः- सायं सेवन करावें। 4-5 सप्ताह निरन्तर प्रयोग करने से नष्टावर्त रोग मिट जाता है।

4. गर्भाशय- शोथ

गर्भाशय- शोथ के कारण, लक्षण

ऋतुकालीन असावधानियों का कुप्रभाव यदि गर्भाशय को प्रभावित करता है तो उसमें शोथ (सूजन) उत्पन्न हो जाती है जिससे रुग्णा महिला को बहुत कष्ट उठाना पड़ता है। पेडू में दर्द और प्रदाह तो उसके सामान्य परिणाम हैं, किसी- किसी को दस्त लग जाते हैं तो किसी को दस्त की हाजत जैसी प्रतीत होती है, किन्तु दस्त नहीं होता। किसी को बार- बार मूत्र त्याग की इच्छा होती है, किन्तु वह भी व्यर्थ, किसी को ज्वर और ज्वर के साथ खाँसी भी हो जाती है और यदि रोग की उत्पत्ति शीत आदि के लगने से होती है तो ज्वर में तीव्रता बढ़ जाती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गर्भाशय शोथ के कारण और भी अनेक हो सकते हैं, जैसे कि सहसा रजोनिरोध या सहसा रजःस्राव, जो कि सहसा तीव्र ठण्ड अथवा अधिक उष्णता के कारण हो सकता है। संसर्गकाल में उल्टे- सीधे आसनों के करने अथवा बलात्कार होने की स्थिति में गर्भाशय में चोट लगने से भी वहाँ शोथ हो सकती है। गर्भपात होने से भी गर्भाशय- शोथ की प्राप्ति सम्भव है। तीक्ष्ण औषधियों के सेवन का प्रभाव भी गर्भाशय पर पड़ सकता है और वहाँ शोथ उत्पन्न हो सकती है। अति मैथुन, प्रमेही या मधुमेही से समागम, स्वयं को जीर्ण प्रदर रोग आदि अनेक कारण हो सकते हैं।

आरम्भ में तो यह अनुमान भी कठिन होता है कि रोगिणी गर्भाशय शोथ से ग्रसित है। किन्तु बाद में जब अनेक तत्सम्बन्धी लक्षण प्रकट हो जाते हैं, तब अनुमान में कुछ कठिनाई भी नहीं होती। रोग बढ़ने पर गर्भाशय से चिकने पदार्थ का स्राव होने लगता है तो वही रक्त मिश्रित कफ जैसा रूप ले लेता है। यदि उस पर काबू नहीं पाया जाता तो उसमें पीव पड़ सकती है। योनिकण्डु और वेदना का आभास होने लगता है। वमनेच्छा, अफरा, उदरशूल आदि लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं।

किन्तु, रोग- वृद्धि का कारण चिकित्सा के प्रति लापरवाही है। स्त्रियाँ लज्जा या संकोचवश अपने कष्ट की बात किसी से कह नहीं पातीं, इसीलिये समयोचित उपचार हो नहीं पाता। कभी- कभी कह देने पर भी पति आदि उस पर ध्यान नहीं देते, इस कारण रोग बढ़ता जाता है। रोग की सही चिकित्सा न होने अथवा प्रतिकूल प्रभाव वाली, तीक्ष्ण औषधियाँ भी इस रोग की उत्पत्ति और वृद्धि में कारण बन जाती हैं। यह इसलिये होता है कि रोग की यथार्थता को समझे बिना औषधियाँ आरम्भ कर दी जाती हैं।

सामान्यतः, रोग नया हो तो शीघ्र काबू में आ जाता है, किन्तु रोग के अधिक बढ़ने पर रोगिणी अत्यन्त दुर्बल और अशक्त हो जाती है। उसके हाथ- पाँवों में भी दर्द आरम्भ हो सकता है, इसलिये चलना- फिरना, परिश्रम करना उसके वश की बात नहीं होती। किन्तु दूसरे लोग उसकी अन्तर्वेदना को समझ नहीं पाते।

आवश्यक उपचार तथा औषधि- प्रयोग

यदि रोगिणी को अधिक कष्ट है, गर्भाशय से बहने वाला पदार्थ रक्त मिश्रित या पूर्व मिश्रित है तो उसको रोकने की व्यवस्था आवश्यक है। ऐसी रोगिणी को पूर्ण विश्राम की आवश्यकता होती है। यदि वह संकोचवश कार्य करने में प्रवृत्त हो, तो भी उसे वैसा नहीं करने देना चाहिये। उससे प्रेम और सहानुभूति का व्यवहार आवश्यक है।

योनि को भीतर से सेंकने और कीटाणु- नाशक घोल से प्रक्षालन आवश्यक है। गर्म पानी का डूश देने से वैसी ही सिंकाई सहज रूप से हो जाती है। उसे गर्म पानी के टब में बैठाना भी बहुत लाभप्रद होता है।

रोगिणी का आहार- विहार संयमित होना चाहिये। रोगोत्पत्ति में एक प्रबल कारण मिथ्या आहार- विहार ही है। संसर्ग- निषेध का कड़ाई से पालन किया जाय।

गरिष्ठ अन्न, पकवान, मिठाई, मिर्च- मसाले युक्त शाक- सब्जी या चाट आदि कदापि न खाने दें। सुपाच्य भोजन दिया जाय। गेहूँ की चपाती, दलिया, दाल, खिचड़ी आदि अधिक हितकर है। फलों में पपीता, अंगूर, सन्तरा, सेब, गाजर आदि देने चाहिये। हरे शाक- सब्जी,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
परबल, पालक, बथुआ आदि का अधिक सेवन करायें। दूध, घी, मक्खन आदि भी हितकर हो सकते हैं, किन्तु उनका सेवन रोगिणी की पाचन शक्ति पर निर्भर है।

कब्ज न होने दें। यदि कब्ज हो तो मूलरूप से औषधोपचार आरम्भ करने से पूर्व उसकी कोष्ठ- शुद्धि के लिये कोई सुख विरेचन दिया जा सकता है।

रात्रि - शयन समय हरड़- सोंफ की फंकी गर्म पानी के साथ दी जाय। शीत ऋतु हो तो सोंफ के स्थान पर सोंठ का भी प्रयोग कर सकते हैं। अथवा अन्य कोई ऐसी औषधि दी जानी चाहिये, जिससे कोष्ठशुद्धि भी हो जाय और रोगिणी को दुर्बलता भी न हो।

- योनि - प्रक्षालन के लिये फिटकरी पीस कर पानी में डालें। उस पानी से योनि को धोना चाहिये। त्रिफला के क्वाथ से योनि प्रक्षालन करना बहुत लाभदायक है। गर्भाशय- शोथ, स्राव आदि में यह प्रयोग नित्यप्रति किया जाना चाहिये।
- बरगद की छाल, गूलर की छाल, सिरस की छाल, पीपल की छाल और पाकर की छाल 50-50 ग्राम जौकुट कर, 1 लीटर पानी के साथ अर्धावशेष क्वाथ करें और उसमें 7 ग्राम सफेद फिटकरी का चूर्ण मिला कर उत्तर वास्ति के द्वारा दिन में दो बार योनि प्रक्षालन करायें। अण्डी के तैल में रुई का फाया भिगो कर योनि में रखना लाभदायक है। पुनर्नवा की जड़ तथा पत्तों के स्वरस से रुई के फाये को भिगोकर रखना भी एक उचित उपचार है।
- सोंठ और एरण्डमूल का चूर्ण पानी के साथ पीस कर योनि में लेप करने से वहाँ का शूल नष्ट हो जाता है। शुद्ध घी का लेप भी सामान्य प्रकार के शोथ में हितकर सिद्ध होता है। अन्य उचित लेप आदि के अभाव में इससे काम लिया जा सकता है।
- विनौला का यथाविधि घृत सिद्ध करें और उसमें विनौलों का महीन चूर्ण मिला कर, रुई की बत्ती पर लगावें और योनि में धारण करावें। मद्य में वस्त्र का टुकड़ा या बत्ती भिगोकर धारण करने से योनि की खाज, स्राव और पीड़ा दूर होती है। नीम के क्वाथ उबाल कर छाने हुए जल से योनि- प्रक्षालन करना भी उपयोगी है।
- आम, जामुन, बेल, कैथ और नींबू के पत्ते पंच पल्लव, चमेली के फूल और मुलहठी, इनका अत्यन्त महीन चूर्ण करके, गोघृत के साथ मिलावें और योनि के भीतर लगावें। इससे योनि- कण्डु, दुर्गन्धित स्राव आदि में लाभ होता है।
- फिटकरी 2 प्रतिशत का जल के साथ द्राव बनायें और रुई की बत्ती उसमें भिगोकर गर्भाशय- पथ में रखने का प्रयत्न करें। किसी चिकनी, लकड़ी की डंडी पर रुई ठीक प्रकार से लपेट कर फिटकरी के घोल में भिगो लेने से यह कार्य सहज में ही हो सकता है।
- वातदोष की अधिकता से उत्पन्न योनि दोष में, उसे तैल से चुपड़ कर, उसमें जटामाँसी का किंचित गर्म कल्क धारण करावें। इससे शोध आदि विकार भी दूर होते हैं।

गर्भाशय- शोथ पर सरलोपचार

वच, काला जीरा, श्वेत जीरा, छोटी पीपल, वासा, सेंधा नमक, अजमोद, यवक्षार, चित्रकमूल और शर्करा समान भाग लेकर, पीस- छान कर चूर्ण बना कर रखें।

मात्रा —2 माशे यह चूर्ण घृत के साथ भूनें और 2 तोले प्रसन्न.स्वच्छ सुरा के साथ घोल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कर पिलावें। इसके सेवन से सभी प्रकार के योनि तथा गर्भाशय के रोग मिट जाते हैं। यह योग हृद्रोग, गुल्म और अर्श में भी हितकर है।

पुराने गर्भाशय- शोथ पर

कासनी की जड़, गुलबनफ्शा और वरियारी 6-6 ग्राम, गाजवाँ और तुख्म कसुम 5-5 ग्राम तथा मुनक्का 6 या 7 नग लेकर, उन्हें पाव भर पानी के साथ प्रातः छान कर पिला दें। यह प्रयोग नियमित रूप से आठ- दस दिन तक करना चाहिये। इससे गर्भाशय की सूजन, रक्तस्राव, श्लैष्मिक स्राव आदि में पर्याप्त लाभ होता है।

गर्भाशय- शोथ पर उत्तम योग

अशोक की छाल 120 ग्राम, वटजटा, काली सारिवा, लाल चन्दन, दारुहल्दी, मंजीठ प्रत्येक 100-100 ग्राम, छोटी इलायची के दाने और चन्द्रपुटी प्रवाल भस्म 50-50 ग्राम, सहस्रपुटी अभ्रक भस्म 40 ग्राम, वंग भस्म और लौह भस्म 30-30 ग्राम तथा मकरध्वज चतुर्गुण गन्धक जारित 10 ग्राम लेकर सभी काष्ठौषधियाँ कूट- कपड़छन करनी चाहिये। फिर सभी भस्मों आदि को पृथक् खरल करके इस चूर्ण में मिलावें और क्रमशः खिरेंटी, सेमल की छाल तथा गूलर की छाल के क्वाथों में 3-3 दिन खरल करके 1-1 ग्राम की गोलियाँ बना कर छाया में सुखा लें।

मात्रा — 1 से 2 गोली तक, मिश्रीयुक्त गोदुग्ध के साथ प्रातःसायं सेवन करानी चाहिये। 6-7 सप्ताह निरन्तर सेवन कराने से स्त्रियों के अनेक रोगों में लाभ होता है। गर्भाशय शोथ, गर्भाशय प्रदाह, रजःस्राव, पूयस्राव, रक्तप्रदर तथा प्रसवोपरान्त होने वाली दुर्बलता या गड़बड़ी को भी दूर करने में यह गोली हितकर है। श्वेत प्रदर में भी पर्याप्त लाभ दिखाती है।

5. गर्भावस्था और उसके रोग

प्रकार, विवेचन, लक्षणादि

स्त्री- पुरुष का पारस्परिक मिलन और समागम गर्भावस्था का कारण होता है। भारतीय समाज में विवाह का उद्देश्य निश्चित रूप से यही है कि वंश को चलाने के लिये सन्तान उत्पन्न करें और सुखमय जीवन व्यतीत करनें के लिये पति- पत्नी साथ- साथ रहें पुरुष का पुरुषार्थ इसी में है कि वह धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन तीनों का उपयोग इस प्रकार करे कि उसे सांसारिक जीवन में अभ्युदय की और उसके अन्त में मोक्ष की प्राप्ति हो।

पुरुष का शुक्र (वीर्य) और स्त्री का शोणित (रज) मिलने पर सन्तान उत्पन्न होती है। समागम के अन्त में जो स्खलन होता है, उसमें उन्मुक्त हुए जीवाणु गर्भाशय की ओर दौड़ते हैं, और उसके फलस्वरूप कुछ समय में गर्भ की स्थापना हो सकती है।

गर्भाधान की इस क्रिया में तीन घटक भाग लेते हैं — 1. शुक्र, 2. शोणित, और 3. जीवाणु। इसके बिना गर्भ की स्थापना नहीं हो सकती। गर्भाधान के लिये शुक्र शुद्ध होना चाहिये। यदि उसमें दोष हो तो गर्भस्थिति नहीं हो पाती। इसी प्रकार नारी का शोणित (रज) भी शुद्ध होना आवश्यक है। जो नारी किसी योनि रोग से पीड़ित है, उसे गर्भ की स्थिति या तो हो ही नहीं पाती, यदि होती है तो सन्तान रोगी, दुर्बल, अल्पायु अथवा गर्भस्राव या गर्भपात की शिकार हो सकती है। अनेक शिशु जन्म लेते ही मृत्यु का वरण कर लेते हैं। इसमें दोष

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
रज- वीर्य का ही हो सकता है। पुत्र की आकांक्षा वाली स्त्री के लिये भैषज्य रत्नावली में निर्देश है कि —

समदिवसे शुभयोगे दक्षिणपार्श्वावलम्बिनी धीरा।
त्यक्तस्त्रयन्तर संग प्रहृष्टमनसोक्ति वृद्ध धातोश्च ।
पुंसः संगममात्राल्लभते पुत्रं ततो नियमितम् ॥

सम दिवस अर्थात् (छठे, आठवे, दसवें आदि दिन) स्त्री पुरुष के दायीं पार्श्व में लेट कर 3-3 दिन के अन्तर पर प्रसन्न मन से अधिक शुक्र वाले पति के साथ प्रसंग करने पर पुत्र की प्राप्ति अवश्य होती है।

अति वृद्धधातुः का तात्पर्य सबल जीवाणुओं वाले शुक्र से ही है। क्योंकि सबल जीवाणु ही गर्भाशय तक पहुँच पाते हैं। यदि शुक्र दूषित होगा तो उसमें सबल जीवाणु नहीं हो सकते। इसलिये गर्भाधान भी नहीं हो सकता।

यद्यपि आयुर्वेद ने शुद्ध शुक्र की पहिचान में कहा है कि वह स्फटिक के वर्ण का अर्थात् श्वेत या उज्ज्वल, स्निग्ध अर्थात् लसदार, मधुर तथा मधु जैसी गन्ध का होना चाहिये। जो शुक्र वातादि दोषों या रक्तविकारों से विकृत होता है, उसमें शव जैसी गन्ध आती है। जो ग्रन्थियुक्त, पूय या रक्तके मिश्रण वाला, मल- मूत्र की गन्ध वाला होता है, वह सन्तानोत्पत्ति में असमर्थ रहता है।

योनिदोष अनेक प्रकार के हैं। उनके रहते हुए गर्भाधान में बाधा उपस्थित होती है। इसलिये स्त्री के भी प्रजननांग और रज, रक्तआदि की परीक्षा आवश्यक होती है। गर्भ धारण न होने में किसी एक में ही दोष नहीं होता, पति में भी हो सकता है, पत्नी में भी हो सकता है। यह भी सम्भव है कि पति- पत्नी दोनों ही सन्तानोत्पत्ति के अयोग्य हों। इसलिये दोनों की ही परीक्षा आवश्यक है। वर्तमान समय में परीक्षार्थ जो साधन अपनाये जाते हैं, उनके द्वारा अल्प समय में ही पूरी जानकारी मिल जाती है।

इस प्रकार पुरुष और नारी दोनों की परीक्षा करने से यह ज्ञात हो जायेगा कि दोष किसमें है। क्या है। जो दोष हो, उसकी चिकित्सा धैर्यपूर्वक की जाय तो कोई कारण नहीं कि गर्भाधान न हो सके। सुश्रुत की यह उक्तिइस विषय में निश्चयात्मक है —

ध्रुवं चतुर्णां सान्निध्याद् गर्भः स्याद्विधि पूर्वकम् ।
ऋतु क्षेत्राम्बु बीजानां सामग्र्यादंकुरो यथा ॥

जैसे ऋतु, क्षेत्र, जल और बीज के समयोग से अंकुर उत्पन्न होता है, वैसे ही यथाविधि इन चारों ऋतु, क्षेत्र, अम्बु और बीज के पारस्परिक संयोग से गर्भःस्थिति आवश्यक होती है।

आयुर्वेदज्ञों का मत है कि गर्भाधान के लिये योनि और शोणित का शुद्ध होना आवश्यक है। प्रदरादि के लिये उपदिष्ट सभी औषधियाँ योनि और रज के शोधन का कार्य भी करती है। उनमें अशोक का बहुत बड़ा योगदान है। अशोकारिष्ट, अशोकघृत अथवा अशोक के मिश्रण से निर्मित विभिन्न योग अवश्य ही इस कार्य को पूरा करते हैं। अशोक के योग प्रदर- प्रकरण में लिखे गये हैं, उनका सेवन इस उद्देश्य से भी कराया जाना चाहिये।

गर्भधारणार्थ औषधोपचार से पूर्व इन तथ्यों पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गर्भावस्था से पूर्व आवश्यक जानकारी

- मैथुन हेतु विषम आसनों का व्यवहार नहीं करना चाहिये। उनसे प्रजननांग चुटीला, क्षतिग्रस्त, शोथयुक्त हो सकता है।
- उस प्रकार के व्यायाम भी नहीं करने चाहिये, जो शक्ति से बाहर हों।
- मल- मूत्र, प्यास और क्षुधा के वेगों को, (इच्छाओं को) नहीं रोकना चाहिये।
- अधिक शीतल, उष्ण, तीक्ष्ण, गरिष्ठ आहार अनेक रोग उत्पन्न करता है, गर्भेच्छु नारियों को उसे अपथ्य समझना चाहिये।
- अधिक भोजन अथवा अल्प भोजन भी स्वास्थ्य के अनुकूल नहीं रहता।
- दाम्पत्य जीवन को प्रसन्नता से तथा उद्वेग- रहित रूप से चलाना चाहिये। शोक, क्रोध, चिन्ता आदि का परित्याग आवश्यक है। अधिक रोना, हँसना, कुढ़ना, ईर्ष्या, द्वेषादि रखना भी स्वयं के स्वास्थ्य में हानिकर है। और भी ऐसे कारण जो शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के प्रतिकूल हों, उन्हें त्याग देना ही श्रेयस्कर है।

समागम का मुख्य उद्देश्य सबल, स्वस्थ, सुन्दर सन्तान उत्पन्न करना है। इसी विचार को प्राथमिकता देनी चाहिये। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये शुद्ध रज- वीर्य की अनिवार्यता है। अशोक, पलाश, प्रियंगु, गिलोय, मधुयष्ठी मुलहठी, नागकेशर, त्रिफला प्रभृति योग नारी को विभिन्न रोगोपद्रवों से मुक्त करके, उसे गर्भ धारण के योग्य बनाते हैं। विगत पृष्ठों में ऐसे बहुत से योग लिखे जा चुके हैं।

गर्भाधान की इच्छा वाली नारी के लिये एक सफल औषधियोग यहाँ लिखा जाता है, इसका आरम्भ मासिक धर्म से शुद्ध होने के पश्चात् से करें और तब तक व्यवहार करें, जब तक कि गर्भ धारण न हो जाय।

सन्तानदाता रस- योग

शतफुटी अभ्रक भस्म, ताम्र भस्म, कान्त लौह भस्म, प्रवाल भस्म, शुद्ध पारद और शुद्ध गन्धक 10-10 ग्राम, कुटकी 20 ग्राम, शुद्ध शिलाजीत, शुद्ध गूगल और चित्रकमूल की छाल 50-50 ग्राम, रेवत चीनी, हरड़, बहेड़ा और आमला 25-25 ग्राम, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, एलुआ और मुलहठी 20-20 ग्राम लेकर काष्ठौषधियों को कूट- कपड़छन करें। पारद- गन्धक की ठीक प्रकार से कज्जली करके उसमें एक- एक करके सभी भस्म आदि खरल कर मिलावें और फिर काष्ठौषधियों को उसमें मिला कर 3 घंटे घोट कर, क्रमशः ग्वारपाठे के और ढाक के पत्तों के स्वरस में 2-3 दिन घोंट कर 2-2 रत्ती की गोलियाँ बना लें।

यह औषधि योनिदोष और रजोदोष को दूर करके उसे सन्तान योग्य बनाती है।

मात्रा — 1 से 2 गोली तक अशोकारिष्ट के साथ सेवन करावें।

स्त्रीरोग नाशक लक्ष्मणा लौह

लक्ष्मणा मूल 5 सेर, पाक के लिये जल 25 सेर 48 तोले, अवशिष्ट क्वाथ 6 सेर 32 तोले। जब क्वाथ तैयार हो जाय, तब उतार कर छानें और पुनः अग्नि पर चढ़ा कर गाढ़ा करें। फिर उसमें निम्न औषधियों का कपड़छन चूर्ण मिलावें —

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अशोक की छाल, कुशा की जड़, महुआ के फूल, मुलहठी, खिरेंटी, पाठा, कच्ची बेलगिरी का गूदा 4-4 तोले और लौह भस्म 28 तोले।

सबको मिला कर, खरल में घोटें और सूक्ष्म चूर्ण कर लें।

मात्रा — 2-2 रत्ती दिन में दो बार उचित अनुपान से दें। इससे सभी स्त्री रोग दूर होते हैं तथा रज और योनि का शोधन होता है।

योनिशोधनार्थ लक्ष्मणारिष्ट

लक्ष्मणा की जड़ 5 सेर, पाक के लिये जल 2 मन 22 सेर 32 तोले, अवशिष्ट क्वाथ 25 सेर 48 तोले। इस क्वाथ में गुड़ 10 सेर घोल दें तथा निम्न प्रक्षेप द्रव्य महीन पीस कर मिलावें —

धाय के फूल 64 तोले, नागरमोथा, मुलहठी, खिरेंटी, त्रिफला, हल्दी, दारुहल्दी, जीरा, लाल चन्दन, श्वेत चन्दन, अजमोद, अजवाइन और बेलगिरी 4-4 तोले।

सभी को मिला कर चिकने घड़ों में मुख बन्द करके एक मास तक रखें, तत्पश्चात् छान कर बोतलों में भर लें।

मात्रा — सवा तोले से ढाई तोले तक समान भाग जल मिला कर देनी चाहिये। इसके सेवन से सब प्रकार के स्त्री- रोग नष्ट हो जाते हैं। योनि और शोणित की शुद्धि होकर गर्भ- क्षमता प्राप्त होती है।

योनिदोष नाशक अन्य औषधियाँ

- योनिदोष दूर करने के लिये यह चूर्ण भी खूब उपयोगी है —

वच, काला जीरा, श्वेत जीरा, छोटी पीपल, अडूसा, सेंधा नमक, अजमोद, यवक्षार, चित्रकमूल और मिश्री, समान भाग लेकर यथा विधि- चूर्ण कर लें।

मात्रा — 2 माशे चूर्ण को उतने ही घृत के साथ भूनें और खाकर ऊपर से प्रसन्ना सुरा में घोल कर सेवन करावें। इससे सभी प्रकार के योनि- दोष दूर होते हैं। हृद्रोग, गुल्म और अर्श प्रभृति रोगों में भी यह बहुत हितकर है। निम्न योग का वयवहार भी योनि- शोधन के लिये करना चाहिये —

लक्ष्मणा की जड़ और सुदर्शन की जड़ पीस कर ऋतु स्नान के पश्चात् 3 दिन पिलाने से योनि शुद्ध तथा रोग- रहित हो जाती है और वह स्त्री पुत्रोत्पत्ति के योग्य हो जाती है। शास्त्रीय मत है कि लक्ष्मणा की जड़ पुष्प नक्षत्र में उखाड़ कर लायें और उसे कुमारी कन्या के हाथ से, जल- योग से पिसवा कर पिलायें तो अद्भुत फल होता है। मतान्तर से इसकी नस्य देना भी हितकर है। कुछेक विद्वान् इस योग में कन्या शब्द का अर्थ ग्वारपाठा करते हैं। अर्थात् उक्त दोनों जड़ों को ग्वारपाठे के स्वरस के साथ पीस कर दें। वस्तुतः ग्वारपाठे के योग पाचन तन्त्र और प्रजनन तन्त्र दोनों पर अनुकूल प्रभाव डालते हैं। एक अन्य योग भी योनि और गर्भाशय के शोधन में अत्यन्त प्रभावकारी है — रजोस्नान के पश्चात् शुद्ध हुई नारी, उस दन तो उपवास करे और दूसरे दिन श्वेतबला (सफेद खिरेंटी) की जड़ और मुलहठी 1-1 तोला का चूर्ण 4 तोले मिश्री के साथ मिला कर, जीवित बछड़े वाली गाय के दूध में पीस कर तथा घृत मिला कर पीवे। उस दिन कुछ अन्न आदि का सेवन न करे, वरन्

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
भूख लगने पर उसी गाय का दूध पीना चाहिये। रात्रि में पति- संग करे तो गर्भाधान सम्भव है। जिसका दूध लिया जाय, वह गाय एक ही रंग की हो, उसके बछड़े कभी न मरे हों। वरन् गाय और बछड़े का रंग भी एक समान हो। गर्भाशय शोधनार्थ — यह औषधि अत्यन्त लाभकारी है —

स्वर्ण भस्म, रौप्य भस्म और ताम्र भस्म समान भाग लेकर 3 घंटे तक घोंट कर रखें।

मात्रा — 2 रत्ती, गोघृत 6 माशे के साथ सेवन करावें। इससे गर्भाशय का शोधन होकर गर्भ स्थिति हो जाती है। जो स्त्रियाँ शारीरिक रूप से दुर्बल हों, उन्हें इस योग में समान भाग मुक्तापिष्टी मिला कर सेवन कराने से बहुत लाभ होता है। पलाश गर्भाशय शोधन में बहुत उपयोगी है। पुत्र की कामना वाली नारी को इसका सेवन अवश्य कराना चाहिये।

पलाश - पत्र का योग

पलाश (ढाक) का 1 ताजा पत्ता तोड़ कर लावें। उसे धो कर साफ करें और पीस कर जीवित बछड़े वाली गाय के दूध के साथ पिलावें। उससे योनि और रज का शोधन होता है तथा गर्भ - स्थिति भी होती है। यदि गर्भवती इसका सेवन करे तो उसे अवश्य ही रूपवान पुत्र की प्राप्ति होती है।

पलाश - पानक का गर्भाशय पर प्रभाव

ढाक के ताजा पत्ते लाकर पानी के साथ पीस कर कल्क बनावें और दुगुने पानी के साथ क्वाथ करें। आधा पानी शेष रहने पर उतारें तथा मिश्री समान भाग के साथ चाशनी करके शर्वत बना लें।

मात्रा — 3-3 चम्मच दिन में 3-4 बार देने से शोणित और गर्भाशय का शोधन होता है। अथवा असगन्ध के क्वाथ के साथ गाय का दूध समान भाग मिला कर पकावें और उसमें गोघृत 6 माशे डाल कर ऋतुस्नान के पश्चात् पिलावें तो गर्भाशय शुद्ध होकर, गर्भ धारण होता है।

वन्ध्यत्वनाशक गरीबी चूर्ण

सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल और नागकेशर समान भाग का चूर्ण, गोघृत में मिला कर सेवन करावें। इससे वन्ध्या भी पुत्रोत्पत्ति के योग्य हो जाती है।

6. अत्यार्तव रोग

रोग विवेचन एवं कारण

मासिक स्राव में अधिकता भी रोग सूचक है। स्राव की अधिकता से शरीर में दुर्बलता आ जाती है, सिर दर्द, कटि में दर्द, योनि शूल आदि उपसर्गों के साथ भी इसकी व्याप्ति देखी गई है। इसके अनेक कारण हो सकते हैं —

किसी रोग विशेष के कारण गर्भाशय पर प्रभाव पड़ने से अत्यार्तव की उत्पत्ति, किन्तु कभी- कभी बाद में नष्टार्तव या कष्टार्तव के रूप में परिवर्तित हो जाना। ऐसा थाइराइड (गलग्रन्थि) की क्रिया में गड़बड़ी से भी सम्भव है।

उष्ण जलवायु से भी अत्यार्तव की प्रवृत्ति हो सकती है। ठण्डे प्रदेश से गर्म प्रदेश में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जाने से भी इसका होना सम्भव है।

गर्भाशय के भीतरी झिल्ली में कोई गड़बड़ी — उसमें किसी प्रकार का अर्बुद, क्षय, शोथ आदि। आधुनिक मतानुसार इस प्रकार के उपद्रव हार्मोनों के असन्तुलन से भी हो सकते हैं।

मनोविकार — शोक, चिन्ता, भय, द्वेष उत्तेजना आदि दुष्प्रभाव पड़ने से अत्यार्तव का होना सम्भव है। अधिक प्रसवों के पश्चात् गर्भाशय पेशी में विद्यमान लचक की कमी हो जाती है, क्योंकि एलास्टिक तन्तुओं में वृद्धि हो जाती है तो संकुचन- शक्तिमें कमी आने से स्राव अधिक होने लगता है।

युवावस्था के आरम्भिक दिनों में किसी- किसी बालिका के अत्यार्तव की प्रवृत्ति होती है। किन्तु वह प्रवृत्ति स्थायी नहीं होती। एकाध मास में स्वतः ही ठीक हो जाती है। इसलिये इस अवस्था में किसी प्रकार के औषधोपचार की आवश्यकता नहीं होती।

चिकित्सा सूत्र

अत्यार्तव रोग की ठीक चिकित्सा तभी हो पाती है, जबकि उसके कारण की जानकारी मिल जाय। क्योंकि कारण का निवारण रोग निवृत्ति का मुख्य उपाय है। वैसा न हो सकने की स्थिति में अनुमान से काम लिया जाता है। साथ ही यह व्यवस्था करें —

रोगिणी को कार्य न करने दें, उसे पूर्ण विश्राम की प्रेरणा दें।

पलंग का पायताना ऊँचा और सिराहना नीचा रखना चाहिये।

रोगिणी को दुश्चिन्ताओं से बचाना चाहिये। क्रोध, शोक, मोह आदि से दूर, शान्त रखने का यत्न करें। निम्न औषधोपचार शीघ्र लाभकारी हो सकते हैं—

सरफोंका की जड़ का कपड़छन चूर्ण 1 ग्राम की मात्रा में चावलों के पानी के साथ देने से अधिक रजःस्राव का शमन होता है। अथवा —सोनागेरू, मुलहठी, गूलर, खस, चन्दन, चौलाई और अडूसा का फूल समान भाग का चूर्ण 1 या डेढ़ ग्राम की मात्रा में वासा पानक या वासावलेह के साथ देना चाहिये। इससे भी रजःस्राव की कमी हो जाती है।

अत्यार्तव शामक योग

नागकेशर 24 ग्राम, मुक्ता भस्म, संगजराहत भस्म और नागभस्म 3-3 ग्राम, तीनों को खरल में घोट कर एक जीव कर लें। इसे 1-1 ग्राम की मात्रा में आवश्यक अन्तर से, निम्न द्राव के साथ सेवन करावें —

30 ग्राम जावित्री को महीन पीस कर, गुलाबजल और केवड़ा जल, प्रत्येक 100 मिग्रा. में डालें तथा चूर्णित मिश्री अथवा श्वेत शर्करा 100 ग्राम उसी में मिला कर, बोतल पर मजबूत डाट लगाकर 10-15 दिन रखी रहने दें, तत्पश्चात् छान कर रख लें।

इस प्रयोग से रोगिणी उद्वेग- रहित शान्त रहेगी, निद्रा भी आ सकती है, और रजःस्राव भी रुकेगा।

महिला संजीवनी वटी

चन्द्रपुटी प्रवाल भस्म 50 ग्राम, प्रवाल भस्म, वंग भस्म, कान्तलौह और रजत भस्म 30-30 ग्राम, सहस्रपुटी अभ्रक भस्म और मुक्ता भस्म 20-20 ग्राम, षड्गुण गन्धक जारित

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
मकरध्वज 1 ग्राम, स्वर्णमाक्षिक भस्म, संगजराहत भस्म और गिलोय सत 2-2 ग्राम लेकर खरल में घोटें। फिर — लाल चन्दन, मंजीठ, दारुहल्दी, काली सारिवा, बरगद की जटा, अशोक की छाल और वासा की छाल, प्रत्येक 100 ग्राम, इन्द्रजौ और छोटी इलायची के बीज प्रत्येक 50 ग्राम तथा वंशलोचन 20 ग्राम लेकर कूट- छान लें और भस्मों का मिश्रण भी इसी में मिलावें। तदुपरान्त क्रमशः खिरेंटी, सेमल की छाल और गूलर की छाल के क्वाथ में कम से कम 3-3 दिन खरल करके 1 ग्राम की गोलियाँ बनाकर छाया में सुखावें।

मात्रा — 1 से 2 सेर तक बलाबल के अनुसार मिश्रीयुक्त गोदुग्ध के साथ प्रातः- सायं सेवन करावें। इसके सेवन से अधिक रजःस्राव, रक्तप्रदर, श्वेत प्रदर, रक्तस्राव, गर्भाशय- प्रदाह तथा प्रसवोपरान्त गर्भाशय से अतिस्राव या गर्भाशय शैथिल्य में अभूतपूर्व लाभ होता है। नारियों के सभी रोगों में हितकर तथा बल, वर्ण और पुष्टि को बढ़ाने वाली है।

अधिक स्राव पर प्रभावकारी योग

गोदन्ती हरताल भस्म 50 ग्राम, सत गिलोय 25 ग्राम, फुलाई हुई फिटकरी, शुद्ध सोना गेरू और वासा घन- सत्व प्रत्येक 15 ग्राम ले कर ठीक प्रकार से खरल करके रखें।

मात्रा — 1 से 3 ग्राम तक धारोष्ण गोदुग्ध के साथ सेवन करावें। अथवा रोगिणी को अनुकूल प्रतीत हो तो केले की जड़ के स्वरस के साथ दें। इससे स्राव 3 दिन में ठीक हो जाता है। तब दवा बन्द कर देनी चाहिए। यदि स्राव पुनः आरम्भ हो जाय तो पुनः दे दें।

अधिक रजःस्राव रसायन

प्रवाल पिष्टी 10 ग्राम, लौह भस्म 2 ग्राम, मुक्ताशुक्ति भस्म 1 ग्राम, वासाघनसत्व, मुलहठी और श्वेत चन्दन 3-3 ग्राम, खरल करके रखें।

मात्रा — 1-1 ग्राम दिन में 3-4 बार तक अनार के स्वरस में शहद मिला कर, अथवा शर्वत अनार के साथ दें। इससे अत्यार्तव का शमन होता है।

औषधिक्रम में भोजनोपरान्त 20-25 मि.लि. तक अशोकारिष्ट अथवा वासारिष्ट देना अधिक हितकर रहता है।

सरफोंका की जड़ का चूर्ण करके चावलों के पानी के साथ सेवन करावें अथवा सरफोंका की जड़ चावलों के पानी में पीस कर पिलावें। अति रजःस्राव या रक्तस्राव इससे रुक जाता है।

सन्तान हेतु प्रभावकारी चिकित्साक्रम

सन्तानेच्छु नारियों के लिये यहाँ तीन चिकित्साक्रम लिख रहे हैं, उनमें से किसी एक का प्रयोग मासिक धर्म के पश्चात् शुद्ध स्नान करके आरम्भ करना चाहिये तथा गर्भास्थापना होने तक निरन्तर चलायें। यदि गर्भस्थिति न हो और मासिक धर्म हो जाय तो पुनः रजोस्नान के पश्चात् निरन्तर देना चाहिये। एक से लाभ न हो तो दूसरा क्रम चलाते जायें।

प्रथम चिकित्सा क्रम

- लक्ष्मणा लौह 2 गोली, लौह भस्म और प्रवाल भस्म 1-1 रत्ती प्रमाण। यह एक मात्रा है, ऐसी मात्राएँ प्रातः- सायं शहद में मिला कर देनी चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- लक्ष्मणारिष्ट समान जल मिला कर भोजनोपरान्त दोनों समय दें।
- रात्रि शयन के समय स्वर्णभस्म, रौप्य भस्म और ताम्र भस्म समान भाग का मिश्रण 1 रत्ती गोघृत के साथ, ऊपर से जीवित बछड़े वाली गाय का सुखोष्ण दूध, मिश्री मिला कर दें। अथवा निम्न चिकित्सा क्रम चालू कराना चाहिये—

द्वितीय चिकित्साक्रम

- सन्तानदाता रसयोग 3 गोली, संगज राहत भस्म 3 रत्ती मुक्तापिष्ठी 1 रत्ती, मिला कर 2 पुड़ियाँ बनावें। 1-1 पुड़िया प्रातः- सायं पलाश - पानक के साथ सेवन करायें।
- अशोकारिष्ट समान भाग का पानी मिला कर भोजनोपरान्त।
- पलाशपत्र- योग — अर्थात् ढाक का पत्ता सवत्सा गाय के दूध के साथ पीसकर, रात्रि - शयन समय पिलावें।

तृतीय चिकित्सा क्रम

यदि रोगिणी आर्थिक दृष्टि से अधिक दुर्बल हो तो उसे निम्न चिकित्साक्रम सुविधाजनक रहेगा —

- सोंठ, मिर्च, पीपल, नागकेशर का चूर्ण, सवत्सा गाय के घी में मिला कर प्रातःकाल और रात्रि शयन समय, 6 ग्राम से 10 ग्र ाम की मात्रा में दें।
- प्रातः 10 बजे और सायं 5 बजे पलाशपानक।
- अशोकारिष्ट भोजनोपरान्त दोनों समय दें। मासिक धर्म के दिनों में भी पलाशपत्र योग गोदुग्ध के साथ देना चाहिये। इससे उपर्युक्त चिकित्साक्रम के लिये उचित पृष्ठभूमि तैयार होती है। अथवा पलाश - पानक दिन में 2 बार सेवन करायें।

पथ्यापथ्य का, औषधि सेवन काल में पूरा ध्यान रखना चाहिये। कब्ज करने वाली, गरिष्ठ, दीर्घपाकी, लाल मिर्च, खटाई आदि से परहेज करना लाभदायक है।

7. गर्भरक्षार्थ मासिक औषधि व्यवस्था

गर्भाधान के पश्चात् भी गर्भिणी कभी- कभी विकारों से ग्रस्त हो जाती है। उन विकारों या उपद्रवों से बचाने तथा गर्भ की रक्षा करने के उद्देश्य से आयुर्वेद में अनेक योगों का वर्णन है। मास- क्रम से कतिपय योग यहाँ प्रस्तुत हैं—

प्रथम मास में गर्भरक्षार्थ व्यवस्था

प्रथम मास में, गर्भ सम्बंधी किसी प्रकार की पीड़ा न हो, अथवा पीड़ा उत्पन्न होने की शंका हो तो निम्न योग देना चाहिये —

तिल, पद्माख, कमलकन्द और शालि चावल समान भाग 6-6 माशे लेकर गोदुग्ध के साथ पीसें और उसे मधु- मिश्री युक्त गोदुग्ध में घोल कर गर्भिणी को पिलावें।

आहार — जब औषधि पच जाय, तब उसे भोजन दिया जाय उसमें गोदुग्ध की अधिकता होनी चाहिये। अथवा — श्वेत चन्दन, शतावर, भाँगरा और शर्करा मिश्री समान भाग 6-6 माशे लेकर चावलों के पानी के साथ पीस कर कल्क करें और उसे गाय के दूध में घोल कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
पिलावें। अथवा मुलहठी, सागौन के बीज, क्षीरकाकोली और देवदारू समान भाग का कल्क गाय के दूध में मिला कर दें। गर्भाशूल या गर्भ स्राव में भी हितकर है।

यह तीनों योग गर्भ- रक्षार्थ बहुत उपयोगी हैं। इनमें से किसी एक का सेवन करा सकते हैं। किन्तु लक्षणानुसार आवश्यक होने पर देना उचित है।

दूसरे मास में गर्भरक्षा- व्यवस्था

यदि द्वितीय मास में गर्भ में किसी प्रकार की गड़बड़ी हो अथवा गड़बड़ी की शंका हो तो कमल, सिंघाड़ा और कसेरू को चावलों के पानी के साथ पीस कर तथा चावलों के पानी में ही घोल कर पिलाना चाहिये। इससे गर्भ स्थिर होता है तथा गर्भशूल (दर्द) हो तो उसका भी शमन होता है। अथवा — पाषाण भेद, काले तिल, मंजीठ और शतावरी को समान भाग लेकर दूध के साथ कल्क करें और घोल कर दें या इनका क्वाथ करके सेवन करावें। गर्भस्राव, गर्भशूल प्रभृति विकारों का इससे शमन होता है। गर्भ की पुष्टि होती है।

तीसरे मास में गर्भरक्षार्थ सेवनीय योग

तीसरे मास में पीड़ा या उपद्रव की स्थिति प्रतीत हो तो गर्भिणी को निम्न योग सेवन कराना चाहिये — क्षीर काकोली, काकोली और आमला पानी के साथ पीस कर सुखोष्ण पानी के साथ पिलावें। अथवा पद्माख, कमल, कूट और कमलकन्द को मिश्रीयुक्त पानी के साथ पीस कर कल्क बनावें और गोदुग्ध में घोल कर सेवन करावें। अथवा बाँदा, क्षीर काकोली, कमल और अनन्तमूल समान भाग को दूध के साथ पीस कर या क्वाथ बना कर सेवन करावें। यह तीनों योग तीसरे मास में होने वाले गर्भशूल, गर्भस्राव आदि उपद्रवों का शमन करने में उपयोगी हैं।

चौथे मास में गर्भसुरक्षार्थ औषधियाँ

गोखरू, बड़ी कटेरी, नीलकमल और नेत्रबाला का दूध के साथ घोल कर कल्क बनायें और दूध में घोल कर पिलावें। अथवा गोखरू, छोटी कटेरी, कमल और कमलकन्द का कल्क दूध में मिला कर पिलायें। अथवा अनन्तमूल, काली सारिवा, रास्ना, भारंगी और मुलहठी का शीत कषाय या क्वाथ देश- कालादि देख कर सेवन कराना चाहिये।

इनमें से कोई एक योग देने से चौथे मास के उपद्रवों का समन सम्भव है।

पाँचवे मास में सेवनीय दवाएँ

नील कमल और क्षीर काकोली को पीस कर गोदुग्ध के साथ पकायें और असमान भाग घृत और मधु मिला कर पिलावें। अथवा — नीलकमल, ग्वारपाठा और काकोली समान भाग का शीतल जल के साथ कल्क बनाकर, दूध में घोल कर सेवन करावें। अथवा — बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी या कम्भारी के फल की छाल का कल्क या क्वाथ देना चाहिये।

बरगद की कोंपल और छाल भी पीस कर कल्क बनाने और दूध में घोल कर पिलाने से लाभकर होती है। ये सभी योग गर्भरक्षक, गर्भिणी की पीड़ा - शामक तथा स्राव को रोकने वाले हैं।

छठे मास में सेवनीय दवाएँ

बिजौरा नींबू के बीज, प्रियंगु- पुष्प, श्वेत चन्दन और कमल को दूध से पीस कर और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दूध में ही घोल कर दें।

चिरोंजी, मुनक्का और धान की खीलों का सत्तू, ठण्डे पानी में मिला कर पिलाने से गर्भशूल, स्राव आदि का निवारण होता है।

पृष्ठिपर्णी, खिरेंटी, सहजने की छाल, गोखरू और मुलहठी के दूध के साथ कल्क एवं घोल का सेवन कराना चाहिये। गर्भशूल, गर्भस्राव आदि उपद्रवों का शमन होता है।

सातवें मास में औषधि- योग

शतावर और कमलनाल समान भाग लेकर पीसें और गोदुग्ध के साथ सेवन करावें।

अथवा कैथ, सुपारी की जड़, धान की खील और शर्करा या मिश्री का पानी के साथ कल्क करें और दूध में घोल कर पिलावें। अथवा सिंघाड़ा, कमलनाल, मुनक्का, मुलहठी, कसेरू और शर्करा का कल्क गोदुग्ध के साथ पीसें और उसी में घोल कर सेवन करायें।

इन योगों से सातवें महीने के उपद्रव योनिशूल, गर्भस्राव, गर्भपातादि का निवारण और गर्भरक्षा होती है।

आठवें मास में सरल औषधि

यदि आठवें मास में गर्भशूल हो तो धनिया पीस कर चावलों के पानी के साथ पिलावें। अथवा—ढाक का पत्ता पानी के साथ घोट कर पिलावें। पलाश पानक भी उपयोगी है। गर्भशूल का शमन होता है और गर्भ भी सुपुष्ट रहता है।

नवें मास में सेवनीय औषधि

वटवृक्ष की जड़ और काकोली को पीस कर ताजा पानी के साथ पिलावें। अथवा—पलाश ढाक के बीज, काकोली और पियावासा की जड़ पीस कर चावलों के पानी के साथ सेवन करावें। नवम मास के उपद्रव- गर्भशूल आदि में हितकर है।

दशम मास में सेवनीय औषधि

यद्यपि दशम मास में प्रसव होता है, किसी- किसी को पहिले या बाद में भी होता हुआ देखा है। गर्भ पूर्ण विकसित होने से पूर्व समय से पूर्व पीड़ादायक हो तो यह औषधि देनी चाहिये।

नील कमल, मुलहठी, मूँग और शर्करा सम भाग को पानी के साथ पीस कर और दूध में घोल कर गर्भिणी को पिलावें।

इस योग में असमय की पीड़ा या गर्भपात से सुरक्षा सम्भव है।

आयुर्वेद में ग्यारहवें और बारहवें मास में पीड़ा होने से बचाव के लिये औषधियाँ लिखी हैं। यद्यपि वैसा प्रायः नहीं होता, फिर भी उसका उल्लेख किये देते हैं —

ग्यारहवें मास में गर्भ- पीड़ा हो तो मुलहठी, पद्माख, कमलनाल और नीलकमल समान भाग को पानी के साथ पीस कर और दूध में घोल कर पिलावें।

बारहवें मास की पीड़ा में मिश्री, बिदारीकन्द, काकोली और क्षीरविदारी को पानी के साथ पीस कर और दूध में घोल कर गर्भिणी को पिलाना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गर्भस्राव शामक योग

- सोनागेरू और राल का चूर्ण शहद के साथ सेवन कराने से गर्भस्राव धीरे- धीरे रुकता है और गर्भशूल मिट जाता है।
- कसेरू, सिंघाड़ा, कमल, नीलकमल, वटवृक्ष की जड़, शतावर और जीवनीयगण की सभी औषधियाँ, इनके साथ सिद्ध किये हुए दूध में मिश्री मिला कर पीने से चलायमान गर्भ भी स्थिरता को प्राप्त होता है।
- पिण्ड खजूर में स्वर्णमाक्षिक भस्म 2 रत्ती मिला कर मुलहठी के साथ यथाविधि सिद्ध किया हुआ, मिश्रीयुक्त ठण्डा दूध पिलाने से गर्भस्राव अवश्य रुक जाता है।
- त्रिफला चूर्ण 2-3 ग्राम में लौहभस्म 2 रत्ती मिला कर, शहद के साथ देने से भी गिरता हुआ गर्भ रुकता और दृढ़ हो जाता है।
- पीपल की छाल का चूर्ण 3 से 6 ग्राम तक ताजा पानी के साथ पिलावें। गर्मस्राव बन्द होगा और गर्भ पुष्ट होगा।
- श्वेत राल का चूर्ण भी रक्तस्राव को बन्द कर देता है।
- नीलकमल मूल, लाजवन्तीमूल, धाय के फूल, लोध और मुलहठी समान भाग का चूर्ण 2-3 ग्राम की मात्रा में दूध मिश्री के साथ सेवन करायें। गर्भपात नहीं होगा, गर्भरक्षा और गर्भिणी का स्वास्थ्य भी ठीक होगा।
- कुशा की जड़, काँस की जड़, एरण्ड मूल की छाल और छोटे गोखरू 5-5 ग्राम लेकर जौकुट करके रखें। इसमें से 10-12 ग्राम लेकर एक वस्त्र में बाँधकर पोटली बनावें।

रात्रिं शयन समय एक पाव गोदुग्ध में समान भाग पानी मिला कर अग्नि पर चढ़ावें और इसमें उपर्युक्त चूर्ण की पोटली डाल दें। जब पानी जल कर, दूध मात्र शेष रहे तब पोटली निकालें और दूध में कुछ मिश्री मिला कर गर्भिणी को पिलावें।

यह गर्भरक्षा के लिये महौषधि है। अल्प मूल्य और अल्प परिश्रम में तैयार होती है। इसे गर्भाधान के दूसरे मास से ही आरम्भ करें और प्रसवकाल तक निरन्तर चलाते रहें। इससे गर्भस्राव, गर्भपात तथा अन्यान्य उपद्रवों का शमन होकर गर्भ की रक्षा होती है।

गर्भरक्षक अव्यर्थ औषधि

सालम मिश्री, शकाकुल मिश्री, शतावर, बहमन लाल, बहमन श्वेत और छोटी इलायची के बीज 50-50 ग्राम तथा स्वर्णमाक्षिक भस्म 10 ग्राम, मिश्री 300 ग्राम।

सभी काष्ठौषधियों को कूट- कपड़छन करें और उसमें मुक्तापिष्ठी और भस्म मिला कर, 3 घंटे तक खरल करके रख लें।

मात्रा — 4 से 6 ग्राम तक गर्म करके ठण्डा किये हुए मिश्रीयुक्त गोदुग्ध के साथ प्रातः- सायं नित्यप्रति सेवन करायें।

इसके सेवन से निरन्तर सेवन से गर्भ- समय में कोई उपद्रव उत्पन्न नहीं हो पाता। गर्भ- स्राव, गर्भपात तथा मृतवत्सा दोष की भी निवृत्ति हो जाती है। गर्भ सुपुष्ट होकर सुन्दर, स्वस्थ बालक उत्पन्न होता है।

इसका सेवन दूसरे, तीसरे या चौथे मास से, यथा— आवश्यकता प्रसव होने से पूर्व

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कराना चाहिये ।

गर्भरक्षक वर्धमान पलाशपत्र

यह योग अपने ढंग का अद्भुत एवं अत्यन्त प्रभावकारी है । इसका आरम्भ प्रथम मास में ढाक के एक पत्ते से होता है, और प्रतिमास 1 पत्ता बढ़ा दिया जाता है। अर्थात् प्रथम मास में 1 पत्ता, दूसरे में 2 और तीसरे मे 3 पत्ते, नवें मास नौ पत्ते सेवन कराने चाहिये ।

प्रथम मास ढाक का 1 पत्ता क्षीरपाक विधि से —

स्वच्छ ढाक- पत्र को महीन टुकड़े करके पावभर गोदुग्ध में उतना ही ताजा पानी मिला कर अग्नि पर पकावें और दूध मात्र शेष रहने पर छानें और उसे मिश्रीयुक्त गोदुग्ध के साथ पिलावें । प्रतिमास 1-1 पत्ती बढ़ाते चलें । दूध को बढ़ाने - घटाने का नियम नहीं है, गर्भिणी जितनी मात्रा में पी सके, उतना इच्छानुसार पिलाना उचित है ।

गर्भविनोद रस

त्रिकुटा सोंठ, मिर्च, पीपल, जावित्री और लौंग 3-3 तोले, स्वर्णमाक्षिक भस्म 2 तोले और शुद्ध सिंगरफ 4 तोले, अत्यन्त महीन पीस कर पानी के साथ घोटें और 2-2 रत्ती की गोलियाँ बना लें । 1-1 गोली प्रातः- सायं उचित अनुपान के साथ प्रातः- सायं सेवन करावें। इससे गर्भवती को होने वाले सभी रोग नष्ट हो जाते हैं ।

स्वर्ण चिन्तामणि और गर्भविलास रस

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, शुद्ध तूतिया, तीनों समान भाग लेकर खरल में डालें और क्रमशः जम्बीरी नींबू के स्वरस और त्रिकुटा के क्वाथ में 3-3 दिन खरल करके आधी- आधी रत्ती प्रमाण गोलियाँ बना कर छाया में सुखा लें ।

पारद- गन्धक की कज्जली करके तूतिया मिलाना चाहिये । मात्रा का निश्चय बलाबल और उपसर्ग भेद से करना उचित है । इससे गर्भवती के विकार — शूल, कब्ज, अजीर्ण तथा ज्वरादि भी नष्ट हो जाते हैं ।

शास्त्र - मतानुसार ही इस योग में तूतिया के स्थान पर स्वर्ण भस्म डालें तो यह अत्यन्त प्रभावकारी बन जाता है । तब उसका नाम भी गर्भाविलास के स्थान पर स्वर्ण चिन्तामणि होता है ।

गर्भ चिन्तामणि रस

रस सिन्दूर, शुद्ध कर्पूर, चाँदी की भस्म, लौह भस्म, वंग भस्म, ताम्र भस्म 1-1 तोला, अभ्रक भस्म 2 तोले, जायफल, जावित्री, गोखरू, शतावरी, खिरेंटी की जड़ और कंघी की जड़ 1-1 तोला ।

इन सबको जल योग से 3 घंटे खरल करके 2-2 रत्ती की वटी बनावें और प्रातः- सायं उचित अनुपान से सेवन करावें । इससे गर्भिणी के सभी विकार ज्वर, दाह, सन्निपातज ज्वर तथा सूतिका रोग भी नष्ट होते हैं ।

गर्भिणी रोगहर इन्दुशेखर रस

शुद्ध शिलाजीत, अभ्रक भस्म, रस सिन्दूर, प्रवाल भस्म, लौह भस्म, स्वर्ण माक्षिक भस्म

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
और हरताल समान भाग लेकर 3 घंटे तक खरल में एकजीव करें। तदुपरान्त क्रमशः भृंगराज स्वरस, अर्जुन- छाल के क्वाथ, सँभालू के क्वाथ, वासा स्वरस, स्थल कमल, कमल और कुटज के क्वाथ की 1-1 भावना देकर मटर के बराबर गोलियाँ बनावें और छाया में सुखा लें। मात्रा और अनुपान का रोगानुसार निर्णय करें।

इसके सेवन से गर्भिणी के अनेक रोग, जैसे कि ज्वर, खाँसी, श्वास, शिरःशूल, रक्तातिसार, वमन, मन्दाग्नि, आलस्य और दुर्बलता आदि रोग अवश्य दूर हो जाते हैं।

कल्बुलहज्र का स्त्री रोगों में अद्भुत प्रभाव

कल्बुलहज्र को पत्थर का दिल, पाषाण जीव आदि भी कहते हैं। इसकी प्राप्ति भारतवर्ष में हिमालय तथा झाँसी और ग्वालियर आदि के पर्वतीय क्षेत्रों में होती है। यह पृथक् प्रकार का पत्थर बड़े पत्थरों को काटने पर, उनके मध्य में मिलता है। इसका रंग श्वेत होता है। यह स्त्रियों के अनेक रोगों में अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध हुआ है। दोनों प्रकार के प्रदर, रजाधिक्य, गर्भस्राव, गर्भपात, वन्ध्यत्व तथा हिस्टीरिया आदि में अपना चमत्कार दिखाता है। पुरुषों के रोग, प्रमेह, स्वप्न दोष, शुक्रतारल्य आदि में भी इसे अन्य औषधियों के साथ अथवा स्वतन्त्र रूप से भी सफलतापूर्वक दिया जाता है। मूत्रकृच्छ, क्षय, विशूचिका, रक्तार्श, सर्पविष तथा अन्य प्रकार के विषों को दूर करने में भी उपयोगी है।

कल्बुलहज्र के मिश्रण से बनाया जाने वाला यह योग गर्भरक्षा, गर्भ की पुष्टि, स्राव आदि के शमन में अधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है —

वंशलोचन 10 ग्राम, कल्बुलहज्र1 ग्राम, असली चाँदी को वर्क 10 नग और मुनक्का 20 नग लें। सबको खरल करके, आठ मात्राएँ करें। यह दवा गर्भाधान के उद्देश्य से ऋतु स्नान के पश्चात् 3 दिन तक गोदुग्ध के साथ दें। गर्भाधान होने पर प्रतिमास 1 मात्रा सेवन कराते रहें। इससे गर्भस्राव, गर्भपात या उस प्रकार का कोई उपद्रव नहीं होगा और पुष्ट सन्तान अर्थात् पुत्र ही उत्पन्न होगा।

गर्भिणी के ज्वर निवारणार्थ क्वाथ

एरण्डमूल, गिलोय, मंजीठ, लाल चन्दन, देवदारु और कमल समान भाग लेकर यथाविधि क्वाथ करके पिलाने से ज्वर शान्त हो जाता है। ज्वर का लक्षण समझ कर, ज्वर प्रकरण में लिखित अन्य अनुकूल दवाएँ भी दी जा सकती हैं।

गर्भावस्था में वमन और औषधोपचार

प्रायः देखा जाता है कि गर्भस्थिति होने के पश्चात् स्त्रियों को वमन या वमनेच्छा का कष्ट उत्पन्न हो जाता है। उसके साथ कब्ज, अरुचि तथा सिरदर्द आदि भी उपस्थित हो जाते हैं। इसके लिये आवश्यक है कि आहार में सुधार किया जाय और साथ ही कोई हल्का विरेचन भी दे दिया जाय, जिससे कि संचित मल सुखपूर्वक निकल सके। इस उद्देश्य से रात्रि- शमन समय त्रिफला चूर्ण 2-3 ग्राम की मात्रा में गर्म गर्म पानी के साथ दे देने से प्रातःकाल 1 दस्त साफ हो सकता है। अथवा निम्न योग गर्भिणी को बलाबल अनुसार उचित मात्रा में देना हितकर रहेगा —

बड़ी हरड़ का वक्कल, गुलाब के फूल, सोंठ और मुनक्का को पानी में पकाकर पिलावें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
इससे दस्त हो सकता है। सामान्य कोष्ठ वाली स्त्री को तो गुलकन्द 5-6 ग्राम और मुनक्का 4 नग मिला कर खाने और ऊपर से गर्म दूध पीने से भी दस्त हो जाता है।

यदि गर्भिणी को कब्ज न हो, किन्तु वमनेच्छा या वमन हो तो निम्न औषधियों में से कोई एक देने से, उसका शमन हो जाता है —

- जायफल को चावलों के धोवन के साथ घिसें इसमें मिश्री और नींबू का रस मिला कर पिलावें। इससे वमनेच्छा या वमन शीघ्र ही रुक जाती है। यह योग गर्भिणी को कभी भी दिया जा सकता है, क्योंकि किसी प्रकार की हानि नहीं करता।
- मुनक्का बीज निकाल कर, छोटी इलायची के दाने, बादाम की मिंगी और मिश्री समान भाग लेकर, कूट- पीस कर झरबेरी के बराबर की गोलियाँ बनावें। यदि जी मिचलाये, उबकाई अथवा वमन आये तो इनमें से 1-1 गोली मुख में रख कर चूसने को दें। इससे गर्भिणी के वमन प्रभृति विकार अवश्य दूर होते हैं। यह गोली जुकाम में भी लाभ करती है।
- मिश्री 10 ग्राम, छोटी इलायची के दाने 5 ग्राम और मुलहठी 5-5 ग्राम तथा पीपरमेंट आधा ग्राम। गुलाबजल के साथ खरल करके झरबेरी के समान गोलियाँ बना कर रखें। 1-1 गोली मुख में रखने से वमन, उबकाई, अरुचि आदि को दूर करती है।
- छोटी इलायची के दाने, सौंफ, काली मिर्च और मिश्री समान भाग की गोलियों से भी जी मिचलाने अथवा वमन में लाभ होता है।
- मिश्री का महीन चूर्ण 250 ग्राम, शुद्ध कुचला का महीन चूर्ण 1 ग्राम खरल में 6 घंटे निरन्तर घोट कर ठीक प्रकार से मिलावें। आवश्यक होने पर यह चूर्ण, दिन में 2 बार, 1-1 ग्राम की मात्रा में पानी के साथ सेवन करायें। इससे भी वमन प्रभृति उपसर्ग रुक जाते हैं।
- सितोपलादि चूर्ण 1 ग्राम शहद में मिला कर दिन में 2-3 बार सेवन कराना से वमन, कास आदि में लाभकारी होता है।
- केवल छोटी इलायची का चूर्ण मिश्रीयुत 1 चुटकी भर मुख में 3-4 बार डालने से वमन रुक जाती हैं।

गर्भावस्था में योनि- कण्डु (खाज)

गर्भावस्था में, योनि में खाज होने से गर्भिणी को बहुत कष्ट रहता है। खुजली के वेग को जब रोक नहीं पाती तो खुजाते- खुजाते परेशान हो जाती है। कभी- कभी खरोंच भी लग जाती है, उसमें जलन होती है तो लेटने- बैठने या वार्तालाप करने में भी मन नहीं लगता। वस्तुतः खाज होने का मुख्य कारण योनि- स्थान को स्वच्छ न करना है। सफाई के प्रति आलस्य से मैल जमता और व्रण या क्षत भी हो सकते हैं। खुजली के शमनार्थ-कुछ उपाय प्रस्तुत हैं —

- किसी कृमिनाशक औषधियुक्तघोल से योनि और उसके निकटस्थ भागों को ठीक प्रकार से नित्यप्रति धोना चाहिये। नीम के पत्तों को उबाल कर, उस पानी को छानें और उसके साथ योनि का प्रक्षालन करें।
- हरड़, आमला, गिलोय और जमालगोटा समान भाग लेकर क्वाथ करें फिर उतार कर,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
छानें और बोतलों में भर कर रख लें। आवश्यकतानुसार इसमें से लेकर योनि का ठीक प्रकार से प्रक्षालन करें।

- निबौली के तैल को मलने से भी खाज दूर हो जाती है।
- शुद्ध अफीम, कर्पूर और सुहागा 1-1 ग्राम को पीस कर एक बोतल गुलाबजल में घोल कर 24 घंटे रखें और फिर छान लें। इसमें से थोड़े- से घोल में स्वच्छ एवं कोमल वस्त्र का एक टुकड़ा भिगो कर खुजली वाले स्थान पर लगावें। इससे खुजली तथा जलन भी मिट जाती है।
- अरहर के पत्तों से सिद्ध किये हुए सरसों के तैल का लेप करने लगाने से योनि स्थान की खाज, व्रण तथा योनि का फटना आदि कष्टों का शमन होता है।
- पाढल की जड़ को पानी के साथ पीस कर लेप करने से भी फटी हुई योनि ठीक होती है।
- आमले के स्वरस में मिश्री मिला कर पिलावें। इससे योनि- कण्डु (खाज) जलन आदि का स्वतः निवारण हो जाता है।

गर्भावस्था के अतिसार पर औषधियाँ

कुछ गर्भवती महिलाओं को दस्त लग जाते हैं। उन्हें निम्न उपायों से ठीक किया जाता है—

- अतीस का चूर्ण 2-3 ग्राम की मात्रा में मधु के साथ चटावें। इससे अतीस में शीघ्र लाभ होता है।
- अनार को फुटपाक विधि से पकावें और उसका रस निकाल लें इस रस में 25 मि.लि. और मधु 10 ग्राम मिला कर सेवन करायें। इससे दस्त रुक जाते हैं। रस की मात्रा न्यूनाधिक भी हो सकती है।
- सोंफ और नागकेशर 10-10 ग्राम, बड़ी इलायची के दाने और काला नमक 5-5 ग्राम और काला जीरा 3 ग्राम, कपड़छन चूर्ण करके 4 पुड़ियाँ बनावें। 1-1 पुड़िया प्रातः- सायं, ताजा पानी के साथ पिलाने से दस्त बन्द हो जाते हैं।
- शालिपर्णी, पृष्ठपर्णी, खिरेंटी, बेलगिरी और अनार का छिलका समान भाग लेकर कपड़छन चूर्ण करें। रोगानुसार देने से यह योग ज्वर, अतिसार, वमन को भी दूर करता है। अथवा उक्त औषधि- द्रव्यों का क्वाथ बनाकर पिलाने से भी ज्वर, वमन, अतिसार आदि दूर होते हैं।
- बड़ी इलायची के दाने, पोस्त के दाने और सोंफ समान भाग लें। प्रथम पोस्त के दाने और सोंफ को भून कर पीस लें और बड़ी इलायची को भी चूर्ण करके उसमें मिला कर, खरल में ठीक प्रकार से घोटें और कपड़छन करके रखें।

मात्रा — 2-3 ग्राम तक, यह चूर्ण ठण्डे पानी के साथ दिन में 2-3 बार सेवन करायें। इससे गर्भावस्था में हुए दस्त दो दिन में ही रुक जाते हैं।

नागरमोथा, खस, जवासा, गिलोय, पित्तपापड़ा, अरलू, अतीस, धनियाँ, खिरेंटी, सुगन्धवाला और रक्तचन्दन समान भाग का यथाविधि क्वाथ बनाकर सेवन कराने से गर्भिणी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
के ज्वर, अतिसार और संग्रहणी में भी लाभ होता है।

आम की छाल और जामुन की छाल का क्वाथ भी गर्भावस्था की संग्रहणी और अतीसार में अत्यन्त हितकर है।

गर्भावस्था में पेचिश (आमातिसार)

यदि गर्भिणी को पेचिश के साथ ज्वर भी हो तो उसे यह क्वाथ लाभदायक होगा —

- पाठा, इन्द्रजौ, चिरायता, नागरमोथा, पित्तपापड़ा और गिलोय, समान भाग का यथाविधि काढ़ा बना कर दें। ज्वरयुक्त आमातिसार में बहुत उपयोगी है।
- धनियाँ, सोंठ, सुगन्धवाला, नागरमोथा और बेलगिरी का क्वाथ भी गर्भिणी के आमातिसार में शीघ्र लाभ करता है। अथवा मुनक्का, गुलाब- पुष्प, सोंफ और बड़ी हरड़ का वक्कल समान भाग का यथाविधि क्वाथ बनाकर दें। यह गर्भवती के आमातिसार को दूर करने वाला उत्तम योग है।
- छोटी हरड़, सोंफ, सोंठ, प्रत्येक 10 ग्राम, सेंधा नमक 3 ग्राम लेकर कपड़छन चूर्ण कर लें।

मात्रा —2 ग्राम तक, ठण्डे पानी के साथ दिन में 2-3 बार देने से आमातिसार पर शीघ्र नियन्त्रण होता है।

- सामान्य पेचिश में चावल के पानी और ताजा तक्र को मिला कर पिलावें। किन्तु यदि पेचिश के साथ ज्वर भी हो तो तक्र (छाछ) नहीं देनी चाहिये।

गर्भिणी को कब्ज

- ईसबगोल 12 ग्राम लेकर पानी में 24 घंटे भिगोने के पश्चात् निकालें और समान भाग मिश्री मिला कर गर्भिणी को सेवन करावें तथा ऊपर से दूध पिला दें। यह औषधि रात्रि- शयन समय दें। इससे प्रातःकाल 1 साफ दस्त हो जायेगा।
- एरण्ड तैल (कैस्टर आइल) 25-30 मि.लि. सुखोष्ण गोदुग्ध के साथ पिलाने से प्रातः दस्त भी हो सकते हैं। गर्भिणी की क्षमता देख कर सेवन करायें।
- गुलकन्द 10-12 ग्राम गोदुग्ध के साथ लेने से भी कब्ज दूर हो जाता है।
- त्रिफला 30 ग्राम, सेंधा नमक और अजवाइन 10-10 ग्राम का यथाविधि कपड़छन चूर्ण करें। 3 से 6 ग्राम तक गर्मजल के साथ देने से खुल कर दस्त होगा और पाचन भी होगा।
- सोंफ़, गुलाब के फूल, मुनक्का, बादाम की गिरी, काली मिर्च और मिश्री की ठण्डाई प्रातः समय 2-3 दिन तक दें तो कब्ज मिट जायेगा।

यह योग ग्रीष्म ऋतु में अधिक हितकर रहता है।

गर्भवती को अनिद्रा

कुछ गर्भवती महिलाओं को नींद न आने की शिकायत रहती है। उसका एक सशक्त कारण चिन्ता, शोक, भय आदि हो सकता है, उसका निवारण करना अत्यावश्यक है। साथ ही निम्न योग भी अनिद्रा को दूर करने में हितकर हैं —

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- मकोय की जड़ को सूत से लपेट कर सिर पर धारण करावें। इससे अनिद्रा दूर होती है।अथवा काकजंघा की जड़ को इसी प्रकार सिर पर धारण करावें तो नींद आ जायेगी।
- शयन से पूर्व गर्भिणी अपने दोनों पाँव सुहाते हुए गर्म गुनगुने पानी में 5-7 मिनट रखे और फिर पोंछ कर सोवे तो नींद आ जाती है।
- गोदुग्ध पावों में और सिर में लगाकर मले तो भी नींद आ जाती है।
- भाँग को बकरी के दूध के साथ पीस कर पाँवों पर लेप करावें तो भी अनिद्रा दूर हो जायेगी। अथवा भाँग को यथाविधि भून कर चूर्ण करें। यह चूर्ण शहद के साथ सेवन करने से गर्भिणी को नींद आ जाती है। मात्रा बलाबल देख कर निश्चित करें।
- अनिद्रा को दूर करने में पीपलामूल भी प्रभावकारी है। इसका चूर्ण 5-6 ग्राम की मात्रा में गुड़ के साथ खिलाना चाहिये। भै.र.
- असगन्ध के बीजों का चूर्ण 1 ग्राम पानी या दूध के साथ सेवन करायें।

गर्भावस्था में मूर्च्छा

- गर्भवती को मूर्च्छा (बेहोशी) होने के अनेक कारण हो सकते हैं। यदि वे कारण दूर हो सकें तब तो अधिक उत्तम है। न हो सके, तो भी इन योगों से लाभ हो सकता है—
- चूना, नौसादर 1-1 भाग, कर्पूर आधा भाग मिला कर बोतल में रखें, मजबूती से उसका कार्क बन्द करें। आवश्यकता पर गर्भिणी के नथुनों के पास ले जाकर सुँघायें। इससे तुरन्त होश आ जाता है। अनुभूत है।
- ठण्डे पानी का सेंक, ठण्डे लेप, सुगन्धित इत्रादि लगाना और सुगन्धित मल्यादि धारण कराना सब प्रकार की मूर्च्छा दूर करने में सहायक हो सकते हैं।

छोटी पीपल का चूर्ण शहद के साथ चटावें। इससे मूर्च्छा दूर हो जाती है।

प्रवाल भस्म 5 ग्राम; लौहभस्म 3 ग्राम तथा पीपलामूल का चूर्ण 15 ग्राम लेकर, खरल में 5 घंटे तक घोट कर रखें।

मात्रा — 250 या 300 मिलीग्राम तक शहद के साथ प्रातः- सायं सेवन कराने से घोर मूर्च्छा पर भी काबू पा लिया जाता है।

- शिलाजीत 1 ग्राम, लौह भस्म और प्रवाल भस्म आधा- आधा ग्राम मिला कर 2 पुड़िया बनावें। 1-1 पुड़िया प्रातः- सायं शहद के साथ सेवन कराने से स्थायी रूप से मूर्च्छा रोग नियन्त्रण में आता है।
- रससिन्दूर को पीपल के चूर्ण सेवन कराने से मद तथा मूर्च्छा रोग दूर होता है।
- रात्रि शयन समय त्रिफला चूर्ण शहद के साथ और गुड़ के साथ अदरक का सेवन प्रातःकाल करने से मूर्च्छा, मद, कामला तथा उन्माद भी नष्ट हो जाता है।

मूर्च्छान्तक रस

रस सिन्दूर, स्वर्ण भस्म, स्वर्ण माक्षिक भस्म, शिलाजीत और लौह भस्म समान मात्रा में लेकर क्रमशः शतावरी और विदारीकन्द के स्वरस अथवा क्वाथ की भावना देकर 2-2 रत्ती की गोलियाँ बना लें। सब प्रकार की मूर्च्छा नष्ट करने में हितकर है। इसे उचित अनुमान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

से सेवन कराना चाहिये।

मूर्च्छानाशक सुधानिधि रस

रससिन्दूर और छोटी पीपल का चूर्ण समान भाग खरल कर शहद के साथ 4 रत्ती की मात्रा में सेवन कराने से मूर्च्छा दूर हो जाती है।

गर्भावस्था में चक्कर आना

चक्कर अर्थात् भ्रम का रोग दुर्बलता, कृशता, रक्ताल्पता आदि कारणों से सम्भव है। क्तचाप का नीचा होना, हृद्रोग आदि के कारण भी हो सकता है। उसमें यह योग दिये जा सकते हैं —

- जवासा का क्वाथ, गोघृत मिला कर सेवन कराने से चक्कर आना बन्द हो जाता है।
- सौंफ, सोंठ, मुलहठी और मुनक्का के साथ बादाम की गिरी मिला कर खरल में घोटें और उसके साथ प्रवाल भस्म 2 रत्ती मिला कर प्रातः- सायं सेवन करायें। चक्कर आना बन्द होगा और दुर्बलता दूर होगी।
- बादाम, मुनक्का और मिश्री समान भाग कूट कर 6-6 ग्राम के मोदक बना लें। प्रातः- सायं 1-1 मोदक गाय के दूध के साथ सेवन करायें। चक्कर आना, जुकाम, खाँसी, कब्ज भी दूर होगा।

गर्भावस्था में मूत्रावरोध

गर्भवती स्त्रियों में मूत्र के रुकने या खुल कर न होने की शिकायतें भी होती हैं। उसके लिये निम्न उपाय कर सकते हैं —

- कलमी शोरा और टेसू (ढाक) के फूल पानी के साथ पीस कर नाभि के इधर- उधर, चारों ओर लगायें। मूत्र शीघ्र ही खुलकर आने लगेगा।
- असगन्ध का क्वाथ पिलाने से भी मूत्र खुलकर होता है।
- गोखरू के क्वाथ में यवक्षार 2-3 ग्राम तक मिला कर पिलाने से पर्याप्त मात्रा में मूत्र उतरता है।
- पेठे के स्वरस में यवक्षार और गुड़ मिलाकर देने से भी मूत्रावरोध दूर होता है।
- दशमूल के क्वाथ में 4 रत्ती शुद्ध शिलाजीत और शर्करा मिला कर पिलाने से भी मूत्रावरोध नष्ट हो जाता है।
- शिलाजीत 2 रत्ती, मिश्री 1 ग्राम, शहद 3 ग्राम मिला कर सेवन करायें, मूत्रावरोध दूर होगा।
- नरकुल, कुश, काँस और ईख की जड़ का काढ़ा बना कर और उसमें मिश्री मिला कर प्रातःकाल पिलावें। मूत्राघात दूर हो जायेगा।
- बिम्बी की मूल काँजी के साथ पीस कर नाभि पर लेप करने से भी मूत्रावरोध मिट जाता है। इस प्रकार व्याधि के अनुरूप उचित चिकित्सा करने से गर्भवती को स्वस्थ रखा जा सकता है। प्रसूति के समय एक निरोग और प्रसन्न रहती हुई गर्भिणी स्वस्थ, सुन्दर शिशु को जन्म देती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सुखपूर्वक प्रसव हेतु औषधियाँ

कुछ स्त्रियों को प्रसव के समय अत्यधिक पीड़ा होती है। कभी- कभी तो उसका सहन करना भी कठिन हो जाता है। आयुर्वेद ने इस विषय में भी उचित उपाय बताये हैं।

- अडूसा (वासा) की जड़ पानी के साथ पीस कर नाभि, वस्ति और योनिस्थान पर लेप करने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।
- पाठा, कलिहारी या लटजीरा, इनमें से किसी एक की जड़ को पानी के साथ पीस कर लेप करना चाहिये।
- बिजौरे की जड़ का चूर्ण और मुलहठी का चूर्ण शहद मिला कर सेवन करावें। उसमें गोघृत भी मिला दें। सुखपूर्वक प्रसव होने के लिये यह उत्तम योग है।
- घर का धुआँ काजी के साथ मिला कर पिलाने से भी प्रसव सरलता पूर्वक हो जाता है।
- वंच और छोटी पीपल पानी के साथ पीस कर एरण्ड तैल में मिला कर नाभि पर लेप करने से प्रसव अविलम्ब हो जाता है
- कलिहारी की जड़ लाल रेशमी धागे में लपेट कर कमर में बँधवा दें। इससे भी प्रसव सहज, सुख पूर्वक, अविलम्ब हो जाता है।

मूढ़ गर्भ अथवा मृतवत्स पर प्रभावकारी दवाएँ

किसी- किसी स्त्री के गर्भ में मूढ़ गर्भ या मृत शिशु होता है जो कि सहज में नहीं निकल पाता। वरन् उसके कारण गर्भिणी के प्राण भी संकट में पड़ जाते हैं। उसके लिये—

- सर्पकेंचुल (सर्प की काँचली) को मिट्टी के दो सकोरों में भर कर कपड़मिट्टी से सन्धि बन्द करें और आरने उपलों की अग्नि में भस्म कर लें। यह भस्म खरल करके शीशी में रखें। 4 रत्ती यह भस्म निम्न अनुपान के साथ सेवन करानी खिलानी चाहिये —
- भैंस का ताजा गोबर, लगभग 2 तोले लेकर आधा सेर पानी के साथ पकाकर कपड़े में छानें। सर्प- केंचुल भस्म मुख में रखवाकर ऊपर से यह छना हुआ गोबर- क्वाथ पिला दें। इसके सेवन से प्रसव- विलम्ब, अत्यधिक पीड़ा तथा गर्भ में मरा हुआ बालक भी बाहर आ जाता है और वेदना बिल्कुल मिट जाती है।
- भैषज्य रत्नावली में सर्प केंचुल भस्म को आँखों में लगाने का निर्देश दिया है।
- सर्प की काँचली को शराब- सम्पुट में भस्म करके, शहद के साथ घोटें और आँख में लगावें। इससे स्त्री के गर्भ में स्थित मूढ़ गर्भ (मृत शिशु) बिना शल्य चिकित्सा के ही बाहर आ जाता है।
- नागदौन और चित्रकमूल समान भाग लेकर पानी के साथ पीस कर पिलावें। इससे अधिक समय का मृत या जीवित शिशु बाहर निकल आता है। हींग और सेंधा नमक काँजी के साथ पीस कर पिलाने से भी मुख से प्रसव होता है। गर्भिणी के सिर पर थोड़ा सा थूहर का दूध डालने से मृतगर्भ शीघ्र बाहर निकल आता है।

सूतिका रोगों के उपचार

जरायुपात में विलम्ब

प्रसूति काल में भी कभी- कभी कुछ कष्ट उपस्थित हो जाते हैं। यथा - आँवल (जरायु) का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
न गिरना आदि। उसके लिये आयुर्वेद में अनेक योग मिलते हैं —

- कड़वी तुम्बी, साँप की किंचुली, कड़वी तोरई और श्वेत सरसों के तेल में मिला कर धूनी देने से जरायु गिर जाता है।
- पाँवों पर कलिहारी की जड़ को पानी के साथ पीस कर लेप करने से भी जरायु गिर जाता है।
- यदि उक्त औषधियों से कार्य न चले तो प्रसूता को पिप्पल्यादिगण का चूर्ण काँजी के साथ पिलाने से आँवल गिर जाता है। पिप्पल्यादिगण यह हैं —
- पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, अतीस, सोंठ, जीरा, पाठा, हींग, रेणुका, मूर्वा, श्वेत सरसों, कुटकी, काली मिर्च, वकायन, इन्द्रयव, अजमोद, छोटी इलायची, भारंगी और वायविडंग। इनका यथाविधि कपड़छन चूर्ण 2 ग्राम की मात्रा में काँजी के साथ मिला कर पिलावें। अथवा उक्त पिप्पल्यादिगण का क्वाथ करके पिलाना चाहिये।

सूतिका को मक्कल- शूल

सद्यः- प्रसूता नारी के हृदय, सिर और बस्ति में शूल होता है, उसे मक्कल शूल कहते हैं। इसमें भी उपर्युक्त पिप्पल्यादिगण का काढ़ा देने से लाभ हो जाता है। उस काढे में सेंधा नमक मिला लेना चाहिये।

सूतिका को ज्वरादि उपद्रव

कुछ स्त्रियों को प्रसूति काल या उसके बाद ज्वर, दाह, शूल आदि उपद्रव उत्पन्न हो जाते हैं। उसके निवारणार्थ निम्न औषधोपचार अधिक लाभकारी हैं —

- पियावाँसा, नागरमोथा, गिलोय, प्रसारिणी, सोंठ और सुगन्धबाला का क्वाथ, शहद डाल कर पिलायें। इससे प्रसूता का ज्वर और दर्द मिट जाता है।
- केवल पियावासा की जड़ के क्वाथ में पीपल का चूर्ण मिला कर पिलाने से ज्वर, मन्दाग्नि आदि सभी विकार और प्रसूता- रोग दूर होते हैं।
- पियावाँसा के क्वाथ को सायंकाल बनावें और उसे रात्रि में रखा रहने दें तथा प्रातःकाल पिलावें। इससे प्रसूता के अनेकों रोग दूर हो जाते हैं।
- पियावाँसा की जड़ को प्रसूता मुख में डाल कर चबायें तो भी अनेक प्रसूति- रोग मिट जाते हैं।
- पियावाँसा की जड़, पुष्करमूल, वेंत की जड़, कटाई की जड़, देवदारु और कुलथी का यथाविधि क्वाथ करके, उसमें थोड़ी- सी भुनीहींग और सेंधा नमक डाल कर प्रसूता को पिलावें। इससे सब प्रकार के प्रसूति का ज्वर तथा शूल मिट जाते हैं।
- गिलोय, सोंठ, पियावासा, प्रसारिणी, पंचमूल, शालिपर्णी, पृश्निपर्णी, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी और गोखरू तथा नागरमोथा का यथाविधि क्वाथ बनाकर और उसमें 6 माशे शहद डाल कर पिलावें। सभी सूतिका रोगों में हितकर है।

सूतिकार्थ दशमूल क्वाथ

शालपर्णी, पृश्निपर्णी, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, गोखरू, नीली कटसरैया, प्रसारिणी,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
सोंठ, गिलोय और नागरमोथा का क्वाथ बना कर पिलाने से ज्वर और प्रदाह युक्त सभी प्रकार के सूतिका रोग नष्ट हो जाते हैं।

द्रष्टव्य — सभी प्रकार के क्वाथ एक ही विधि से किये जाते हैं। क्वाथ हेतु औषधि- द्रव्य सब मिला कर 2 तोले लेकर 32 तोले पानी में औटावें, जब 8 तोले अर्थात् चौथाई शेष रहे तब उतार कर छान लें। क्वाथ बनाने की यही विधि सर्वमान्य है।

प्रसूत रोग के अन्तर्गत अनेक प्रकार के उपद्रव देखे जाते हैं। प्रसव के उपरान्त नारी को ज्वर, शूल, अफरा, शोथ, दुर्बलता, रक्ताल्पता, खाँसी, श्वास आदि के रूप में कोई कष्टदायक व्याधि हो सकती है। यदि उनका उपचार समय पर नहीं होता तो वात के साथ कफ का भी जोर बढ़ने लगता है और तब कोई संक्रमक रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

वात दोष के साथ पित्त और कफ का प्रकोप होने पर सन्निपात जैसी स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। उसमें ज्वर की तीव्रता, दाह, तृषा आदि से अत्यधिक बेचैनी तथा अधिक क्षीणता के कारण उठने- बैठने में कष्ट, बोलने में भी कठिनाई अथवा तन्द्रा या मूर्च्छा जैसे चिन्तनीय लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। ऐसी अवस्था में चिकित्सक को अधिक सावधानी रखते हुए औषधि- व्यवस्था करनी होती है

ऐसी अवस्था में स्वर्ण मालती वसन्त बहुत अनुकूल रहती है। उसे सितोपलादि चूर्ण अथवा किसी अन्य उचित औषधि के साथ दिया जाना चाहिये —

सितोपलादि चूर्ण 4 ग्राम में स्वर्णमालती वसन्त 1 ग्राम मिला कर, उसकी 8 मात्राएँ बना लें। एक- एक मात्रा 4 या 5 घंटे के अन्तर से दिन में 3-4 बार शहद में मिला कर दें। ऊपर से पूर्वोक्त दशमूल क्वाथ पिलावें। अथवा दशमूलासव 15 मि.लि. में थोड़ी सी संजीवनी सुरा मिला कर दे दें। यदि प्रसूता मूर्च्छित हो तो यह औषधियाँ उसका मुख खोल कर, थोड़ी- थोड़ी करके चम्मच में डालनी चाहिये।

उसे पीने का कच्चा पानी कदापि न दें। पानी में दशमूल की औषधियाँ डाल कर 10 प्रतिशत जलावें और फिर छान कर ठण्डा होने दें। वही पानी उसे पीने को देना उचित और उपयोगी रहता है।

अतीसारादि पर सूतिकान्तक रस

यदि रोगिणी को तीव्र अतीसार की व्याधि लग गई हो अथवा संग्रहणीं जैसे लक्षण दिखाई दें तो उसे निम्न सूतिकान्तक रस (भै.र.) का सेवन कराने से लाभ हो जाता है।

शुद्ध पारद, अभ्रक भस्म, शुद्ध गन्धक, त्रिकुटा, स्वर्णमाक्षिक भस्म और शुद्ध विष समान भाग लें। पारद- गन्धक की कज्जली करें, त्रिकुटा को पीस- छान कर मिलावें, फिर एक- एक द्रव्य डाल कर घोटते हुए एकजीव करके शीशी में रखें।

मात्रा — 1 रत्ती, दिन में 2-3 बार रोगानुसार उचित अनुपात के साथ सेवन करायें। इससे भयंकर अतिसार, संग्रहणी, अरुचि, मंदाग्नि, खाँसी, श्वास एवं सभी सूतिका रोग नष्ट होते हैं।

ज्वरातिसार, कासादि, सूतिकाघ्न रस

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, लौह भस्म, अभ्रक भस्म, जावित्री और संचल नमक समान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भाग लें। पारद- गन्धक की कज्जली करके, भस्म मिलावें और जावित्री तथा नमक भी पृथक् पृथक् पीस कर मिलावें और बकरी के दूध के साथ दिन भर खरल करके 2-2 रत्ती की गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1-1 गोली, दिन में 2-3 बार रोगानुरूप अनुमान के साथ देनी चाहिये। इससे ज्वर मुक्त अतीसार, केवल अतीसार खाँसी तथा श्वासादि युक्त सूतिका रोग नष्ट होते हैं। (भै.र.)।

ज्वर, कास, शोथ पर रसशार्दूल

अभ्रक भस्म, ताम्र भस्म, लौह भस्म, राजपट्ट कान्त पाषाण, शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, काली मिर्च, यवक्षार, शुद्ध हरताल, त्रिफला और शुद्ध विष समान भाग लें।

पारद- गन्धक की कज्जली करके भस्मादि 1-1 करके मिलावें। काली मिर्च और त्रिफला कूट- छान कर डालें। फिर क्रमशः ग्रीष्म सुन्दर के स्वरस और नागरपान के स्वरस की अलग- अलग सात भावनाएँ देकर 2 रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बना कर छाया में सुखा लें। 1-1 गोली रोगोचित अनुपात के साथ, दिन में 2-3 बार सेवन करायें। इससे ज्वर, खाँसी, शोथ, सूतिका रोग तथा अन्य स्त्री रोग भी दूर होते हैं। भै.र.

हमने इस योग में राजपट्ट या कान्तपाषाण के स्थान पर पत्थर के जीव कल्बुलहज्र का तथा ग्रीष्मसुन्दर के स्थान पर भावनार्थ आमला स्वरस का प्रयोग करके अनेक बार सफलता प्राप्त की है।

प्रसूतिका रोग में ज्वरयुक्तकास के निवारणार्थ रसशार्दूल का प्रयोग समशर्कराचूर्ण अथवा सितोपलादिचूर्ण के साथ मिला कर देने से शीघ्र लाभ होता है —

रसशार्दूल 1 गोली, समशर्करा चूर्ण डेढ़ माशे के साथ खरल करके शहद में मिलावें और ऊपर से कष्टकारी क्वाथ पिलावें। प्रसूता का सयुक्तज्वर शीघ्र दूर होगा।

कष्टकारी क्वाथ

छोटी कटेरी के क्वाथ में 1 चुटकी भर पीपल का चूर्ण मिला कर देना चाहिये।

अथवा रसशार्दूल 1 गोली को द्राक्षादिलेह में मिला कर दिन में 2-3 बार चटाने से भी खाँसी और ज्वर का शमन हो जाता है।

द्राक्षादिलेह — मुनक्का, मुलहठी, पिण्डखजूर, छोटी पीपल और काली मिर्च समान भाग का चूर्ण, असमान भाग शहद और घृत के मिलाने से बनता है। 1 गोली रस शार्दूल, 1 माशा चूर्ण और 4 माशे शहद, 2 माशे घृत को ठीक प्रकार से घोट कर देना चाहिये।

प्रसूतावस्था में रक्तस्रावाधिक्य

प्रसूतावस्था में अधिक रक्त प्रवाह, ज्वर, खाँसी तथा सर्वांग शूल की स्थिति में निम्न औषधि- व्यवस्था की जा सकती है —

नागकेशर का चूर्ण 1 माशा, मकरध्वज 4 चावल और प्रतापलंकेश्वर रस 1 रत्ती एकत्र घोट कर तथा आमले के मुरब्बे में मिला कर दें। ऊपर से दशमूलारिष्ट या जीरकाद्यारिष्ट पिलावें। शीघ्र ही लाभ होगा।

मकरध्वज रस में रस सिन्दूर, स्वर्ण भस्म, लौह भस्म, लौंग, कर्पूर, जायफल और कस्तूरी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
समान भाग का योग रहता है। इसे पान के स्वरस में घोट कर बनाते हैं। 2-3 रत्ती की गोली बकरी के दूध अथवा अन्य उचित अनुपात के साथ देने से जीर्णज्वर, विषमज्वर आदि को भी दूर करता है।

सूतिकाशोथादि पर सूतिकामरण रस

स्वर्ण भस्म, रौप्य भस्म, ताम्र भस्म, प्रवाल भस्म, अभ्रक भस्म, शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, शुद्ध हरताल, शुद्ध मैनसिल, त्रिकुटा और कुटकी समान भाग लें।

पारद- गन्धक की कज्जली करके अन्य भस्मादि मिला कर घोटें तथा त्रिकुटा और कुटकी का कपड़छन किया हुआ चूर्ण मिलावें। फिर क्रमशः आक के दूध, चित्रकमूल क्वाथ और पुनर्नवा स्वरस की 1-1 भावना देकर, मूषा में बन्द करें और लघुपुट में भस्म कर लें।

मात्रा — आधी रत्ती यह रस दोषानुरूप अनुपान के साथ देने से धनुर्वात, त्रिदोषजन्य उपद्रव तथा सूतिका रोगों का समन करता है। इसके सेवनकाल में प्रसूता को इच्छानुरूप भरपेट आहार दिया जाना चाहिये। भै.र.

यह रस शोथ, दुर्बलता, आन्तरिक विकलता आदि पर भी उत्तम प्रभाव दिखाता है।

सूतिका को सौभाग्यशुण्ठी- पाक या मोदक

दुर्बलता को दूर करके सब प्रकार के सूतिका रोगों को नष्ट करने वाला यह पाक सर्वत्र प्रसिद्ध है। सामान्य संशोधन के साथ ग्रन्थान्तर भेद से इसके अनेक योग मिलते हैं। भैषज्य रत्नावली में ही इसके कई योग लिखे हैं। यहाँ एक योग प्रस्तुत है —

सोंठ के चूर्ण 32 तोले को 3 सेर 16 तोले दूध के साथ पका कर खोवा तैयार करें और उसे 32 तोले घी के साथ भूनें। फिर 120 तोले शर्करा या मिश्री की चाशनी में मिला कर पुनः पाक करें। पाक तैयार होने पर उसमें कसेरू, सिंघाड़ा, कमल गट्टा, नागरमोथा, काला जीरा, सफेद जीरा, जायफल, जावित्री, लौंग, छारछरीला, नागकेशर, तेजपात, दालचीनी, कचूर, धाय के पुष्प, छोटी इलायची, सौंफ, धनियाँ, गजपीपल, काली मिर्च और शतावर दो- दो तोले का कपड़छन चूर्ण मिलावें तथा अभ्रक भस्म और लौह भस्म भी 2-2 तोले उसमें डाल कर ठीक प्रकार से चला कर नीचे उतार लें। पाक तैयार है, इससे 6-6 माशे मोदक या कतली बना कर रखें।

मात्रा — 1 से 3 मोदक तक बलाबल के अनुसार दें। इससे जठराग्नि सबल होकर सब प्रकार के सूतिका रोग दूर होते हैं। सभी अतीसार और संग्रहणी प्रभृति रोग भी इसके सेवन से दूर होकर शरीर बल की वृद्धि होती है।

प्रसूता के शूल- संग्रहणी आदि पर भद्रोत्कटावलेह

प्रसारिणी 5 सेर, जल 25 सेर 48 तोले के साथ चतुर्थांवशेष क्वाथ करें और उसे 120 तोले शर्करा मिश्री के साथ अग्नि पर चढ़ा कर चाशनी करें। गाढ़ा होने लगे तब उसमें इन्द्रजौ, धनियाँ, नागरमोथा, खस, बेलगिरी, मोचरस, छोटी पीपल, काली मिर्च, खिरेंटी, अतीस, जटामाँसी, सुगन्धवाला और जवासा प्रत्येक 4-4 तोले का कपड़छन चूर्ण मिलावें और करछुल से ठीक प्रकार मिला कर, अवलेह सिद्ध होने पर उतार कर ठण्डा करें।

मात्रा — 6 माशे से 1 तोला तक सेवन करायें। इससे शूल, संग्रहणी, अफरा, कब्ज

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आदि रोग दूर होकर अग्नि प्रदीप्त होती है। अरुचि आदि मिटती और क्षुधा खुलती है। सब प्रकार के कठिनतर सूतिका रोगों में भी यह अवलेह बहुत हितकर है।

प्रसूतावस्था में कम्पवात पर औषधि व्यवस्था

यद्यपि प्रसूत रोग में मुख्य कारण वात प्रकोप की अधिकता ही है, तथापि वह यदि अधिक उग्र रूप धारण कर ले तो शरीर में कम्पन क्रिया बढ़ जाती है। धीरे- धीरे समूचा शरीर हिलने लगता है। उस कम्पवात की स्थिति में वात शामक औषधियाँ ही फलप्रद हो सकती हैं। ऐसी अवस्था में मकरध्वज, तालचन्द्रोदय, वातचिन्तामणि रस, प्रताप लंकेश्वर रस, रस शार्दूल, वसन्त मालिनी प्रभृति औषधियाँ रोग के लक्षण और रोगिणी के बलाबल को विचार कर देना चाहिये। यह मिश्रण इसमें अधिक उपयोगी है —

वृहत्वात चिन्तामणिरस, ताल चन्द्रोदय और प्रताप लंकेश्वर रस 1-1 ग्राम लेकर मिलायें और खरल करें। इसकी 8 पुड़ियाँ बना कर रखें।

मात्रा — 1-1 पुड़िया 3 या 4 घंटा के अन्तर पर दशमूल क्वाथ के साथ देनी चाहिये। इससे कम्पवात के दौरों का अन्तराल बढ़ जाता है और दौरे कम होने लगते हैं।

दौरा समाप्त होने पर भी औषधियाँ चालू रहनी चाहिये। रोगिणी के औषधि- योग में तीव्र दवाएँ घटाकर शक्तिवर्धक, विशेष कर हृदय को शक्ति देने वाली औषधियाँ बढ़ाई जा सकती हैं। यथा —

वृहत्वात चिन्तामणि रस में यद्यपि मुक्ता का योग है, तो भी 1 रत्ती यह रस और साथ ही 1 रत्ती मक्ता पिष्टी मिला कर, दिन में 2-3 मात्राएँ देते रहें। अनुपात में दशमूल क्वाथ ही उपयुक्त है। अथवा उक्त योग के साथ स्वल्प रास्नादि क्वाथ देना भी ठीक है। उसका योग निम्न प्रकार है —

रास्ना, सोंठ, वायविडंग, त्रिफला, एरण्डमूल, दशमूल और काली सारिवा। यह क्वाथ अनेक वात रोगों में उपयोगी है तथा शिरःशूल, कम्प, उन्माद, अपस्मार तथा ज्वरादि को भी दूर करता है।

इस प्रकार प्रसूता की चिकित्सा, उसके लक्षणों को देखकर और समझ कर, उचित औषधि योग, मिश्रण तथा अनुपानादि के साथ की जाय तो प्रसूता शीघ्र ही स्वस्थ हो कर सन्तान- सुख की भागिन बन जाती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तृतीय- खण्ड

शिशु रोग और औषधोपचार

कारण और लक्षण

विगत पृष्ठों पर नारी सम्बन्धी रोगों की चिकित्सा पर विचार किया गया। अब शिशुओं को होने वाले रोगों पर भी कुछ विचार आवश्यक है। माता के आहार- विहार की गड़बड़ी से, गर्भावस्था की असावधानी से अथवा अन्य कारणों से भी शिशुओं का रोग- ग्रस्त होना सम्भव है।

शिशु रोग का आरम्भ उसके जन्म लेने से ही हो सकता है। नाल काटने में किसी प्रकार की त्रुटि शिशु रोग का प्रथम कारण बन जाती है। दाई से अशुद्ध हाथों या अन्य किसी प्रकार की अस्वच्छता से वहाँ प्राप्त हुए विषैले रोगाणु वहाँ प्रदूषण उत्पन्न कर देते हैं। अथवा वात के प्रकोप से भी शिशु की नाभि फूल जाती है। सुश्रुत का कथन है —

वातेनाध्यमापितां नाभिं सरुजां तुण्डि संज्ञिताम्।
मारुतघ्नैः प्रशमयेत् स्नेह स्वेदोपनाहनैः॥
गुदापाकेतु बालानां पित्तघ्नीं कारयेत् क्रियाम्।
रसांजनं विशेषेण पानालेपनयोर्हितम्॥

वात दोष के प्रकोप से शिशु की नाभि फूलती है, जिसे तुण्डि या टूण्डी कहते हैं। इसमें वात का शमन करने के लिये स्नेहन, स्वेदन और उपनाह पुल्टिस की क्रिया करें। बालकों की गुदा पकने पर पित्त नाशक क्रिया करें। विशेष रूप से रसौत का पान और लेपन- कर्म हितकर रहता है।

सद्यःजात शिशु को प्रायः कोई औषधि सेवन नहीं कराई जाती, वरन् उसकी माता को जो औषधि दी जाती है, दुग्धपान के द्वारा उसका पूर्ण प्रभाव पड़ता है। इसलिये प्रसूता को जो औषधि दी जाय वह माता और शिशु दोनों को हितकर हो, वैसे ही व्यवस्था करनी चाहिये। स्नेहादि का प्रयोग भी उसी दृष्टि से किया जा सकता है।

यदि किसी शिशु को स्नेहादि की आवश्यकता ही हो तो उसे माता के स्तनों पर लगवा देना चाहिये। शिशु दुग्ध पान करेगा, तब उसका गुण- लाभ उसे अवश्य मिलेगा।

शिशु की नाभि या गुदा पकने पर, यह त्रिफला तैल सीधा शिशु की नाभि या गुदा पर लगाना चाहिये।

नाभिपाक पर त्रिफलादि तैल

हरड़, बहेड़ा, आमला, नीम की छाल, चिरायता, हल्दी, दारुहल्दी और लाल चन्दन समान भाग लेकर पानी के साथ कल्क करें तथा कल्क से चौगुना तैल और तैल से चौगुना जल मिला कर अग्नि पर पकावें तथा यथाविधि सिद्ध करके छानें और बोतल में भर कर रख लें। इस तैल के लगाने से सब प्रकार के व्रण, क्षत, घाव आदि में शीघ्र लाभ होता है।

नीम की निबौली का तैल भी इस व्याधि को दूर करने में अधिक उपयोगी है। शिशु के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

नाभिपाक या गुदापाक में इसे लगाने से शीघ्र लाभ हो जाता है। यदि पाक कृमि जन्य हो तो भी यह तैल बहुत हितकर है।

घावों पर जात्यादि तैल

चमेली, नीम, परवंल और करंज इन चारों के पत्ते, मोम, मुलहठी, कूट, हल्दी, दारुहल्दी, कुटकी, मंजीठ, पद्माख, लोध, हरड़, नीलकमल, तूतिया, अनन्तमूल और करंज के बीज 1-1 तोला लेकर कल्क करें और तैल सिद्ध करने की विधि से 1 सेर तैल और 4 सेर पानी के साथ तैल सिद्ध कर लें। इसके लगाने से सब प्रकार के घाव, क्षत, व्रण, नासूर, जलने का घाव अथवा दुष्ट व्रण भी ठीक हो जाते हैं। यह तैल भी बालक के किसी भी अंग में घाव आदि हो तो उसे नष्ट कर देता है

नाभि पर अन्य उपचार

नीम के पत्तों को पानी के साथ उबाल कर ठण्डा करें। उस पानी से नाभि को धोकर स्वच्छ करें। गुदा- पाक में भी यही उपाय काम में ला सकते हैं।

- अत्यन्त महीन पिसी हुई हल्दी को घृत और मोम के साथ मिला कर लगावें। हल्दी के चूर्ण को वैसलीन में मिला कर भी लगा सकते हैं।
- नीम के पानी से धोकर शुद्ध करने के पश्चात् उस स्थान को स्वच्छ वस्त्र से पोंछें और फिर वहाँ हल्दी का चूर्ण पाउडर की तरह बुरक दें या मल दें।
- हल्दी, पठानी लोध, प्रियंगु और मुलहठी के कल्क को तिल- तैल में यथाविधि सिद्ध करके लगावें। अथवा इन औषधियों का चूर्ण नाभिपाक पर बुरकें।

अमृततुल्य माता का दूध

शिशु के लिये माता का दूध अमृत के समान है। किन्तु आधुनिक विचारों वाली कुछ नारियाँ समझती हैं कि शिशु को दूध पिलाने से स्तन- सौन्दर्य में कमी आ जायेगी। वस्तुतः यह उनकी भूल है। गृहस्थ जीवन में शिशु की उत्पत्ति होना, वस्तुतः जीवन की सफलता मानी जाती है। क्योंकि शिशु के बिना जीवन सूना ही रहता है। इसलिये स्त्रियों को दूध पिलाने में संकोच नहीं करना चाहिये।

कुछ माताओं के स्तनों में दूध की कमी होती है, इसलिये उनके शिशुओं के लिये माता का दूध उपलब्ध नहीं हो पाता, ऐसा होने पर, वे शिशु अनेक रोगों से ग्रस्त हो जाते हैं। अतः आवश्यक है कि दुग्धाभाव वाली नारियों को, उनके स्तनों में दूध की वृद्धि करने वाली औषधियाँ देनी चाहिये।

दुग्धाभाव पर औषधोपचार

- हरिद्रागण का क्वाथ पीने से दूध बढ़ता है। हरिद्रागण की औषधियाँ हैं — हल्दी, दारुहल्दी, मुलहठी, बड़ी कटेरी और छोटी कटेरी।
- वचादिगण का क्वाथ भी स्तनों में दूध बढ़ाता है। वचादिगण में यह औषधियाँ हैं — वच, नागरमोथा, देवदारु, सोंठ और अतीस।
- दूध के साथ शालिचावलों के चूर्ण का सेवन करने से भी स्तनों में दूध की बृद्धि होती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- वन- कपास और ईख की जड़ समान भाग के चूर्ण को काँजी के साथ पीने से स्तनों में दूध बढ़ता है।
- विदारीकन्द का चूर्ण सुरा के साथ सेवन करने से भी स्तनों में दूध की वृद्धि होती है।
- स्तनों में दूध की वृद्धि के लिये माता को मूँग का यूष (शोरबा) अधिक सेवन करना चाहिये।
- नागबला की जड़ के टुकड़े मुख में रख कर, रस चूसने से भी दूध बढ़ता है।
- पित्तदोष की अधिकता से स्तनों में दूध का अभाव हो तो माता को गिलोय, शतावर, परवल के पत्ते, नीम की छाल, लाल चन्दन और अनन्तमूल का क्वाथ पिलाना चाहिये।

स्तन्य- द्वेष (शिशु का दूध न पीना)

कभी- कभी शिशु माता का दूध पीना ही नहीं चाहता। उस स्थिति में यह उपचार करना चाहिये —

- आमला और हरड़ का चूर्ण शहद में मिला कर बालक की जीभ पर घिसें। इससे उसकी इच्छा स्तनपान करने की होगी।
- शिशु को घुट्टी या बाल चतुर्थी का सेवन कराने से भी स्तनपान के प्रति अरुचि दूर हो जाती है।

त्रिविधः कथितो बालः क्षीरान्नोभय वर्तकः।
स्वास्थ्य ताभ्यामदुष्टाभ्यां दुष्टाभ्यां रोग सम्भवः॥

भैषज्य रत्नावली, बाल० 1

शिशु तीन प्रकार के कहे आते हैं —

(1) माता का दूध पीने वाले, (2) दूध और अन्न का आहार करने वाले। (3) केवल अन्न का आहार करने वाले।

यदि दूध और अन्न शुद्ध मिले तो शिशु निरोग रहता है। किन्तु दूध या अन्न के दूषित होने से शिशु रोगग्रस्त हो सकता है।

केवल दुग्धपान कराने वाले शिशु के रोग ग्रस्त होने पर उसकी माता अथवा धाय को औषधि- सेवन करानी चाहिये। जब बालक को औषधि न देना ही उचित है।

किन्तु दूध और अन्न दोनों प्रकार का आहार करने वाले शिशु और उसकी माता, दोनों को औषधि सेवन करानी चाहिये।

यदि बालक केवल अन्न खाता हो, माता का दूध न पीता हो, उस बालक को ही औषधि देनी चाहिये, माता को नहीं।

रोगारम्भ में आयुर्वेद जहाँ लंघन करने का विधान करता है, वहाँ शिशु को लंघन नहीं कराना चाहिये, वरन् उसे दूध पिलाने वाली माता अथवा धाय को लंघन कराया जाता है, क्योंकि उसके लंघन का आहार का सीधा प्रभाव दूध पीने वाले बालक पर पड़ता है। अतः धाय या माता को लंघन कराना, परोक्षरूप से शिशु को भी लंघन करा देना है।

किन्तु ध्यान रखें कि माता को लंघन कराने का तात्पर्य, उसे अन्नाहार न देना ही है, दूध

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

सेवन रोकना नहीं है। दूध पिलाने वाली माता का दुग्धाभाव का दुग्धाहार दूध- सेवन कभी नहीं रोकना चाहिये।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बकरी या गाय का दूध

माता के स्तनों में दुग्धाभाव या दूध की कमी हो तो बालक को बकरी का, अथवा गाय का दूध देना चाहिये। आयुर्वेद की मान्यता है कि 'स्तन्याभावे पयश्छांग गव्यं वा तद्गुणं पिवेत्।' स्तन- दुग्ध का अभाव होने पर बकरी या गाय का दूध पिलावें, क्योंकि वह दूध माता के दूध के समान ही गुणकारी होता है।

शिशु को वातज- आक्षेप (तन्द्रा, मूर्च्छा)

यह व्याधि नवजात शिशु में भी देखी गयी है। उसके मुख से झाग निकलते हैं और तन्द्रा या मूर्च्छा जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। वस्तुतः वात- दोष की अधिकता से ही ऐसा होना सम्भव है। यदि उसे मूर्च्छा आ रही हो तो बेहोश होने से पूर्व ही दाँतों को चम्मच या ऐसी ही कोई वस्तु डाल कर खोले रखना चाहिये। क्योंकि दाँती भिच जाने पर मुख द्वारा औषधि देने में कठिनाई उपस्थित होगी।

निम्न औषधोपचार वातज आक्षेप को दूर करने में सहायक हो सकता है —

श्वेत दूर्वा सफेद रंग की घास के 3-4 पत्र और 1 काली मिर्च पानी के साथ पीसें और छान कर, उसे गुनगुना करें। इसे पिलाने के कुछ समय में ही शिशु को चेत हो जायेगा और वह रोने लगेगा।

पोतड़े से व्रण या क्षत

माताएँ शिशुओं के लिये जो पोतड़े बनाती हैं, उन्हें बाँधने में कभी- कभी असावधानी हो जाती है। पोतड़ों को कड़ाई से बाँध देती है, अथवा उनमें सेफ्टीपिन लगा देती हैं। शिशु के पाँव चलाने आदि क्रियाओं से सेफ्टीपिन खुल कर चुभ जाता है तो वह रोने लगता है, क्योंकि पिन चुभने से क्षत बन कर चुभन होने लगती है।

ध्यान रखना चाहिये कि पोतड़ों में पिन न लगायें, वरन् उसमें फीता या डोरी लगायें। कड़ाई से भी न बाँधें तथा पोतड़ों को गीले होते ही बदल दें। क्योंकि गीले पोतड़े उस स्थान की चमड़ी को खुरदरी बना देते हैं, इससे खुजली, फुंसियाँ या छाजन तक हो सकती है। इसलिये जब भी पोतड़े बदलें, वहाँ की चमड़ी पर जैतून का तैल, त्रिफलादि तैल, वैसलीन अथवा घी या समान्य तैल अवश्य लगा दें।

शिशु रोगों में हितकर जड़ी बूटियाँ

अतिविषा (अतीस) का बाल रोगों में उपयोग

संस्कृत में अतिविषा नाम से प्रसिद्ध औषधि ही अतीस है। इसे प्रतिविषा, विश्वा, श्रृंगी, शुक्लकन्दा तथा शिशु भैषज्य आदि भी कहा गया है। हिन्दी में अतीस कड़वी भी कहते हैं। यह विष- प्रभाव का अतिक्रमण करने वाली होने के कारण भी अतिविषा कहलाती है। औषधि- कर्म में इसका उपयोग प्राचीनकाल से ही होता रहा है।

अतीस के तीन भेद हैं — काली अतीस, श्वेत अतीस तथा अरुण कन्दा। इनमें से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
काली अतीस का व्यवहार ही अधिक होता है। यह तिक्तरस प्रधान कड़वी होती है।

श्वेतकन्दा और अरुणकन्दा में अधिक कड़वाहट नहीं होती। निघण्टु संग्रह के अनुसार श्वेतकन्दा में गुणों की अधिकता है। कहीं- कहीं इसके 4 भेद माने गये हैं — काली, श्वेत, अरुण और पीतवर्ण की। यूनानी चिकित्सक भी इसके 4 भेद मानते हैं।

इसके गुणों में दीपन, पाचन, ग्राही तथा सभी दोषों का हरण करने वाली होने की विशेषता है। बाल रोगों में भी इसका व्यवहार अधिकता से होता है। ज्वर, खाँसी और दस्त प्रभृति व्याधियों में यह बहुत हितकर मानी जाती है। दाँत निकलते समय के उपसर्गों में भी इसका प्रयोग विशेष रूप से किया जाता है।

बाल चतुर्थी या बालचातुर्भद्रिका

आयुर्वेद का यह प्रसिद्ध योग है। पाचन तन्त्र की क्रिया ठीक रखने और अतीसारादि को रोकने में इसका विशेष योगदान है। दन्तोद्गम काल में भी बाल चतुर्थी का प्रयोग किया जाता है।

इसमें अतीस, छोटी पीपल, काकड़ासिंगी और नागरमोथा समान भाग लेकर, कपड़छन चूर्ण करके और शहद में मिला कर चटाते हैं। चूर्ण की मात्रा 4-5 रत्ती तक देनी चाहिये। दन्तोद्गम- काल में इसकी मात्रा 1 ग्राम तक हो सकती है।

इसके चटाने से बालकों का ज्वरातिसार, वमन (दूध उलटना), खाँसी, श्वांस आदि रोग शीघ्र दूर हो जाते हैं। अथवा इसे थोड़े से पानी के साथ क्वाथित करके भी, छोटे शिशुओं को 2-3 चम्मच की मात्रा में पिला देते हैं। ऐसा करने से भी वही लाभ होता है।

अतीस अग्नि को भी प्रदीप्त करती है। आम- दोष का पाचन करने वाली है। शिशु- विकारों को दूर करने वाली होने के कारण अधिक उपयोगी है। अजीर्ण जन्य विकार, ग्रहणी- दोष, विष दोष तथा शूल में भी शीघ्र लाभ दिखाती है।

अतीस की मात्रा, बालकों के लिए 1 से 4 रत्ती तथा वयस्कों के लिये 10 से 20 रत्ती तक हो सकती है। अकेली अतीस का चूर्ण भी शिशु- रोगों में चमत्कारिक रूप से कार्य करता है।

शिशु- रोगों में प्रचलित एक अन्य योग भी अतीस मिश्रित है। उसका प्रयोग भी ज्वर और वमन (दूध उलट देने) में करने का निर्देश है।

खाँसी पर श्रृंग्यादि चूर्ण

काकड़ासिंगी, नागरमोथा और अतीस, समान भाग लेकर कपड़छन चूर्ण करके शहद के साथ मिला कर चटाना चाहिये। इससे शिशु का ज्वर तथा खाँसी का वेग रुकेगा और दूध पलटने की व्याधि का भी शमन होगा।

अतीस के अन्य बाल- रक्षक योग

- अतीस का चूर्ण रसौत के चूर्ण के साथ सेवन कराने से भी शिशुओं का ज्वरातिसार रुक जाता है।
- अतीस का चूर्ण वायविडंग के चूर्ण के साथ शहद में मिला कर चटाने से आन्त्र- कृमि (आँतों के कीड़े) नष्ट होती हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- अतीस का चूर्ण 1 रत्ती प्रमाण में, माता के दूध में मिला कर, दिन में 2-3 बार देने से बालक की कृमि मिट जाती हैं।
- अतीस का चूर्ण शहद के साथ, दिन में 3-4 बार चटाने से चूहे का विष भी दूर होता है। काटे हुए स्थान पर अतीस को गोमूत्र के साथ घिस कर लगा देना चाहिये
- अतीस का चूर्ण मधु में अथवा माता के दूध में मिला कर देने से आमातिसार भी नष्ट होता है।
- अतीस का चूर्ण दूध अथवा पानी के साथ औंटा कर बालक को पिलाने से हरे- पीले अथवा अत्यन्त पतले दस्त भी रुक जाते हैं।
- यदि बालक के गले में छाले हों, अथवा उसका काग गिर गया हो, तो भी अतीस का चूर्ण शहद में मिला कर चटायें और फुरैरी से छालों का काग पर लगायें।
- नेत्र पीड़ा होने पर अतीस के गुनगुने क्वाथ से हल्का सेंक करें तथा गुलाबजल के साथ अतीस को पीस कर आँखों के बाहर, चारों ओर 1-1 अंगुल छोड़ कर लेप करें और सूखने पर छुड़ा दें। नेत्र धोने में अतीस का क्वाथ उपयुक्त माना गया है।
- अतीस को गोमूत्र के साथ पीस कर, कुछ गर्म करके, गुनगुना ही लेप करने से सूजन शोथ दूर होती है।

पिप्पली छोटी पीपल और शिशु रोग

पिप्पली, जो कि पीपल के नाम से प्रसिद्ध है, आयुर्वेदिक औषधियों में प्रयुक्त होने वाली मुख्य वनस्पति है। यह एक बेल जैसी झाड़ी है। जिसकी प्रशाखाएँ धरती पर फैलती तथा ऊपर की ओर उठती हुई निकटस्थ झाड़ियों के साथ ऊँची भी उठ जाती हैं।

देश के उष्ण भागों में यह स्वतः उत्पन्न हो जाती है। मुरादाबाद, जिले के समीपस्थ जंगलों में भी पाई जाती है। दक्षिण भारत और बंगाल में इसकी खेती भी की जाती है।

आयुर्वेद पिप्पली को अधिक गुणकारी औषधि के रूप में मान्यता देता है। नारियों के गर्भाशय तथा स्त्री- पुरुष के फुफ्फुसों पर इसका विशेष प्रभाव पड़ता है। स्त्रियों के प्रसव- विलम्ब में भी इसे देने से लाभ होता है। चिकित्सा में इसकी जड़ और फल दोनों का उपयोग होता है। पिप्पली की जड़ पीपलामूल नाम से प्रसिद्ध है।

पीपलामूल वात, कफ का शमन करता है और पित्त को उत्तेजित करता है। उष्ण, कटु, रूक्ष, हल्का तथा दीपक और पाचक होने के अरुचि, अफरा, गुल्मादि को दूर करता है। कृमि, प्लीहा, उदर विकार, क्षय, कास आदि में भी हितकर है।

पिप्पली देह को स्निग्धता प्रदान करने वाली, सम शातोष्ण, कटु, विपाक में मधुर तथा जठराग्नि प्रदीपक है। पाचक रसों की वृद्धि करती है तथा गुल्म, शूल, हिक्का, उदर- विकार, खाँसी, कुष्ठ, आदि में हित- साधन करने वाली है। मूत्र और प्रजनन- संस्थान पर इसका अनुकूल प्रभाव रहता है। वात और कफ को नष्ट करने में विशेष गुण- सम्पन्न मानी जाती है।

पिप्पलीयुक्त औषधियाँ

- पंचकोल में पिप्पली का मुख्य योगदान है, पिप्पली, पीपलामूल, चव्य, चित्रक और सोंठ,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

यह पंचकोल है, इसका चूर्ण 2 रत्ती, दोनों प्रकार की कटेरी छोटी और बड़ी के स्वरस में शहद मिला कर वमन, दूध उलटना, अपच आदि में देते हैं। स्वरस की मात्रा 1 या डेढ़ तोला होनी चाहिये। सर्दी, खाँसी, कफ तथा वात व्याधि के लिये हितकर है।

- ज्वर, खाँसी, वमन आदि रोकने के लिये छोटी पीपल, रसौत, सोंफ, काकड़ासिंगी और काली मिर्च समान भाग का चूर्ण शहद मिला कर चटाते हैं। इससे भी बहुत शीघ्र लाभ हो सकता है
- दुग्धपान करने वाले शिशु को यदि आँवदस्त का विकार हो, अर्थात् आँव के साथ मल न निकलता हो तो उसे बहुत कष्ट होता है। उस स्थिति में पिप्पली का चूर्ण 1 या 2 रत्ती तक की मात्रा में शिशु की माता या धाय को, उड़द के यूष के साथ देने से लाभ होता है।
- शिशु को हिचकी और वमन हो तो पिप्पली और काली मिर्च का चूर्ण शहद के साथ चटाना बहुत लाभकारी रहता है।
- यदि बालक को मूत्रावरोध (मूत्र रुक गया) हो तो उसे छोटी पीपल, काली मिर्च, शर्करा, छोटी इलायची और सेंधा नमक समान भाग के चूर्ण को शहद में मिला कर देने से शीघ्र लाभ होता है। 1 वर्ष के शिशु तक के लिये 1 रत्ती तक देनी चाहिये।
- बालकों के श्वास, तमक श्वास और खाँसी में पिप्पली, हरड़, मुनक्का और जवासा के चूर्ण को असमान भाग शहद और घृत के साथ सेवन कराना चाहिये।
- बालकों की सब प्रकार की खाँसी में पिप्पली, पुष्करमूल, अतीस, काकड़ासिंगी और धमासा, समान भाग के चूर्ण को 1 रत्ती की मात्रा में, अथवा आयु और बल के अनुरूप मात्रा में शहद के साथ चटाना हितकर है।
- शिशुओं के नेत्र रोग में पिप्पली, शुद्ध रसांजन, मैनसिल और शंखनाभि को पानी के साथ पीस कर बत्ती बनायें। इसे शहद के साथ घिस कर लगाना चाहिये।

काली मिर्च से शिशु- रोग निवारण

आयुर्वेद में काली मिर्च का स्थान भी महत्वपूर्ण है। विभिन्न रोगों की चिकित्सा में इसे भी उपयोगी पाया गया है। यहाँ तक कि इसे घरेलू मिर्च- मसालों में सम्मिलित करके आहार की गुणवत्ता भी बढ़ाई गई है।

काली मिर्च उष्ण, हल्की, रस और विपाक में चरपरी, भोजन के प्रति रुचि उत्पन्न करने वाली, उसके स्वाद को बढ़ाने वाली, कफ का शोषण करने वाली, अग्नि- दीपक तथा वात- दोष का समन करने वाली है। कृमियों को नष्ट करने वाली, दर्द और खाँसी को दूर करने वाली, श्वास का शमन करने वाली तथा हृद्रोग में भी हितकर है।

अफरा, उदरशूल, अरुचि तथा संस्थान से सम्बन्धित रोगों में इसका उपयोग किया जाता है। कसरती पहलवान घृत- पान काली मिर्च लगा कर करते हैं। स्वर- भंग तथा जुकाम आदि में भी इसका व्यवहार किया जाता है। काली मिर्च को दूध के साथ पका कर रात्रि- शयन समय पीने से पाचक रसों का उत्तेजन होता है।

बाल रोगों पर काली मिर्च का प्रयोग

- किसी बालक को संग्रहणी हो जाने पर उसे मरिचादि योग का सेवन कराते हैं — काली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मिर्च 1 भाग, सोंठ 2 भाग और गुड़ 4 भाग के कपड़छन चूर्ण को शिशु का आयु- बल विचार कर गुड़ और तक्र के साथ देना चाहिये।

- जुकाम में, एक ओर का नासा- छिद्र रुक रहा हो अथवा छींक हों और अधिक पानी गिर रहा हो तो शिशु को काली मिर्च का चूर्ण सुँघाने से लाभ होता है।
- काली मिर्च का चूर्ण अतीसार को रोकने में सहायक होता है।
- काली मिर्च का 1 से 2 रत्ती चूर्ण गुड़ के साथ खिला कर ऊपर से गर्म पानी पिलावें। जुकाम में लाभ होता है।
- काली मिर्च और कटेरी की धूनी जलायें। इसकी नस्य से खाँसी का वेग घटता है।
- काली मिर्च का अत्यन्त सूक्ष्म चूर्ण तथा स्वल्प मात्रा में कस्तूरी लेकर लार के साथ घिस कर आँखों के बाहरी पलकों पर लगावें। इससे ज्वर का वेग कम होता है।
- काली मिर्च का चूर्ण गर्म पानी के साथ सेवन करने से चढ़ा हुआ ज्वर शनैः- शनैः उतर जाता है।
- अधिक दस्त लगने पर या हैजे जैसा रूप बन जाने पर निम्न योग लाभप्रद होगा —
- काली मिर्च, शुद्ध अफीम और घी में भुनी हुई हींग तीनों बराबर मात्रा में लेकर अत्यन्त महीन चूर्ण करें और जल से पीस कर 1-1 रत्ती प्रमाण गोलियाँ बनावें।

मात्रा — 1-1 गोली 2-3 घंटे के अन्तराल से दें। छोटे शिशुओं को माता के दूध में भी दे सकते हैं।

- शारङ्गधर के मत में प्यास और वमन रोकने के लिये मरिचादि हिम देना चाहिये। अर्थात् काली मिर्च, मुलहठी, कठूमर और नीलकमल का हिम उपयोगी है। माता का दूध पीने वाले शिशुओं को यह व्याधि हो तो यह हिम माता या धाय को पिलाना चाहिये।
- मरिचादि वटी — काली मिर्च और पिप्पली 1-1 तोला, यवक्षार 6 माशे अनार दाना 2 तोले लेकर महीन चूर्ण करें और गुड़ 8 तोले के साथ मिला कर 2-2 रत्ती की गोलियाँ बनावें। मुख में रख कर चूसने से सब प्रकार की खाँसी दूर होती है।

बाल रोगों पर अन्य उपयोगी औषधियाँ

बाल रोग नाशक कुटजावलेह

कुड़ा की छाल 4 तोले जौकुट करके 32 तोले जल के साथ क्वाथ करें और 8 तोले शेष रहने पर उतार कर छान लें। तदुपरान्त 8 तोले मिश्री की चाशनी के अन्त में उसमें अतीस, पाठा, सफेद जीरा, बेलगिरी, आम की गुठली की गिरी, सोया के बीज, धाय के फूल, नागरमोथा और जायफल समान भाग मिला कर कुल 4 तोले का कपड़छन चूर्ण मिला दें। इस अवलेह के सेवन से बालकों के आमशूल और दुष्कर रक्तस्राव में शीघ्र लाभ होता है।

बाल रोगों पर प्रसिद्ध अरविन्दासव

कमल, खस, खम्भारी, नीलकमल, मंजीठ, छोटी इलायची, खिरेंटी, जटामासी, नागरमोथा, अनन्तमूल, हरड़, बहेड़ा, आमला, वच, कचूर, काली सारिवा, नील की जड़, परवल के पत्ते, पित्तपापड़ा, अर्जुन की छाल, महुए के पुष्प, मुलहठी और मुरामांसी, प्रत्येक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
4-4 तोले, मुनक्का 1 सेर, धाय के पुष्प 64 तोले, पानी 25 सेर 48 तोले, शर्करा 5 सेर, शहद ढाई सेर लेकर, काष्ठौषधियों को कूटें और सब द्रव्यों को एकत्र करके घड़ों में भर कर 1 मास पर्यन्त रखा रहने दें। पश्चात् छान कर बोतलों में भर लें।

इस आसव की पूर्ण वयस्क बालकों को मात्रा 1 तोला से ढाई तोले तक है, जो कि समान भाग पानी मिला कर देनी चाहिये। किन्तु छोटे बालकों को आयु- बल के विचार पूर्वक न्यून मात्रा देनी उचित है। इसके सेवन से बालकों के सभी रोग नष्ट होते हैं। शक्तिऔर आयुवृद्धि के लिये अत्युत्तम तथा स्वास्थ्य वर्धक है।

बालरोगान्तक रस

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक और स्वर्ण माक्षिक भस्म 3-3 माशे लेकर पारद- गन्धक की कज्जली करके स्वर्ण माक्षिक को भी उसमें डाल कर कज्जलीवत कर लें। फिर केशराज, भृंगराज, सँभालू के पत्ते, मकोय, ग्रीष्म सुन्दर, सूर्यमुखी, शालिंच, मंडूकपर्णी और श्वेत अपराजिता की जड़ के स्वरस की 1-1 भावना देकर, उसमें काली मिर्च का चूर्ण डेढ़ माशे डालें और पर्याप्त घोट कर सरसों प्रमाण गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1-1 गोली मकोय के अर्क के साथ मधु मिला कर दें। इससे सब प्रकार की खाँसी, आम ज्वर, त्रिदोषज विकार आदि सभी बाल रोग नष्ट होते हैं।

बाल रोगों पर सरल हितकर योग

- जायफल, लौंग, जीरा और भुना सुहागा समान भाग लेकर चूर्ण करें और 1 वर्ष तक के बालक को चौथाई से आधी रत्ती तथा अधिक आयु वाले को 1 रत्ती तक दें। यह चूर्ण शहद में मिला कर चटावें।
- इससे सब प्रकार के आमातिसार, घोर उदरशूल, गुदशूल तथा आमज्वरादि में लाभ होता है।
- सेंधा नमक, सोंठ, छोटी इलायची, भुनी हींग, पिप्पली समान भाग का चूर्ण आधी रत्ती की मात्रा में देने से वातजशूल, आनाह, ज्वर आदि में लाभ करता है।
- बालक का काग गिर जाय तो हरड़, वच और कूट के कल्क में शहद मिला कर, माता के दूध के साथ पिलावें।
- लाल चन्दन, अनन्तमूल, शंखपुष्पी और कालीसर का चूर्ण 1 रत्ती तक शहद के साथ चटाने से पीठ के रोगों में हितकर है।
- दारुहल्दी, नागरमोथा और गेरू को बकरी के दूध के साथ पीस कर आँखों के बाहर पलकों पर लेप करने से बालक के नेत्र रोग दूर होते हैं।
- कड़वी अतीस, वंशलोचन, छोटी इलायची के दाने, कमलगट्टा की गिरी, फुलाई हुई फिटकरी, माजूफल, नागरमोथा, कचूर और रूमी मस्तंगी समान भाग लेकर कूट कपड़छन करें।

मात्रा — 1 से 4 रत्ती या बड़ी आयु के बालक को 1 ग्राम तक अनुमान- भेद से देने पर काग गिरना, वमन, दस्त तथा दाँत निकलने के सभी उपद्रवों में लाभ करता है। बालकों के अन्यान्य विकारों में भी लाभदायक है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सोंठ से शिशु रोगों का निवारण

सोंठ एक ऐसी वस्तु है जो घरेलू मसालों से लेकर अनेक औषधियों में काम आती है। वस्तुतः यह शरीर के सभी अंगों, विशेष रूप से पाचन- संस्थान पर बहुत अनुकूल प्रभाव डालती है। इसका मूल अदरक के रूप में सर्वत्र प्रसिद्ध है। अदरक सूखता है तो सोंठ का रूप ले लेता है, इसलिये अदरक के प्रायः सभी गुण इसमें समाविष्ट रहते हैं। प्रस्तुत है सोंठ मिश्रित कतिपय आयुर्वेदिक उपयोग —

आमातिसारहर क्वाथ

सोंठ, वच, नागरमोथा, देवदारु और अतीस — यह वचादि गुण कहे गये हैं तथा हल्दी, दारुहल्दी, मुलहठी, बड़ी कटेरी और इन्द्रायव, यह हरिद्रादिगण हैं।

वाचादिगण और हरिद्रादिगण का मिश्रित क्वाथ माता के दूध को शुद्ध करता माता तथा शिशु के आमातिसार को मिटाता है। इससे मेद और कफ के विकार भी दूर होते हैं। यह क्वाथ माता और शिशु, दोनों को ही उचित मात्रा में सेवन कराया जा सकता है।

सर्वातिसार नाशक शुण्ठयादि क्वाथ

सोंठ, अतीस, नागरमोथा, सुगन्धवाला और इन्द्रयव समान भाग का यथाविधि क्वाथ करें।

मात्रा — आयु, बल के अनुरूप, प्रातःकाल बालकों को पिलावें। इससे सब प्रकार के दस्त रुक जाते हैं।

शिशु ग्रहणी- हर शुण्ठयादि चूर्ण

सोंठ 2 भाग, कुड़ा की छाल 4 भाग, छोटी पीपल और काली मिर्च 1 भाग लेकर कपड़छन चूर्ण करें। इसका उचित मात्रा में उचित अनुपान के साथ सेवन कराने से बालातिसार तथा बाल- ग्रहणी में लाभ होता है।

बाल कास श्वास- नाशक चूर्ण

सोंठ, दन्ती, चित्रक मूल और इन्द्रायण समान भाग लेकर कपड़छन चूर्ण बनावें।

इसकी मात्रा 1 वर्ष तक के शिशु को 1 चावल से 2 चावल तक है। इसे गुनगुने पानी के साथ या अन्य उचित अनुपान के साथ दिया जा सकता है। बालकों की खाँसी, श्वास, हिचकी आदि में उपयोगी है। सामान्य ज्वर में भी लाभ होता है।

शुण्ठयादि नेत्राश्च्योतन आई ड्राप

सोंठ, भाँगरा, हल्दी और सेंधा नमक का कल्क करें और पुटपाक विधि से पका कर रस निचोड़ें। इसे आँखों में टपकाने से अनेक नेत्र रोगों में लाभ सम्भव है।

बाल रोगों में प्रभावकारी हरड़

हरड़ को संस्कृत में अभया कहा जाता है — अभया अर्थात् भयमुक्तअथवा मानव मात्र को रोग- भय से छुड़ाने वाली। वस्तुतः हरड़ में अपने नामानुरूप यह गुण है भी। इसीलिये हमारे देश में तो इसका उपयोग औषधि कर्म में किया ही जाता है। अन्य देशों में भी चिकित्सक गण हरड़ का व्यवहार करने लगे हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आयुर्वेद की प्रसिद्ध जीवनदायिनी महौषधि त्रिफला की मुख्य अंगभूता हरड़ सभी रोगों को दूर करने वाली है। बाल रोगों में भी इसका उपयोग किसी प्रकार कम नहीं है। यह वातानुलोमक, अग्नि सन्दीपक तथा शोथ नाशक है। कब्ज को दूर करने में विशेष सहायक होती है। इसके क्वाथ की कुछ बूँदें ही बालकों को नियमित रूप से देते रहें तो उन्हें सदैव रोग मुक्त रख सकते हैं। आधुनिक समय में दी जाने वाली एण्टीबायटिक औषधियाँ भी इसके गुणों के सामने मात खाती हैं।

हरड़ के अनेक योग

- हरड़ को अन्य औषधियों के साथ प्रयोग करने पर, उन औषधियों का गुण बढ़ जाता है। अकेली हरड़ भी अपना स्वतन्त्र प्रभाव रखती है। अकेली हरड़ का चूर्ण 1-2 रत्ती की मात्रा में शहद के साथ देने से कब्ज प्रभृति व्याधियों को दूर कर देती है।
- शिशु की आँखों के पलक सूज गये हों तो उन पर छोटी हरड़ पानी के साथ घिस कर लगाने से लाभ होता है। गुहेरी होने पर भी यह क्रिया तुरन्त प्रभाव दिखाती है।
- बड़ी हरड़ पानी के साथ पतली घिस कर, उसमें मूँग प्रमांण काला नमक मिला कर प्रतिदिन या 2-3 दिन के अन्तर पर, 1 बार बालक को पिला दिया करें। इससे पाचन प्रणाली स्वस्थ रहेगी और अफरा आदि भी नहीं होगा।
- हरड़, आमला, पीपल, चित्रकमूल समान भाग लेकर महीन पीसें। इसे 1 रत्ती की मात्रा में, किंचित् गर्म पानी के साथ सेवन करायें। इससे ज्वर, खाँसी, पसली चलना, अफरा, पेट दर्द आदि में शीघ्र लाभ होगा।
- यदि बालक के मूत्र पर चीटियाँ एकत्रित होने लगें तो उसे हरड़, अनार की छाल, बेलगिरी, बबूल की छाल और सोंया समान भाग का क्वाथ 1-2 चम्मच की मात्रा में दिन में 2 बार, कुछ दिन तक पिलाना चाहिये। इससे शिशु को, आनुवांशिकता से या अन्य कारण से प्राप्त मधुमेही प्रभाव नष्ट होगा और पेट भी ठीक रहेगा।
- हरड़, वच और कूट का कल्क शहद के साथ मिला कर तथा माता के दूध में मिश्रित करके पिलावें। इससे शिशु का काग गिरना ठीक हो जाता है।

काकड़ासिंगी और शिशुरोग

काकड़ासिंगी शब्द कर्कट श्रृंगी का अपभ्रंश है। यह कषाय, तिक्त, उष्णवीर्य वनस्पति वात- कफ के दोष से उत्पन्न विकारों को दूर करने में अपना अद्भुत प्रभाव दिखाती है। इसलिये आयुर्वेद के अनेक रोगों, विशेषकर बाल रोगों में भी इसके योग सफलतापूर्वक प्रयुक्त किये जाते हैं।

वातज, कफज या वात- कफजन्य अनेक उपद्रव इसके सेवन से दूर हो जाते हैं। सब प्रकार की खाँसी, पुरानी खाँसी, कुकर खाँसी तथा ज्वर में भी काकड़ासिंगी लाभ करती है। बाल रोगों में प्रयुक्त- कर्कटादि चूर्ण इसकी मुख्य औषधि मानी जाती है। बाल चतुर्भद्र या बालचतुर्थी में भी काकड़ासिंगी एक मुख्य द्रव्य है। प्रस्तुत हैं कुछ योग —

ज्वरातिसारहर कर्कटादि चूर्ण

काकड़ासिंगी, अतीस, सोंठ, धाय के पुष्प, बेलगिरी, सुगन्धवाला, नागरमोथा और बेर की गुठली की मिंगी समान भाग लेकर कूट- कपड़छन करके रख लें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मात्रा — 4 रत्ती से 1 माशा तक, अथवा बालक की आयु के अनुरूप अधिक भी हो सकती है। इसे शहद में मिला कर बालक को चटाने से ज्वर, अतिसार, ग्रहणी, वमन, रक्तस्राव, कास, श्वास आदि रोग नष्ट हो जाते हैं।

खाँसी नाशक श्रृंग्यादि चूर्ण

काकड़ासिंगी, नागरमोथा और अतीस समान भाग लेकर, कूट- छान लें।

मात्रा — 1 माशे तक, शहद में मिला कर बालक को चटावें। इससे खाँसी में पर्याप्त लाभ होता है, ज्वर और वमन- विकार भी इसके सेवन से शीघ्र दूर हो जाते हैं।

ज्वर कासघ्न पुष्करादि चूर्ण

पुष्करमूल, क़ाकड़ासिंगी, पिप्पली, अतीस और धमासा समान भाग लेकर कूट- छान कर रखें।

मात्रा — 1 वर्ष के शिशु को 1 रत्ती शहद के साथ चटावें। इससे सब प्रकार की खाँसी दूर होती है।

केवल काकड़ासिंगी का चूर्ण 1 रत्ती भी शहद के साथ बाल रोगों में उपयोगी है। खाँसी या ज्वर की सामान्य स्थिति में इससे सहज लाभ सम्भव है।

वायविडंग का कृमिनाशक प्रभाव

वायविडंग, जिसे विडंग भी कहते हैं, आयुर्वेद के अनेक योगों में सम्मिलित की जाती है। इसका कृमि नाशक प्रभाव सर्वमान्य है। आधुनिक विज्ञान भी इसके प्रति अधिक आकर्षित है, इसके लिये ग्राइप वाटर या ग्राइप मिक्श्चर जैसी प्रसिद्ध दवाओं में भी इसके अर्क का मिश्रण होने लगा है और उनके निर्माता सोंफ के साथ इसे भी डाल कर भवके द्वारा अर्क खींचते और लाभ उठाते हैं।

आयुर्वेद ने भी वायविडंग को अन्यान्य औषधि- द्रव्यों के साथ प्रयुक्त किया है।

वायविडंग के शिशु- हितैषी योग

- वायविडंग, अजवाइन, नागरमोथा, पिप्पली, काकड़ासिंगी और अतीस, समान भाग का चूर्ण बालक की आयु और बलानुसार मात्रा में शहद के साथ चटाने से ज्वर, कास, वमन, अतीसार तथा कोष्ठ में विद्यमान कृमि नष्ट होते हैं।
- वायविडंग, ढाक के बीज, इन्द्रयव, नीम की छाल और चिरायता, सम भाग के चूर्ण को गुड़ में मिला कर खिलाने से सब प्रकार के कृमियों का नाश होता है।

मात्रा — शिशु के आयु- बल के अनुरूप निश्चित करें। केवल स्तनपान करने वाले शिशु की माता को यह योग सेवन कराने चाहियें।

- **कृमिशार्दूल चूर्ण** — कृमि, कृमिजन्य अन्य उपद्रव, अरुचि, मन्दाग्नि और ज्वर में यह अत्यन्त उपयोगी है —

वायविडंग, काली जीरी, कुटकी, पलाश बीज, चिरायता, निशोथ, नीम की छाल और हरड़ का वक्कल समान भाग लेकर कूट- कपड़छन करें। आयु बलानुसार निश्चित करें।

- **कृमिकालानल रस** — कृमि रोग, ग्रहणी, गुल्म, उदर- रोग, प्लीहा, शोथ आदि को नष्ट

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
करता तथा अग्नि प्रदीप्त करता है —वायविडंग 8 तोले, शुद्ध विष 4 तोले, लौह भस्म 2 तोले, शुद्ध पारद और शुद्ध गन्धक 1-1 तोला लें।

प्रथम पारद और गन्धक की कज्जली करें। अन्य द्रव्यों को महीन पीस कर मिलावें और बकरी के दूध में खरल करके रखें। शिशु अथवा शिशु की माता के आयु- बल के अनुरूप मात्रा तथा उचित अनुपान निश्चित करें।

- **विडंगादि लौह** — अरुचि, मन्दाग्नि, अर्श, विशूची, शोथ, शूल, हिक्का, कास, श्वास, ज्वर तथा कृमिजन्य रोगों को नष्ट करने में अत्यन्त उपयोगी है।

वायविडंग 18 भाग, लौह भस्म 9 भाग, वंग भस्म 1 भाग लेकर वायविडंग को कूट- छान कर उसमें भस्में मिला कर घोटें और उसमें शुद्ध पारद और शुद्ध गन्धक 1-1 भाग की कज्जली करके मिलावें। तत्पश्चात् काली मिर्च, लौंग, जायफल, छोटी पीपल, शुद्ध हरताल और सोंठ 1-1 भाग को मिला कर कपड़छन चूर्ण करके उसी में मिला दें।

मात्रा — पूर्ण वयस्क के लिये 2 रत्ती तक है। बालकों के लिये उनके अनुरूप मात्रा और अनुपान निश्चित करनी चाहिये।

शिशुजीवनार्क विडंगादि अर्क

यह अर्क ग्राइप मिक्श्चर के ढंग का, किन्तु अत्यधिक प्रभावशाली है। बालकों के अनेक रोगों को दूर करता है—

सोंफ का अर्क, वायविडंग का अर्क और चूने का पानी, तीनों 2-2 भाग, संजीवनी सुरा तथा शर्करा या मिश्री का महीन चूर्ण 1-1 भाग लेकर काँच की बोतल में भर कर कड़ी कार्क से मुख बन्द करें और 3 दिन तक नित्य प्रति धूप में रखें और फिर छान कर पुनः स्वच्छ बोतल में भर लें।

मात्रा — 5 से 10 बूँद तक नवजात शिशु को भी, आवश्यक होने पर दी जा सकती है। 6 मास के बालक को आधी चम्मच तक की मात्रा पर्याप्त है। दन्तोद्गम- काल की गड़बड़ियों हरे- पीले दस्त, वमन, अफरा आदि में आवश्यक मात्रा में 3-4 बार दे सकते हैं। अधिक आयु के बालकों को अधिक मात्रा दी जाती है।

इसके व्यवहार से अपच, अजीर्ण, अतीसार, आध्मान, वमन, उदरशूल आदि में शीघ्र लाभ होता है। दाँत निकलने के समय के सभी उपद्रवों में उपयोगी है। सामान्य ज्वर का भी शमन हो जाता है।

देशी बालामृत

वायविडंग, मुलहठी, सोंठ, पिप्पली, काली मिर्च, मीठी वच, मीठी अतीस, लाल चन्दन, पित्त पापड़ा, नागरमोथा, धनिया और सोंफ 10-10 ग्राम, जौकुट करके 3 लीटर पानी के साथ क्वाथ करें और चौथाई शेष रहने पर उतार कर छान लें। फिर इसमें 120 ग्राम मिश्री मिला कर शर्बत की चाशनी करके रख लें।

मात्रा — आधे चम्मच से 1 चम्मच तक, अथवा आयु- बल के अनुसार सेवन करायें। इससे दन्तोद्गम- काल के सब रोग, उदर रोग, ज्वर, खाँसी, कब्ज, हरे- पीले दस्त, वमन आदि में शीघ्र लाभ होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेलगिरी का आमातिसार नाशक वरदान

बेल को बिल्व कहते हैं। यह औषधि- कर्म में भी प्रयुक्त होती है और धार्मिक कृत्यों में भी। शिवजी की पूजा में इसका बड़ा महत्व माना जाता है। आयुर्वेद के विभिन्न योगों में अथवा स्वतन्त्र रूप से भी इसका व्यवहार किया जाता है। अपने स्निग्ध गुण के कारण वात प्रकोप के शमन में भी प्रभावकारी है।

बिल्व का ताजा, कच्चा फल अग्नि प्रदीपक, रुचिकर, हल्का तथा उष्णवीर्य है। यह सभी प्रकार के बालतिसारों में लाभ करता है। कब्ज को दूर करता, आमशूल को मिटाता तथा रक्त आँव मिश्रित दस्तों पर तुरन्त नियन्त्रण करता है। इस प्रकार ग्रहण, पेचिश, दन्तोद्गम काल के उपसर्ग, अफरा, उदर- शूल आदि में भी उपयोगी है।

बेल (बिल्व) के कतिपय योग

- बेल की जड़ के क्वाथ में धान की खील और शर्करा मिला कर मथें तथा बालक को पिलावें। इससे सब प्रकार के अतिसार और वमन में शीघ्र लाभ होता है।
- बेलगिरी, इन्द्रायव, सुगन्धवाला, मोचरस और नागरमोथा के कल्क के साथ बकरी का दूध यथाविधि सिद्ध करके बालक को पिलाना चाहिये। इससे आमातिसार और संग्रहणी रोग शीघ्र ही दूर हो जाता है
- भुने हुए बेलगिरी के गूदे को गुड़ के साथ मिला कर सेवन करावें। इससे आमशूल, कब्ज, रक्तातिसार आदि का शमन होता है।
- बेलगिरी 2 तोले, बकरी का दूध 16 तोले और जल 64 तोले मिला कर, मन्दाग्नि पर पकावें, जब दूध मात्र शेष रहे तब इन्द्रायव, मोचरस और शर्करा का चूर्ण डाल कर पिलावें। इससे रक्तातिसार में शीघ्र लाभ होता है।

इसमें द्रव्यों की मात्रा वयस्कों के अनुरूप है, शिशुओं के लिये, उनके आयु- बल के अनुसार निश्चित करनी चाहिये।

- कच्चे बेल की गिरी, पिप्पली और सोंठ का चूर्ण शहद के साथ उचित मात्रा में चटाने से वायु का अवरोध तथा शूलयुक्त प्रवाहिका का शीघ्र शमन होता है।
- आमातिसार, रक्तामातिसार आदि में, उचित मात्रा में बेलगिरी का मुरब्बा अथवा मुरब्बे का शर्बत सेवन कराना चाहिये।
- लघु गंगाधर चूर्ण सेवन कराने से पेचिश और दर्द में शीघ्र लाभ होता है। इसमें बेलगिरी, मोथा, इन्द्रायव, पठानी लोध, मोचरस और धाय के फूल का समान भाग रहता है।

सर्वरोगहर तुलसी का बालरोगों में उपयोग

तुलसी एक ऐसी वनस्पति है जो धार्मिक हिन्दू समुदाय में अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा औषधियों के प्रयोग में अत्यन्त गुणकारी सिद्ध होती है। आबाल वृद्ध स्त्री- पुरुष सभी इसके सेवन से लाभ उठाते हैं।

तुलसी जुकाम, खाँसी, ज्वर, सूखा रोग, डब्बा रोग बाल निमोनिया या पसली चलना, विबन्ध और अतिसार सभी में अनुपात- भेद तथा औषधि- संयोग भेद से आश्चर्यजनक रूप से अपना गुण दिखाती है। उसके कतिपय योग प्रस्तुत हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रोगानुसार तुलसी के प्रयोग

- यकृत वृद्धि में 1 तोला तुलसी के पत्तों को 20 तोले शुद्ध जल के साथ क्वाथ करें। चौथाई शेष रहने पर उतार कर छान लें। इसे उचित मात्रा में दिन में 2 से 4 बार तक बालक को पिलावें। इससे जिगर का बढ़ना अथवा जिगर से सम्बन्धित अन्य रोग नष्ट हो जाते हैं।
- प्रतिश्याय में तुलसी के पत्ते 5 तोले, वनफ्शा 2 तोले, मुलहठी 1 तोला लेकर 40 तोले पानी के साथ चतुर्थावशेष क्वाथ करें और छान कर 10 तोले मिश्री के साथ शर्वत की एकतार की चाशनी कर लें।

मात्रा — 1 चम्मच तक आयु- बल के अनुसार दें। इससे जुकाम, खाँसी, अफरा वमन आदि में लाभ होगा। सामान्य ज्वर की हरारत भी दूर हो जाती है।

- बाल निमोनिया, पसली चलना आदि में 1 तोला तुलसीपत्र स्वरस में 6 मासे गोघृत मिला कर अग्नि पर गुनगुना सा कर लें। इसे 1 बार या 2 बार में दे सकते हैं। किन्तु मलावरोध के साथ अफरा हो तो ही इसे दें। ज्वर में न दें, क्योंकि इससे दस्त हो सकते हैं। दस्त हों तब भी नहीं देना चाहिये।
- दस्तों की अधिकता में तुलसी- पत्र के स्वरस में धाय के फूलों को पीस कर और उसे माता के दूध में मिला कर देने से लाभ हो जाता है
- वमन और अतीसार में 1 रत्ती या आवश्यक मात्रा में फुलाया हुआ चौकिया सुहागा, तुलसी- पत्र स्वरस के साथ खरल करें और किंचित मधु- योग से मूँग प्रमाण गोलियाँ बना लें। इन्हें पानी के साथ 1-1 गोली की मात्रा में देना चाहिये।

खसरा या रोमान्तिका

यह रोग प्रायः बालकों को ही होता है। इसमें बालक का मुख कुछ फूला- फूला सा उसकी श्लेष्म कला में कुछ परिवर्त्तन के साथ- साथ, लाल- लाल, छोटे- छोटे कुछ चिह्न उभर आते हैं। सूँघने पर एक विशेष प्रकार की गन्ध आती है। आँखों पर कुछ शोथ- सा झलकता है। आँखें लाल होकर दर्द करने लगती हैं, उनमें से पानी निकलने लगता है।

जुकाम भी हो जाता है, छींकों के साथ पानी निकलता है। शरीर का तापमान बढ़ जाता है। खाँसी सूखी, कष्टदायक होती है, गले में खराश हो जाती है। यह प्रसेकावस्था है, जो प्रायः 3-4 दिन रहती है, ज्वर हट जाता है। किन्तु उसके बाद पुनः ज्वर के साथ बहुत महीन दाने निकल आते हैं और गुलाबी रंग के स्फोट दिखाई देते हैं। कुछ समय में ही दानों के सब ओर घेरा- सा बनता और दाने परस्पर में एक- दूसरे से मिल जाते हैं। यह स्थिति प्रायः 3-4 दिन रहती है, दाने मुरझाने लगते हैं। 5-7 दिन में भुसी- सी उड़ने लगती है।

आवश्यक नहीं कि यह सभी लक्षण, सभी रोगी बालकों में समान रूप से देखे जाते हैं। यदि रोग अपनी सहजावस्था से हट कर चलता है तो अन्य उपद्रव भी हो सकते हैं, जिनमें निमोनिया प्रभृति विकार मुख्य है।

खसरा के रोगनिवारक उपचार

रोगी को स्वच्छ वायु में रखें, उसके मुख को स्वच्छ रखें, सुपाच्य पौष्टिक आहार दें,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
जिसमें तरल द्रव्यों की अधिकता हो। पानी उबाल कर, ठण्डा करके, छान कर देना चाहिये, जिससे कि वह प्रदूषण- मुक्त हो सकें।

खसरा में औषधोपचार

- स्वर्ण भस्म, लौह भस्म और शुद्ध शिलाजीत समान भाग लेकर तुलसी पत्र, स्वरस में घोट कर रखें।
- **मात्रा** — 1-2 रत्ती भर यह महौषधि माता के दूध में अथवा बकरी के दूध में पीस कर देनी चाहिये। अथवा शहद के साथ भी दे सकते हैं।

  विस्फोट अथवा व्रण उत्पन्न होने वाली सभी रोगों में यह दवा शीघ्र कार्य करती है।
- हल्दी का बहुत महीन चूर्ण करके रखें। इसे 1 रत्ती से 4 रत्ती तक की मात्रा में, आयु- बल के अनुसार दें। अनुपान करेला का स्वरस। इससे खसरा और चेचक में भी लाभ होता है।
- हरड़, बहेड़ा, आमला, कत्था, नीम की छाल, अडूसा और गिलोय समान भाग का क्वाथ करके रखें। बहुत छोटे शिशुओं को 5 बूँद और बड़े बालकों को 10-20 बूँद तक आयु के अनुसार देना चाहिये।

आयुर्वेदिक खदिराष्टि भी रोगी के रोग- लक्षण और आयु- बल के अनुसार दिया जा सकता है।

शीतला, चेचक, मसूरिका

यह रोग भी प्रायः बालकों को होता है। किन्तु वयस्कों और युवाओं को भी होता देखा गया है। इस कष्टसाध्य रोग का पुराना नाम मसूरिका ही है। आयुर्वेद ने यह नाम लक्षणानुरूप दिया है। चरक का कथन है — **याः सर्वेषु गात्रेषु मसूरमात्रा मसूरिकाः।**

जो मसूर जैसी पिडिकाएँ समस्त शरीर पर हों, वे मसूरिका हैं।

आचार्यों ने इस रोग को वात, पित्त, कफ, त्रिदोष और रक्तदोष के भेद से 5 प्रकार का माना है तथा धातु- भेद से इसे 7 प्रकार का भी मानते हैं। आधुनिक चिकित्सक इसका मुख्य कारण विषाणु को मानते हैं। यह रोग संक्रामक है, अतः एक रोगी से दूसरे में शीघ्र संक्रमित हो सकता है।

संक्रमण को फैलने न दिया जाय, इस उद्देश्य से रोगी के सिरहाने रखने और द्वार पर बाँधने के लिये नीम के पत्ते काम में लाये जाते हैं। क्योंकि नीम में कृमियों, विषाणुओं आदि को नष्ट करने की शक्ति है और वह संक्रमण को बढ़ने न देने में भी उपयोगी है।

चेचक का पूर्व रूप

चेचक या शीतला निकलने से पहिले ज्वर का सामान्य लक्षण दिखाई देता है, इसलिये यह अनुमान तुरन्त नहीं हो पाता कि चेचक निकलेगी। फिर अंगों में टूटन, त्वचा पर खाज, शोथ तथा लाली, आँखों में भी लाली, मुख पर फुलाव या सूजन, जुकाम, नेत्र- कष्ट और रोमहर्ष आदि लक्षण देखे जाते हैं।

चेचक रोगारम्भ के रूप

वातजन्य मसूरिकाएँ काली, अरुण, चिपचिपी, वेदनायुक्त फुन्सियों के रूप में उत्पन्न

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

होती हैं। पित्तजन्य पीताभ लाली युक्त, तीव्र वेदना तथा दाह के साथ जो फुन्सियाँ निकलती हैं, वे शीघ्र पक जाती हैं। कफजन्य में पिडिकाओं का वर्ण श्वेत, अधिक मोटी, चिकनी, खुजलीयुक्ततथा मन्द पीड़ा वाली होती हैं। त्रिदोषज सन्निपातज में नीली, चपटी, फैली हुई, मध्य में कुछ दबी हुई, अधिक पीड़ा वाली, चिरपाकी पिंडिकाएँ होती हैं, जिनसे दुर्गन्धित स्राव निकलता है। रक्तजन्य पिडिकाएँ शीघ्र पाकी, पतली त्वचा की तथा रक्तवर्ण की निकलती हैं, जिनसे नि[illegible] वाला स्राव भी लाल रंग का होता है।

धातुगत मसूरिकाएँ

रसगत में अल्पदोष वाली, पानी के बुलबुले जैसी, फूटने पर जलस्राव वाली पिंडिकाएँ होती हैं। रक्तगत पिंडिकाओं में रक्तजन्य मसूरिका जैसे लक्षण होते हैं। मांसगत पिंडिकाएँ स्निग्ध, चिरपाकी, स्थूल त्वचा वाली तथा कठोर होती हैं। मेदगत मृदु, कुछ उठी हुई तथा वृत्ताकार होती हैं। इसमें तीव्र ज्वर रहता है।

अस्थि मज्जागत की पिंडिकाएँ त्वचा के वर्ण जैसी, रूखी, चपटी और छोटी होती हैं। शुक्रगत मसूरिका में स्निग्ध, सूक्ष्म, पकी हुई तथा अत्यन्त पीड़ायुक्त पिडिंकाएँ होती हैं।

चेचक के सामान्य लक्षण

ज्वर, दाह, पीले, ताँबे जैसी अथवा मसूर के वर्ण की तीव्र वेदनायुक्त फुन्सियाँ उत्पन्न होती हैं, जो फोड़ों का सा रूप लेती हुई रोगी के मुख, नासा छिद्र, कण्ठ तथा श्लेष्मकला तक बढ़ जाती हैं। यह रोग रोगी के खाँसने, छींकने, श्वास लेने- छोड़ने के समय वायु के द्वारा, स्वस्थ व्यक्तियों को भी रोगी बनाने में कारण बन सकता है।

चेचक के प्रतिरोधक उपाय

वातावरण स्वच्छ रहना चाहिये, क्योंकि सभी रोगों की उत्पत्ति का मुख्य कारण पर्यावरण का दूषित होना ही है। गृह- द्वार पर नीम की बन्दनवार बना कर बाँधें तथा धूप देने का दैनिक कार्यक्रम बनायें।

धूप द्रव्य — गूगल, चन्दन, लोबान, देवदारु, चन्दन, जटामाँसी, वच, अगर, नीम के पत्ते आदि से या अन्य हवन धूप से घर को कीटाणु- रहित और सुगन्धित रखा जा सकता है।

- यदि नगर, ग्राम या मुहल्ले में चेचक का प्रकोप हो तो हल्दी, नीम के पत्ते और बहेड़े की मज्जा समान भाग लेकर चूर्ण बनावें और प्रतिदिन 10 ग्राम तक पानी के साथ अथवा त्रिफला- क्वाथ के साथ सेवन करें।
- हल्दी 10 ग्राम, काली मिर्च 5 ग्राम और मिश्री 10 ग्राम महीन चूर्ण करके तुलसीपत्र स्वरस में शहद मिला कर, उसके साथ प्रातःकाल नित्यप्रति सेवन करते रहें।
- नीम की कोंपल 5, काली मिर्च 2 और थोड़ी- सी मिश्री प्रातःकाल चबायें अथवा पीस कर, पानी के साथ सेवन करें।
- गिलोय, परवल के पत्ते और काली मिर्च समान भाग का चूर्ण थोड़ी- सी मिश्री मिला कर 10 ग्राम तक की मात्रा में पानी के साथ फाँकें।

इनमें से कोई भी एक योग परिवार के सभी व्यक्तियों को, महिलाओं और बालकों को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
7-8 दिन तक सेवन करना चाहिये। इनसे चेचक से बचाव हो सकता है। किन्तु किसी बालक को रोग उत्पन्न हो जाय तो उसके परिचारक स्त्री या पुरुष को अपने लिये रोग से बचने का ध्यान रखना चाहिये। निम्न उपाय हितकर है।

चेचक के संक्रमण से बचने का उपाय

चेचक के रोगी की परिचर्या करने वालों या अन्यों के रोग के संक्रमण की शंका हो जाती है। ऐसी स्थिति में अपने हाथ में हरड़- बीज बाँध लेने से रोग का संक्रमण परिचारक में नहीं होगा। यदि परिचारार्थ कोई स्त्री हो तो उसे हरड़ के बीज बाँये हाथ बाजू में बाँधने चाहिये। पुरुष को दायें हाथ में बाँधना उचित है।

चेचक या मसूरिका के औषधोपचार

प्रायः यह धारणा रही है कि इस रोग में कोई औषधि नहीं खिलानी चाहिये। किन्तु ऐसा न करने से कभी- कभी हानि भी देखी गई है। इसलिये अनेक चिकित्सक औषधियाँ देने के पक्ष में तो हैं, पर वे तीव्र औषधियाँ नहीं देते। इस रोग में सरलता पूर्वक उपचार हेतु कुछ औषधि- योग प्रस्तुत हैं, इनमें से कोई भी एक दे सकते हैं —

- मुलहठी, मुनक्का, गिलोय, ईख की जड़ और अनार के पत्ते समान भाग लेकर काढ़ा बनायें और उसमें मिश्री मिला कर रोगी को पिलायें। ऐसा आवश्यकतानुसार दिन में 1 या 2 बार करें। क्वाथ द्रव्यों की मात्रा आयु और बल पर निर्भर है।
- रुद्राक्ष और काली मिर्च 10-10 ग्राम लेकर चावलों के पानी के साथ पीसें और प्रतिदिन प्रातःकाल पिलावें।
- कुटकी, अडूसा, गिलोय परवल के पत्ते, नागरमोथा, चिरायता, पित्तपापड़ा, नीम की छाल, जवासा और तुलसी का पंचांग समान भाग का चूर्ण 1 से 2 ग्राम तक की मात्रा में पानी के साथ फँकावें। अथवा इन सब औषधि- द्रव्यों का काढ़ा बनाकर, उसमें शहद मिला कर प्रातःकाल सेवन करायें।
- नीम की कोंपलें और तुलसी- पत्र का कल्क बनाकर शहद अथवा मिश्री मिला कर प्रातःकाल दें।
- अनन्तमूल का चूर्ण 1 से 2 ग्राम तक की मात्रा में चावलों के पानी के साथ प्रातः काल सेवन करायें।

चेचक में सेवनार्थ अन्य उपयोगी औषधियाँ

गोदन्ती हरताल भस्म 400 मिली ग्राम, सहस्रपुटी अभ्रक भस्म और मुक्तापिष्टी प्रत्येक 100 मि. ग्रा. तथा स्वर्ण- भस्म 40 मिलीग्राम लेकर खरल में ठीक प्रकार से घोट कर 4 पुड़ियाँ बनावें।

मात्रा — 1-1 पुड़िया 6-6 घंटे के के अन्तर से शहद और अर्क सुदर्शन के साथ, दिन भर में 3 या 4 बार देनी चाहिये। अन्य अत्युत्तम योगों में सुदर्शन चूर्ण का सेवन बहुत लाभदायक है। निम्न आमलक्यादि चूर्ण भी स्वाभाविक रूप से उपयोगी है –

शीतला में आमलक्यादि चूर्ण

आमला, चित्रकमूल, हरड़, पिप्पली और सेंधा नमक समान भाग लेकर कूट- छान लें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मात्रा — 1- 2 ग्राम तक पानी के साथ फंकी दें।

चेचक दब जाने पर औषधोपचार

यदि चेचक के दाने निकल कर दब गये हों तो यह विकृति है और उस स्थिति में अधिक सावधानी की आवश्यकता होती है। तब यह औषधि- योग भी देना चाहिये —

कचनार की छाल का क्वाथ करके छानें और अपेक्षित मात्रा में क्वाथ के साथ स्वर्णमाक्षिक भस्म 1 से 4 रत्ती तक मिला कर पिलावें। क्वाथ में मधु या मिश्री भी डाल सकते हैं। स्वच्छन्द भैरवरस भी इसमें उपयोगी है —

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, स्वर्ण माक्षिक भस्म, लौह- भस्म, अरनी, निर्गुण्डी, सोंठ, काली मिर्च, पिप्पली, भुना सुहागा और शुद्ध विष समान भाग लेकर निर्गुण्डी और गोरखमुण्डी के स्वरस में 1-1 दिन खरल करके रखें।

मात्रा — आधी से एक रत्ती तक यह रस रास्ना और देवदारु के क्वाथ में मधु डाल कर पिलावें। चेचक में प्रयोगार्थ इस रस को बनाते समय शुद्ध विष न डालें।

चेचक के दागों की दवा

चेचक ठीक होने पर जो दाग बन जाते हैं, उनसे मुख की शोभा घट जाती है। किन्तु वे दाग भी सुदर्शन चूर्ण के धैर्य पूर्वक सतत् सेवन से स्वतः नष्ट हो जाते हैं।

बाह्य प्रयोग के लिये त्रिफला तैल बना लें —

त्रिफला, नीम की छाल, चिरायता, हल्दी, दारुहल्दी और लाल चन्दन समान भाग के कल्क को चौगुने तैल के सात सिद्ध करके रखें।

इसकी मालिश से सब प्रकार के व्रण, क्षत और उनके निशान दूर हो जाते हैं।

बाल- शोष (सूखा रोग)

यह रोग जिन बालकों को लग जाता है, उनका शरीर सूखता चला जाता है। लगता है वह कोई अस्थियों का ढाँचा मात्र रह गया है। आयुर्वेद इस रोग को पाँच प्रकार का मानता है — 1. दुग्ध- दोष से उत्पन्न, 2. अपौष्टिक और निकृष्ट आहार से उत्पन्न, 3. फुफ्फुस के विकार से उत्पन्न, 4. जीर्ण रोग से उत्पन्न और 5. अन्य किसी विकार अथवा विषम आहार आदि से उत्पन्न।

- प्रथम प्रकार का सूखा रोग आता के मिथ्या आहार- विहार के कारण होता है, जिससे कि दूषित हुए वातादि दोष, माता के दूध को भी दूषित कर देते हैं। उस दूध के पीने का प्रभाव शिशु के शरीरस्थ रस, रक्त मांस, मेद आदि पर पड़ता है और तब वह सूखने लगता है।
- शिशु की वृद्धि के लिये पौष्टिक आहार की आवश्यकता होती है। माता के दूध में वे तत्व नहीं होते अथवा अन्न और दूध दोनों का सेवन करने वाले शिशुओं का पौष्टिक तत्वों से युक्त आहार नहीं मिलता, तो वे रोगी होकर सूखने लगते हैं।
- फुफ्फुस विकार जन्य बाल शोष का मूल कारण, उसे कफ, खाँसी प्रभृति विकारों की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वृद्धि होना है। उचित उपचार के अभाव में रोग बढ़ते जाते हैं और वह शरीरस्थ धातुओं को सुखाते रहते हैं।

- चौथे प्रकार का सूखा रोग प्रायः अन्न पर निर्भर रहने वाले बालकों को होता हैं। दूषित अन्नादि के सेवन से किसी दुष्ट रोग का लगना और उचित उपचार के अभाव में पुराना पड़ जाना तथा उसी के कारण शरीरस्थ धातुओं का क्षय होते रहना इस रोग का मुख्य कारण है।
- यह रोग भी अन्य किसी प्रकार की विकृति से उत्पन्न हो सकता है अथवा विषम आहार (जो अन्न परस्पर में विपरीत गुण वाला हो) से उत्पन्न हो सकता है।

लक्षण — इस रोग के कारणानुसार लक्षण भी कुछ भिन्न- भिन्न हो सकते हैं। मुख्य लक्षण कब्ज, अतीसार, आमातिसार, शूल, वमन, खाँसी, ज्वरादि हो सकते हैं। यकृत और प्लीहा वृद्धि, आँतों में खराबी, पेट में गाँठें पड़ना तथा हाथ- पाँवों का सूखना और विभिन्न अंगों में नीली नसों का उभार आदि लक्षण होते हैं।

चिकित्सा सूत्र

रोग का जो कारण हो, उसका निवारण आवश्यक है। कारण ज्ञात न होने पर अनुमान से कार्य लेना होता है।

माता का दूध पीने वाले बालक की माता को भी औषधियाँ सेवन कराई जाती हैं। उसका आहार- विहार भी संयमित (शिशु रोग निवारण की दृष्टि से) रखना होता है। यदि माता स्वयं किसी रोग से ग्रस्त हो तो, बालक को उसका दूध नहीं पीने देना चाहिये। उस स्थिति में उसे बकरी या गाय का दूध दिया जा सकता है।

यदि बालक के धातुक्षय या शोषण का कारण कोई अन्य दुष्ट रोग अथवा जीर्ण रोग है तो मुख्य रूप से उसकी चिकित्सा अत्यावश्यक है।

इस रोग को झेलने वाला बालक चिड़चिड़ा हो जाता है, इसलिये उसके अधिक रोने, मल- मूत्र करने आदि पर रोष प्रकट करना उचित नहीं है। रोगी बालक के साथ स्नेह का व्यवहार करना चाहिये।

सूखा रोग पर औषधोपचार

बालशोष नाशक वटी

सुहागा उत्तम प्रकार का तथा फुलाया हुआ 10 ग्राम, सत गिलोय, काकड़ासिंगी, श्वेत जीरा, आक का क्षार, तम्बाकू का क्षार, श्वेत जीरा, स्वर्ण माक्षिक भस्म, मृगांक और स्वर्णमालती वसन्त, प्रत्येक 5 ग्राम, शुद्ध अफीम 20 ग्राम लेकर लाल डंठल के अपामार्ग (चिरचिटा) के स्वरस में 7 भावनाएँ देकर 1-1 रत्ती प्रमाण गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1-1 गोली माता के दूध के साथ प्रातः- सायं देनी चाहिये। यह दवा बालकों के सूखा रोग को शीघ्र ही दूर कर देती है। दुग्ध पीने वाली बालकों के अतिरिक्त, अन्य बालकों के सूखा रोग में यह दवा अपामार्ग स्वरस में शहद मिला कर अथवा तुलसी पत्र स्वरस में शहद मिला कर दे सकते हैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

सूखा रोग नाशक अवलेह

आमले 200 ग्राम लेकर, उतने ही पानी के साथ पकावें और उतार कर उनकी गुठली आदि दूर कर दें तथा सिल पर पीस कर 50 ग्राम घृत के साथ भून लें। जिस जल में आमले पकाये गये थे उसी जल में चीनी 300 ग्राम डाल कर चाशनी कर लें तथा उस चाशनी में आमले का कल्क और 200 ग्राम शहद मिलायें। तदुपरान्त उसमें निम्न द्रव्यों का कपड़छन चूर्ण भी मिला दें —

छोटी पीपल, दाल चीनी और छोटी इलायची के दाने 3-3 ग्राम, तालीस पत्र, गाजवाँ, गुल- बनफ्शा, काकड़ासिंगी, तालीसपत्र, मुलहठी, बहेड़ा, वंशलोचन और गिलोय सत 6-6 ग्राम। इस प्रकार सबको ठीक प्रकार से चासनी आदि के साथ मिला कर अमृतवान में रख लें।

मात्रा — 5 ग्राम से 20 ग्राम तक, आयु- बल के अनुसार प्रातः- सायं गाय के धारोष्ण सुखोष्ण दूध के साथ देनी चाहिये। दूध में थोड़ी मिश्री मिला सकते हैं।

बालशोष रोग के लिये यह अवलेह बहुत उपकारी है। खाँसी, श्वास की भयंकरता तथा ज्वरादि में भी हितकर है। बालकों को तो प्राण स्वरूप है ही, वयस्कों को भी बहुत उपयोगी है। क्षयादि की सामान्य अवस्था में भी कार्य करता है।

बालशोष में अत्यन्त प्रभावकारी वटी

छोटी इलायची के दाने, वंशलोचन, जीरा, दरयाई नारियल और गुलाब के फूल, प्रत्येक 5-5 ग्राम का महीन चूर्ण कल्बुल हिज्र, जहर मोहरा खताई और स्वर्ण- माक्षिक भस्म 4-4 ग्राम, मुक्तापिष्टी 2 ग्राम।

मुक्तापिष्टी स्वयं बना लेना अधिक उत्तम है। इसके लिये बसरा के असली मोती 2 ग्राम लेकर गुलाबजल और वेदमुश्क के जल अर्क में क्रमशः 1-1 दिन खरल कर लेना चाहिये। सभी वस्तुओं को एकत्र मिला कर पुनः घोटें और फिर क्रमशः अर्क गुलाब, अर्क केवड़ा और अर्क वेदमुश्क में क्रमशः 6-6 घंटे घोट कर आधी- आधी रत्ती प्रमाण गोलियाँ बनाकर छाया में सुखावें और शीशी में सुरक्षित रखें।

मात्रा — 1-1 गोली पीस कर, माता के दूध में मिला कर, प्रातः- सायं सेवन करानी चाहिये। जो बालक अन्नाहार करते हों उन्हें अर्क वेदमुश्क में या अर्क गुलाब में घोट कर देनी चाहिये।

सूख कर काँटा या हड्डियों का ढाँचा मात्र बालक भी इसके सेवन से हृष्ट- पुष्ट स्वस्थ हो जाते हैं। औषधि सेवन 2 मास तक करानी चाहिये। पहिले स्वस्थ होने पर भी दवा दो मास तक चलायें।

बालशोष पर अव्यर्थ दवा

गोदन्ती हरताल भस्म 12 ग्राम, कछुए की पीठ की भस्म 10 ग्राम, पीली कौड़ी की भस्म 8 ग्राम, शंख भस्म 6 ग्राम, मुक्ताशुक्ति भस्म 4 ग्राम और प्रवाल भस्म 2 ग्राम लें। सबको एकत्र करके 3 दिन तक कागजी नींबू के स्वरस की भावना देकर सुखा कर रख लें अथवा 2-2 रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बना लें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मात्रा — 1 से 4 गोली तक (2 से 8 रत्ती तक) गाय के दूध से देनी चाहिये। बहुत छोटे शिशुओं को आधी से एक गोली तक माता के दूध में देना उचित है। मात्रा का निश्चय आयु- बल के अनुरूप किया जाय।

इससे बालशोष (सूखा) अथवा आधुनिक रोग रिकेट्स, जो कैल्शियम की कमी से, सूखा जैसा ही होता है, में अत्यन्त लाभकारी है। धातुओं के क्षय को रोग कर, पूर्ण स्वास्थ प्रदान करता है।

सूखा और रिकेट्स पर जहरमोहरा खताई भस्म

जहरमोहरा खताई 20 ग्राम लेकर ग्वारपाठा के स्वरस में 1 दिन खरल करके छोटी- छोटी टिकियाँ बनावें और सुखा कर सम्पुट में बन्द करें। इन्हें 3 किलो आरने उपलों की अग्नि में भस्म करें और पीस कर रख लें।

मात्रा — 1 से 2 रत्ती तक, गाय के घृत के साथ प्रातः- सायं सेवन करानी चाहिय। इससे सूखा रोग 4-5 सप्ताह में पूर्णतः दूर हो जाता है।

सूखा में मालिश का तैल

तिल का तैल, भृंगराज स्वरस, कुकरोंदा स्वरस और अपामार्ग स्वरस, प्रत्येक 1-1 लीटर, कछुए की पीठ की हड्डी का चूर्ण 50 ग्राम और अफीम 8 ग्राम।

पहिले तैल को भृंगराज स्वरस के साथ पका कर, तैल मात्र शेष रहने पर उतारें, फिर उसी तैल को कुकरोंदा के स्वरस में और तत्पश्चात् अपामार्ग स्वरस में पका कर सिद्ध कर लें। फिर उसमें कछुए की हड्डी का चूर्ण डाल कर भुनने दें। जब वह भुन जाय तब उसमें अफीम पीस कर मिलावें।

इस तैल की मालिश करने से, कैसा भी सूखा रोग हो, अवश्य नष्ट हो जाता है। इसकी मालिश बालक की पीठ पर विशेष रूप से तथा सर्वांग में भी की जानी चाहिये। मालिश के समय इस तैल में कुछ बूँदें चन्दन के तैल- सन्दल की मिलालें तो अधिक उपयोगी होता है।

सूखा रोग पर अन्य सरल औषधोपचार

- श्यामा गाय (काले रंग की) जिसके शरीर पर अन्य रंग का समावेश न हो, के मूत्र को किसी काँच के पात्र में घण्टे भर रख कर निथरने दें। फिर इसका उपयोग करें। इस मूत्र को नित्य नियम पूर्वक सेवन कराने से सूखा रोग नष्ट हो जाता है।
- असगन्ध और छोटी पीपल समान भाग लेकर कपड़छन चूर्ण करें। इसे 1 ग्राम तक की मात्रा में माता के दूध के साथ बालक को सेवन करावें। सूखा रोग में हितकर है
- तुलसी के बीज और सत गिलोय 5-5 ग्राम, पिण्ड खजूर का स्वरस 30 मि.लि. तथा चूने का पानी 60 मि.लि. मिला कर रखें। इस घोल की 10 खुराक कर लें।

मात्रा — 1-1 खुराक, बकरी के दूध में मिला कर प्रातः- सायं दें। छोटे शिशुओं को अल्प मात्रा में, माता के दूध के साथ देना चाहिये। सूखा रोग में शीघ्र लाभ होता है।

- तुलसी के बीज, वच, छोटी पीपल, अतीस, काकड़ासिंगी, नागरमोथा, सत- गिलोय और केशर समान भाग लें। सभी काष्ठौषधियों को कपड़छन करके उसमें सत- गिलोय मिलावें। केशर को पृथक् खरल करके, इसी में डाल दें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अब इस चूर्ण को चूने के निथरे हुए पानी के साथ 3 घंटे तक ठीक प्रकार से खरल करके आधी रत्ती प्रमाण वटी बना लें।

मात्रा — 1-1 वटी, मधु के साथ, दिन में तीन बार दें। सूखा रोग में यह अत्यन्त उपयोगी है। इससे ज्वर, खाँसी, श्वास तथा अतीसार आदि में भी शीघ्र लाभ होता है।

सूखा रोग पर चमत्कारी सन्यासी योग

चूना, कत्था लगे पान में मकोय के ढाई पत्ते रख कर चबायें और उसे चबाने से जो रस या पीक बने, उसे बालक की पीठ को साफ करके, उसके मध्य वाली रीढ़ की अस्थि पर डाल कर धीरे- धीरे मलें। ऐसा करने से कुछ देर बाद, बालक के शरीर से श्वेत रंग के छोटे- छोटे कीड़े बाहर निकलेंगे, उन्हें चिमटी से जल्दी- जल्दी पकड़ कर फेंक देना चाहिये।

इस प्रयोग से सूखा रोग नष्ट होता है। साथ ही रोगी को शोष- नाशक उपर्युक्त योगों में से कोई भी दवा भी खिलाई जा सकती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

द्वितीय खण्ड

पुरुष रोगों की चिकित्सा

मधुमेह की अव्यर्थ चिकित्सा

मधुमेह, यद्यपि प्रमेह का ही एक भेद है। किन्तु यह अत्यन्त कष्टसाध्य है और इसकी उचित चिकित्सा नहीं की जाती तो यह कष्ट साध्य से दुःसाध्य और फिर असाध्य बन जाता है। आधुनिक समय में यह अँग्रेजी के शब्द 'डाइबिटीज' के नाम से प्रसिद्ध है।

इस रोग में मूत्र के साथ शर्करा गिरती है। बार- बार मूत्र होता है। मूत्र स्थान पर चीटियाँ एकत्र होने लगती हैं। मूत्र के साथ निकलने वाली शर्करा शरीरस्थ धातुओं का सार अर्थात् ओज हैं। उसके ह्रास से शरीर की शक्तिघटती जाती है। आरम्भ में स्वभाव में चिड़चिड़ापन, आलस्य, मेदोवृद्धि आदि विकार देखने में आते हैं। कार्य में चित्त नहीं लगता, जी भी घबराने लगता है। प्यास अधिक लगती है, पानी अधिक पीने पर भी तृषा शान्त नहीं होती। कब्ज की भी शिकायत रहती है। मन्दाग्नि, अपच तथा पेट- दर्द की भी शिकायत कभी- कभी हो जाती है। नींद भी ठीक से नहीं आती।

रोग बढ़ने की स्थिति में अनेक कष्टकर लक्षण दिखाई देते हैं। परिश्रम के पश्चात् कमजोरी का अनुभव होना, सिर में चक्कर आना, सिर- दर्द तथा सभी अंगों में दर्द, नाड़ी दुर्बल होना, कभी- कभी चेतनता में कभी और कोमा (बेहोशी) की स्थिति भी देखी गई है। उस अवस्था में उचित उपचार की तत्काल आवश्यकता होती है।

मधुमेह की उत्पत्ति के मुख्य कारण

अनियमित आहार- विहार इसकी उत्पत्ति का मुख्य कारण है। अत्यधिक समागम, हस्तमैथुन या अप्राकृतिक मैथुन, दूषित चिन्तन, अधिक मिष्ठान्न सेवन, शारीरिक और मानसिक कष्टों की अधिकता, भय, चिन्ता, उद्वेगादि की सम्प्राप्ति तथा शक्ति से अधिक परिश्रम और प्रमेह रोग उत्पन्न होने पर, उसकी समुचित चिकित्सा न होना भी, इसकी उत्पत्ति या वृद्धि का मुख्य कारण है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि अग्नाशय की विकृति से ही यह रोग उत्पन्न होता है। भोजन के पश्चात् रक्तमें शर्करा की मात्रा बढ़ जाती है, जो कि मूत्र के साथ निर्गत होती है। जब रोग अपनी तीव्र अवस्था में होता है, तब रक्तमें स्थित शर्करा प्राकृत अंश से अत्यधिक बढ़ जाती है, वह मूत्र मार्ग से, मूत्र के साथ सदैव बाहर निकलती है। किन्तु मधुमेह के भी अनेक भेद माने जाते हैं। किसी की उत्पत्ति यकृत की खराबी से होती है, किसी की अग्न्याशय की खराबी से। मस्तिष्क के पिछली ओर स्थित नाड़ी केन्द्र से शर्करा के नियोजन या समायोजन में सहायता मिलती है, यदि उसमें अर्बुद उत्पन्न हो जाय तो भी मधुमेह उत्पन्न हो सकता है।

अब हम मधुमेह के उपचार पर कुछ विचार प्रस्तुत करते हैं। यदि उन पर ध्यान दिया जाय तो स्वास्थ्य- लाभ हो सकता है।

मधुमेह के रोगी दो प्रकार के हो सकते हैं — 1. स्थूल, जिनकी चर्बी बढ़ गई हो, 2. कृश अर्थात् क्षीण शरीर वाले तथा अशक्त दिखाई देने वाले। जो सशक्त और स्थूल हों,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[illegible] के [illegible] हों, उनको पहिले शोधनीय औषधि से [illegible] प्रयोग करें। जो दुर्बल शरीर वाले हों, वमन, विरेचनादि कर्मों [illegible] न करके दोषों का शमन करने वाली औषधियाँ आरम्भ [illegible]

मधुमेही की जीवनचर्या

मधुमेही के लिये [illegible] जीवन, उच्च विचार का सिद्धान्त अपनाना चाहिये। शान्त, [illegible] करे, [illegible] सेवन से बचे, शक्ति के अनुसार व्यायाम करे। प्रातः- भ्रमण [illegible] करे। दिन में न सोवें और रात्रि में गहरी नींद लेने का प्रयत्न करें। भूख प्यास [illegible] मात्रा में तृप्तिकारी अन्न का भोजन करे। उस भोजन में कार्बोज [illegible] होनी चाहिये तथा ऐसे पदार्थों से बचे, जिनके सेवन से शरीर में वसा (चर्बी) [illegible]

बहुमूत्र एक पृथक् उपसर्ग भी

[illegible] व्यक्तियों को बहुमूत्र अर्थात् बार- बार मूत्र जाने की शिकायत तो होती है, किन्तु [illegible] नहीं आती। उनके लिए कभी- कभी तो मूत्र का रोकना ही असम्भव या [illegible] जाता है। अधिक प्यास, कब्ज, अपच, अशक्तिआदि लक्षण दिखाई देते हैं, किन्तु [illegible] के ऐसे रोगियों को मधुमेह में प्रयुक्त की जाने वाली औषधियों का सेवन नहीं करना [illegible] क्रमानुसार उपचार अपेक्षित है।

मधुमेह की आरम्भिक अवस्था में औषधि- प्रयोग

- [illegible] वृक्ष की छाल 24 ग्राम लेकर जौकुट करें और उसे आधा लीटर पानी के साथ क्वाथ [illegible] जब चौथाई पानी शेष रहे, तब अग्नि से उतार कर छानें और ठण्डा होने पर पीवें। [illegible] प्रति 4-5 सप्ताह तक निरन्तर प्रयोग करने से मधुमेह का शमन होता है। प्रातः- सायं [illegible] सेवन करें।
- [illegible] वृक्ष का पंचांग 6 ग्राम लेकर जौकुट करें और उसे आधार लीटर पानी के साथ [illegible] चौथाई शेष क्वाथ रहने पर, उतार छान कर पीवें। प्रातः- सायं निरन्तर 3-4 [illegible] तक सेवन करने से मधुमेह में लाभ सम्भव है।
- [illegible] का [illegible] विलोय, यद्यपि अधिक कड़वी होती है, किन्तु लाभ भी अधिक करती है। [illegible] 2 किलोग्राम लेकर छः गुने पानी में 8 घंटे भिगोये रखें और फिर भवके से [illegible] और सुरक्षित रखें।

  [illegible] 5 [illegible] यह अर्क, 3 ग्राम शहद और चौगुने गोदुग्ध में मिलावें और पीवें। [illegible] सायं दोनों समय 4-5 सप्ताह तक करने से लाभ होगा।
- [illegible] के [illegible] का चूर्ण 3 ग्राम पानी के साथ अथवा गोदुग्ध के साथ दिन में 3 बार नित्य [illegible] सहित। मधुमेह के लिये यह एक लाभकारी सरल प्रयोग है।
- [illegible] की कोमल पत्तियाँ उखाड़ कर लावें और उन्हें सिल पर जल योग से पीसें। साथ [illegible] 4-5 [illegible] मिर्च भी डाल दें और छान कर पीवें। इससे भी मधुमेह में लाभ होता है। [illegible] सायं दोनों समय पीवें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- जामुन की सूखी गुठलियों का चूर्ण भी मधुमेह में अत्यन्त लाभकारी है। मात्रा 5-6 ग्राम तक ताजा पानी के साथ दिन में दो या तीन बार सेवन करते रहने से लाभ होता है।
- जामुन की गुठली और गुड़मार बूटी समान भाग का चूर्ण 4-6 ग्राम तक प्रातः - सायं दोनों समय पानी के साथ लेना चाहिये। अनेक रोगियों को इससे लाभ होते देखा गया है।
- गूलर के पत्ते मधुमेह में लाभकारी हैं। उन्हें पानी के साथ सिल पर ठण्डाई के समान घोट कर पीना चाहिये। यदि कब्ज या अपच की शिकायत न हो, तो इस यो ग से लाभ उठाया जा सकता है।
- गूलर का पका फल वृक्ष से तोड़कर, ताजा खाना भी हितकर है। ऊपर से ताजा पानी पी लेना चाहिये।
- बिल्वपत्र मधुमेह को दूर करने वाले हैं। ताजा बेलपत्र 10-11 नग लेकर पानी के साथ सिल पर पीस कर पीवें। इससे कब्जयुक्त मधुमेही को अपेक्षित लाभ होता है।
- पके हुए अमरूद को भूभल में दबा कर भरता बनावें और आवश्यकतानुसार नमक, कालीमिर्च, जीरा मिला कर सेवन करें तथा प्रातः- सायं त्रिफला का कषाय अथवा क्वाथ लें तो मधुमेह के अनेक लक्षण दूर होते हैं। कब्ज भी नहीं रहता।
- छोटी दूधी का पंचांग छाया शुष्क करके, चूर्ण कर लें। 3-3 ग्राम की मात्रा में यह चूर्ण गोदुग्ध के साथ प्रातः- सायं सेवन करते रहने से मधुमेह में पर्याप्त लाभ होता है।
- अर्जुन वृक्ष की छाल, कदम्ब की छाल तथा जामुन की छाल और अजवाइन समान भाग लेकर जौकुट करें। इसमें से 24 ग्राम जौकुट चूर्ण लेकर, आधा लीटर पानी के साथ अग्नि पर चढ़ा कर काढ़ा बनावें। अष्टमांश या कुछ अधिक शेष रहने पर उतारें और ठण्डा होने पर छान कर पीवें। प्रातः- सायं दोनों समय निरन्तर प्रयोग करने पर 3-4 सप्ताह में लाभ होना सम्भव है।
- जामुन वृक्ष की नई कोंपलें (पत्तियाँ) 30 ग्राम तथा काली मिर्च 5 नग, पानी के साथ पीस कर प्रातः- सायं पीने से मधुमेह में पर्याप्त लाभ होता है तथा अन्य सभी प्रकार के प्रमेह भी इसके सेवन से दूर होते हैं।
- मधुमेह रोगी के शरीर से दुर्गन्ध आती हो और वह भी इसकी शिकायत करे तो उसके शरीर पर कड़वे कूट में केशर आदि सुगन्धित द्रव्य मलने चाहिये। स्नान करने में आलस्य न करे। ग्रीष्म ऋतु में ठण्डे जल से और शीत ऋतु में सुखोष्ण (सुहाते हुए गर्म) जल से स्नान करना चाहिए।
- यदि मधुमेही को पसीना अधिक आता हो तो स्वल्प मात्रा में भीमसेनी कर्पूर ताम्बूल आदि में डाल कर खा सकते हैं। शरीर पर कायफल का चूर्ण मलने से भी पसीना कम होता है।
- यदि अंगों में शून्यता, निष्क्रियता, बाँयटे आदि की शिकायत हो तो स्वल्पांश में शुद्ध कुचला का सेवन हितकर हो सकता है। किन्तु अधिक कुचला का सेवन हानि भी कर सकता है।
- यदि रोगी को ठण्डक अधिक प्रिय हो तो उसे शीतल पेय, जिसमें शर्करा की मात्रा न

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हो, अथवा बहुत कम हो, पिलाना चाहिए। बादाम- काली मिर्च की ठण्डाई शहद मिलाकर दी जा सकती है।

- यदि गला या तालू सूखने की शिकायत हो तो उसे सौंफ, छोटी इलायची, फल- रस तथा धारोष्ण दूध से लाभ हो सकता है।

मधुमेह एवं बहुमूत्र दोनों में लाभकारी योग

जामुन की कोंपलें, बकायन की कोंपलें, मक्के य की कोंपलें और बिल्वपत्र तथा गुड़मार बूटी, सभी को समान भाग लेकर कपड़छन चूर्ण बनावें। ताजा पत्तियों को छाया में सुखा कर लें। समान भाग का निर्देश सूखी हुई पत्तियों के लिये ही है। यह चूर्ण भी प्रभावशाली औषधि है।

मात्रा— 1 से 3 ग्राम तक ताजा पानी के साथ प्रातः- सायं सेवन करनी चाहिये। आवश्यक होने पर दिन में 3 बार भी ले सकते हैं। यह महौषधि मधुमेह में तथा शर्करा विहीन बहुमूत्र में भी अत्यन्त लाभकारी है।

मधुमेह नाशिनी वटी

जामुन की गुठली, गुड़मारबूटी 50-50 ग्राम, शुद्ध रसौत 20 ग्राम, लौहभस्म 10 ग्राम, शुद्ध अफीम 4 ग्राम। गुठली और बूटी का कपड़छन चूर्ण लेना चाहिये, उसीमें अन्य द्रव्य खरल करते हुए मिलाने चाहिये। फिर बरगद की जटा 1 किलोग्राम जौकुट करके चौगुने पानी में क्वाथ करें और चौथाई शेष रहने पर, छान कर पुनः अग्नि पर चढ़ा दें। धीरे- धीरे क्वाथ का जल गाढ़ा होने लगेगा। इस प्रकार गाढ़ा होने पर (घनसत्व का रुप लेने पर) उसमें ऊपर कही हुई सभी औषधियाँ मिला कर पर्याप्त खरल करें और गोली बनाने योग्य होने पर, 400-400 मिलीग्राम की गोलियाँ बना लें और सुरक्षित रखें।

मात्रा —1 से 2 गोली तक प्रातः- सायं निम्न अनुपान के साथ सेवन करें —

बिल्वपत्र 50 ग्राम, कालीमिर्च 7-8 नग, किंचित् सेंधा नमक डाल कर, सिल पर घोट- छान लें। इस प्रकार इस औषधि के सेवन से मधुमेह, बहुमूत्र तथा अन्य विकारों में भी अत्यन्त लाभ होता देखा गया है।

मधुमेह पर अत्यन्त प्रभावकारी गोलियाँ

नागभस्म और शुद्ध शिलाजीत 30-30 ग्राम लेकर खरल में घोट कर एकजीव कर लें। इसमें विल्बपत्र के स्वरस की 3 भावनाएँ दें। फिर 3 भावनाएँ गुड़मार बूटी के स्वरस की और 3 भावना ही कड़वे नींम की पत्तियों की दें। तदुपरान्त खरल में घोटते- घोटते 250-250 मिलीग्राम की गोलियाँ बना कर छाया में सुखावें और सुरक्षित रखें।

मात्रा —1 से 2 गोली तक प्रातः- सायं ठण्डे पानी के साथ सेवन करनी चाहिये। मधुमेह में यह बहुत लाभकारी हैं।

मधुमेहान्तक वटी

असगन्ध, विधायरा, ढाक के फूल और सफेद इलायची के बीज, 6-6 ग्राम, शीतल-चीनी, वंशलोचन, सतगिलोय और अभ्रक भस्म 12-12 ग्राम, भीमसेनी कर्पूर 7 ग्राम, लौंग, तालीशपत्र, नागरमोथा और सुहागे का फूला 3-3 ग्राम, त्रिफला और त्रिकुटा 9-9 ग्राम,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

श्रृंगभस्म, लौहभस्म और षड्गुणवालिजारित रससिन्दूर 6-6 ग्राम, त्रिवंग भस्म 9 ग्राम, रजत भस्म और स्वर्णभस्म 3-3 ग्राम।

सभी काष्ठौषधियों को कूट- कपड़छन करें। तदुपरान्त सभी भस्मादि मिलाकर सात भावनाएँ करेला- पत्र- स्वरस की देकर सात भावनाएँ ही जामुनके पत्र- स्वरस की देनी चाहियें। तदुपरान्त कस्तूरी 2 ग्राम मिलाकर पर्याप्त खरल करें और 125-125 मिलीग्राम की गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1 से 2 गोली तक 3-4 ग्राम शहद में उससे चौगुना विल्वपत्र- स्वरस मिलाकर उसके साथ प्रातः- सायं सेवन करनी चाहिये। इसके 40 दिनों तक लगातार सेवन करते रहने से कैसा भी मधुमेह हो, नष्ट हो जाता है। सहायक औषधियों के रूप में भोजन के पश्चात दोनों समय चरकोक्त लौध्रासव 3-4 चम्मचतक की मात्रा में समान भाग पानी मिलाकर लेनी चाहिये। सायंकाल 4-5 बजे के मध्य 3 ग्राम गुड़मार बूटी के साथ 5-7 कालीमिर्च पानी के साथ पीस- छान कर पीवें। यह योग परीक्षा करनेपर अधिकांशतः लाभकारी सिद्ध हुआ है। किन्तु तभी अपना गुण दिखायेगी, जब निर्माण- क्रिया विधिपूर्वक सम्पन्न की गई हो तथा सभी द्रव्य असली और शुद्ध प्रयोग में लाये गये हों। काष्ठोषधियाँ नई हों, उन पर वर्षा ऋतु न फिरी हो, घुन आदि न लगा हो। कृमियों द्वारा खाई हुई, पुरानी वनस्पतियों निर्वीर्य और गुणहीन हो जाती है। ऐसी स्थितिमें उनसे लाभ कैसे सम्भव है ?

मधुमेहनाशक वृहद् सोमनाथ रस

कान्तलौह भस्म 40 ग्राम, शुद्ध हिंगुलोत्थ पारद और शुद्ध आमलासार गन्धक 10-10 ग्राम, वंगभस्म, अभ्रक भस्म, यशद भस्म, स्वर्ण माक्षिक भस्म, स्वर्ण भस्म और रजत भस्म 5-5 ग्राम लें। लौह भस्म को ग्वार पाठे के स्वरस में 6 घंटे तक खरल करें। पारद और गन्धक को पर्याप्त खरल करके एक भावना जामुन के छाल के स्वरस अथवा क्वाथ की दें। तदुपरान्त सभी द्रव्यों को एक साथ मिलावें। उनमें 2-2 भावनाएँ ग्वारपाठे के स्वरस और मेघपर्णी के स्वरस की दें। मेघपर्णी न मिले तो उसके स्थान पर जामुन की गुठली का क्वाथ लिया जा सकता है। इस प्रकार खरल में घोटते- घोटते यह सूख जाय। न सूखे तो छाया शुष्क करें और सुरक्षित रखें।

मात्रा — 125 से 250 मिलीग्राम तक यह रस शहद में मिला कर प्रातः- सायं दोनों समय सेवन करना चाहिये। इसको सेवन करने के 25-30 मिनट पश्चात् गुड़मार बूटी और जामुन की गुठली समान भाग का चूर्ण 3-3 ग्राम की मात्रा में पानी के साथ लेना चाहिये। यह प्रयोग मधुमेह और उसके सभी विकारों में हितकर है। परीक्षा करने पर अधिकांश को लाभकारी सिद्ध हुआ है।

मधुमेह पर सरल उपयोगी वटी

वंगभस्म, शतपुटी अभ्रक भस्म, शुद्ध आमलासार गन्धक और शुद्ध पारद 20-20 ग्राम, स्वर्णभस्म 5 ग्राम। पहिले गन्धक और पारद को खरल करके कज्जली बनावें और फिर तीनों भस्मों को एक- एक करके उसमें डाल कर घोटें। अब कदली- पुष्प की एक भावना देकर अन्त में मटर प्रमाण गोली बनाकर सुखावें और सुरक्षित रखें।

मात्रा — 1-1 गोली, गिलोय स्वरस 50 मिलीलीटर के साथ प्रातः- सायं दोनों समय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
सेवन करनी चाहिये। 3-4 सप्ताह तक प्रयोग करने से मधुमेह, बहुमूत्र, धातुक्षय, यक्ष्मा, कास तथा अर्श में भी लाभ होता है।

मधुमेह के रोगी को भोजन में जौ मिश्रित अनाज का अधिक सेवन करना चाहिये। करेला गिलोय, प्रभृति वनस्पति या शाक आदि हितकर हैं। गाजर, मूली, टमाटर, बथुआ, पालक, सन्तरा, सेब, पपीता, अमरूद, अगृत, मक्खन, गोदुग्ध आदि भी पथ्य हैं। किन्तु मधुमेह के साथ उच्च रक्तचाप हो तो घृत- मक्खन बहुत कम खाना चाहिये

मूत्रकृच्छ, सुजाक या गोनोरिया

यह रोग सामान्य बोलचाल की भाषा में सुजाक कहा जाता है। ऐलोपैथ्स इसे गोनोरिया कहते हैं। आयुर्वेद ग्रन्थों में जो रोग मूत्रकृच्छ के नाम से वर्णित है, उसके लक्षण सुजाक से मिलते- जुलते हैं। कुछेक विद्वान् इसे प्रमेह का एक भेद मानते हैं। कुछ इसे उपदंश का ही विकार या उपसर्ग कहते हैं। पूयमेह भी यही रोग समझा जाता है। किन्तु किसी- किसी का कहना है कि सुजाक इन सबसे भिन्न है। हम इस विवाद में न पड़ कर आयुर्वेदिक मूत्रकृच्छ के आठ प्रकार संक्षेप में कहकर, उपचारादि पर प्रकाश डालेंगे।

मूत्रकृच्छ के प्रकार

मूत्रकृच्छ आठ प्रकार का माना गया है — 1. वातज, 2. पित्तज, 3. कफज, 4. त्रिदोषज, 5. अश्मरीजन्य, 6. मलावरोध जन्य, 7. मूत्रघात एवं क्षतजन्य, और 8. शुक्रक्षरणावरोधजन्य।

वातज मूत्रकृच्छ में मूत्रेन्द्रिय और मूत्राशय में भारीपन, खुजली और मूत्र श्वेत होता है। त्रिदोषज में तीनों दोषों के मिश्रित लक्षण हो सकते हैं तथा वेदना भी अधिक होती है। मूत्रेन्द्रिय पर लालिमा और मूत्र का रंग पीला होता है।

कफज मूत्रकृच्छ में मूत्रेन्द्रिय और मूत्राशय में भारीपन, खुजली और मूत्र श्वेत होता है त्रिदोषज में तीनों दोषों के मिश्रित लक्षण हो सकते हैं तथा वेदना भी अधिक होती है। अश्मरीयुक्त व्याधि में मूत्र धीरे- धीरे, दो धारों में तथा पीड़ा के साथ उतर पाता है।

मलावरोधजन्य में, मलाशय में मल की गाँठें अड़ने और सुद्दे पड़ने आदि कारणों का प्रभाव मूत्रेन्द्रिय पर भी पड़ता है। मूत्रोत्सर्ग में पीड़ा के साथ, मल की दुर्गन्ध भी सम्भव है। मूत्रेन्द्रिय में आघात या मूत्र रुकने से आघात अथवा क्षतादि के कारण मूत्रोत्सर्ग के समय अधिक वेदना होती है। शुक्रक्षरण को बलपूर्वक रोकने वाले आठवें प्रकार में शुक्रकण सूख कर मूत्रनलिका में अड़ जाते हैं। इस कारण मूत्रोत्सर्ग के समय अधिक कष्ट का अनुभव होता है। आयुर्वेद का मत है कि —

नालस्यमूले मध्येवा रुद्धंवाग्रे शनैः- शनैः।

कणशश्चेत् स्रवेन्मूत्रं मूत्रकृच्छं तदुच्यते॥

अर्थात् मूत्रनलिका के मूल में, मध्य में अथवा अग्र भाग में जब धीरे- धीरे रुक- रुक कर बूँद- बूँद करके मूत्र स्रवित होता है, तब उस व्याधि को मूत्रकृच्छ कहते हैं।

सुजाक संसर्गीय व्याधि भी है। यदि सुजाक से ग्रसित स्त्री या पुरुष परस्पर समागम में प्रवृत्त होते हैं, तब एक का रोग दूसरे को लग सकता है। उसके कारण गुहेन्द्रिय में विद्यमान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दोष अथवा कृमि एक से दूसरे को अंगों में आक्रमण कर सकते हैं। ऐलोपैथी के मत में यह रोग गोनोकोकाई नामक लघु कीटाणु के प्रवेश करने से गोनारिया उत्पन्न होता है। यह रोग पुरुष और स्त्री दोनों को ही हो सकता है। स्त्रियों के तो योनिमार्ग से गर्भस्थान तक भी यह कीटाणु आक्रमण कर देते हैं।

मूत्रकृच्छ या सुजाक को उपदंशज भी नहीं मान सकते। उपदंश में और सुजाक में इतनी समानता हो सकती है कि उपदंश के क्षत और घाव इन्द्रिय की त्वचा पर होते हैं, और धीरे- धीरे गहरे बैठते हैं, जबकि सुजाक में उत्पन्न घाव इन्द्रिय के भीतर होते हैं। वैसे सम्भव है कि सुजाक या मूत्रकृच्छ की उत्पत्ति प्रमेह से हो जाय। क्योंकि स्वप्नदोष के तीव्र होने में स्खलित होते ही पुरुष होश में आ जाता है और उस शुक्र को भीतर ही रोकने की चेष्टा करता है। तब वह रुकता हुआ शुक्र मूत्र नलिका को आघात पहुँचाता और घाव बना देता है। मूत्र- कृच्छ के आठवें भेद में भी यही कारण स्पष्ट है।

हम इस विवाद में नहीं पड़ना चाहते कि मूत्रकृच्छ, सुजाक, पूयमेह अथवा गोनोरिया एक ही रोग के भिन्नभिन्न नाम हैं, अथवा यह रोग पृथक् पृथक् हैं। क्योंकि आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति के अनुसार मूत्रकृच्छ के निवारणार्थ जो क्रमोपचार निश्चित किये जाते हैं, वे सुजाक आदि सभी के लक्षणों पर समान रूप से प्रभावशाली सिद्ध होते हैं। इसलिये यहाँ तत्सम्बन्धी औषधोपचार प्रस्तुत किया जाता है।

मूत्रकृच्छ, सुजाक, पूयमेहादि के औषधोपचार

- प्रथम रोगी की कोष्ठ- शुद्धि करानी चाहिये। उसके लिये एरण्ड तैल (कैस्टर आइल) 4 चम्मच दूध में मिला कर लिया जाय। इससे मल का शोधन सरलता से होता है।
- छोटी हरड़ में समान भाग सौंफ मिला कर 4-6 ग्राम की मात्रा में दूध के साथ फंकी लेनी चाहिये। यह प्रयोग रात्रि में शयन समय किया जाय तो अधिक सुविधाजनक रहेगा।
- मुनक्का 10-15 नग दूध के साथ लेना भी हितकर रहता है। किन्तु इससे कठिन कोष्ठ वालों को लाभ नहीं हो पाता
- मृदु कोष्ठ वालों को दूध के साथ 10-12 ग्राम गुलकन्द का सेवन भी इच्छित फल दिखाता है। किन्तु कठिन कोष्ठ वालों को यह गोली बहुत लाभदायक रहती है —बड़ी हरड़ का वक्कल कूट- छान कर 20 ग्राम लें और उसमें 4 ग्राम शुद्ध जमालगोटा मिलावें। फिर थूहर के दूध में खरल करके चना प्रमाण गोलियाँ बना लें।

मात्रा — रोगी के बलाबल और आवश्यकतानुसार 1 से 2 गोली तक सुखोष्ण जल अथवा ताजा जल के साथ देनी चाहिये। इसके सेवन से कब्ज मिट जाती है, आम नष्ट होता है, अफरा तथा उदरशूल शान्त हो जाता है। अर्श, भगंदर आदि में भी उपयोगी है। मलाशय की स्वच्छता के साथ- साथ मूत्राशय भी अनुकूल रूप से प्रभावित होने लगता है। इसलिये सुजाक में भी हितकर होती है

सुजाक नाशक विभिन्न उपयोगी योग

- शीतल चीनी 3 ग्राम, गोखरू 4 ग्राम, अनार का छिलका 5 ग्राम, लाल चन्दन 1 ग्राम, चन्दन का तैल 1 चम्मच। सभी द्रव्य कूटे- छाने हुए हों, उन्हें चन्दन के तैल में मिला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कर ठण्डे पानी के साथ सेवन करना चाहिये। यह एक मात्रा है, इसी प्रकार की अन्य मात्राएँ प्रयोग में लानी चाहिये। इस मात्रा को रोगी के बलाबल अनुसार न्यूनाधिक कर सकते हैं।

इसके सेवन से मूत्र अधिक आता है, जिससे मूत्र नलिका बन्द हो तो खुल जाती है और सुजाक के कीटाणुओं का पुनः प्रवेश भी नहीं हो पाता।

- गोघृत के साथ तला हुआ बबूल का गोंद और मोचरस 10-10 ग्राम, शिलाजीत शुद्ध और सतगिलोय 6-6 ग्राम, रूमी मस्तंगी, छोटी इलायची के दाने, वंश लोचन और वंग भस्म 3-3 ग्राम, इमली के चीयें, बड़ा गोखरू और संगजहारत20-20 ग्राम तथा शीतल चीनी 15 ग्राम लेकर सब द्रव्यों को कूट- छान लें।

मात्रा — 2-3 ग्राम यह चूर्ण दूध की लस्सी के साथ प्रातः- सायं सेवन करना चाहिये। यह सुजाक में हितकर है तथा पूयमेह में, मूत्र के साथ शुक्रस्राव, शुक्र तारल्य, शीघ्रक्षरण आदि में भी लाभकारी है।

- शीतलचीनी 24 ग्राम जौकुट करके आठ गुने जल के साथ क्वाथ करें और चौथाई शेष रहने पर अग्नि से उतार कर छान लें जब पानी ठण्डा हो जाय तब उसमें असली चन्दन-तैल की 10 बूँद डालें और मिला कर पीवें। यह एक मात्रा है, इस प्रकार का प्रयोग दिन में तीन बार करें। निरन्तर 4-5 या कुछ अधिक दिन सेवन करने से मूत्रावरोध, जलन, घाव आदि दूर होकर, सुजाक से छुटकारा मिल जाता है। शीतल- चीनी मूत्रदोष-जन्य अन्य उपसर्गों में भी उपयोगी रहती है।

- ककड़ी के बीजों की गिरी और श्वेत कमल की पंखुड़ी 12-12 ग्राम, श्वेत जीरा 2 ग्राम और मिश्री 35 ग्राम। सबको सिल पर पानी के साथ ठण्डाई के समान घोट कर पीवें। 5-7 दिन के सेवन से सुजाक, पूयमेह या मूत्रकृच्छ में पर्याप्त लाभ होता है। यह योग पुरुषों के प्रमेह तथा स्त्रियों के प्रदर में भी हितकर है। मूत्र-संस्थान पर अनुकूल प्रभाव डालता है, जिससे शोधन और रोगोन्मूलन की क्रिया स्वतः चलती है।

- सेमल की नई मूसली का स्वरस 4 चम्मच तथा मिश्री का चूर्ण आधा चम्मच मिला कर प्रातः- सायं नित्य सेवन करें। इसका भी अनुकूल प्रभाव पड़ता है। प्रमेह तथा उसके अन्यान्य उपसर्गों में भी लाभदायक है। मूत्र साफ लाने और जलन दूर करने का भी इसमें गुण है। इस योग के साथ ही, सेमल की मूसली के स्वरस की ही पिचकारी से अधिक लाभ होता है।

- शीतलचीनी 40 ग्राम, सेलखड़ी 10 ग्राम, कलमी सोरा 6 ग्राम, फिटकरी और गेरू 2-2 ग्राम, भीमसेनी कर्पूर 500 मिलीग्राम लेकर सबको कूट- कपड़छन करें तथा कर्पूर को पृथक् खरल करके मिलावें।

मात्रा — डेढ़- दो ग्राम तक, गाय के धारोष्ण अथवा ठण्डे दूध के साथ, दिन में 3-4 बार लेनी चाहिये। भोजन में चावल की खीर खाना अधिक उपयुक्तहै। खीर के लिये चावल पुराने बढ़िया किस्म के बासमती लेने चाहिये। इससे मूत्र अधिक आकर, मूत्र - नलिका स्वच्छ हो जाती है। सामान्यतः एक सप्ताह में ही सुजाक दूर हो जाता है। आवश्यक होने पर कुछ अधिक दिन भी प्रयोग कर सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

- शीतल चीनी, यवक्षार, इसबगोल का किलका और कलमी शोरा 15-15 ग्राम लेकर सूक्ष्म चूर्ण बनावें और उसमें 25-30 मिली ग्राम चन्दन तैल डाल कर पर्याप्त खरल करके रखें।

मात्रा — 1 से 2 ग्राम तक ठण्डे पानी के साथ सेवन करें। इससे सुजाक रोग शीघ्र नष्ट होता है।

- देशी कर्पूर 20 ग्राम और रसकर्पूर 10 ग्राम लेकर दोनों को पृथक् पृथक् खरल करके दो प्यालों में रखें और बेरी की लकड़ी की अग्नि एक घंटाभर देकर डमरू यन्त्र द्वारा जौहर उड़ावें। यदि रसकर्पूर का जौहर न उड़े तो उसे पुनः कर्पूर के साथ मिलावें और उसी विधि से जौहर उड़ावें। इस बार जौहर उड़ने में बाधा उपस्थित नहीं होगी।

मात्रा — यह जौहर 2 से 4 चावल भर तक प्रातः- सायं दोनों बार मक्खन या मलाई के साथ सेवन करें। घृत- मक्खन का अधिक सेवन आवश्यक है। सुजाक में शीघ्र लाभकारी है।

मूत्रकृच्छ नाशक गोक्षुराद्यासव

गोखरू का स्वरस अथवा क्वाथ, धनिये का क्वाथ, पोदीना का स्वरस, चन्दन का अर्क और उत्तम सुरा 60-60 मिलीलीटर, चन्दन का तैल 10 मिलीलीटर। सबको एकत्र करके एक बोतल में रखें और मजबूत कार्क लगा दें। इसका प्रयोग एक सप्ताह बाद करना चाहिये।

निर्दिष्ट क्वाथों को क्वाथ- विधि से अर्धांश शेष करके डालें। चन्दन का अर्क भवके द्वारा न मिले तो उसे भी क्वाथ विधि से बना कर मिला लें। अन्य तैलों को बाजार से खरीद कर मिलाना चाहिये। यह तैल अच्छी क्वालिटी के तथा खाने योग्य हों।

मात्रा — 1 चम्मच तक चौगुने ठण्डे पानी में मिला कर दिन में 3-4 बार तक ली जा सकती है। रोग और रोगी के बलाबल के अनुसार दवा की मात्रा घटा- बढ़ा सकते हैं। इसके सेवन से सभी प्रकार का मूत्रकृच्छ्र, सुजाक, पूयमेह, शुक्रमेह आदि शीघ्र नष्ट होते हैं। मूत्र-प्रदाह, मूत्रशूल, मूत्रावरोध सभी में हितकर है।

सुजाक नाशक कैप्सूल

लोवान का पिसा- छना चूर्ण 20 ग्राम लेकर उसे इतने चन्दन-तैल में इस प्रकार मिलावें कि वह एक प्रकार से अवलेह जैसा रूप धारण कर ले। उसे शीशी में सुरक्षित रखें अथवा 500-500 मिलीग्राम यह दवा कैप्सूलों में भर कर रख लें।

मात्रा — 2-3 कैप्सूल कच्चे दूध के साथ प्रातः- सायं सेवन करनी चाहिये। आवश्यक होने पर दुपहर के समय भी एक मात्रा और बढ़ाई जा सकती है। इसके सेवन से सुजाक और उसके सभी उपसर्ग शान्त हो जाते हैं।

सुजाक में प्रभावशाली चूर्ण

शीतल चीनी, सोना गेरू, छोटी इलायची के बीज, श्वेत फिटकरी का फूला, श्वेत चन्दन, खीरा के बीज की मिंगी, विरोजा का सत, कलमी सोरा, लोबान कौड़िया और हजरूल यहूद 10-10 ग्राम तथा मिश्री 100 ग्राम लेकर कूट- छान कर चूर्ण कर लें।

मात्रा — 3 ग्राम, दिन में तीन बार तक दूध की लस्सी के साथ सेवन करनी चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
इससे सभी प्रकार के सुजाक और उनसे उत्पन्न उपद्रव- जलन, दर्द, बूँद- बूँद करके मूत्रोत्सर्ग आदि में शीघ्र प्रभाव दिखाई देता है। प्रमेह में भी इससे लाभ सम्भव है।

सुजाक पर त्रिविक्रम तैल

शीतल चीनी का तैल, चन्दन का तैल और विरोजा का तैल 4-4 भाग, शुद्ध देशी कर्पूर 1 भाग। तीनों तैलों को एक बोतल में रखें, उसी में कर्पूर पीस कर डालें और ऊपर से मजबूत कार्क लगा दें। यदि कर्पूर न गले तो शीशी को धूप में रखने से वह गल जायेगा।

मात्रा — 10-15 बूँद तक यह मिश्रण 50-60 मिलीलीटर गाय के कच्चे दूध में मिला कर प्रातः- सायं सेवन करना चाहिये। इससे सब प्रकार के मूत्रकृच्छ और उनके उपसर्ग दूर हो जाते हैं।

सुजाक पर सरल योग

बड़े गोखरू 8 ग्राम, फिटकरी फूली हुई 2 ग्राम, स्वर्ण गैरिक, छोटी इलायची के बीज और वंश लोचन 4-4 ग्राम। सबको कूट- छान कर रखें। मात्रा — 1 से 3 ग्राम तक दूध की लस्सी अथवा ताजा पानी के साथ लेने से सब प्रकार के मूत्रकृच्छजन्य विकार दूर हो जाते हैं। इसका प्रयोग दिन में 2 या 3 बार करना चाहिये।

सुजाक पर सरल अचूक औषधि

चन्दन का उत्तम तैल (मैसूर सन्दल) 5 बूँद और बिरोजा का तैल 7 बूँद। दोनों को मिला कर, बताशे में रखें और खाकर कच्चा या धारोष्ण दूध पीवें। सुजाक में अवश्य लाभ करेगी।

मूत्रकृच्छ पर कुशावलेह

कुश, काँस, वरना (वरुण की छाल), काली ईख, पोस्त डोडा और सरकण्डे की जड़ 100-100 ग्राम लेकर जौकुट करें और 16 लीटर पानी में रात्रि के समय भिगोवें तथा प्रातःकाल अग्नि पर चढ़ा कर अष्टांश- शेष- क्वाथ करें। अर्थात् जब 2 लीटर पानी शेष रह जाय, तब उतार कर छानें और 2 किलोग्राम मिश्री मिला कर दो तार की चाशनी करें। तदुपरान्त इस चाशनी में निम्न द्रव्य कूट- छान कर मिलावें —

मुलहठी, आमला, तेजपात, दालचीनी, छोटी इलायची के बीज, पोस्त डोडा, नागकेशर, पेठा के बीज, खीरा के बीज, वंशलोचन, पियंगु पुष्प, शुद्ध शिलाजीत और सत गिलोय 6-6 ग्राम। इन सबका चूर्ण चाशनी में ठीक से मिलाने पर अवलेह बन जाता है।

मात्रा — 5 ग्राम से 10 ग्राम ताजा पानी के साथ दिन में तीन बार सेवन करनी चाहिये। इससे सभी प्रकार के मूत्रकृच्छ और उनसे होने वाले कष्ट दूर हो जाते हैं। प्रमेह, पूयमेह, लिंग- शोथ, शीघ्रक्षरण, मूत्राघात, दाह आदि में शीघ्र लाभ होता है। पथरी को दूर करने में भी प्रभावकारी है। मूत्रनलिका में उत्पन्न क्षत या व्रणादि को कुछ समय में ही लाभ पहुँचाने वाला अव्यर्थ अवलेह है।

मूत्रकृच्छ में अन्य सरल प्रयोग

शीतलचीनी, बड़ी इलायची के दाने, सेलखड़ी, कलमी शोरा, हल्दी और विरोजा का सत समान भाग लेकर, कूट- कपड़छन करें और शीशी में सुरक्षित रखें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मात्रा — 3 से 6 ग्राम तक दूध के लस्सी के साथ दिन में तीन बार सेवन करने से सब प्रकार का सुजाक दूर होता है।

मूत्रकृच्छ एवं पथरीनाशक चूर्ण

वरना की छाल, धव का गोंद, आम की गुठली पुरानी, चिरोंजी, पोस्त, पवाड़ की जड़, इन्द्रयव, बड़ी हरड़ का वक्कल, लोध, आलू बुखारा, महुए का पुष्प, जामुन की गुठली, बरगद की जटा, पीपल की जटा, चित्रक, नीम की लकड़ी के कोयला और शुद्ध भल्लातक समान भाग लेकर कूटें और कपड़छन करके बोतलों में भर कर सुरक्षित रखें।

मात्रा — 2 से 4 ग्राम तक शहद में मिला कर, प्रातः- सायं सेवन करना चाहिये। इससे मूत्रकृच्छ और उसके उपसर्ग दूर होते हैं। मूत्र- पथरी की भी यह अव्यर्थ औषधि है तथा मधुमेह में भी आशा से अधिक कार्य करती है।

मूत्रकृच्छ- हर वटिका

यवक्षार 50 ग्राम, छोटी इलायची के दाने 30 ग्राम, शुद्ध हींग 10 ग्राम लेकर सबको अत्यन्त महीन पीस कर ग्वारपाठे के रस में खरल करें। घोटने में ग्वारपाठे का रस 250 ग्राम खप जाना चाहिये। फिर झरबेरी प्रमाण की गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1 से 2 गोली, दिन में तीन बार ताजा पानी के साथ सेवन करने से मूत्रकृच्छ, (सुजाक) को शीघ्र नष्ट करेगी। यदि मूत्र के साथ रक्त या पीव जाता हो तो, मुलतानी मिट्टी का जल निथार कर या छान कर, उसके साथ सेवन करनी चाहिये।

मूत्रकृच्छ में धूम्रपान करने से पुराने सुजाक का भी नाश

अकरकरा, माजूफल, चौकिया सुहागा, शुद्ध हिंगुल, मैनफल, अर्कमूलत्वक्, नीम का गोंद और अजवाइन खुरासानी 10-10 ग्राम लेकर कूट- छान लें और जल के साथ पीस कर 4-5 ग्राम की टिकियाँ बना कर सुखा लें।

प्रयोग — चिलम में तम्बाकू के स्थान पर यह टिकिया 1 नग रख कर पीवें। इस प्रकार धूम्रपान करने से वर्षों पुराना सुजाक भी जड़ से नष्ट हो जाता है।

उपदंश (फिरंग) और उसकी चिकित्सा

उपदंश रोग के कारण और लक्षण

उपदंश एक ऐसा रोग है, जिसकी उत्पत्ति मैथुन जन्य प्रदूषण से होती है। सुश्रुत के मत में उपदंश के पाँच भेद हैं, यथा —

स पंचविधिस्त्रिभिर्दोषैः पृथक् समस्तैरसृजा च।

अर्थात् यह तीन पृथक् पृथक् दोषों से तीन प्रकार का त्रिदोष मिलने पर सन्निपात का और पाँचवाँ भेद रक्तविकृति से होता है। इस प्रकार उपदंश पाँच प्रकार का होता है।

चरक ने इसी रोग को ध्वजभंग के नाम से कहा है। उन्होंने उसे स्पष्टतः वातज, पित्तज, कफज, रक्तज और सन्निपातज नाम दिये हैं। भावप्रकाश में इसी जैसे लक्षणों वाला रोग फिरंग नाम से वर्णित है। कुछ विद्वानों का मत है कि उपदंश का नाम फिरंग इसलिये भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हुआ कि अंग्रेजों को फिरंगी कहते थे और यह व्याधि उन्हीं के द्वारा इस देश में भी उत्पन्न हो गई। अंग्रेजी में इस रोग को सिफलिस और हार्डशेंकर कहा जाता है यूनानी में यही आतशक कहा गया है। सामान्य लोग इसे गर्मी के नाम से भी जानते हैं।

सुश्रुत ने इसके अनेक कारण गिनाये हैं — अधिक मैथुन, अधिक ब्रह्मचर्य पालन, ऋतुमती, योनि के भीतर की ओर रोम वाली स्त्री, संकुचित या विस्तृत योनि वाली स्त्री, मैथुन से विद्वेष रखने वाली स्त्री, सन्यासिनी या ब्रह्मचारिणी, दूषित योनि वाली या विकृति योनि वाली स्त्री से मैथुन करने से यह रोग हो सकता है। अन्य कारणों में नख, दन्तादि लगने से पशुओं से मैथुन, हस्तमैथुन, समलैंगिक मैथुन, विपरीत मैथुन, दूषित जल से उपस्थ - प्रक्षालन, उपस्थ का उत्पीड़न, मैथुन के पश्चात् उपस्थ का न धोना आदि बहुत से कारण हैं, जिनके द्वारा उपस्थ में प्रविष्ट हुए दोष, शोथ की उत्पत्ति में सहायक होते हैं।

उपदंश का प्रधान लक्षण, उपस्थ का सदैव क्लेद (सड़न) युक्त रहना है। उसमें दुर्गन्ध की अधिकता रहती है। आरम्भ खुजली से होता है, फिर उस पर फोड़ा- फुंसी उत्पन्न होकर उनमें जल भर जाता है और छाला- सा बन जाता है। तदुपरान्त वे छाले व्रण का रूप ले लेते हैं। उपस्थ और सुपारी के मूल में वे व्रण सब ओर फैल जाते हैं। उसके अवयव गिरने लगते हैं।

यह रोग केवल पुरुषों को ही नहीं होता, स्त्रियों को भी हो जाता है। योनि- ओष्ठ, भगनासा, योनिमार्ग और कुछ के तो गर्भाशय को भी आक्रान्त कर देता है। पीले रंग का गाढ़ा, रक्त पीव युक्त स्राव होने लगता है। वह विषैला स्राव, जिस स्थान पर लग जाता है, वहाँ भी व्रण हो जाते हैं। यह रोग बहुत शीघ्रता से बढ़ता और फैलता जाता है। इसलिये इसकी चिकित्सा में विलम्ब नहीं करना चाहिये।

वर्तमान भयंकर व्याधि एड्स

यह भी उपदंश का अधिक तीव्र और विकृत रूप हो सकता है। समझा जाता है कि अभी तक एड्स की कोई कारगर औषधि नहीं बनी है। किन्तु हमारे मत में आयुर्वेद ने मानव- व्याधियों की चर्चा में कुछ भी छोड़ा नहीं है। प्राचीन ऋषियों की दृष्टि से कुछ भी बचा नहीं रह गया। इस ओर प्रयत्न और अनुसंधान किये जायँ तो अवश्य ही सफलता मिलेगी।

अभी यहाँ उपदंश रोग की चिकित्सा पर ध्यान दिया जाता है। प्रथम इससे बचने के समान्य उपाय प्रस्तुत करते हैं —

- उपदंश संक्रामक छूत का रोग है, इसलिये स्त्री से पुरुष को या पुरुष से स्त्री को लग जाता है। अतः आवश्यक है इस व्याधि से ग्रस्त व्यक्तिको पारस्परिक संसर्ग से बचना चाहिये।
- स्वस्थ पुरुष अथवा स्त्री को इस विषय में अत्यन्त सावधान रहना चाहिये। इससे पीड़ित पति- पत्नी में से भी कोई एक हो तो उसे दूर रहना ही स्वहित, परिवार- हित और जनहित में श्रेयस्कर है।
- परस्पर चुम्बनादि से भी बचना चाहिये।
- उपदंश- रोगी के वस्त्रों से भी न चिपटें, उसके प्रयोग में लाये हुए रूमाल आदि से अपना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

मुख आदि न पोंछें।

Digitized by eGangotri

- उपदंश रोगी के पात्रों में भोजन भोजन या जल का सेवन न करें। तात्पर्य यह है कि ऐसे रोगी के साथ भोजन, शयन, स्पर्शन, संभाषणादि से सतर्कतापूर्वक बचे रहना चाहिये।

चिकित्सा एवं औषधि- प्रयोग का सिद्धान्त

उपदंश रोगी की शरीर शुद्धि अत्यन्त आवश्यक है। स्नेहन, स्वेदन, वमन, विरेचनादि कर्मों के द्वारा शुद्धि किये बिना औषधियाँ अभीष्ट फल देने वाली नहीं होतीं। किन्तु यह सभी कर्म रोगी का बलाबल देख कर ही करने चाहिये। जब शरीर शुद्धि हो जाय तब उसे शीतल, शामक, कृमिनाशक और रक्तशोधक औषधियाँ दी जानी चाहिये।

सामान्य औषधोपचार

- चोपचीनी का कपड़छन चूर्ण एक- डेढ़ ग्राम लेकर, उसे मधु के साथ मिला कर चाटना चाहिये अथवा चोपचीनी का चूर्ण मंजिष्ठादि क्वाथ के साथ सेवन करें। अर्क उसवा के साथ प्रयुक्त करना भी हितकर है।
- पारद भस्म उपदंश के शमन में बहुत प्रभावकारी है। इसका सेवन इस प्रकार करना चाहिये कि दाँतों से न लगे। क्योंकि उसके प्रभाव से दाँत दुर्बल हो सकते हैं। उस स्थिति से बचने के लिये 1 मुनक्का में 1 चावल भर पारद भस्म रखकर निगल जायें। किन्तु सम्भव है कि इससे रोगी को वमन विरेचन होने लगे। उन्हें, उनका शमन करने वाली औषधियों के द्वारा रोकना चाहिये।
- यशद भस्म 12 ग्राम, शुद्ध हीराकसीस 3 ग्राम, शुद्ध शिलाजीत 1 ग्राम और शुद्ध नीलाथोथा आधा ग्राम लेकर खरल में घोंट कर एकजीव कर लें और जलयोग से खरल करते हुए चना प्रमाण गोलियाँ बना कर रखें।

मात्रा — 1-1 गोली प्रातः- सायं गोघृत के साथ सेवन करें। सामान्यतः दो सप्ताह में ही लाभ हो जाता है। आवश्यक होने पर अधिक दिन भी दी जा सकती है। रोगी को भोजन में दाल- चावल की खिचड़ी घी मिला कर खानी चाहिये। चने की रोटी खाना लाभकारी हो सकता है।

- रीठा का वक्कल 20 ग्राम, कल्मी शोरा और श्वेत कत्था 10-10 ग्राम। खरल में डाल कर एकत्र करें और ग्वारपाठा के स्वरस में 3 घंटे तक खरल करके बेर के बराबर गोलियाँ बनावें और सुखाकर शीशी में रखें।

मात्रा — 1-1 गोली प्रातः- सायं ताजा पानी के साथ सेवन करें। नया उपदंश रोग हो तो 4-5 सप्ताह के सेवन से दूर हो जाता है। किन्तु रोग पुराना पड़ने की स्थिति में अधिक दिनों तक (10-12 सप्ताह पर्यन्त) धैर्यपूर्वक दवा का सेवन जारी रखना चाहिये। क्योंकि इसके सेवन से किसी प्रकार के उपद्रव (रिएक्शन) की सम्भावना नहीं होती।

- शुद्ध श्वेत संखिया, शुद्ध दालचिकना, रस कर्पूर और शुद्ध हिंगुल, चारों 3-3 ग्राम लेकर आक के दूध में दिन- रात 24 घंटे खरल करें और फिर डमरू यन्त्र द्वारा उड़ा कर सत निकाल लें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मात्रा — चावल भर दवा, आले की गोली में रख कर, प्रत्येक तीसरे दिन सेवन करनी चाहिये। पथ्य में घृतयुक्त चने की रोटी अधिक उपयुक्त है। वस्तुतः घृत का अधिक सेवन करना चाहिये। तेल, मिर्च, खटाई और संसर्ग से बचें।

उपदंश पर अत्यन्त प्रभावकारी वटी

श्वेत चन्दन, लौंग, जावित्री, केशर, रसकर्पूर और मिश्री सभी द्रव्य समान भाग लें। चन्दन, लौंग और जावित्री को कूट- छान कर खरल में डालें, फिर केशर, रसकर्पूर, एक- एक कर मिलावें। अन्त में मिश्री को महीन पीस कर डाल देना और केशरयुक्त पानी के साथ खरल करना चाहिये तथा मूँग के समान गोलियाँ बना कर रखनी चाहिये 2 से 4 गोली तक गोघृत में लपेट कर निगल लें। दाँतों से न लगे। प्रातः- सायं दो बार यह औषधि सेवन की जाय। कुछ सप्ताह प्रयोग से लाभ होता है।

उपदंश पर अव्यर्थ महौषधि

शुद्ध पारद, शुद्ध नीलाथोथा, शुद्ध दाल चिकना, रसकर्पूर और वर्की हरताल 50-50 ग्राम तथा शुद्ध हिंगुल 20 ग्राम। सबको खरल में डाल कर पर्याप्त मर्दन करें और फिर ग्वारपाठे के स्वरस में निरन्तर 24 घण्टे घोटते हुए अन्त में 1-1 ग्राम की टिकियाँ बना लें और उन्हें छाया में सुखा लें। तदुपरान्त 12 घंटे तक बेर की लकड़ी की मन्द अग्नि देते हुए डमरूयन्त्र द्वारा जौहर उड़ा कर सुरक्षित रखें।

मात्रा — 1 चावल भर यह दवा गोघृत या मक्खन की गोली में रखकर निगल जायें। दाँतों में दवा नहीं लगनी चाहिये। इस दवा का सेवन प्रतिदिन एक बार ही करना चाहिये। मक्खन और घृत का सेवन अधिक करना आवश्यक है। इसके तीन दिन सेवन करने मात्र से उपदंश दूर होता है। आवश्यक होने पर अधिक दिन भी सेवन कर सकते हैं।

यह महौषधि उपदंश, विसर्प, विद्रधि, विषाक्त व्रण तथा पूयमेहादि सभी में पर्याप्त लाभकारी है।

उपदंशान्तक वटी

असगन्ध, अकरकरा, अजवाइन देशी, अजवाइन खुरासानी, अजमोद, श्वेत मूसली, वायविडंग, शुद्ध भल्लातक (भिलावा) और शुद्ध पारद 10-10 ग्राम, पुराना गुड़ 100 ग्राम।

सभी काष्ठौषधियों को कूट- छान कर कपड़छन करें और पारद को भृंगराज- स्वरस में विधिवत् खरल करके मूर्च्छित कर लें। भिलावे (भल्लातक) का भी विधिवत् शोधन करें फिर सबको एक साथ मिला कर पुराने गुड़ के साथ हमामदस्ते में डाल कर 4-5 दिन तक निरन्तर कुटाई करें। यदि गुड़ अधिक सूखा हो और मिलने में न आवे तो उसे पानी के छींटे देकर ढीला करें। इस प्रकार पर्याप्त कुटाई होने पर और सबके सात्म्य होने पर झरबेर प्रमाण गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रखें।

मात्रा — दिन में एक बार, एक गोली घी, मक्खन अथवा मलाई की पर्त में लपेट कर प्रातःकाल नीहार मुख निगल लें। दाँतों से न लगे, इसका ध्यान रखें। औषधि सेवन अधिकतम तीन सप्ताह करें। इसके सेवन से मुख में छाले या शोथ आदि (मुँह आना) सम्भव है। मसूढ़े फूल सकते हैं। मुँह आने पर नीम की पत्तियाँ, झरबेरी की छाल, हल्दी और बिनोलों का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

क्वाथ बना कर, उससे कुल्ले करने चाहिये तथा उस उपद्रव से घबराना नहीं चाहिये।

उपदंश पर एक अन्य लाभकारी योग

दालचिकना 6 ग्राम, अण्डे 12 नग लेकर, दालचिकना को एक अंडे में रखें तथा उसके ऊपर उड़द का आटा लपेट कर, कोयलों की अग्नि में रखें। जब आटा लाल हो जाय, तब आग से निकाल कर ठण्डा करें और उसमें दालचिकना को निकाल लें। तत्पश्चात् दूसरे अंडे में वही दालचिकना रख कर पुनः उड़द का आटा लपेटें और अग्नि में रखें। इसी प्रकार दालचिकना को एक- एक कर बारहों अण्डों में रख कर पकाना चाहिये। फिर उसमें अजवाइन देशी, अजवाइन खुरासानी और अजमोद 12-12 ग्राम मिला कर शहद के साथ पर्याप्त खरल करके चना प्रमाण गोलियाँ बना लें।

मात्रा — प्रातःकाल नीहार मुख 1 गोली हलुआ में रख कर निगलनी चाहिये। यदि रोग बहुत बढ़ गया हो तो इसी प्रकार सायंकाल भी 1 गोली दे सकते हैं। किन्तु दूसरी गोली रोगी की क्षमता देख कर ही देना चाहिये। केवल एक सप्ताह के प्रयोग में रोग से मुक्तिसम्भव है।

उपदंशकुठार वटी

नीलाथोथा फुलाया हुआ, सुहागा फुलाया हुआ, छोटी हरड़ और काबुली हरड़, चारों 10-10 ग्राम तथा कर्पद (कौड़ी) भस्म 40 ग्राम।

मात्रा — 1 से 4 गोली तक ताजा पानी के साथ प्रातः- सायं निरन्तर एक सप्ताह तक सेवन करने से उपदंश नष्ट हो जाता है। इस दवा को निगलने की आवश्यकता नहीं होती। किन्तु नीलाथोथा के प्रभाव से वमन होना सम्भव है। यदि ऐसा हो तो किसी भी प्रकार से नींबू के रस का सेवन करना हितकर रहता है।

उपदंशनाशक त्रिपुर भैरव रस

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, शुद्ध हिंगुल, शुद्ध रसकर्पूर 50-50 ग्राम, फिटकरी फुलाई हुई 25 ग्राम और नौसादर 5 ग्राम। प्रथम पारद- गन्धक की कज्जली करें और फिर एक- एक करके सभी द्रव्य पर्याप्त खरल कर, कज्जली के समान सूक्ष्म करके आतशी शीशी में भरें और बालुकायन्त्र में रख कर दो दिन तक अग्नि दें। वस्तुतः इस प्रकार से औषधि- निर्माण सामान्य ज्ञान वाले व्यक्तियों के लिये सम्भव नहीं, किसी अनुभवी निर्माणकर्ता वैद्य के द्वारा ही बनवा लेना चाहिये। इसमें गन्धक का धुँआ निकलने के पश्चात् शीशी का मुख ठीक से बन्द करके 24 घण्टे तक तेज अग्नि देनी होती है।

मात्रा — 60 मिलीग्राम से 250 मिलीग्राम तक, प्रातः- सायं घृत के साथ सेवन करनी चाहिये। उपदंश के लिये वास्तव में यह औषधि कुठार स्वरूप ही है।

उपदंश में धूम्रपान का एकमात्रिक योग

शुद्ध सिंगरफ, फूला सुहागा, अकरकरा और माजूफल, चारों 5-5 ग्राम लेकर कूटें और उनकी चार गोलियाँ बना लें अर्थात् चार मात्रा कर लें। इनमें से एक- एक मात्रा रात्रि में चिलम में रख कर 3-3 घंटे के अन्तर से पीने को दें। इससे वमन, विरेचन होते हैं। फिर भी रोगी रात्रि में नींद न ले, वरन् घूमते- फिरते हुए ही समय काटे। बैठे भी नहीं, क्योंकि इससे गठिया होने की आशंका रहती है। प्रातःकाल दिन निकलने पर ठण्डे पानी से स्नान करे तथा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

गेहूँ की रोटी, मूँग की दाल के साथ खाकर सो जाय।

Digitized by eGangotri

यह प्रयोग केवल एक रात्रि में चमत्कार दिखाता है। दूसरे दिन से ही व्रण भरने आरम्भ हो जाते हैं। यदि उपस्थ पर सूजन हो तो उसे त्रिफला के क्वाथ से धोना चाहिये। रोगी की संभाल करने के लिये उस रात्रि 3-4 परिचारकों की आवश्यकता रहती है। योग बंहुतों द्वारा बताया जाता है, किन्तु हमारे द्वारा परीक्षित नहीं है। जानकारी हेतु यहाँ लिख दिया है।

उपदंश पर सरल, सस्ता, अपूर्व योग

मकोय के पत्ते 300 ग्राम, मुनक्का और मिश्री 50-50 ग्राम और पुराना गुड़ 100 ग्राम। मकोय पत्र को छाया में सुखा कर उसका कपड़छन किया हुआ चूर्ण प्रयोग में लें। मिश्री को महीन पीस कर उस चूर्ण को मिलावें। मुनक्कों के बीज निकाल कर फेंक दें और उन्हें गुड़ के साथ घोटें। अर्थात् मुनक्का में गुड़ थोड़ा- थोड़ा डाल कर घोटना चाहिये तथा वह चूर्ण मिला कर पुनः 5-6 घण्टे तक घोट कर सबको एकजीव कर लेना चाहिये। फिर बेर प्रमाण गोलियाँ बनाकर रखनी चाहिये।

मात्रा —— 2 से 4 गोली तक नित्यप्रति, दो सप्ताह पर्यन्त सेवन करने से उपदंश नष्ट हो जाता है। दवा- सेवनकाल में रोगी को घृत का अधिकाधिक सेवन करना चाहिये।

पथ्यापथ्य विचार

जौ, शालिधान, गाय का घी, गेहूँ- चने की रोटी, हरे शाक- सब्जियाँ आदि पथ्य हैं। मूँग की दाल अनेक रोगियों को अहितकर सिद्ध हुई है। कुछ वैद्य इसे पथ्य रूप में भी देते हैं।

तेल, मिर्च, खटाई, गरिष्ठ अन्न, अपाच्य अन्न, मद्यपान, चिरपरा- चटपटा आहार तथा मैथुनादि वर्जित है। एकान्त सेवन उचित है। पर- स्पर्श से बचना चाहिये।

इस रोग में सेवनीय औषधियाँ प्रायः ऐसी हैं, जो घृत, मक्खन या मलाई आदि में रखकर निगल लेनी चाहिये। दाँतों में न लगे, अन्यथा दाँतों को हानि पहुँच सकती है।

उपदंशनाशक प्रक्षालन, तैल एवं लेप

अश्वत्थादि क्वाथ

उपदंश रोगी पुरुष के उपस्थ अथवा स्त्री की योनि के प्रक्षालनार्थ यह एक प्रभावकारी शास्त्रीय योग है। इससे उपदंश- जन्य शोथ तथा घाव आदि में अत्यन्त लाभ होता है। वृहद् निघण्टु रत्नाकर में इसका वर्णन है। पीपल, बरगद, गूलर, पिलखुन और वेंत की छाल समान भाग लेकर उसका काढ़ा करें और उपस्थ अथवा योनि को इससे धोवें।

जयन्त्यादि क्वाथ

योग रत्नाकर में वर्णित यह क्वाथ भी उपदंश रोगी के गुप्तांगों के प्रक्षालनार्थ उपदिष्ट है। जयन्ती, चमेली, अमलताश, आक और कनेर के पत्ते लेकर, उनका क्वाथ करके, उससे उन- उन अंगों को धोना चाहिये।

धवादि क्वाथ

धव, अर्जुन, कत्था, शीशम, पारिभद्र और बेर की छाल का क्वाथ करके, उससे गुप्तांगों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
का प्रक्षालन करने से उपदंश व्रणादि में पर्याप्त लाभ होता है। यह योग 'हारीत संहिता' का है।

निम्बादि क्वाथ

नीम, अर्जुन, पीपल, कदम्ब, वट, जामुन, शाल, गूलर और वेंत इन सबकी छाल समान भाग के क्वाथ से उपस्थ या भाग को धोवें। इससे उपदंश- व्रण शीघ्र नष्ट होते हैं। यह योग 'वृन्द माधव' में वर्णित है।

यवासकादि क्वाथ

जवासा, सिरस, अर्जुन, विजयसार, नीम, पलाश वृक्षों की छाल तथा आमला, कत्था और मूषाकर्णी, सभी समान भाग लेकर इनका क्वाथ करें और उससे उपस्थादि अंगों का प्रक्षालन करें तो उपदंश के घाव, शोथ आदि में शीघ्र लाभ होता है। 'गद निग्रह ग्रंथ' का यह योग बहुत उपयोगी है। प्रक्षालन के पश्चात् इन्हीं सबका तैल सिद्ध करके गुप्तांगों पर चुपड़ना चाहिये।

त्रिफला क्वाथ

वृन्दमाधव ग्रन्थ के अनुसार त्रिफला का क्वाथ उपदंशज व्रणादि को नष्ट करने में बहुत उपयोगी है। इससे गुप्तांगों को धोना चाहिये। अथवा भृंगराज के पत्तों का स्वरस भी प्रक्षालन के लिये अधिक उपयोगी और हितकर है। तदुपरान्त शारंगधर संहितोक्तत्रिफला से निर्मित स्याही का लेप करना उपदंशज घाव आदि को शीघ्र नष्ट करने में सहायक होता है। इसकी विधि यह है —त्रिफला का चूर्ण एक लोहे की कढ़ाई में रख कर अग्नि पर चढ़ाओ और उसे तब पकने दो, जब तक कि वह चूर्ण जल कर कोयले के समान हो जाय। फिर उतार कर खरल में महीन करो और शहद में मिला कर उपस्थ पर लेप करो। त्रिफला की स्याही का यह लेप शीघ्र लाभकारी होता है।

तुत्थादि लेप

तुत्थ (नीला थोथा), सोना गेरू, लोध, इलायची के बीज, मेनशिल, हरताल, रसौत, फूला हुआ कसीस, फिटकरी और सेंधा नमक समान भाग को महीन पीस कर लेप करना चाहिये। वाग्भटोक्तयह लेप उपदंश व्रणों को दूर करने में अत्यन्त प्रभावी है।

गोजिह्वादि तैल

वंगसेनोक्तइस योग में गोभी के पत्ते, विडंग और मुलहठी समान भाग लेने और उसका तैल सिद्ध करने का निर्देश है। उसमें सर्वगन्ध मिला कर चुपड़ना चाहिये। उपदंश व्रणादि में यह अधिक उपयोगी है।

पीतचन्दनादि लेप

योग रत्नाकर का यह लेप- योग भी उपदंशजन्य क्षत, व्रण, घाव, शोथादि पर अच्छा काम करता है। इसमें गोपीचन्दन जो बाजार में इसी नाम से बिकता है, और तूतिया, दोनों समान भाग को मिला पीसने और उतनी ही गन्धक- पारद की कज्जली मिलाने से उत्तम लेप तैयार होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अम्बादि तैल

भावप्रकाशोक्त इस योग में जामुन, वेंत, आमला और करंज इन चारों के पत्ते तथा इलायची, अतीस, आम की गुठली, मुलहठी, प्रियंगु, लाक्षा अगर, लोध, लालचन्दन और निशोथ समान भाग लेने का निर्देश है। इनको मिला कर बकरे के मूत्र में पीस कर कल्क बनावें और चौगुना तिल- तैल डाल कर, तैल सिद्ध कर लें। गुहांगों पर इस तैल के चुपड़ने से उपदंशजन्य घाव, शोथ, फुन्सी आदि सभी में अत्यन्त लाभ शीघ्र होता है।

जात्यादि तैल

गदनिग्रह के अनुसार चमेली के पत्र, हरिद्रा, दुद्धी, इन्द्रायण मूल और मुलहठी समान भाग के क्वाथ मे सिद्ध किये हुए तैल के लगाने से पुरुष रोगजन्य दोष दूर होते हैं। अर्थात् इसके लगाने से उपदंश व्रणादि में शीघ्र लाभ होता है।

मोचरसादि लेप

योगरत्नाकर का यह योग उपदंश व्रणादि को दूर करने में हितकर है। इसमें मोचरस, जली हुई सुपारी, बेर वृक्ष की छाल और सेलखड़ी समान भाग लेकर जलयोग से लेप करना चाहिये। यही मिश्रण 1-2 ग्राम की मात्रा में दूध के साथ पी लें तो उपदंश के घाव तथा उष्णता का शीघ्र शमन होता है।

भूनिम्बादि घृत

वंगसेन के मत में उपदंशज दोषों को नष्ट करने के लिये चिरायता, नीम की छाल, हरड़, बहेड़ा, आमला, पटोलपत्र, करंज, चमेली के पत्ते, आमले के पत्ते, विजयसार और कत्था सम भाग लेकर जलयोग से घोट कर कल्क बनावें तथा क्वाथ करें। यह क्वाथ 16 भाग और गोघृत 4 भाग मिला कर घृत सिद्ध करना चाहिये। अर्थात् क्वाथ में गोघृत मिला कर मन्दाग्नि पर पकावें और घृत मात्र शेष रहने पर उतार लें। यह घृत लगाने और खाने से उपदंश शीघ्र दूर होता है।

दरदादि धूम

'वैद्य रहस्य' का यह योग फिरंग रोग- जन्य गुदांकुरों, व्रणों आदि को नष्ट करने में प्रभावशाली है। इसमें हिंगुल और मैनसिल 1-1 भाग और जौ का आटा 12 भाग लेकर जल के साथ घोट कर बेर की गुठली के बराबर की 7 गोलियाँ बना कर उनका धुआँ दिया जाता है। तात्पर्य यह है कि उक्त प्रकार बनाई और सुखाई हुई एक गोली को बेर के धधकते हुए कोयलों पर रख कर उपदंश रोगी के गुद- भाग तथा आक्रान्त भाग पर धुआँ देना चाहिये। यह कार्य ऐसे स्थान पर बैठ कर करें, जहाँ हवा न चल रही हो। इस प्रकार गुप्तांगों को घूमित करने का यह कार्य आवश्यकतानुसार सात दिन तक किया जा सकता है। इस उपचारकाल में (7 या 14 दिन तक) भोजन में नमक नहीं डालना चाहिये।

अण्डवृद्धि और उसके उपचार

प्रजनन अंगों में अण्ड अर्थात् वृषण का महत्वपूर्ण स्थान है। जो कि पुरुषांग उपस्थ के ठीक नीचे लटके रहते हैं। अण्ड के समान आकार के यह दो अवयव एक थैली में विद्यमान रहते हैं, जिन्हें अण्डकोष कहा जाता है। सामान्यतः यह ढाई- ढाई सेंटीमीटर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
चौड़े- मोटे और 4 सेंटीमीटर तक लम्बे होते हैं। प्रत्येक अण्ड में लगभग 1000 पतली तथा मुड़ी हुई नलिकाएँ होती हैं। प्रत्येक नलिका 60 से 90 सेंटीमीटर तक लम्बी होती है। यह अण्ड उन्हीं नलिकाओं के गुच्छ स्वरूप हैं तथा पुरुष का वीर्य इन्हीं नलिकाओं में बनता है तथा यहीं से शुक्राशय में पहुँचता है।

इन अण्डों में से किसी पर आघात पहुँचने, दोष उत्पन्न होने आदि कारणों से रस, रक्त आदि की वृद्धि होने से, इनकी वृद्धि हो जाती है। इसी को अण्डवृद्धि कहते हैं। आयुर्वेद में इस विकार के शमन हेतु अनेक प्रकार के औषधोपचारादि का विधान मिलता है। उनमें तरडा, लेप, बन्धन, औषधि- सेवन आदि से शीघ्र लाभ हो सकता है। रोग बढ़ जाता है, तब उस पर काबू पाने में कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं। इसलिये उपेक्षा नहीं करनी चाहिये।

आयुर्वेद के मत में, कुपित हुए दोष जब अण्डकोष वाहिनी धमनी में प्राप्त होकर, उन कोषों की वृद्धि करते हैं, उसी को अण्डवृद्धि या वृषण- वृद्धि कहते हैं। किन्तु ऐलोपैथी के अनुसार लसीका- वाहिनियों से लसीका रिस- रिस कर एकत्रित होती रहती है, उसी कारण से अण्डकोष फूल जाता है।

अण्डवृद्धि मुख्य रूप से दो प्रकार की मानी जाती है — 1. रक्तज और 2. मूत्रज। अन्य कारणों से मेदज, अर्बुदज, उपदंशज, क्षयज आदि भी कहे हैं। वात, पित्त, कफ के दोष से अण्डवृद्धि का होना भी सर्वमान्य है।

1. वातज अण्डवृद्धि को दूर करने के उपाय

भाव प्रकाश के मत में वातजन्य वृद्धि में स्निग्ध विरेचन का पान कराना हितकर है। इसमें गोदुग्ध के साथ एरण्ड तैल मिला कर सेवन किया जाय तो दो महीने के प्रयोग में ही वातजन्य अण्डवृद्धि दूर हो सकती है। अथवा गुग्गुल को एरण्ड तैल में शुद्ध करें और उसका सेवन गोमूत्र के साथ करें तो वातजन्य अण्डवृद्धि नष्ट हो जायेगी।

2. पित्तज अण्डवृद्धि का उपचार

मुलहठी, चन्दन, लाल कमल, नील कमल और पोस्तदाने, सभी समान भाग लेकर दूध के साथ पीस कर लेप करना पित्तज- अण्डवृद्धि में हितकर है। इससे अण्डशूल, शोथ, प्रदाह आदि में शीघ्र लाभ होता है। इसके पूर्व जोंक द्वारा रक्त निकलवाने का भी परामर्श दिया जाता है।

3. कफज अण्डवृद्धि की चिकित्सा

त्रिफला और त्रिकुटा का क्वाथ करके उसमें यवक्षार और सेंधव (नमक) मिला कर पीना चाहिये। कफजन्य अण्डवृद्धि उसके सेवन से शीघ्र नष्ट हो जाती है।

वस्तुतः कफजन्य वृद्धि में उष्ण उपचार लाभदायक रहते हैं। कटु, तीक्ष्ण एवं उष्ण द्रव्यों का लेप करें तो आशातीत लाभ होता है

4. अन्य प्रकार की वृद्धि

मेदजन्य वृद्धि में पहिले स्वेदन करके उपर्युक्तलेप करें। रक्तज वृद्धि में जोंक द्वारा दूषित रक्त निकलवाना तथा पित्तज वृद्धि के समान उपचार करना हितकर है। मूत्रज वृद्धि में पलाश- पुष्पों को तैल के साथ गर्म करके उसे सुहाता- सुहाता बाँधना चाहिये। इमली के पत्ते पीस कर टिकिया बनावें और गर्म करके बाँधने से भी अण्डवृद्धि पर रोक लगती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

कुछ अन्य लाभकारी प्रयोग

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- ढाक के पुष्पों को पानी के साथ औंटावें। खोलने पर उतार कर ठण्डा होने दें। इसका सुहाता- सुहाता तरड़ा देने से अण्डवृद्धि और उसमें उत्पन्न शोथ, शूलादि का शमन होता है
- यदि अण्डकोष किसी प्रकार के आघात से चुटीले हुए हों, उनमें सूजन और दर्द हो तो तम्बाकू के ताजा पत्ते पर घृत चुपड़ कर, किंचित् गर्म करें और अण्डकोषों पर बाँध दें। इससे शोथ, दर्द आदि में शीघ्र लाभ होगा।
- कच्चा पपीता लेकर, ऊपर से छीलें और भीतर से बीज भी निकाल फेंके। बढ़े हुए अण्डकोष इस पपीते में करके, ऊपर से लँगोट बाँधें। इस प्रयोग से अण्डवृद्धि और उससे होने वाले शोथ, दर्द आदि उपसर्गों में शीघ्र लाभ होता है।
- अण्डवृद्धि और उसके उपसर्ग दूर करने के लिये सोंठ, कुन्दरू, तम्बाकू, मस्तंगी, आँवा हल्दी, पोस्त डोडा, वच, वत्सनाग, सब समान भाग लेकर, महीन चूर्ण करें और मकोय- स्वरस के साथ आधे- आधे ग्राम के लगभग अथवा कुछ बड़ी गोलियाँ बना लें। यह गोली पानी के साथ घिस कर अण्डकोषों पर लगावें और इसी चूर्ण की पोटली से किंचित् गर्म सेंक थोड़ी देर करें। इससे वृद्धि का शमन होता है।
- कुन्दरू, लोध, फिटकरी, गन्धा, बिरोजा और गुग्गुल समान भाग को पानी के साथ पीस कर लेप करना चाहिये। इस प्रयोग से भी सब प्रकार की अण्डवृद्धि नष्ट होती है।
- शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, शुद्ध तूतिया, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, हरड़, बहेड़ा, आमला, चव्य, चित्रक, कचूर, पाठा, पीपलामूल, वायविडंग, विधायरा, वच, हाऊबेर, देवदारू, इलायची के बीज, पाँचों नमक, वंग भस्म, लौह भस्म, ताम्र भस्म, कांस्य भस्म, शंख भस्म और कौड़ी भस्म, यह सभी समान भाग लें। सभी काष्ठौषधियों को कूट- कपड़छन करें। उनमें तूतिया और नमक भी पृथक् पृथक् पीस कर मिलावें। तदुपरान्त सभी भस्में मिलानी चाहिये। पारद- गन्धक की कज्जली करके मिलाई जाय। फिर हरड़ का क्वाथ बनावें और इन सब एकत्रित द्रव्यों को उस क्वाथ के साथ घंटे तक घोट कर 250-250 मि.ग्रा. की वटी बना कर तथा सूखने पर सुरक्षित रखें।

मात्रा —1 से 3 वटी तक रोगी का बलाबल देख कर देनी चाहिये इसका प्रयोग प्रातः- सायं त्रिफला- क्वाथ के साथ करना अधिक उपयुक्त है। कभी त्रिफला- क्वाथ न बन सके तो ताजा पानी के साथ ले सकते हैं। इसके सेवन से असाध्य अण्डवृद्धि भी दूर हो जाती है।

पथ्यापथ्य निर्देश

अधिक भोजन, गरिष्ठ भोजन, अधिक परिश्रम, मल- मूत्र एवं शुक्र का वेग रोकना, दही, उड़द, मिठाई, बासी अन्न, मैथुन, साइकिल की सवारी आदि वर्जित है। स्वेद, वमन, विरेचन, रक्तमोक्षण, ब्रह्मचर्य - पालन, पाचक पदार्थ सेवन, गेहूँ, ज्वार, शालिधान्य, पुराना चावल, ताजा मट्ठा, गोदुग्ध, हरे शाक आदि अण्डवृद्धि में हितकर हैं।

प्रमेह या शुक्रमेह कारण और प्रकार

मिथ्या आहार- विहार से मनुष्य का समूचा शरीर प्रभावित होता है। किन्तु उसके साथ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
ही विषय- भोगों के अधिक चिन्तन और आकर्षण के कारण, जब उसमें संलिप्तता बढ़ जाती है, तब वह रोग का रूप ले लेती है। इसी कारण शास्त्र निर्देश मिलता है कि अति सभी कार्यों में वर्जित है। इस विषय में एक शास्त्रीय मान्यता है —

येषामेवहि भावाना सम्पत्सज्जनयेन्नरम् ।

तेषामेव विपद्व्योधीन विविधान् समुदीरयेत् ॥

जिन पंचभौतिक भावों की सम्पत्ति द्वारा पुरुष की उत्पत्ति होती है, उन्हीं के द्वारा विविध प्रकार की विपत्तियों और व्याधियों की भी उत्पत्ति होती है।

इससे स्पष्ट है कि जो आहार पुष्टि प्रदान करते हैं, वे ही दूषित होने पर व्याधि प्रदान करते हैं। जिन विहारों और आमोद- प्रमोदों से मन उल्लसित होता है, उन्हीं का दुरुपयोग दुःखों का कारण बन जाता है। पुरुष रोगों की उत्पत्ति तथा धातु- विकृति में भी यही प्रवृत्तियाँ मूल कारण बन जाती हैं। अधिक दूषण बढ़ने पर प्रमेह, धातु दौर्बल्य, क्लैव्य(नपुंसकता) आदि के रूप में विभिन्न प्रकार के पुरुष रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

शास्त्रकारों ने प्रमेह के दो मुख्य कारण कहे हैं — 1 सहज, जो कि माता- पिता के दूषित रज- वीर्य के कारण पुरुष को जन्म से ही प्राप्त हो जाता है। 2. अपथ्यजन्य, जो कि मिथ्या आहार- विहार से प्राप्त होता है। प्रकृति- भेद से प्रमेह के तीन प्रकार होते हैं —1. वातज, 2. पित्तज, और 3. कफज। इन तीन प्रकारों में भी अनेक उपभेद माने गये हैं।

वातज प्रमेह के चार प्रकार हैं —1. वसामेह, 2. मज्जामेह, 3. हस्तिमेह, और 4. मधुमेह। प्रथम प्रकार में वसा जैसे रंग का मूत्र, मज्जामेह में मज्जा मिश्रित मूत्र, हस्तिमेह में मदोन्मत हाथी के मूत्र के समान तथा मधुमेह में शर्करायुक्तमूत्र होता है। रोगी बार- बार पेशाब करता है।

पित्तज प्रमेह के छः प्रकार हैं — 1. क्षारमेह, 2. कालमेह, 3. नीलमेह, 4. लोहित मेह, 5. मांजिष्ठमेह और 6. हारिद। इन सब में नामों के अनुरूप गुण, वर्ण से युक्त मूत्र होता है।

कफज प्रमेह 10 प्रकार का है— 1. उदक मेह, 2. इक्षुमेह, 3. सान्द्रमेह, 4. सान्द्र प्रसाद मेह, 5. शुक्लमेह या पिष्टमेह, 6. शुक्रमेह, 7. शीतमेह, 8. सिकता मेह, 9. शनैर्मेह, और 10. लालामेह। इनके भी नाम- रूपानुसार पेशाब होता है

प्रमेह रोगों के रोगियों को सात्विक तथा सन्तुलित आहार करना चाहिये। व्यायाम एवं प्रातः- सायं भ्रमण भी हितकर है। स्त्री- संसर्ग से बचना भी आवश्यक है। मधुमेह के रोगियों को मिष्ठान्न से परहेज करना होता है। प्रमेह रोगी में आलस्य बढ़ने पर शरीर में मोटापा बढ़ता है। इसलिये आलस्य का परित्याग करना चाहिये।

इस रोग में रोगी को मलावरोध (कब्ज) की शिकायत प्रायः रहती है। उससे बचने के लिये सुपाच्य अन्न तथा मल निःसारक औषधियों का प्रयोग, रोगावस्था के अनुसार करना होता है। जिस योग में शहद का सेवन अनुपान के रूप में किया जाता है, उसमें शर्करा रहते हुए भी शहद हानिकारक नहीं होता।

प्रमेह रोग में सरल प्रयोग संग्रह

हरड़ में वीर्यशोधक और वीर्यवर्धक तत्व पाये जाते हैं। आमला भी शीतवर्ण गुण के कारण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
शामक प्रभाव डालता है। हरड़, बहेड़ा और आमला तीनों सम अथवा असम भाग अपेक्षानुसार मिला कर जो त्रिफला चूर्ण बनता है, वह प्रमेह में बहुत हितकर रहता है। शिलाजीत भी इसमें लाभ करती है। आवश्यक नहीं कि बहुत मूल्यवान अमीरी दवाएँ ही सेवन की जायें, अल्प मूल्य के गरीबी प्रयोग भी कभी- कभी चमत्कारिक लाभ उत्पन्न करते हैं।

- हरड़ साफ, जिस पर चौमासा न निकला हो, क्योंकि वर्षा ऋतु में काष्टौषधियों के गुण कम हो जाते हैं, कूट- छान कर रखें। यह चूर्ण प्रातःकाल शहद के साथ, एक चम्मच की मात्रा में सेवन करें तथा रात्रि में सोते समय इस चूर्ण को फाँक कर ऊपर से दूध पीवें। इस प्रकार यह चूर्ण अकेला ही प्रमेह रोग पर बहुत काम करता है। हरड़ में निःसारक गुण हैं, इसलिये रोगी को कब्ज भी नहीं रह पाता।
- आमले के चूर्ण को आमलों के ही रस में तीन दिन घोटें और सुरक्षित रखें। यह चूर्ण रसायन गुण वाला होकर सभी प्रकार के प्रमेह रोगों को दूर करता है। इसकी मात्रा एक ग्राम की है, प्रातः- सायं शहद के साथ लेनी चाहिये।
- त्रिफला (हरड़, बहेड़ा, आमला) का चूर्ण 3 से 5 ग्राम की मात्रा में रोगी का बलाबल देखकर शहद के साथ सुबह- शाम देनी चाहिये। यह भी प्रमेह के सभी लक्षणों को दूर करने में उपयोगी है।
- त्रिफला चूर्ण का सेवन 5 से 10 ग्राम की मात्रा में रात्रि में सोते समय गाय के दूध में मिश्री मिला कर देने से पित्तजन्य पुरुंष रोगों में लाभ होता है।
- हरड़ का वक्कल, बहेड़े का वक्कल तथा गुठली रहित आमले, बबूल के पुष्प, हल्दी और छोटी दूधी, यह सभी द्रव्य समान भाग लेकर कूट- कपड़छन करें और इस चूर्ण का जितना वजन हो, उतनी ही मिश्री मिलायें।

मात्रा — 5 से 10 ग्राम तक गाय के दूध के साथ रात में सोते समय सेवन करें। इससे कब्ज भी मिटता है और क्षुधा की भी वृद्धि होती है। प्रमेह रोग में उत्तम योग है।

- जौ का साफ ताजा आटा सब प्रकार के प्रमेह में लाभकारी रहता है। इसे भोजन के रूप में तो प्रयोग किया ही जाता है, दवा के रूप में भी काम में लाया जाता है। इसके लिये जौ का आटा एक चम्मच शहद के साथ प्रातःकाल शहद के साथ नाश्ते स्थान पर सेवन करना चाहिये। जौ का आटा पंजीरी के रूप में भून लेना चाहिये। कम से कम 30-40 दिन सेवन करें।
- छोटी इलायची के बीज और शर्करा समान भाग लेकर चूर्ण बना लें। इसे 1 ग्राम की मात्रा में प्रातः- सायं शहद के साथ सेवन करना चाहिये। मधुमेह में इसे न दें, अन्य सभी प्रमेहों में हितकर है। छोटी इलायची का चूर्ण शर्करा के शर्बत के साथ सेवन करने से प्रमेह में लाभ होता है।
- हल्दी का चूर्ण 3 से 5 ग्राम की मात्रा में शहद के साथ सेवन करने से सब प्रकार के प्रमेह दूर दूर होते हैं।
- छोटी दूधी छाया- शुष्क करके, समान भाग मिश्री के साथ खरल करें।

मात्रा — 5 से 10 ग्राम तक गो- दुग्ध के साथ सेवन करनी चाहिये। सब प्रकार के प्रमेह में लाभकारी है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- बबूल की छाल, महुए की छाल और कटहल की छाल समान भाग लेकर, कपड़छन चूर्ण बनावें। यह चूर्ण 150 ग्राम में 1 ग्राम चाँदी की भस्म मिला कर पुनः खरल करें। मात्रा 5 ग्राम, प्रातः- सायं शहद मिला कर लेनी चाहिये। प्रमेह के सभी भेदों में यह दवा लाभदायक रहती है।
- असगन्ध और विधायरा समान भाग लेकर कूट- कपड़छन करें। यह आयुर्वेद का प्रसिद्ध अश्वगन्धादि चूर्ण है। इसकी मात्रा 4 से 8 ग्राम तक रोगी का बलाबल विचार कर देनी चाहिये। अनुपात में मिश्रीयुक्त गोदुग्ध दिया जाय। प्रातःकाल न्यूनतम 40 दिन प्रयोग करें। इससे शरीर में शक्ति बढ़ती है तथा सभी प्रकार के प्रमेह नष्ट होते हैं। इसके सेवन से कब्ज हो सकता है, इसलिये कभी- कभी रात्रि में सोते समय त्रिफला की फंकी दूध के साथ ली जा सकती है।
- निर्मली के बीज थोड़े से स्वच्छ जल के साथ चन्दन के समान घिसें अथवा पीस लें और छान कर रस निकालें। यह रस 2 ग्राम में आधा ग्राम काली मिर्च का चूर्ण मिला कर सेवन कराना चाहिये। यह सभी प्रकार के प्रमेह रोग में लाभकारी है।
- शुद्ध शिलाजीत 1-2 ग्राम को शहद के साथ 3-4 सप्ताह तक निरन्तर सेवन करने से सब प्रकार के प्रमेह दूर होते हैं।
- महुए की छाल 5 ग्राम, काली मिर्च आधा ग्राम लेकर पानी के साथ पीसें। इससे भी प्रमेह के सभी लक्षण दूर होते हैं।
- केला की पकी हुई फली का गूदा, मिश्री, मधु एक साथ घोट लें और उसमें हरे आमले का स्वरस मिला कर सेवन करावें। इससे वीर्यस्राव तथा पतले हुए वीर्य में लाभ होता है। बल- वृद्धि तथा वीर्य को गाढ़ा करने वाला सुन्दर प्रयोग है।
- धाय के पुष्प, श्वेत चन्दन, साल वृक्ष की छाल, अर्जुन की छाल 50-50 ग्राम लेकर जौकुट चूर्ण कर लें। इसमें से 40 ग्राम चूर्ण लेकर चौगुने पानी के साथ काढ़ा करें और छान कर ठंडा कर लें। फिर इसमें 10 ग्राम शहद मिला कर प्रमेह के रोगी को सेवन करावें। कुछ दिन लगातार सेवन करने से सब प्रकार के प्रमेहों में लाभ होता है और शरीर में शक्ति आती है।
- ईसबगोल 10-10 ग्राम लेकर एक पाव गोदुग्ध के साथ पका कर खीर बनायें। इसका सेवन प्रातःकालीन नाश्ते के रूप में करना चाहिये। यह खीर प्रमेह, स्वप्नमेह, धातुक्षय, वीर्य का पतलापन आदि विकारों को दूर करने में उपयोगी है।
- काली मिर्च, ग्वारपाठे का गूदा, सेंधा नमक और असली घी मिला कर सेवन करने से सब प्रकार के प्रमेहों में लाभ होता है।
- शिलाजीत शुद्ध, शंखपुष्पी, छोटी इलायची के बीज और मिश्री समान भाग लेकर कूट- कपड़छन चूर्ण करें।

मात्रा — 3-4 ग्राम चूर्ण को पानी के साथ दिन में दो बार सेवन करें। कुछ दिनों के प्रयोग से सब प्रकार के प्रमेहों में लाभ होता है।

- केवल शुद्ध शिलाजीत 1-2 ग्राम तक की मात्रा में शहद के साथ सेवन करने से प्रमेह दूर हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वातज प्रमेह में काढ़ों का प्रयोग

- वसामेह में अरनी का काढ़ा बनाकर प्रातःकाल सेवन कराना लाभदायक होता है।
- गिलोय और चित्रक की छाल का काढ़ा बना कर पिलाने से मज्जामेह या घृत प्रमेह में लाभ होता है।
- पलाश- पुष्प, जवासा, सिरस की छाल, कैथ, तेंदू पत्ता, मूर्वा और पाढ़ समान भाग का क्वाथ बना कर सेवन कराने से हस्तिमेह में लाभ सम्भव है।
- सुपारी, पपरिया कत्था और खैर समान- भाग लेकर काढ़ा बनाये और रोगी को प्रातःकाल पिलायें। इससे मधुमेह दूर होता है।

पित्तज प्रमेह में काढ़ों का प्रयोग

- पाढ़ का काढ़ा शहद मिला कर पिलाने से क्षारमेह में लाभ होता है।
- त्रिफला का काढ़ा क्षारमेह में लाभकारी होता है।
- आमला, गिलोय, परवल के पत्ते तथा डंठल और नीम की आन्तरिक छाल समान भाग का हिम अथवा काढ़ा मिश्री मिलाकर पिलाने से कालमेह में लाभ होता है।
- हरड़, आमला, नागरमोथा और खस समान भाग का हिम अथवा क्वाथ नीलमेह में हितकर है।
- पीपल वृक्ष की छाल का हिम अथवा काढ़ा भी नील प्रमेह को दूर करने में सहायक होता है।
- अर्जुन की छाल, नीम की छाल और कमलगट्टा की गिरी समान भाग का हिम या काढ़ा मांजिष्ठमेह में हितकर है।
- हरड़, नागरमोथा, पद्माख और इन्द्रयव का हिम अथवा काढ़ा हारिद्रमेह में लाभ करता है।
- धाय के फूल, सुगन्धबाला, पठानी लोध और श्वेत चन्दन का हिम अथवा काढ़ा हारिद्रमेह में हितकर है।
- आमला, गिलोय, नीम की छाल और परवल का काढ़ा लोहित मेह तथा सभी प्रकार के पित्तज प्रमेह में लाभ करता है।
- हल्दी का चूर्ण 1 ग्राम, मधु आधा ग्राम तथा आमलों का स्वरस 50 ग्राम मिला कर सेवन करायें। इससे सब प्रकार के पित्तजन्य प्रमेह दूर होते हैं।

कफज प्रमेह में काढ़ों का प्रयोग

- नीम की अन्तर्छाल 20 ग्राम का काढ़ा अथवा हिम प्रातःकाल सेवन कराने से उदकमेह में लाभ होता है।
- लोध, नागरमोथा, हरड़ और कायफल का काढ़ा मधु मिश्रित कर पिलाने से भी उदकमेह दूर हो सकता है।
- अर्जुन की छाल, वायविडंग, धमासा और पाढ़ का काढ़ा मधु मिश्रित करके पिलाना इक्षुमेह में हितकर होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- अर्जुन की छाल, वायविडंग, [illegible] और [illegible] का काढ़ा मधु मिश्रित करके पिलाना इक्षुमेह में हितकर होता है।
- अरणी के काढ़े में मधु मिला कर हिम अथवा क्वाथ बना कर सेवन करने से इक्षुमेह में लाभ सम्भव है।
- हल्दी, दारुहल्दी, वायविडंग और तगर सम भाग के हिम या क्वाथ के सेवन से सान्द्रमेह दूर हो सकता है।
- सेमल वृक्ष की छाल का क्वाथ सुरामेह में हितकर है।
- नीम की अन्तर्छाल का क्वाथ भी सुरामेह में हितकर है।
- केले की फली 1 लेकर उसमें फूली हुई फिटकरी 5 ग्राम तक सेवन कराने से शुक्लमेह में लाभ होता है
- गिलोय का स्वरस, वासा (अडूसा) का स्वरस और शहद मिला कर देने से भी शुक्लमेह में लाभ सम्भव है।
- कंजा की गिरी, शैवाल, श्वेत दूर्वामूल समान भाग का हिम अथवा क्वाथ शुक्रमेह में हितकर है।
- अगर का क्वाथ बनाकर, मधु- मिश्रित करें। इसके सेवन से शीतमेह में लाभ सम्भव है।
- चित्रकमूल की छाया का हिम अथवा क्वाथ मधु मिला कर सेवन करने से सिकतामेह दूर होता है।
- श्वेत सेमल की छाल 20 ग्राम, मिश्री 10 ग्राम, श्वेत जीरा 1 ग्राम लें। सेमल की छाल में गोदुग्ध के साथ पीस कर, उसमें मिश्री और जीरा पीस कर मिला दें। इस प्रकार का योग प्रातः- सायं 2 सप्ताह पर्यन्त दें। इससे शुक्रमेह मूत्र के साथ वीर्य जाना दूर होता है। यदि 2 सप्ताह में कम लाभ हो तो कुछ और भी सेवन करा सकते हैं।
- हरड़, गिलोय, खस और अजवाइन का हिम अथवा क्वाथ सेवन कराने से शनैर्मेह में लाभ होता है। हिम या क्वाथ में शहद मिला कर देना चाहिये।
- खैर वृक्ष की छाल का हिम अथवा क्वाथ भी शहद मिला कर देने से शनैर्मेह में हितकर होता है।
- त्रिफला, अमलताश और मुनक्का का मधु मिश्रित हिम अथवा क्वाथ लालमेह में लाभकारी है।
- केवल त्रिफला का हिम अथवा काढ़ा भी शहद मिला कर सेवन कराने से लाल मेह में हितकर होता है।

अन्य उपयोगी प्रयोग

- तुलसी के बीज कूट- कपड़छन करें। इनका सेवन ताजा पानी के साथ अथवा लक्षणानुसार उचित अनुपान के साथ करने से वीर्यस्राव, वीर्य का पतलापन तथा स्वप्नदोष में लाभ होता है।
- तुलसी के बीज और काली मूसली समान भाग लेकर कूट- छान लें। मात्रा 1-2 ग्राम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

धारोष्ण गो- दुग्ध के साथ सेवन करें। इससे बल- वीर्य की वृद्धि होती है। कामशक्ति बढ़ाने में सहायक यह एक सरल प्रयोग है।

- तालमखाना, मुलहठी, छोटी इलायची के दाने, पाषाणभेद, वंशलोचन, बीहीदाना, सतगिलोय, शुद्ध शिलाजीत और वंग- भस्म, यह सभी द्रव्य समान भाग लें तथा सभी काष्ठौषधियों का कपड़छन चूर्ण करें और शिलाजीत आदि को पृथक् पृथक्खरल करके उसमें मिलावें। फिर वंग- भस्म डाल कर, सभी द्रव्यों के एकत्रित भार के बराबर मिश्री पीस कर मिला दें।

मात्रा — दो- तीन ग्राम यह चूर्ण गोदुग्ध के साथ सुबह- शाम सेवन करें। दुग्ध के अभाव में ताजा स्वच्छ पानी के साथ ले सकते हैं। इसके सेवन से वीर्य पुष्ट होता है, शीघ्र- पतन, वीर्य का पतलापन, वीर्यस्राव, स्वप्नदोष आदि में सुखद लाभ होता है। शरीर में शक्तिआती है।

- त्रिफला 10 भाग, वंशलोचन 5 भाग, प्रवाल भस्म 5 भाग, कीकर की गोंद भून कर 5 भाग, इलायची छोटी 3 भाग और शीतल चीनी 2 भाग। सबको महीन करके प्रवाल भस्म को अन्त में मिलावें और शीशी में सुरक्षित रखें।

मात्रा — 2 से 3 ग्राम तक शहद के साथ प्रातः- सायं सेवन करें। ऊपर से मिश्रीयुक्त गोदुग्ध पीवें। इससे बल- वीर्य बढ़ता और स्तम्भन- शक्ति का भी विकास होता है।

प्रजनन - संस्थान पर त्रिफला का अद्भुत प्रभाव

त्रिफला अर्थात् हरड़, बहेड़ा, आमला — तीनों का मिश्रण रसायन गुणों से सम्पन्न हो जाता है। आयुर्वेदिक चिकित्सक और औषधि- निर्माता इसके गुणों को देख कर चकित रह गये और इसके परीक्षण तथा प्रयोग में लग गये।

त्रिफला में सम्मिलित प्रथम घटक हरड़ स्वयं भी एक महती औषधि है। प्राणों के लिये संजीवनी और आयुर्वर्धिनी होने के कारण संस्कृत में इसे अमृता नाम दिया गया है। अन्य नाम हरीतकी, रोहिणी, जया, अभया, पथ्या, अव्यथा, शिवा, चेतकी, पूतना, प्रपथ्या आदि नाम भी राजनिघण्टु आदि ग्रन्थों में वर्णित हैं। भावप्रकाश ने इसके पीतोज्जवल वर्ण के कारण ही इसे हेमवती कहतेहै। कहीं- कहीं प्राणदा, जीव्या, जीवन्ती आदि नाम भी देखे जाते हैं।

हिन्दी में इसे सीधे- सीधे रूप में हरड़ या हर्र कहा जाता है। यह महा वनस्पति भारतवर्ष में सर्वत्र उत्पन्न होती है और अत्यधिक खपत के कारण शेष नहीं बचती। इसके वृक्ष का आकार मध्यम होता है। शाखाएँ विभिन्न दिशाओं की ओर जाती दिखाई देती हैं। इसके पत्तों और कलियों में चमक सी होती है। पुष्पगुच्छों में उज्जवलता रहती है। शाखाओं के अन्तिम सिरों पर, गुच्छों के रूप में फल लगते हैं। स्थान- भेद से इसके रंग रूप और आकार में परिवर्तन देखा जाता है।

हरड़ के रंगों में भी परिवर्तन देखा जाता है, कहीं उसके फल पीतवर्ण के होते हैं तो कहीं काले रंग के। इनके आकार भी कहीं गोल होते हैं तो कहीं अण्डाकार होते हैं। कुछ लोगों के मतानुसार अण्डाकार हरड़ें, गोल की अपेक्षा अधिक गुणयुक्त होती हैं। विश्लेषकों के अनुसार मधुरपाकी, हल्की, उष्ण एवं रूक्ष है। दीपन- पाचन करने वाली, तृषा और वमन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
को दूर करने वाली, शूल- अध्मान आदि उदर रोगों को दूर करने वाली, वायु का अनुलोमन करने वाली तथा मल - निस्सारक हैं। गुल्म, तिल्ली, यकृत, रक्ताल्पता, कामला आदि का शमन करने वाली मूत्र शोधक, मूत्र दोष निवारक, कफादि में शामक प्रभाव वाली, श्वास- कास में उपयोगी तथा प्रमेह, क्लैव्य, शुक्रक्षय, शुक्रतारल्य आदि में अद्भुत गुण दिखाती है।

वात रोगों में भी हरड़ अत्यन्त उपयोगी है। कण्डु, कुष्ट, व्रण, ज्वर, शोथ, मूर्च्छा आदि दूर करने वाली, स्मरण- शक्ति बढ़ाने में हितकर, बहुमूत्र, मूत्रकृच्छ में लाभदायक तथा उदर- कृमि नाशक हैं। रसायन गुण सम्पन्न यह महौषधि सर्वांग शोधक, रक्तशोधक, धातु शोधक तथा बाजीकरण की सिद्धि करने वाली अद्वितीय है। अभी तक इसका कोई विकल्प नहीं खोजा जा सका है। मूल तथ्य यह है कि हरड़ प्राणदायिनी और आयुष्य हैं।

अधिक हरड़ सेवन से हानि भी सम्भव

किन्तु यह तथ्य भी ध्यान देने योग्य है कि कुछ रोगों अथवा उनके उपसर्गों में हरड़ का सेवन हानिकारी भी सिद्ध होता है। चिकित्सा शास्त्रियों ने कुछ विकारों में हरड़ का सेवन निषिद्ध बताया है। उनके मत में नवीन ज्वर में हरड़ का किसी भी प्रकार से सेवन हानिप्रद है। अपच, अजीर्ण के रोगी को भी हरड़ का व्यवहार नहीं करना चाहिये। मुख के रोग — शोथ, छाले, गला बैठना आदि में इससे कुछ लाभ नहीं होता वरन् हानि ही सम्भव है। हनुस्तंभ, कण्ठ - स्तम्भ में भी हरड़ के सेवन से हानि हो सकती है।

अधिक स्त्री संसर्ग के कारण दुर्बलता को प्राप्त हुए पुरुष को अकेली हरड़ का सेवन तभी करना चाहिये, जबकि चिकित्सक उन्हें उसके सेवन की अनुमति या निर्देश दे। मार्ग चलने से उत्पन्न थकावट में शरीर अशक्त और मन खिन्न हो जाता है, उस स्थिति में भी हरड़- सेवन का निषेध है। क्षुधा, पिपासा, हृत्कम्प, धड़कन की तीव्रता, पित्ताधिक्य, उपवास- जन्य दौर्बल्य, विष- सेवन जन्य विकृति आदि में हरड़ के सेवन का विपरीत प्रभाव हो सकता है।

किन्तु चरक के मत में हरड़ का सेवन उदर रोगों में अत्यन्त हितकारी है। कुछ चिकित्सकों के मत में हरड़ का प्रयोग अपच, अजीर्ण, वमन आदि में, अन्य औषधि- द्रव्यों के संयोग से किया जा सकता है। जैसे कि वमन में हरड़ का चूर्ण मधु- योग से करना चाहिये। अग्निमान्द्य में हरड़ का चूर्ण गुड़ के साथ लिया जा सकता है। इसी प्रकार हरड़ के अनेक प्रयोग आयुर्वेद में विद्यमान है, उनका वर्णन उन- उन रोगों के प्रकरण में यथा स्थान किया जाता रहेगा।

अब हम मुख्य विषय पर आते हैं। त्रिफला का आदि द्रव्य हरड़ ही है। इसलिये प्रथम हरड़ और उसके उत्तर घटक- बहेड़ा और आमला का पृथक् पृथक् वर्णन करके त्रिफला के योगों पर, जो कि प्रस्तुत विषय प्रमेहादि से सम्बन्धित हैं, विधि एवं घटक आदि का विवरण प्रस्तुत करेंगे।

हरड़, उसके गुण और प्रयोग

आयुर्वेद ने षट् रस को मान्यता दी है — कटु, तिक्त, अम्ल, कषाय, मधुर और लवण। किन्तु हरड़ में लवण रस को छोड़ कर प्रथम पाँच रसों की विद्यमानता है। किसी ने उसकी त्वचा में कटु रस होना कहा है तो किसी ने कषाय रस की उपस्थिति मानी है। अस्थि में तिक्त

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या कषाय, मांस में अम्ल अथवा तिक्त और मज्जा में मधुर रस का होना बताया है। इस प्रकार मत विभेद का कारण मुख्य रूप से देश- भेद हो सकता है।

प्रयोग- भेद से भी हरड़ के गुणों में परिवर्तन देखा जाता है मात्रा- भेद, अनुपान- भेद आदि भी इसके कारण हो सकते हैं। रोगी के बलाबल के अनुसार मात्रा का निर्धारण किया जाता है। अधिकतम मात्रा दो हरड़ों तक की हो सकती है। किन्तु मात्रा का निर्णय रोग, रोगी की प्रकृति और शक्तिके अनुसार ही करना चाहिये

हरड़ अनेक प्रकार की देखी जाती हैं। छोटी- बड़ी के आकार और वर्ण रूप आदि के कारण उनके गुणों में भी भेद पाया जाता है। बड़ी हरड़ में काबुली हरड़, जुलाफा हरड़ नाम से अन्य भेद भी पाये जाते हैं। उनमें भी गुणों का भेद है ही। जुलाफा हरड़ तीव्र दस्तावर होती है, किन्तु कठिन कोष्ठ वाले कुछ लोगों को उससे भी दस्त नहीं हो पाता। इससे स्पष्ट है कि मनुष्य की प्रकृति का अन्तर ही मुख्य रूप से उसका कारण है।

हरड़ का ऊपरी वक्कल अधिक काम में लाया जाता है। गुठली की मिंगी अथवा अन्य अंगों का ग्रहण भी कुछ योगों में किया जाता है। अब यहाँ हरड़ सम्बन्धी कुछ प्रयोगों की चर्चा करेंगे —

- प्रमेह के रोगियों को मलावरोध की शिकायत रहती है, उन्हें पहिले कब्ज दूर करने का उपाय करना चाहिये। इसके लिये काबुली हरड़ लेकर रात्रि के समय जल में भिगोवें और प्रातःकाल भिगोये जाने वाले जल सहित सिल पर पीसें और अपेक्षित मात्रा में सेंधा नमक मिला कर पीवें। इस प्रयोग से कोष्ठ साफ होता है
- अधिक कठिन कोष्ठ वाले व्यक्तिको, जिसे समान्य हरड़ से दस्त न होता हो, वह जलाफा हरड़ एक नग लेकर कूटें और गुलकन्द में मिला कर, ऊपर से गर्म दूध पीवें। प्रातःकाल 1-2 दस्त हो जायें। काबुली हरड़ और जुलाफा (जुलाबा) हरड़ पृथक् पृथक्मानी जाती हैं। जो लोग जड़ी- बूटियाँ बेचते हैं, उनसे या किराना विक्रेताओं के यहाँ से मिल जाती है।
- मल शोधनार्थ हरड़ का सेवन पीस कर करना ही ठीक रहता है। किन्तु दस्त अधिक होने की स्थिति में उसे उष्ण भाप में परिपक्व करके सेवन से अतिसार रुक जाते हैं।
- छोटी हरड़ भी पाचन तन्त्र और मलाशय आदि पर अनुकूल प्रभाव डालती है। उसके सेवन से भी कोष्ठबद्धता दूर होती है तथा प्रजनन संस्थान निर्दोष होता है। इसके लिये छोटी हरड़ और सोंठ समान भाग लेकर उसका चूर्ण बनावें और रात्रि में शयन समय 6 ग्राम की मात्रा में फाँक कर ऊपर से गर्म दूध पीवें। इससे मल का शोधन होगा और शरीर में बल- वीर्य की भी वृद्धि होगी।
- मृदु कोष्ठ वालों को छोटी हरड़ और सोंफ समान भाग लेकर चूर्ण करना चाहिये।

मात्रा — 5- 6 ग्रामफ फाँक कर ऊपर से गर्म दूध पीना चाहिये। इसके सेवन से मूत्र- संस्थान का भी शोधन होता है, जिससे प्रमेह के उपसर्गों का भी शमन होता है

उपर्युक्त सभी योग स्त्रियों के लिये भी हितकर हैं। गर्म दूध के स्थान पर गर्म जल का भी प्रयोग किया जा सकता है। किन्तु गर्म दूध से औषधि का निस्सारण गुण बढ़ जाता है। मृदु कोष्ठ वाले स्त्री- पुरुषों को इन योगों का सेवन मिश्रीयुक्त गर्म दूध से करना अधिक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
अनुकूल रहता है। किसी भी योग को सेवन करने से पूर्व देश- काल का विचार कर लिया जाय और उसके अनुरूप अनुपान निश्चित किया जाय तो औषधि अपना प्रभाव तत्काल दिखाती है। आचार्यों ने हरड़ के सेवन पर ऋतुओं के अनुकूल अनुपात का इस प्रकार निर्देश दिया है —

यदि हरड़ का सेवन वसन्त ऋतु (चैत्र- वैशाख) में करना हो तो मधु के साथ करना चाहिये। इससे वह अधिक गुणकारी हो जाती है। ग्रीष्म ऋतु (ज्येष्ठ- वैशाख) में गुड़ के साथ हरड़ का सेवन अत्यन्त हितकर रहता है। ग्रीष्म में खाया- पिया अन्न कठिनता से पचता है, तथा गुड़ पाचक होता है और वह हरड़ के साथ मिल कर आश्चर्यजनक प्रभाव प्रदर्शित करता है।

वर्षा ऋतु (श्रावण- भादों) में लवण का सेवन अधिक उपयुक्त माना गया है। इसलिये हरड़ के साथ समान भाग सेंधा नमक मिला कर सेवन करना चाहिये। शरद ऋतु (क्वार- कार्तिक) में शर्करा शरीर के सभी अंगों को अनुकूल रहती है, इसलिये इन महीनों में हरड़ का सेवन समान भाग शर्करा के साथ करना चाहिये। शर्करा का परिष्कृत रूप मिश्री है, इसलिये मिश्री का हरड़ के साथ सेवन अधिक लाभकारी रहता है।

हेमन्त ऋतु (मार्गशीर्ष और पौष में) हरड़ के साथ समान भाग सोंठ मिला कर सेवन करना अधिक हितकर है। शिशिर ऋतु (माघ फाल्गुन) में हरड़ चूर्ण के साथ छोटी पीपल मिला कर सेवन करने पर अभीष्ट लाभ की प्राप्ति होती है। इस प्रकार ऋतु अनुसार हरड़ का सेवन करना चाहिये।

चिकित्साविदों के मत में बहेड़ा के सेवन से अनेक प्रकार के लाभ होते हैं। विभिन्न रोगोपसर्गों में यह अद्भुत प्रभाव दिखाता है। मल- शोधन में सहायक है, कृमि नाशक है, पाचनतन्त्र पर अनुकूल प्रभाव डालता है, प्रजनन तन्त्र को भी लाभकारी सिद्ध होता है। स्वर- यन्त्र को कोमल और विकाररहित बनाता है, सिरपीड़ा को दूर करने में सहायक होता है, बालों के वली- पलित विकारों का शमन करता है। श्वास- कास का शमन करता है, नेत्र रोगों में भी हितकर है, शरीर के किसी भाग से होने वाले रक्तस्राव को रोकता है, दुर्बलता को दूर करता है और वृष्यता का प्रर्तन करता है। कुष्ठ रोग तथा अर्शादि में भी हितकर है।

बहेड़े के गुठली की मिंगी भी गुणों में न्यून नहीं है। वह भी मल- शोधक, कृमि- नाशक, दाह- तृषा, वमनादि की शामक तथा शिरोरोग को दूर करने वाली है। नासिका, नेत्रादि के विकारों को दूर करने वाली, अंजन से फूली को काटने वाली तथा वात और कफ के विकारों को दूर करने वाली है। शुक्र - संस्थान के दोषों का शमन करने में भी सहायक होती है। इसके सेवन से प्रमेहादि में लाभ होता है और बल- वीर्य की वृद्धि होती है।

किन्तु कुछ लोगों में यह भ्रान्ति है कि बहेड़े की गुठली की मिंगी विषैली होती है, इसलिये वे गुठली निकाल कर फेंक देते और वक्कल का उपयोग करते हैं। किन्तु कुछ विश्लेषकों और परीक्षकों के मत में उसमें विषैलापन नाममात्र को भी नहीं है, इसलिये इसका उपयोग निःशंक रूप से किया जाता है।

बहेड़े के उपयोगी प्रयोग

बहेड़े का फल रस, रक्त, मेद और माँस के दोषों से उत्पन्न विकारों में लाभकारी पाया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गया है। सर्प, बिच्छू आदि के विषों के शमन में भी हित साधक है। मूत्र रोग और आँतों के रोग भी इसके योगों से दूर होते हैं। शुक्र सम्बन्धी विकारों में भी उपयोगी है। इसके कुछ उपयोगी प्रयोग यहाँ प्रस्तुत किये जाते हैं —

- बहेड़े के फल का गुठली- रहित वक्कल, छोटी दूधी, बबूल के फूल और बड़े गोखरू समान भाग लें और कूट- छान कर, सब बराबर वजन में मिश्री का चूर्ण मिला कर रखें।

मात्रा — 4 से 6 ग्राम तक यह मिश्रण गाय के गर्म दूध के साथ प्रातः- सायं सेवन करना चाहिये। इससे मूत्र एवं शुक्र का शोधन होकर, हृदयोल्लास की प्राप्ति होती है। सभी प्रकार के वीर्य दोषों का इससे शमन होता है। 5- 6 सप्ताह सेवन करने से स्तम्भन में भी अभीष्ट की सिद्धि सम्भव है।

- बहेड़े का पिसा- छना चूर्ण आमले के स्वरस के साथ पान करने पर प्रजनन अंगों पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है, जिससे प्रमेहादि में लाभ होता है। बहेड़े के चूर्ण की मात्रा — 6 से 12 ग्राम तक।
- आमले के स्वरस के अभाव में, उसके स्थान पर कषाय बनाना चाहिये। आमले सूखे रात्रि में भिगो दें और प्रातःकाल मन- छान कर, उस पानी के साथ, बहेड़े का चूर्ण 6 से 12 ग्राम की मात्रा में लेकर, शहद 1 चम्मच डाल कर पीना चाहिये। यह शुक्र- स्राव में उपयोगी है। मूत्र के साथ वीर्य- पात में लाभ करता है। स्वप्नदोषादि उपसर्गों के शमन में भी हितकर है।
- बहेड़े की मिंगी भी मूत्र- संस्थान पर अनुकूल प्रबाव डालती है। इसका चूर्ण 1- 2 ग्राम की मात्रा में शहद के साथ सेवन करना लाभकारी है। इससे मूत्र- नलिका के रोगों में भी लाभ पहुँचता है।
- बहेड़े की मिंगी पीस कर सुरा के साथ सेवन करने से पथरी में लाभ होता है। मूत्र और वीर्य सम्बन्धी अन्य उपसर्गों में भी हितकारी है।

मात्रा — 12 ग्राम चूर्ण अथवा बलाबल अनुसार कुछ अधिक भी दी जा सकती है।

- बहेड़ा, असगन्ध और शतावर समान भाग का चूर्ण, 4 से 10 ग्राम तक की मात्रा में, आमले के स्वरस में शहद मिला कर सेवन करने से शुक्र दोषों में अनुकूल फल दिखाई देता है।
- बहेड़े की मिंगी, छोटी इलायची के बीज, ब्राह्मी बूटी, कौंच के बीज और दालचीनी समान भाग लेकर चूर्ण बनायें। इसकी मात्रा 4 से 8 ग्राम तक मधु- योग से लेनी चाहिये। प्रमेहादि विकारों में इससे लाभ होना सम्भव है। इस विभीतकादि चूर्ण में मुनक्का और मिला लें अथवा चूर्ण 6 ग्राम, मुनक्का 4 नग के साथ सेवन करें। ऊपर से मिश्रीयुक्तदूध पीवें। इससे अनेक गड़बड़ियाँ दूर होती हैं।
- बहेड़े की मिंगी, छोटी इलायची और मिश्री समान भाग लेकर चूर्ण करें और 6- 12 ग्राम तक की मात्रा में बीज निकाले हुए मुनक्कों के साथ सेवन करें। इससे निरर्थक उत्तेजना शान्त होती है। पाचनतन्त्र पर भी अनुकूल प्रभाव होने के कारण वमन या वमनेच्छा में भी अपेक्षित लाभ होता है।
- बहेड़े का मुरब्बा, जल से धोकर, शहद के साथ सेवन करना भी धातु- दोषों का शमन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

करता है। ऊपर से मिश्रीयुक्त दूध का सेवन किया जा सकता है।

Digitized by eGangotri

प्रमेहोपचार में सर्वसाधक आमला

त्रिफला का तीसरा घटक आमला अत्यधिक महत्वपूर्ण वनस्पति है। इसके द्वारा प्रमेह, दौर्बल्य, क्लीवत्व आदि का तो शमन होता ही है, शरीर के अन्यान्य अवयवों के दोनों पर भी शामक प्रभाव डालता है। इसका सेवन अकेली औषधि के रूप में भी किया जाता है और अन्य औषधि- द्रव्यों के साथ भी। औषधि कर्म के अतिरिक्त इसका वृक्ष धार्मिक आस्थाओं से भी जुड़ा है तथा भारतीय संस्कृति में पौराणिक आस्था वाले अनेक नर- नारी का पूजा भी करते हैं।

आमला का वृक्ष अधिक ऊँचा नहीं जाता, शाखाओं पर दो- तीन मीटर का ही देखा जाता है। पत्ते कुछ हरे रंग के, शाखाओं पर कुछ समीप- समीप रहते हैं। फल गोल- गोल होते हैं, मोटाई दो- ढाई सेंटीमीटर से चार- पाँच सेंटीमीटर तक देखी जाती है। वस्तुतः आमला भारतवर्ष में एक प्रसिद्ध वनस्पति एवं फल है, इसका मुरब्बा भी बनता है। जो अधिक उपयुक्त, स्वादिष्ट और पौष्टिक होता है। आयुर्वेद की प्रसिद्ध महौषधि च्यवनप्राश का निर्माण तो आमले से ही होता है।

आमले की उत्पत्ति न्यूनाधिक मात्रा में भारतवर्ष में सर्वत्र होती है। भारत के पड़ौसी देश श्रीलंका, वर्मा तथा चीन में भी होता है। हिमालय में तो पहाड़ पर भी मिल जाता है। शुष्क प्रदेशों में इसकी उत्पत्ति प्रायः नहीं होती। कच्चे आमले के फलों का स्वाद कषैला होता है, जो कि सब्जी बनाने के काम में लिया जाता है। किन्तु पके हुए आमले में कसैलेपन की बहुत कमी हो जाती है। उस समय इसमें स्वल्प मात्रा में टैनिक एसिड, गैलिक एसिड, सेलुलोज तथा खनिज पदार्थ भी उपस्थित रहते हैं।

संस्कृत में आमला को आमलकी, धात्री, धात्रिका, धात्रेयी या श्रीफल अथवा अमृतफला कहते हैं। अमृता, शिवा, वयस्था, वृष्या, शिवा, शीतफला, धात्रीफला आदि नामों से भी कहा जाता है। और भी कुछ नाम मिलते हैं, उन सबका वर्णन प्रयोजनीय नहीं है।

हिन्दी में यह आमला या आँवला के नाम से प्रसिद्ध है। तमिल में इसे नेलि, सिंहली में नेल्लि और अँग्रेजी में इंडियन कूजबेरी कहते हैं। लैटिन में इसका नाम एम्ब्लिका औफिसिनालिस है, जो आमला का बोधक और औषधियों में प्रयोगार्थ उपयोगी होने का परिचायक है।

आमला हरा और सूखा, दोनों प्रकार का प्रयोग में लाया जाता है। हरा आमला शीतल, मधुर, तृषा और दाह का शामक, वमनेच्छा और वमन का प्रतिरोधक, स्वेदल, श्वास- कास नाशक, ज्वर नाशक, पित्त नाशक तथा रक्तपित्त और कफनाशक भी है। नेत्र ज्योति वर्धक, वली- पलित को दूर करने वाला वृष्य तथा बाजीकरण में सहायक हैं। सूखने पर भी इसके अधिकांश गुणों हास नहीं होता। अस्थिभंग में भी शीघ्र लाभकारी होता है।

शुष्क आमला पित्त और कफ नाशक है, किन्तु वात- विकारों के शमन में भी सहायक होता है, इसलिये त्रिदोष नाशक भी माना जाता है। इसमें तिक्त, अम्ल, कटु, कषाय और मधुर रस पाये जाते हैं। इसके फल और बीजों में भी गुणों की समानता है।

आयुर्वेदज्ञों ने आमले का प्रयोग त्रिफला में तो किया ही है, स्वतन्त्र रूप से भी अनेक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

रोगों में किया है। ऐसे कुछ योगों का वर्णन यहाँ किया जा रहा है, जो कि प्रमेहादि रोगों और उनके उपसर्गों को दूर करने में हितकारी सिद्ध हुए हैं।

आमले के लाभकारी योग

- आमले सूखे हुए लेकर कूट- कपड़छन करें। यह चूर्ण मिश्री समान भाग मिला कर 10- 12 ग्राम की मात्रा में प्रातः- सायं अथवा रात्रि में शयन समय लेने से मूत्र- संस्थान एवं सभी प्रजनन अंगों पर धीरे- धीरे अपना प्रभाव करता है। इससे कब्ज नहीं रहता तथा शुक्र में उष्णता का शमन होकर शरीर में नवीन शक्ति का संचार होता है। स्वप्न प्रमेह में भी हितकर है।
- आमले के चूर्ण में आमले के ही स्वरस की सात भावनाएँ दें। इसका सेवन 2- 3 ग्राम की मात्रा में दूध- मिश्री के साथ करना चाहिये। वीर्य- सम्बन्धी अनेक दोषों को दूर करता है। स्वप्नदोषादि में भी अधिक उपयोगी है।
- आमला और असगन्ध समान भाग लेकर महीन चूर्ण कर लें। रात्रि शयन समय 5- 6 ग्राम की मात्रा में सेवन करें और ऊपर से दूध पी लें। इसका 30- 40 दिनों तक सेवन करते रहना सब प्रकार के प्रमेह एवं वातज प्रमेह में विशेष रूप से गुणकारी होता है। वात- विकार के कारण जोड़ों में दर्द, शोथ आदि में भी हितकारी है।
- आमला और शतावर की फंकी भी प्रमेहजन्य दोषों में लाभ करती है। इसे भी 5- 6 ग्राम की मात्रा में लेना चाहिये।
- आमला चूर्ण और हरिद्रा चूर्ण, आमले के स्वरस में खरल कर सेवन करने से प्रमेहजन्य प्रदाह एवं शुक्रपातादि विकार दूर होते हैं। इसकी मात्रा लगभग 1 ग्राम या कुछ अधिक हो सकती है। इसका सेवन प्रातः- सायं दोनों बार शहद मिलाकर करना चाहिये।
- केवल आमलों का स्वरस शहद मिला कर सेवन करें तो भी सभी प्रकार के प्रमेह अथवा उनके विकार दूर हो जाते हैं। विश्वास पूर्वक नियमित रूप से इसका सेवन करना चाहिये। ऐसे योग स्थायी लाभ देने वाले होते हैं, इसलिये धैर्यपूर्वक सेवन करते रहें। कहावत है कि 'हथेली पर सरसों नहीं जमती', उसके अनुसार औषधि- सेवन कुछ महीनों तक निरन्तर करना चाहिये।
- आमलों के स्वरस में 2 ग्राम हल्दी का चूर्ण डाल कर और शहद मिला कर पीने से भी प्रमेह में लाभ होता है
- शुष्क आमले का चूर्ण 4 ग्राम, हल्दी का चूर्ण 2 ग्राम लेकर शहद में मिला कर सेवन करें।
- आमलों का पिसा- छना चूर्ण 600 ग्राम लेकर उसमें निरन्तर 3 सप्ताह तक आमला- स्वरस की 21 भावनाएँ दें। फिर शहद 1 किलोग्राम और गोघृत 500 ग्राम, शर्करा 150 ग्राम और छोटी पीपल का चूर्ण 75 ग्राम लेकर, भावना दिये हुए चूर्ण में मिलायें और घी से चिकने मिट्टी के पात्र में रख कर, पात्र का मुख बन्द करके राख के ढेर में रखें। पूरी वर्षा ऋतु में रख कर शरद ऋतु के आरम्भ में निकालें, यह आमलकी- महारसायन सब प्रकार के प्रमेह, धातु दौर्बल्य, नपुंसकता आदि को दूर करता है। मनुष्य सदा युवा बना रहता है और उसकी आयु बढ़ जाती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मात्रा — 6 से 12 ग्राम प्रातः- सायं शहद के साथ लेनी चाहिये। आवश्यक होने पर अधिक मात्रा भी ली जा सकती है।

- आमलों का पिसा- छना चूर्ण 100 ग्राम, मुलहठी का भी कपड़छन चूर्ण 25 ग्राम लेकर एकत्र करें और उसे 50 ग्राम लौह भस्म के साथ मिलावें और आमला- स्वरस की सात भावनाएँ देकर रखें। इसका नाम धात्री- लौह है। इसकी मात्रा 350 से 750 मिलीग्राम तक है, जो कि असमान भाग गोघृत और मधु के साथ सेवन करनी चाहिये। इसके सेवन से अपच, अजीर्ण, पित्त, रक्तपित्त तथा पित्तजन्य प्रमेह के उपसर्गों में लाभ सम्भव है।
- आमला, हल्दी, काली मिर्च, छोटी पीपल, सोंठ और लौह भस्म समान भाग लेकर काष्ठौषधियों को कूट- छान लें और फिर उसमें लौह भस्म मिला कर एकजीव कर लें। मात्रा 500 मिलीग्राम से 1 ग्राम में असमान भाग गोघृत, मधु और शर्करा मिला कर, उसके साथ प्रातः- सायं, दोनों समय सेवन करें। इसके सेवन से पाण्डु, प्रमेह, रक्ताल्पता आदि रोगों में शीघ्र लाभ होता है तथा शरीर में बल- वीर्य की वृद्धि और स्थैर्य की प्राप्ति होती है।
- आमलों के मुरब्बों की चाशनी में आमले के सभी गुण आ जाते हैं। उसके साथ शतावर, असगन्ध, कौंच के बीज और गुलाब के फूल के समान भाग लेकर, उनका कपड़छन किया हुआ चूर्ण मिला कर प्रातः- सायं दोनों समय सेवन करना चाहिये। चूर्ण की **मात्रा** — 1-2 ग्राम तक मुरब्बे की चाशनी में मिला कर चाटें। इससे सब प्रकार के प्रमेहजन्य उपसर्ग दूर होते हैं।

प्रमेह में आमले का हलुआ

आमलों का चूर्ण, गेहूँ का सत्तू और चूर्णित बबूल का गोंद 10- 10 ग्राम, शर्करा 30 ग्राम, गोघृत 40 ग्राम। प्रथम सत्तू को घृत के साथ भूनें और उसमें आमले और गोंद के चूर्ण को डालें तथा शर्करा में पानी मिला कर अग्नि पर चढ़ा कर हलुआ के समान पकावें। प्रातःकाल नाश्ते के रूप में आमले के इस हलुआ का सेवन 20- 25 ग्राम तक की मात्रा में करना चाहिये। इसके सेवन से बल- वीर्य बढ़ता और बाजीकरण की सिद्धि होती है।

प्रमेह में पुष्टिवर्धक आमला पाक

आमलों का कुटा- छना चूर्ण 250 ग्राम को 3 लीटर गोदुग्ध में डाल कर अग्नि पर पकावें, जिससे कि खोआ बन जाय। फिर मिश्री 2 किलोग्राम लेकर उसकी चाशनी बनावें और खोए में मिला दें। फिर छोटी पीपल, श्वेत जीरा और सोंठ 25- 25 ग्राम, छोटी इलायची के बीज, दालचीनी, तेजपात, धनिया और गोल मिर्च 12- 12 ग्राम लेकर कूट- कपड़छन करें तथा यह चूर्ण भी उसी खोआ और चाशनी के मिश्रण में मिला कर उतार लें।

मात्रा — 20- 25 ग्राम पाक ग्रीष्म ऋतु में नित्य प्रातःकाल सेवन करना चाहिये। यदि शीत ऋतु में सेवन करना हो तो इसमें 2 ग्राम केशर मिलानी चाहिये। यह पाक पौष्टिक, बल- वीर्य वर्धक तथा प्रमेह के रोगियों को हितकर है। नित्य सेवन करने से शीघ्रपतन, शुक्र - तारल्य, समागम में अरुचि आदि को दूर करता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पुरुष रोगों में प्रसिद्ध च्यवनप्राशावलेह

अरणी, खम्भारी, पाटला, बिल्वफल, श्योनाक, शालपर्णी, पृश्निपर्णी, माषापर्णी, मुद्गपर्णी, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, काकड़ासिंगी, बला की जड़, जीवन्ती, भुई आमला, मुनक्का, अगर, पोहकर मूल, हरड़, कचूर, नागरमोथा, ऋषभक, जीवक, ऋद्धि, गिलोय, मेदा, महामेदा, पुनर्नवा, लाल चन्दन, छोटी इलायची, नील कमल, वासामूल, काकोली, काकनासा और विदारीकन्द 40- 40 ग्राम लेकर, कूट लें।

पके हुए आमले स्वच्छ, मोटे से छाँट कर 250 ग्राम लो और इन्हें पोटली में बाँध कर 20 लीटर पानी में डाल कर अग्नि में रख दो। जब पानी क्वाथ का रूप ले ले अर्थात् जल कर ढाई लीटर शेष रह जाय, तब आमलों की पोटली को उससे निकाल कर, आमलों की गुठली दूर कर दें तथा आमलों को पीस कर लुगदी बनाओ और उस लुगदी को 1 किलोग्राम गोघृत के साथ भून लो और क्वाथ के पानी में ढाई किलोग्राम मिश्री डाल कर चाशनी पकाओ और फिर उसमें आमलों की भुनी हुई लुगदी मिला कर मन्द अग्नि पर पकाओ बीच- बीच में चाशनी पर आये हुए मैल को बाहर निकाल दें। जब चाटने योग्य हो जाय तब नीचे उतार कर ठण्डा करो। अब इसमें 250 ग्राम शहद मिलाओ तथा वंशलोचन 50 ग्राम, छोटी इलायची, छोटी पीपल, तेजपात 25- 25 ग्राम, कूट- छान कर उसमें डाल कर ठीक प्रकार से चलाओ और ठण्डा होने पर सुरक्षित रखो। आयुर्वेद के इस प्रसिद्ध च्यवनप्राश रूप अमृत का नुस्खा, अल्प हेरफेर के साथ सभी चिकित्सा शास्त्रों में वर्णित है। इसकी सेवनीय मात्रा ग्रन्थों में अधिक लिखी है, किन्तु मनुष्य की वर्तमान प्रकृति और स्थिति को देखते हुए 6 ग्राम से 12 ग्राम तक लेना पर्याप्त है। इसे खाकर ऊपर से मिश्रीयुक्त गर्म दूध पी सकते हैं।

यह औषधि अत्यन्त शक्तिदायक और अनेक रोगों की नाशक है। इसके सेवन से शरीर में बल वीर्य की वृद्धि होती है। मस्तिष्क स्वच्छ होता है, उसमें मेधा, बुद्धि, स्मृति आदि की वृद्धि तथा रूप- सौन्दर्य निखरने लगता है। श्वास, कास, स्वरभंग, वातरक्त, हृद्रोग, फुफ्फुसादि के विकार तथा अनेक रोग- जन्य उपसर्गों का शमन होता है। इसके सेवन से वृद्ध च्यवन ऋषि युवावस्था से सम्पन्न हो गये थे, इसीलिये इसका नाम च्यवनप्राश हुआ। वस्तुतः दीर्घकाल तक सेवन करने पर यह अपना अद्भुत प्रभाव दिखाने वाला श्रेष्ठतम अवलेह है। किन्तु शास्त्रीय ढंग पर इसका निर्माण किया जाय और सभी शास्त्रोक्त औषधियाँ डाली जायें, तभी इसके सेवन से अभीष्ट लाभ उठाया जा सकता है।

त्रिफला के विभिन्न हितकारी योग

- त्रिफला (हरड़, बहेड़ा, आमला) का मिश्रित चूर्ण शुक्र- संस्थान पर अनुकूल प्रभाव डालता है। उसे 3 ग्राम से 12 ग्राम तक की मात्रा में फाँक कर, ऊपर से दूध पीना चाहिये। इसका सेवन निरन्तर 2- 3 मास करें। अधिक करने से अधिक हित होगा। इससे शुक्र- शोधन होगा और शारीरिक दुर्बलता दूर होकर बल- वीर्य की वृद्धि होगी। सब प्रकार के प्रमेह में हितकर है।
- त्रिफला चूर्ण का सेवन मधु के साथ करना भी बहुत लाभकारी और अनुकूल रह सकता है। चूर्ण की मात्रा वही 12 ग्राम तक, शहद इतना कि उसमें चूर्ण ठीक प्रकार से मिल जाय, और वह चाटने योग्य हो जाय। ऊपर से मिश्रीयुक्त गोदुग्ध अनुपान रूप में पीना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized By Siddhanta eGangotri

उचित रहता है। अधिक शक्तिवृद्धि के लिये दूध में थोड़ी- सी केसर भी मिलाई जा सकती है। उष्ण प्रकृति के व्यक्तियों को त्रिफला के तीनों घटक समान भाग रहने पर गर्मी करते प्रतीत होते हैं। ऐसे व्यक्तियों के सेवनार्थ घटकों की मात्रा में परिवर्तन करना चाहिये। अर्थात् हरड़ 1 भाग, बहेड़ा 2 भाग और आमला 4 भाग लेना चाहिये। आमला का आधिक्य उसकी उष्णता को कम कर देगा। इसलिये यह चूर्ण उष्ण प्रकृति वालों के लिये भी अनुकूल गुणवाला बन जायेगा। इससे पित्तजन्य विकारों का शमन भी होगा तथा स्वप्नदोष का भी निवारण हो सकेगा।

- त्रिफला चूर्ण 40 ग्राम में 6 ग्राम शिलाजीत डाल कर खरल करें और फिर इसमें छोटी मधुमक्षिका का शहद 40 ग्राम लेकर ठीक प्रकार से मिलावें।

मात्रा — 1 से 3 चम्मच तक प्रातः- सायं दूध के साथ सेवन करना चाहिये। इससे प्रमेह, धातुक्षय, स्वप्नदोषादि में लाभ होता है। धैर्यपूर्वक औषधि का सेवन न्यूनतम 3- 4 मास तो करना ही चाहिये, जिससे कि शुक्र- संस्थान पर स्थायी रूप से प्रभाव पड़ सके।

- हरड़, बहेड़ा, आमला, शतावर, नागकेसर, श्वेतमूसली, कालीमूसली, बिदारीकन्द, गिलोय और सालब मिश्री समान भाग लेकर, कूटें और कपड़छन करके सुरक्षित रखें।

मात्रा — 4 से 6 ग्राम तक यह औषधि- चूर्ण उतने ही गोघृत में मिलावें तथा घृत से आधी मात्रा में मधु मिला कर प्रातः- सायं नित्यप्रति 3- 4 सप्ताह तो अवश्य ही लें। इससे बीसों प्रकार के प्रमेह और उनके उपसर्ग दूर होते हैं। शरीर की दुर्बलता को नष्ट करने में यह योग अत्यन्त प्रभावशाली है।

- त्रिफला, इन्द्रायण- मूल, नागरमोथा और दारुहल्दी 5- 5 ग्राम लेकर उसका क्वाथ करें और फिर उसमें जल के साथ पिसी हुई 1 ग्राम हल्दी का कल्क भी कुछ गर्म करके मिला दें तथा अपेक्षित मात्रा में शहद मिला कर प्रातःकाल सेवन करावें। इससे प्रमेह रोग में सहज रूप से लाभ होने लगता है।

- हरड़, बहेड़ा, आमला, सहजने की जड़ की छाल, नागरमोथा, देवदारू, शतावर और गिलोय 4- 4 ग्राम, वायविडंग और छोटी पीपल 1- 1 ग्राम लेकर चौगुने पानी के साथ क्वाथ करें तथा आधा शेष रहने पर उतार कर ठण्डा करें और शहद मिला कर प्रातःकाल सेवन करें। वीर्य- सम्बन्धी सभी दोषों में लाभकारी है। इससे उदरकृमि दूर होने में भी सहायता मिलती है।

- त्रिफला- चूर्ण (हरड़, बहेड़ा, आमला, समान भाग का), हल्दी और सोना गेरू 10-10 ग्राम, भुनी हुई श्वेत फिटकरी 15 ग्राम लेकर सबको कूट- छान कर रखें।

मात्रा — 2 ग्राम से 5 ग्राम तक समान भाग मिश्री का चूर्ण मिला कर प्रातः- सायं पानी के साथ लेना चाहिये। इससे शुक्र- तारल्य, शुक्रक्षय, स्वप्नदोष आदि विकारों का शमन होता है। अम्लपित्त, जी घबराना, चक्कर आना जैसे विकारों में भी हितकर है।

- हरड़, बहेड़ा, आमला, शिलाजीत, लौहभस्म और वंग भस्म समान भाग लेकर पीस- छान कर एकत्र करें और शहद के साथ खरल करके आधा ग्राम प्रमाण की गोलियाँ बना कर सुरक्षित रखें।

मात्रा — 1 से 2 गोली तक मिश्रीयुक्तदूध के साथ प्रातः- सायं दोनों समय सेवन करनी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चाहिये। इससे बीसों प्रकार के प्रमेह दूर होते हैं तथा शरीर में बल- वीर्य की वृद्धि होती है। शुक्रक्षय, स्वप्नदोष आदि में भी यह अधिक लाभकारी है। चार- छः महीने सेवन करते रहने से ओज की अत्यन्त वृद्धि सम्भव है।

- त्रिफला चूर्ण 100 ग्राम, गाजर शुष्क का चूर्ण 50 ग्राम और शतावर 25 ग्राम लेकर, सबको खरल करके घृत के चिकने पात्र में रखें।

मात्रा — 6 से 12 ग्राम तक शहद के साथ सेवन करने से शीघ्र पतन, प्रमेह, स्वप्नदोष आदि में आशातीत लाभ होता है।

- प्रमेह के रोगी को मलावरोध की शिकायत हो तथा इस कारण दवाओं के सेवन से लाभ न हो तो भी त्रिफला का चूर्ण 3- 4 ग्राम की मात्रा में गर्म पानी के साथ सेवन करना चाहिये। इससे कब्ज भी दूर होंगा और वीर्यदोष में भी लाभ होगा।

धातुक्षयादि पर त्रिफलादि अवलेह

- समान भाग हरड़, बहेड़ा, आमला से निर्मित त्रिफला चूर्ण 400 ग्राम लें। फिर चित्रकमूल, तज, नागरमोथा, छोटी इलायची के बीज और शिलाजीत 5- 5 ग्राम, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपल और धनियाँ 10- 10 ग्राम तथा मुनक्का, किशमिश और बादाम की गिरी 20- 20 ग्राम लेकर, इन सबको महीन चूर्ण करके मिला दें। अब मिश्री 400 ग्राम की चाशनी करके उक्त चूर्ण उसमें डालें तथा सुगन्ध के लिये 2 ग्राम केशर पीस कर डाल दें। इस प्रकार इसकी चाशनी चाटने योग्य अवलेह के समान रहनी चाहिये।

मात्रा — 6 से 12 ग्राम तक यह अवलेह प्रातः- सायं गोदुग्ध के साथ सेवन करना चाहिये। इससे प्रमेह के सभी उपसर्ग धातुक्षय, शुक्रक्षरण, शुक्र- तारल्य, स्वप्नमेह आदि में अत्यन्त लाभ होता है। शरीर में शक्ति का संचार होता और स्तम्भन शक्ति बढ़ती है। प्रमेह के रोगी को प्रायः कोष्ठबद्धता होती है, किन्तु इस योग के सेवन से मल का निःसारण होता रहता है। नेत्र- रोगों में भी इस योग से लाभ उठाया जा सकता है, क्योंकि यह ज्योति को बढ़ाता है।

बल- वीर्यवर्धक त्रिफलादि घृत

- त्रिफला को चौगुने पानी में डाल कर क्वाथ करें और उतार कर छान लें। इसमें त्रिफला की मात्रा 100 ग्राम होनी चाहिये। अब क्वाथ की मात्रा के बराबर ही आमला स्वरस, गिलोय स्वरस, शतावर स्वरस, वासा पत्र- पुष्प का स्वरस, भृंगराज स्वरस, बकरी का दूध और घृत मिला कर, उसमें त्रिफला, छोटी पीपल, छोटी कटहरी कंटकारी, नीलोफर, क्षीर काकोली, मुनक्का और मिश्री 12- 12 ग्राम लेकर, पानी में पीसें और सबको अग्नि पर चढ़ायें और पानी जलने पर घृत मात्र शेष रहने पर उतार कर छानें और सुरक्षित रखें। तात्पर्य यह है कि घृत- पाक विधि से घृत सिद्ध होने पर काम में लायें।

मात्रा — 3 से 8 ग्राम तक यह घृत समान भाग मिश्रीचूर्ण मिला कर प्रातः- सायं सेवन करना चाहिये। इच्छा हो तो ऊपर से गाय का गर्म दूध पी लें। इसके सेवन से सब प्रकार की शारीरिक दुर्बलता दूर होकर, बल- वीर्य की वृद्धि होती है। दूषित रक्त के रोगी सेवन करें तो रक्त दोष दूर हो जाते हैं। नेत्र रोगों में भी औषधि उपयोगी है, आँखों में अँधेरा, दर्द, लालिमा आदि का निवारण होता है। अधिक दिनों तक निरन्तर प्रयोग करते रहने से रात्र्यान्ध

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
(रतौंधी) में लाभ होता है। नेत्र की ज्योति बढ़ती है। सिर दर्द में भी हितकर है।

त्रिफला के शुक्रदोष नाशक सरल योग

- त्रिफला, अमलताश और मुनक्का का विधिपूर्वक क्वाथ बना लें और ठण्डा होने पर मधु- मिश्रित कर प्रातःकाल नित्यप्रति सेवन करना चाहिये। इसके सेवन से लालमेह अथवा उसके उपसर्गों में लाभ होता है। इसमें त्रिफला और अमलतास की मात्रा 10-10 ग्राम तक तथा मुनक्काएँ 4-5 ली जा सकती हैं।
- रात्रि के समय त्रिफला का क्वाथ बना कर रखें और प्रातःकाल मिश्री का चूर्ण मिला कर सेवन करें। इससे स्वप्नदोष तथा शीघ्रपतन आदि में आशातीत लाभ देखा गया है।
- त्रिफला और जौ समान भाग लेकर रात्रि में, जल के साथ भिगोवें प्रातःकाल उसका कषाय छान कर शहद के साथ सेवन करें। यह भी स्वप्नदोष में उपयोगी है।
- त्रिफला, नागरमोथा और दारुहल्दी समान भाग लेकर क्वाथ बनावें और छान कर, मधु मिला कर सेवन करें। इससे कफजन्य प्रमेह और उसके विभिन्न लक्षणों में लाभ होता है।
- त्रिफला का हिम क्षार प्रमेह में लाभकारी है। इसमें किंचित् शहद मिलाया जा सकता है।
- त्रिफला चूर्ण 5- 6 ग्राम गोघृत के साथ सेवन करें। इससे बल वीर्य की वृद्धि होती है तथा रक्त विकार भी दूर होते हैं।
- त्रिफला 2 किलोग्राम को जौकुट करके 15 लीटर पानी में रात्रि में भिगो दें तथा प्रातःकाल भवका में डाल कर अर्क खींच लें। इसका सेवन प्रातः- सायं करना चाहिये। इस अर्क में ही घोट कर स्वल्प मात्रा में केशर मिला लें। गर्मी की ऋतु में सेवन करना हो तो अर्क खींचते समय चौथाई भाग गुलाब के पुष्प भी डाल लेने चाहिये। यह सुगन्धित अर्क बिना किसी अनुपान से लिया जा सकता है। अर्क की मात्रा 20 मिलीलीटर के लगभग हो सकती है। यदि चाहें तो बर्फ डाल कर भी पी सकते हैं। इसके निरन्तर सेवन से सभी प्रकार के प्रमेहजन्य उपसर्ग दूर होते हैं। स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, मधुमेह, आलस्य, नेत्रज्योति की कमी, पाण्डु आदि में भी उपयोगी है। वस्तुतः इसके प्रभाव से रस- रक्तादि धातुओं का शोधन होकर शरीर की कान्ति बढ़ती है। रक्त विकारों के शमन में भी सहायक है।

हरड़, बहेड़ा, आमला त्रिफला, का प्रयोग सभी प्रकार के प्रमेह दूर करने में उपयोगी है। इन तीनों वस्तुओं को समान भाग लेकर बनाये गये त्रिफला चूर्ण से कब्ज भी दूर हो जाता है और अधिक कफांशों का भी शमन होता है। किन्तु पित्ताधिक्य वाले प्रमेह रोगियों के लिये हरड़ 1 भाग, बहेड़ा 2 भाग और आमला 3 भाग लेना उपयुक्त रहता है। इससे नेत्र- विकारों में भी लाभ होता है और शीत वीर्य होने के कारण उष्णता का भी शमन होता है।

त्रिफला चूर्ण की मात्रा सामान्यतः 3 से 6 ग्राम तक शहद के साथ लेनी चाहिये। रोगी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
के लक्षणानुसार इसमें मिश्री भी मिलाई जा सकती है। ऊपर से दूध पिलायें तो गुण में वृद्धि हो जाती है। प्रातः- सायं दो बार सेवन करायें।

त्रिफला का काढ़ा बना कर, मधु मिश्रित कर, सेवन करने से भी प्रमेह में अधिक लाभ होता है। क्वाथ के लिये त्रिफला चूर्ण 10 ग्राम से 20 ग्राम तक लिया जा सकता है। एक पाव ताजा पानी में औंटा कर छान लें और उसमें 3 ग्राम शहद मिला कर सेवन करें। यह काढ़ा अन्य अनेक उपसर्गों में भी लाभप्रद है।

त्रिफला का एक उत्तम योग यहाँ प्रस्तुत करते हैं, जो कि प्रमेह के सब भेदों और उपसर्गों में अधिक हितकर है। इसमें त्रिफला के तीनों द्रव्य हरड़, बहेड़ा, आमला मिला कर 6 ग्राम और उतनी ही हल्दी तथा दारुहल्दी लेनी चाहिये। इसे जौकुट करके 100 मिली लीटर स्वच्छ जल के साथ रात के समय ओस में रखें और प्रातःकाल मल- छान कर उसमें मधु 2 ग्राम मिला कर पीवें। इस प्रकार 2-3 दिन के प्रयोग में शुक्र का शोधन होगा और कब्ज रहता हो तो वह भी नहीं रहेगा।

हरड़, बहेड़ा, आमला और हल्दी 4-4 ग्राम लेकर रात्रि में जल के साथ भिगोवें और प्रातःकाल मल- छान कर, उसमें 10-12 ग्राम मधु मिला कर सेवन करें। दो सप्ताह के प्रयोग में ही लाभ प्रतीत होने लगता है।

इन दोनों योगों के सेवन- काल में रात्रि के समय असगन्ध के 2 ग्राम चूर्ण में, उतना ही शुष्क आमले का चूर्ण मिला कर दूध के साथ सेवन करना चाहिये। इन योगों से वीर्यशोधन के साथ ही बल- वीर्य की वृद्धि होती है और अक्षमता दूर हो जाती है।

विभिन्न वनस्पतियों का प्रजनन- संस्थान पर प्रभाव

वैसे तो सभी वनस्पतियाँ किसी न किसी रूप में प्रजनन- संस्थान पर भी प्रभाव डालती हैं, किन्तु प्रश्न विशेष प्रभाव का है, और वह प्रभाव औषधि सेवन के पश्चात् प्रत्यक्ष दिखाई देना चाहिये। आयुर्वेद शास्त्र में ऐसी अनेक वनस्पतियों का वर्णन मिलता है, जो दुर्बलता नाशक, पौष्टिक और उत्तेजक सिद्ध हुई हैं। इन वनस्पतियों में भाँग, धतूरा, गोखरू, तुलसी, अंजीर, गिलोय, अश्वगन्ध, विधायरा, शतावर, छुहारा आदि के औषधियोग तैयार किये जाते हैं, जिनके सेवन से बहुत बार आशा से भी अधिक लाभ होता देखा गया है।

भाँग और उसके प्रयोग

कामोत्तेजना की वृद्धि में आयुर्वेदिक नुस्खों में भाँग का प्रयोग भी प्रायः किया जाता रहा है। कुछ अन्य वृष्य औषधि- द्रव्यों के साथ मिला कर योग तैयार किये जाते हैं। यहाँ भाँग के कुछ लाभकारी प्रयोग प्रस्तुत हैं —

- भाँग को धोकर सुखावें और उसका महीन चूर्ण कर लें, इसमें वंग- भस्म डाल कर शहद के साथ सेवन करें और ऊपर से गो- दुग्ध पी लें। इससे वृष्यता एवं स्तम्भन होता है।
- भाँग के चूर्ण में अभ्रक- भस्म का सेवन भी पुष्टिकर तथा स्तम्भक होता है।
- भाँग का स्वरस और स्वर्णभस्म मिश्रित योग बल- वीर्य की वृद्धि में अत्यन्त सहायक है।
- भाँग, बड़ी इलायची के बीज और छोटी पीपल का महीन चूर्ण मिश्रित सेवन करने से इच्छित लाभ सम्भव है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- गर्मियों में भाँग मिश्रित ठण्डाई बल- वीर्य वृद्धि में सहायक होती है। उसे बादाम की गिरी, काली मिर्च, गुलाब के फूल अथवा गुलकन्द डाल कर, घोट- छान कर पीना लाभकारी होता है

भाँग का बलवीर्यवर्द्धक अमीरी योग

भाँग को धो- सुखा कर महीन चूर्ण करें और 40 ग्राम की मात्रा में लें तथा वंशलोचन पीस कर 10 ग्राम मिलावें। अब इसमें लौह भस्म, चाँदी भस्म, स्वर्ण भस्म, अभ्रक भस्म, शतपुटी स्वर्ण माक्षिक भस्म, शुद्ध पारद और शुद्ध गन्धक 2-2 ग्राम डालकर खरल करें और भाँग के काढ़े अथवा स्वरस के साथ घोटते- घोटते चने के प्रमाण की गोलियाँ बना कर सुखायें और सुरक्षित रखें।

मात्रा — से 3 गोली तक रोगी का बलाबल देख कर सेवन करायें। ऊपर से मिश्रीयुक्त दूध पिलावें। यह प्रयोग 40 दिन करें तो बल- वीर्य की अत्यन्त वृद्धि होकर शरीर हृष्ट- पुष्ट हो जता है।

पौष्टिक विजयादि पाक

धुली भुनी भाँग 30 ग्राम, असगन्ध, शतावर, श्वेत मूसली, कौंच के बीज, बीजबन्द, गोखरू, तालमखाना, सालम मिश्री, शकाकुल मिश्री, बहमन लाल, बहमन श्वेत, मुलहठी, कीकर का गोंद, मीठा कूट, जायफल, दालचीनी,अकरकरा, छोटी इलायची और लौंग 10-10 ग्राम, बादाम की मिंगी, बिनौले की गिरी और उड़द की दाल धुली हुई 40-40 ग्राम, काले तिल 20 ग्राम, तथा केशर 5 ग्राम। सबको यथा विधि कूट- पीस लें और मिश्री या खाँड की चाशनी करके, उसके साथ पाक बना लें।

मात्रा — 20-25 ग्राम, मिश्रीयुक्त दूध के साथ सेवन करें। यह अत्यन्त बल- वीर्य वर्द्धक, स्तम्भ तथा कामोद्दीपक प्रयोग है। इसके सेवन करने से नपुंसत्व दूर होता है

गोखरू के वीर्यवर्धक प्रयोग

गोखरू का भी बहुत हितकर प्रभाव देखा गया है। इससे नपुंसकता, शुक्रमेह, स्वप्नदोष, दौर्बल्य आदि में आशातीत लाभ होता है, उसके कुछ लाभकारी प्रयोग यहाँ दिये जा रहे हैं

- बहेड़ा गोखरू लेकर कपड़छन चूर्ण बनावें। 5-6 ग्राम की मात्रा में बकरी के दूध के साथ प्रातः- सायं सेवन करें। लगातार 40-60 दिन के प्रयोग से बल- वीर्य की वृद्धि होती है और नपुंसकता दूर होती है।
- गोखरू, असगन्ध, कौंच के बीज, सफेद मूसली, मुलहठी, खिरेंटी और गं गेरन की छाल 20-20 ग्राम लेकर कूट- कपड़छन करें। मात्रा 3 से 5 ग्राम, गोदुग्ध में मिश्री मिला कर, उसके साथ सेवन करें। इसमें नपुंसकता, धातुदौर्बल्य, शुक्रतारल्य आदि में लाभ होता है और बल- वीर्य की वृद्धि होती है।
- बड़ा गोखरू, विदारीकन्द, श्वेत मूसली, गिलोय, तज, लौंग और मुलहठी समान भाग का कपड़छन चूर्ण बनावें।

मात्रा — 2 से 3 ग्राम तक यह चूर्ण मिश्रीयुक्त गोदूग्ध के साथ सेवन करने से बल- वीर्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

की वृद्धि होती है।

गोखरू मिश्रित कामोद्दीपक योग

बड़े गोखरू, गिलोय, शतावर, श्वेत मूसली, विदारीकन्द और शुद्ध भल्लातक (भिलावे) 50-50 ग्राम, भुने तिल 40 ग्राम, चित्रकमूल, भुनी हुई भाँग और वायविडं ग 30-30 ग्राम, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपल 20-20 ग्राम, दालचीनी, केशर, वंगभस्म और लौहभस्म 10-10 ग्राम, मिश्री 150 ग्राम, गोघृत 125 ग्राम और शहद 30 ग्राम।

सब काष्ठौषधियों का कपड़छन चूर्ण करें, फिर भस्मादि मिला कर घृत और शहद भी मिला दें।

मात्रा — 3 से 5 ग्राम तक गोदुग्ध के साथ प्रातः- सायं सेवन करें। इससे बल- वीर्य की वृद्धि, स्तम्भन एवं कामोद्दीपन होता है। क्लीवता को दूर करने वाला यह एक सुखकर योंग है।

सर्व प्रमेह नाशक गोक्षुरादि चूर्ण

बड़े गोखरू, गिलोय- सत, श्वेत मूसली, सेमल का मूसला, शतावर, बीजबन्द, तालमखाना, असगन्ध और कौंच के बीज समान भाग लेकर, कूट- पीस कर कपड़छन करें। फिर सबके वजन के बराबर मिश्री का महीन चूर्ण मिला दें।

मात्रा — 4 से 6 ग्राम तक गोदुग्ध के साथ प्रातः- सायं सेवन करनी चाहिये। यदि धारोष्ण गोदुग्ध की व्यवस्था हो सके तो और भी उत्तम रहेगा। सब प्रकार के प्रमेह, धातु- दौर्बल्य, शुक्र - तारल्य, स्वप्नदोष आदि में अधिक हितकर सिद्ध होता है।

धतूरे के क्लैव्यनाशक प्रयोग

धतूरा प्रजनन- संस्थान पर अधिक उत्तेजक प्रभाव डालता है। बाजीकरण के लिये, इसके मिश्रण से बनाई गई दवाएँ शीघ्र उत्तेजना उत्पन्न करती हैं। लोंग और अकरकरामूल के साथ इसका प्रभाव और भी बढ़ जाता है। यहाँ कुछ ऐसे प्रयोग प्रस्तुत हैं, जिनमें धतूरे का मिश्रण रहता है —

- काले धतूरे के पुष्प छाया- शुष्क करें और महीन खरल करके, मधु के साथ घोटें और चना प्रमाण गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1 गोली गोदुग्ध के साथ अथवा स्वच्छ ताजा पानी के साथ लेनी चाहिये। इसके सेवन से बल- वीर्य की वृद्धि होती है और नपुंसकता दूर होती है।

- धतूरे की जड़, श्वेत कनेर की जड़, समुद्रशोष, शुद्ध कुचला और शुद्ध अफीम, समान भाग लेकर महीन करें तथा मधु के साथ घोट कर मूँग प्रमाण गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1 गोली मिश्रीयुक्तदूध के साथ सेवन करने से उत्तम बाजीकरण एवं स्तम्भन की सिद्धि होती है। सभी प्रकार की दुर्बलता में हितकर है।

- काले धतूरे, पोस्त, जावित्री, धुली- भुनी भाँग और भीमसेनी कर्पूर समान भाग लेकर, सबके वजन के बराबर अजवाइन लेनी चाहिये। इन सबको जौकुट करके गोदुग्ध में एक दिन- रात भिगोयें। तदुपरान्त भभका यन्त्र में रख कर अर्क निकाल लें।

मात्रा — 1-2 चम्मच अर्क प्रातः- सायं कुछ दिनों तक नित्य प्रति सेवन करने से उत्तेजना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
में अत्यन्त वृद्धि होती है। यह औषधि मादक नशीली है, अतः अपनी स्थिति से अनुसार ही सेवन करनी चाहिये।

- काले धतूरे के बीज, अकरकरा, जावित्री, जायफल, शोधित अफीम, शुद्ध सिंगरफ और वंगभस्म समान भाग लें और कूटने योग्य द्रव्यों को कूट- पीस लें। फिर सबको मिला कर खरल करें, जिससे कि सभी मिल कर एक हो जायें। तदुपरान्त इस मिश्रण को खसखस के क्वाथ से खरल करते हुए बाजरे के बराबर गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1-2 गोली मधु- मिश्री में मिला कर सेवन करने से बल- वीर्य की वृद्धि होती है। कामोत्तेजना- वृद्धि एवं पोषण में अधिक काम करने वाली यह औषधि बाजीकरण की सिद्धि करती है।

कामवर्द्धक मदनानन्द रस

काले धतूरे के बीज, भाँग के बीज, छोटी इलायची के दाने, जायफल, चमेली के फूल, अकरकरा, केशर, कस्तूरी सोने के वर्क वाली असली, अम्बर, शुद्ध अफीम, शुद्ध हिंगुल, अम्बर और सिद्ध चन्द्रोदय सभी द्रव्य समान भाग लेकर काष्ठौषधियों को कूट- छान कर कपड़छन करें और उसमें कस्तूरी, केसर, स्वर्णपत्र आदि पृथक् घोट कर एकत्र करें। फिर गुठली निकाले हुए छुहारों में समस्त औषधि द्रव्यों को भर दें और उन छुहारों को कच्चे सूत से लपेटें तथा उन पर गेहूँ का आटा चढ़ा कर असली घृत में पकावें। जब ठीक से पक जायें तब निकाल कर ठंडा होने पर आटा हटा दें। औषधियुक्त उन छुहारों को खरल में डाल कर अफीम के फल से अर्क से सात भावनाएँ दें तथा सात भावनाएँ बँगला पान करके स्वरस की देकर, एक भावना बड़ के दूध की देनी चाहिये। इस प्रकार खरल करते हुए, मूँग प्रमाण गोलियाँ बना कर छाया में सुखा लें। मात्रा रोगी का बलाबल देख कर एक या दो गोली मिश्री युक्त दूध के साथ प्रातः- सायं सेवन करनी चाहिये। यह प्रयोग अत्यन्त उत्तेजक और बाजीकरण है। इसलिये अल्प मात्रा में कभी- कभी ही सेवन करनी चाहिये।

अंजीर के बलवर्धक प्रयोग

अंजीर में शुक्र एवं बलवर्धक गुणों की अधिकता है। राजनिघंटु के अनुसार इसमें शुक्रल और वृंहण गुण होते हैं। शरीर में बल- वीर्य की वृद्धि, शुक्रतारल्य का निवारण तथा स्तम्भन और बाजीकरण होता है। सब प्रकार के वीर्य दोषों में हितकर है। यहाँ पाठकों की जानकारी के लिये उसके कुछ उपयोग प्रस्तुत हैं —

- नित्य प्रति अंजीर के पके हुए फल खाने से रुचि बढ़ती है और शरीर में नवोल्लास की प्राप्ति होती है।
- शुष्क अंजीर, बादाम की मिंगी, किशमिश, चिरोंजी, पिस्ता और छोटी इलायची के दाने 20-20 ग्राम, केशर 1-2 ग्राम और शर्करा 25 ग्राम लें। सबको खरल में घोट कर पर्याप्त महीन कर लें और चीनी या काँच के पात्र में डाल कर गाय का असली घृत उसमें डाल कर एक सप्ताह तक धूप दिखाते रहें, तदुपरान्त प्रयोग में लावें।

मात्रा —इस रसायन वाली औषधि का सेवन 10 से 20 ग्राम की मात्रा में करना चाहिये। इसके प्रभाव से कामांग में अत्यन्त हर्ष की वृद्धि हो सकती है। बल- वर्धक और स्तम्भक योग है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

अत्यन्त पौष्टिक अंजीर-पाक

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुष्क अंजीर 1 किलोग्राम, बादाम की मिंगी 500 ग्राम, श्वेत मूसली 40 ग्राम, छोटी इलायची के बीज 25 ग्राम, पिश्ता और चिरोंजी 60-60 ग्राम, केशर 10 ग्राम और शीतल चीनी 1 ग्राम। चाशनी के लिये देशी खाँड अथवा मिश्री 2 किलोग्राम लेनी चाहिये।

अंजीर और बादाम को खरल में महीन कर लें और खाँड की चाशनी के साथ पकावें। फिर अन्य द्रव्यों का महीन किया हुआ चूर्ण भी उसी चाशनी में डाल कर ठीक प्रकार से मिला दें।

मात्रा — 20-25 ग्राम प्रातः- सायं सेवन करनी चाहिये। ऊपर से सुखोष्ण दूध पी लें। नित्यप्रति प्रातः- सायं सेवन करने से शरीर में अत्यन्त पुष्टि और शक्ति बढ़ती है। धातु- दौर्बल्य, क्लैव्य तथा शुक्र- तारल्य और शुक्रस्राव को रोकने वाला यह प्रभावकारी योग है।

शुक्रतारल्य-हर अंजीर-पाक

शुष्क अंजीर, बादाम की गिरी, पिश्ता, चिरोंजी, किशमिश, श्वेत मूसली, शतावर, शीतलचीनी, सालम मिश्री और गुलाब के फूल 10-10 ग्राम, प्रवाल भस्म, अभ्रक भस्म, लौह भस्म और केशर 1-1 ग्राम, चाशनी के लिये चीनी अथवा मिश्री अपेक्षित मात्रा में।

काष्ठौषधियों, मिंगियों आदि को खरल द्वारा अत्यन्त महीन करके चाशनी के साथ परिपाक करें और जमने योग्य होने लगे, तब इसमें भस्मादि घोट कर मिला दें।

मात्रा —10 ग्राम तक गोदुग्ध के साथ देने से सभी वीर्यदोषों में हितकर है। रोगी को पर्याप्त बल- वीर्य वृद्धि का अनुभव होने लगता है। शुक्रतारल्य- नाशक तथा बाजीकरण गुण प्रदायक अत्यन्त सुखकर योग है।

वीर्य विकारों पर गिलोय के प्रयोग

गिलोय की बेल चलती है। नीम के वृक्ष पर चढ़ी हुई गिलोय रक्तशोधक और अधिक शीतवीर्य बन जाती है। अन्य वृक्षों पर चढ़ती है तो उसमें उन- उन वृक्षों के गुण भी अल्पांश में आ जाते हैं। सामान्यतः गिलोय (गुडची) शोधक, बल- वीर्य वर्द्धक तथा शुक्र दौर्बल्य नाशक हैं। ज्वरादि में भी यह अपना आशातीत फल दिखाती है। इसका प्रयोग अन्य बाजीकरण औषधि- द्रव्यों के साथ करने पर शरीर और मन में उल्लास भरती है। इसका प्रयोग स्वरस, सत्व आदि के रूप में अधिक किया जाता है। कुछ हितकर प्रयोगों का वर्णन यहाँ प्रस्तुत है—

- गिलोय, अभ्रक भस्म और मिश्री समान भाग लेकर खरल करें और शहद में मिला कर एक ग्राम की मात्रा में लें। इससे सब प्रकार के प्रमेह दूर होते हैं तथा शरीर में बल बढ़ता है।
- सत गिलोय, सत शिलाजीत, वंशलोचन, छोटी इलायची के बीज और वंगभस्म 10-10 ग्राम, अनविधे मोती या मुक्तपिष्टी 2 ग्राम और चाँदी असली आवश्यकतानुसार।

सभी द्रव्यों को खरल में घोट कर एक कर लें और फिर असली गुलाबजल में खरल कर सुरक्षित रखें। मात्रा आधा- आधा ग्राम से एक ग्राम तक बलाबल देख कर देनी चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
ऊपर से गाय का धारोष्ण अथवा सुखोष्ण दूध पीना चाहिये। प्रमेह के सभी उपसर्गों में इससे लाभ होता देखा गया है। धातुस्राव को रोकने में भी यह प्रयोग अत्यन्त हितकर है।

- गिलोय का स्वरस, अडूसा (वासा) का स्वरस और मधु 10-10 ग्राम की मात्रा में मिला कर सेवन करने से पिष्ट प्रमेह में अत्यन्त लाभ होता है। जिन्हें चावल के धोवन के समान पेशाब होता है, उनके लिये अधिक हितकर है। प्रमेह के अन्य कुछ उपसर्गों में भी इसके प्रयोग से लाभ देखा गया है।
- गिलोय, नीम की अन्तर्छाल, आमले और परवल के पत्ते तथा डंडी, सब समान भाग लेकर क्वाथ करें और ठण्डा होने पर मिश्री मिला कर पीवें। अथवा इन सबको जल के साथ घोट कर छाना हुआ हिम मिश्री डाल कर सेवन करें। प्रमेह के अनेक उपसर्ग इससे दूर होते हैं। काल प्रमेह में अधिक उपयोगी है।
- गिलोय और आमले का क्वाथ मिश्री मिला कर पीने से भी प्रमेह के पित्तजन्य विकार दूर होते हैं।
- गिलोय और चित्रकमूल सम भाग का चूर्ण 2 से 3 ग्राम तक की मात्रा में सेवन करने से वातजन्य प्रमेह के उपसर्गों में लाभ सम्भव है।
- त्रिफला- क्वाथ में खरल किये हुए सोनागेरू को गिलोय के स्वरस की सात भावना दें और तदुपरान्त गुलाबजल की भावना देकर बबूल के गोंद का चूर्ण मिला कर घोटते हुए चना प्रमाण गोलियाँ बना लें।

मात्रा —1 से 2 गोली तक ढाक के फूलों के हिम में शहद मिला कर उसके साथ प्रातः- सायं सेवन करनी चाहिये। प्रमेह के अनेक उपसर्गों में 20 से 40 दिनों तक सेवन करते रहने से लाभ सम्भव है।

स्वप्नदोषनाशक वटी

सतगिलोय, शीतल चीनी, श्वेत मूसली, कतीरा गोंद, सत शिलाजीत और प्रवाल पिष्टी 10-10 ग्राम, शीतल वंग 5 ग्राम और भीमसेनी कर्पूर 1 ग्राम। काष्ठौषधियों को कपड़छन चूर्ण करके अन्य द्रव्य डालें। गुलाबजल में खरल करें। फिर इसमें 1 ग्राम केशर डाल कर घोटें और चौथाई ग्राम की गोलियाँ बना लें।

मात्रा — एक- एक गोली प्रातः- सायं गिलोय के स्वरस और शहद के साथ सेवन करें। प्रमेह के अनेक उपसर्ग और स्वप्नदोष दूर करने में अधिक उत्तम है।

तुलसी और उसका बाजीकरण प्रभाव

तुलसी का पौधा भारतवर्ष में प्रायः सर्वत्र देखा जाता है। यद्यपि इसका प्रयोग समूचे शरीरतन्त्र पर प्रभावकारी रहता है, इसलिये सभी रोगों के शमन की क्षमता इस वनस्पति में मानी जाती है। किन्तु प्रजनन- तन्त्र पर भी इसका अनुकूल प्रभाव देखा जाता है और इसके लिये तुलसी के विभिन्न योग व्यवहार में लाये जाते हैं। भारतवासियों की तो भावनाएँ भी तुलसी के साथ जुड़ी हैं, इसलिये इसके सेवन में औषधि प्रभाव और आस्था, दोनों ही मिल कर अधिक अनुकूलता का वातावरण उपस्थित करता है। यहाँ तुलसी के ऐसे कुछ योग, जो अपना बल- वीर्य वर्धक और बाजीकरण प्रभाव उत्पन्न करते हैं, प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुलसी के वीर्यदोषनाशक योग

- तुलसी के बीज और काली मूसली के बीज 2-2 भाग, तुलसीदल 1 भाग लें। बीजों को महीन चूर्ण करें और फिर पत्ते डालकर जलयोग से घोट कर, शहद मिला कर सेवन करें। इससे शरीर में बल वीर्य की वृद्धि होती है।
- तुलसी और गिलोय का समान भाग स्वरस शहद के साथ सेवन करने से प्रमेह में लाभ होता है।
- तुलसीदल और गुलाब की पंखुड़ियाँ, समान भाग मिश्री मिला कर सेवन कराने से शुक्रदोष दूर होते हैं।
- तुलसीदल के साथ दूध, दही, शहद, घृत और शर्करा मिला कर बनाया गया पंचामृत बल- वीर्य वर्धक, नवोल्लास प्रदायक और विकृत पित्त को शान्त करने वाला, तथा पित्तज प्रमेह के उपसर्गों को दूर करने वाला एवं पौष्टिक है। वैष्णव पूजा में बनाये जाने वाले पंचामृत के साथ तुलसीपत्र डालने की भावना, इस उद्देश्य की पूर्ति में भी सोने में सुगन्ध की आकांक्षा की पूर्ति करती है।
- तुलसी की जड़ को जल- योग से घिस कर जननेन्द्रिय पर लेप करने से कामशक्तिबढ़ती है तथा उत्तेजना वृद्धि होने के कारण बाजीकरण प्रभाव उत्पन्न होता है।
- तुलसीपत्र 10, असगन्ध का चूर्ण 3 ग्राम, दालचीनी का चूर्ण 3 ग्राम लेकर आधापाव पानी में खौला कर उतार लें तथा ठंडा होने पर उसमें मिश्री और दूध मिला कर पीवें। इसका नित्य प्रातःकाल नियमित प्रयोग करने से कोई रोग नहीं रहता, वीर्य- विकारों से छुटकारा मिलता और शरीर में बल- वीर्य की वृद्धि होती है। निस्सारक होने के कारण अवसाद, उदासी आदि पर भी नियन्त्रण होता है तथा बाजीकरण की शक्ति भी स्वतः उत्पन्न होने लगती है।
- नित्य प्रति प्रातः- सायं 5 से 10 नग तुलसीपत्र, कुछ मिश्री के साथ सेवन करते रहें तो श्री अवश्य निरोग होता है तथा प्रमेह के सभी उपसर्ग- धातुक्षय, शुक्रतारल्य, स्वप्नदोष आदि का अन्त हो जाता है तथा स्तम्भन- शक्तिमें भी तीव्र वृद्धि होती है।
- तुलसीदल का स्वरस, मधु और वंगभस्म के योग से खरल में घोट कर चना के बराबर गोलियाँ बना लें।
- मात्रा — 1-2 गोली जल के साथ, अथवा गोदुग्ध के साथ सेवन करते रहने से शरीर में बल- वीर्य की वृद्धि होती है।
- तुलसी स्वरस में वंगभस्म मिला कर सेवन करते रहने से शरीर एवं जननेन्द्रिय शक्ति बढ़ती है।
- तुलसी पत्र का स्वरस और करेला का स्वरस मिला कर सेवन करने से शर्करामेह मधुमेह में आशातीत लाभ होता है।

अश्वगन्ध और उसके अव्यर्थ योग

अश्वगन्ध आयुर्वेद की एक प्रसिद्ध वनस्पति है, जो कि शरीरस्थ दुर्बलता को दूर करने में अपना अद्भुत प्रभाव रखती है। प्रजनन- संस्थान पर प्रभाव उत्पन्न करने में भी यह अधिक शक्तिशाली है, जिससे बल- वीर्य की वृद्धि होती है। शुक्रक्षय, शुक्र- तारल्य, इन्द्रिय- दौर्बल्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आदि में इसका अनुपम योगदान रहता है। जो व्यक्तिअपने तन- मन में अशक्तिका अनुभव करते हैं, वे यदि इससे निर्मित योगों को विश्वास पूर्वक सेवन करें तो कोई कारण नहीं कि उन्हें अपनी कामनापूर्ति से वंचित रहना पड़े। यहाँ असगन्ध (अश्वगन्धा) के कुछ उत्तम प्रयोग दिये जाते हैं —

असगन्ध दो प्रकार की होती है — बड़ी और छोटी। बड़ी असगन्ध में गुण की न्यूनता मानी जाती है, अतः छोटी असगन्ध जिसे नागौरी असगन्ध भी कहते हैं, औषधि कर्म में अधिक ग्रहण की जाती है। इसलिये प्रमेह प्रभृति रोगों में शमनार्थ एवं बाजीकरण के उद्देश्य से छोटी असगन्ध ही प्रयोग में लानी चाहिये।

अत्यन्त शक्तिवर्धक अश्वगन्धादि चूर्ण

असगन्ध और विधायरा समान भाग लेकर कूट- कपड़छन करके घृत के चिकने पात्र में सुरक्षित रखें। यही आयुर्वेद का प्रसिद्ध अश्वगन्धादि चूर्ण है।

मात्रा — 5 ग्राम से 10 ग्राम तक रोगी का बलाबल देख कर निश्चय करनी चाहिये। अधिक दुर्बलताग्रस्त रोगी को आरम्भ में 3 ग्राम ही दे सकते हैं। इस चूर्ण को रात्रि में सोते समय मिश्रीयुक्त (सुखोष्ण) गुनगुने गोदुग्ध के साथ सेवन करना चाहिये। बल- वीर्य वर्धक यह रसायन गुण वाली परमौषधि सब प्रकार के प्रमेह और उनके उपसर्गों को दूर करने में समर्थ है। इससे स्तम्भन और बाजीकरण गुण की भी सिद्धि होती है।

किन्तु अधिक वृष्य होने के कारण यह चूर्ण कब्ज की भी शिकायत उत्पन्न कर देता है ऐसे रोगियों को हमने इस चूर्ण को आधी मात्रा में सोंठ मिला कर सेवन कराया, इससे उन्हें कब्ज का सामना नहीं करना पड़ा। यदि कब्ज की स्थिति उत्पन्न हो तो फिर ऐसा ही करना चाहिये। अर्थात् असगन्ध, विधायरा और सोंठ, तीनों समान भाग लेकर चूर्ण करें और दुग्ध मिश्री के साथ सेवन करावें।

- केवल असगन्ध का चूर्ण भी प्रमेहनाशक और पुष्टिवर्धक है। 3 से 6 ग्राम तक की मात्रा में गोदुग्ध के साथ लेना चाहिये। इससे वातज प्रमेह तथा अन्य वातोपसर्ग भी दूर हो सकते हैं।
- असगन्ध और सूखे आमले समान भाग लेकर कूटें और सुरक्षित रखें। शारीरिक शक्ति बढ़ाने तथा प्रमेह रोग एवं वात रोग दूर करने में अधिक सहायक होता है। आमला मिला होने के कारण यह योग कब्ज नहीं होने देता, इस कारण चित्त में हर्ष बना रहता है।

असगन्ध का स्वप्नदोषनाशक योग

असगन्ध, विधायरा, शतावर, कौंच के बीज, गोखरू, नागरमोथा, छोटी इलायची के बीज, त्रिफला, खस, जायफल, लाजवन्ती और वंशलोचन 25-25 ग्राम लेकर, कूट- कपड़छन करके उस में समान भाग मिश्री का चूर्ण मिला कर रखें।

मात्रा — 3 से 6 ग्राम तक प्रातः- सायं गोदुग्ध के साथ सेवन करें। इससे स्वप्नदोष का निवारण होता है। प्रमेह के अन्यान्य उपसर्गों में भी हितकर है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बाजीकरणार्थ अश्वगन्ध घृत

असगन्ध 250 ग्राम लेकर कूट- कपड़छन चूर्ण करें और बकरी का 16 गुना दूध लेकर अग्नि पर चढ़ा दें तथा उसमें 1 किलोग्राम असली घी मिला कर पाक होने दें। जब दूध जल जाय, तब औषधियुक्त घृत ही शेष रहे तब अग्नि से उतार कर छानें और अमृतवान में सुरक्षित रखें।

मात्रा — 9-10 ग्राम तक घृत का समान भाग मिश्री मिला कर सेवन करें। इससे बल- वीर्य की वृद्धि एवं पुष्टि होती है। शुक्र- तारल्य दूर होता तथा बाजीकरण की शक्ति प्राप्त होती है। यह रोग स्मृतिदायक एवं बुद्धिवर्धक भी है।

इन्द्रिय- शैथिल्य पर सुन्दर योग

असगन्ध, श्वेत मूसली, सेमल का मूसला, शतावर, तालमखाना, सतगिलोय, कोंच के बीज और बड़े गोखरू 20-20 ग्राम। वंगभस्म, प्रवाल भस्म और लौह भस्म 1-1 ग्राम, केशर 2 ग्राम। सभी काष्ठौषधियों का कपड़छन चूर्ण बना कर केशर को पृथक् घोट कर मिलावें तथा भस्में भी एक- एक कर डालते जायें। फिर सबके बराबर मिश्री का चूर्ण मिला कर सुरक्षित रखें।

मात्रा — 3 से 5 ग्राम यह चूर्ण प्रातः- सायं धारोष्ण गोदुग्ध के साथ 40 दिनों तक सेवन करना चाहिये। इससे इन्द्रिय- शैथिल्य, दौर्बल्य, शुक्र- तारल्य आदि दूर होकर बल- वीर्य की वृद्धि होती है। यह योग स्तम्भक और बाजीकरण है।

स्तम्भक उत्तेजक माजून

असगन्ध 100 ग्राम, कोंच के बीज, बीजबन्द और उटंगन 65-65 ग्राम, तालमखाना, गोखरू, शतावर, विदारीन्द, तमालपत्र, दालचीनी, तुलसीपत्र, देवदारु, लौंग, सत- गिलोय, आमला, नागकेशर, बालछड़, श्वेतमूसली, वंशलोचन, छोटी इलायची के बीज और श्वेत चन्दन 3-3 ग्राम। सभी द्रव्यों को विधिपूर्वक कूट- छान, कपड़छन कर 1-1 भावना क्रमशः कागजी नींबू के स्वरस की और दूर्बामूल के स्वरस की दें तथा सबके बराबर मिश्री की चाशनी करके, सभी औषधि द्रव्यों को मिला कर माजून बना लें।

मात्रा — प्रातः- सायं 8-10 ग्राम धारोष्ण गोदुग्ध के साथ सेवन करनी चाहिये। इससे शरीर में बल- वीर्य की वृद्धि होती है और स्तम्भन तथा बाजीकरण गुणों की प्राप्ति होती है। सभी प्रकार के प्रमेह रोगों में लाभकारी होने के साथ ही, मूत्रकृच्छ (सुजाक) में भी अत्यन्त हितकर प्रयोग है। स्वप्नदोष भी दूर होता है।

शुक्रदोष एवं मस्तिष्क दौर्बल्यनाशक चूर्ण

असगन्ध, अजवायन, कूट, सोंठ, पीपल, पाठा, काला जीरा, श्वेत जीरा, शंख पुष्पी, काली मिर्च और सेंधा नमक समान भाग लेकर कूट- कपड़छन करें तथा इसमें सबके समान वजन में बच का चूर्ण मिलावें और ब्राह्मी बूटी के स्वरस की 5 भावना देकर छाया शुष्क करें और सुरक्षित रखें।

मात्रा — 2 ग्राम से 6 ग्राम तक असमान भाग मधु और घृत के साथ रात्रि में सोते समय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
अथवा प्रातः- सायं दोनों बार सेवन करें। इसके सेवन से बुद्धि तीव्र होती और स्मृति बढ़ती है। प्रमेह के अनेक उपसर्ग, शुक्र - तारल्य, शुक्र- दौर्बल्य आदि का शमन होता है। इसके अतिरिक्त, यह महौषधि अपस्मार, हिस्टीरिया, उन्माद तथा वाणीदोष अर्थात् तोतलेपन में भी बहुत लाभकारी है।

शक्तिवर्धक महा कामदेव- घृत

असगन्ध 1 किलोग्राम, बड़ा गोखरू दक्षिणी ढ़ाई किलोग्राम, गिलोय, शतावर, पीपलवृक्ष की छाल, अंजीर, खिरेंटी, कमलगट्टा, पुनर्नवा, सोंठ और उड़द की धुली हुई दाल 500-500 ग्राम। सब को कूट कर चौगुने पानी में क्वाथ करें तथा चौथाई सेष रहने पर उतार कर छान लें। फिर निम्न औषधियों का कल्क उसमें डाल दें —

काकोली, क्षीरकाकोली, सकाकुल मिश्री, सालम मिश्री, कूट, कमलगट्टा, असगन्ध, विदारीकन्द, मुलहठी, जीवन्ती, वन मूँग, वन उड़द, तेजपात, लाल चन्दन, पीपल, मुनक्का, नागकेशर, नीलोफर, कौंच के बीज, अनन्तमूल, खिरेंटी और कंघी, सभी 10-10 ग्राम लेकर कूट लें और चौगुने पानी में, पूर्व रात्रि में भिगोवें और प्रातःकाल सिल पर चटनी के समान पीसें। यह कल्क उपर्युक्त क्वाथ में मिलावें और फिर उसमें 60 ग्राम देशी खाँड, 4 लीटर ईख का रस तथा 4 किलोग्राम गाय का घी मिलावें और पुनः अग्नि पर चढ़ा कर मन्दी- मन्दी आग से पकावें। जब पानी पूरी तरह जल कर घृत मात्र शेष रहे तब उतार कर छान लें और चीनी या काँच के पात्र में सुरक्षित रखें।

मात्रा — बलाबल के अनुसार 4 से 10 ग्राम तक रात्रि में सेवन करके, ऊपर से दूध पीवें। इसको सेवन करने से, शुक्रक्षय, शुक्र- तारल्य, अशक्ति, ध्वजभंग आदि में आशातीत लाभ होता है। यदि इस रसायन गुणवाली महौषधि को नवजीवन देने वाली कहें तो कुछ अत्युक्ति नहीं होगी।

वीर्यवर्द्धक अश्वगन्धादि पाक

असगन्ध 1 किलोग्राम, शतावर और सोंठ 500-500 ग्राम, छोटी पीपल 200 ग्राम लेकर कूट- पीस कर कपड़छन करें। यह मुख्य द्रव्य हैं, नागरमोथा, नागकेशर, नेत्रबाला, तज, तगर, तेजपात, लोंग, छोटी इलायची, श्वेत चन्दन, आमला, श्वेत कत्था, चित्रक की छाल, पीपलामूल, जायफल, शतावर और वंशलोचन 10-10 ग्राम लेकर कूट- कपड़छन कर लें। यह प्रक्षेप द्रव्य है।

तत्पश्चात् 15 लीटर गोदुग्ध लेकर मन्दाग्नि पर पकावें तथा आधा शेष रहने अधौंटा होने पर असगन्ध आदि के चूर्ण को इसमें मिला कर चलाते रहें। खोआ का रूप लेने पर उसे लाल होने तक भूनते रहें। फिर उतार लें। अब 4 किलोग्राम चीनी की चाशनी में उपर्युक्त खोआ मिलाओ तथा मोदक बनने योग्य होने पर उसमें नं. 2 का चूर्ण डाल कर तथा अच्छे प्रकार चलाकर उतारें और 10-10 ग्राम के मोदक बना लो।

मात्रा — एक- दो मोदक प्रातःकाल सेवन करके मिश्रीयुक्त दूध ऊपर से पीना चाहिये। यह मोदक अत्यन्त बलवर्द्धक वीर्यशोधक, स्तम्भक एवं बाजीकरण करने वाला योग है। गर्मी अधिक करता है, इसलिये बलाबल और प्रकृति को अनुकूल प्रतीत होने पर ही निरन्तर सेवन करना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधायरा और उसके शक्तिवर्द्धक योग

आयुर्वेद में विधायरा की बहुत महिमा कही गई है। इसका संस्कृत नाम वृद्ध दारुक है अर्थात् वृद्धों में यौवन उत्पन्न करने वाली औषधि है। इसकी जड़ का प्रयोग ही अधिक किया जाता है। इसके योगों का विधिवत् सेवन वीर्य दोषों को समूल नष्ट करने वाला माना जाता है। असगन्ध के साथ उसका सेवन और भी अधिक गुणकारी रहता है, इसीलिये प्रसिद्ध अश्वगन्धादि चूर्ण में विधायरा भी सम मात्रा में ग्रहण किया जाता है। प्रमेह आदि में विधायरे का प्रयोग अधिक हितकर होने के कारण उसके भी कतिपय योग यहाँ प्रस्तुत किये जाते हैं।

सर्वविकार नाशक विधायरा पाक

इस योग में विधायरा मुख्य द्रव्य है, जो कि 1 किलोग्राम लेकर, आठ लीटर पानी के साथ क्वाथ करें और चौथाई शेष रहने पर उतार कर छान लें। फिर 1 किलोग्राम मिश्री की चाशनी करके, उसमें गाय का घी एक पाव तथा एक पाव ही घी में भूना हुआ खोआ मिला कर मंदी अग्नि पर रखें और लाल होने तक चलाते रहें। तब निम्न प्रक्षेप- द्रव्यों का कपड़छन किया हुआ चूर्ण भी इसमें मिलावें और 10-15 ग्राम की कतली या मोदक बना लें।

मात्रा — 1 या 2 मोदक तक गाय के दूध के साथ प्रातः- सायं सेवन करते रहने से प्रमेह के सभी उपसर्ग नष्ट हो जाते हैं। धातु- स्राव, धातु- दौर्बल्य, धातु- तारल्य, क्लीवत्व आदि को दूर करने में इसका प्रयोग अत्यन्त हितकर है। रक्तकी शुद्धि होकर चेहरे पर चमक आती है। शरीर में शक्ति और उत्साह का अनुभव होता है।

बल- बुद्धि वर्द्धक विधायरा रसायन

विधायरे की जड़ को छाया में सुखा कर, कूट- छान लें। फिर उस चूर्ण को शतावरी के रस में एक दिन भिगो कर धूप में सूखने दें। यदि स्वरस उपलब्ध न हो तो शतावरी का काढ़ा बना कर, उसमें भिगोना चाहिये। भीगने और सूखने पर शतावरी स्वरस या क्वाथ की सात भावनाएँ देकर, खरल करते हुए जब शुष्क महीन चूर्ण हो जाय, तब सुरक्षित रखें।

मात्रा —2 ग्राम से 10 ग्राम तक बलाबल देखकर, गाय के घी में मिला कर देनी चाहिये। ऊपर से मिश्रीयुक्तदूध पिलाया जा सकता है। इस प्रयोग से शरीर में बल- वीर्य की अत्यन्त वृद्धि होती है। स्तम्भन- शक्तिबढ़ती और बाजीकरण की सिद्धि होती है। यह वृद्धों में जवानी का संचार करने वाला है। इसके निरन्तर कुछ मास सेवन करते रहने से बुद्धि और स्मृति का विकास होता है। सिर के श्वेत बाल काले होने लगते हैं तथा गंजापन दूर होता है आशानुरूप फल- प्राप्ति के लिये आवश्यक है कि औषधि का सेवन आरम्भ करने से पहिले विरेचन द्वारा कोष्ठ साफ कर लिया जाय। क्यों कि यह औषधि गरिष्ठ होने के कारण कब्ज साफ सकती है।

विधायरे का वीर्यवर्द्धक सरल प्रयोग

विधायरा की जड़ ताजा लाकर धूप में सुखावें और फिर कूट- पीस कर कपड़छन कर लें। इस चूर्ण को गाय के घी से तर करके घृत के चिकने पात्र में भरें और कपड़े से मुखबन्ध करके अनाज के ढेर में दबायें। इस प्रकार 15 दिनों तक रखने के पश्चात् निकाल कर चीनी या काँच के बर्तन में भर कर रखें।

मात्रा — 5 से 10 ग्राम तक यह औषधि प्रातः- सायं गोदुग्ध के साथ सेवन करनी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चाहिये। इससे शरीर में पर्याप्त बल- वीर्य की वृद्धि होती है। क्लीवता नाशक सरल औषधि है।

सर्व प्रमेह नाशिनी वटी

विधायरा, असगन्ध, बहमन लाल, बहमन श्वेत, मूसली श्वेत, सालम मिश्री, बड़े गोखरू, सोंठ, शतावर, छोटी पीपल, लोंग, अकरकरा, श्वेत चन्दन और नागरमोथा 10-10 ग्राम, त्रिफला इन सबके बराबर, लौह भस्म, वंभस्म, जावित्री, केशर और प्रवाल भस्म 5-5 ग्राम, कस्तूरी और मकरध्वज 1-1 ग्राम। सभी काष्ठौषधियों को कूट- कपड़छन करें तथा भस्मादि द्रव्यों को खरल में महीन करके मिलावें और बरगद के दूध की तीन भावनाएँ देकर मटर के बराबर गोलियाँ बना लें और छाया में सुखा कर सुरक्षित रखें।

मात्रा — एक- एक गोली मिश्रीयुक्त गोदुग्ध से प्रातः- सायं सेवन करनी चाहिये। 40 दिन के नियमित प्रयोग से सब प्रकार के प्रमेह और उनके उपसर्ग, वीर्य- दोष, स्तम्भन शक्ति की कमी, शुक्रतारल्य आदि दूर होकर बाजीकरण शक्ति प्राप्त होती है।

प्रमेह में सरल उपयोगी नुस्खा

विधायरा, असगन्ध और गोखरू 10-10 ग्राम, मुलहठी 15 ग्राम तथा मकरध्वज आधा ग्राम, वंगभस्म और लौहभस्म 1-1 ग्राम। विधायरा आदि का कपड़छन चूर्ण करके, उसमें मकरध्वज और भस्म मिलावें और शीशी में भर लें।

मात्रा — 1 ग्राम, मिश्रीयुक्तगोदुग्ध के साथ सेवन करते रहने से सभी प्रकार के वीर्यदोष, धातुदौर्बल्य आदि विकारों में शीघ्र लाभ होता है।

गोरखमुण्डी के प्रभावकारी योग

आयुर्वेद के अनेक योगों में गोरखमुण्डी अथवा मुण्डी का समावेश देखा जाता है। यह वनस्पति अन्य अवयवों के साथ ही प्रजनन संस्थान पर भी अनुकूल प्रभाव दिखाती है। इसके दो भेद हैं — एक बड़ी और दूसरी छोटी। इनमें बड़ी को गोरखमुण्डी या महामुण्डी कहते हैं। छोटी मुण्डी, लघु मुण्डी कही जाती है, जो कि गदूली के नाम से भी प्रसिद्ध है। संस्कृत भाषा में इन्हें श्रवणा, महाश्रवणा, भूतघ्नी, विकचा, कदम्बपुष्पा आदि नामों से कहा गया है। हिन्दी में इसे सावनसूखी, मुण्डी आदि नामों से भी जाना जाता है। लैटिन में इसे स्पिरेंथस इंडिकस कहते हैं।

इस वनस्पति की उत्पत्ति राजपूताना, मध्य प्रदेश आदि में अधिक देखी जाती है। किन्तु सामान्यतः देश के सभी भागों में पाई जाती है। वर्षा ऋतु के अन्त में, जब धान पक कर कटने योग्य होता है, तब इसके पत्ते बढ़ते और फैलते हैं। यह पत्ते प्रायः एक अंगुल चौड़े और चार- पाँच अंगुल तक लम्बे होते हैं। इनका रंग कुछ भूरापन युक्त हरा होता है। लघु मुण्डी (गदूली) के पत्ते कुछ गोल और सफेदीपन लिये हुए होते हैं। दोनों मुण्डियों के क्षुप 40-45 सिंटीमीटर तक ऊँचे देखे जाते हैं। छोटी- छोटी शाखाओं के आगे की ओर गुलाबी या बैंगनी रंग के पुष्प, कुछ गोलाई लिये हुए लगते हैं। इसके पत्तों और डंठलों में तीखी गन्ध रहती है बड़ी मुण्डी के पुष्प कुछ बड़े और छोटी के छोटे होते हैं।

दोनों ही मुण्डियाँ कटु- पाकी उष्णवीर्य, मधुर, हल्की और बुद्धिवर्धक होती हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

राजनिघण्टुकार ने इसे शीतल और पित्तघ्नी कही है। किन्तु भावमिश्र के मत में उष्णवीर्य होने का कारण यह हो सकता है कि गर्म प्रदेश में उत्पन्न होने पर उष्णवीर्य और ठण्डे प्रदेश में उत्पन्न होने पर शीतवीर्य गुण से सम्पन्न होती हो। क्योंकि किसी भी वनस्पति के रूप, गुणादि पर देश- काल का प्रभाव होना अवश्यभावी है।

मुण्डी का प्रयोग अनेक रोगों में किया जाता है। यह मूत्र- संस्थान या प्रजनन- संस्थान पर अनुकूल प्रभाव डालने के कारण प्रमेह में हितकर है। पाण्डु, श्लीपद, कुष्ठ, अपची, गुण्ड रोग, मेद रोग, प्लीहा वृद्धि, अपस्मार, हिस्टीरिया, अर्श, मेदोरोग आदि को शमन करने वाली है। स्त्रियों के आर्तव रोग और प्रदर में अपना अनुकूल प्रभाव दिखाती है। वीर्यवर्धक और पित्त- शामक होने के कारण शरीर को बल- वीर्य से पुष्ट करने में सक्षम है। इसका प्रयोग स्वतन्त्र रूप से भी होता है, किन्तु अन्य योगों के साथ अधिक होता है।

गोरखमुण्डी के वीर्यविकार नाशक नुस्खे

- गोरखमुण्डी के ताजा पत्तों का स्वरस शुक्रतारल्य को दूर करने में अत्यन्त उपयोगी है। इसका सेवन मिश्री मिला कर किया जा सकता है। शहद के साथ भी ले सकते हैं। चार- पाँच बड़े चम्मच तक स्वरस में एक चम्मच शहद मिलाना पर्याप्त है। मिश्री डालें तो वह भी अल्प परिमाण में होनी चाहिये। इससे प्रमेह जन्य अनेक विकार और दुर्बलता में लाभ होता है।
- गोरखमुण्डी का स्वरस 4-5 बड़े चम्मच लेकर, उसमें 5 मुनक्काएँ पीस कर मिलावें और सेवन करें। ऊपर से बकरी का अथवा गाय का दूध मिश्री मिला कर पीवें। सभी प्रकार के वीर्य- दोष, स्वप्नदोष शुक्र- तारल्य, दौर्बल्य आदि में हितकर है।
- गोरखमुण्डी, निर्गुण्डी, सोंठ, शतावर, धुली हुई भाँग और श्वेत मूसली समान भाग लेकर कूट- छान लें और आवश्यकतानुसार शर्करा तथा घृत के साथ मिला कर 1-1 ग्राम की गोलियाँ बना कर रखें।
- **मात्रा** — एक- दो गोली दुग्ध- मिश्री के साथ प्रातः- सायं सेवन करें। इसे 5-6 सप्ताह तक निरन्तर सेवन करते रहने से शुक्र तारल्य, शीघ्रपतन एवं स्वप्नदोषादि विकार दूर हो जाते हैं और बल- वीर्य की वृद्धि के साथ स्तम्भन शक्ति उत्पन्न होती है।
- गोरखमुण्डी का पंचांग छाया में सुखायें और कूट- कपड़छन करलें। फिर इसमें समान भाग मिश्री का चूर्ण मिलावें और 4 से 8 ग्राम तक की मात्रा में घृत के साथ सेवन करें तथा ऊपर से दूध पी लिया करें। इसका सेवन प्रातः- सायं दोनों समय करने से शुक्रदोषादि में लाभ होता है। स्तम्भन- शक्ति उत्पन्न होती है तथा नेत्र रोग, एवं बालों के झड़ने, पकने आदि में भी हित- साधन होता है। दन्तरोगों में भी हितकर है।
- गोरखमुण्डी का पंचांग, सोंठ, असगन्ध, शतावर, ब्राह्मी, श्वेतचन्दन और गुलाब के फूल 10-10 ग्राम तथा धुली हुई भाँग 15 ग्राम, कूट- छान कर एकत्र करें तथा समान भाग मिश्री का चूर्ण मिला कर रख लें।

मात्रा — 6 से 12 ग्राम तक अपनी शक्ति के अनुसार सेवन करें और ऊपर से गर्म दूध पीवें।

यह योग शारीरिक और मानसिक दुर्बलता को दूर करता है। जिनको स्त्री- संयोग से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

विरक्तिहों गई हो, उनमें साहस और स्फूर्ति का संचार करता है। सब प्रकार के धातु सम्बन्धी रोगों में हितकर है। निरन्तर सेवन से रसायन गुण उत्पन्न करता हुआ, बाजीकरण की सिद्धि करता है।

वीर्यदोषों में गोरखमुण्डी चूर्ण

गोरखमुण्डी 20 ग्राम, असगन्ध, शतावर, काली मूसली, श्वेत मूसली, शंखपुष्पी, बीजबन्ध, कमलगट्टा, बड़ा गोखरू, मुलहठी, काहू के बीज, श्वेत पुनर्नवा, ईख की जड़, तालमखाना, ब्राह्मी, चिरोंजी, श्वेतजीरा, शीतलचीनी, मोचरस, अकरकरा, हल्दी, दारुहल्दी, श्वेत चन्दन, सिंघाड़ा, कोंच के बीज, आमला, ईसबगोल, जायफल, जावित्री और केशर 10-10 ग्राम तथा मिश्री 300 ग्राम, सोने के वर्क और चाँदी के वर्क 25-25 लेकर सभी काष्ठौषधियों को कूट- पीस कर कपड़छन करें। केशर आदि को अलग से खरल कर मिलावें। [illegible]न में वर्क भी उसी के साथ घोट कर एक करें।

मात्रा — यह चूर्ण 3 से 6 ग्राम तक धारोष्ण अथवा सुखोष्ण दूध के साथ प्रातः- सायं [illegible] करनी चाहिये। इससे समस्त वीर्यदोष, सभी प्रकार के प्रमेहजन्य उपसर्ग, शुक्रतारल्य, शुक्रस्राव एवं नपुंसकता आदि में पर्याप्त लाभ होता है। स्तम्भनकारक बाजीकरण योग है। इसका सेवन 3 से 6 सप्ताह तक करना चाहिये।

कोंच के बीजों का बल- वीर्य पोषक प्रभाव

प्रजनन- संस्थान को सुपुष्ट और सबल बनाने में कोंच के बीजों का अत्यधिक योगदान रहा है। आयुर्वेद के अनेक नुस्खों में इनका प्रयोग शुक्र- तारल्य, क्लीवत्व आदि के शमनार्थ किया जाता है। यह अनेक नामों से जाना जाता है, जैसे कि कोंच, क्रोंच, केवाँच, किमाय आदि। अँग्रेजी में कोविच प्लांट के नाम से प्रसिद्ध है। भारत के उष्ण प्रदेशों में इसकी उत्पत्ति अधिक होती है। यह वनस्पति एक प्रकार की लता है, जिसकी प्रत्येक डंडी पर 3-3 पत्र रहते हैं। इसकी फलियों पर तीक्ष्ण रोयें जैसे पाये जाते हैं। इसके बीजों में एक क्रियाशील तत्व तथा फैटी एसिड होता है। यह पाक में कटु, शीतवीर्य तथा वातदोष नाशक होते हैं। वात नाड़ियों को सबल बनाने के गुण की विशेषता से इसे नर्वाइन टॉनिक कहा जाता है।

वस्तुतः वृष्य प्रयोगों में इन बीजों का अधिक उपयोग किया जाता है। शुक्र प्रमेह आदि में यह शीघ्र लाभ पहुँचाता है। पुरुष रोग, प्रमेहादि में तथा प्रदरादि स्त्री- रोगों में भी हितकर है। यहाँ उनके पुरुष रोगों में लाभकारी योगों का वर्णन किया जाता है —

पुरुष रोगों में विभिन्न योग

- केवल कोंच के बीज के सेवन मात्र से शुक्रमेह, स्वप्नदोष, शुक्रतारल्य आदि में आशातीत लाभ देखा गया है। महिलाओं के श्वेत प्रदर में भी सेवन कराया जा सकता है। कोंच के बीजों को कूट- छान कर रखें और चौथाई चम्मच की मात्रा में मिश्रीयुक्त सुखोष्ण दूध के साथ सेवन करें। रोग के बलाबल के अनुसार मात्रा अधिक ली जा सकती है।
- कोंच के बीज और बड़े गोखरू समान भाग लेकर, कूट- छान लें। इनका प्रातः- सायं 1 ग्राम तक की मात्रा में गाय के सुखोष्ण दूध के साथ सेवन करना चाहिये। इससे शारीरिक दुर्बलता दूर होगी तथा बाजीकरण की भी सिद्धि होगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- कोंच के बीज, बीजबन्द, शतावर, श्वेत मूसली और तालमखाना लेकर कूट- कपड़छन करें।

मात्रा — 1 ग्राम यह चूर्ण मिश्रीयुक्त गुदुग्ध से प्रातः- सायं सेवन करना चाहिये। इससे प्रमेहजन्य दुर्बलता दूर होती और बल- वीर्य की पुष्टि प्राप्त होती है।

- वानरी पाककोंच के बीज को चौगुने दूध में उबाल कर छिल्के उतारें। बिना उबाले छिलके उतारना कठिन है, फिर ठीक प्रकार से घोंट कर, उस दूध से बने खोए में मिला कर, उसे शकरपारे के समान घी में भूनें और दुगुनी शर्करा की चाशनी में पका कर, जमने योग्य होने पर 6-6 ग्राम की कतली काट लें।

मात्रा — 1-2 कतली सेवन करावें। यह स्तम्भन शक्तिप्रदान करने वाला प्रसिद्ध योग है।

- कोंच के बीज, सालम मिश्री, सकाकुल मिश्री, तालमखाना, श्वेत मूसली, कृष्ण मूसली, इमली के बीज, बहमन लाल, बहमन श्वेत, ढाक के फूल, शतावर, कीकर की फली तथा तोदरी श्वेत, सभी समान भाग लें और सबके बराबर मिश्री का चूर्ण मिलायें।

मात्रा — 8-10 ग्राम प्रातः- सायं धारोष्ण अथवा सुखोष्ण दूध के साथ सेवन करनी चाहिये। सब प्रकार के प्रमेह, दुर्बलता, शुक्रक्षरण, शुक्रतारल्य आदि दोष दूर होकर स्तम्भन-शक्ति प्राप्त होती है।

- कोंच के बीज, बड़े गोखरू और उटंगन के बीज समान भाग लेकर कूट- कपड़छन करें 3 ग्राम से 6 ग्राम की मात्रा में समान भाग मिश्री का चूर्ण मिला कर सेवन करें और ऊपर से सुहाता हुआ गर्म गुनगुना दूध पीवें। यह चूर्ण अत्यन्त वृष्ण, बल- वीर्यवर्धक तथा स्तम्भनकारक है। वृद्ध पुरुष भी इसको सेवन करके अत्यन्त शक्ति एवं हर्षोल्लास का अनुभव करता है। 40 दिन निरन्तर सेवन करना चाहिये। प्रातः- सायं दोनों बार लेना चाहिये।

- कोंच के बीज, शतावर और बड़े गोखरू 50-50 ग्राम, सेमल का मूसला, बरियारी के बीज और तालमखाना 25-25 ग्राम। सबको कूट- छान लें और सबके वजन के बराबर मिश्री का चूर्ण मिला कर रखें।

मात्रा — 5 से 10 ग्राम तक धारोष्ण दूध अथवा गर्म दूध के साथ रात्रि में शयन समय लें अथवा प्रातः- सायं दोनों बार लें तो मात्रा 3 से 6 ग्राम ही लेनी चाहिये। पाचन शक्ति तीव्र होने की स्थिति में कुछ अधिक मात्रा में भी ले सकते हैं। इससे सभी प्रकार के प्रमेह, उसके अनेक उपसर्ग, वीर्य का पतलापन, समागम में असमर्थता, प्रजनन शक्ति का ह्रास आदि लक्षण दूर होते तथा बाजीकरण की सिद्धि होती है।

- कौंच के बीज, उटंगन के बीज, बीजबन्द, शतावर, ऊँटकटारा- मूल की छाल, तालमखाना, समुद्रशोष, मोचरस, सूखे हुए सिंघाड़े, बहुफली और श्वेत मूसली समान भाग लेकर कपड़छन चूर्ण बना कर रखें।

मात्रा — 2 ग्राम से 5 ग्राम तक बलाबल के अनुसार सेवन करनी चाहिये। ऊपर से मिश्रीयुक्त गोदुग्ध अथवा धारोष्ण गोदुग्ध पीना चाहिये। चालीस दिन तक प्रातः- सायं सेवन करते रहने से प्रमेह एवं वीर्य सम्बन्धी सभी दोषों और उपसर्गों में अत्यन्त लाभ सम्भव है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सब प्रकार की प्रजनन- संस्थान की दुर्बलता दूर होकर बाजीकरण की सिद्धि होती है।

शक्तिवर्द्धक अमीरी योग

कौंच के बीज, अकरकरा, जायफल, जावित्री, लोंग, तज, अगर, कूट, श्वेत मूसली, छोटी पीपल, सत गिलोय, शुद्ध अफीम, भीमसेनी कर्पूर, स्वर्ण भस्म, रजत भस्म, केशर, शिलाजीत, वंगभस्म और मुक्तापिष्टी 10-10 ग्राम, कस्तूरी और अम्बर 1-2 ग्राम।

सभी काष्ठौषधियों को कूट- छान लें और भस्मादि द्रव्यों को पृथक्खरल करके मिलावें और फिर एक भावना धतूरे के स्वरस की, दो भावनाएँ अदरक के स्वरस और अन्य में 3 भावनाएँ देशी पान के स्वरस की देकर उड़द के बराबर की गोलियाँ बना कर सुरक्षित रखें।

मात्रा — एक- दो वटी प्रातः- सायं शहद के साथ लेकर ऊपर से मिश्रीयुक्त सुखोष्ण दूध पीना चाहिये। यह प्रयोग शरीर में बल- वीर्य की पर्याप्त वृद्धि करता है। प्रमेह की सभी अवस्थाओं और भेदों में अत्यन्त हितकर तथा स्तम्भक है। वातज प्रमेह तथा अनेक प्रकार के वात रोग और फुफ्फुस संस्थान के उपसर्गों में भी अनुपान- भेद से सेवन करके लाभ उठा सकते हैं।

शुक्र- तारल्य नाशक योग

कोंच के बीज, कमलगट्टा, विदारीकन्द, गोरखमुण्डी और असगन्ध समान भाग लेकर कूट- कपड़छन करें और विदारीकन्द के स्वरस अथवा क्वाथ की 3 भावनाएँ दें। फिर क्रमशः भाँग के स्वरस की, जायफल के पानी की तथा दूध में घोटी हुई केसर की दें। अन्त में मुलहठी के क्वाथ की एक भावना देकर खरल करते हुए ही सब के वजन के बराबर मिश्री का चूर्ण मिला कर चना प्रमाण गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1 से 4 गोली तक शहद के साथ प्रातः- सायं सेवन करनी चाहिये। ऊपर से सुखोष्ण दूध पीवें। इसके सेवन से बल- वीर्य की अत्यन्त वृद्धि होती है। प्रजनन- संस्थान के सभी विकारों को दूर करने में अत्यन्त उपयोगी है।

स्तम्भनकारी योग

कौंच के बीज, तालमखाना, बड़े गोखरू, श्वेत मूसली, काली मूसली, सेमल का मूसला, शतावर, सालमपंजा, असगन्ध, गंगेरन की छाल, विदारीकन्द, छोटी इलायची, मुलहठी, मोचरस, हल्दी और बबूल की कच्ची फली 20-20 ग्राम, छोटी पीपल, ऊँटकटेरी मूल की छाल, की जड़ , समुद्र- शोष और शिलाजीत 40-40 ग्राम, त्रिफला 50 ग्राम। सभी द्रव्यों को कूट- पीस कर कपड़छन करें और सबके वजन के बराबर मिश्री पीस कर मिलायें।

मात्रा — 4 से 8 ग्राम तक प्रातः- सायं गोदुग्ध के साथ सेवन करें। अत्यन्त बल- वीर्य वर्द्धक, स्तम्भन कारक और सभी प्रमेहों पर प्रभावकारी योग है। 3-4 मास निरन्तर सेवन करना चाहिये।

मूसली के पौष्टिक नुस्खे

वृष्य योगों में मूसली का एक महत्वपूर्ण स्थान है। प्रमेहादि रोगों और वीर्य- विकारों में मूसली का प्रयोग अधिकता से किया जाता है। यह श्वेत और काली दो प्रकार की होती है। इसका क्षुप प्रायः 60-65 सेंटीमीटर तक का, काँटेदार पत्तों से युक्त होता है। इसे तालमूली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
भी कहीं- कहीं कहते हैं। इसमें अनेक पोषण तत्व पाये जाते हैं। इसके गुण- उष्णवीर्य, मधुरपाकी, वात- पित्त नाशक है। इसका चूर्ण करने में अधिक परिश्रम करना होता है।

प्रजनन अंगों पर मूसली का बहुत अनुकूल प्रभाव देखा जाता है। शुक्रमेह, नपुंसकता, ध्वजभंग, उल्लास- भंग आदि में पर्याप्त लाभ होता है। इसमें शुक्रतारल्य दूर करने की भी क्षमता है। यहाँ इसके कतिपय योग प्रस्तुत किये जा रहे हैं —

- श्वेतमूसली को कूट- कपड़छन करके रखें।

मात्रा — आधे से एक ग्राम पर्यन्त प्रातः- सायं धारोष्ण दूध के साथ देनी चाहिये। प्रमेहजन्य उपसर्गों में अधिक हितकर है। स्त्रियों के प्रदर रोग में भी लाभकारी है।

- श्वेत मूसली चूर्ण को एक ग्राम तक की मात्रा में, थोड़े- से दूध के साथ उबाल कर और उसमें अपेक्षित मिश्री का चूर्ण मिला कर सेवन करने से स्तम्भन- शक्ति का ह्रास तथा क्लैव्य में गुणकारी होता है।
- श्वेत मूसली, शतावर, असगन्ध, मुलहठी और बबूल का गोंद समान भाग लेकर कूटें और वस्त्रपूत करें। फिर सबके वजन के बराबर मिश्री पीस कर मिला दें।

मात्रा — 5 से 10 ग्राम तक प्रातः- सायं सेवन करें और ऊपर से गुनगुना दूध पीवें। इससे स्तम्भन- शक्ति बढ़ती है। निरन्तर 2-3 महीने सेवन करने से शरीर के सभी अवयव पुष्ट हो जाते हैं।

मूसली के प्रमेहान्तक योग

मूसली सफेद, मूसली काली, शतावर, अश्वगन्ध 10-10 ग्राम, अभ्रक भस्म, लौह भस्म, वंग भस्म, प्रवाल भस्म 5-5 ग्राम। रजत भस्म 3 ग्राम, स्वर्ण भस्म 1 ग्राम। मूसली आदि काष्ठौषधियों को कूट- छान लें। भस्मों को पृथक् पीस कर, सबको एकत्र कर ठीक प्रकार से घोंट कर रखें।

मात्रा — आधे ग्राम से 1 ग्राम तक, शहद, मक्खन या मलाई के साथ सेवन करावें। ऊपर से मिश्रीयुक्त दूध पीना चाहिये। इसकी स्वल्प मात्रा ही पर्याप्त लाभकारी होती है। नपुंसकता पर अधिक हितकर है।

मूसलीयुक्त सस्ता सरल नुस्खा

श्वेत मूसली 20 ग्राम, शीतलचीनी 10 ग्राम, वंशलोचन और छोटी इलायची के बीज 5-5 ग्राम, प्रवाल भस्म और अभ्रक भस्म 2-2 ग्राम। मूसली आदि को कूट- छान कर भस्में मिलावें और खरल में ठीक प्रकार घोंट कर रखें।

मात्रा — आधा ग्राम से 1 ग्राम पर्यन्त मधु में मिला कर लेनी चाहिये। प्रमेहजन्य सभी उपसर्गों, दुर्बलता, नपुंसकता आदि में अत्यन्त हितकर है। स्त्रियों के प्रदर रोग को भी दूर करती है।

काली मूसली और उसके मिश्रित योग

काली मूसली का प्रयोग भी औषधियों में प्रायः उतना ही होता है, जितना श्वेत मूसली का अधिकांश योगों में काली और श्वेत दोनों प्रकार की मूसली समान परिमाण में डाली जाती है, जिसके कारण उस योग के भैषज्य गुण में अधिक वृद्धि हो जाती है। सामान्यतः

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दोनों के गुणों कुछ विशेष अन्तर नहीं है। वरन् जब एक का अभाव होता है, तब दूसरी, दुगुने प्रमाण में प्रयुक्त की जाती है। इसका प्रसिद्ध नाम मूसली ही है। काली मूसली, मुसरकन्द या मूसलीकन्द भी कहते हैं। इसके पुष्प लम्बे, अण्डाकार तथा चमकीले होते हैं। फल अण्डाकार, 10 सेंटीमीटर तक लम्बे होते हैं। जड़ लगभग 10 सेंटीमीटर तक लम्बी, चिपचिपी- सी तथा कुछ झुर्रीदार- सी होती हैं। औषधि- कर्म में जड़ का ही प्रयोग किया जाता है।

इस प्रकार काली मूसली भी प्रजनन- संस्थान पर अधिक अनुकूल प्रभाव डालती है। दोनों मूसलियों के साथ मिलने पर वह योग स्तम्भक और बाजीकरण प्रभाव वाला हो जाता है। यहाँ एक ऐसा ही योग लिखा जाता है, जो कि उत्तम बाजीकरण और पोषक है —

अत्यन्त लाभदायक मूसली रसायन

कृष्ण मूसली, श्वेत मूसली, बड़ा गोखरू, बीजकन्द, शतावर, सालम मिश्री, मुलहठी और समुद्रशोष 20-20 ग्राम, चिरोंजी, पिश्ता और छोटी इलायची के बीज 10-10 ग्राम, वंगभस्म, केशर और प्रवाल भस्म 5-5 ग्राम, गिलोय सत्व 50 ग्राम तथा सबके वजन के बराबर मिश्री, सभी काष्ठौषधियों को कूट- छान लें और एक- एक करके भस्म और सत्व मिला दें तथा मिश्री भी पीस कर मिला दें।

मात्रा — 3 से 6 ग्राम तक सुखोष्ण गोदुग्ध के साथ सेवन करनी चाहिये। 40 दिन तक प्रातः- सायं दोनों समय लेते रहने से सभी प्रकार के वीर्यदोष नष्ट होकर बल- वीर्य की वृद्धि होती है और स्तम्भन शक्तिप्राप्त होकर बाजीकरण की सिद्धि होती है।

शुक्रतारल्यनाशक मूसली चूर्ण

कृष्ण मूसली, सेमल का मूसला, तालमखाना, बड़ा गोखरू, असगन्ध, विधायरा, मुलहठी, ईसबगोल की भुसी और मस्तंगी 50-50 ग्राम लेकर कूटें और कपड़े में छान कर घी के चिकने पात्र में सुरक्षित रखें। सबके समान मिश्री का चूर्ण भी इसी में मिला लें अथवा सेवन करते समय चूर्ण के समान भाग में मिश्री मिला कर प्रयोग करें।

मात्रा — 4 से 8 ग्राम तक मिश्री सहित प्रातः- सायं गाय के गर्म दूध के साथ सेवन से शुक्रतारल्य एवं शीघ्रपतन आदि में हितकर है।

कामानन्द वटिका

मूसली काली, मूसली श्वेत, जायफल, जावित्री, छोटी पीपल, लौंग, अगर, अकरकरा, तज, कौंच के बीज, शुद्ध अफीम और गिलोय सत्व 10-10 ग्राम, कूट और भीमसेनी कर्पूर 20-20 ग्राम और रस सिन्दूर 40 ग्राम लेकर सभी काष्ठौषधियों को कूट- छान कर रखें। भस्मादि को अलग खरल करके डालें। रस सिन्दूर को पान के स्वरस की 3 भावनाएँ देकर इसी में मिला दें। अब इसमें 5 ग्राम रजत भस्म और 3 ग्राम स्वर्ण भस्म मिला कर क्रमशः एक- एक भावना धर्तूर स्वरस और अदरक स्वरस की दें। फिर इसमें अम्बर और कस्तूरी 2-2 ग्राम मिला कर सुखावें और अन्त में पान के स्वरस की भावना देकर बाजरे के बराबर की गोलियाँ बना कर रखें।

मात्रा — एक- एक गोली मधु के साथ सेवन करें और ऊपर से मिश्रीयुक्तगर्म दूध पीवें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सब प्रकार की दुर्बलता, वीर्य का पतलापन, वीर्यस्राव, नपुंसकता आदि में अत्यन्त हितकर और बाजीकरण है।

शतावर और उसके लाभकारी योग

आयुर्वेद में शतावर का स्थान भी विभिन्न रोगों विशिष्ट इसके द्वारा निर्मित औषधियों से पुरुषों और स्त्रियों के गुप्त रोग भी शीघ्र ठीक होते देखे गये हैं। यह मधुरपाकी, शीतवीर्य, स्वाद में मधुर और तिक्तहोती है। आयुर्वेद में ही इसे पोषक और वृष्य कहा गया है। शरीर के सभी अंगों, अवयवों को अत्यन्त बल प्रदान करती है। इसकी जड़ विशेष रूप से प्रयोग में लाई जाती है। इसकी उत्पत्ति हिमालय के पश्चिमी भाग हिमाचल प्रदेश एवं पंजाब में अधिक होती है। वैसे, भारतवर्ष में सर्वत्र पाई जाती है। शाखाओं पर काँटे होते हैं, पत्ते महीन तथा पुष्प श्वेत वर्ण के होते हैं।

शतावर का प्रयोग चूर्ण, घृत, पाक, मोदक, वटी आदि के रूप में किया जाता है। शुक्राल्पता, शुक्र- तारल्य, नपुंसकत्व, शीघ्रक्षरण प्रभृति रोगों के समन में इस वनस्पति का अत्यन्त योगदान है। यहाँ शतावर के ऐसे ही प्रयोगों का व र्णन किया जा रहा है, जो शरीर में बल- वृद्धि करते और इन्द्रिय- शैथिल्य आदि में लाभकर सिद्ध होते हैं।

लालमेह नाशक शतावर्यादि कषाय

शतावर, मुलहठी, बड़े गोखरू, बला के बीज समान भाग 1-1 ग्राम लेकर पानी के साथ घोट कर शीत कषाय बनावें। इसका सेवन मधु मिश्रित करके प्रातःकाल करना चाहिये। इससे प्रमेह के अनेक उपसर्ग ठीक होते हैं। लालमेह में अधिक लाभकारी है। पित्तज, गुल्म, रक्तपित्त, अम्लपित्त तथा सुजाक आदि में भी हितकर है।

शुक्रमेहादि में शतावरी घृत

शतावर का स्वरस और गाय का दूध 4-4 भाग, घृत 1 भाग तथा शतावर का कल्क चौथाई भाग। सबको अग्नि पर पकावें और घृत मात्र शेष रहने पर उतार कर छान लें तथा ठंडा होने पर चीनी या काँच के पात्र में भर कर रखें।

मात्रा — 1 चम्मच से 3 चम्मच तक शुक्रमेह, लालमेह तथा नपुंसकता आदि में अत्यन्त हितकर है।

इन्द्रिय- दौर्बल्य में मदनमंजरी वटिका

शतावर, नागकेशर, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, जायफल, जावित्री, नागकेशर, छोटी इलायची, तज, पत्रज तथा वंगभस्म 2-2 ग्राम, सोंठ, काली मिर्च और छोटी पीपल 4-4 भाग तथा शोधित पारद 1 भाग लें। सभी काष्ठोषधियों को कूट- छान लें और खरल में डाल कर पारद भी मिला दें। ठीक प्रकार से खरल करके, उसमें शहद मिला कर खरल करें और चना प्रमाण गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1 से 2 गोली तक रोगी का बलाबल देखकर प्रातः- सायं सेवन करावें और ऊपर से मिश्रीयुक्त गोदुग्ध पिलावें। इसके कुछ दिन सेवन करने से ही इन्द्रिय की दुर्बलता और वीर्य- दोषों का शमन होता है। इससे शरीर में उत्साह और स्फूर्ति आती है। स्तम्भनार्थ भी यह अधिक लाभकारी है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

खोए में प्रक्षिप्त द्रव्यों का चूर्ण मिला कर, बर्फी जैसी जमा लें। इसकी 10-10 ग्राम की कतलियाँ काट लें।

मात्रा — 1-1 कतली प्रातः- सायं सेवन करें। ऊपर से धारोष्ण दूध पीवें। इससे अत्यन्त शक्ति बढ़ती है और सभीवीर्य- विकार दूर होते हैं। शुक्रतारल्य, नपुंसकता आदि में अत्यन्त हितकर है।

शतावर मिश्रित अन्य पोषक योग

- शतावर, असगन्ध, पुनर्नवा, बड़े गोखरू, श्वेत मूसली, नागबला, सभी समान भाग लेकर कूट- कपड़छन कर लें। 5 से 10 ग्राम की मात्रा में धारोष्ण अथवा सुखोष्ण दूध के साथ सेवन करें। अपेक्षित मिश्री मिला कर प्रातः- सायं लेते रहने से सब प्रकार के प्रमेह और उनके उपसर्ग दूर होते हैं। दुर्बल पुरुषों के लिये अमृततुल्य है।
- शतावर, असगन्ध, कौंच के बीज, श्वेत मूसली, काली मूसली, छोटी पीपल, छोटी इलायची के बीज और तालमखाना, सब समान भाग लेकर कपड़छन चूर्ण बनावें।

मात्रा — 5 से 8 ग्राम तक प्रातः- सायं मिश्रीयुक्त गोदुग्ध के साथ सेवन करने से प्रजनन अंग की दुर्बलता दूर होती और हर्ष को प्राप्त होने पर बाजीकरण की शक्ति प्राप्त होती है।

- शतावर, गोखरू, तालमखाना, नागबाला अतिबला और कौंच के बीज समान भाग लेकर कूट- कपड़छन करके सुरक्षित रखें।

मात्रा — 3 से 6 ग्राम यह चूर्ण मिश्रीयुक्त दुग्ध के साथ प्रातः- सायं सेवन करें। इससे अशक्त (अतृप्त) पुरुष भी कामोत्तेजना की वृद्धि होने के कारण तृप्त हो जाता है। सब प्रकार की नपुंसकता इससे दूर होती है।

- शतावर का चूर्ण 8 से 12 ग्राम तक की मात्रा में लेकर आधे लीटर दूध में डाल कर पकावें। जब चौथाई दूध जल कर गाढ़ा हो जाय, तब इसमें आवश्यकतानुसार मिश्री का चूर्ण मिला कर संगमेच्छा से पहले सेवन करें। इससे उत्तेजना बढ़ कर स्तम्भन और बाजीकरण होता है।
- शतावर, सोंठ, छोटी पीपल, मुलहठी, काली मूसली, तालमखाना और ईसबगोल समान भाग लेकर, कूट- कपड़छन कर बोतल में भरकर रखें।
- **मात्रा** — 5-6 ग्राम इस चूर्ण में समान भाग मिश्री का चूर्ण मिला कर अधोंटा ओंटाने पर आधा शेष रहे दूध के साथ सेवन करनी चाहिये। इससे सभी प्रकार के प्रमेह और उनके उपसर्ग दूर होते हैं, शरीर में बल- वीर्य और स्फूर्ति- स्मृति की वृद्धि होती है। प्रमेह के अतिरिक्त यह दवा श्वास- खाँसी में भी आशातीत लाभ दिखाती है।
- शतावरं के चूर्ण में समान भाग श्वेत चिरमिटी का चूर्ण मिला कर 3 से 5 ग्राम तक की मात्रा में मिश्रीयुक्त दूध के साथ सेवन करना चाहिये। इस प्रयोग से कामोत्तेजना और समागन शक्ति की पर्याप्त वृद्धि होती है।

धातुतारल्य नाशक शतावर्यादि चूर्ण

शतावर 60 ग्राम, कौंच के बीज काली मूसली और श्वेत मूसली 50-50 ग्राम, तालमखाना, बड़े गोखरू, वरियारी, तोदरी और गुलसकरी 40-40 ग्राम। सबको कूट- पीस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कर कपड़छन करें और सुरक्षित रखें।

मात्रा — 5 से 10 ग्राम तक प्रातःकाल धारोष्ण दूध के साथ सेवन करें। निरन्तर कुछ सप्ताह प्रयोग करने शुक्र तारल्य में पर्याप्त लाभ सम्भव है। मूत्र के साथ धातु स्राव, स्वप्नदोष तथा प्रमेहजन्य अन्यान्य उपसर्गों में इससे आशातीत लाभ होता है।

शुक्रशोधक शतावर्यादि घृत

शतावर को जल के साथ पीस कर कल्क बनावें, फिर इसे दस गुने दूध के साथ औटावें तथा चौथाई शेष रहने पर उतार कर छान लें और क्वाथ शेष बराबर गोघृत डाल पुनः अग्नि दें। घृत मात्र शेष रहने पर छान कर चीनी या काँच के पात्र में भर कर सुरक्षित रखें।

मात्रा — 1 से 3 ग्राम तक बलाबल देख कर लेना चाहिये। इसके सेवन से सभी प्रकार के वीर्य- दोष दूर होते हैं। दूषित वीर्य के शोधन में यह घृत बहुत उपयोगी है। इससे महिलाओं के आर्तव दोष अथवा रज सम्बन्धी विकारों का भी परिहार होता है।

स्तम्भन शक्ति एवं बाजीकरण की सिद्धि में भी यह घृत अत्यन्त लाभप्रद पाया गया है। इस उद्देश्य से इसका सेवन छोटी पीपल का चूर्ण, मिश्री का चूर्ण मिला कर शहद के साथ करना चाहिये। इस प्रकार यह अधिक कामोत्तेजक हो जाता है।

बलवीर्य वर्धक शतावर्यादि पाक

शतावर 250 ग्राम, खिरेंटी 100 ग्राम लेकर कूट- छान लें। फिर 4 लीटर गाय का दूध लें। इस चूर्ण को उसमें डाल कर खोआ बनावें। अब बड़े गोखरू, जावित्री, जायफल, लौंग, छोटी इलायची के बीज, छोटी पीपल, आमला, नागकेशर और दालचीनी 10-10 ग्राम तथा केशर 5 ग्राम को पीस- छान कर रखें। तत्पश्चात् गोघृत 250 ग्राम में चूर्णयुक्त खोए को भूनें, जब लाल हो जाय तब उसमें यह प्रक्षेप द्रव्यों वाला चूर्ण भी मिला कर उतार लें तथा ढाई किलोग्राम मिश्री को चाशनी बना कर इसमें मिलाएँ और कतली जमाएँ अथवा 20-20 ग्राम के मोदक बना कर रखें।

मात्रा — 1 या दो मोदक नित्य सेवन करें। ऊपर से गाय का दूध पीवें। इसके सेवन से सब प्रकार के प्रमेह तथा उससे उत्पन्न उपद्रव, अशक्ति आदि में पूर्ण लाभ होता है।

मुलहठी और उसके उत्कृष्ट प्रयोग

मुलहठी अपने अनेक विशिष्ट गुणों के कारण अद्वितीय है। आयुर्वेद में इसकी मान्यता विषन्घी, वर्ण- शोधनी, पुष्टिकरणी आदि के रूप में की गई है। चरक ने इसे सन्धानीय वर्ग में प्रथम स्थान देकर महत्ता स्वीकार की है। आयुर्वेद के अतिरिक्त अन्य चिकित्साविधियों में भी इसके गुणों की मान्यता कम नहीं है। यूनानी और एलोपैथी में इसका व्यवहार अनेक योगों में किया जाता है।

मुलहठी को संस्कृत में मधुयष्टि, जलयष्टि, स्थलयष्टि, यष्टिमधु आदि अनेक नाम दिये गये हैं। अँग्रेजी में लिक्वोराइस रूट और लैटिन में ग्लाइसराइजा ग्लेबरा कहा जाता है। इसके क्षुप में छोटे व गोल पत्ते तथा लाल रंग के पुष्प लगते हैं। फलियाँ छोटी, महीन होती हैं। जड़ गोल, लम्बी तथा पीतवर्ण की होती है। स्वाद में मिठास होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

यह पानी में भी उत्पन्न होती है, भूमि में भी। भारतवर्ष, अफगानिस्तान, वर्मा आदि में उत्पन्न होती है। इसका प्रयोग भारतवर्ष, के अतिरिक्त अन्यान्य देशों में भी पुराकाल से ही किया जाता रहा है। आयुर्वेद के मत में यह महौषधि स्निग्ध, शुक्र बढ़ाने वाली, व्रण शोधक, विषनाशक, क्षयनाशक तथा स्वर शोधक है। केश- संरक्षक, नेत्रों को हितकर, मूत्रल, मधुर पौष्टिक तथा वात, पित्त, कफ, तीनों दोषों की शामक तथा निस्सारक है। यूनानी एवं ऐलोपैथी में भी उक्त गुणों से समानता रखने वाले गुण माने गये हैं।

हमारे अधिकांश योगों में मुलहठी की जड़ ग्रहण की गई है। ऐलोपैथी में भी मुलहठी का चूर्ण (पाउडर), टिंचर (सत्व), सुरासार आदि के रूप में प्रयोग किया जाता है। यद्यपि इसके विषय में बहुत कुछ कहा गया है, किन्तु स्थानाभाव से यहाँ इसके उन प्रयोगों पर ही चर्चा की जा रही है, जो प्रमेहजन्य उपसर्गों से सम्बन्धित एवं लाभकारी होते हैं।

प्रमेहादि में उपयोगी नुस्खे

- मुलहठी के चूर्ण को शहद के साथ सेवन करने से क़ब्ज दूर होता है, वीर्य- दोषों का शमन होता है और मन प्रसन्न रहता है।
- मुलहठी का टुकड़ा मुख में रख कर, दाँतों से दबा कर रस चूँसते रहने से कफ का शोधन होता और खाँसी में लाभ के साथ पुष्टि और हर्ष की वृद्धि होती है।
- श्वास- नलिका के दोषों को दूर करने में मुलहठी अत्यन्त प्रभावकारी है। उसके सेवन से प्रजनन संस्थान पर भी अनुकूल प्रभाव होता है। इसके लिये मुलहठी का काढ़ा बना कर, ठंडा होने पर मधु के साथ सेवन करना चाहिये। इसके लिये मुलहठी का चूर्ण एक चम्मच, मिश्री दो चम्मच तथा अठगुना पानी लेकर, आग पर रखें और चौथाई जल जाने पर प्रयोग में लावें। दोष और बलाबल के अनुसार इस मात्रा में परिवर्तन किया जा सकता है।
- मुलहठी का चूर्ण 2 ग्राम की मात्रा में रात्रि के समय सुखोष्ण दूध के साथ सेवन करने से उक्त गुणों की प्राप्ति सम्भव है।

रसायनिक गुण- सम्पन्न मधुयष्टि चूर्ण

मुलहठी का चूर्ण 20-25 ग्राम लेकर दूध के साथ माँड़ें और बाटी- सी बना कर, गोघृत के साथ आग पर तल लें और फिर शहद में डुबो दें। इस रासायनिक प्रभाव वाले द्रव्य को 3 से 6 ग्राम की मात्रा में सेवन करके, ऊपर से दूध पीवें। इससे शरीर में बल- वीर्य की वृद्धि और अनेक उपसर्गों का शमन होता है।

अत्यन्त पुष्टिकर योग

मुलहठी का चूर्ण 2 ग्राम, शहद 5 ग्राम, गाय का घी 10 ग्राम लेकर एकत्र करें। इसका सेवन करके ऊपर से सुखोष्ण गोदुग्ध पीना चाहिये। इसके सेवन से शुक्र- तारल्य, शुक्र की न्यूनता, पुरुषत्व का ह्रास आदि में पर्याप्त लाभ होता है तथा स्तम्भन एवं बाजीकरण की सिद्धि होती है। प्रमेहजन्य सभी उपसर्ग दूर होते हैं। कब्ज का निवारण होने के कारण मन में उल्लास बना रहता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमेह निवारणार्थ सरल मधुयष्टि योग

मुलहठी 1 भाग, मिश्री 4 भाग, पीस- छान कर रख लें। रोग और रोगी की स्थिति के अनुरूप 3 से 5 ग्राम तक की मात्रा में शहद के साथ सेवन करने से प्रमेहजन्य उपसर्ग दूर होते हैं। यदि इसी योग को स्त्रीरोग के शमनार्थ देना हो तो चावल के माँड के साथ देना चाहिये। प्रदर और उसके अन्य उपसर्ग , अशक्ति, कान्तिहीनता आदि में लाभ करता है

अत्यन्त पुष्टिदायक मधुयष्टि वटिका

मुलहठी, बड़े गोखरू, सोंठ, छोटी पीपल, असगन्ध, बिदारीकन्द और छोटी इलायची के बीज 15-15 ग्राम, अभ्रक भस्म, वंग भस्म, ताम्र भस्म और रजत भस्म 10-10 ग्राम तथा स्वर्ण भस्म 2 ग्राम लें। मुलहठी आदि काष्ठौषधियों को कूट- छान लें। फिर उसमें सभी भस्में मिला दें। अब इसमें क्रमशः एक- एक भावना विदारीकन्द- स्वरस, मेंहदी- स्वरस, धर्तूरफल - स्वरस और केसर जल की देते हुए सुखायें और अन्त में पुनः विदारीकन्द स्वरस की भावना देकर चना प्रमाण गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1-2 गोली पीस कर मधु के साथ सेवन करके ऊपर से मिश्रीयुक्त गुनगुना दूध पीना चाहिये। इसके निरन्तर प्रयोग से सभी प्रकार की वीर्यदोषदजन्य अशक्ति में लाभ होता है। बल- वीर्य की वृद्धि करने वाली इस महौषधि से श्वास- कास तथा पाण्डु रोग का भी शमन होता है।

कामोद्दीपक मधुयष्टयादि वटी

मुलहठी, जायफल, गुठली रहित खजूर, किशमिश और मिश्री 30-30 ग्राम, दालचीनी, छोटी इलायची, छोटी पीपल, तेजपात और वंश लोचन 15-15 ग्राम लें। सबको कूट- पीस कर कपड़छन करके रखें और फिर इसमें वंगभस्म, प्रवालभस्म और लौहभस्म 3-3 ग्राम मिलावें।

मुलहठी आदि काष्ठौषधियों को कूट- छान कर सभी भस्में मिलायें और मुलहठी के ही क्वाथ में बबूल का किंचित् गोंद डाल कर खरल करते हुए 1-1 ग्राम की गोलियाँ बना लें। **मात्रा** — एक- एक गोली प्रातः- सायं सेवन करके ऊपर से गाय का दूध पीवें। इसके प्रयोग से प्रमेहजन्य क्षीणता, धातु- तारल्य एवं संगमेच्छा का ह्रास आदि दूर होकर बल- वीर्य की वृद्धि तथा स्तम्भन शक्ति की प्राप्ति होती है। श्वास, कास, चक्कर, मूर्च्छा, उरःक्षत आदि में भी अत्यन्त उपयोगी है।

बाजीकरण मधुयष्टयादि चूर्ण

मुलहठी (मधुयष्टि) 30 ग्राम, शतावर, श्वेत मूसली, कृष्ण मूसली, बबूल का गोंद, ढाक का गोंद, तालमखाना और असगन्ध 20-20 ग्राम। सबके वजन के बराबर मुलहठी (मधुयष्टि)। सभी को पीस- छान कर सुरक्षित रखें।

मात्रा — 6 से 10 ग्राम तक यह चूर्ण खाकर ऊपर से सुखोष्ण गोदुग्ध पीना चाहिये। इसका सेवन निरन्तर दो- तीन मास करते रहने से शरीर में बल- वीर्य की अत्यन्त वृद्धि होती है। स्तम्भन और बाजीकरण प्रभाव उत्पन्न करने वाला यह योग बहुत सरल और लाभकारी है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

विदारीकन्द और प्रजनन- तन्त्र

आयुर्वेदज्ञों ने विदारीकन्द को वात- पित्त- रक्तजन्य विकारों का शामक तथा बलकारी रसायन गुण वाली वनस्पति के रूप में स्वीकार किया है। संस्कृत में इसके विदारी, विदारिका, शुक्ला, त्रिपणी, वृष्यकन्दा, क्षीरशुक्ला आदि अनेक नाम हैं। हिन्दी में भी विदारीकन्द, विलाईकन्द, भुई कुम्भड़ा, पाताल कोहड़ा आदि नाम कहे जाते हैं। लैटिन में इपोमोइया, प्यूरेरिया, ट्युबरोसा आदि अनेक नाम मिलते हैं।

यह अधिक विस्तार में फैलने वाली लता जाति की सामयिक वनस्पति है जोकि भारतवर्ष के पश्चिम हिमालय, शिमला, कोंकण, विन्ध्याचल आदि के पहाड़ों पर पाई जाती है। दक्षिण में तथा नेपाल आदि देशों में भी उत्पन्न होती है। इसका डंठल काष्ठ जैसा, कुछ पोला- सा, लकड़ी छिद्रयुक्त तथा छाल भूरी- सी, एक- डेढ़ सेंटीमीटर तक मोटी होती है। प्रत्येक डंठल तीन- तीन पत्ते के होते हैं, इन डंठलों के अन्त में बैंगनी वर्ण मिश्रित नीले पुष्प होते हैं। फलियाँ 5-7 सेंटीमीटर लम्बी होती हैं। इस लता के मूल में पृथिवी में घुसा हुआ कन्द होता है, वही विदारीकन्द के नाम से औषधि- कर्म में प्रयुक्त होता है।

विदारीकन्द गुण में मधुर, शीतल, पौष्टिक, वीर्यवर्धक, स्वरशोधक, शरीर के वर्ण को निखारने वाला, कान्तिदायक, वात, पित्त, कफ, रक्त, दाह आदि का शामक, रुचिकर, मूत्रल तथा स्त्रियों के स्तनों में दुग्ध वर्धक और गर्भदाता है। यूनानी मत में भी इसे ओजदायक, बलकारी, भूख लगाने वाला, प्रमेह नाशक, कुष्ठ नाशक, वात और कफ के विकारों का शमन करने वाला है। वीर्य- विकारों को दूर करने वाले कतिपय योग यहाँ प्रस्तुत हैं।

विदारीकन्द के वीर्यवर्द्धक योग

- विदारीकन्द का चूर्ण असमान भाग शहद और घी के साथ सेवन करें और ऊपर से धारोष्ण अथवा सुखोष्ण दूध का पान करें। इसकी मात्रा 6 ग्राम से 12 ग्राम तक लें। शरीर में बल- वीर्य की पुष्टि होती है और प्रमेहजन्य अनेक उपसर्गों में लाभ होता है।
- विदारीकन्द का महीन चूर्ण, वस्त्रपूत करके, विदारीकन्द के ही स्वरस की 21 भावनाएँ दें। इससे इसमें रसायन गुणों की उत्पत्ति होती है।

मात्रा — 2 ग्राम से 5 ग्राम तक बलाबल के अनुसार सेवन करने से प्रमेहजनित सभी वीर्यदोष नष्ट होते हैं।

- विदारीकन्द का पिसा- छना चूर्ण विदारीकन्द के ही स्वरस की 21 भावनाएँ देकर रखें और उसमें समान भाग गिलोय का कपड़छन चूर्ण मिलायें और फिर गिलोय के स्वरस की सात भावनाएँ दें।

मात्रा — 4 से 8 ग्राम, प्रातः- सायं शहद के साथ सेवन करके, ऊपर से गर्म दूध मिश्रीयुक्त का पान करें। प्रजनन- संस्थान पर इससे अनुकूल प्रभाव पड़ता है। वीर्य का शोधन एवं पुष्टि होती है।

- विदारीकन्द का स्वरस 4-5 बड़े चम्मच भर लेकर उसमें किंचित श्वेत जीरे का चूर्ण डालें। इसके सेवन से सभी प्रकार के प्रमेहजन्य उपसर्गों में लाभ होता है।
- विदारीकन्द का चूर्ण मक्खन- मिश्री मिला कर सेवन करने से अत्यन्त पोषक गुण उत्पन्न करता है। निर्बल और भेद- माँस रहित रोगियों में मेदवृद्धि करता है तथा बल- वीर्य की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

वृद्धि में सहायक होता है। स्त्रियों को भी हितकारी है, उनके अनियमित मासिक धर्म को नियमित करने में सक्षम है। देहकान्ति की भी वृद्धि करता है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्बलता पर अत्यन्त गुणकारी औषधि

- विदारीकन्द 2 भाग, मूसली श्वेत, मूसली काली, असगन्ध, आमला, शतावर, मस्तंगी, तालमखाना, बीजबन्द, बहमन श्वेत, बहमन लाल, छोटी इलायची, छोटी पीपल, दालचीनी और ईसबगोल 1-1 भाग, मिश्री सबके वजन के बराबर लें। सभी दवाओं को कूट- छान कर सुरक्षित रखें।

मात्रा — 6 से 12 ग्राम तक, धारोष्ण दूध के साथ सेवन करें। धारोष्ण दूध के अभाव में गर्म दूध का प्रयोग करें। सब प्रकार की शारीरिक निर्बलता, वीर्य- विकार, उल्लास की कमी आदि में अत्यन्त हितकर है।

प्रमेह पर सरल नुस्खा

विदारीकन्द का कुटा- छना चूर्ण 10-15 ग्राम तक की मात्रा में लेकर गूलर के स्वरस में मिला कर सेवन करें तथा ऊपर से घृत मिला हुआ, मिश्रीयुक्त दूध पीवें। इससे शरीर में पर्याप्त बल बढ़ता है। सभी वीर्य- विकारों में हितकर है। प्रमेहजन्य दुर्बलता में बहुत काम करता है। इसके प्रभाव से स्त्री- संसर्ग में अरुचि भी दूर होकर, समागम क्षमता प्राप्त होती है।

परम पुष्टिदायक स्तम्भक योग

विदारीकन्द का कूट कपड़छन किया हुआ चूर्ण पावभर लेकर ताजा विदारीकन्द चौगुने स्वरस के साथ किसी काष्ठ के पात्र कठौती आदि में भिगोवें और उस पात्र को किसी ऐसे स्थान पर रखें, जिससे कि उस पर दिन में धूप तथा रात्रि में चन्द्रमा की चाँदनी पड़ सके। कठौती के इस द्रव्य को काष्ठ के डंडे से ही नित्यप्रति चला दिया करें। इस प्रकार करते- करते एक दिन वह रस सूख कर औषधि मात्र शेष रह जायेगा। तब खरल में घोट कर काँच के पात्र में रखें।

मात्रा —इस औषधि 3 से 6 ग्राम तक को मिश्रीयुक्त सुखोष्ण दूध के साथ सेवन करना चाहिये। सर्व प्रमेह नाशक, बल- वीर्य वर्धक तथा रसायन गुण से युक्त, बाजीकरण करने वाली श्रेष्ठ औषधि है।

वातज प्रमेह में हितकर एवं पौष्टिक योग

उपर्युक्त प्रकार से सिद्ध किये हुए विदारीकन्द चूर्ण में समान भाग असगन्ध का चूर्ण मिलायें।

मात्रा — 3 से 6 ग्राम तक मिश्री मिले दूध के साथ लेनी चाहिये। इससे सब प्रकार के वातज प्रमेह नष्ट होते हैं तथा अन्यान्य प्रमेहज विकारों में भी उपयोगी है। शुक्रतारल्य, शुक्राभाव एवं दौर्बल्य में शीघ्र प्रभाव दिखाता है। वात रोगों एवं सन्धिवात आदि में भी उपयोगी औषधि है।

शक्तिदाता महामन्मथ रसायन

विदारीकन्द, विधायरा, बीजबन्द, कौंच के बीज, श्वेत जीरा, तालमखाना, शतावर,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
जावित्री, जायफल, लौंग, अतीस, श्वेत राल, अजवायन और भाँग के बीज 6- 6 ग्राम, भीमसेनी कर्पूर और वंगभस्म 10- 10 ग्राम, ताम्रभस्म 5 ग्राम, लौह भस्म 15 ग्राम, वज्राभ्रक भस्म 25 ग्राम तथा शुद्ध पारद और शुद्ध गन्धक 20- 20 ग्राम।

सभी काष्ठौषधियों को कूट- छान लें। पारद और गन्धक को खरल में मिला कर कज्जली बनावें। फिर सभी भस्मों को मिला कर भले प्रकार खरल करके उसमें क्रमशः एक- एक भावना आमला स्वरस, दूर्बा स्वरस, कमल स्वरस, गुलाबजल और गोदुग्ध की देकर चूर्ण रूप में ही रखें अथवा चना प्रमाण गोलियाँ बना कर छाया में सुखा लें।

मात्रा — 1- 2 गोली तक, मिश्री युक्त सुखोष्ण दूध के साथ सेवन करें। सब प्रकार के प्रमेहजन्य उपसर्गों में शीघ्र प्रभाव दिखाता है। दुर्बलता के कारण समागम में अरुचि को दूर करता तथा शरीर में बल- वीर्य की अत्यन्त वृद्धि करके स्तम्भन गुण उत्पन्न करता है। बाजीकरण हेतु यह योग बहुत उत्तम एवं सद्यः फलदायक है।

सरल बाजीकरण रसायन

विदारीकन्द 20 ग्राम, शतावर, शंखपुष्पी, ब्राह्मी, कीकर (बबूल) की फली, तालमखाना, बड़े गोखरू, विधायरा और बादाम की मिंगी 10- 10 ग्राम तथा सबके वजन के बराबर मिश्री। सभी काष्टादि को कूट- कपड़छन करें और मिश्री को पृथक् कूट कर मिला दें।

मात्रा — 3- 4 ग्राम गोदुग्ध के साथ प्रातः- सायं सेवन करें। इससे सब प्रकार के प्रमेह, वीर्यदोष तथा दुर्बलता आदि में शीघ्र लाभ होता और निरन्तर सेवन करने से बाजीकरण की सिद्धि होती है।

शुक्रदोष निवारक सरल औषधि

विदारीकन्द, विधायरा और कौंच के बीज समान भाग लेकर कूट- छान कर घृत के चिकने पात्र में रखें। किंचित गोघृत मिला दें तो और भी उत्तम। किन्तु घृत इतना अधिक न डालें कि औषधि घृत में लिप्त हो जाय।

मात्रा — 3 से 6 ग्राम तक प्रातः- सायं सेवन करें और मिश्री मिला हुआ गोदुग्ध पान करें। यह रसायन गुण वाली महौषधि है, जो कि सभी प्रकार के शुक्र दोषों को और अशक्ति को दूर करती है। 2-3 मास सेवन करने पर आशातीत गुण दिखाती है।

शक्तिदाता विदारी चूर्ण

विदारीकन्द, सेमल की मूसली और चिरैयाकन्द, तीनों समान भाग लेकर, कूट- कपड़छन कर रखें।

मात्रा — 3 से 6 ग्राम तक सुबह शाम मिश्रीयुक्त, दूध के साथ सेवन करनी चाहिये। यह औषधि भी कुछ सप्ताह तक निरन्तर प्रयोग करने पर प्रमेह के सभी उपसर्गों पर, विशेषकर प्रजनेन्द्रिय की दुर्बलता पर बहुत लाभकारी रहती है।

क्लैव्य- नाशक चूर्ण

विदारीकन्द 20 ग्राम, मुलहठी, श्वेत मूसली, काली मूसली, सेमल की मूसली, शतावर और विधायरा 10- 10 ग्राम लेकर सबको कूट- छान लें तथा वंगभस्म, अभ्रकभस्म, प्रवालभस्म और शुद्ध शिलाजीत 2- 2 ग्राम, अलग खरल करके, चूर्ण में ही मिलावें और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
ठीक प्रकार घोट कर, घृत के चिकने पात्र में सुरक्षित रखें। किन्तु अलग घृत न डालें।

मात्रा — 2-3 ग्राम यह दवा शहद में मिला कर सुबह- शाम सेवन करें और ऊपर से मिश्रीयुक्त दूध पीवें। यह महौषधि निरन्तर 40 दिन सेवन कर ली जाय तो शरीर में किसी भी प्रकार की अशक्ति, क्लीवता, लिंगोत्थान की कमी आदि विकारों को दूर करेगी और स्तम्भन- शक्ति प्राप्त करायेगी। प्रमेहजन्य सभी उपसर्गों में हितकर है।

विदारीकन्द के विभिन्न शक्तिवर्द्धक योग

विदारीकन्द का चूर्ण विभिन्न रोगों में, विभिन्न वनौषधियों के संयोग से सेवन करने पर, सम्बन्धित रोग में अत्यन्त हितकर सिद्ध होता है। कुछ रोगों में इसका स्वरस भी प्रयोग किया जाता है। रोग और उसके उपसर्ग के अनुसार सेवन विधि और अनुपान का निर्णय आवश्यक है, जो कि किसी कुशल चिकित्सक के निर्देश पर होना चाहिये। फिर भी, कुछ प्रयोग यहाँ प्रस्तुत किये जाते हैं —

- विदारीकन्द के साथ सम भाग शतावर मिला कर चूर्ण करें और 3 से 6 ग्राम तक की मात्रा में शहद के साथ सेवन करें। ऊपर से मिश्रीयुक्त दूध पीवें तो वीर्यदोषों में हितकर है।
- विदारीकन्द, गोखरू, नागकेशर और मुलहठी का काढ़ा शहद मिला कर सेवन करने से मूत्रकृच्छ (सुजाक) में लाभ होता है।
- रक्तार्श (खूनी बवासीर) में विदारीकन्द का चूर्ण सम मात्रा में तिल कूटे हुए मिला कर 3 से 6 ग्राम की मात्रा में मधु के साथ सेवन करें और ऊपर से गर्म दूध पीवें। शीघ्र प्रभावकारी सिद्ध होगा।
- विदारीकन्द का चूर्ण जिगर- तिल्ली की वृद्धि में भी अपना अभूतपूर्व गुण दिखाता है। रोग की स्थिति के अनुसार अनुपान का निर्णय करें।
- विदारीकन्द के स्वरस में मिश्री मिला कर पीने से वात- विकार और तत्सम्बन्धी पीड़ा दूर होती है।
- विदारीकन्द 60 ग्राम, पीपलामूल, दालचीनी, छोटी इलायची, जावित्री, जायफल और लौंग 10- 10 ग्राम, सोंठ 30 ग्राम तथा मिश्री 150 ग्राम लें। विदारीकन्द को कूट- छान लें और सबको साथ भूनें फिर अन्य द्रव्यों को भी कूट- छान लें और सबको एकत्र करके गोघृत के साथ ही भली प्रकार घोट कर 6- 6 ग्राम के वटक बना लें।

मात्रा — 1- 2 वटक प्रातः- सायं सेवन करके ऊपर से दूध पीवें। इससे बहुमूत्र में आशातीत लाभ होता है।

- विदारीकन्द के चूर्ण को जल के साथ पीस कर मस्तक पर लेप करने से सिरदर्द दूर होता है।
- विदारीकन्द का चूर्ण असमान भाग शहद और घी के साथ सेवन कराने से स्त्रियों के प्रदर रोग में लाभ होता है।
- विदारीकन्द का चूर्ण आधे से एक ग्राम की मात्रा में शहद के साथ बालक को चटाने से उसकी शारीरिक दुर्बलता दूर होगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- विदारीकन्द का चूर्ण, पीपल का समान भाग चूर्ण मिला कर शहद के साथ चटाने से बालक की पाचनशक्ति ठीक होती है।
- विदारीकन्द का चूर्ण मुनक्का के साथ खिलाने से बालक का शरीर पुष्ट होता है। उचित मात्रा में वयस्क पुरुषों को भी विदारीकन्द चूर्ण में मुनक्का मिला कर सेवन कराई जाय तो उनकी भी दुर्बलता दूर होगी तथा कब्ज भी नहीं रहेगा।
- विदारीकन्द के चूर्ण को गेहूँ और जौ के आटे के साथ सम भाग मिला कर असमान भाग शहद और घी तथा दूध के साथ देने से अन्न- पाचन ठीक प्रकार से होकर शारीरिक शक्ति बढ़ती है। अथवा विदारीकन्द, गेहूँ और जौ के समान भाग आटे को दूध के साथ माड़ कर घृत के साथ पकावें और भोज्य पदार्थ का रूप लेने पर शहद के साथ 10 ग्राम तक की मात्रा में सेवन करें।

विदारीकन्द का चूर्ण मिश्रीयुक्त दूध के साथ सेवन कराने से स्त्रियों के स्तनों में दूध की वृद्धि होती है। यदि प्रत्येक मात्रा में थोड़ी- सी लौहभस्म भी मिला कर दें तो अधिक लाभकर होगा।

विदारीकन्द का चूर्ण, शतावर का चूर्ण समान भाग लेकर उसमें दोनों के बराबर मिश्री का चूर्ण डाल कर घृत के साथ भूनते हुए, परिपाक कर उतार लें और उसके मोदक बना लें। एक मोदक प्रातः- सायं सेवन करने से बल- वीर्य की वृद्धि होती है।

क्षीरविदारी और उसके प्रयोग

क्षीरविदारी विदारीकन्द के समान ही गुणकारी है, वरन् उससे भी अधिक आशुफलकारी होने के कारण अनेक विद्वान्, वैद्य विदारीकन्द के स्थान पर क्षीरविदारी का उपयोग करते हैं। यह वनस्पति वृष्य, स्निग्ध, मधुर, शीतल, कफ करने वाली, रूक्ष, मूत्रल, स्वर- शोधक, धातुवर्धक, पुष्टिवर्धक, नारी- स्तनों में दुग्ध बढ़ाने वाली, गर्भदात्री, गर्भरक्षक तथा वातज और पित्तज विकारों का शमन करने वाली है। कण्ठ- स्वर का शोधन करने में भी उत्तम तथा माधुर्य उत्पन्न करने में समर्थ है। गायकों के लिये भी हितकर है।

श्वेतता युक्त होने के कारण इसका नाम श्वेत विदारी भी है। क्षीरकन्द, विलाईकन्द, इक्षुगन्धा, पयस्विनी, महाश्वेता, शुक्ला, दुग्धविदारी, क्षीरवल्ली, क्षीरकन्दा आदि नामों से इसके गुण, स्वभाव और वर्णादि ज्ञान सहज ही हो जाता है। अब, यहाँ इस महौषधि गुणवाली वनस्पति के कुछ प्रयोग प्रस्तुत हैं —

- क्षीरविदारी का चूर्ण 10-12 ग्राम तक की मात्रा में गाय का ताजा घी मिला कर, दूध के साथ सेवन करें तो शुक्रदोष दूर होकर शरीर में बल- वीर्य की वृद्धि और पुष्टि होती है। प्रातः- सायं दोनों समय सेवन करनी चाहिये। निरन्तर चार- छः सप्ताह प्रयोग करें।
- क्षीरविदारी का चूर्ण दूध के साथ ठण्डाई की तरह पीसें और साथ ही मिश्री भी मिला दें। इसके प्रातः- सायं सेवन करने प्रसूता स्त्री का स्वास्थ्य उत्तम होता है और उसके स्तनों में दूध बढ़ता है। पुरुषों में प्रमेहजन्य विकारों का निवारण और शक्ति वृद्धि होती है।
- विशूचिका (हैजा) के पश्चात् रोगी को जिस दुर्बलता का अनुभव होता है, उसमें भी विदारीकन्द का सेवन लाभदायक है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- क्षीरविदारी चूर्ण को गेहूँ के आटे के साथ मिला कर पाक- विधि से मोदक बनाते समय उसमें बादाम, पिश्ता, चिरोंजी एवं किशमिश उचित मात्रा में डालें। यह मोदक शरीर में अपेक्षित शक्ति और पुष्टि की वृद्धि करते हैं। इनके ऊपर मिश्रीयुक्त गोदुग्ध का पान किया जाय तो अधिक गुणकारी होते हैं।

वीर्यदोष नाशक क्षीरविदारी पाक

क्षीरविदारी का चूर्ण 150 ग्राम, गाय के घृत में भूनें। फिर उसमें कौंच के बीज, बड़े गोखरू, श्वेत मूसली, काली मूसली, जावित्री, जायफल, शतावर, लोंग, इलायची, पिश्ता, बादाम और चिरोंजी 3-3 ग्राम, कूट- पीस कर मिलावें तथा आवश्यक मात्रा में मिश्री की चाशनी करके, उसके साथ 10- 12 ग्राम के वटक या मोदक बना लें।

मात्रा — एक- दो मोदक प्रातः- सायं दूध- मिश्री के साथ तीन सप्ताह तक निरन्तर सेवन करें। इससे शरीर में बल- वीर्य की अत्यन्त वृद्धि होती है। सब प्रकार के प्रमेहजन्य वीर्य- दोषों में यह पाक अपना प्रभाव शीघ्र प्रदर्शित करता है। यदि चालीस दिनों तक सेवन करलें तो वीर्यदोष निवारण के साथ वर्ण एवं सौन्दर्य में निखार तथा स्वर में माधुर्य की वृद्धि होती है।

अकरकरा और उसके मिश्रित योग

शक्तिवर्द्धक एवं बाजीकरण औषधियों में अकरकरा का भी अपना महत्व है। किन्तु इसका प्रयोग अकेले नहीं, वरन् अन्यान्य भेषज्- द्रव्यों के साथ ही किया जाता है। प्रमेहादि पर प्रयुक्त की जाने वाली औषधियों के अतिरिक्त अन्य रोगों में भी यह उस रोग से सम्बन्धित औषधियों के साथ दी जाती है। दन्त मंजन आदि में तो इसका समावेश अधिकता से होता है। तात्पर्य यह है कि अकरकरा का मिश्रण उस औषधि के अन्य द्रव्यों की शक्ति सामर्थ्य बढ़ा देता है।

अकरकरा का संस्कृत नाम अकरकरभ है। तमिल में इसे अकरकरम कहते हैं। इसकी जड़ में क्षारीय तत्व तथा उड़शील तैलीय तत्व पाये जाते हैं। गन्ध तीक्ष्ण तथा स्वाद में कुछ चरपरापन होता है। वस्तुतः औषधि- कर्म में अकरकरा की जड़ का ही प्रयोग अधिक किया जाता है। इसकी उत्पत्ति बंगाल और अरब देशों में अधिक होती है।

अकरकरा का स्तम्भक प्रभाव

अकरकरा के मिश्रण से औषधियों में स्तम्भक एवं बाजीकरण गुणों की वृद्धि होती है, इसलिये इस प्रकार के योगों में अकरकरा का सम्मिश्रण उचित मात्रा में किया जाता है। क्षोभजनक गुण होने के कारण क्लैव्य निवारण योगों में इसके मिलाने से, इद्रियजन्य विरक्ति दूर होती और स्त्री के प्रति आसक्ति की वृद्धि होती है। यही कारण है कि जिन योगों में अकरकरा का मिश्रण होता है वे जननेन्द्रियों के उत्थान, दृढ़ीकरण और स्तम्भन की वृद्धि में अधिक लाभकारी होते हैं।

कामानन्ददायिनी वटी

अकरकरा, सोंठ, छोटी पीपल, जायफल, जावित्री, लोंग, श्वेत चन्दन और केशर 4- 4 भाग, अफीम शुद्ध 16 भाग तथा शुद्ध गन्धक और शुद्ध हिंगुल 1- 1 भाग। काष्ठौषधियों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

का कपड़छन चूर्ण करें और फिर प्रत्येक द्रव्य डाल- डाल कर खरल करें। सबको मिला कर एकजीव हो जाने पर भाँग के स्वरस की एक भावना देकर, अन्त में बाजरे के बराबर की गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1 से 4 गोलियाँ तक मक्खन, मलाई अथवा मधु में मिला कर सेवन करें और ऊपर से मिश्रीयुक्त गोदुग्ध पीवें। इसके प्रयोग से प्रजनन संस्थान से सम्बन्धित सभी प्रकार की दुर्बलता दूर होती है। स्तम्भन और बाजीकरण के लिये अत्यन्त उपयोगी है। पसलियों के दर्द का भी शमन करती है। ग्रहणी अतिसारादि में भी शीघ्र ही अपना प्रभाव प्रदर्शित करती है। रोगानुसार अनुपान- भेद आवश्यक है।

सिद्ध बाजीकरण योग

अकरकरा, श्वेत मूसली, काली मूसली, त्रिफला, लौंग, मुलहठी, शीतलचीनी, कूट, छोटी इलायची, पीपलामूल, जायफल, जावित्री, तालमखाना, नागकेशर, विदारीकन्द, कौंच के बीज, बड़े गोखरू, शतावर, बला और विजया (भाँग) 15- 15 ग्राम, असगन्ध का रस 1 लीटर, दूध 4 लीटर और 100 आमलों का स्वरस तथा 400 ग्राम घृत।

सभी काष्ठौषधियों को कूट- पीस कर कपड़ों में छान लें। अब असगन्ध स्वरस को दूध में मिलावें तथा उसी में आमले का स्वरस डाल कर मन्दाग्नि पर पकने दें। जब रस जल कर खोआ मात्र रह जाय तब औषधियों के चूर्ण को घी में भून कर, इस खोआ में मिलावें और पाक विधि से सिद्ध करके अपेक्षित मिश्री की चाशनी में डालें। जब ठण्डा हो जाय तब इसमें 400 ग्राम छोटी मक्खी का शहद मिला कर, एकजीव करें और काँच या चीनी के पात्र में सुरक्षित रखें।

मात्रा — 10- 12 ग्राम अथवा रोग के अनुसार कम या अधिक लेनी चाहिये। प्रातः- सायं करके ऊपर से सुखोष्ण गोदुग्ध का पान करें। इससे सब प्रकार की दुर्बलता, क्लीवता, संगमेच्छा का अभाव आदि का निवारण होता है तथा स्तम्भन और बाजीकरण की सिद्धि होती है। ग्रीष्म ऋतु में यह योग अधिक गर्मी करता है, इसलिये शीत ऋतु में सेवन किया जाना अधिक हितकर होता है।

प्रभावकारी स्तम्भक चूर्ण

अकरकरा, इन्द्रजा, बड़े गोखरू, कौंच के बीज, उदंगन के बीज, सुखाये हुए लिसोड़े, सिंघाड़े, शीतलचीनी, श्वेत कत्था, मोचरस, मस्तंगी, श्वेत मूसली, काली मूसली, तालमखाना, प्रवाल भस्म, वंगभस्म और मकरध्वज समान भाग तथा सबके बराबर मिश्री लें। सभी काष्ठौषधियों को कूट- कपड़छन करें, मिश्री भी चूर्ण करके मिलावें तथा भस्म और मकरध्वज भी पृथक् खरल करके मिलावें और ठीक प्रकार से घोट कर एकजीव कर लें।

मात्रा — एक ग्राम से चार ग्राम तक शहद के साथ प्रातः- सायं सेवन करें और ऊपर से गोदुग्ध का पान करें। इसके सेवन से प्रमेहजन्य सभी उपसर्गों में लाभ होता है। शुक्रतारल्य, दौर्बल्य और इन्द्रिय के उत्थान में निराशानजक स्थिति से छुटकारा मिलता है। अत्यन्त स्तम्भनकारी एवं बाजीकरण प्रयोग है। इसका सेवन 3 से 6 सप्ताह तक किया जा सकता है। मात्रा बलाबल देख कर लेनी चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पुष्टिकारी सरल औषधि

अकरकरा, श्वेत मूसली, कृष्ण मूसली, जायफल, जावित्री, दालचीनी, छोटी इलायची के बीज, वंशलोचन, मुलहठी तथा सत गिलोय 10- 10 ग्राम लेकर कूट- छान लें। वंगभस्म, प्रवालभस्म और लौहभस्म 3- 3 ग्राम खरल करके मिलावें। फिर मिश्री की चाशनी करके, उसमें इस चूर्ण को डाल दें तथा सभी भस्में मिला दें। अब इसमें मधु 50 ग्राम और गाय का घी 20 ग्राम मिला कर, ठीक प्रकार घोटें और चीनी के पात्र में सुरक्षित रखें।

मात्रा — तीन- तीन ग्राम अथवा एक- एक छोटी चम्मच दूध के साथ प्रातः- सायं सेवन करें। ऊपर से दूध पीवें। इससे शरीर में बलवीर्य की वृद्धि एवं पुष्टि होती है। कामशक्ति की वृद्धि और स्तम्भन में इसकी उपयोगिता महत्वपूर्ण है। उत्तम बाजीकरण का काम करती है। स्त्रियों के भी प्रदर एवं प्रसूतिजन्य दुर्बलता में हितकर है।

बाजीकर वटिका

अकरकरा 5 ग्राम, सोंठ, छोटी पीपल, लौंग, जायफल, जावित्री और केशर 3-3 ग्राम, अभ्रकभस्म और भीमसेनी कर्पूर 2- 2 ग्राम तथा कस्तूरी 1 ग्राम, शुद्ध अफीम 15 ग्राम। सभी काष्ठादि औषधियों को कूट- छान कर रखें और उसमें, केशर, कर्पूर भस्म, कस्तूरी आदि पृथक् खरल व के मिला दें। अफीम को गुलाबजल में ही खरल करके मूँग प्रमाण गोलियाँ बना कर छाया में सुखावें और फिर शीशी में सुरक्षित रखें।

मात्रा — 1 से 3 गोली तक रोगी के बलाबल का ध्यान रखते हुए सेवन करानी चाहिये। ऊपर से मिश्री मिश्रित गुनगुना दूध पिलावें। इसके सेवन से सब प्रकार के शुक्रदोषों से उत्पन्न दुर्बलता नष्ट होती है तथा स्तम्भन- शक्ति प्राप्त होकर बाजीकरण की सिद्धि होती है।

स्तम्भनार्थ लेप

अकरकरा 50 ग्राम लेकर कूट- छान लें। फिर श्वेत बैंगन 100 ले कर उनके स्वरस की भावना देकर छोटी- छोटी गोलियाँ बना कर सुखा लें। फिर समागम से दो घंटे पूर्व इसे ब्रांडी के साथ घिस कर, सींवन- सुपारी बचाकर, उपस्थ पर लेप करें। स्तम्भन की सिद्धि होगी। अथवा अकरकरा, श्वेत चन्दन, ढाक के पुष्प, चमेली के पुष्प, अगस्त्य के पुष्प, सुहागा और कर्पूर समान भाग को शहद में घोट कर उपस्थ पर लेप करना चाहिये। स्तम्भन के लिये यह भी प्रभावकारी हो सकता है।

शुक्र- संस्थान पर प्रभावकारी केशर

अनेक औषधि योगों में केशर का सम्मिश्रण किया जाता है। इससे सम्बन्धित औषधि अधिक गुणयुक्तऔर शीघ्र प्रभावोत्पादक हो जाती है। किन्तु उत्पत्ति स्थान में देश- काल के भेद से इसके गुणों में भी परिवर्तन देखा जाता है। पुरातन ग्रन्थों के अनुसार भी —

कश्मीर देशजे क्षेत्रे कुंकुमं यद्भवेदमितत्। सूक्ष्म केशरमारक्तं कुंकुमं पाण्डुरं स्मृतम्॥

वाल्हीक देश संजातं कुंकुमं पद्म गंध तदुत्तमम्। केतकी गन्ध युक्तं तन्मध्यं सूक्ष्म केशरम्॥

अर्थात् — कश्मीर देश के खेतों में उत्पन्न कुंकुम केशर सूक्ष्म केशरों वाली, कुछ ललोंई वाले रंग की पद्म जैसी गन्ध की होती है। यही उत्तम है। बाल्हीक देश में उत्पन्न केशर पाण्डुर अर्थात् श्वेतपन पर पीले रंग की तथा केतकी के समान गन्ध वाली और सूक्ष्म केशरों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

से युक्तहोती है, इसे मध्यम गुण वाली मानते हैं। इन स्थानों से भिन्न स्थानों पर उत्पन्न केशर जो कि स्थूल केशरों या अंकुरों वाली तथा शहद जैसी गन्ध की और पाण्डुर वर्ण की होती है, वह अधम गुण वाली मानी जाती है। ऐसी केशर फारस की खाड़ी आदि के देशों में होती कही गई है । यथा —

कुंकुमं पारसीकं यन्मधु गन्धं तदीरितम् । ईषत्पाण्डुर वर्ण तदधमं स्थूल केशरम् ॥

इसका तात्पर्यार्थ ऊपर कह चुके हैं। इससे स्पष्ट है कि अन्य स्थानों की अपेक्षा कश्मीर में उत्पन्न केशर अधिक गणवाली और अत्युत्तम है। औषधि कर्म में उसी का प्रयोग करना चाहिये। उसके अभाव में अन्य स्थान पर उत्पन्न केशर का प्रयोग विवशता में किया जाता है।

केशर इसका हिन्दी नाम है, संस्कृत में कुंकुम कहते हैं। अरबी और इस्लामिक देशों में जाफरान अँग्रेजी में सेफ्रोन तथा लैटिन में 'क्रोरस सेफरोन' के नाम से प्रसिद्ध है। यह सुगन्धित क्षुप है, गन्ध जितनी अधिक हो, उतनी ही उत्तम मानी जाती है। किन्तु नकली केशर ने भी इसका स्थान ग्रहण कर लिया है, और उसे पहिचानना भी कठिन हो जाता है।

आयुर्वेद में इसके अनेक योग मिलते हैं। प्रायः पौष्टिक पाकों में तो केशर का प्रयोग अधिक ही होता है। पानक, आसव आदि में भी इसका मिश्रण किया जाता है। यूनानी दवाओं में भी इसका प्रयोग किसी प्रकार कम नहीं होता। ऐलोपैथी के भी कुछ योगों में इसका उपयोग गुण- वृद्धि से ही नहीं, वरन् रंग- रूप और सुगन्ध की उपयोगिता देख कर भी किया जाता है।

केशर का विभिन्न रोगों पर प्रभाव

यद्यपि विभिन्न रोगोपशनार्थ केशर का प्रयोग देखा जाता है। आयुर्वेद में इसका सम्मिश्रण शुक्रक्षय, शुक्रतारल्य, दौर्बल्य एवं क्लीवत्व आदि में अधिक उपदिष्ट है। शरीर में उष्णता लाने के लिये भी केशर उपयोगी समझी जाती है। क्लैव्य में इसका सेवन करने से प्रजननांग में उत्तेजना आती है। इसी कारण यह बाजीकरण में भी सहायक सिद्ध होती है।

थोडी- सी केशर गर्म घी में डालकर नस्य देने से सूर्यावर्त अर्थात् आधा शीशी के दर्द में लाभ पहुँचाता है। विभिन्न रोगों में इसका प्रयोग औषधि के अनुरूप मिश्रण द्वारा किया जाता है। अनुपात में भी रोगानुरूप भेद रखा जाता है। कष्टार्तव में तथा प्रसूतिकाल में गर्भाशय को उत्तेजित करने के लिये इसे दूध में मिला कर देना लाभकारी होता है।

हृदय रोग में इसका प्रयोग अनुकूल रह सकता है। हृदय का स्पन्दन कम होने की अवस्था में केशर के योग उसे उत्तेजित कर सकते हैं। श्वास- संस्थान, वात- संस्थान, स्वर- संस्थान आदि पर अपेक्षाकृत शीघ्र प्रभाव डालने में यह सहायक है। तात्पर्य यह है कि सर्वांग विकृति को दूर करने में केशर के योग लाभकारी रहते हैं।

केशर के अनेक उपयोगी नुस्खे

- क्लैव्य पर केशर अकेली भी पर्याप्त गुण दिखाती है। थोड़ी सी केशर दूध के साथ घोट कर सेवन करने से ही पुंसत्व में वृद्धि का आभास होने लगता है। नारी के प्रति अनाकर्षण और मैथुनेच्छा के अभाव का शमन होकर उत्तेजना उत्पन्न होती है। इस विधि से निरन्तर सेवन करते रहने से शरीर में बल- वीर्य की वृद्धि होती है। प्रमेहजन्य दुर्बलता, कफज

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

और वातज विकारों में भी इससे लाभ होता है।

Digitized by eGangotri

- केशर का चूर्ण स्वल्प मात्रा में लेकर किसी भी अनुपान के साथ सेवन किया जा सकता है। सब प्रकार के वीर्य- विकारों का शमन करने में शीघ्र सहायक होता है। दूध, चाय, काफी, मिठाई आदि के साथ खाने से स्वादिष्ट भी लगता है और अपना गुण- प्रभाव भी यथावत रखता है। मन्द सुगन्धित होने के कारण रुचिकर भी होता है।
- केशर के चूर्ण 10 भाग को , मद्यसार 90 भाग में डाल कर रखें। इसकी 5 से 15 बूँदें तक दूध पानी अथवा पानक के साथ दिन में दो बार प्रातः- सायं सेवन करें। शक्तिवर्धनार्थ यह प्रयोग बहुत सरल और उत्तम है। सब प्रकार की दुर्बलता इससे दूर होती है।

शुक्रक्षय पर केशरादि वटी

केशर, लौंग, श्वेत चन्दन, जावित्री, जायफल, छोटी पीपल, अकरकरा और शोधित अफीम समान भाग लेकर, कूट- छान कर और पानी के साथ खरल करके उड़द के समान गोलियाँ बनावें और सुखा कर शीशी में सुरक्षित रखें।

मात्रा — एक से तीन गोली तक रोग और रोगी का बलाबल देक कर गोदुग्ध के साथ सेवन करानी चाहिये। इससे शुक्रतारल्य, शुक्रक्षय तथा सब प्रकार की दुर्बलता दूर होती है। पुरुष में हर्ष और साहस बढ़ता है तथा स्तम्भन और बाजीकरण की सिद्धि होती है।

मदनानन्द दायिनी वटी

केशर, कस्तूरी, लौंग, रूमी मस्तंगी और वंगभस्म 5- 5 ग्राम, अफीम शुद्ध 10 ग्राम। सबको ठीक प्रकार से खरल करके केशर के जल में घोटते हुए चना के बराबर गोलियाँ बना लें। केशर- जल बनाने के लिये अलग से अधिक केशर को पानी के साथ अथवा कच्चे दूध के साथ घोट कर प्रयुक्त करना चाहिये।

मात्रा — केवल 1 गोली समागम से 6 घंटे पूर्व दूध के साथ लेनी चाहिये तथा इस बीच में अन्य कोई वस्तु नहीं खानी- पीनी चाहिये। समागम के पश्चात् केशरयुक्त मिश्रीयुक्त दूध पी सकते हैं। यह प्रयोग स्तम्भन तथा बाजीकरण हेतु उत्तम है।

शक्तिवर्धक रसायन

केशर 10 ग्राम, अकरकरा, लौंग, उटंगन के बीज, काली मूसली, जायफल और शुद्ध अफीम 5- 5 ग्राम, उत्तम कस्तूरी 1 ग्राम लेकर काष्ठौषधियों को कूट- छान लें और अन्य द्रव्यों को अलग खरल में घोट कर मिलावें। अन्त में 2 ग्राम वंगभस्म मिलावें और खरल द्वारा एकजीव करके शीशी में सुरक्षित रखें।

मात्रा —1 ग्राम मधु के साथ सेवन करनी चाहिये अथवा रोगी का बलाबल देख कर कम या अधिक भी दी जा सकती है। स्तम्भन- शक्तिबढ़ाने में हितकर और उपयोगी प्रयोग है।

वीर्यदोष नाशिनी गोली

केशर, शुद्ध शिलाजीत और शुद्ध गूगल 20- 20 ग्राम, लौहभस्म, प्रवालभस्म और वंगभस्म 15- 15 ग्राम, छोटी इलायची, वंशलोचन, दालचीनी, दन्तीमूल, तेजपात और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

निशोथ 10- 10 ग्राम। वच, वाकुची, चिरायता, गिलोय, नागरमोथा, देवदारु, हरिद्रा, छोटी पीपल, गजपीपल, पीपलामूल, चित्रकमूल, धनियाँ, हरड़, बहेड़ा, आमला, चव्य, वायविडंग, सोंठ, काली मिर्च, यवक्षार, सेंधा नमक, काला नमक, विड नमक और स्वर्ण माक्षिक 3- 3 ग्राम तथा मिश्री 50 ग्राम। सब काष्ठौषधिकों को कूट- छान कर अन्य द्रव्य मिलावें और गूगल के पानी में खरल करके चना प्रमाण वटी बना लें।

मात्रा — 1 से 2 गोली तक प्रातः- सायं गोदुग्ध के साथ सेवन करनी चाहिये। इससे पुरुषों के समस्त वीर्यदोष दूर होकर शक्ति की अत्यन्त वृद्धि होती है। स्त्रियों के समस्त रजोदोष भी इससे दूर हो जाते हैं। यदि इसमें लौहभस्म 10 ग्राम और मिला ली जाय तो सभी प्रकार के स्त्री रोगों, प्रदरादि में भी गुणकारी है।

शुक्रतारल्य हर कुंकुमादि वटिका

केशर 8 ग्राम, जायफल, जावित्री, लोंग, सेमल का मूसला, काली मूसली, काला जीरा, समुद्रशोष, बबूल की फली, अकरकरा, माजूफल, राल, मस्तंगी, इन्द्रयव, पाठा, शुद्ध सिंगरफ और शुद्ध अफीम 4- 4 ग्राम। वंगभस्म, अभ्रकभस्म, भीमसेनी कर्पूर 2-2 ग्राम तथा कस्तूरी 1 ग्राम लें। सभी काष्ठौषधियों को कूट- छान लें और शेष द्रव्यों को पृथक्खरल करके इसमें मिलावें। फिर आमले की स्वरस की एक भावना देकर, शहद के साथ खरल करते हुए आधे या एक ग्राम वजन की गोलियाँ बना कर सुखा लें।

मात्रा — एक- एक गोली प्रातः- सायं मिश्रीयुक्तदूध के साथ सेवन करने से वीर्य गाढ़ा होता और कमजोरी दूर होती है। स्तम्भन के लिये प्रयोग करनी हो तो समागम से एक घंटाभर पहले शहद के साथ खाकर ऊपर से सुखोष्ण दूध पीना चाहिये।

स्तम्भक केशरादि वटी

केशर 4 ग्राम, लोंग, जायफल, जावित्री, भीमसेनी कर्पूर, शुद्ध भाँग और शुद्ध अफीम, 2- 2 ग्राम, लौह भस्म, प्रवाल भस्म और कस्तूरी 1- 1 ग्राम लेकर, काष्टादि को कूट- छान कर उसमें अन्य द्रव्य खरल करके मिलावें तथा बबूल का गोंद 1 ग्राम पीस कर जल योग से सबके साथ खरल करते हुए चना प्रमाण गोलियाँ बना लें और सुखा कर शीशी में रखें।

मात्रा — 1- 1 गोली रात्रि में शयन समय शहद के साथ सेवन करें और ऊपर से दूध पीवें। स्तम्भन के लिये समागम से एक- दो घंटे पहले 2 गोलियाँ शहद के साथ खाकर केशरयुक्तगर्म दूध पीना चाहिये। इससे सम्तम्भन होता है तथा दैनिक प्रयोग से शुक्र- तारल्य, दौर्बल्य, शुक्रक्षय आदि विकारों में स्थायी लाभ संभव है।

स्तम्भनार्थ कुंकुमादि अवलेह

केशर 6 ग्राम, अकरकरा, दालचीनी, नागकेशर, तेजपात, छोटी इलायची, श्वेत मूसली, सोंठ, जायफल, जावित्री, वंशलोचन, तेजपात और सत गिलोय 10- 10 ग्राम, कस्तूरी, अम्बर, स्वर्ण भस्म, रजतभस्म, मुक्ता- भस्म, प्रवाल भस्म और लौह भस्म 3- 3 ग्राम, धुली भाँग 5 ग्राम, मिश्री सब के बराबर। काष्ठादि औषधियों को पीस- छान कर, अन्य सभी द्रव्य महीन खरल करके मिलावें तथा मिश्री की चाशनी करें और उसमें 20 ग्राम घृत और 10 ग्राम शहद मिला कर रखें। ध्यान रहे कि चासनी चाटने योग्य अवलेह रूप में रहनी चाहिये। सब ठीक प्रकार से मिल कर एकजीव हो जाय तब चीनी या काँच के पात्र में रखें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मात्रा — 5-5 ग्राम तक यह अवलेह प्रातः- सायं सेवन करके ऊपर से दूध पीना चाहिये। निरन्तर 2- 3 मास सेवन करते रहने से शरीर में बल- वीर्य की वृद्धि और स्तम्भन शक्ति के बढ़ाने का आभास सहज ही होने लगेगा। कामोत्तेजन, बाजीकरण, स्तम्भनादि के लिये यह उत्तम महौषधि है, इससे स्फूर्ति, उत्साह, लावण्य आदि की वृद्धि होती है और रंग- रूप में भी निखार आता है। दुर्बलता में इसका सेवन महिलाओं को भी कराया जा सकता है।

अत्यन्त पौष्टिक केशरादि क्षीर (खीर)

केशर 2 ग्राम, दालचीनी और छोटी इलायची 8- 8 ग्राम। पहिले दालचीनी और इलायची के बीजों को ठीक प्रकार से पीस छान लें तथा फिर उसमें केशर को खरल करके मिलावें और आठ पुड़ियाएँ बना कर रखें।

जब खीर बनाना हो तब 150 ग्राम चावलों को 300 ग्राम शुद्ध घी में भून लें और फिर एक लीटर दूध में उपर्युक्त 1 पुड़िया मिला कर अग्नि पर चढ़ावें। खीर पक जाने पर इच्छित मात्रा में घृत युक्त चावलों को उसमें डाल कर पकावें। खीर पक जाने पर इच्छित मात्रा में प्रयोग करें। यह खीर अत्यन्त पुष्टिकर सिद्ध होती है। शुक्रमेहादि में भी हितकर है। इसमें यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि चावल, घृत और दूध की मात्रा यहाँ एक अनुमान के रूप में लिखी है। अपनी इच्छा और भूख के अनुसार इनका वजन घटा- बढ़ा लेना चाहिये। किन्तु पुड़िया के द्रव्यों में कमी- वेशी नहीं करनी चाहिये।

शक्तिवर्द्धक केशरादि मोदक

केशर, जायफल और जावित्री 6- 6 ग्राम तथा ईसबगोल की भुसी 12 ग्राम और 1 नारियल। केशर आदि को भले प्रकार खरल करके रखें और नारियल को थोड़ा- सा काट कर टोपी- सी उतार लें तथा उस छेद में केशर आदि चारों द्रव्य भर कर, उतरी हुई टोपी (ढक्कन) से छेद बन्द कर दें और गीला आटा लगा कर सन्धि बन्द कर दें। फिर पाँच लीटर दूध में इस औषधियुक्त नारियल को डाल कर अग्नि पर चढ़ावें तथा उसमें बादाम की गिरी, अखरोट की गिरी, चिरोंजी, पिश्ता और छुहारा 50- 50 ग्राम लेकर डाल दें और उसे चलाते रहें। जब उसका खोआ बन जाय, तब आग से उतार कर महीन पीसें और उसमें दो किलोग्राम के लगभग मिश्री का चूर्ण डाल कर ठीक प्रकार सबको मिलावें तथा 20- 25 ग्राम के मोदक बना कर रखें।

मात्रा — 1 से 2 मोदक प्रातः- काल कलेवा के रूप में सेवन करें अथवा रात्रि में शयन समय लें। ऊपर से गर्म दूध पीवें। यह केसर पाक या मोदक शुक्र- मेह, मधुमेह, शीघ्रपतन, शुक्रतारल्य, दुर्बलता एवं अनेक प्रकार के उपसर्गों को दूर करता तथा स्तम्भन शक्ति बढ़ाता और वशीकरण की सिद्धि करता है।

बलवर्धिनी केशर वटी

केशर 20 ग्राम, जायफल, जावित्री, छोटी इलायची, दालचीनी, गुलाब के फूल, सुपारी, शुद्ध शिलाजीत और श्वेत चन्दन 20- 20 ग्राम, लौहभस्म और वंगभस्म 10- 10 ग्राम, मुक्ताभस्म और स्वर्णमाक्षिक भस्म 1- 1 ग्राम। काष्ठौषधियों को कूट- छान लें। अन्य द्रव्यों को भी खरल में महीन करके मिलावें। फिर गुलाबजल के साथ खरल करके चना प्रमाण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गोलियाँ बना कर सुखा लें।

मात्रा — एक- एक गोली प्रातः- सायं पीस कर शहद में मिलावें और उसके साथ सेवन करके ऊपर से दूध पीवें। सब प्रकार के प्रमेह, स्वप्नदोष, दुर्बलता, शीघ्रक्षरण आदि उपसर्गों को दूर करने में उत्तम है।

शुक्र संजीवनी वटी

केशर 5 भाग, जावित्री 4 भाग, रजत भस्म 3 भाग, कस्तूरी 2 भाग और स्वर्णभस्म 1 भाग लेकर, खरल में ठीक प्रकार से घोट कर एकजीव कर लें। अब वंशलोचन 7 भाग, जायफल 6 भाग, छोटी इलायची के बीज 5 भाग लेकर पृथक् पृथक् कूट- छान लें। फिर सबको एकत्र करके पान के स्वरस में उड़द प्रमाण वटी बना लें और छाया- शुष्क करें।

मात्रा — 1 से 2 गोली मक्खन, मलाई अथवा मधु के साथ सेवन करके ऊपर से मिश्रीयुक्त दूध पी लें। सभी प्रकार के प्रमेह, दौर्बल्य, धातुक्षरण आदि में हितकर है तथा नपुंसकता की नाशक महौषधि है।

गंगेरन (नागबला) और मूत्र- संस्थान

यह वनस्पति, भारतवर्ष के गर्म प्रदेशों में अधिक होती है। इसके पत्ते 2 से 4 सेंटीमीटर तक लम्बे, अण्डाकार, मोटे और कुछ नुकीले होते हैं। इसके पुष्प गोल एवं श्वेत रंग के, फल पाँच पंखुड़ियों वाले तथा शाखाएँ झाड़दार, कुछ खुरदरी- सी एवं पतली होती हैं। इसके गंगेरन, गुलशकरी, जंगली मेथी, तुमकड़ी, नागबला आदि अनेक नाम हैं, जो कि देश एवं भाषा- भेद से हुए हैं। इसकी जड़ में एस्पारेगु नामक एक विशेष तत्व पाया जाता है तथा पत्तों में टेनिक एसिड और म्यूसिलेज नामक तत्वों की विद्यमानता होती है।

आयुर्वेद के मत में इसके फल, फूल, पत्ते और मूल में बहुत- से गुण हैं। माधुर्ययुक्त यह वनस्पति स्निग्ध, बल और कान्ति को बढ़ाने वाली, शीतवीर्य तथा तीनों दोषों का हरण करने वाली है। इसकी जड़ की छाल दूध के योग से पान करने पर मूत्राधिक्य को दूर करती है और शरीर को हष्ट- पुष्ट बनाती है। सुजाक वात- विकार तथा प्रमेहादि में भी अत्यन्त हितकर है। स्त्रियों के श्वेत प्रदर एवं आर्तव दोष में लाभ करती है। इसके बीज अत्यन्त (वृष्य बल बढ़ाने वाले), अनुलोमक और शामक माने जाते हैं। शुक्रमेह में इसके सेवन से शीघ्र लाभ सम्भव है। शक्ति और पुष्टि की वृद्धि के उद्देश्य से इसे विभिन्न योगों में मिश्रित किया गया है।

- बला (गंगेरन) के बीजों का चूर्ण 2- 3 ग्राम की मात्रा में मिश्री के साथ सेवन कराने और ऊपर से बकरी का दूध पिलाने से प्रमेह में लाभ होता है तथा मूत्र- प्रदाह और शोथ में आराम मिलता है।
- बलामूल की छाल को पानी के साथ ठण्डाई के समान पीस कर कषाय बनायें और उसमें मिश्री अथवा शहद मिला कर पीवें। इससे भी मूत्राशय- शोथ, प्रदाह तथा मूत्रकृच्छ सुजाक प्रभृति रोगों में लाभ होता है।
- गंगेरन की छाल, ककही की छाल, गोखरू, शतावर, कौंच के बीज और तालमखाना समान भाग लेकर कूट- छान कर रखें।
- **मात्रा** — 3- 3 ग्राम प्रातः- सायं मिश्रीयुक्त गाय के दूध के साथ सेवन करें। इससे मूत्र-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

संस्थान के सभी दोष दूर होते हैं और प्रमेहादि में भी अपेक्षित लाभ होता है।

- गंगेरन की छाल, वच, कूठ, खिरेंटी, असगन्ध और गजपीपल समान भाग लेकर कूट- छान लें और मैथुन से पूर्व भैंस के मक्खन में ठीक प्रकार से घोंट कर, उपस्थ पर मर्दन करें। समागम से एक घंटाभर पूर्व यह प्रयोग करने से इन्द्रिय का स्थूलीकरण और स्तम्भन होता है। किन्तु इसे लगाने से पहिले गर्म पानी की वाष्प द्वारा उपस्थ पर स्वेदन कर्म करें अथवा भाप दें और फिर पोंछकर धीरे- धीरे उक्त लेप को मलें तो अपेक्षित लाभ मिलेगा।

कामाग्नि संदीपन पाक

गंगेरन की छाल, सालव मिश्री, श्वेत मूसली, खिरेंटी, कौंच के बीज, शतावर, बड़े गोखरू, बीजबन्द, तालमखाना, सेमल का मूल, मोचरस, असगन्ध, छोटी इलायची के बीज और समुद्रशोष 20- 20 ग्राम, शंखपुष्पी, ब्रह्मी और बहुफली 50- 50 ग्राम, लौहभस्म, वंगभस्म और प्रवाल भस्म 10 ग्राम, केशर और जायफल 5- 5 ग्राम, कस्तूरी 2 ग्राम, बादाम की मिंगी, पिश्ता और किशमिश 25-25 ग्राम, मिश्री 2 किलोग्राम और गोघृत 500 ग्राम। सब द्रव्यों को कूट- छान लें तथा भस्मादि को पृथक् खरल करके रखें। अब घी को अग्नि पर चढ़ाकर उसमें ब्राह्मी चूर्ण डाल कर मन्दाग्नि पर पकावें और सभी द्रव्य मिला कर उतारें और 10-10 ग्राम के मोदक बना लें अथवा बर्फी जैसी कतलियाँ काट लें।

मात्रा — प्रातःकाल 1 से 2 मोदक प्रातःकाल नाश्ते के रूप में कुछ सप्ताह लगातार सेवन करें और ऊपर से दूध पीवें। प्रमेह- नाशक, शक्तिवर्द्धक और स्तम्भन कारक दवा है। सब प्रकार की कमजोरी में लाभकारी है।

खिरेंटी आदि अन्य प्रभावी वनस्पतियाँ

गंगेरन (नागबला) की जाति की तीन वनस्पतियाँ और हैं, जिनका प्रयोग शुक्र सम्बन्धी उपसर्गों को शमन करने वाले विभिन्न योगों में किया जाता है। उनमें 1 बला, जिसे खिरेंटी या वरियारी भी कहते हैं, 2. महाबला सहदेई और 3. अतिबला अर्थात् कंघी है। गंगेरन के साथ यह तीनों वनस्पतियाँ मिल कर 'बला चतुष्टय' कही जाती हैं।

बला अर्थात् खिरेंटी को ही वरियारी, वरियारा, चिक्कणा आदि भी कहते हैं। लैटिन में इसे सीडा कॉर्डीफोलिया के नाम से जाना जाता है। इसी का एक प्रसिद्ध नाम बीजबन्द भी है। यह बूटी भारतवर्ष में सर्वत्र पाई जाती है। वर्षा ऋतु में अधिक होती है, किन्तु न्यूनाधिक सभी ऋतुओं में उत्पन्न होती है। इसका क्षुप लगभग आधा मीटर ऊँचाई का होता है। पत्ते तुलसी जैसे, हरे रंग के होते हैं। पुष्प पीतवर्ण के गोल तथा बीज महीन काले रंग जैसे होते हैं।

महाबला को सहदेई या सहदेवी भी कहते हैं। कहीं- कहीं नीलकण्ठी भी कहा जाता है। लैटिन में इसका नाम सीडा रियूमबीफोलिया है। यह भी सर्वत्र पायी जाती है। इसका क्षुप खिरेंटी के क्षुप से बड़ा, सीधा तथा झाड़ीदार होता है। पत्ते कंगूरेदार, अण्डाकार 5- 7 सेंटीमीटर लम्बे होते हैं। पुष्पों का रंग पीला होता है। कुछ लाल या बैंगनी फूल वाली भी पाई जाती है। सभी ऋतुओं में मिलती है।

अतिबला को कंघी, ककही या ककहिया कहते हैं। अरबी में शाहनाह और लेटिन में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
सिडा इंडिका कही जाती है। इसका वृक्ष लगभग एक मीटर अथवा उससे अधिक ऊँचा होता है। पत्ते कंगूरेदार, फल गोल, कुछ चन्द्राकार जैसे तथा पुष्प नारंगी रंग के पीले- से होते हैं। यह वनस्पति प्रायः उष्ण प्रदेशों में अधिक मिलती है।

अतिवृष्य, मादक पाक

अतिबला- मूल, नागकेशर, तज, तेजपात, कौंच के बीज, मूर्वा, गदापूर्णा मूल, बरियारी खिरेंटी- मूल और काली मिर्च 25- 25 ग्राम, सोंफ, छोटी पीपल, लोंग, जावित्री, जायफल और वंशलोचन 15- 15 ग्राम तथा सोंफ और छोटी इलायची 50- 50 ग्राम लेकर सबको कूट- कपड़छन करके रखें। अब घुली हुई भाँग का 200 ग्राम चूर्ण तथा गाय का दूध 10 लीटर लेकर मिलावें और अग्नि पर रख कर खोआ करने के लिये कोंचा से चलाते रहें। जब खोआ बन जाय, तब उसमें 500 ग्राम गोघृत के साथ उसे भून लें।

अब मिश्री 5 किलोग्राम लेकर उसकी चाशनी बनावें तथा उसमें भाँगयुक्त खोआ डाल कर ठीक प्रकार से मिलावें और सभी औषधि द्रव्यों का चूर्ण मिलाकर, कुछ मिनट कोंचा से ठीक प्रकार चला कर अग्नि से उतार लें। फिर किसी चौड़े थाल में उसे बर्फी की तरह जमावें। जब जम जाय तब 10-12 ग्राम की कतली अथवा मोदक बना कर सुरक्षित रखें।

यह पाक सब प्रकार की प्रमेहजन्य दुर्बलता में अत्यन्त लाभकारी तथा स्तम्भक है इससे वीर्य गाढ़ा होता है और शरीर में अपूर्व बल- वीर्य की वृद्धि होती है।

मात्रा — आधी से एक कतली या मोदक, छुहारा डाल कर औटाये हुए दूध के साथ लेनी चाहिये। ध्यान रहे कि यह पाक अत्यन्त नशीला है, इसलिये अल्प मात्रा में ही केवल रात्रि के समय, एक बार लेना चाहिये। जिन्हें भाँग के नशे की आदत हो, वे इच्छित मात्रा में ले सकते हैं। नशा से दूर रहने वालों को इसके सेवन से बचना चाहिये।

ईसबगोल एक चमत्कारी वनस्पति

ईसबगोल एक बहुत प्रसिद्ध तथा अत्यन्त गुणकारी है। संस्कृत में इसे स्निग्ध जीरा कहते हैं। किन्तु इसका सर्वत्र अधिक प्रचलित और प्रसिद्ध नाम ईसबगोल ही है। इसके उद्गम स्थान पश्चिमोत्तर भारतवर्ष तथा पंजाब, हिमाचल आदि हैं। बंगाल में भी पाया जाता है। इसके बीजों का प्रयोग शुक्र सम्बन्धी दोषों में किया जाता है। क्योंकि क्षुद्रांत्रों को यह विशेष रूप से प्रभावित करता है। इसमें मुख्य रूप से म्यूसिलेज एलब्यूमिन युक्त पदार्थ तथा कुछ तैलांश रहता है। इसलिये विभिन्न अवयवों पर अनुकूल प्रभाव डालता है।

श्लेष्म एवं चिक्कण गोंदयुक्त पदार्थ की इसमें उपस्थिति, इसे अधिक प्रभावकारी बनाती है। यही लेसदार पदार्थ कब्ज के कारण मलाशय में उत्पन्न सुर्दों को बाहर निकाल देता है, तथा इसी के कारण अतिसारजन्य अन्त्र- व्रणों के घाव पुर जाते हैं।

इसका प्रभाव शरीर के सभी भागों पर अनुकूल पड़ता है। यह मलावरोध में तो हितकर होता ही है, अतिसार को रोकने में भी अद्वितीय गुण वाला है। अन्न प्रणाली में से जाते हुए इसके औषधि- कण आन्तों में उत्पन्न दोषयुक्त जल को आत्मसात कर लेते हैं। इसके साथ ही संचित आँव को भी बाहर निकाल देते हैं।

ईसबगोल के बीज और भुसी दोनों भाग प्रयोग में लाये जाते हैं। इनका प्रभाव उदर पर तो पड़ता ही है, शुक्र- संस्थान पर भी बहुत कुछ पड़ता है। विशेष रूप से इसलिये कि मल- मूत्र

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

का शोधन होने के कारण वीर्यदोष भी उत्पन्न नहीं होते अथवा होते हैं तो इसके प्रयोग से उनका निवारण स्वतः हो जाता है। ईसबगोल के कुछ प्रयोगों का वर्णन यहाँ किया जाता है

Digitized by Siddhanta eGangotri

ईसबगोलयुक्त वृष्य औषधि

एक बड़ा चम्मच भर कर ईसबगोल की भुसी लें और उसमें एक छोटा चम्मच भर सालव मिश्री का चूर्ण मिलायें। अब इन्हें एक चाय के प्याले के बराबर दूध के साथ मिला कर अग्नि पर उबालें। ऐसा करने पर वह एक गाढ़ा अवलेह जैसा रूप ले लेगा। इसमें किंचित् शर्करा भी मिला सकते हैं ।

इस औषधि का प्रातः और मध्याह्न अर्थात् दिन में दो बार सेवन करना चाहिये। इसके सेवन से शरीर के मलमूत्र- संस्थान का शोधन होता है तथा प्रजनन- तन्त्र पर भी अनुकूल प्रभाव पड़ता है। इस कारण वीर्य- दोष दूर होते और बल- वीर्य की वृद्धि एवं शक्तिकी प्राप्ति होती है। शुक्रतारल्य दूर होकर गाढ़ा होता है, समागम शक्ति और स्तम्भन की प्राप्ति होती है। स्त्रियों के प्रदर रोग एवं अनिश्चित आर्तव में भी हितकर है।

कामशक्ति वर्द्धक चूर्ण

ईसबगोल की भुसी और बड़े गोखरू का चूर्ण 20-20 ग्राम और छोटी इलायची के बीजों का चूर्ण 5 ग्राम। इन सबको एकत्र करके रख लें।

मात्रा — 3-4 चम्मच यह चूर्ण बकरी के दूध के साथ सेवन करना चाहिए। इससे कामशक्तिका ह्रास, समागम की इच्छा न होने के कारण स्त्री से विरक्तितथा प्रमेह के विभिन्न उपसर्गों के कारण अशक्ति, वीर्य का पतलापन आदि विकारों में यह योग अत्यन्त हितकर है। शूलयुक्त मूत्र अथवा सुजाक आदि में भी यह अत्यन्त उपयोगी हैं। स्त्रियोंके गर्भाशय दोषों में भी इससे लाभ उठाया जा सकता है।

स्तम्भक चूर्ण

ईसबगोल की भुसी 2 भग, चूर्णित असगन्ध और बड़े गोखरु 1-1 भाग लेकर मिलावें और ठीक प्रकार से खरल में घोंट कर एकजीव कर लें।

मात्रा — दो- तीन चम्मच प्रातः- सायं बकरी के दूध अथवा गोदुग्ध के साथ सेवन करें। यह योग भी वीर्य दोषों के निवारणार्थ उत्तम है। इससे बल- वीर्य की वृद्धि होती है तथा अपेक्षित स्तम्भन शक्तिप्राप्त होती है। कब्ज न रहने के कारण चित्त में उल्लास और शरीर में स्फूर्ति बनी रहती है।

शुक्र- तारल्य पर सरल गरीबी प्रयोग

ईसबगोल की भुसी और मिश्री, दोनों को मिला लें। मिश्री को पीसें और भुसी में मिला कर खरल द्वारा एकजीव कर लें।

मात्रा — आठ- दस ग्राम यह औषधि प्रातःकाल सेवन करके, ऊपर से गाय का धारोष्ण दूध पीना चाहिये। यह साधारण- सा प्रयोग अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इससे शुक्र तारल्य, शुक्र की कमी तथा प्रमेहजन्य अनेक उपसर्ग दूर होते हैं और नवीन शक्तिप्राप्त होती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्रमेहनाशक अत्यन्त हितकारी चूर्ण

ईसबगोल, पीपल छोटी, मुलहठी, मूसली, तालमखाना, सोंठ और शतावर समान भाग सबको कूट- कपड़छन करें और सबके वजन के बराबर मिश्री का चूर्ण इसमें मिलाकर अमृतवान में रखें।

मात्रा — 10-12 ग्राम गाय के दूध के साथ प्रातः- सायं सेवन करने से सभी प्रकार के प्रमेह, शीघ्रपतन, दुर्बलता आदि में शीघ्र लाभ होता है। यह भी स्त्रियों के प्रदर रोग दूर करने में लाभकारी है। बाजीकरणार्थ लेना हो तो समागम से पूर्व भैंस के अधोंटा दूध में केशर मिला कर, उसके साथ लेना चाहिये।

प्रमेह, मधुमेह निवारक चूर्ण

ईसबगोल की भुसी, काली मूसली, असगन्ध, शतावर और बड़े गोखरू 1-1 भाग लेकर विधिवत महीन चूर्ण बना लें। फिर पाँच भाग मिश्री का चूर्ण मिलाकर सुरक्षित रखें।

मात्रा — 10-12 ग्राम चूर्ण बकरी के दूध या गाय के दूध के साथ सेवन करें। इससे धातुक्षय, प्रमेह, शीघ्रपतन आदि में अपेक्षित लाभ सम्भव है। मधुमेह में भी लाभदायक हो सकता है, किन्तु उस उद्देश्य के लिये, इसमें मिश्री नहीं मिलानी चाहिये।

अत्यन्त बलवर्द्धक चूर्ण

ईसबगोल 50 ग्राम, छोटी पीपल, छोटी इलायची, मुलहठी, श्वेत मूसलीं, काली मूसली, तालमखाना, मूर्वा, मस्तंगी, बीजबन्द, लौंग, जायफल, शतावर, गोखरू, बबूल का गोंद और गिलोय सत 40-40 ग्राम, धुली हुई भाँग 80 ग्राम और केशर 25 ग्राम।

सभी काष्ठौषधियों को कूट- पीस कर कपड़छन करें तथा भाँग को चूर्णित करके केशर और गिलोय सत मिला कर रखें तथा सबके वजन के बराबर मिश्री पीस कर इसमें मिलायें और घोंटकर एकजीव कर लें।

मात्रा — रात्रि शयन समय 10-12 ग्राम लें, और ऊपर से दूध पीवें। अधिक वृष्य बनाने के लिये अधोंटा दूध, भैंस का ले सकते हैं। अधिक सर्दी की ऋतु हो तो इसमें किंचित् अंश में कस्तूरी भी मिलाई जा सकती है। इसके सेवन से वीर्य गाढ़ा होता है, शीघ्रपतन और उपस्थ का अनुत्थान रूप क्लैव्य और खेद दूर होता है। शरीर में अत्यन्त बल- वीर्य बढ़ता और बाजीकरण की सिद्धि होती है।

दौर्बल्य नाशक पेय

ईसबगोल, ककड़ी के बीज, बीदाना, शीतलचीनी और छोटी इलायची के बीज 1-1 ग्राम लेकर 15 मिनट तक पीस कर छान लें। इसमें थोड़ी सी मिश्री मिलानी चाहिये और कुछ गुलाबजल डाल कर पीना चाहिये। इसके सेवन से वीर्य की उष्णता का शमन होता है तथा मानसिक दुर्बलता से या रोगजन्य क्षीणता से स्वप्नदोष हो तो वह भी दूर होता है। तात्पर्य यह है कि यह योग सभी प्रकार के स्वप्नदोषों में आशु फलकारी है। शुक्र तारल्य को भी नष्ट करता है।

शुक्रदोषों पर ब्राह्मी बूटी

आयुर्वेद में ब्राह्मी बूटी को सरस्वती, ब्रह्मचारिणी और सौम्य लता कहा है। इन नामों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से ही इसके गुणों का आभास हो जाता है। इसका उपयोग बुद्धि- स्मृति में अधिक किया जाता है, किन्तु इसके पोषक और वृष्य गुणों से भी चिकित्सकगण अपरिचित नहीं हैं।

हिन्दी में भी इसका अधिक प्रचलित नाम तो ब्राह्मी ही है। अन्य नाम ब्रह्ममाण्डूकी, भीण्डकी, चरेली, वरमी आदि भी स्थान- भेद से जाने जाते हैं। अँग्रेजी में इसका नाम 'इंडियन फेनीवर्ट' तथा लेटिन में हाइड्रो कोटाइल एशियाटिका है।

ब्राह्मी के दो भेद मुख्य माने जाते हैं — 1. ब्राह्मी, और 2. मण्डूकपर्णी। किन्तु दोनों के आकार- प्रकार में पर्याप्त अन्तर है। ब्राह्मी की बेल होती है, उसके पत्ते किनारों की ओर नुकीलापन लिये होते हैं। किन्तु मण्डूकपर्णी के पत्ते बड़े होते हैं और वह बेल के रूप में नहीं होती। इस प्रकार आकार भिन्नता के कारण विद्वानों में इसके एक होने के विषय में मतभेद हैं। कुछ लोग मानते हैं कि इन दोनों के गुणों समानता होते हुए भी पर्याप्त भिन्नता है। राजनिघण्टुकार ने ब्रह्मी के गुण- स्वभाव के विषय में इस प्रकार कहा है —

ब्राह्मी हिमकषाया च तिक्त वातास्र पित्तजित्।
बुद्धिं प्रज्ञां मेधां च कुर्यादायुष्य वर्द्धिनी॥

अर्थात् — ब्राह्मी, शीतल, कषैली, तिक्त, वात- पित्त को नष्ट करने वाली, बुद्धि, प्रज्ञा, मेधा और आयु की वृद्धि करने वाली है।

निघण्टु रत्नाकर ने उक्त गुणों को तो स्वीकार किया ही है, अन्य अनेक गुण भी गिनाये हैं, यथा —

कण्ठ शुद्धिकरा मेधा स्मृतिदा च रसायनी। हृद्या मेहं विषं कुष्टं पाण्डुं कासं ज्वरं जयेत्॥
शोफं कण्डू प्लीहा वातरक्त पित्तऽरुचिर्जयेत्। श्वासं शोथं सर्वदोषं कफवातामयाञ्जयेत्॥

अर्थात् — ब्राह्मी कण्ठ को शुद्ध करने वाली, मेधा और स्मृति देने वाली, रसायन रूप, हृदय को बलप्रद, प्रमेह, विष, कुष्ठ, पाण्डु, कास्य और ज्वर को जीतने वाली है। सोफ, कण्डू खाज, प्लीहा के विकार, वात- रक्त, पित्त, अरुचि, श्वास, शोथ (सूजन) तथा कफ- वात युक्त सभी दोषों पर विजय प्राप्त करने वाली है।

राजबल्लभ ने भी 'मण्डूकपर्णी कासन्घी स्वादु पाक रसायनी', कहकर ब्राह्मी और माण्डूकपर्णी के गुणों में समानता स्वीकार की है। निघण्टुरत्नाकर ने तो स्पष्ट से ही कि उन दोनों में गुणों की समानता का उद्घोष किया है — सर्वेप्येते गुणा ब्रह्म मण्डूक्यामपि संस्थितः।

अर्थात् ब्राह्मी में जितने गुण हैं, वे सभी मण्डूकपर्णी में भी विद्यमान हैं।

पाठकों की जानकारी और संदेह निवृत्ति का प्रमाण प्रस्तुत करने के पश्चात् अब कुछ योग प्रस्तुत करते हैं —

ब्राह्मी बूटी 50 ग्राम, वायविडंग और शिलाजीत 10-10 ग्राम, स्वर्णमाक्षिक भस्म, लौह भस्म, पारद भस्म और वंग भस्म 5- 5 ग्राम। सभी द्रव्यों को महीन करके एकत्र करें और ब्राह्मी बूटी के स्वरस की एक भावना देकर 1- 1 ग्राम की गोलियाँ बना लें।

मात्रा — एक से दो गोली तक घृत 1 ग्राम में किंचित शहद मिला कर, उसके साथ प्रातः- सायं सेवन करें। अथवा केवल शहद के साथ ही सेवन करके ऊपर से मिश्रीयुक्त सुखोष्ण दूध पीवें। इसके सेवन से शारीरिक कृशता, दुर्बलता, शुक्र - क्षय, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष आदि विकृतियाँ दूर होती है। बुद्धि और स्मृति भी बढ़ती है तथा मस्तिष्क- दौर्बल्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

का शमन होता है।

सारस्वतादि बाजीकर योग

ब्राह्मी बूटी 50 ग्राम, बड़े गोखरू, गोरखमुण्डी, कोंच के बीज, शतावर, श्वेत मूसली, काली मूसली और विदारीकन्द 40- 40 ग्राम, सालम मिश्री, तालमखाना, चोबचीनी, दालचीनी, शंखपुष्पी, छोटी इलायची के बीज और आमला 30- 30 ग्राम लेकर कूट- कपड़छन करें। फिर इसमें औषधि चूर्ण की मात्रा से आधी मात्रा में मिश्री का चूर्ण मिला कर सुरक्षित रखें।

मात्रा — 5- 6 ग्राम यह औषधि प्रातः- सायं मिश्री मिलाये हुए धारोष्ण दूध के साथ सेवन करनी चाहिये। धारोष्ण दूध के न मिलने पर गाय के गर्म दूध के साथ प्रयोग में लावें। यह महौषधि सभी प्रकार के प्रमेहजन्य उपसर्गों को दूर करती और बल- वीर्य की वृद्धि करके बाजीकरण की सिद्धि करती है।

शक्तिवर्द्धक अमीरी वटी

ब्राह्मी बूटी का 20 ग्राम, कुटा- छना चूर्ण, लेकर रखें, फिर अजवाइन, अजमोद, सोंठ, काली मिर्च, तज, लौंग, वच, धनियाँ, अकरकरा, असगन्ध, श्वेत चन्दन, श्वेत चीनी, गजपीपल, अगर, जायफल, जावित्री, चित्रक मूल, कूट, काला जीरा, वायविडंग, सोंफ, शतावर, पोहकरमूल और वंशलोचन 4- 4 ग्राम लेकर इन सबको भी कपड़छन चूर्ण बना लें और ब्राह्मी चूर्ण के साथ मिलावें। तदुपरान्त लौहभस्म, कस्तूरी, अम्बर, प्रवाल पिष्टी, कहरुवा पिष्टी, मुक्त पिष्टी, संगेयशव- पिष्टी, स्वर्णभस्म और रजत भस्म 2- 2 ग्राम मिला कर खरल करें और उपर्युक्त चूर्ण में मिला दें। फिर इसमें 1 ग्राम स्वर्ण घटित मकरध्वज मिला कर ठीक प्रकार से घोटने चाहिये। अब इन सब द्रव्यों को तीन दिन पर्यन्त ब्राह्मी स्वरस की तीन भावनाएँ दें। ब्राह्मी ताजा न मिले तो उसका क्वाथ करें और उससे तीन भावनाएँ देकर चना के समान गोलियाँ बना कर छाया में सुखा लें।

मात्रा — आधी से एक गोली तक प्रातः- सायं शहद के साथ सेवन करानी चाहिये। अथवा मक्खन, मलाई में भी दे सकते हैं। ऊपर से इच्छानुसार सुखोष्ण दुग्ध का पान किया जा सकता है। इसके सेवन से शरीर में बल- वीर्य की वृद्धि होती है, नपुंसकता दूर हो जाती है तथा बाजीकरण की सिद्धि होती है। बुद्धि की मन्दता, अपस्मार, मृगी, हिस्टीरिया आदि का निवारण होता है। हृदय दौर्बल्य, क्षय, उन्माद, मन्थर- ज्वर, रक्तसंचार की अनियमितता, शिरोरोग आदि भी इसके कुछ सप्ताह निरन्तर सेवन से दूर हो जाते हैं।

ध्यान रहे कि रोगी का बलाबल, रोगी की स्थिति, उपसर्ग- भेद, रोग- भेद आदि का सूक्ष्म निरीक्षण करके ही औषधि सेवन करानी चाहिये। रोग और उपसर्गों के अनुसार दवा की मात्रा और अनुपान का निश्चय करना चाहिये।

वीर्यवर्धक पौष्टिक ब्राह्मी पेय

ब्राह्मी बूटी, शंखपुष्पी, पुष्प, गुलाब, कासनी, काली मिर्च, छोटी इलायची के दाने, पोस्त के दाने और बादाम की मिंगी समान भाग लेकर जल के साथ सिल पर पीस कर ठण्डाई बनावें, साथ ही अपेक्षित मात्रा में मिश्री भी डाल लें। यह ठण्डाई लगभग एक गिलास तैयार करके सुबह- शाम पीनी चाहिये। वसन्त ऋतु और ग्रीष्म ऋतु में तो यह बहुत हीं हितकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

पेय है। इसमें कच्चा दूध भी डाला जा सकता है। शीतकाल में, इसमें थोड़ी- सी केशर, दूध में पीस कर मिला लेनी चाहिये।

Digitized by eGangotri

इसके सेवन से सभी प्रकार के प्रमेहजन्य उपसर्गों में लाभ मिलता है। पित्तजन्य प्रमेह में तो यह बहुत ही हितकर है। शुक्र तारल्य, शुक्रक्षय, स्वप्नदोष आदि के कारण समागम के प्रति विरक्ति एवं मन में खेद तथा शरीर में अशक्ति रहती हो तो इस पेय का सेवन करने से, उन सब विकारों का शमन हो जाता है। इसके साथ ही, बुद्धि तीव्र होती है, स्मृति में वृद्धि होती है तथा चित्त प्रसन्न रहता है। किन्तु अभीष्ट फल की सिद्धि तभी होगी, जब इसका सेवन निरन्तर कुछ महीनों तक किया जायेगा।

शरद में सेवनीय सारस्वत खण्ड

ब्राह्मी बूटी 50 ग्राम, शतावर 25 ग्राम, गोघृत 250 ग्राम, काली मिर्च 100 ग्राम, देशी कच्ची खाँड शर्करा 1 किलोग्राम। सब वस्तुयें एकत्र करें।

प्रथम ब्राह्मी बूटी को अठगुने पानी में पहिले दिन रात में भिगो दें और दूसरे दिन प्रातः अग्नि पर चढ़ा कर क्वाथ करें और इसी में शतावर का चूर्ण डाल दें तथा चतुर्थांश शेष रहने पर उतार लें। अब उस क्वाथ- शेष जल को छान कर घृत के साथ अग्नि पर चढ़ावें और सब पानी जल जाय, घृत मात्र शेष रह जाय, तब उसे उतार कर ठण्डा करें और उसमें काली मिर्च पीस कर मिला दें। फिर इसमें खाँड मिला कर किसी थाली में फैला कर जमा दें और रात्रि में चन्द्रमा की चाँदनी में रखें। दूसरे दिन से सेवन आरम्भ करें।

यह सारस्वत खण्ड शरद पूर्णिमा की पूर्ण ज्योत्स्ना में रखा जाता है, इसलिये ब्राह्मी को जल में भीगने के लिये प्रथम रात्रि में रखना चाहिये और पूर्णिमा के दिन में क्वाथ आदि की क्रिया पूर्ण कर लेनी चाहिये। यह योग नेत्र- ज्योति वर्धक और नेत्र- विकार नाशक तो है ही, शुक्र संस्थान पर भी अनुकूल प्रभाव डालने के कारण वीर्य- वर्धक, भी है। शुक्रक्षय, शीघ्रपतन एवं स्वप्न दोष का भी निवारक है। स्मरण शक्ति को बढ़ाता और बुद्धि को तीव्र करता है।

मात्रा — 10 से 20 ग्राम तक केशरयुक्त ठण्डे या धारोष्ण दूध के साथ अथवा बिना किसी अनुपान के प्रातःकाल नीहारमुख नित्य प्रति सेवन करना चाहिये। यह हमारा स्वकल्पित योग, प्रचलित योग में कुछ परिवर्तन के साथ एवं स्वानुभूत है।

शुक्रदोष पर ब्राह्मी पाक

ब्राह्मी बूटी 200 ग्राम, शतावर 100 ग्राम, गाय का दूध 4 किलोग्राम, जावित्री, जायफल, छोटी इलायची, छोटी पीपल, नागकेशर, नागरमोथा, दालचीनी और सौंफ 6-6 ग्राम, वंगभस्म, अभ्रक भस्म, केशर और भीमसेनी कर्पूर 1- 1 ग्राम, बादाम, पिश्ता और चिलगोजा 20- 20 ग्राम, गोघृत 300 ग्राम तथा मिश्री 3 किलोग्राम।

विधि — ब्राह्मी और शतावर को कूट- पीस कर दूध में डालें और अग्नि पर पका कर खोआ बना लें। फिर जावित्री आदि द्रव्यों को, जो कि कूट- छान कर पहले से तैयार रखें हों, इस खोए में मिला कर घृत के साथ भूनें और जब लाल हो जाय, तब उतार लें। मिश्री की चाशनी बनावें और उसमें घृत में भुना हुआ खोआ और भस्म तथा मेवाएँ महीन करके डाल दें और कतली अथवा मोदक बना लें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मात्रा — 15 से 30 ग्राम तक नित्य- प्रति सेवन करें। इच्छा हो तो ऊपर से धारोष्ण अथवा सुखोष्ण दूध पीवें। इसके सेवन से पित्तजन्य वीर्य- विकारों का शमन होता है। अन्य प्रकार के प्रमेह एवं उनके उपसर्गों में भी हितकर है। शुक्रपात, शीघ्र- क्षरण, स्वप्नदोष, स्मृति की कमी, मस्तिष्क - दौर्बल्य में भी यह पाक पर्याप्त लाभदायक सिद्ध होता है।

स्वप्नदोषादि में ब्राह्मी का सरल योग

ब्राह्मीबूँटी, शतावर, सोंफ, श्वेत मूसली, छोटी इलायची के बीज और मुलहठी समान भाग लेकर, कूट- कपड़छन करके रखें।

मात्रा — 5 से 10 ग्राम तक धारोष्ण या सुखोष्ण दूध मिश्री के साथ प्रातः- सायं सेवन करें। इससे वीर्य की उष्णता से उत्पन्न निरर्थक उत्तेजना, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष आदि में आशातीत लाभ होता है। पित्तजन्य विकारों में यह अधिक कार्य करता है। किसी कार्य में मन न लगना, आत्म- निर्भरता में अविश्वास तथा स्मरण शक्ति के ह्रास में भी उपयोगी है।

तालमखाना और उसके पौष्टिक योग

प्रमेहजन्य उपसर्गों के निवारण में तालमखाना का प्रयोग भी अधिक किया जाता है। आयुर्वेद के मत में यह शीतल, वृष्य और पाक में मधुर है। साथ ही वात- दोषों के निवारण में भी प्रभावशाली है।

संस्कृत में इसका मुख्य नाम तो कोकिलाक्ष है। अन्य अनेक नामों में इक्षुगन्धा, बालिका, काण्डेक्षर, भिक्षु, शुष्क, क्षुर आदि नाम भी कहीं- कहीं प्रयुक्त हुए हैं। हिन्दी का प्रसिद्ध नाम तालमखाना है। प्रदेश- भेद से भी नीरमुली, कालसुन्द, कोलशी आदि नाम सुने जाते हैं। अंग्रेजी में लॉंग लीव्ड बरलेरिया कहा जाता है और लेटिन में हाइग्रोफिला स्पिनोसा कहते हैं।

तालमखाने के वृक्ष 60 सेंटीमीटर से डेढ़ मीटर तक ऊँचे पाये जाते हैं। गाँठ गँठीले तथा गाँठों के चारों ओर तीक्ष्ण काँटे होते हैं। उन गाँठों पर ही पत्तों का उद्‌गम समझिये, प्रत्येक गाँठ में 6- 6 पत्ते लगते हैं। बाहरी पत्ते 5 से 12 सेंटीमीटर लम्बे और उनके पीछे के पत्ते 3- 4 सेंटीमीटर लम्बे होते हैं। प्रत्येक पत्ते पर दोनों ओर नुकीले काँटे रहते हैं। प्रत्येक गाँठ पर बीजयुक्त फली तथा फूल बैंगनी होते हैं।

औषधि कर्म में इस वृक्ष के सर्वांग ही कार्य योग्य हैं। किन्तु बीज और मूल का प्रयोग अधिक किया जाता है। किन्तु वीर्यदोष निवारणार्थ और बाजीकरणार्थ केवल बीजों को ही अधिक उपयोगी मानते हैं। क्योंकि बीजों में म्यूसिलेज और नाइट्रोजन की प्रचुर मात्रा होती है। उनमें एक प्रकार का स्थैर्ययुक्त तैल 23 प्रतिशत तक पाया जाता है। इसकी जड़ में कोलेस्ट्रोल नामक क्षारीय तरल रहता है।

तालमखाने के गुण, कर्म, प्रयोग

समस्त शरीर की दुर्बलता में इसके बीज बहुत लाभकारी हैं। शुक्र तारल्य, शुक्रक्षय अथवा शुक्राभाव को दूर करने में यह बीज बहुत सहायक होते हैं। शीघ्रक्षरण के दोष के व्यथित एवं समागम के प्रति विरक्ति उत्पन्न होने पर, इन बीजों से युक्त योग शीघ्र ही अपना प्रभाव दिखाता है। स्तम्भन- शक्ति की पुनर्स्थापना और बाजीकरण की सिद्धि में इन बीजों का पर्याप्त योगदान रहता है। इनके किसी भी प्रकार से सेवन करने पर प्रजनन अंगों में बल- वीर्य की वृद्धि का अनुभव शीघ्र होने लगता है। शुक्रमेह, शुक्राभाव आदि में उपसर्गानुसार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
द्रव्यों के साथ, विधिपूर्वक सेवन करें तो निराश नहीं होना पड़ेगा।

वीर्यदोषनाशक विभिन्न योग

तालमखाना मिश्रित कतिपय योग यहाँ प्रस्तुत हैं —

1. तालमखाने 30 ग्राम, श्वेत मूसली 20 ग्राम, गिलोय सत 10 ग्राम, मखाने 40 ग्राम और मिश्री 50 ग्राम। सबको कूट- छान कर सुरक्षित रखें।

मात्रा — 4 से 6 ग्राम तक प्रातः- सायं सुखोष्ण गोदुग्ध के साथ सेवन करनी चाहिये। यह बीसों प्रकार के प्रमेह और उनके मिश्रित उपसर्गों में अत्यन्त हितकर है। शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, शुक्रक्षय, शुक्रतारल्य में शीघ्र लाभकारी और स्तम्भन- शक्ति स्थिर करने वाली सरल औषधि है।

- तालमखाने, असगन्ध और कृष्ण मूसली 50-50 ग्राम लेकर कूट- कपड़छन करें।

मात्रा — 3-4 ग्राम यह चूर्ण मिश्रीयुक्त गोदुग्ध के साथ प्रातः- सायं सेवन करें। इससे शरीर में बल- वीर्य की वृद्धि, स्तम्भन- शक्ति की स्थिरता और शुक्र में गाढ़ापन आकर बाजीकरण की सिद्धि होगी।

- तालमखाने, श्वेत मूसली, सालम मिश्री, छोटी इलायची के दाने और वंशलोचन 10-10 ग्राम, मिश्री 50 ग्राम। सबको कूट- छान कर रखें।

मात्रा — 4-6 ग्राम प्रातः- सायं गर्म दूध के साथ सेवन करते रहने से अत्यन्त बल वीर्य तथा ओज की वृद्धि होती है।

- तालमखाने, कौंच के बीज, खिरेंटी के बीज, शतावर और बड़े गोखरू समान भाग लेकर कूट- कपड़छन करें। फिर सबके वजन से आधी मिश्री पीस कर मिला दें।

मात्रा — 5-6 ग्राम यह चूर्ण धारोष्ण अथवा सुखोष्ण गाय के दूध के साथ सेवन करें। इससे सब प्रकार के प्रमेह एवं प्रमेहजन्य वीर्य- दोषों में लाभ होता है। धातुक्षय, स्वप्नदोष, शुक्रतारल्य आदि दूर होकर बल- वीर्य की वृद्धि होती है।

- तालमखाने, मुलहठी, छोटी इलायची के बीज, पाषाणभेद, वंशलोचन, शतावर, शुद्ध शिलाजीत, सत गिलोय, वंगभस्म और लौह भस्म 10-10 ग्राम, मिश्री 100 ग्राम। सबको यथाविधि कूट- कपड़छन चूर्ण बनाकर रखें।

मात्रा — 6 ग्राम दवा प्रातः- सायं गोदुग्ध के साथ सेवन करनी चाहिये। इससे शुक्रतारल्य, शुक्रमेह, शीघ्रपतन, शक्तिह्रासादि में आशातीत लाभ होता है और स्तम्भनाकांक्षा पूर्ण होती है।

- तालमखाने के बीज और कौंच के बीज 20-20 ग्राम, मिश्री 40 ग्राम, चूर्ण करके मिला कर रखें।

मात्रा — 5 से 10 ग्राम तक धारोष्ण दूध के साथ सेवन करने से स्तम्भन होता है।

- तालमखाने और इमली के चीयां 50-50 ग्राम लेकर चूर्ण करें तथा बड़ के दूध में खरल करके उसमें समान भाग मिश्री मिलावें।

मात्रा — 6 ग्राम दवा गाय के धारोष्ण दूध के साथ सेवन करें। सब प्रकार के प्रमेह में हितकर है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- तालमखाने 15 ग्राम, वंशलोचन, बहमन श्वेत, बहमन काली, ईसबगोल की भुसी, पलाश का गोंद, छोटी इलायची के बीज, तोंदरी श्वेत, वंश लोचन, दालचीनी, मस्तंगी और गोखरू 10-10 ग्राम लेकर, सबको कूट- छान कर उसमें वंगभस्म, लौहभस्म और अभ्रक भस्म 2-2 ग्राम मिला दें।

मात्रा — 3 से 6 ग्राम तक प्रातः- सायं गाय के धारोष्ण दूध के साथ सेवन करें। इससे सभी प्रकार के प्रमेह नष्ट हो जाते हैं।

- तालमखाना, गोरखमुण्डी, जावित्री, जायफल, तेजपात, लौंग, पीपलामूल, पीपल छोटी, कौंच के बीज, असगन्ध, मुलहठी, धनिये की गिरी, चन्दन चूरा, बड़ी इलायची के दाने, छोटी इलायची के दाने, बीजकन्द, नागकेशर और चोब चीनी, बादाम की गिरी और खरबूजे की गिरी 5- 5 ग्राम लेकर कूट- कपड़छन करें तथा केशर 3 ग्राम, कस्तूरी 1 ग्राम पृथक् पृथक् पीस कर इसमें मिला दें। गर्मी की ऋतु में सेवन करना हो तो कस्तूरी न मिलावें। सबके वजन के बराबर मिश्री का चूर्ण भी मिलाना चाहिये।

मात्रा — 1 से 3 ग्राम तक गाय के दूध के साथ प्रातः- सायं दोनों समय सेवन करने से सब प्रकार के प्रमेह में लाभ होता है। शरीर में बल- वीर्य बढ़ता और स्तम्भन- शक्ति प्राप्त होती है।

- तालमखाना 40 ग्राम, हरड़, बहेड़ा, आमला, असगन्ध, सोंठ और श्वेत मूसली 3- 3 ग्राम, जायफल, जावित्री, भाँग, गिलोय सत, वंशलोचन, वंगभस्म और शुद्ध शिलाजीत 1- 1 ग्राम तथा मिश्री का चूर्ण सबके वजन के बराबर लें। सभी काष्ठौषधियों को कूट- छान कर एक- एक भावना क्रमशः गिलोय स्वरस और आमला स्वरस की देकर सुखा लें।

मात्रा — 3 से 6 ग्राम तक गोदुग्ध के साथ प्रातः- सायं दोनों समय सेवन करें। इससे बीसों प्रकार के प्रमेह, धातुक्षय, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष आदि विकृतियाँ दूर होती हैं। स्त्री के प्रति असमर्थता के कारण उसकी उपेक्षा आदि स्थितियों में यह चूर्ण अत्यन्त उपयोगी है तथा स्तम्भन- शक्ति बढ़ाने वाला है।

पुरुष रोगों में भल्लातक (भिलावे)

भिलावा आयुर्वेद के अनेकानेक योगों में व्यवहार किया जाता है। यह पुष्टिदायक और रसायन है। वीर्यवर्द्धक और बाजीकरण के लिये भी प्रयोग किया जाता है। प्रमेहादि विकारों का शामक तथा रक्तशोधक भी है। यह अनेक नामों से जाना जाता हैं। संस्कृत में इसे मुख्य रूप से भल्लातक कहा गया है। अग्निमुख, अग्निक, अरुष्क, नभोवल्ली, भल्ली, वीरतरु, स्फोटबीज आदि भी इसी के नाम हैं। कहीं- कहीं इसका नाम धनुर्बीज भी मिलता है।

हिन्दी में भिलावा, भल्या, भेला आदि बहुत- से नाम प्रदेश- भेद से देखे जाते हैं। अंग्रेजी में मार्किंग नट कहा जाता है। बोटानी नाम सेमीकार्पस एनाकार्डियम है। इसकी उत्पत्ति अपने देश में हिमालय की तराई के क्षेत्रों में, कोंकण, महाबलेश्वर, मध्य भारत, विन्ध्याचल, आसाम, दक्षिण भारत आदि में होती है।

इसके पत्ते लम्बे या लम्बाई लिये हुए गोल होते हैं। खाकी रंग के से, नीचे का भाग रेशम जैसा कोमल होते हैं। पुष्प कुछ नीले- से तथा लघुवृन्त युक्त होते हैं. जो कि नर- मादा के भेद से दो प्रकार के होते हैं। नारी पुष्प की शलाकाएँ नरपुष्पों की अपेक्षा कुछ छोटी रहती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हैं। इसके फल अण्डाकार दो ढाई सेंटीमीटर चौड़े और चार- पाँच सेंटीमीटर तक लम्बे होते हैं, जो स्पर्श में अत्यन्त कोमल रहते हैं। पके हुए फलों का रंग अधिक काला- सा हो जाता है। जो कर्णिका इनका आधार होती हैं, वे पकने पर पीली हो जाती हैं।विशेष रूप से भिलावे की जाति के वृक्षों के अनेक भेद हैं, किन्तु औषधिकर्म में, मुख्य रूप से भिलावे का ही प्रयोग करना चाहिये। किन्तु ध्यान रहे कि यह वनस्पति अत्यन्त गर्म प्रकृति की है। इसका बिना विचारे किया गया प्रयोग विपरीत फल 'रिएक्शन' करने वाला भी हो सकता है। रक्त में उष्णता उत्पन्न करके देह की त्वचा में फोड़े- फुन्सी, खुजली, शीतपित्ती आदि के रूप में विस्फोट कर सकती है। इसलिये इसका सेवन विचारपूर्वक करना चाहिये।

भल्लातक - शोधन और सेवन विधान

औषधि- कर्म के लिये स्वच्छ, पके हुए, जामुन के फलों जैसी चमक वाले उत्तम भिलावे लेने चाहिये। पुराने, कृमि लगे, रोगयुक्त भिलावे किसी काम के नहीं होते। इनके वृक्षों पर पकने का समय दिसम्बर से मई तक माना जाता है। जब फल पक कर तैयार हो जायें, तब लेकर उड़द अथवा जौ के ढेर में रखना चाहिये। वर्षा ऋतु में इसी प्रकार दबे रहने पर यह निर्विष और गुणकारी हो सकते हैं।

फिर योगों में डालने से पूर्व उन भल्लातक फलों का शोधन करना आवश्यक है। किन्तु शोधन की प्राचीन विधियों में अधिक कठिनाइयाँ हैं। उसमें शुद्ध करने वाले व्यक्ति को भी खाज, फुंसी जैसी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। कुछ अनुभवी विद्वानों के अनुसार इसका शोधन नारियल के तैल के साथ करना चाहिये। क्योंकि नारियल का तेल इसकी उत्तेजना, उष्णता और विपरीत स्वभाव का नितान्त शमन करने में समर्थ है। कुछेक मत में भिलावा सेवन करते हुए उसके साथ नारियल का तेल अनुपानादि के साथ रूप में प्रयोग करना चाहिये। फिर सेवनकर्ता को कण्डु, पिडिका आदि के रूप में होने वाले दुष्परिणाम नहीं भुगतने होंगे।

कोई भी भल्लातक योग, आरम्भ में अत्यल्प मात्रा में लेना चाहिये। यदि वह मात्रा पच जाय, या किसी प्रकार की विपरीतता उपस्थित न करे तो ही मात्रा बढ़ानी चाहिये। इसका सेवन शीत ऋतु में करें, किन्तु तब भी धूप का सेवन न करें। क्योंकि भल्लातक सेवन करने वाले पर धूप का प्रभाव अनुकूल नहीं पड़ता। उसे फोड़े, फुन्सी आदि चर्म- विकार उत्पन्न हो सकते हैं। यदि ग्रीष्म ऋतु में सेवन करना ही अपेक्षित हो तो ठण्डे स्थान, हिमालय आदि के किसी गाँव, चट्टी, उपवन आदि में जाकर रहना चाहिये।

प्राचीन आचार्यों ने अपने ग्रन्थों में जितनी मात्रा का निर्देश दिया है, उतनी मात्रा वर्तमान समय में सेवनीय नहीं है। क्योंकि समय के साथ मनुष्य की सेवनीय क्षमताओं में परिवर्तन होना असम्भव नहीं है। यदि हम आहार की मात्रा को ही देखें तो वर्तमान में भी यह अन्तर स्पष्ट दिखाई देगा कि सभी मनुष्यों की खुराक एक- सी नहीं है। कोई बहुत कम मात्रा में भोजन करता है, तो कोई अत्यधिक मात्रा में। इस प्रकार की असमानता को देखते हुए औषधियों की सेवनीय मात्राओं में अन्तर होना स्वाभाविक है। इसलिये उग्र औषधियों के विषय में अधिक सावधानी अपेक्षित है। यहाँ कुछ प्रयोग प्रस्तुत हैं।

बल- वीर्यवर्धक भिलावा पाक

शोधित भिलावे 2 किलोग्राम को 8 लीटर पानी के साथ आग पर चढ़ा दें और चौथाई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
पानी शेष रहने पर उतार लें तथा उसमें पड़े भिलावों को मल कर, छान लें और पानी फेंक कर इस क्वाथ में 4 किलोग्राम गाय का दूध डाल कर पुनः मन्दाग्नि से पकावें और खोआ बन जाय तब उतार कर ठण्डा करें। अब इस खोए को 500 ग्राम गोघृत के साथ भूनें, तदुपरान्त 4 किलो मिश्री की चाशनी बनाकर, यह खोआ उसमें डाल कर, ठीक प्रकार चलायें और फिर इसमें गज पीपल, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, तज, त्रिफला, तेजपात और मूर्वा 25- 25 ग्राम, छोटी इलायची के बीज, खैर, श्वेत मूसली, काली मूसली, कंकोल मिर्च, कसेरू, विदारीकन्द, समुद्रशोष और मुलहठी 50-50 ग्राम, लोंग, श्वेत चन्दन, खस, जायफल, जावित्री, अगर और विदारीकन्द 40- 40 ग्राम, अजवाइन, अजमोद 10-10 ग्राम, सत गिलोय 100 ग्राम और केशर 20 ग्राम। इन सबका चूर्ण पीस- छान कर मिला दें। जब सब मिल कर एकजीव हो जायें तब उतार कर 3 ग्राम प्रमाण पेड़ा या कतली बनाकर रखें तथा एक सप्ताह पश्चात् प्रयोग में लायें।

मात्रा — 1 पेड़ा से आरम्भ करें, ऊपर से दूध पीवें। पहले एक बार ही लें, फिर प्रातः- सायं लें। बाद में 2 पेड़ा प्रातः- सायं सेवन करना चाहिये। झिल जाने पर अधिक भी ले सकते हैं। इसके सेवन से शरीर में बल- वीर्य की वृद्धि होती है तथा नवीन रक्त का संचार होता है। वृद्धावस्था में भी नई जवानी दे सकता है। हिलते दाँत जमते हैं, श्रवण- शक्तितथा नेत्र- ज्योति बढ़ती है।

भिलावे के शोधन का तरीका यह है कि वृक्ष से गिरे, पके भल्लातक फलों को पकी हुई ईंटों के चूरे से ठीक प्रकार से रगड़ना चाहिये। फिर जब पानी में पकाते हुए क्वाथ करते हुए औषधि निर्माण में लगें, तब इसके धुँए से स्वयं को बचायें रहें। क्योंकि धुँए से शरीर पर सूजन आ जाती है। इसके लिये पूरे शरीर पर तिल- तैल नारियल का तैल मल लें।

वातज, कफज दोषघ्न भिलावे का हलुआ

यह प्रयोग एक बार किसी आयुर्वेदिक मासिक में प्रकाशित हुआ था,वह परीक्षण हमने नोट कर लिया था। इसकी परीक्षा भी बाजीकरणार्थ की गई थी। योग उत्तम पाया गया, इसलिये यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं —

भिलावा 1 नग लेकर, उसके दो टुकड़े सरोंता से कर लें। उसे 30 ग्राम गोघृत के साथ मन्दाग्नि पर पर्याप्त पकायें। जब पकते- पकते फल के भीतर का रस घृत में मिलकर, उसे घृत को काला कर दे, तब उतार कर छान लें और उस छने हुए घृत में गेहूँ का आटा 12 ग्राम के लगभग डाल कर भूनें और लाल हो जाय तब उसमें शर्करा 25 ग्राम और अपेक्षित पानी डाल कर हलुआ बना लें। फिर आग से उतार कर उसमें नारियल का तैल 1 चम्मच भर मिला कर प्रातःकालीन नाश्ते के रूप में सेवन करें।

इस प्रकार, यदि यह हलुआ, सेवन करने वाले की प्रकृति के अनुकूल सिद्ध हो तो 30- 40 दिनों तक निरन्तर लेना चाहिये। नित्यप्रति ताजा हलुआ तैयार करें। लाल मिर्च, खटाई, दही तथा अधिक उष्ण और भारी, दीर्घपाकी वस्तुओं को अपथ्य समझें और सौम्य आहार करें। उसके सेवन से प्रमेहजन्य सभी दोष दूर होकर बाजीकरण की सिद्धि होती है। वातरोग, पक्षाघात आदि में भी यह हितकर है। किन्तु अनुकूल प्रतीत न होने पर औषधि- सेवन तुरन्त बन्द कर देना चाहिये। विपरीत प्रभाव दिखाई देने पर उस लक्षण के अनुसार औषधि लेकर, लाभ प्राप्त करें। नारियल का तैल सेवन करना प्रयोगकाल में अनिवार्यतः आवश्यक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

है। यदि किन्हीं अनुभवी चिकित्सक की देख- रेख में भिलावे का सेवन करें तो अभीष्ट सिद्धि हो सकती है। पित्त प्रकृति वाले रोगियों को इसके सेवन से बचना चाहिये। गर्मी की ऋतु में भी सेवन न करें।

दुर्बलता पर भल्लातक सार (द्राव)

पहिले मिट्टी के दो घड़े लें, एक की पैंदी में छेद कर दें। उस छेदयुक्त घड़े में भिलावों के छोटे- छोटे टुकड़े भर दें। फिर धरती में गड्ढा करके बिना छेद वाला, कुछ बड़ा घड़ा, जो भीतर से घृत से चिकना किया हुआ हो, उस गड्ढे में रखें और उस पर भिलावों से युक्त वह छेद वाला घड़ा रखें। दोनों घड़े सीधे रखें, ऊपर के घड़े का छेद नीचे के घड़े के मुख पर रहे तथा कपड़मिट्टी करके उनकी सन्धि बन्द कर देनी चाहिये। ऊपर के घड़े का मुख बन्द करके उस पर भी कपड़मिट्टी कर दें। तदुपरान्त उन घड़ों के चारों ओर उपलों की आग जलावें, जिससे कि ऊपर वाले घड़े में रखे भिलावों का रस टपक- टपक कर नीचे के घड़े में एकत्रित होने लगे। जब स्वांग ठण्डा हो जाय, तब ऊपर का घड़ा हटा दें और नीचे वाले घड़े में जितना रस तैल हो, उसे निकालें और उसमें रस से दुगुना गोघृत तथा अष्टांश मधु मिला कर सुरक्षित रखें।

इस द्राव की मात्रा केवल 1- 2 बूँद की पर्याप्त है। इसके सेवन से सब प्रकार की प्रमेहजन्य दुर्बल्यता, शुक्रक्षीणता, खिन्नता आदि में लाभ होता है। स्तम्भन और बाजीकरण की सिद्धि होती है। औषधि सेवन, रोग लक्षण के अनुरूप अनुपात से करना चाहिये।

वीर्यदोष शामक नारसिंह चूर्ण

शुद्ध भिलावे 150 ग्राम, शतावर, बड़े गोखरू और तिल 65- 65 ग्राम, चित्रकमूल 45 ग्राम, विदारीकन्द 70 ग्राम, वाराहीकन्द 450 ग्राम, गिलोय 120 ग्राम, छोटी इलायची के दाने, तेजपात और दालचीनी 15- 15 ग्राम तथा मिश्री 350 ग्राम लेकर कूटें और कपड़छन करके रखें। आधा ग्राम से एक ग्राम तक प्रातः- सायं सेवन करने से समस्त वीर्य दोषों में लाभ होता है।

सावधानी — भिलावा का प्रयोग सावधानी पूर्वक करना चाहिये। उसके योग निर्माण में लापरवाही न हो और रोगी का बलाबल, रोग के लक्षण आदि देख कर मात्रा तथा अनुमानादि का निश्चय करना चाहिये। इसका सेवन किन्हीं अनुभवी चिकित्सक के निर्देशानुसार करने से अधिक हित साधन हो सकता है।

पुरुष रोगों पर चमत्कारी शिलाजीत

शिलाजीत देखने में तो सामान्य प्रतीत होती है, किन्तु उसमें गुण अनन्त हैं। भिषगाचार्यों ने उसका व्यवहार अनेक योगों में किया है। इसके गुणों का वर्णन करते हुए कहते हैं —

शिलाजतुरमृतं तिक्तं कटूष्णं कटुपाकि च। रसायनं योगवाहि श्लेष्ममेहाश्च शर्कराः॥

मूत्रकृच्छं क्षयं श्वासं शोथमर्शां च पाण्डुताम्। वातरक्तं तथा कुष्टमपस्मारोदरौ हरेत्॥

अर्थात् — शिलाजीत अमृतरूप, किन्तु, कडुवी, उष्ण, रसायन योगवाहि अन्य औषधियों के साथ मिलकर उनके गुणों में वृद्धि करने वाली श्लेष्म, प्रमेह, शर्करा मधुमेह, मूत्रकृच्छं, क्षय, श्वास, शोथ, बवासीर, पाण्डु, वातरक्त, कुष्ठ, मृगी तथा उदर रोगों का हरण करती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

है।

इसके नाम हैं — शैलनिर्यास, गैरेय, अद्रिजतु, शिलाजतु, अश्मज, गिरिज, शैलधातुज आदि, किन्तु प्रसिद्ध नाम शिलाजीत ही है। इसकी उत्पत्ति पर्वतों पर होती है। चरकाचार्य के मत में—

हेमाद्या सूर्यं संतप्ताः श्रवन्ति गिरिधातवः। जत्वाभं मृदु मृत्नामं यन्मलं तच्छिलाजतु॥

अर्थात् — भगवान् भास्कर के ताप से सुवर्णादिक धातुएँ तप कर पर्वतों से झरती हैं, तब लाख और कोमल मिट्टी के समान आभायुक्त निकलती है, धातुओं का वह मैल ही शिलाजीत है।

आचार्यों ने इसके चार भेद कहे हैं — 1. सुवर्णज, 2. रौप्यज, 3. ताम्रज, और 4. लौहज। जिसमें सुवर्ण जैसी चमक हो, उसमें स्वर्णांश की अधिकता होती है। वह मधुर, कटु, चरपरी, भारी, शीतवीर्य, वातपित्तनाशक तथा लाल रंग जैसी होती है। रौप्यज में चाँदी जैसी आभा, चरपरी, भारी, शीतवीर्य, कफपित्तनाशक, पाक में मधुर तथा कुछ श्वेतता लिये होती है। ताम्रज ताँबे जैसी आभा की, कटु, तीक्ष्ण, उष्णवीर्ण, चरपरी, कफ नाशक तथा पहिचान में मयूरकण्ठ के समान वर्ण वाली होती है। लौहज में लौह के गुणों की अधिकता होती है। उसका रंग काला, कटु, चरपरी, शीतवीर्य और भारी होती है। रक्तकी वृद्धि करने वाली होने से इसे भी श्रेष्ठ रसायन माना गया है।

गन्धादि की दृष्टि से शिलाजीत के दो मुख्य भेद माने गये हैं —

1 गोमूत्र जैसी गन्ध वाली, और 2. कर्पूर जैसी गन्ध वाली। इनमें गोमूत्र जैसी गन्ध वाली शिलाजीत अधिक गुणों से युक्तसमझी गई है। किन्तु आजकल नकली भी बनने लगी है, उससे बचना चाहिये। शिलाजीत का सेवन आरम्भ करने से पहले मल- शुद्धि अवश्य करनी चाहिये। काष्ठ शुद्धि के बिना यह रसायन भी अपना अभीष्ट प्रभाव उत्पन्न नहीं कर पाती। प्रयोग में लाने से पहले शिलाजीत को शुद्ध कर लेना अत्यावश्यक है। शिलाजीत की शोधन विधि शिलाजीत को प्रथम दिन गोदु ग्ध की एक भावना दें अर्था त्24 घं टे तक गाय के दूध में खरल करें। फिर एक भावना त्रिफला काढ़े की दें और तीसरी भावना भाँगरे के रस की देनी चाहिये। इस प्रकार शिलाजीत पूर्णतः शुद्ध हो जाता है।

अब शिलाजीत के कतिपय योग और उनकी प्रयोग विधि पर प्रकाश डालेंगे —

- शिलाजीत 1 से 2 ग्राम तक की मात्रा में, बलाबल के अनुसार, मिश्रीयुक्त गोदुग्ध के साथ सेवन करें। इससे सब प्रकार के प्रमेह और प्रमेहजन्य दुर्बलता दूर होती है।
- छोटी इलायची चे बीज और छोटी पीपल 10- 10 ग्राम लेकर कूट- छान लें तथा इसमें 10 ग्राम शुद्ध शिलाजीत मिला कर खरल करें और शीशी में रखें।

मात्रा — 1 ग्राम से 3 ग्राम तक बलाबल के अनुसार शहद के साथ प्रातः- सायं सेवन करनी चाहिये। इससे मूत्र- कृच्छ, मूत्रावरोध, प्रमेह तथा क्षय आदि रोग नष्ट हो जाते हैं।

- त्रिफला का महीन चूर्ण समान भाग शुद्ध शिलाजीत के साथ 1 से 3 ग्राम तक की मात्रा में, मधु में मिलाकर प्रातः- सायं सेवन करने से सभी प्रकार के प्रमेह और उनके अनेक उपसर्गों में लाभ करता है। बल- वीर्य की वृद्धि के लिये भी हितकर है।
- शिलाजीत 1 ग्राम, हल्दी का चूर्ण 2 ग्राम मिला कर उसे शहद और आमला स्वरस के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

साथ सेवन करना प्रमेह जन्य विकारों में लाभकारी है।

- शिलाजीत, आमला और असगन्ध समान भाग लेकर खरल में सूक्ष्म कर लें।

1 से 2 माशे यह औषधि शहद के साथ प्रातः- सायं सेवन करें और ऊपर से गाय का सुखोष्ण दूध पीवें। इससे प्रमेह, स्वप्नदोष, शुक्रतारल्य, दौर्बल्य आदि में शीघ्र लाभ होता है।

शक्तिवर्धक शिलाजत्वादि वटी

शुद्ध शिलाजीत 40 ग्राम, शुद्ध अफीम 6 ग्राम, लौहभस्म, स्वर्णवंग, सत लोवान, केशर, अकरकरा और छोटी इलायची के दाने 3- 3 ग्राम, कस्तूरी 1 ग्राम, स्वर्णभस्म आधा ग्राम। अकरकरा और इलायची को पीस- छान कर उसे शिलाजीत के साथ घोटें। फिर एक-एक द्रव्य मिलाते हुए घोटते रहें तथा आकंला- क्वाथ के साथ घोट कर मटर प्रमाण गोलियाँ बना लें।

मात्रा —1 से 3 गोली तक, शक्तिके अनुसार शहद में मिला कर सेवन करें और ऊपर से दूध पीवें। इससे शरीर में अत्यन्त बल- वीर्य की वृद्धि होती है। रक्तकी कमी में भी हितकर है। स्तम्भक तथा शीघ्रपतन दूर करने वाली है। वातादि रोगों में भी अनुपान- भेद से बहुत लाभकारी है।

शुक्रमेहान्तक वटिका

शुद्ध शिलाजीत 2 भाग, लौहभस्म, वंगभस्म, अभ्रकभस्म, शुद्ध गुग्गुल और सुहागे का फूला 1- 1 भाग लेकर खरल में घोटें और फिर इसे भाँगरे के स्वरस अथवा क्वाथ की एक भावना देकर 125 मिलीग्राम की गोलियाँ बनाकर रखें।

मात्रा — 1 से 3 गोली तक आमला स्वरस में मधु मिलाकर देने से पित्तप्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन आदि में लाभ होता है। जीर्ण मधुमेह एवं शुक्रमेहादि में इस औषधि का सेवन सेंगर के काढ़े के साथ अथवा बलामूल के स्वरस के साथ करना अधिक हितकारी है।

प्रमेहादि में शिलाजतु मधुयष्टि योग

शुद्ध शिलाजीत, मुलहठी, त्रिकुटा (सोंठ, काली मिर्च, पीपल), शतावर, लौहभस्म, वंगभस्म और स्वर्णमाक्षिक भस्म समान भाग लेकर मुलहठी आदि का कपड़छन चूर्ण करके उसमें अन्य सब द्रव्य मिलावें तथा तीन भावनाएँ बकरी के दूध की दें। फिर तीन भावनाएँ वासापुष्प स्वरस की और एक भावना मधुयष्टि क्वाथ की देकर 125-125 मिलीग्राम की गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1 से 2 गोली तक शहद के साथ प्रातः- सायं सेवन करने से प्रमेह, स्वप्नमेहादि में शीघ्र लाभ होता है। बकरी के दूध के साथ सेवन करने से क्षय तथा क्षयजन्य खाँसी में हितकर होती है। प्रदर रोग में यह औषधि चावल के माँड के साथ देनी चाहिये।

धातुक्षय नाशिनी शिलाजतु वटिका

शुद्ध शिलाजीत 30 ग्राम, छोटी हरड़ 20 ग्राम, शतावर, असगन्ध, लोध और विदारीकन्द 10- 10 ग्राम, मिश्री 60 ग्राम। सभी द्रव्य कूट- छान कर बला के स्वरस से भावित करें अर्थात् बला के स्वरस में घोटते हुए 1-1 ग्राम की गोलियाँ बना लें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मात्रा — 1 से 3 गोली तक बलाबल के अनुसार धारोष्ण या सुखोष्ण दूध के साथ प्रातः- सायं सेवन करनी चाहिये। उससे धातुक्षय, धातुस्राव, स्वप्नदोष, उत्थान में कमी, शारीरिक क्षीणता आदि का शीघ्र शमन होता है। 40 दिन निरन्तर सेवन करें तो प्रमेह तथा प्रमेहजन्य कोई भी विकार शेष नहीं रहता।

प्रमेहादि पर शिलाजीत की सुलभ गोलियाँ

शुद्ध शिलाजीत 20 ग्राम, छोटी इलायची के बीज, कौंच के बीज, वंशलोचन और वंगभस्म 10-10 ग्राम। सभी द्रव्यों को विधिवत् पीस- छान कर, त्रिफला- क्वाथ के साथ खरल करके 250-250 मिलीग्राम की गोलियाँ बना कर सुखा लें।

मात्रा — 1 गोली प्रातः- सायं शहद के साथ सेवन करें और ऊपर से मिश्रीयुक्त गोदुग्ध पीवें। इससे सब प्रकार के प्रमेह, अशक्ति, वीर्यदोष, बहुमूत्र आदि धातु विकारों में शीघ्र लाभ होता है। यह गोलियाँ बनाने में अधिक सरल और सुलभ हैं।

प्रमेहघ्न वटी

शुद्ध शिलाजीत 10 ग्राम, छोटी पीपल, वंगभस्म, अभ्रकभस्म, लौहभस्म, आमला और असगन्ध 5-5 ग्राम लेकर महीन पीसें और भाँगरा- क्वाथ के साथ खरल करके 500 मिलीग्राम की गोलियाँ बनावें तथा सुखा कर शीशी में रखें।

मात्रा — 1-2 गोली शहद के साथ प्रातः- सायं लेनी चाहिये। इससे बीसों प्रकार के प्रमेह तथा उनसे उत्पन्न अन्यान्य उपद्रव शीघ्र दूर हो जाते हैं और शरीर में बल- वीर्य बढ़ता है।

वीर्यवर्द्धक शिलाजत्वादि चूर्ण

शुद्ध शिलाजीत 20 ग्राम, सत गिलोय, सेमर का गोंद, शीतल चीनी, छोटी इलायची के बीज, बहमन श्वेत, विदारीकन्द, तालमखाना, दालचीनी, पलाश का गोंद, इमली के चीयां और मोच रस 10- 10 ग्राम, प्रवाल पिष्टी, मुक्ताशुक्ति और लौहकान्त भस्म 1-1 ग्राम। सभी काष्ठौषधियों को कूट कर कपड़छन करें। फिर इसमें अन्य सभी औषधि- द्रव्य मिला कर रखें।

मात्रा — 3- 4 ग्राम यह चूर्ण प्रातः- सायं धारोष्ण दूध अथवा सुखोष्ण दूध के साथ सेवन करना चाहिये। इससे धातु सम्बन्धी समस्त दोष, प्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, मूत्रकृच्छ आदि में शीघ्र लाभ होता है। शरीर में अभूतपूर्व बल- वीर्य की वृद्धि होती है।

सर्वप्रमेहघ्न शिलाजत्वादि मोदक

शुद्ध शिलाजीत 40 ग्राम, इमली के चींया 20 ग्राम, बेर की गुठली, लोध, धाय के फूल, कमलगट्टा की मिंगी, लाजवन्ती के बीज, बबूल की कच्ची फली, असगन्ध, शतावर, नागकेशर, पोस्तदाने, सोंठ, छोटी पीपल, काली मिर्च, छोटी इलायची के दाने, नागरमोथा, शिवलिंगी के बीज, कोंच की जड़, तेजपात, लोंग और वायविडंग 10 ग्राम, हरड़, बहेड़ा, आमला और कसेरू 20-20 ग्राम, दालचीनी और जावित्री 6-6 ग्राम, गाय का घृत 500 ग्राम तथा मिश्री 700 ग्राम। सभी काष्ठौषधियों को कूट- कपड़छन करें, फिर उसमें शिलाजीत मिलावें। घृत- मिश्री के योग से विधिवत् लड्डू बनाने से पहले यह द्रव्य एकत्र खरल करके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

मिलादें—

Digitized by eGangotri

प्रवाल पिष्टी 10 ग्राम, नागभस्म 4 ग्राम, केशर 3 ग्राम, लौहभस्म, रौप्यभस्म और स्वर्णमाक्षिक भस्म 5-5 ग्राम फिर 3-3 ग्राम की बटिका।

मात्रा — 3 से 6 ग्राम तक मिश्रीयुक्त दूध के साथ प्रातः- सायं सेवन करनी चाहिये। इससे बीसों प्रकार के प्रमेह जड़ से नष्ट होते हैं। स्त्रियों के प्रदर, मासिक दोष एवं गर्भाशय के विकारों में भी अत्यन्त हितकर है। रोग के लक्षणानुसार दवा की मात्रा और अनुपान में परिवर्तन कर सकते हैं।

स्वप्नमेहादि पर शिलाजीत की अन्य वटी

शुद्ध शिलाजीत 20 ग्राम, प्रवाल भस्म 15 ग्राम, त्रिवंगभस्म 10 ग्राम और रससिन्दूर 5 ग्राम। सबको खरल में डाल कर सेमल की मूसली के स्वरस अथवा क्वाथ के साथ खरल करके 250-250 मिलीग्राम की गोलियाँ बनाकर छाया में सुखा लें।

मात्रा — 1 से 2 गोली प्रातः- सायं ताजा पानी के साथ अथवा गोदुग्ध के साथ सेवन करें। इससे सभी प्रकार के प्रमेह, स्वप्नमेह, मधुमेह, शुक्रह्रास, शक्तिह्रास आदि विकारों में शीघ्र लाभ होता है।

बल- वीर्य वर्द्धक सालब मिश्री

यह एक प्रकार के पौधे की मूल है, जिसे हिन्दी में ही नहीं, बंगाली, फारसी आदि भाषाओं में सालब मिश्री कहते हैं। अपभ्रंश रूप में सालभमिश्री का नाम भी सुना जाता है। हमारे देश में औषधिद्रव्य एवं वनस्पतियाँ बेचने वाले किराना दुकानदारों के यहाँ से सरलता से उपलब्ध है। यूनानी दवाओं में तो इसका अधिक प्रयोग मिलता ही है, आयुर्वेदिक नुस्खों में भी, विशेषकर प्रजनन- संस्थान सम्बन्धी योगों में विशेष रूप में इसे डालते हैं।

इसमें कुछ प्रतिशत कैल्शियम और पोटाशियम के लवण म्यूसिलेज, एल्ब्यूमन, स्टार्च और शर्करा जैसे तत्व पाये जाते हैं। म्यूसिलेज की अधिक मात्रा होने के कारण समझा जाता है कि इसके सेवन से वातिक रसों में गाढ़ापन आ जाता है। इसीलिये इसका सेवन शुक्रतारल्य में अधिक कराया जाता है।

चिकित्सकों में यह मान्यता है कि इसमें ऐसे तत्व बहुतायत से विद्यमान हैं, जो कि बल- वीर्य की पुष्टि करके, शरीर को शक्तिशाली बनाते हैं। जिन्हें शीघ्रपतनादि कारणों से स्त्री के समक्ष लज्जित होना पड़ता है, उनके लिये यह अमृत के तुल्य लाभकारी है। स्त्रियों में प्रदरादि रोग और उनके कारण दुर्बलता आदि लक्षणों में भी इसका प्रभाव बहुत देखा जाता है। इसके कुछ प्रयोग यहाँ प्रस्तुत किये जाते हैं।

सालब मिश्री के प्रमेहघ्न योग

- सालव मिश्री, शिलाजीत, छोटी इलायची के बीज और वंशलोचन, चारों समान भाग लेकर, खरल में महीन करें और आमले के स्वरस में 250 मिलीग्राम परिमाण की गोलियाँ बना लें। 1-2 गोली प्रातः- सायं शहद के साथ सेवन करनी चाहिये। इससे सब प्रकार के प्रमेह, धातुस्राव, शीघ्रपतन, स्वप्नदोषादि में लाभ होता है।
- सालब मिश्री, तालमखाना और सत गिलोय 10- 10 ग्राम, सूखा हुआ सिंघाड़ा और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
कीकर (बबूल)का गोंद 30-30 ग्राम, माजूफल और मस्तंगी 15- 15 ग्राम, मिश्री 120 ग्राम लेकर सबका विधिवत् कपड़छन चूर्ण करें।

मात्रा — 5 से 10 ग्राम दूध के साथ सेवन करने से शीघपतन, प्रमेह, स्वप्नदोष, अशक्ति आदि में लाभकारी रहता है। किन्तु यह योग कब्ज करता है, इसलिये बीच- बीच मे निःसारक औषधि, जैसे त्रिफला आदि का प्रयोग करते रहना चाहिये।

- सालव मिश्री और तुलसी के बीज 20- 20 ग्राम, श्वेत मूसली 40 ग्राम, कूट- छान कर रखें। जब सेवन करनी हो, तब 200 मिलीलीटर गोदुग्ध में इस चूर्ण को डाल कर अग्नि पर रखें और चलावें। कुछ देर में ही खीर जैसी तैयार हो जायेगी। इसमें अपेक्षित मात्रा में मिश्री का चूर्ण मिला कर सेवन करें। शुक्रतारल्य में उपयोगी है।
- सालब मिश्री, काहू, कौंच के बीज, छरीला और सर्वर्ण वंगेश्वर 10- 10 ग्राम, तालमखाना, विधायरा, सर्पगन्धा, जीवन्ती और लघु गोखरू 19- 19 ग्राम लेकर स्वर्णवंग को छोड़कर, सभी काष्ठौषधियों का कूट- कपड़छन करें और फिर उसमें स्वर्णवंग भी खरल करते हुए मिला दें। फिर पानी के साथ घोट कर 1- 1 ग्राम की गोलियाँ बना लें तथा प्रातः- सायं 1- 1 गोली दूध के साथ सेवन करें। आवश्यक होने पर दिन में तीन बार भी ले सकते हैं, किन्तु भोजन से आधा घंटे पूर्व लेनी चाहिये। प्रमेह, शीघ्रपतन, शुक्रतारल्य, स्वप्नदोष आदि में उपयोगी है। तीन से छः सप्ताह तक सेवन करने से लाभ सम्भव है।
- सालब मिश्री, छोटी इलायची के बीज, शतावर, असगन्ध और शिलाजीत समान भाग लेकर, पीस- छान कर मिलावें और सुरक्षित रखें। 1-2 ग्राम शहद के साथ प्रातः- सायं लें और ऊपर से मिश्रीयुक्तदूध पीवें। इसके सेवन से सब प्रकार के प्रमेह और प्रमेहजन्य विभिन्न उपसर्गों में लाभ होता है।

प्रमेह, मधुमेह में अत्यन्त लाभकारी वटी

सालब मिश्री, स्वर्ण भस्म और वंग भस्म 10- 10 ग्राम, मुलहठी 8 ग्राम, अकीक- भस्म और केशर 6- 6 ग्राम, कस्तूरी 5 ग्राम, कच्ची अफीम 4 ग्राम, शुद्ध कुचला 3 ग्राम, बरगद का दूध 100 मिली लीटर। सबको विधिवत् महीन करके मिलावें और बरगद के दूध में ठीक प्रकार खरल करते हुए चने के बराबर गोली बना लें।

मात्रा — 1-1 गोली प्रातः- सायं सुखोष्ण दुग्ध के साथ सेवन करनी चाहिये। दवा की गर्मी दबाने के लिये घृत, माखन आदि का पर्याप्त मात्रा में सेवन करना चाहिये। मधुमेह के रोगियों के लिये यह औषधि अमृत के समान है। प्रमेह में भी बहुत लाभ करती है। सेवनकाल में स्त्री- सहवास, गरिष्ठ भोजन तथा मिर्च- मसालों, खटाई आदि से परहेज रखना चाहिये।

कुचला शोधन- विधि

कुचला को अदरक के स्वरस में दस दिन भिगोये रखें, फिर छील कर पित्ता अलग करें और सुखा कर कूट लें। इस दवा में यही कुचला प्रयोग करें।

स्वर्भभस्म निर्माण विधि

असली स्वर्ण का बुरादा करा लें, 10 ग्राम बुरादे को 50 ग्राम गुलाब पुष्पों के स्वरस में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

खरल करके टिकिया बना लें और 10 Digitized by eGangotri उपलों की अग्नि में फूँकें। इस प्रकार सात या आठ अग्नि देने से ठीक भस्म होती है। उक्तप्रयोग में इसी विधि से शोधित कुचला और स्वर्णभस्म डालना अधिक उपयुक्त है।

बादाम का शक्तिवर्धक प्रभाव

शक्तिवर्धन में बादाम का योगदान भी किसी प्रकार कम नहीं है। आयुर्वेदिक पाक, मोदक आदि में ही नहीं, विभिन्न प्रकार के योगों में बादाम को संयुक्त किया जाता है। वातनाशक होने के कारण संस्कृत में इसका एक नाम वातवैरी भी है। अंग्रेजी में इसका आलमाँड तथा लैटिन में इमिग्डेलस है। यूनानी औषधियों में भी इसका प्रयोग अधिकता से किया जाता है।

वैज्ञानिक मत के अनुसार लगभग 400 ग्राम बादाम में 3000 कैलोरी उष्णता पाई जाती है। खाद्योज अर्थात् प्रोटीन 24 प्रतिशत से अधिक, स्नेहन 53.7 प्रतिशत और कार्बोहाइड्रेट 7.4 प्रतिशत माना जाता है। विटामिन ओ और डी की अधिक मात्रा मिलती है। उनसे भी अधिक मात्रा विटामिन बी. की है। इनके अतिक्ति लौह, कैल्शियम और फास्फोरस भी पाया जाता है।

भारत में बादाम का व्यवहार ठण्डाई के रूप में पुरातन काल से चला आता है। उसके प्रभाव से अपच, अफरा, मलावरोध आदि रोगोपसर्गों से तो बचाव रहता ही है, शुक्रदोष, आदि भी नहीं हो पाते। इनका प्रयोग पानक 'शर्बत' के रूप में करने से दिल का उल्लास बना रहता है। बल- वीर्य की वृद्धि और पुष्टि के लिये बादाम का पाक विशेष रूप से सेवन किया जाता है। यहाँ पर बादाम के कुछ प्रयोग प्रस्तुत किये जाते हैं —

बादाम के बल- वीर्यवर्धक योग

- बादाम की मिंगी 20 ग्राम, छोटी इलायची के बीज, काली मिर्च, गुलाब के फूल और शतावर 10- 10 ग्राम, शतावर 5 ग्राम और मिश्री 65 ग्राम कूट- पीस कर महीन कर लें। इसे 10-15 ग्राम तक शहद में मिलाकर चाटने से शक्ति बढ़ती है।
- बादाम की 7- 8 मिंगियों को पानी के साथ सिल पर रगड़ें और शहद मिलाकर सेवन करें, तो भी बल- वीर्य की वृद्धि होती है। इससे कुत्ते द्वारा काटने का विष भी दूर होता है।
- बादाम की 8- 10 मिंगियाँ लें और एक छुहारा भी उसी के साथ, रात्रि के समय पानी में भिगो दें। प्रातःकाल बादाम की मिंगियों का लाल छिलका उतार फेंके तथा छुहारे की गुठली भी दूर कर दें। अब छोटी इलायची के बीज आधा ग्राम और गुलकन्द 1 ग्राम मिलाकर सबको खरल करें। अब मिश्री और गाय के दही से निकाला हुआ मक्खन 3-3 ग्राम मिला कर सेवन करें। इसके कुछ दिनों तक सेवन करते रहने से शुक्रतारल्य, हृदय- दौर्बल्य, स्वप्नदोष एवं मैथुन से विरक्ति प्रभृति उपसर्ग शान्त हो जाते हैं।
- बादाम की मिंगी 100 ग्राम, अखरोट 50 ग्राम, खरबूजे की मिंगी और तरबूज के बीज की मिंगी 25- 25 ग्राम। बादाम को पहिले दिन पानी में भिगो दें और प्रातःकाल उनका छिलका हटाकर सिल पर पीस कर पिष्टी बना लें। अन्य मिंगियों को भी छील लें, अखरोट को भी फोड़ कर, उसमें से मिंगी निकालें और इन सबको खरल में घोट लें। अब 3 लीटर दूध गाय का लेकर आग पर चढ़ावें और जब वह गाढ़ा होने लगे तब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उसमें उक्त सभी मिले हुए द्रव्य डाल कर चलाते हुए मन्दाग्नि दें। किन्तु वे द्रव्य यदि पहिले घृत में भून लिये जायें तो उत्तम है, उससे पाक टिकाऊ बनता है। भूनते- भूनते लाल होने पर उसमें 40 ग्राम मिश्री पीस कर मिलावें और छोटी इलायची के बीज 1 ग्राम भी पीस कर डाल दें।

मात्रा — 10-12 ग्राम तक यह पाक प्रातः- सायं सेवन कराना चाहिये। इससे शरीर में बल बढ़ता है, वीर्य पुष्ट होता है। यह पाक मस्तिष्क को भी पर्याप्त शक्ति देता है। शिरः शूल, वातज शूल, वातज प्रमेह में लाभ करता है और नेत्र ज्योति पर भी अनुकूल प्रभाव डालता है। बादाम का यह पाक सरल और सब प्रकार से लाभकारी है। इसे बनाने में सुविधानुसार द्रव्यों की तौल और निर्माण विधि में परिवर्तन भी किया जा सकता है

- बादाम की मिंगी 100 ग्राम, गाजर शुष्क का महीन चूर्ण 50 ग्राम, गुलाब के फूल या गुलकन्द 25 ग्राम, पिश्ता 10 ग्राम और केशर 3 ग्राम। बादाम की मिंगियों को उक्त प्रकार से पहिले दिन जल में भिगो कर दूसरे दिन लाल छिलका दूर करें और सिल पर पीस कर पिष्टी बना लें। फिर 2 लीटर दूध लेकर उसे आग पर चढ़ावें और उपर्युक्त विधि से ही खोआ जैसा बनने दें तथा दूध चौथाई शेष रहे, तब उसमें 50 ग्राम गोघृत और पिसी हुई पिष्टी मिला कर कोंचा से पर्याप्त चलावें तथा लाल होने पर उतार लें। इसमें आवश्यकतानुसार छोटी इलायची का चूर्ण और केशर भी मिलाई जा सकती है।

मात्रा — 10 ग्राम तक प्रातः- सायं सेवन करके ऊपर से मिश्रीयुक्त अथवा फीका दूध पीना चाहिये। धारोष्ण दूध उपलब्ध हो सके तो अधिक हितकर रहेगा। दूध के अभाव में वैसे भी खाया जा सकता है। यह पाक सभी प्रकार के वीर्य दोषों को दूर करने और बल- वीर्य की वृद्धि करने में हितकर है। स्वप्नदोष, शैथिल्य आदि में भी उपयोगी है।

धातुदौर्बल्यनाशक नवनीत बादाम

बादाम की मिंगी 7 नग, चोटी इलायची 5 नग, छुहारे 2 नग लेकर दो दिन- रात पानी में भीगने दें। फिर घोट कर अपेक्षित जल मिश्री और थोड़ी- सी केशर डालें और उसे 20 ग्राम मक्खन के साथ मिला कर सेवन करें। इससे धातुदौर्बल्य, शारीरिक अशक्त, रक्त की कमी तथा पाण्डु रोग भी दूर हो जाता है।

बादाम का हलुआ

बादाम के हलुआ में शतावर का चूर्ण 10 ग्राम तक की मात्रा में मिला कर सेवन करने से बल- पौरुष की वृद्धि होती है।

बादाम की 7 मिंगियाँ दूध में घोट कर आग पर औटावें और उसे अधौटा कर लें। इसके साथ 2 ग्राम असगन्ध का चूर्ण पीने से समागम के प्रति अनुत्साह और दुर्बलता दूर होती है।

बादाम की मिंगियाँ 50 ग्राम, कोंच के बीज, शतावर, पोस्त दाने, खरबूजे की मिंगी, चिरोंजी और श्वेत चन्दन का चूरा, खरल में घोट कर महीन करें तथा गाय के दूध का खोआ 200 ग्राम को 100 ग्राम घृत के साथ भून कर, यह सब द्रव्य उसमें मिला दें और पुनः मिश्री 100 ग्राम की चाशनी के साथ आग पर पाक कर लें।

मात्रा — 10-15 ग्राम सेवन करने से शरीर में बल- वीर्य की वृद्धि होती है। सभी प्रकार के वीर्यदोषों में हितकर है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

धातुदौर्बल्य में घृत बादाम

Digitized by eGangotri

बादाम की मिंगी 50 नग, चिरोंजी, गोला की गिरी, खरबूजे की मिंगी, पिश्ता, छोटी इलायची और दालचीनी 10- 10 ग्राम, शतावर, असगन्ध और तालमखाना 15-15 ग्राम, केशर 1 ग्राम, गाय का घृत 500 ग्राम। सभी मेवा आदि को ठीक प्रकार से बारीक खरल करके रखें। फिर घृत को मन्दाग्नि पर चढ़ाकर लालिमा आने तक पकने दें। जब लाल हो जाये तब उसमें मेवा आदि को मिला दें। साथ ही केशर और वंगभस्म 5-5 ग्राम पीस कर उसमें डालें और ठीक प्रकार से मिला कर नीचे उतार कर छान लें।

मात्रा — 5 से 10 ग्राम तक यह घृत गाय के मिश्रीयुक्त दूध में मिला कर रात्रि शयन समय सेवन करना चाहिये। इससे सब प्रकार के प्रमेह, धातु दौर्बल्य, धातुक्षरण आदि में शीघ्र लाभ होकर स्तम्भन- शक्तिप्राप्त होती है। इन्द्रिय के अनुत्थान की अवस्था में इसमें से थोड़ा- सा घृत लेकर धीरे- धीरे मलना चाहिये। मस्तिष्क की दुर्बलता के लिये भी यह एक महौषधि है।

शुक्रमेहादि में लाभकारी विभिन्न योग

सत गिलोय, वंशलोचन, छोटी इलायची और गोखरी 10-10 ग्राम, आमला 60 ग्राम। सबको कूट- छान लें, सत गिलोय को बाद में मिलायें।

मात्रा — 10 ग्राम चूर्ण असमान भाग मक्खन और शहद में मिलाकर सेवन करें तथा ऊपर से दूध- मिश्री का पान करें। इसका कुछ दिनों तक निरन्तर सेवन करते रहने से शरीर में बल- वीर्य की वृद्धि होती है और स्तम्भन- शक्ति स्वतः बढ़ जाती है। स्वप्नदोष और शुक्रमेह में भी हितकर है। हमने इस योग के निर्माण में आमला स्वरस का प्रयोग किया अर्थात् आमलों के चूर्ण को आमलों के स्वरस में खरल करके उसमें शेष औषधियों को मिला कर रोगियों को दिया तो सामान्य से अधिक लाभकारी पाया गया।

क्लैव्य नाशक पाक

श्वेत मूसली, काली मूसली, शतावर, तज, तालमखाना, उटंगन, बहमन, लाल, बहमन श्वेत, बीजबन्द, शकाकुल, गोखरू छोटे, कौंच के बीज, मोचरस, छोटी इलायची, पिश्ता, चिलगोजा की गिरी, काशीफल की गिरी, तरबूज की गिरी और भाँग के बीज 30-30 ग्राम, बहुफली और बड़ी इलायची 60-60 ग्राम, सालम मिश्री 90 ग्राम, बादाम की गिरी 150 ग्राम, त्रिफला 40 ग्राम, वंशलोचन 8 ग्राम और मिश्री सब द्रव्यों के वजन के बराबर सभी द्रव्यों को कूट- छान कर मिश्री की करके उसमें मिलावें। अवलेह के समान कर लें अथवा कलाक़न्द के समान पाक बना लें।

मात्रा — 10- 12 ग्राम, प्रातः- सायं सेवन करें और ऊपर से गोदुग्ध पीवें। शुक्रमेह, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, धातु दौर्बल्य आदि में अत्यन्त गुणकारी है। इसके सेवन से कब्ज नहीं होता, इसलिये आह्लादकर बाजीकरण प्रयोग है। कुछ दिनों तक निरन्तर सेवन करना चाहिये।

सरल बाजीकरण पाक

अकरकरा, अजवाइन, उटंगन के बीज, सोंठ और छोटी पीपल 10- 10 ग्राम, कौंच के बीज, गोखरू, नागरमोथा, बबूल का गोंद, तज, कुलंजन, बीजकन्द, मोचरस, इन्द्रयव, कमलगट्टा की गिरी और बबूल की फली 20-20 ग्राम, बहुफली, प्याज के बीज, शलजम के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
बीज, समुद्रशोष और तालमखाना 30-30 ग्राम, असगन्ध, शतावर, श्वेत मूसली, सेमल, तिल काले, सिंघाड़े, पोस्तदाना, इमली के बीज, केंखरबूजे की गिरी, ककड़ी की गिरी और बिनोले की गिरी 40-40 ग्राम, बादाम, पिश्ते और भाँग 80-80 ग्राम। सब द्रव्यों को कूट- कपड़छन करें तथा मिश्री की चाशनी बना कर, उसमें मिला कर पाक कर लें।

मात्रा — 10- 12 ग्राम प्रातः- सायं सेवन करें तथा ऊपर से मिश्रीयुक्त गोदुग्ध पीवें। इससे बल- वीर्य की सभी प्रकार की दुर्बलता दूर होती है। शुक्रमेह, शुक्र तारल्य, क्लैव्य, शीघ्रपतन आदि उपसर्गों को दूर करता और स्थायी लाभ के साथ स्तम्भन शक्ति को बढ़ाता है।

शुक्र संजीवनी वटी

वंशलोचन, जायफल और छोटी इलायची के बीज 60- 60 ग्राम, जावित्री और केशर 40- 40 ग्राम, कस्तूरी 20 ग्राम और स्वर्णभस्म 10 ग्राम तथा चाँदी के वर्क असली 30 ग्राम लेने चाहिये। जो लोग अधिक लागत के कारण स्वर्णभस्म न मिला सकें, उन्हें उसके स्थान पर स्वर्णमाक्षिक भस्म, प्रवाल भस्म और वंग भस्म 5-5 ग्राम डालनी चाहिये।

सभी काष्ठौषधियों को कूट- कपड़छन करें, फिर उसमें कस्तूरी, केशर, भस्मादि मिला कर पान के स्वरस में अथवा बकरी के दूध में खरल करके मटर के बराबर गोलियाँ बना लें। ऊपर से चाँदी के वर्क बना कर सुरक्षित रखें।

मात्रा — 1 गोली मक्खन या मलाई के साथ प्रातः- सायं सेवन करावें। 40 दिन का प्रयोग है, जो कि बल- वीर्य की वृद्धि और पुष्टि करने में समर्थ है। धातु- तारल्य, शीघ्र पतन, नपुंसकता आदि का शमन करती और स्तम्भन शक्ति बढ़ाती है।

शक्तिदाता बाजीकरण योग

उड़द की धुली दाल का चूर्ण और छुहारे का चूर्ण 40- 40 ग्राम, तालमखाना, बड़ी इलायची के दाने, बहमन लाल, इन्द्रयव, मोचरस, उटंगन के बीज, तज, सकाकुल मिश्री, सालम मिश्री, कीकर का गोंद, ढाक का गोंद, बीजबन्द, श्वेत तोदरी, बिनौले की गिरी, ऊँटकटारा, विलायती अंजीर और लाख 1- 1 ग्राम, छिलके सहित भुने हुए चने और सेमल का मूसला 2- 2 ग्राम। नारियल की गिरी, चिरोंजी, पिश्ता और बादाम 4- 4 ग्राम, मुनक्का 10 ग्राम।

सभी काष्ठौषधियों को कूट- कपड़छन करें। छुहारों के छोटे- छोटे टुकड़े करके भटकटैया के रस में 3 दिन भिगो कर सुखावें और चूर्ण कर लें। दाल को रात्रि के समय कच्चे गोदुग्ध में भिगोकर प्रातःकाल सिल पर पीस लें और छाया में सूखने दें। तदुपरान्त छुहारों और दाल को मिला कर घृत के साथ, लाल होने तक भूनें। मेवों को महीन काट कर पृथक् रखें।

सभी द्रव्यों के वजन के बराबर मिश्री की चाशनी करें और पाक होने पर कुतरी हुए मेवाएँ डाल दें।

मात्रा — 10 से 20 ग्राम तक प्रातःकाल नीहारमुख खाकर ऊपर से गोदुग्ध पीवें। इससे अत्यन्त बल- वीर्य की वृद्धि होती है। औषधि- सेवनकाल में स्त्री- सहवास से दूर रहना आवश्यक है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वीर्य पुष्टिकर घृतकुमारी मोदक

ग्वारपाठे का रस, असली घी और खाँड, प्रत्येक 300 ग्राम तथा गेहूँ का आटा 150 ग्राम। ग्वारपाठे के रस को आटा में मिला कर, उसमें थोड़ा- सा घी डालें और लोई बना लें। उन लोइयों को शेष घी में सेंक लें। जब वह हल्की लाल हो जायें, तब उतार कर चूरा करें और पुनः घी में भूनें। तदुपरान्त खाँड डाल कर 20- 20 ग्राम के लड्डू बना लें।

मात्रा — एक- एक मोदक प्रातकाल नाश्ते के स्थान पर खाकर ऊपर से मिश्रीयुक्त दूध पीना चाहिये। इससे बल- वीर्य की पुष्टि होती है और स्तम्भन शक्ति बढ़ती है। इसका प्रयोग 40 दिन करना चाहिये। प्रयोग काल में स्त्री- समागम से बचना उचित है

बाजीकरण मिठाई रसगुल्ला

तालमखाना, कौंच के बीज, श्वेत गुंजा, समुद्रशोख, खिरेंटी और उड़द समान भाग लें। सबको अलग- अलग पीस कर चूर्ण आटा कर लें और समान भाग ताजे दूध का खोया मिला कर 20- 20 ग्राम के गोले घृत के साथ बना लें और उन्हें गर्म- गर्म शहद में डालते जायें और चमचे से डुबोते रहें, जिससे कि शहद उनके भीतर पहुँच सके।

मात्रा — प्रातः- सायं एक- एक रसगुल्ला खाकर ऊपर से दूध पीवें। इससे बल वीर्य की वृद्धि होती तथा बाजीकरण की शक्ति आती है।

बाजीकरण महा रसायन

असगन्ध और विधायरा 10- 10 भाग, भीमसेनी कर्पूर 8 भाग, शीतलचीनी, छोटी इलायची के बीज, दालचीनी, नागरमोथा, वंशलोचन, सत्व मुलहठी, सत्व गिलोय, जावित्री, केशर और अफीम 4- 4 भाग, कस्तूरी 2 भाग।

सभी काष्ठौषधियों को कूट- पीस कर कपड़छन कर लें। केशर, कस्तूरी, कर्पूर आदि को पृथक् खरल करके उसमें मिला दें। फिर इसमें क्रमशः एक- एक भावना हल्दी स्वरस और ग्वारपाठे की दें। अन्त में बंगला पान की दो भावनाएँ देकर मटर प्रमाण गोलियाँ बना लें।

मात्रा — एक गोली रात्रि में शयन समय, शहद में पान का स्वरस मिलाकर, उसके साथ सेवन करें और ऊपर से मिश्रीयुक्त दूध पीवें। त्रिफला के काढ़े में शहद मिला कर, उसके साथ भी ले सकते हैं। अनुपान- भेद रोगी की प्रकृति पर निर्भर है। अधिक आवश्यक हो तो 1 गोली प्रातःकाल भी ली जा सकती है। यह दवा नपुंसकता पर अद्भुत काम करती देखी गई है। बल- वीर्य वर्धक, कामोत्तेजक और स्तम्भक बढ़िया रसायन है। गर्मी अधिक करती है, इसलिये उष्ण प्रकृति वालों को कभी- कभी माफिक नहीं भी आती।

स्तम्भनकारी योग

धतूरे के फल 5 नग कुचल कर 8 लीटर दूध के साथ अग्नि पर पका कर दही जमावें। दूसरे दिन प्रातःकाल उसे बिलो कर घृत निकाल लें। इस घृत की कुछ बूँद पान में रख कर सेवन करने से स्तम्भन होता है। समागन से एक घंटे पूर्व कामेन्द्रिय पर लेप करना भी स्तम्भनकारी होता है।

शक्तिवर्धक, स्तम्भक औषधि

सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल 4- 4 भाग, वंगभस्म 2 भाग और शुद्ध पारद 1, शतावर,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पत्रज, नागकेशर, लौंग, तज, नागकेशर, छोटी इलायची, जायफल और जावित्री 1- 1 भाग लेकर खरल में महीन करें। प्रथम काष्ठौषधियों को पृथक्कूट- कपड़छन कर लेना चाहिये। अन्त में शहद के साथ खरल करके रखें। इसका सेवन आधे ग्राम तक की मात्रा में सेवन करने से बल- वीर्य की वृद्धि और स्तम्भन होता है।

पुरुषार्थ- वर्धक स्तम्भक अन्यान्य योग

- तुलसी की जड़ छाया में सुखा कर चूर्ण कर लें। जमीकन्द भी छाया- शुष्क करके चूर्ण करें। दोनों को एक- साथ खरल कर सुरक्षित रखें।

मात्रा — 1 से 2 ग्राम तक पान में रखकर सेवन करने से संसर्ग- काल में स्तम्भन- शक्ति बढ़ती है।

- तुलसी की जड़ को पानी के साथ पीस कर लेप बना लें। इसका कामेन्द्रिय पर लेप करने से उत्तेजना बढ़ती है।
- बहमन सफेद, बहमन लाल, तालमखाना, सालम मिश्री, रूमी मस्तंगी, शतावर और भुसी ईसबगोल 10- 10 ग्राम लेकर चूर्ण कर लें। इस कपड़छन किये चूर्ण में 1 ग्राम शोधित अफीम मिला कर, वट वृक्ष के ताजा दूध के साथ 4- 5 घंटे तक ठीक प्रकार से खरल करें और चने के बराबर गोलियाँ बना लें।

मात्रा — एक- एक गोली प्रातः- सायं, मिश्री युक्तगोदुग्ध के साथ सेवन करनी चाहिये। पुंसत्वहीनता में उपयोगी है।

- संसर्गकाल में स्तम्भन हेतु असली इत्र गुलाब में कर्पूर मिलावें और संसर्ग में एक घण्टा पहिले कामेन्द्रिय पर लेप करें। यह स्तम्भन- शक्ति बढ़ाने वाला सुन्दर प्रयोग है।
- दालचीनी, काली मिर्च, बड़ी इलायची, चिलगोजा की गिरी, बहमन सफेद, लौंग, सोंठ, नारियल 1- 1 भाग लेकर कूट- छान लें और इसमें आधा भाग केशर अलग से महीन पीस कर मिला दें।

मात्रा — 1 से 2 ग्राम बलाबल के अनुसार मधु के साथ सेवन करें। यह योग धातु पोषक, बल- वीर्य वर्धक तथा नपुंसकता को भी दूर करता है, कुछ दिन निरन्तर सेवन करने से स्थायी लाभ सम्भव है।

- अजवायन खुरासानी, भाँग के बीज, धतूरे के बीज 1- 1 भाग, अकरकरा 6 भाग। सबका महीन चूर्ण करें और जल के साथ चना प्रमाण गोलियाँ बनाकर रखें।

मात्रा — 1- 1 गोली पानी के साथ दें। इससे शरीर में बल बढ़ता है और स्तम्भन शक्ति का परिष्कार होता है।

- अकरकरा असली लें और महीन पीस कर रखें। आधा ग्राम तक गो- दुग्ध में मिश्री मिलाकर, उसके साथ ले नी चाहिये । इस प्रयोग से भी स्तम्भन होता है ।
- थूहर का दूध और गोदुग्ध समान भाग एक शीशी में डाल कर एक दिन धूप में रखना चाहिये। समागम से 2- 3 घंटे पूर्व कुछ बूँदें कामेन्द्रिय पर मलने से स्तम्भनकारी होता है।
- अम्बर को तिल के तैल में मिला कर मलने से भी स्तम्भन होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

स्वप्नं मनसः कामासक्तत्वात् शुक्र स्रावमयो दोषाख्यः रोगाख्यो यः सो हि स्वप्नदोषो भवति।

अर्थात् — 'स्वप्न में मन के कामासक्त होने पर वीर्य स्राव- युक्त दोष होने पर, जिस रोग की प्राप्ति हो, वही स्वप्नदोष होता है।'

आचार्यों ने स्वप्नदोष होने के अनेक कारण कहे हैं, उनमें मुख्य कारण तो स्त्री चिन्तन और भोग- लालसा की अधिकता का होना है। किन्तु अन्य कारण में हस्त मैथुन, गुदा मैथुन, कोष्ठबद्धता (कब्ज), दूषित विचार, अजीर्ण तथा गुदाकृमि की उपस्थिति आदि बहुत- से हैं। जिनसे प्रजननांग क्षोभ को प्राप्त होता हो, वे सभी इसके प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष कारण हो सकते हैं।

सामान्यतः स्वप्नदोष प्रमेह के अतर्गत ही है, इसे स्वप्नमेह भी कहते हैं। प्रमेह की चिकित्सा के अन्तर्गत लिखे गये बहुत- से योग, सस्वप्नदोष को भी दूर करते हैं। उन योगों के अतिरिक्त यहाँ स्वप्नदोष के लिये पृथक् औषधि- योग भी प्रस्तुत किये जा रहे हैं —

स्वप्नदोषघ्न नुस्खे

- त्रिफला चूर्ण 4-6 ग्राम की मात्रा में रात्रि शयन समय दूध के साथ सेवन करने से स्वप्नदोष दूर होता है।
- बबूल का गोंद, कतीरा गोंद, मस्तंगी और मोचरस समान भाग के चूर्ण की 3 ग्राम की मात्रा दूध के साथ लेनी चाहिये। पित्त की अधिकता वाले स्वप्नदोष में हितकर है।
- शीतलचीनी के 3 ग्राम चूर्ण में 100 मिलीग्राम स्वर्णवंग मिलाकर प्रातः- सायं अनार के रस और शहद के साथ सेवन करनी चाहिये। स्वप्नदोष दूर करने वाली उत्तम दवा है।
- कब्ज रहता हो तो, उसके लिये विरेचक दवा लेनी चाहिये। सामान्यतः 4-5 मुनक्का खाकर ऊपर से दूध पीवें। अथवा हरड़ और सोंफ का चूर्ण गर्म दूध के साथ रात्रि में सेवन करें। कब्ज दूर होगा तो स्वप्नदोष भी नहीं रहेगा।
- शीतल चीनी 10 ग्राम, भुई आमला, अफीम शुद्ध, कर्पूर और रससिन्दूर 5-5 ग्राम पीसकर ईसबगोल के पानी में खरल करके चना के बराबर गोलियाँ बना लें। 1-1 गोली प्रातः- सायं पानी के साथ सेवन करें। इससे सभी प्रकार के स्वप्नदोष ठीक होते हैं। किन्तु यह दवा कब्ज करती है, जिन्हें कब्ज की शिकायत रहती हो, वे इसका सेवन न करें।
- स्वप्नदोष तभी होता है, जब गहरी नींद नहीं होती। इसलिये ऐसी औषधि लाभ कर सकती है, जिससे नींद गहरी आ जाय। इसके लिये पीपलामूल 30 ग्राम और गुड़ 40 ग्राम मिलाकर 1-1 ग्राम की गोली बना लें। इससे भीद अच्छी आती है।
- गुड़ 24 ग्राम, त्रिफला 12 ग्राम तथा वच और भीमसेनी कर्पूर 3-3 ग्राम। सबको पानी के साथ खरल करके चने के बराबर गोली बनावें। 1 या 2 गोली प्रातः- सायं पानी के साथ लें। इससे स्वप्नदोष शीघ्र शान्त हो जायेगा।
- शतावर और सूखे आमले समान भाग लेकर कूट- छान लें और दोनों के बरबर वजन की मिश्री पीस कर मिला दें। 3 से 6 ग्राम तक ताजा पानी के साथ प्रातः- सायं सेवन करें। सब प्रकार के स्वप्नदोष में अत्यन्त हितकर है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- शतावर का स्वरस, शहद मिला कर पीने से भी स्वप्नदोष का शमन किया जा सकता है। प्रातः- सायं सेवन करें।
- निर्मली के बीज 100 ग्राम लेकर गाय के दूध के जमाये हुए दही 200 ग्राम में मिला कर 24 घंटे रखें और फिर पर्याप्त खरल करें तथा एक चौड़े पात्र मं रख कर सूखने दें। जब सूख जायें तब पुनः खरल करके कपड़े में छान लें और द्रव्य से चौथाई मिश्री मिला कर रखें।

मात्रा — 3-3 ग्राम प्रातः- सायं गाय के दूध के साथ सेवन करें। इससे स्वप्नदोष में बहुत लाभ होता है। शुक्र तारल्य, शुक्रमेह तथा किसी भी प्रकार से धातु का क्षय हो, उसके निवारण में समर्थ एक अद्भुत रसायन है।

- अमरबेल का स्वरस मिश्री मिलाकर पीने से स्वप्नदोष शीघ्र नष्ट हो जाता है।
- फिटकरी की 50 ग्राम की चिकनी- सी डेली रात्रि में शयन समय पेडू पर रख कर सोवें और सोने से पहिले हाथ- पाँव धो लें तो स्वप्नदोष नहीं होगा।

स्वप्नदोष पर प्रभावकारी पाताल गारुडी

संस्कृत में पातालगारुडी नाम वाली इस बूटी का परिचित नाम छिरेंहटा, छिलिहिण्ड, सोमवल्ली, सौपर्णी, दीर्घबल्ली आदि हैं। इसके गुण "छिलिहिण्डः परंवृष्य कफघ्नः पवनाह्वयः" अर्थात् अत्यन्त वृष्य (वीर्यवर्धक), कफनाशक तथा वातनाशक है। भावप्रकाश और राजनिघण्टु के अनुसार मधुर, वीर्यवर्धक, पित्तनाशक, रुचिकारक, पित्तदोष, दाह तथा रक्तविकार और विषादि की विनाशक है। इस प्रकार आयुर्वेद में इसका अत्यन्त अनुकूल गुण- प्रभाव माना गया है। मुख्य रूप से वात- कफनाशक होने के कारण अनेक वात विकारों में प्रयोग की जाती है।

पातालगारुडी एक बेल विशेष है, जिसके पत्ते कुछ- कुछ शीशम के पत्तों जैसे लगते हैं। नागिन के समान बल खाती हुई यह बेल अनेक वन- उपवनों में पाई जाती है। आयुर्वेदिक औषधियों में इसका प्रयोग बहुत- से नुस्खों में किया जाता है। यहाँ कुछ योग प्रस्तुत हैं —

- छिहेंहटी (पातालगारुडी) के शुष्क पत्र 50 ग्राम, हरड़, बहेड़ा और आमला 20-20 ग्राम, बबूल का गोंद 25 ग्राम और कतीरा गोंद 10 ग्राम। सबको कूट- छान कर छिरेंहटा के ही स्वरस में खरल करके, चूर्ण रूप में ही शीशी में भर कर रखें।
- **मात्रा** — 5-6 ग्राम यह चूर्ण ताजा, स्वच्छ पानी के साथ प्रातः- सायं सेवन करना चाहिये। इसके सेवन से स्वप्नदोष और शुक्र तारल्य में आशातीत लाभ होता है। प्रमेह के अनेक उपसर्गों में हितकारी है।
- छिरेंहटी के शुष्क पत्ते 200 ग्राम तथा गोघृत के साथ भुनी हुई छोटी हरड़ 50 ग्राम पीस- छान कर दोनों के वजन के बराबर मिश्री मिलावें और शीशी में भर कर रखें।
- **मात्रा** — 10-15 ग्राम यह औषधि प्रातः- सायं गाय के दूध के साथ सेवन करनी चाहिये। इसके सेवन से कठिन स्वप्नदोष में भी शीघ्र लाभ होता है। शुक्र की उष्णता दूर होती है तथा स्थायी लाभ की प्राप्ति होती है।
- छिरेंहटी का पंचांग (जड़, शाखा, पत्र, पुष्प और फल) सूखे हुए 50 ग्राम, सूखी हुई दूर्बा (दूब) 25 ग्राम, छोटी इलायची के बीज और कतीरा गोंद 12-12 ग्राम तथा मिश्री

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
100 ग्राम। सबको कूट- छान कर एकत्र करके शीशी में सुरक्षित रखें। 10-12 ग्राम प्रातः- सायं गाय के गर्म दूध के साथ सेवन करनी चाहिये। इससे प्रमेहजन्य अनेक उपसर्ग दूर होते हैं। शुक्रतारल्य, शीघ्रक्षरण, स्वप्नदोष आदि में शीघ्र प्रभाव प्रतीत होता है। रक्ताल्पता में भी लाभ होता है।स्त्रियों के श्वेत प्रदर के शमनार्थ भी इसका प्रयोग हितकर है।

- छिरेंहटी के हरे पत्ते लगभग 10-12 ग्राम और 5-6 काली मिर्च लेकर ठण्डाई के समान सिल पर घोटें। साथ ही, चाहें तो बादाम की छिली हुई मिंगियाँ और सोंफ भी मिला सकते हैं। नित्य प्रति कुछ दिनों तक सेवन करते रहने से यह पेय शरीर की उष्णता को शान्त करता है, दाह, तृष्णा, घबराहट आदि को दूर करता है तथा शुक्र का शोधन करके सब प्रकार के प्रमेह रोगों और उसके कारणों का निवारण करता है। शीघ्र- पतन, शुक्र का पतलापन तथा स्वप्नदोष जैसे उपसर्गों को शीघ्र दूर कर देता है।
- छिरेंहटी का स्वरस और गिलोय का स्वरस समान भाग लेकर उसके साथ शहद मिला कर सेवन करें तो भी प्रमेह के सभी विकारों में लाभकारी है। शीघ्र- पतन, स्वप्नदोष, इन्द्रिय शैथिल्य आदि में भी इसका सेवन आशातीत लाभ दिखाता है।
- छिरेंहटी को आमले के स्वरस में खरल करके शर्करा (मिश्री) मिलावें और 15-20 ग्राम तक की मात्रा में सेवन करें। अथवा शर्करा के स्थान पर मधु मिला कर प्रयोग में लावें। इससे भी स्वप्नदोष और शीघ्रपतन में लाभ होता है।
- पातालगारुडी- आमलकी योग — स्वप्नदोष के लिये यह योग भी लाभकारी है। छिरेंहटी चूर्ण और शुष्क आमलों का चूर्णसमान भाग लेकर, उसमें दो भावनाएँ छिरेंहटी के स्वरस की और एक भावना आमला- स्वरस की देनी चाहिये।

मात्रा — 1 ग्राम यह औषधि धारोष्ण गोदुग्ध के साथ प्रातः- सायं सेवन करनी चाहिये। स्वप्नदोष को दूर करने में इससे बहुत हित साधन हो सकता है।

- केवल छिरेंहटी छाया शुष्क करके उसके चूर्ण में कतीरा गोंद के पानी की एक भावना देकर, 500 मिलीलीटर की गोलियाँ बना लें और छाया में ही सुखा लें।
- **मात्रा** — 1-2 गोली ताजा पानी के साथ, प्रातः- सायं सेवन करने से पित्तज स्वप्नदोष शीघ्र नष्ट होता है। प्रमेह के अन्य रोग तथा प्यास आदि में भी गुणकारी है।

स्वप्नदोष में वंशलोचन का हितकर प्रभाव

वंशलोचन वैसे तो अनेकानेक योगों में प्रयुक्त होता है। आयुर्वेद के सितोपलादि चूर्ण जैसी प्रसिद्ध औषधियाँ भी वंशलोचन के बिना नहीं बनतीं। किन्तु वंशलोचन असली और उत्तम किस्म का हो, तभी उससे अभीष्ट लाभ उठाया जा सकता है।

इसका हिन्दी और संस्कृत दोनों में ही वंशलोचन नाम ही प्रसिद्ध है। अन्य नाम त्वक्क्षीरी, क्षीरिका, रोचना, तुंगा, वंश शर्करा, वंशकर्पूर आदि भी कहीं- कहीं देखे जाते हैं। अंग्रेजी में इसे बम्बूमेना और लेटिन में बम्ब्यूसा, अरुण्डेनिका भी कहते हैं।

वंशलोचन की उत्पत्ति एक प्रकार के मादा बांस से होती है। बांस में जमा हुआ मद ही शुष्क होने पर वंशलोचन नाम धारण करता है। भारतवर्ष में प्रायः सर्वत्र यह बांस जंगलों में पाये जाते हैं। किन्तु वर्तमान समय में अधिक मुनाफा कमाने वाले लोग असली वंशलोचन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
के स्थान पर नकली दे देते हैं, जो कि योग में वर्णित गुणों से बहुत दूर होते हैं। इसलिये यह द्रव्य यथासम्भव विश्वस्त स्थान से प्राप्ति का प्रयत्न करना चाहिये।

वंशलोचन के कतिपय योग

अन्य रोगों के समान स्वप्नदोष के निवारण में भी वंशलोचन का पर्याप्त योगदान रहता है। सभी प्रकार के प्रमेह, दुर्बलता आदि में भी यह चमत्कारी सिद्ध होती है। यहाँ उसके कतिपय योग प्रस्तुत किये जा रहे हैं —

- अकेले वंशलोचन को पीस- छान कर बहुत महीन करके शीशी में सुरक्षित रखें।

मात्रा — 1-2 ग्राम वंशलोचन प्रातः- सायं गोदुग्ध के साथ सेवन करना चाहिये। स्वप्नप्रमेह, प्रमेहक्षीणता आदि में शीघ्र गुण दिखाता है। चालीस दिन निरन्तर सेवन करने पर शरीर में बल- वीर्य की पर्याप्त वृद्धि होती है।

- वंशलोचन का चूर्ण 50 ग्राम, वंगभस्म और प्रवालपिष्टी 10-10 ग्राम लेकर खरल करें 500 मिलीग्राम यह औषधि नित्यप्रति रात्रिशयन के समय सेवन करके, ऊपर से सुखोष्ण दूध पीना चाहिये। स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, दौर्बल्य आदि दोषों में बहुत हितकर है।
- वंशलोचन, शुद्ध शिलाजीत छोटी इलायची, श्वेत मिर्च, मस्तंगी, शीतलचीनी, कुन्दरू, राल और हल्दी 10-10 ग्राम लेकर, चन्दन के तैल के साथ खरल करें और मटर प्रमाण की गोलियाँ बनाकर रखें।

मात्रा — 1-2 गोली ताजा पानी के साथ प्रातः- सायं सेवन करनी चाहिये। इससे स्वप्नदोष तो मिटता ही है। मूत्राघात, मूत्रावरोध, उष्णता के कारण मूत्र कम उतरना आदि रोगों में यह औषधि अद्भुत गुण दिखाती है।

- वंशलोचन और सतगिलोय 20-20 ग्राम, वंगभस्म, प्रवाल भस्म और मुक्तापिष्टी 1-1 ग्राम लेकर खरल में अत्यन्त महीन करके रखें।

मात्रा — 500 मिलीग्राम तक मधुयोग से प्रातः- सायं सेवन करने से स्वप्नदोष में, उष्णता के कारण शुक्रक्षय, मूत्र की गड़बड़ी आदि विकारों में लाभ होता है।

- सितोपलादि चूर्ण के सेवन से भी स्वप्नमेह, प्रमेह, खाँसी, जुकाम, ज्वर आदि में आशा से अधिक लाभ होता है। शहद के साथ 1-2 ग्राम की मात्रा में लेना प्रमेह में हितकर है। यदि शहद में आमला- स्वरस मिला कर इसका सेवन किया जाय तो कैसा भी स्वप्नदोष हो, शीघ्र नष्ट हो जायेगा।

स्वप्नदोषादि पर सितोपलादि का उपयोग

मिश्री 16 भाग, वंश लोचन 8 भाग, छोटी पीपल 4 भाग, छोटी इलायची के बीज 2 भाग और दालचीनी 1 भाग लेकर कूट- कपड़छन करके सुरक्षित रखना चाहिये। यह सब प्रकार की दुर्बलता, वीर्यदोष, धातुगत ज्वर, भीषण खाँसी को दूर करने में प्रसिद्ध है।

- वंशलोचन, शुद्ध शिलाजीत, लौहभस्म, वंगभस्म, प्रवालपिष्टी, शतावर और आमला समान भाग लें और काष्ठौषधियों को पृथक् कूट- छान कर उसमें सभी द्रव्य, भस्मादि मिला कर रखें।

मात्रा — 400 मिलीग्राम या कुछ न्यूनाधिक शर्बत गुलाब और शहद के मिश्रण के साथ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
सेवन करने से स्वप्नदोष, प्रमेह दुर्बलता आदि दूर होती है और शुक्राभाव की स्थिति हट जाती है।

- वंशलोचन और शिलाजीत 4-4 भाग खरल में बारीक करके मिलावें। फिर इसमें 1 भाग सत गिलोय मिला कर रखें।

मात्रा — 1-2 ग्राम, शहद के साथ प्रातः- सायं सेवन करके ऊपर से मिश्रीयुक्त दूध पीवें। स्वप्नदोषादि विकारों में लाभकारी है।

स्वप्नदोष पर अन्यान्य उपयोगी प्रयोग

- स्वप्नदोष में मुलहठी का सेवन बहुत लाभदायक रहता है। उसके मलनिःसारक गुण के कारण विबन्ध नहीं हो पाता, इसलिये पेट में भारीपन तथा गैस बनने आदि की स्थिति शान्त हो जाती है। इसी कारण असमय इन्द्रिय की उत्तेजना पर भी नियन्त्रण रहता है इसके लिये मुलहठी को कूट- कपड़छन करके सुरक्षित रखना चाहिये।

मात्रा — 2 ग्राम यह मुलहठी- चूर्ण 5 ग्राम मधु और 10 ग्राम घृत के साथ मिला कर प्रातःकाल सेवन करें और ऊपर से धारोष्ण दूध पीवें।

- गुलाब के पुष्प भी स्वप्नमेह का शमन करने में उपयोगी सिद्ध हुए हैं। इसके लिये चार- पाँच गुलाब के ताजा पुष्प तोड़कर उन्हें धीरे से स्वच्छ जल से धोयें और पंखुड़ियाँ अलग करके उनमें उतनी ही मिश्री का चूर्ण मिला कर प्रातः- सायं सेवन करें। ऊपर से गुनगुना दूध पीयें। संयम और स्वच्छ तन- मन पूर्वक रहते हुए इसके सेवन से कुछ दिनों में स्वप्नदोष नष्ट हो जाता है।
- गुलकन्द भी इस रोग में बहुत उपयोगी रहता है। नित्य प्रति 5 से 10 ग्राम गुलकन्द प्रातः- सायं मिश्रीयुक्त गोदुग्ध से सेवन करते रहना चाहिये।
- शर्बत- गुलाब, शर्बत- शहतूत, शर्बत- गाजर अथवा चन्दन का शर्बत पेय रूप में लेने से भी स्वप्नदोष पर नियंत्रण सम्भव है।
- पके हुये केले की फली पर छोटी इलायची पिसी हुई बुरक कर, खाने से स्वप्नदोष रुकना सम्भव है।
- आमले का मुरब्बा या गाजर का मुरब्बा 10-15 ग्राम की मात्रा में सेवन करना भी हितकर है।
- नीम की गिलोय का स्वरस और आमले का स्वरस मिला कर, उसमें किंचित् मिश्री मिला कर पीना चाहिये।
- बादाम- काली मिर्च की फीकी ठण्डाई भी स्वप्नदोष का शमन करती है। किन्तु इसमें भाँग कदापि नहीं डालनी चाहिये।

बबूल का गोंद 10 ग्राम को आध पाव पानी में रात्रि समय भिगो दें और प्रातःकाल मल कर छानें और 20 ग्राम मिश्री मिला कर सेवन करें। कुछ दिन में लाभ दिखाई दे सकता है।

- त्रिफला का कषाय भी मिश्री मिला कर पीने से स्वप्नदोष में पर्याप्त लाभ करता है।
- रात्रि में शयन से पूर्व त्रिफला चूर्ण 5-6 ग्राम की मात्रा में सुखोष्ण जल के साथ सेवन करना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- धनियाँ, नीलोफर, कुर्फा के बीज, काहू के बीज, कासनी के बीज और शीतलचीनी 20-20 ग्राम, अलसी के दाने 100 ग्राम तथा ईसबगोल 25 ग्राम। सबको कूट- कपड़छन करके रखें।

मात्रा — 2-3 ग्राम यह चूर्ण समान भाग मिश्री मिला कर पानी के साथ प्रातः- सायं सेवन करें। कुछ दिनों में ही यह दवा पित्त- प्रधान स्वप्नदोष में हितकर सिद्ध होगी।

- रूमी मस्तंगी को घृत के साथ भून लें। 1 ग्राम दवा 3 ग्राम मिश्री मिला कर प्रातः- सायं देने से पित्तज स्वप्नदोष दूर होता है। अथवा बबूल का गोंद घृत में भूनकर उपर्युक्त प्रकार से सेवन करायें।
- कतीरा गोंद भी उपर्युक्तप्रकार से सेवन करने पर पित्तज स्वप्नदोष में लाभकारी रहता है।
- अकरकरा, कर्पूर, रससिन्दूर और शुद्ध शिलाजीत 12-12 ग्राम, लौहभस्म, अभ्रकभस्म और त्रिवंगभस्म 3-3 ग्राम, धोकर भूनी हुई भाँग 1 ग्राम लें। इन सबको भृंगराज के स्वरस में खरल करके मटर प्रमाण गोलियाँ बना लें।

मात्रा — एक- एक गोली प्रातः- सायं हल्दी के स्वरस में शहद मिला कर उसके साथ सेवन करनी चाहिये। इससे कफजन्य स्वप्नदोष में लाभ होता है।

- हरड़, बहेड़ा, आमला 50-50 ग्राम, भीमसेनी कर्पूर 10 ग्राम तथा पुराना गुड़ 150 ग्राम। त्रिफला के तीनों द्रव्यों की गुठली पृथक करके कपड़छन चूर्ण करें और कर्पूर डालें तथा अन्य में गुड़ मिलावें और आधे ग्राम की गोलियाँ बना लें।

मात्रा — 1-1 गोली प्रातः- सायं ताजा पानी के साथ देनी चाहिये। वात प्रधान स्वप्नदोष में यह दवा अधिक उपयोगी है।

- सोना गेरू 50 ग्राम लेकर त्रिफला जल की सात भावनाएँ दें। तदुपरान्त तीन भावनाएँ गिलोय स्वरस की और तीन भावनाएँ गुलाबजल की दें। अन्त में बबूल के गोंद के पतले घोल में खरल करके चना प्रमाण गोलियाँ बनाकर रखें।

मात्रा — 1 से 2 गोली बलाबल अनुसार प्रातः- सायं ढाक के फूल के हिम के साथ सेवन करनी चाहिये। रात्रि में ढाक के फूल पानी में भिगोकर प्रातःकाल छान लें और उसमें शहद मिलाकर, इसके साथ गोली का प्रयोग करना उचित है।

- शीतलचीनी 25 ग्राम, स्वर्णवंग 1 ग्राम लेकर शीतलचीनी का कपड़छन चूर्ण करें और उसमें स्वर्णवंग डाल कर खरल कर लें।

मात्रा — 2-3 ग्राम तक, अनार के रस में शहद मिला कर, उसके साथ प्रातः- सायं सेवन करें और ऊपर से मिश्रीयुक्त गोदुग्ध पीवें। यह दवा सब प्रकार के स्वप्नदोषों में लाभ करती है।

- श्वेत मूसली, सेमल का मूसला, शतावर, दूधी और शंखपुष्पी 50-50 ग्राम, मिश्री 100 ग्राम। सबको कूट- छान कर महीन करें। 3 से 6 ग्राम तक ताजा पानी अथवा गोदुग्ध के साथ प्रातः- सायं सेवन करनी चाहिये। यह औषधि धातुक्षय के कारण उत्पन्न स्वप्नदोष में अधिक काम करती है।
- शीतलचीनी,ईसबगोल,ककड़ी के बीज और बीह- दाना अनार, 10-10 ग्राम लेकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

महीन करके रखें ।

मात्रा — 3-4 ग्राम इस औषधि को शर्बत गुलाब के साथ सेवन करें। यह औषधि सभी प्रकार के स्वप्नदोष में लाभकारी सिद्ध हुई है। इससे निरर्थक उत्तेजना और शुक्र की उष्णता का शमन होता है।

- ढाक के फूल, बबूल के फूल, लाजवन्ती के फूल, कबाब चीनी और धनिया समान भाग लेकर ठण्डे ताजा पानी के साथ सिल पर, मिश्री मिलाकर घोटें। इस प्रकार शर्बत बनाकर पीने से ब्रह्मचर्य से उत्पन्न स्वप्नदोष में लाभ होता है।
- प्रवाल- पिष्टी को चन्दन के शर्बत में मिला कर पीना भी स्वप्नदोष में हितकर है।
- शर्बत गुलाब के साथ मुक्ताभस्म या मुक्तापिष्टी का सेवन भी लाभकारी रहता है।
- शतावर और असगन्ध 50-50 ग्राम, वंश लोचन और प्रवाल भस्म 10-10 ग्राम, मिश्री 100 ग्राम। सबको यथाविधि कूट- कपड़छन कर रखें।

मात्रा — 1 से 3 ग्राम तक गोदुग्ध के साथ प्रातः- काल एवं रात्रि में सोते समय लेनी चाहिये। सब प्रकार के स्वप्नदोष में लाभकारी है।

- यदि स्वप्नदोष के कारण शारीरिक दौर्बल्य अधिक प्रतीत हो तो उपर्युक्त पूरे योग में 10 ग्राम लौहभस्म मिला कर रखें और केवल 1 ग्राम की मात्रा में दूध के साथ सेवन करें।

स्वप्नदोष निवारणार्थ ज्ञातव्य नियम

वस्तुतः स्वप्नदोष कोई स्वतन्त्र रोग नहीं है। उसका कारण न तो धातु- दौर्बल्य है और न कोई उपसर्ग है। इसका मुख्य कारण तो संगमेच्छा में अति और नारी- चिन्तन की अधिकता है, जो वैचारिक प्रदूषण के कारण चेतना से अवचेतना पर पहुँच जाता है। यह मान्यता प्रबल है कि मनुष्य अपनी चेतनावस्था में जो कुछ देखता है, सुनता है, करना चाहता है, अथवा करने की आकांक्षा लिये बैठा रहता है वही सब, किसी न किसी रूप में स्वप्न रूप में दिखाई देने लगता है। आवश्यक नहीं कि जो कुछ स्वप्न में देखा जाय, वह तत्कालिक अनुभूतियों पर ही आधारित हो, बहुत समय पहिले की वे अनुभूतियाँ भी, जो बार- बार स्मरण- चिन्तन में आ जाती हैं, अपने विकृत रूप में स्वप्न बन सकती हैं। इस प्रकार स्वप्नदोष (स्वप्न में वीर्य- क्षरण) भी उसी की परिणति है। जब स्वप्न में किसी भी रूप में काम- क्रिया में प्रवृत्त हुई नारी दिखाई देती है, तब समागम की ओर उन्मुखता का भ्रम, स्वप्नदोष का कारण बन जाता है। अतः निम्न निर्देशों का ध्यान रखें —

- स्त्री- चिन्तन का परित्याग करें। मित्रों आदि में स्त्रियों से सम्बन्धित वार्तालाप न करें। काम- वासना उत्तेजित करने वाला दृश्य न देखें। वैसी पुस्तकें आदि भी न पढ़ें, जिनके उत्तेजना बढ़ती हो।
- रात्रि में शयन से पूर्व ठण्डे पानी से हाथ- मुख और पाँव धोने चाहिये।
- कामांग को भी सोने से पहिले धो लेना उचित है।
- उपस्थ मणि पर मैल आदि का उत्पन्न होना, उसमें खुजली का कारण होता है, जिससे स्वप्नावस्था में धातुक्षरण सम्भव है। अतः आगे की त्वचा हटा कर, साबुन आदि से धोना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

- सोते समय कोई भी मूत्रल या उत्तेजक औषधि नहीं लेनी चाहिये। स्वप्नदोष में यह भी एक सहायक कारण है।
- यदि कोई प्रमेहादि रोग हो तो उसे दूर करने के लिए शामक दवाएँ सेवन करनी चाहिये। गर्म दवाओं के प्रयोग से भी दोष हो सकता है।

समाप्त

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

डॉ० कविराज दाऊदयाल गुप्त विद्यावाचस्पति

● जन्म सन् 1915 ● निधन सन् 1995

अनुभवी आयुर्वेदिक चिकित्सक, सर्जक कवि, साहित्यकार, उपन्यासकार तथा रोचक प्रवचनात्मक साहित्य के प्रसिद्ध लेखक। आयुर्वेदिक चिकित्सा सम्बन्धी 60 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित। महाकाव्य, खण्डकाव्य, भजन, गीत, गजल आदि के रूप में भी सैकड़ों पुस्तकें प्रकाशित, अनेक पुरस्कृत कृतियाँ।

आपके व्यक्तित्व-कृतित्व के शोध में अनेक शोधार्थी लगे हैं। दो शोधार्थियों को क्रमशः आगरा विश्व-विद्यालय और हैदराबाद विश्व-विद्यालय से पी. एच. डी. तथा एम. फ़िल. की उपधियाँ प्राप्त हो चुकी हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE